भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि न० P/RTK-४० दूरभाष: ७२८७४
प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०
वर्ष १९ अंक ७ ७ जनवरी, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

सोम की उपासना करो

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम० ए०, गोरखपुर)

[गता]ंक से आगे—

आह ! जरा नजर उठाकर उस प्रज्ञा-चक्षु सद्गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती को देखो उसने अपने ज्ञान से विश्व को महर्षि दयानन्द सा दूरदर्शी, क्रांतदर्शी ऋषि प्रदान किया। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द [रा]ष्ट्र को समर्पित किया और स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल [गु]रु की महिमा का प्रतिपादक है। कबीर ने कहा है—

सद्गुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपकार।
लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावन हार।।

आगे कबीर कहते हैं—

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपणे, गोविन्द दियो दिखाय।।

सन्त रामदास ने शिवाजी के अभिमान को दूर करने के लिए एक [स्]थान पर लेगए और उन्होंने शिवाजी से कहा इस शिला को तुड़वाओ, [म]जदूरों ने शिला तोड़ी और सद्गुरु ने शिवाजी को दिखलाकर पूछा [श]िवा, बताओ इस मेंढक को कौन भोजन दे रहा है ?" शिवाजी गुरु [क]ा अभिप्राय समझ गए। अभिमान और घमण्ड को दूर कर 'सोम' [सौ]म्यता के मार्ग पर चल पड़े। उन्होंने सभी कर्म प्रभु को समर्पित कर [दि]ए। आइए, हम भी 'सोम' के मार्ग पर चलने का व्रत लें—

नाथ करें शुभकर्म स्मरण कर।
सदा तुम्हारा नाम।
उन्हें तुम्हें ही अर्पित करदें।
स्वयं बनें निष्काम।
दो सुबुद्धि मानव हृदयों को।
ठीक ठीक पहचानें।
पार करें जीवन-पथ दुर्गम।
कुछ भी कठिन न जानें।।

आज आतंकवाद का जोर भारत में भी फैला है। आतंक प्रतिदिन [नि]र्दोष व्यक्तियों की हत्या कर रहे हैं और गुरुनानक के शिष्य अलग [ख]ालिस्तान का नारा लगा रहे हैं। गुरु नानक के जीवन की एक घटना [ली]जिए। एक जंगल में सज्जन नाम का एक दुर्जन ठग रहता था। गुरु [ना]नक उस जंगल में से गुजर रहे थे। ठग ने एक सराय भी वहां बना [र]खी थी और उसमें आने और ठहरनेवालों का वह खूब सत्कार करता, [उ]नके खाने, पीने, ठहरने की व्यवस्था करता और रात को उसे मारकर [स]ब कुछ लूट लेता। नानक का प्रिय शिष्य बाला भी उनके साथ था। [दो]नों वहां सज्जन की सराय में ठहरे, भोजन किया। बाला सो गया [औ]र नानक ध्यानमग्न होगए। अब सज्जन ने बाला और गुरु नानक [क]ो मारकर लूटने का निश्चय किया। उसने उधर कदम बढ़ाये। मनमें [दे]वासुर संग्राम उठा। हृदय से आवाज निकली 'भाग्यहीन ! यह क्या करने चला है ? यह साधारण मनुष्य नहीं, यह तो कोई देवता है।' अन्दर का असुर बोला ! 'कोई भी हो, तू अपना कार्य कर, आगे बढ़।' परन्तु गुरु नानक के मुख-मण्डल पर छाई आत्मिक ज्योति, सोम की सौम्यकांति ने उसका हृदय परिवर्तन कर दिया। वह गुरु महाराज के चरणों में गिरकर पुकार उठा "मुझे बचाइए महाराज ! मुझे बचाइए।" गुरु नानक का सौम्य-रूप बोल उठा, वे मुस्कराते हुए बोले "तू तो सज्जन है, फिर यह सब कुछ कैसे करता रहा ? अब जिस-जिस का जो कुछ छीना है वह सब वापिस करदे, तभी तुझे सौम्यता प्राप्त होगी, तभी तू सोम का सच्चा उपासक बन सकेगा। तभी तेरा मन शांत होगा।" यह है गुरु नानक का सौम्य-रूप ? पर गुरु नानक के तथाकथित अनुयायी सिख यह सौम्यता उनसे सीख सकेंगे ?

गीता में कृष्ण महाराज ने दैवी सम्पदा का उदाहरण देते हुए, उसका लक्षण बताते हुए सोम की उपासना का एक तरह से रूप बतलाया है और कहा है कि—

तेजः, क्षमा, धृतिः, शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।।

अर्थात् हे अर्जुन ! सोम के उपासक की दैवी सम्पदायें हैं—तेज, धृति, क्षमा, शौच, अद्रोह और अहंकार शून्यता ये दैवी सम्पदा है और इसके विपरीत सोम विरोधी आचरण करनेवाले आसुरी सम्पदावाले होते हैं। उन्होंने कहा है—

दंभो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदामासुरीम्।।

अर्थात् हे अर्जुन ! पाखण्ड, घमण्ड, अभिमान, क्रोध और कठोरवाणी और अज्ञान यह आसुरी सम्पदा की निशानी है। इसलिए ऊपर का मन्त्र कहता है—

'ओमम् अध्वरमापहे'

सोम के साथ अपने जीवन का प्रारम्भ करो।

वार्षिक उत्सव

गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिक उत्सव मकर संक्रांति १४ जनवरी, १९९२ को सोल्लास मनाया जा रहा है।

१३ जनवरी को "वैदिक अर्थ-व्यवस्था वर्तमान परिप्रेक्ष्य में" विषय पर विद्वद् वेदशोध गोष्ठी का आयोजन हो रहा है। इसी अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ भी शुरु होगा, जिसमें देश के अनेक गणमान्य विद्वान् भाग लेंगे। समस्त धर्म-प्रेमी आर्यजनता सादर आमन्त्रित है।

आचार्य : गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला (मेरठ) उ.प्र.)

देवयज्ञ की वैज्ञानिकता

(ले० रघुवीरसिंह यादव अध्यापक, प्रधान आर्यसमाज छत्तरपुर, नई दिल्ली

एक दिन की बात है कि खाली घण्टी में मैं और अन्य साथी अध्यापक कक्ष में बैठे हुए थे। गपशप चल रही थी। बातों ही बातों में मैंने यज्ञ की महिमा की चर्चा आरम्भ करदी। मेरे एक साथी जो विज्ञान पढ़ाते थे, कहने लगे कि मेरी समझ में नहीं आता कि जब वस्तुओं के जलने पर कार्बनडाई आक्साइड गैस पैदा होती है तो हवन करने पर किस प्रकार लाभदायक गैस उत्पन्न हो सकती है। यह सब आपका धार्मिक अन्धविश्वास है।

मैंने विनम्र विरोध करते हुए समझाया कि केवल जैव पदार्थों (आर्गेनिक सब्सटेन्सेज) को जलाने पर ही कार्बनडाई आक्साइड गैस बनती है, हर पदार्थ को जलाने पर नहीं। विज्ञान अध्यापक होने के नाते आप यह जानते ही होंगे कि शुल्वारी (सल्फर या गन्धक) को जलाने पर सल्फरडाई आक्साइड और मेगनेशियम जलाने पर मेगनेशियम आक्साइड बनता है। यह नियम अन्य तत्त्वों के दहन पर भी लागू होता है।

अपनी वार्ता को जारी रखते हुए मैंने उन्हें बताया कि आपकी शंका का समाधान रसायन शास्त्र की सहायता से करना पड़ेगा। अब ध्यानपूर्वक सुनिये! इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राध्यापक प्रोफेसर डा० सत्यप्रकाश जी जो वहां रसायन विज्ञान के विशेषज्ञ थे उन्होंने 'अग्निहोत्र' पर वैज्ञानिक अनुसंधान किये थे। उनके निष्कर्ष जो वास्तव में अद्भुत एवं आश्चर्यजनक हैं, सार-रूप में आपको सुनाता हूं।

मिश्रित तथा सामूहिक रूप से हव्य पदार्थों के जलने पर फार्मल डी हाइड नामक यौगिक (कम्पाऊंड) की उत्पत्ति होती है। उस समय यह यौगिक गैस (वायव्य) रूप में होता है तथा इसके साथ ही अल्प-मात्रा में कार्बनडाई आक्साइड व कार्बनमोनो आक्साइड गैसें भी उत्पन्न होती हैं। परन्तु हवन की दहन प्रक्रिया में निर्मित होनेवाली प्रमुख गैस 'फार्मल डी हाइड' ही होती है जो जल में घुलनशील है।

इसी गैस के प्रमुख गुण हैं—जैव वस्तुओं को सड़ने से बचाना और हानिकारक कीटाणुओं को नष्ट करना। जीव विज्ञान की प्रयोगशालाओं में नाना प्रकार के जीव-जन्तुओं के नमूने इसी गैस के घोल में सुरक्षित रखे जाते हैं। इसमें रखे हुए मृत शरीर (शव) वर्षों तक सड़ते-गलते नहीं।

परीक्षण के तौर पर फार्मल डी हाइड के घोल में राजयक्ष्मा के कीटाणुओं को डाला गया, वे नष्ट होगये। इसी प्रकार विविध शक्ति वाले घोलों में अन्य बीमारियों के कीटाणुओं पर जांच की गई। व्यापक परिणाम यही निकला कि इस यौगिक के घोल से सभी प्रकार के हानि-कारक जीवाणु एवं कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। उनके अभाव में फल-स्वरूप आरोग्य और स्वास्थ्य की अभिवृद्धि होती है।

दहन की प्रक्रिया में पैदा होनेवाली कार्बनडाई व मोनोआक्साइड नामक गैसें भी कुछ अंश में इस 'फार्मल डी हाइड' के साथ अभिक्रिया करके अनुकूल यौगिकों का सृजन करती हैं। अत्यन्त अल्पमात्रा में कार्बनडाई आक्साइड गैस शेष रहती है जो वनस्पति जगत् के सांस लेने के काम आजाती है। इस प्रकार 'अग्निहोत्र' के सभी वायव्य पदार्थ वातावरण को शुद्ध, स्वच्छ एवं सुगन्धित कर देते हैं।

हां, एक बात और। उपरोक्त सभी गैसों की रासायनिक अभि-क्रियायें जल की उपस्थिति ही में हुआ करती हैं। यज्ञ के समय जल सदैव मौजूद रहता है। आचमन, अंग-स्पर्श और जल प्रसेचन की क्रियाओं में प्रचुर-मात्रा में जल का प्रयोग यज्ञ सम्पन्न करते समय किया जाता है। अतः जल प्रसेचन आदि क्रियाओं की सार्थकता स्वयं सिद्ध हो जाती है।

यहां तक तो यज्ञ के रासायनिक पक्ष का विवेचन हुआ। अब तनिक भौतिक (फिजीकल) पहलू भी परखिये। यज्ञ बिना वेदमन्त्रों के नहीं होता। हर आहुति के पहले वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ किया जाता है और अन्त में 'स्वाहा' शब्द बोलकर आहुति कुण्ड में डाली जाती है। स्वर और लय से ध्वनि ऊर्जा उत्पन्न होती है जिससे मन तथा तन्त्रिका तन्त्र (नर्वस सिस्टम) पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ता है। 'स्वाहा' और 'ओ३म्' शब्दों के बोलने पर शरीरस्थ ध्वनि यन्त्र कम्पायमान होकर निरोग और स्वस्थ हो जाता है जिसके कारण फेफड़ों, कण्ठ और तालु के अनेक विकार दूर हो जाते हैं। संगीत के सात स्वरों के सुखद और दिव्य प्रमाण से कौन परिचित नहीं है? यह सब 'ध्वनि' ऊर्जा का ही चमत्कार है। वेदमन्त्रों से सस्वर उच्चारण से मनमें उदात्त भावनाओं का संचार होता है जिससे आध्यात्मिक उत्थान होता है और मनुष्य सदाचारी बनता है।

भौतिकी (फिजिक्स) की दृष्टि से ध्वनि के प्रभाव को इस प्रकार समझा जा सकता है। सेना को किसी रेल का पुल पैदल पार करते समय कदमताल (मार्क टाइम) करने से रोक दिया जाता है। क्योंकि कदमताल के स्वर की कम्पन तथा पुल की कम्पन में एकरूपता आने पर पुल टूट सकता है। आपने यह भी अनुभव किया होगा। जब कोई वायुयान कम ऊंचाई पर आपके मकान के पास से उड़ान भरता हुआ आकाश में गुजरता है तो मकान के रोशनदान (गवाक्ष) तथा खिड़कियों के शीशे बड़ी तेजी से आंदोलित होते हैं और उनके चटकने की भी आशंका रहती है।

इन सभी तथ्यों व तर्कों से मेरे वैज्ञानिक शंकालु साथी सहमत होते गये और अन्त में कहने लगे—भाई! हमें तो इन गूढ़ रहस्यों का पता ही न था। हमने जो कुछ अंग्रेजों के लिखे विज्ञान और दर्शन (साईंस एण्ड फिलासफी) में पढा और देखा, उसके बल पर शंका कर बैठे। बुरा ना मानो मैंने शंका कदाग्रह से नहीं, बल्कि तार्किक आधार पर की थी। मधु मुस्कान के साथ मेरा प्रत्युत्तर था—"तत्र गच्छ यत्र पूर्वे परेता:" आइये, उस पर चलें जिस पर हमारे पूर्वज चले थे। इत्योम् शम्।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस संपंन

आर्यसमाज कंवारी (हिसार) की ओर से स्वामी जी का बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। दिनांक २३-१२-९१ को प्रातः चौपाल में हवन किया गया। सभी आर्यबन्धुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने स्वामी जी के जीवन एवं कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। इनके अतिरिक्त महाशय मनसाराम, डा० ओमप्रकाश आर्य एवं पहलवान बजीरसिंह आर्य ने भी स्वामी जी को श्रद्धांजलि देते हुए अपना आत्म-निरीक्षण करने एवं स्वाध्याय करने पर बल दिया।

—सूबेदार रामेश्वरदास आर्य
मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

सम्पादक के नाम पत्र

विशेषांक संग्रहणीय रहा

सर्वहितकारी का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख काफी संग्रहणीय एवं प्रेरणादायक थे। इसके माध्यम से स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय रहा है। इस विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
मन्त्री आर्य युवक परिषद् गोहाना (रोहतक)

प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह तथा शराबबन्दी अभियान की तैयारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक आर्यसमाज चरखी दादरी, जिला भिवानी में दिनांक २९ दिसम्बर रविवार को सम्पन्न हुई। इस बैठक में आर्यसमाज के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान तथा ऋषि दयानन्द के विख्यात शिष्य मुनिवर प० गुरुदत्त विद्यार्थी की निर्वाण शताब्दी समारोह जो कि १५ से १७ मई, १९९२ मे चरखी दादरी मे मनाया जारहा है, इसकी तैयारी पर विचार किया गया।

सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने समारोह की रूप-रेखा पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए बताया कि प० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह के साथ शराबबन्दी अभियान की तैयारी भी की जावेगी। यदि हरयाणा प्रदेश से शराब को बढ़ती हुई बिमारी को नही रोका गया तो हरयाणा की वैदिक संस्कृति नष्ट हो जावेगी और किसान-मजदूर अपनी खून-पसीने की कमाई को बर्बाद करके नष्ट हो जावेंगे आजकल हरयाणा मे ६५० करोड़ रुपये को शराब पीजाती है। एक अनुमान के अनुसार प्रत्येक ग्राम मे ५ लाख रु० की शराब बिकती है। हरयाणा की प्रत्येक सरकार पिछली सरकार से अधिक संख्या में शराब के ठेके खोलकर अधिक से अधिक आमदनी कमाना चाहती है। सरकार को चिंता नहीं है कि शराब के प्रचार । जो हानियां हो रही हैं, उससे हरयाणा बर्बादी की ओर जारहा है। प्रो० साहब ने दिसम्बर मे पंचायत के चुनावों पर शराब के अत्यधिक प्रयोग की चर्चा करते हुए कहा कि सरपच तथा पच उम्मीदवारों ने शराब पिलाकर चुनाव अधिकारियों को अपने पक्ष में करके हेरा-फेरी द्वारा चुनाव जीते हैं। पुलिस कर्मियों को शराब का लालच दिया गया और इस प्रकार अपने मतदाताओ को भी शराब की बोतलें खुल्लम-खुल्ला वितरित करके लोकतन्त्र का मजाक बना दिया है।

सभा द्वारा शराबबन्दी अभियान का उल्लेख करते हुए सभा प्रधान जी ने बताया कि गतवर्ष बहरोड, खांवरोली ढाकला, फरमाणा, सोनीपत, हल्दाना (पानीपत) आदि में शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इन अवसरों पर खापवार पचायत करने का भी कार्यक्रम बनाया गया। यदि प्रत्येक खाप पंचायतों नियम बनाकर शराब पोने व पिलाने पर पाबन्दी लगा देवे तो शराब के ठेके असफल हो सकते हैं।

पं० गुरुदत्त शताब्दी समारोह के अवसर पर हरयाणा के कोने-कोने से आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को पदयात्रा करते हुए दादरी पहुंचने का आह्वान किया। इस प्रकार पदयात्रा के समय प० गुरुदत्त विद्यार्थी की जीवनी तथा उनके कार्यों का परिचय देने के साथ शराब से होनेवाली बुराइयों से जनता को सचेत किया जा सकेगा और समारोह को सफल करने हेतु धनसंग्रह भी हो सकता है। इन पदयात्राओं में सभा के अधिकारी, उपदेशक तथा भजनमण्डलियां भी सम्मिलित होंगी। इस प्रकार आर्यसमाज का सन्देश घर-घर दिया जावेगा। इस महत्त्वपूर्ण कार्य में वैदिक यतिमण्डल के साधु सन्यासी भी सभा को पूरा सहयोग देंगे। अजमेर में आयोजित यतिमण्डल की बैठक में इस संबंध में प्रस्ताव पास किया गया है। अत: हम सभी को मिलकर विद्यार्थी शताब्दी समारोह से पूर्व शराबबन्दी आंदोलन करके हरयाणा सरकार को शराबबन्दी करने के लिए विवश कर देना चाहिए। यह पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हरयाणा के पूर्व शिक्षामन्त्री श्री होशियारसिंह आर्य ने सभाप्रधान जी के सुझाव का समर्थन करते हुए कहा कि जि० भिवानी के जिन-जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, वहां सभा की भजनमण्डलियों द्वारा शराब के विरुद्ध प्रचार करवाया जावे और सरपंचों से प्रेरणा करके आगामी वर्ष से शराब के ठेके बन्द करवाने के प्रस्ताव करवाने चाहिये। आपने सभा को विश्वास दिलाया कि वे इस प्रचार अभियान मे प्रत्येक मास ३ सप्ताह का समय देने को तैयार हैं। आपने यह भी सुझाव दिया कि जो शराबी भाई शराब छोड़ना चाहते हैं, उनके लिए शराब छुडाओ शिविरों का आयोजन किया जावे। मुझे कई दानियों ने शराब छुडाने की औषधियों के दान देने का पेशकश की है। नवयुवकों को इस रचनात्मक कार्य में सहयोग देना चाहिए। क्योंकि यदि नवयुवक इस भयंकर बुराई से बच जावें तो उनका ही कल्याण होगा। आपने कहा ग्राम चहड़, चरखी, मण्ढोली, बुढेड़ा, ओबरा, इमलोटा, चिड़िया आदि जहां शराबबन्दी समर्थक सरपच चुने गये हैं, वहा शिविर लगाये जा सकेंगे।

आर्य हिंदी महाविद्यालय चरखी दादरी के आचार्य श्री ऋषिपाल ने कहा कि राजनैतिक नेता तथा कालेजो के छात्र चुनावों मे शराबी तत्त्वों का सहारा लेकर चुनाव जीतते हैं। अत: हमें स्कूल तथा कालेजों में जाकर शराबबन्दी प्रचार करना चाहिए। सभा के उपदेशक इस कार्य में रुचि ले लें तो सफलता मिल सकती है। आपने सागवान खाप की खेडीबूरा में शराबबन्दी पचायत करने का निमन्त्रण दिया। इसका समर्थन श्री महावीर शास्त्री आजाद, मेजर रामस्वरूप भिवानी, श्री दीनदयाल आर्य जुड्डी ने किया तथा शताब्दी समारोह के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करने का आश्वासन दिया।

चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त ने शराबबन्दी अभियान को सफल करने के लिए सुझाव दिया कि हरयाणा सरकार से मांग की जावे कि ३० सितम्बर के स्थान पर ३१ जनवरी, १९९२ तक शराबबंदी प्रस्ताव करके भेजने की स्वीकृति दी जावे। दिसम्बर में पंचायतों के चुनावों में नये सरपच तथा पच चुने गये हैं उन्हें प्रस्ताव करने का अधिकार मिलना चाहिए। पच तथा सरपचों के शपथ समारोह के अवसर पर भी शराबबन्दी के प्रस्ताव करने की प्रेरणा की जावे।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी तथा शराबबन्दी आंदोलन को सफल करने के लिए पूरी शक्ति आज से ही लगा देनी चाहिए। इस उद्देश्य के लिए हरयाणा के प्रत्येक जिले से आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता पदयात्रा करते हुए आवें। आर्यसमाज के बड़े नेताओं को इन यात्राओं का नेतृत्व करना चाहिए। आपने हिन्दी-रक्षा आंदोलन की सफलता का उल्लेख करते हुए बताया कि इसकी तैयारी के लिए हरयाणा के चारों ओर से प्रचार-यात्राओं का आयोजन किया गया था। इस प्रकार उस आंदोलन में ५० हजार आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने जेल की यात्रा की थी। जिला भिवानी के प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज का प्रचार किया जावे। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी तथा शराबबन्दी के लिए ट्रैक्ट छपवाकर स्कूल कालेजों के छात्रों में बांटे जावें। आपने कहा इस समारोह के लिए भारतवर्ष की सभी प्रांतीय सभाओं से आर्थिक सहयोग मांगा जावे। यह समारोह मनाना तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने चाहिए था। क्योंकि पं० गुरुदत्त का जन्म पंजाब में हुआ था। परन्तु आज पंजाब का वातावरण खराब होने के कारण समारोह नही हो सकता। आपकी अपील पर निम्नलिखित महानुभावों ने दान देने का वचन दिया —

१.	श्री सत्यव्रत आर्य पूर्व एस.डी ओ. वी एण्ड आर भिवकपुर रोहतक	११००
२.	डा० विजयकुमार आर्य मातनहेल, जि० रोहतक	११००
३	श्री महावीरसिंह सरपच ग्राम बराणी, जि० रोहतक	११००
४	आचार्य देवव्रत गुरुकुल कुरुक्षेत्र	१० बोरी चावल
५	श्री दलीपसिंह नम्बरदार (उपप्रधान) बनाना, जि. भिवानी	१०१

निम्नलिखित ग्रामों में शराबबन्दी सम्मेलन करने का कार्यक्रम बनाया गया—

१.	आर्यसमाज कासनी, जिला रोहतक		१३-१४ जनवरी
२	,,	मुण्डसा, ,,	१५ ,,
३.	,,	अमादल शाहपुर, गोबड़ी, बम्बूलिया	१६ ,,
४	,,	मातनहेल, जिला रोहतक, स्वरूपगढ़ जि० भिवानी, खापडवास	१७ ,,
५	,,	खेडीबूरा, जिला भिवानी	१९ ,,
६	,,	बेरी, जिला रोहतक	२६ ,,
७.	,,	टीकरी ब्राह्मण, जिला फरीदाबाद	२७-२८ ,,

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी समारोह के अवसर पर हरयाणा प्रदेश के जिन कार्यकर्ताओं ने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के कार्यों मे लगा दिया है, उनका अभिनन्दन किया जावेगा। अत: आर्यसमाज के अधिकारियों से अपने-अपने क्षेत्र के ऐसे महानुभावों के विवरण के साथ उनके फोटो शीघ्र सभा कार्यालय रोहतक में भेजने का अनुरोध किया गया है।

—सूबेसिंह सभामन्त्री

पर्व तिथि-मास, नक्षत्र, राशि-अयन-श्रेय, प्रेयः का महत्त्वपूर्ण विवरण

सौर मकर संक्रांति-पर्व का महत्त्व एवं रहस्य

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

त्यौहारों एव पर्वों का मनुष्य जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये पर्व हमारे देश व विदेश में बहुत ही उत्साह से मनाये जाते हैं। ये पर्व मनुष्य जीवन में नवजीवन का संचार करते हैं। आपस में मिल-जुलकर खुशियां मनाकर एकता का पाठ पढाते हैं। पर्व पर विशेष भोजन पाकर प्रसन्नता होती है। हवन यज्ञादि करने से पर्यावरण की शुद्धि, वायुमण्डल को पवित्रता होती है। आपस में बांटकर खाने की इच्छा से समाज में एकता होती है। आपसी भाईचारा स्थापित रहता है। जीवन में पवित्र परिवर्तन की भावना पैदा होती है। अतः प्रत्येक पर्व की प्रतीक्षा की जाती है।

आज सौर मकर सक्रांति का पवित्र पर्व है। पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करने को सौर मक्रांति कहते हैं। कुछ लम्बी गोल आकृतिवाली जिस परिधि पर पृथ्वी घूमती है उसे क्रांति-वृत्त का नाम दिया जाता है।

यह पर्व नक्षत्रों व राशियों तथा ऋतु-परिवर्तन से तथा उत्तरायण व दक्षिणायन से सम्बन्ध रखता है। सूर्य व पृथ्वी के अपनी परिधि में घूमने से जो परिवर्तन होता है उसे सक्रांति कहा जाता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के वक्ताओं ने इन राशियों को बारह भागों में बाट दिया है। इन राशियों के ये नाम हैं—

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन। ये आकृति राशियां कही जाती हैं। इन १२ राशियों के नाम भी आकाश में स्थित नक्षत्रों से बनी कुछ समान आकृतिवाली वस्तुओं के नाम पर रख लिए गए हैं। इन्हे रेखा भी कह देते हैं।

आज सूर्य धनुराशि (रेखा) से मकर राशि (रेखा) में प्रवेश कर रहा है। इससे ऋतु व नक्षत्रों में हलचल-सी अथवा क्रांति-सी मच जाती है। सारे ही वायुमण्डल में शक्ति-सी व्याप जाती है। इसके संक्रमण से अथवा प्रभाव से वनस्पतियों, पुष्पलताओं एव मनुष्य शरीर आदि मे भी शुद्ध रक्त का सचार बढ जाता है। यह पृथ्वी व सूर्य का संक्रमण जड़ व चेतन जगत् को पूर्णतया प्रभावित करता है।

नक्षत्र व तिथि—इस संक्रमण में अथवा परिवर्तन में नक्षत्रों तथा तिथियों का भी महत्त्वपूर्ण योग होता है।

वे नक्षत्र और देवता ये हैं—नक्षत्रों के साथ देवता का भी सम्बन्ध होता है। जैसे नक्षत्र व देवता—१. अश्विनी-अश्वी, २. भरणी-यम, ३. कृत्तिका-अग्नि, ४. रोहिणी-प्रजापति, ५ मृगशीर्ष-सोम, ६. आर्द्रा-रुद्र, ७. पुनर्वसु-अदिति, ८. पुष्य-बृहस्पति, ९. आश्लेषा-सर्प, १०. मघा-पितृ, ११ पूर्वाफाल्गुनी-भग, १२. उत्तराफाल्गुनी-अर्यमन्, १३. हस्त-सविता, १४. चित्रा-त्वष्टा, १५. स्वाति-वायु, १६. विशाखा-इन्द्राग्नी, १७. अनुराधा-मित्र, १८ ज्येष्ठा-इन्द्र, १९ मूल-निर्ऋति, २०. पूर्वाषाढा-अप, २१. उत्तराषाढा-विश्वेदेव, २२. श्रवण-विष्णु, २३. धनिष्ठा-वसु, २४. शतभिषज-वरुण, २५. पूर्वाभाद्रपदा-अजपाद्, २६. उत्तराभाद्रपदा-अहिर्बुध्न्य, २७. रेवती-पूषा।

इस प्रकार ये २७ नक्षत्र होते हैं। इन नक्षत्रों के साथ ही इनके २७ देवता भी होते हैं। इन नक्षत्रों के साथ ही मैंने देवताओं की भी गणना करदी है। इसे आप अच्छी प्रकार से देख, समझले।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन नक्षत्र देवताओं तथा तिथियों की चर्चा सस्कारविधि के नामकरण सस्कार में की है। नामकरण सस्कार में तिथि-नक्षत्र आदि के नाम से आहुति देने का भी विधान किया है। वहां पर पढे।

पृथ्वी और सूर्यादि लोकभ्रमण

ये पृथ्वी व सूर्यादि लोक परमेश्वर की व्यवस्था से घूमते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में सृष्टि उत्पत्ति विषय में—आयं गौ पृश्नि—तथा आकृष्णेन रजसा—दिवि सोमो अधिश्रित आदि यजुर्वेद तथा अथर्ववेद के मन्त्रों से यह सिद्ध करते हैं कि—"यह भूगोल जल के सहित सूर्य के चारों ओर घूमता जाता है, इसलिए भूमि घूमा करती है। सूर्य अपनी परिधि में घूमता है। किसी लोक के चारो ओर नहीं घूमता। चन्द्रलोक भी सूर्य से ही प्रकाशित होता है। पृथ्वी आदि लोक घूमकर जितना भाग सूर्य के सामने आता है उतने में दिन और जितना आड में होता है उतने में रात होती है। क्योंकि यदि सूर्य न घूमता होता तो एक राशि स्थान से दूसरी राशि अर्थात् स्थान को प्राप्त न होता।

इस प्रकार पृथ्वी तथा सूर्य के अपनी-अपनी परिधि में घूमने से ये दिन-रात व राशियां बदलने से ही ये सौर मकर संक्रांति आदि होती हैं।

आज इस सौर मकर संक्रांति के पवित्र पर्व पर पौषसुदी—१ तिथि है, सम्वत् २०४८, मघा नक्षत्र है। अंग्रेजी ता० १४ जनवरी,—है, सन् १९९२ है। इस विषय में अधिक जानकारी के लिए महर्षि दयानन्द रचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का पृथ्वी आदि लोकभ्रमण विषय तथा आकर्षणानुकर्षण विषय पढना चाहिए। डर लगता है कहीं लेख न बढ जाये। वहीं देखलें।

अब सूर्य के उत्तरायण तथा दक्षिणायन का हिसाब भी समझिए

छः महीने तक सूर्य क्रांति-वृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक छः मास की अवधि का नाम अयन है। इसलिए छः महीने सूर्य उत्तरायण में और छः महीने दक्षिणायन में रहता है। सूर्य के प्रकाश की अधिकता के कारण उत्तरायण विशेष महत्त्वशाली माना जाता है। इसी कारण से जितने भी शुभ-कार्य हैं उत्तरायण सूर्य में अच्छे माने जाते हैं। ऐसा प्रश्नोपनिषद् में लिखा है,

उत्तरायण व दक्षिणायन के हिसाब से महीनों की गणना

माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, इन छः महीनों में सूर्य उत्तरायण में रहता है और श्रावण, भद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, इन छः महीनों में सूर्य दक्षिणायन में रहता है। आप इसे ऐसे भी समझ सकते हैं—

सूर्य २३ जून से २२ दिसम्बर तक छः मास तक दक्षिणायन में रहता है और २३ दिसम्बर से २२ जून तक छः मास तक उत्तरायण में रहता है। इस उत्तरायणकाल में सूर्य अपनी किरणों के द्वारा जल का आकर्षण करके उन्हें अन्तरिक्ष में धारण करता रहता है और जब वह दक्षिणायन की ओर जाने लगता है तब ही वर्षा-ऋतु आरम्भ होती है। अब सूर्य धनु राशि से मकर राशि में आकर उत्तरायण में आगया है। अब बडा सुहावना मौसम रहेगा।

धनु राशि की संक्रांति से ९ अंशों पर उत्तरायण, मिथुन राशि की संक्रांति ९ अंशों पर सूर्य दक्षिणायन होता है।

इस प्रकार मकर राशि के सूर्य से छः मास उत्तरायण, कर्क राशि के सूर्य से छः मास दक्षिणायन के माने जाते हैं।

अब थोड़ा-सा ऋतुओं व राशियों का हिसाब भी समझ लीजिए

भारत में वर्षभर में छः ऋतुयें होती हैं। किंतु कई देशों में छः ऋतुयें नहीं होती। किसी देश में दो या तीन ऋतुयें भी होती हैं। जैसे मोरिशस देश में भारत की तरह से छः ऋतु नहीं होती। वहां पर तो गर्मी, वर्षा व वसन्त ही तीन ऋतु होती हैं। यह तो आप जानते हैं कि वर्ष में १२ महीने होते हैं।

एक ऋतु दो महीने तक रहती है जैसे—वैशाख ज्येष्ठ में वसन्त ऋतु रहती है, इसमें मेष वृष राशियां रहती हैं। आषाढ़ श्रावण में ग्रीष्म-ऋतु होती है, इसमें मिथुन व कर्क राशियां होती हैं। भाद्रपद व

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रेरणादायक पर्व—मकर संक्रान्ति

—वेदप्रकाश 'साधक' दयानन्दमठ, रोहतक

भारत की पवित्र-भूमि में आदिकाल से पर्याप्त समय तक आर्यों का राज रहा है। इसलिए यह धर्मप्रधान देश था आर्यों का सामाजिक और वैयक्तिक जीवन धर्म के नैतिक-मूल्यों से ओत-प्रोत था। इसलिए महत्त्वपूर्ण पर्वों को धर्म का पुट देकर आर्यजाति की रक्षा की गई है।

पर्व शब्द का अर्थ पूरक है अर्थात् आनन्द उल्लास से पूरित करता है। संक्रांति का पर्व भी आनन्द प्राप्ति के लिए मनाया जाता है।

इसी दिन यज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र करके दान का अनुष्ठान भी किया जाता है।

संक्रांति इसका नाम इसलिए दिया गया है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक वर्ष में परिक्रमा पूरी करती है। उस लम्बी वृत्ताकार परिधि के बारह भाग कल्पित किये हुए हैं। इनमें प्रत्येक भाग का नाम 'राशि' है। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है उसको संक्रांति कहते हैं। छः मास तक सूर्य उत्तर की ओर और छः मास तक दक्षिण की ओर से निकलता है। एक को उत्तरायण और दूसरी को दक्षिणायन कहते हैं। उत्तरायणकाल में दिन बढ़ता जाता है और दक्षिणायन मे दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रांति से उत्तरायण शुरु हो जाता है। इसलिए समस्त मानवजाति हृदयोल्लास प्रकट करती है। क्योंकि सूर्य का हमारे जीवन मे महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रकाश और उष्णता देकर नवजीवन का संचार करता है। वेद ने स्वयं स्वस्ति पन्थामनुचरेम—मन्त्र देकर सूर्य का अनुसरण करने का आदेश दिया है। जैसे सूर्य उत्तरायणकाल में आगे बढ़ता है तो हम भी उन्नति की दिशा में चलें। निकृष्ट कर्म करके अधोगति की ओर न चलें। सूर्य अन्धकार का नाश करता है। हम भी अपने हृदय से अविद्यांधकार दूर कर ज्ञान-ज्योति से हृदय को प्रकाशित करदें। इसके अतिरिक्त सूर्य हमें नियमितता का आदेश देता है ताकि हम समय का सदुपयोग करते हुए नियमित और मर्यादित रहें, यही है संक्रांति का प्रेरणादायक सन्देश।

इस दिन शीत अपने यौवन पर होता है। शीत के प्रतिकार के लिए तिल, तेल, तूल का प्रयोग वैद्यकशास्त्र में बताया गया है। इसलिए अग्निहोत्र में तिलों की आहुति का विधान है और कम्बल व घृत दान करने की प्रथा भी है। दान जो आर्य पर्वों पर धर्म का एक स्कन्ध है उसका पालन किया जाता है।

देशकाल और पात्र के अनुसार दिया हुआ दान सार्थक होता है। भारत के सब प्रांतों में तिल, गुड़ के लड्डू बनाकर दान किये जाते हैं।

मकर संक्रांति के पहले दिन लोहड़ी का त्यौहार भी मनाया जाता है। स्थान-स्थान पर अग्नि प्रज्वलित की जाती है जो कि यज्ञ का एक रूप है और उसमें तिल अन्न आदि डालकर लोग खुशियां मनाते हैं और कामनापूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

सामान्य मनुष्य पर्व को मनाने के लिए खाने-पीने तक सीमित रहते हैं यह स्थूल-रूप है। यदि वे मनन और चिन्तन द्वारा परमात्मा की दयालुता को स्वीकार करे और अपने संकल्प को शुद्ध करले तो पर्व का मनाना सार्थक हो सकता है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

आश्विन मास में वर्षा-ऋतु होती है, इसमे सिंह व कन्या राशिया होती हैं। कार्तिक व मर्गसिर मे शरद् ऋतु होती है, इसमे तुला व वृश्चिक राशि होती हैं। पौष व माघ मे हेमन्त ऋतु होती है, इसमे धनु व मकर राशिया होती है। फाल्गुन व चैत्र में शिशिर ऋतु होती है, इनमे कुम्भ व मीन राशिया होती है। इस प्रकार यह वर्ष, मास, तिथि, अयन, नक्षत्र व राशियो का चक्र चलता ही रहता है और यह इस सृष्टि-पर्यन्त चार अरब, बत्तीस करोड वर्ष तक चलता ही रहेगा।

ये सारे ग्रह-नक्षत्र, पृथ्वी आदि सूर्य के आकर्षण से आकाश के मध्य में सदा घूमते रहते हैं। सूर्य आदि लोक भी अपने आकर्षण से अपना और पृथ्वी आदि लोको का भी धारण करने में समर्थ होते है। इसके साथ ही सूत्रात्मा जो वायु है उसके आधार और आकर्षण से सब लोको का धारण और भ्रमण होता है और इन सबका परमेश्वर अपने सामर्थ्य से धारण, पालन और भ्रमण करा रहा है।

सूर्य इनका केन्द्र है जो पृथ्वी से अनुमानत ९ करोड ३० लाख मील दूर है, १३ लाख गुणा बड़ा है। सूर्य तथा इसके चारो ओर घूमने वाले ग्रहो, उपग्रहो आदि को सौर मण्डल कहते है। सूर्य के चारो ओर घूमनेवाले ग्रह जैसे—पृथ्वी ३६५ दिन मे सूर्य की परिक्रमा करती है। बुध ग्रह ८८ दिन मे सूर्य की परिक्रमा करता है। ८८ दिन का ही इसका वर्ष होता है। शुक्रग्रह इसका एक वर्ष २२४ दिन का होता है। यह सूर्य की एक परिक्रमा करता है। यही उसका एक वर्ष होता है। मंगलग्रह ६८७ दिन मे सूर्य की परिक्रमा करता है। बृहस्पतिग्रह ४३३२ दिन मे सूर्य की परिक्रमा करता है। यही उसका एक वर्ष होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा ऐसा उपग्रह है जो पृथ्वी के चारो ओर घूमता है। अनुमानत: चन्द्रमा पृथ्वी से २ लाख ४० हजार मील दूरी पर है। यह लगभग ३० दिनो मे पृथ्वी का एक चक्कर लगाता है।

उत्तरायण में सूर्य के आने से उसके प्रकाश की अधिकता के कारण आज उसके आरम्भ दिवस पर मकर संक्रान्ति को अधिक महत्त्व दिया जाता है। अत: सृष्टि के आरम्भकाल से लेकर ज्योतिष शास्त्र के जाननेवाले आर्य लोग इसे मनाते चले आरहे हैं। इसके महत्त्व और रहस्य का वर्णन वैदिक-साहित्य मे उपनिषदो और वेदो तक मे किया गया है। प्रश्नोपनिषद् मे इसे देवयान नाम से कहा गया है। प्रश्नोपनिषद् में जहा केवलमात्र छ: प्रश्न हैं वहा प्रथम प्रश्न में ही कबन्धी ने महर्षि पिप्पलाद से पूछा था कि—यह सृष्टि किससे उत्पन्न होती है? महर्षि ने उत्तर दिया था—रयि और प्राण से। इसके साथ ही पिप्पलाद ने उत्तरायण और दक्षिणायन की चर्चा करते हुए कहा था—जो दक्षिणायन को छोड़कर उत्तरायण मार्ग से चलते है, जो प्रवृत्ति मार्ग को छोडकर निवृत्ति मार्ग का आश्रय लेते है वे तप, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा और विद्या द्वारा परमात्मा को पाजाते हैं। अत: उत्तरायणकाल को ही शास्त्रो मे श्रेष्ठ माना है। इसी प्रकार इस विषय मे यजुर्वेद का १४ और १५वा अध्याय पढ़िए। इसी कारण से भीष्मपितामह ने उत्तरायण के आगमन की प्रतीक्षा तक शरशैय्या पर लेटे हुए प्राणो का त्याग न किया था।

कैसे मनायें—इस काल मे तिल, तेल, तूल (रूई) का प्रयोग करना चाहिए। ये तीनों चीज जाड़े से बचाव करती हैं। तिल के लड्डू खाये व बांटे। तिल के तेल की मालिश से जाड़ा दूर होगा। पुराणो में इन तीनो चीजो का महत्त्व बताया है। आर्यसमाजो मे अथवा अपने घर के सदस्यो के साथ मिलकर सध्या-हवन यज्ञ का आयोजन करे। यजुर्वेद के १४वे अध्याय के मन्त्र—सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतु०—से विशेष आहुतिया दे। सामग्री में गुड़, शक्कर, तिल की आहुतिया दे। पूर्णाहुति, शांतिपाठ, सर्वे भवन्तु सुखिन:। यज्ञ-रूप प्रभो से सम्पन्न करे। भोजन मे शक्कर, चावल, घी का प्रयोग करे। इसे ऐसे खुशी से मनायें।

आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से

सुखदेव शास्त्री का भाषण सुनिये, तारीख १४ जनवरी, १९९२ समय सायं ७ बजे। विषय—सौर मकर संक्रान्ति।

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

गतांक से आगे—

		रुपये
१	श्री मनीराम आर्य उपप्रधान आर्यसमाज निमाणा जि० हिसार	४५०
२	,, ओमप्रकाश शास्त्री सभागणक दयानन्दमठ, रोहतक	५१
३	,, मन्त्री आर्यसमाज क्योडक, जिला कैथल	५८१

गुरुकुल कुरुक्षेत्र

१	,, देवव्रत आचार्य	११
२	,, तुलसाराम अध्यापक	११
३	,, के० सी० प्रभाकर मुख्याध्यापक	११
४	,, धर्मपाल अध्यापक	११
५	,, ओमप्रकाश अध्यापक	११
६	,, शमशेरसिंह ,,	११
७	,, हंसराज ,,	११
८	,, रूपराम ,,	११
९	,, राजेन्द्रप्रसाद ,,	११
१०	,, कर्मसिंह ,,	११
११	,, नेकीराम ,,	११
१२	,, दयालसिंह ,,	११
१३	,, रामपाल ,,	११
१४	,, इन्द्रमणि ,,	११
१५	,, वेदप्रकाश ,,	११
१६	,, ओमकार ,,	११
१७	,, कुलवीरसिंह ,,	११
१८	,, नरेन्द्रकुमार ,,	११
१९	,, ओमप्रकाश गोस्वामी	११
२०	,, अरविन्द्रकुमार	११
२१	,, आभेराम	११
२२	,, रामेश्वरदास गुप्ता	११
२३	,, जगदीशचन्द्र मुख्य संरक्षक	११
२४	,, कृष्णपाल संरक्षक	५
२५	,, सुखवीरसिंह संरक्षक	५
२६	,, ओमप्रकाश ,,	५
२७	,, विजेन्द्रसिंह ,,	५
२८	,, विरेन्द्रसिंह ,,	५
२९	,, राजेन्द्रसिंह ,,	५
३०	,, बलिन्द्रसिंह ,,	५
३१	,, सतपाल ,,	११
३२	,, जगवीरसिंह ,,	११

श्री चौ० मनफूलसिंह जी सिरसा द्वारा संग्रहीत राशि

१	श्री चौ० मनफूलसिंह सिरसा	१०१
२	,, लूनाराम पन्नीवाला मोटा जिला सिरसा	५०
३	,, रामेश्वर ,, ,, ,,	२०
४	,, इन्द्रपाल ,, ,, ,,	२०
५	,, हंसराज ,, ,, ,,	२०
६	,, प्रतापसिंह ,, ,, ,,	१०
७	,, कृष्णकुमार ,, ,, ,,	२०
८	,, जीतराम ,, ,, ,,	५०
९	,, बेगराज ,, ,, ,,	२०
१०	,, कुरडा कुम्हार ,, ,, ,,	५
११	,, पूर्ण चमार ,, ,, ,,	१०
१२	,, शेरसिंह ,, ,, ,,	१०
१२	गुप्त दान	१५

(क्रमश:)

—सभामन्त्री

मकर सक्रांति एवं लोहड़ी त्यौहार

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

लोहड़ी का त्यौहार सुहाना आया है।
मिलकर सबने सुन्दर हवन रचाया है॥
पर्व मकर-संक्रांति सुन्दर आया है।
मिलकर सबने सुन्दर हवन रचाया है॥

हेमन्त ऋतु अतिपावन यह शीत साथ में लाई।
शुचि शीतल शुद्ध पवन में है भरी हुई तरुणाई॥
मन हर्षाया है॥१

उत्तरायण दिशि से रवि ने बढ़ना आरम्भ किया है।
इसलिए मकर संक्रांति शुभ दिन को महत्त्व दिया है॥
यही समझाया है॥२

तिल, तेल, तूल और तपना होता है गुणकारी।
तिलयुक्त हवन करने से होती है दूर बीमारी॥
सुखी रहे काया है॥३

तिल दान तिलों का सेवन सबको ख्याल रखना है।
यह दान आर्य पर्वों पर सबको जरूर करना है॥
सही बतलाया है॥४

तिल मोदक तिलवे कम्बल जो दान आज कर जाते।
मिलता है यश जगती में शुभ-कर्मों का फल पाते॥
धर्म समझाया है॥५

हम आर्यावर्त्त निवासी हैं आर्य नाम शुभ प्यारा।
एक ओ३म् उपास्य देव है वैदिक सिद्धांत हमारा॥
यही मन भाया है॥६

मकर-सक्रांति पावन-पर्व है

आर्यों का ये "मकर-संक्रांति पावन-पर्व है"।
पर्वों का ये ही मूल है, हम सबको इस पर,गर्व है॥
राम, कृष्ण, ऋषिवृन्द ने, त्यौहार ये माना सदा।
वैदिकधर्म पालन किया, था सत्य को जाना सदा॥

इस दिन घरों में यज्ञ-पावन, आर्यजन करते थे सब।
वैदिक-कथा से मानसिक, पीड़ा सकल हरते थे सब॥
ज्ञान की गंगा यहां, बहती थी प्रजा थी सुखी।
स्वर्ग था संसार में, कोई नहीं था तब दुखी॥

शासक थे सब धर्मात्मा, प्रजा का रखते ध्यान,थे।
वीर व्रतधारी सदाचारी, महाबलवान् थे॥
विश्वहित की योजना, इस दिन बनाते थे सभी।
करते थे नित शुभकर्म जग के, दुख मिटाते थे सभी॥

हम गुरु थे विश्व के, इसका सुखद परिणाम था।
साथी धर्मात्मा थे, हर तरह आराम था।
चोर, जुवारी और मद्यप, तब जगत् में थे नहीं।
व्यभिचारिणी नारियां, इस विश्व में ना थीं कहीं॥

यदि अर्थ इस त्यौहार का, संसार सारा जानले।
गौतम, कपिल, दयानन्द की, यदि सीख दुनियां मानले॥
सद्भावना जागे दिलों में, विश्व के कल्याण की।
सब ईश विश्वासी बनें, बातें तजे अभिमान की॥

वेद के अनुकूल जीवन, हो हमारा हे प्रभु।
सबके जीवन का सहारा, एक प्यारा हो प्रभु॥
विश्वास है हमको जगत्, ये स्वर्ग फिर बन जायेगा।
दीन-दुखिया एक भी, ढूंढा न जग में पायेगा॥

हे ईश अब वरदान दो, मानव बने मानव सभी।
आर्य जगत् में ना नजर, हमको कहीं दानव कभी॥

पं० नन्दलाल 'निर्भय'
सिद्धांत शास्त्री भजनोपदेशक
ग्राम व पो० बहीन, जिला फरीदाबाद (हर०)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का

वार्षिक साधारण अधिवेशन

२ फरवरी, १९९२ को रोहतक में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा दिनांक २९ जनवरी, ९२ के सर्वसम्मति के प्रस्तावानुसार सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में २ फरवरी, ९२ रविवार को होना निश्चित हुआ है।

अतः सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने आर्यसमाज की ओर से वर्ष १९९१ का प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में धनादेश (मनीआर्डर) अथवा सभा के उपदेशकों द्वारा भेजने का कष्ट करें जिससे प्रतिनिधि महानुभावों की सेवा में अधिवेशन का सूचना-पत्र (एजेण्डा आदि) सभा के नियमानुसार १५ दिन पूर्व भेजा जा सके।

निवेदक :
सूबेसिंह सभामन्त्री

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुड़ी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं०, १ एन०आई०टी०, फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजन्सीज, सदर बाजार, गुड़गांव।

भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु अपील

आशा है आपको दैनिक समाचार-पत्रों, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा ज्ञात होगया है कि गढ़वाल तथा उत्तरकाशी में आये भयंकर भूकम्प से लाखों नर-नारी बेघर होगये हैं। हजारों नर-नारी मौत के मुंह में चले गये हैं और अब सर्दी के दिनों में आकाश के नीचे अपना संकटपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अनेक प्रकार के रोग फैल रहे हैं। ऐसी भयंकर तथा दयनीय स्थिति में हम सभी आर्यों का कर्त्तव्य है कि अपने नगर तथा ग्राम से इन भूकम्प पीडित भाइयों के लिए धन तथा गर्म वस्त्र आदि संग्रह करके अपनी सुविधा के अनुसार सभा के मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक, उप-कार्यालय गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद या महर्षि दयानन्द वैदिकधाम पेहवा मार्ग कुरुक्षेत्र के पते पर भेजकर प्राप्ति की रसीद प्राप्त कर लेवे।

सभा की ओर से संग्रहीत धनराशि तथा वस्त्र आदि यथास्थान हरयाणा की जनता की ओर से सामूहिक रूप में भेजी जावेगी और दानदाताओं के नाम सभा के साप्ताहिक पत्र 'सर्वहितकारी' में प्रकाशित किये जावेंगे।

आशा है हरयाणा के आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षण संस्थाये उदारतापूर्वक धन तथा वस्त्र आदि संग्रह करके यथाशीघ्र सभा को भेजकर संगठन का परिचय देवेंगे।

निवेदक :—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	सूबेसिंह	रामानन्द
परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

गांवों में पोस्ट-बाक्स लगाने के निर्देश

नई दिल्ली (एजेंसी)। संचार राज्यमन्त्री राजेश पायलट ने भारत के महा डाकपाल को निर्देश दिये हैं कि वह ५०० से ऊपर की आबादी वाले प्रत्येक ऐसे गांव में पोस्ट-बाक्स उपलब्ध कराये जहां डाकघर खोल पाना आसान नहीं है।

श्री पायलट यहां महाडाकपालों के सम्मेलन के समापन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे। दो दिवसीय इस सम्मेलन में फैसला किया गया कि डाकघरों में कम्प्यूटरीकृत प्रणाली के प्रशिक्षण के लिए कर्मचारी प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाएगा।

साभार : दैनिक नवभारत

वह नहीं जानती थी कि मूंगफली

हांसी, (संजय भुटानी)। गत १५ दिसम्बर को जींद में आयोजित चौ० देवीलाल की रैली में महाराष्ट्र शेतकारी संगठन के नेता अनिल गोटे ने कृषि मन्त्रालय से सम्बन्धित एक ऐसा किस्सा सुनाया जिसे सुनकर उपस्थित जनसमूह ने हंसी का ठहाका लगाया, उन्होंने बताया कि कृषि मन्त्रालय की मूल्य निर्धारण समिति की एक महिला सदस्या महाराष्ट्र में आई तो वे उनके खुद के खेत में आई और उन्होंने उस सदस्या को बताया कि उनके खेत में उन्होंने मूंगफली लगाई हुई हैं तो वह महिला कहने लगी कि उसे तो कहीं भी मूंगफली लगी हुई नहीं दिख रही। उस महिला की बात सुनकर गोटे ने जमीन खोदकर मूंगफली निकाली तो वह यह सब देखकर हैरान होगई और कहने लगी कि यह तो जादू है। किसान नेता अनिल गोटे ने कहा कि जिसको यह ही नहीं पता कि मूंगफली जमीन के नीचे लगती है या ऊपर और वह कृषि मूल्य निर्धारण समिति में हो तो इससे बड़ा मजाक किसानों के साथ क्या हो सकता है और इस प्रकार इस तरह से किसानों का भला किस प्रकार होगा। उनका कहना था कि किसानों को सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष करना होगा, ताकि उनका उत्थान हो सके।

साभार जनसन्देश

बैंक कार्य हिन्दी में होगा

यमुनानगर, २७ दिसम्बर (निस)। नववर्ष को २६ जनवरी से हरयाणा में सभी यूनियन बैंक आफ इण्डिया की शाखायें स्वयं को हिंदी भाषाई घोषित करेंगी और इन ब्रांचों में पूर्ण बैंक कार्य हिन्दी भाषा में सम्पन्न कराया जायेगा।

हरयाणा में यूनियन बैंक आफ इण्डिया की सभी प्रमुख नगरों एवं औद्योगिक क्षेत्रों में कुल मिलाकर सताईस शाखायें कार्य कर रही हैं और इनमें शाखा-स्तर पर हिंदी कार्य निष्पादन कार्यशाला का कार्यक्रम पूर्ण होनेवाला है।

उपरोक्त जानकारी देते हुए यूनियन बैंक आफ इण्डिया की हरयाणा प्रदेश की हिंदी अधिकारी डा० उषा अरोड़ा ने बताया कि इस कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए बैंक ने अपने कर्मचारियों एवं ग्राहकों को उत्साहित एवं प्रेरित करने का लक्ष्य बनाया था जिसे लगभग पूर्ण कर लिया गया है और नववर्ष १९९२ के आगमन पर बैंक की तरफ से यह हरयाणावासियों के लिए एक "उपहार" स्वरूप होगा।

इस समारोह में बैंक के उन कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया जिन्होंने इस क्षेत्र में ठोस कार्य किया था जिसके लिए प्रथम पुरस्कार सुदेशकुमार भाटिया को मिला।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

सरपंच बनने की खुशी न सह सका, चल बसा

फरीदाबाद, २७ दिसम्बर (नोरद)। जिले में चल रहे पंचायत के चुनावों में पास के गांव अटाली में हुए सरपंचों के चुनाव में एक जीते हुए सरपच बिहारीलाल की जीत को खुशी बर्दाश्त न करने से हृदय-गति रुक गई और वे स्वर्ग सिधार गये।

किस्सा यू बताया जाता है कि रिटायर्ड अध्यापक बिहारीलाल (६२) का मुकाबला प्रेमसिंह से था। अपने प्रतिद्वन्द्वी प्रेम की स्थिति बिहारीलाल से काफी मजबूत मानकर चल रहे थे। हताश होकर उन्होंने अपने को हारा ही मान लिया था।

चुनाव सम्पन्न होने के बाद वोटों की गिनती हुई तो मास्टर जी के वोट अपने विरोधी प्रेमसिंह से १४ वोट ज्यादा निकले और वे सरपंच घोषित कर दिये गये। जैसे ही जीत की खबर बिहारीलाल को दी गई, वे खुशी से झूम उठे और खुशी बर्दास्त न करने की वजह से उन्हें दिल का दौरा पड़ गया और उनकी घटना-स्थल पर ही मौत होगई। बिहारीलाल सरपंची का चुनाव तो जीत गये किन्तु जिन्दगी का चुनाव हार बैठे।

साभार : जनसन्देश

सरकारी नौकरियों में १० फीसदी कटौती

नई दिल्ली (एजंसी)। प्रधानमन्त्री नरसिंहराव ने सरकारी नौकरियों में १० प्रतिशत कटौती की घोषणा की है। यह कटौती वरिष्ठपदों पर लागू होगी।

श्री राव ने राष्ट्रीय विकास परिषद् की बैठक में आज कहा कि घरेलू और विदेश-यात्रा व्यय में भी २० प्रतिशत की कटौती की जारही है। मन्त्रियों द्वारा हवाई जहाज की प्रथम श्रेणी में यात्रा करने पर भी पाबन्दी लगाई जारही है।

नौकरियों में कटौती से वरिष्ठ अधिकारियों के हजारों पद कम हो जायेंगे। यह कटौती संयुक्त सचिव और उससे ऊपर के पदों पर लागू होगी।

साभार : दैनिक नवभारत

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३

सृष्टिसंवत् १,९६ ०८, ५३, ०९२

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक ८ १४ जनवरी, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ३५ पैसे

साधारण सभा के सदस्यों की सेवा मे वार्षिक साधारण तथा असाधारण सभा की बैठक की कार्य-सूची (एजेण्डा)

माननीय प्रतिनिधि महोदय, सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण तथा असाधारण अधिवेशन दिनांक २ फरवरी, १९९२ रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में होना निश्चित हुआ है। अतः सभा के सभी प्रतिनिधियों से निवेदन है कि यथा समय पधारें।

विचारणीय विषय साधारण अधिवेशन

१. गतवर्ष दिवंगत हुए आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को श्रद्धांजलि।

२. गत सभा अधिवेशन २५ नवम्बर, १९९० की कार्यवाही की सम्पुष्टि।

३. सभा कार्यालय, वेदप्रचार विभाग, सर्वहितकारी साप्ताहिक, आर्य विद्या परिषद्, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला, महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र आदि के गतवर्ष के कार्यवृत्तान्त तथा आय-व्यय की सम्पुष्टि एवं आगामी वर्ष के प्रस्तावित आनुमानिक आय-व्यय (बजट) की स्वीकृति।

४. वेदप्रचार, शराबबन्दी अभियान तथा पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह को सफल करने पर विचार।

५. प. रघुवीरसिंह शास्त्री यज्ञशाला तथा स्वामी श्रद्धानंद वैदिक पुस्तकालय भवन पूरा करने पर विचार।

असाधारण अधिवेशन

६. सभा के विधान में प्रस्तावित संशोधन करने पर विचार।

७. अन्य आवश्यक विषय सभापति की अनुमति से।

सभापति को विचारणीय विषयों के क्रम में आवश्यक परिवर्तन करने का अधिकार होगा।

भवदीय
सूबेसिंह सभामन्त्री

हरयाणा के नव-निर्वाचित सरपंच-पंचों से अनुरोध

शपथ-ग्रहण समारोह पर पूर्ण नशाबन्दी की मांग करें

आर्यसमाज के त्यागी तपस्वी वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो. शेरसिंह ने एक संयुक्त प्रेस-विज्ञप्ति द्वारा दिसम्बर मास में हरयाणा प्रदेश के नव-निर्वाचित सरपंच तथा पंचों से अनुरोध किया है कि वे १६ जनवरी ९२ को होनेवाले शपथ-ग्रहण समारोह के अवसर पर मुख्यमन्त्री से हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी करने की मांग करें। उन्होंने हरयाणा में प्रतिदिन बढ़ती हुई शराब की सामाजिक बुराई पर चिन्ता प्रकट करते हुए सरकार तथा जनता को सचेत किया है कि यदि प्रदेश में नशाबन्दी न की गई तो हरयाणा की वैदिक संस्कृति तथा आर्थिक ढांचा नष्ट हो जावेगा। अतः हरयाणा बचाना है तो पूर्ण नशाबन्दी करनी आवश्यक है। दोनों आर्यनेताओं ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए वक्तव्य में कहा है कि इस बार सरपंच तथा पंचों में अधिक संख्या नवयुवकों की है। नवयुवक सरपंच तथा पंच अपनी सारी शक्ति इस शराब जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त करके अपने ग्राम में वास्तविक कल्याणकारी कार्य कर सकते हैं।

समालोचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक पत्र आर्य सन्देश का "आर्यसमाज मन्दिर" विशेषांक महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस (दीपावली कार्तिक २०४८ वि०) पर सुन्दर साज-सज्जा के साथ प्रकाशित किया गया है। मूल्य ५ रु० है।

इस विशेषांक में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव, प्रो० शेरसिंह, डा० रामनाथ वेदालंकार, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, प्रो० भवानीलाल भारतीय, प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु', महाशय धर्मपाल, डा० धर्मपाल, डा० महेश विद्यालंकार, कैप्टन देवरत्न आर्य, आचार्य आर्यनरेश, डा. शिवकुमार, श्री मूलचन्द गुप्त, श्री सूर्यदेव, विमलकान्त शर्मा और श्री बख्तराम द्वारा लिखे लेखों में आर्यसमाज की स्थापना से लेकर आज तक एक शताब्दी में हुई आर्यसामाजिक गतिविधियों का पर्याप्त परिचय मिलता है। इनमें कुछ लेखक तो ऐसे हैं जिन्होंने आर्यसमाज के आंदोलन में सक्रिय भाग लिया है और इतिहास बनाया है। ये लेखक ही नहीं अपितु इन घटनाओं के साक्षात् द्रष्टा भी हैं।

विशेषांक के उत्तरार्ध भाग में ४२ पृष्ठों में दिल्ली प्रदेश स्थित आर्यसमाजों के संक्षिप्त परिचय के साथ इन समाजों की वर्तमान गति-विधियों का दिग्दर्शन भी करवाया गया है। अन्त में आर्य-शिक्षण संस्थाओं, आर्यसमाजों और आर्यों द्वारा संचालित उद्योगों के विज्ञापन प्रकाशित किये गये हैं।

इस सुन्दर ऐतिहासिक प्रकाशन के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।

—वेदव्रत शास्त्री

मौरीशस में एक वीर संन्यासी

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने २७ फरवरी, १८८३ को उदयपुर में महाराणा सज्जनसिंह के नौलखा महल में बैठकर अपने अनुयायी आर्यों के नाम अपना अन्तिम "वसीयतनामा" लिखते हुए आर्यों के लिए अपना आदेश पत्र जारी करते हुए लिखा था—"देश-विदेश और द्वीप-द्वीपांतर में वेदों के प्रचार के लिए उपदेशकों की नियुक्ति की जाये" इस आदेश का पालन करने के लिए आर्यसमाज ने अपने जीवन के इन एक सौ सोलह वर्षों में महान् प्रयत्न किये। अनेक उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा देश-विदेश में भेजे गए। जिन्होंने विदेशों में जाकर भारतीय वैदिक संस्कृति का डंका बजाया।

ऐसे महान् वैदिक विद्वानों में आर्यसमाज के लोहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का नाम भी विदेशों में सर्वत्र सम्मान के साथ लिया जाता है। स्वामी जी ने विशेषकर दक्षिण अफ्रीको देशों में जाकर वैदिकधर्म का प्रचार किया था। उन्होंने कीनिया, नैरोबी, युगांडा, मोम्बासा, टांगानीका तंजानिया, फीजी मौरीशस आदि देशों में वैदिकधर्म के प्रचार की धूम मचाई। हालत को सुधारने के लिए महात्मा गांधी ने गुजरात के मणिलाल जी बैरिस्टर को १९०७ में मौरीशस भेजा था। मणिलाल जी ने मजदूरों की दशा सुधारने के लिए प्रयत्न किया, वे उसमें सफल हुए।

नवजागरण का सन्देश देकर भारतीयों को शक्तिशाली बनाने की रूप-रेखा पर जब उन्होंने सोचा तो उन्हें मालूम पडा, पौराणिक अन्धविश्वास, ऊंच नीच भूत प्रेत, जातिभेद और विविध पन्थाई पाखण्डों ने मौरीशस में भारतीयों को निष्प्राण बना दिया है। तत्कालीन आर्यसज्जनों से विचार विनिमय कर आर्यसमाज के सुदृढ संगठन पर विचार किया। किन्तु आपको इतना भी ध्यान रहे कि डा० मणिलाल के आने से पूर्व ही आर्यसमाज की विचारधारा के लोगों के द्वारा १९०३ में मौरीशस के प्रसिद्ध नगर क्यूरपिप में आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी। डा० मणिलाल जी ने आर्यसमाज की स्थापना में तथा आर्यसमाज के प्रचार को प्रगति देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आप जब तक यहां रहे, आर्यसमाज को प्रगतिशील बनाने में सहयोग देते रहे। जाते समय अपना प्रेस भी आर्यसमाज को देगए। इनकी पत्थर की प्रतिमा पोर्टलूई में संसद भवन के सामने लगी हुई है जो मैंने मौरीशस में प्रचार के समय देखी थी।

आर्यसमाज की स्थापना कैसे हुई?

आर्यसमाज की स्थापना में सत्यार्थप्रकाश ने पथ-प्रदर्शक का काम किया। सन् १८९७ में भारत से कुछ भारतीय बंगाली सैनिक अंग्रेजी सेना में मौरीशस आये थे। उनमें से कुछ आर्यसमाजी भी थे। सन् १९०२ में भारत वापिस जाते समय ये महानुभाव जब समुद्री जहाज में बैठने लगे तो समुद्र के किनारे खड़े एक सज्जन श्री भिखारीसिंह को सत्यार्थप्रकाश व संस्कारविधि की दो प्रति देते हुए कहने लगे—लो, यह सत्यार्थप्रकाश, जो तुम्हारे देश के सारे ही पाखण्डजाल को समाप्त करके देश को जागृत तथा स्वतन्त्र करायेगा। भिखारीसिंह ने ये दो कापी श्री खेमालाल को दिखाई। ऐसे सामयिक सुधारक ग्रन्थों को पाकर ये दोनों अपने को भाग्यवान् समझने लगे। इनके एक साथी गुरुजीत दलजीतलाल जी ने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा तो ये प्रभावित हुए। ये तीनों ही बहुत बडे शिक्षित व्यक्ति थे। इन तीनों ने मिलकर १ अप्रैल १९०३ को आर्यसमाज की स्थापना की थी।

डा० चिरंजीव भारद्वाज

डा० मणिलाल जी किसी कारण से मौरीशस से रंगून गये थे। उस समय लाहौर से डा० चिरंजीव भारद्वाज जी भी रंगून आये हुए थे और वहीं डाक्टरी करते थे। साथ ही रंगून में उनके सहयोग से भारतीयों में आर्यसमाज के प्रचार की धूम मची थी। डा० भारद्वाज की योग्यता और तपस्या के पुण्य प्रभाव से रंगून की आर्यसमाजों में नवजीवन आगया था। आपको इतना भी ध्यान रहे कि डा० भारद्वाज आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित थे।

डा० भारद्वाज ने मौरीशस की राजधानी पोर्टलूइस में आकर अपना कार्य आरम्भ किया। वे प्रथम भारतीय डाक्टर थे जो इङ्गलैंड की उच्च डाक्टरी उपाधियों एफ०आर०सी०एस०, एम० आर०, सी० पी०डी०, पी०एच० आदि से सुभूषित और कुशल कार्यकर्त्ता थे। डाक्टर जी आर्यसमाज के कुशल प्रवक्ता एवं महारथी थे। इन्होंने यहां मौरीशस में आकर आर्यसमाज के सुधार-कार्यों को तेजी से शुरु किया। ईसाई विधर्मी प्रचारकों तथा पाखण्डियों के भी होश ठिकाने लगने लगे। साथ ही इनकी धर्मपत्नी सुमंगली देवी ने भी स्त्रियों में वैदिकधर्म प्रचार का बीडा उठाया। उन्हें शिक्षित किया। स्त्री आर्यसमाजों की स्थापना की। अपने प्रचार-कार्य में रहते हुए डाक्टर जी ने १९१२ में आर्य प्रतिनिधि सभा मौरीशस की स्थापना की कोशिश की, किन्तु अंग्रेजी सरकार ने स्वीकृति नहीं दी। सरकार ने प्रतिनिधि शब्द पर आपत्ति की। फिर डा० जी ने आर्य परोपकारिणी सभा के नाम से रजिस्ट्री करवाई।

आर्य संन्यासी की आवश्यकता

इस प्रकार डा० भारद्वाज ने आर्यसमाज के पांव जमाकर १९११ से १९१४ तक कार्य किया। आर्यसमाज का नवीन पौधा लहलहा उठा। इस पल्लवित पौधे को पानी देने के लिये एक आर्य संन्यासी की आवश्यकता थी। ऐसा पत्र डा० भारद्वाज ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को लिखा।

जब मौरीशस में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पहुंचे

तदनुसार १९१४ में आर्यसमाज का यह वीर संन्यासी, लोहपुरुष, महान् भारी भरकम पहलवान, तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी, वेदों का मर्मज्ञ विद्वान्, सिद्धहस्त आयुर्वेद चिकित्सक, मोही ग्राम का निर्मोही साधु समुद्री जहाज से समुद्र के समान आर्यसमाज के प्रचार के लिए हृदय में महर्षि दयानन्द की भावनाओं से प्रेरित होता हुआ मौरीशस की पवित्र धरती पर पोर्टलूई राजधानी के बन्दरगाह पर उतरा। हजारों प्रवासी भारतीयों ने आकर इनका स्वागत किया।

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महान् तपस्वी, जितेन्द्रिय आर्य सन्यासी थे। वे बहुत ही कष्टसहिष्णु थे। उन्होंने मौरीशस में आते ही प्रतिदिन ग्राम-ग्राम में १५-२० मील पैदल चलकर आर्यसमाजों में प्रचार करना आरम्भ कर दिया। उनदिनों मौरीशस में रेलों से देश में आना-जाना होता था। रेलों का समय विभाग प्रचार-कार्य में अनुकूल नहीं होता था। अतः वे एक दिन में ३५ मील तक पैदल चलकर ही लोगों से सम्पर्क करके ग्रामों व नगरों में प्रचार करते थे। हजारों लोग, जो सब वर्गों ईसाई, मुस्लिम, क्रियोल हब्शी, सनातनी आदि थे, विशेषकर स्वामी के दर्शन ही करने आते थे। वे उन्हें देखते ही रहते थे। आपके वेदप्रचार ने दो वर्ष में ही शिशु आर्यसमाज को जवान बना दिया। स्वामी जी का व्यक्तित्व स्वयं आर्यसमाज था। कोई भी व्यक्ति जो उन्हें देख लेता था व उनके श्रीमुख से वेदप्रवचन सुन लेता था वह उनका हो और आर्यसमाज का ही हो जाता था। आपकी सत्यप्रियता एवं प्रभापूर्ण चेहरे को देखकर पौराणिक ब्राह्मण भी आपका यशोगान करते थे। स्वामी जी ने मौरीशस में अनेक स्थानों पर आर्यसमाजों की स्थापना की। मौरीशस में भारत से जानेवाले उपदेशकों के लिए मार्ग साफ कर दिया। १९१३ में रजिस्टर्ड आर्य परोपकारिणी सभा को व आर्य प्रतिनिधि सभा को मिलाकर संयुक्त रूप से "आर्यसभा" की स्थापना की, जो आजकल मौरीशस में आर्य-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्थिक साम्राज्यवाद बनाम सम्पुष्ट सामाजिक-आर्थिक संरचना

—प्रो० शेरसिंह भूतपूर्व सदस्य योजना आयोग

गांधी दर्शन की प्रासंगिकता

गांधी शब्द के साथ जुड़ गए हैं वे विचार और वह चिन्तनशैली जिनके द्वारा शोषणमुक्त समाज की रचना की जा सकती है। गांधी जी के विचारों और उनके जीवनदर्शन से विश्व के अनेक देशों के मनीषी प्रभावित हुए और दिनोदिन उनका प्रभाव बढ़ता ही जारहा है। विश्व की ज्वलन्त समस्याओं के हल खोजते हुए विचारशील और बुद्धिमान् लोग गांधी के विचारों की ओर आकर्षित होते जारहे हैं। गांधी जी के श्रद्धालुओं तथा उनके विचारों के प्रति आस्था रखनेवाले लोगों की संख्या भारत में बहुत बढ़ी है और अब तो जो उनके घोर विरोधी रहे, वे भी नतमस्तक हैं। विडम्बना यह है कि जो नेता गांधी जी का गुणगान करते हैं, वे काम बिल्कुल विपरीत करते हैं। यह काम अधिकतर सभी दलों के राजनेता करते हैं। आज सार्वजनिक जीवन में अग्रणी बहुत कम ऐसे नेता और कार्यकर्ता रह गए हैं जो हृदय से गांधी जी के विचारों को मानते हैं, उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं और अवसर मिले तो अमल में लाना चाहते हैं। परन्तु ऐसे लोग अकेले पड़ते जारहे हैं और उनको कभी ऐसा अवसर मिल पाएगा इसकी सम्भावना दिन-प्रतिदिन कम होती जारही है।

राजनेताओं को जब कहने का कोई साहस करता है कि तुमने गांधी को तबेले में तो बांध दिया है उससे काम तो ले लिया करो, तो एकदम कह उठते हैं कि गांधी जी की बात अव्यावहारिक है चलनेवाली नहीं, समय और साधन बर्बाद करना व्यर्थ है। ऐसे लोगों के पास न विचार है, न कार्यक्रम, दाव लग गया, लगा रहे। उसके लिए जो करना हो करते जाओ और मौज लूटो। यही कारण है देश में बाजारी संस्कृति और बाजारी अर्थव्यवस्था पनपने की। इसको उचित, तर्कसंगत और दोषमुक्त प्रतिपादित करने के लिए उपस्थित होगए हैं अर्थशास्त्री। इसी व्यवस्था को अपनाने की शर्त रखदी है विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष ने भारत को अर्थसंकट से उबारने की। अब तो इनके हौसले बुलन्द हैं और बाजारी अर्थव्यवस्था का ढोल पीटकर घोषणा कर रहे हैं कि हर वस्तु और हर व्यक्ति बिकाऊ है, उसकी कीमत है, वह देकर आप जिसे चाहो जब खरीद सकते हो।

दूसरी एक विचारधारा थी साम्यवाद की। इनके सिद्धांतशास्त्री गांधी जी को पूंजीपतियों का एजेण्ट कहते नहीं शर्माते थे। आज ये लोग मुंह छिपाए घूम रहे हैं, क्योंकि तथाकथित साम्यवाद का प्रयोग रूस में असफल होगया। असफल इसलिए हुआ क्योंकि वह वास्तव में साम्यवाद नहीं था, पूंजीपति व्यक्ति न रहकर राज्य बन गया और उसके कारिंदे छोटे-छोटे सूबेदार बनकर सर्वेसर्वा होगए। अर्थकेन्द्रित होने के कारण तथा महान् संकल्प के अभाव में व्यवस्थापक तो धनसंचय में लग गए, भ्रष्ट होगए और साधारण मजदूर सब सुविधाओं से वंचित गुलाम बनकर रह गया और स्वतन्त्रता और सुविधाओं के अभाव में कामचोर होगया। इसी कारण सारी व्यवस्था बैठ गई। गांधी और टालस्टाय जैसे महात्माओं से प्रेरणा लेकर चलते तो यह न होता। यह असफलता मानव-मानव के बीच समानता लानेवाले दर्शन की नहीं, असफलता तो संकल्पहीन अर्थकेन्द्रित व्यवस्था जो भ्रष्ट होगई थी उस कुव्यवस्था की है। परन्तु प्रयोग करनेवाला देश और उसके साथी पिट गए। अब छोटे-छोटे पूर्वी योरूप के देश ही नहीं, रूस का गोर्वाचोव भी कटोरा लेकर पूंजीपति देशों से भीख मांग रहा है। पूंजीपति देश मजे ले रहे हैं। अर्थकेन्द्रित चिंतन में से सहृदयता, मानवता, त्याग, प्रेम, दया, परोपकार कैसे निकलेंगे? इसमें से तो बाजारी संस्कृति और बाजारी अर्थव्यवस्था ही निकल सकती है, इसीलिए सभी पिटे हुए साम्यवादी देश बाजारी अर्थव्यवस्था का राग अलाप रहे हैं। मानवीय मूल्यों का उपहास करनेवालों का मनोबल एक झटके से ही शून्य हो गया।

गरीबों का शोषण करनेवालों की आज भारत में भी बन आई है। तथाकथित अर्थशास्त्री और बुद्धिजीवी देश को आर्थिक संकट से उबारने के लिए बाजारी अर्थव्यवस्था को रामबाण औषधि प्रमाणित करने में लगे हुए हैं और बड़े घरानों के समाचारपत्रों के पन्ने काले करने में अपना पसीना बहा रहे हैं।

यह समझ लेना आवश्यक है कि बाजारी अर्थव्यवस्था में वही जीयेगा जिसकी जेब में खरीदने के लिए पैसे होंगे। जहां जनसंख्या थोड़ी है और काम करने पर मजदूर को अच्छे पैसे मिल जाते हैं वहां खरीदने की क्षमता होने के कारण हर व्यक्ति न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। वहां यह अर्थव्यवस्था चल सकती है। परन्तु भारत जैसे देश में जहां ४० करोड़ लोगों को दो जून भरपेट रोटी के भी लाले पड़े रहते हैं और जहां बेरोजगारी है कभी-कभी काम मिलता है और उससे जो थोड़ा-सा कमाता है उसे छीनने के लिए सभी दलों की सरकारों ने होड़ लगाकर कदम-कदम पर शराब की दुकानें खोल रखी हैं, उस देश की ४० करोड़ जनता कैसे जीएगी। जो होने जारहा है उससे अधिक निर्मम और क्रूर मजाक गरीबों के साथ और नहीं हो सकेगा। ग्रामीण संस्कृति में सवेरे सब गरीबों को मुफ्त लस्सी और खाना मिल जाता था। पहले तो गांव में दूध को पूत बेचने समान माना जाता था। दूध भी नहीं बिकता था। अब तो दूध क्या लस्सी भी बाजार में आगई है। यह बाजारी संस्कृति आई तो क्या दशा होगी इन करोड़ों गरीबों की। देश को बाजारी संस्कृति से बचाने के लिए ही गांधी जी ने ग्राम स्वराज्य का विचार दिया था।

अर्थकेन्द्रित संस्कृति में जिसका दाव लगे वह अर्थसंचय में ही पूरी शक्ति लगा देता है। इस संस्कृति में प्रजातन्त्र का जो रूप हो सकता है आज वही देखने को मिल रहा है। आज हर विधायक, मन्त्री, चेयरमैन आदि बनकर धनसंचय में लगा हुआ है, चुनाव महंगे होगए हैं, पीछे धन लगाया है, आगे कमाना है। जहां सारा तन्त्र रंगीन पैसे के सहारे खड़ा हो, वहां प्रजातन्त्र की बात करना मात्र छलावा है। जब राजनेता, नौकरशाही तथा व्यापारी उद्योगपति की दुरभिसंधि होगई, तब खुली लूट चलेगी और वह चल रही है। राष्ट्रपति पद्धति में पूरे देश का चुना हुआ राष्ट्रपति विधायकों पर निर्भर नहीं करेगा, शासन में स्थिरता आएगी और जब विधायकों और सांसदों के पास शासन चलाने और बदलने की शक्ति नहीं होगी तो कौन देगा उनको चुनाव के लिए पैसे? तब शायद कुछ ढंग के लोग सांसद विधायक बन सकें। प्रजातन्त्र के टिकने का यही रास्ता बचा है।

आर्थिक संकट

कैसी विडम्बना है कि जिस बाजारी संस्कृति के कारण देश में आर्थिक संकट आया तथाकथित बुद्धिजीवी उसी व्यवस्था को लागू करके देश को संकट से उबारने की बात कर रहे हैं। उनका कहना है कि गरीब आदमी को मुंह नहीं लगाना चाहिए। खाद और खाद्यान्नों पर इमदाद (सबसिडी) देकर बेकार बजट घाटा उठाया जारहा है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का आदेश मानकर यह सबसिडी बन्द करो। बजट का घाटा ८.७ प्रतिशत से घटाकर ६.५ प्रतिशत पर ले आओ। ऋण लो, पुराने ऋण का सूद चुकाओ, बहुदेशीय कम्पनियों को नई टेक्नालोजी के साथ ले आओ। उनको ५१ प्रतिशत भागीदार बनाकर बढ़िया चीजें देश में बनाने दो और फिर मौज उड़ाओ। कालाधन कितना ही हो उसको छेड़ने की क्या जरूरत है। उसी के द्वारा तो मौजमस्ती होती है। गरीबों की सबसिडी समाप्त करदो। अब उनके लिए कालेधन का दान मांगलो। इन बुद्धिजीवी अर्थशास्त्रियों के हिसाब से तो ये दानी हैं, कौन कहता है ये अपराधी हैं।

(क्रमशः)

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

१. दिनांक २३ दिसम्बर को आर्यसमाज मन्दिर रेवाड़ी में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। रेवाड़ी के अनेक आर्य नर-नारियों ने इसमें भाग लिया। सर्वश्री म० रामचन्द्र आर्य, ओमप्रकाश ग्रोवर, मातूराम प्रभाकर, रामकुमार शर्मा के अतिरिक्त सभा के उपदेशक प० चन्द्रपाल शास्त्री ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला तथा उनके पदचिह्नों पर चलकर राष्ट्र और धर्म की रक्षा करने की प्रेरणा की।

—मन्त्री आर्यसमाज

२. सभा द्वारा सचालित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में २४ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस गुरुकुल भवन में मनाया गया। इस अवसर पर सभा के मन्त्री सर्वश्री सूबेसिंह, सभा के उपमन्त्री सत्यवीर शास्त्री तथा विजयकुमार पूर्व उपायुक्त आदि ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को सबोधित करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के महत्त्व तथा गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली पर विचार रखे।

३. आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद में २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के अवसर पर प्रातःकाल ६ बजे सिटीपार्क में यज्ञ के पश्चात् नगर में प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। जिसमें गुरुकुल गदपुरी के ब्रह्मचारियो के अतिरिक्त आर्य वीरदल के स्वयसेवकों ने भी भाग लिया। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आर्यसमाज मंदिर मे पं. भीमसेन विद्यालंकार की अध्यक्षता में मनाया गया। सर्वश्री इन्द्रदेव शास्त्री, आचार्य ओमप्रकाश सिद्धांत शिरोमणि, बालकृष्ण शास्त्री, स्वामी सिंहमुनि मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल गदपुरी आदि ने स्वामी जी की जीवनी पर प्रकाश डाला।

४. आर्यसमाज सेक्टर २२-ए में चण्डीगढ़ की सभी आर्यसमाजों द्वारा केन्द्रीय आर्य सभा, चण्डीगढ के तत्वाधान मे हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस दिनांक २२-१२-९१ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती के सभापतित्व में अनेक स्थानीय वक्ताओं द्वारा स्वामी जी के बहुमुखी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओ से उनके सुकृत्यो का अनुसरण करने का आह्वान किया गया। इसी उपलक्ष्य मे १७-१२-९१ से स्वामी जगदीश्वरानन्द जी द्वारा वेदकथा की गई। इस अवसर पर प्रीतिभोज का आयोजन भी किया गया। आर्य भजनोपदेशक श्री अमरसिंह जी ने ईशभक्ति के गीतों द्वारा श्रोताओं को आनन्दविभोर किया। महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय की बालिकाओं द्वारा ईश्वरभक्ति के मधुर गीत प्रस्तुत किये किये।

—केदारसिंह आर्य

नवयुग निर्माण

जुट जायें हम सब मिलकर, नवयुग के निर्माण में।
आओ हम खुशहाली बो दें, फिर से इसी जहान में॥

ये धरती है पूज्य हमारी, ये हम सबकी माता।
हर किसान इसके वरदानों से, दाता कहलाता॥
ये वरदान हमें मिलते हैं, खेतों में खलिहान में।
आओ हम खुशहाली बो द, फिर से इसी जहान में॥१

सब बेटे मिलकर आज संवारे, धरती के रूप को।
सहते जाते, हसते जाते, जाड़ा, पानी, धूप को॥
बहे पसीना तन से श्रम का, माता के स्नान में॥२

मा को लहराती फसलों की, हरियाली हम दे जायें।
मस्ती में मां की महिमा का, सब मिल करके गुण गायें॥
फूल चढ़ायें हम पूजा के, उसकी हर मुस्कान में॥३

जो प्रसाद हमको माता दे खुद खायें और खिलायें।
माता के वरदानो से हम, सबके कष्ट दूर भगायें॥
दर्शन कर अन्नदाता के, सब ही श्रेष्ठ किसान में॥४

कहीं न ऐसा हो कि हमारे, रहते मां बदनाम हो।
रहते हुए अन्नदाता के, कही न भूखी शाम हो॥
व्रत ले, दाग न लगने देंगे, मा की पावन शान में॥५

प्रेषक : ब्र० दिनेशकुमार, चरखी दादरी

द्राक्षादेवी प्यारेलाल परोपकारी ट्रस्ट की सम्पत्ति पर स्थगनादेश

कुछ बैंक/डाकखाना/कम्पनी में श्री हरकिशन मलिक निवासी सी-४, सी०सी० कालोनी देहली-७ का खाता अथवा शेयर है जिसमें उनके रुपये जमा हैं। श्री हरकिशन मलिक जी का ३-११-८५ को कत्ल हुआ था। उन्होंने अपने जीते-जी दिनांक २०-२-१९८० को अपने माता पिता के नाम पर एक पंजीकृत ट्रस्ट द्राक्षादेवी प्यारेलाल की स्थापना की थी जिसके अनुसार श्री हरकिशन जी की मृत्यु के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक ही उनकी समस्त चल व अचल सम्पत्तियों की ट्रस्टी है। इस बाबत आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक ने श्री पृथ्वीराज अतिरिक्त जिला न्यायाधीश (ए० डी०जे०) देहली के न्यायालय में जेरधारा ९२ सी पी सी के तहत मुकदमा भी 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा बनाम श्री जयपाल आदि' दायर कर दिया है और जिसमें न्यायालय ने सम्बन्धित चल व अचल सम्पत्ति के बारे में दिनांक २३-१२-९१ को स्थगनादेश (स्टे आदेश) पारित कर दिया है।

अतः इस पत्र द्वारा सम्बधित बैंक मैनेजरों तथा कम्पनियों को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त मुकदमे के निबटारे होने तक आपके यहां श्री हरकिशन मलिक द्वारा जमा रकम को किसी भी व्यक्ति के नाम हस्तांतरित न करें अन्यथा इसकी जिम्मेवारी आपकी होगी।

—केदारसिंह आर्य
मुख्त्यारेआम आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

शराब ने तंग किया जग सारा

शराब ने तंग किया जग सारा।
जिसको इसकी आदत पड़ गई मारा गया बेचारा॥

झूठी शेखी-ध्यान दिखाते, पीते और पिलाते,
अपने घर को अपने हाथों देखो आग लगाते।
पीते-पीते महीनेभर में बिल बन गया बड़ा भारा।
शराब ने तंग किया जग सारा ··· १

पीकर शराब शराबी जी, अपने घर में आए,
पत्नी भरी क्रोध में बैठी क्या तेरा कलेजा खाए॥
पत्नी के सिर डण्डा मारा खून का बहे फुवारा।
शराब ने तग किया जग सारा····· २

बच्चे सारे डर के मारे इधर-उधर छिप जाते।
तड़फ-तड़फ के भूख के मारे भाग कही वह जाते॥
झूठे बर्तन किये साफ होटल का लिया सहारा।
शराब ने तंग किया जग सारा····· ३

कहीं-कहीं जहरीली शराब से सैंकड़ों ही मर जाते।
छोटे-छोटे बच्चे पत्नी एकदम अनाथ हो जाते॥
फिर भी इस पापिन शराब से मिलता ना छुटकारा।
शराब ने तंग किया जग सारा ··· ४

मेरे प्यारे देशवासियो तुम ऋषियों की संतान।
अपनी हानि-लाभ समझकर कुछ तो करो तुम ध्यान॥
प्रभाकर की सीख मानलो हो कल्याण तुम्हारा।
शराब ने तग किया जग सारा।
जिसको इसकी आदत पड़ गई मारा गया बेचारा॥

रचयिता : कप्तान मातूराम शर्मा प्रभाकर (रेवाड़ी)

आचार्य महामुनि का देहान्त

श्रद्धेय गुरुवर आचार्य महामुनि जी गुरुकुल भैंसवाल का १९-१२-९१ को दिन के १०-३० बजे कुलभूमि में ८२ वर्ष की आयु में देहान्त होगया।

उनकी स्मृति में २९-१२-९१ को पूज्य स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में गुरुकुल को यज्ञशाला में शांति-यज्ञ किया गया। श्रद्धेय आचार्य जी को आत्मा को सद्‌गति प्रदान करने की परमप्रभु से प्राथना की गई। इसके बाद आचाय बहिन सुभाषिणी जी कन्या गुरुकुल खानपुर कलां, जिला सोनीपत की अध्यक्षता में शोकसभा का आयोजन किया गया। जिसमें उनके शिष्यों, श्रद्धालुभक्तों एवं पारिवारिकजनों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित को।

जिनमें प्रमुख थे—सर्वश्री महेश्वरसिह शास्त्री, सुखदेव शास्त्री, बलवीर शास्त्री, प्रो० इन्द्रदेव, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार, डा० ईश्वरदत्त विद्यालंकार, प्रो० दयासागर विद्यालंकार, रामधारी शास्त्री जींद, मन्त्री आयसमाज जींद शहर आदि।

अन्त में सभी ने दो मिनट मौन खड़े होकर उनकी आत्मा को सद्‌गति के लिए परमप्रभु से प्राथना की। यह शोक-प्रस्ताव पास किया गया।

श्रद्धेय आचार्य महामुनि जी श्रद्धेय महात्मा भक्त फूलसिह जी के मानस पुत्र थे, जिन्होंने आजीवन ब्रह्मचय-व्रत का पालन करते हुए निःस्वार्थभाव से गुरुकुल भैंसवाल की सेवा की। जिनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक छात्र समाज-सेवा तथा शिक्षा के लिए तैयार हुए। जो अपने क्षेत्र में निष्ठापूर्वक कार्य कर रहे हैं।

ऐसे महामनस्वी तपःपूत समाज-सेवी के आकस्मिक निधन से रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए परमात्मा हमें बल प्रदान करे तथा साथ ही इस दुखद आघात को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

—सत्यपाल शास्त्री
आचार्य गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा
भैंसवाल कलां, जिला सोनीपत

श्रीमती अपराजिता भल्ला का देहावसन

आर्यजगत् के प्रसिद्ध नेता एवं विद्वान् स्वर्गीय प. बुद्धदेव जी विद्यालंकार की विदुषी सुपुत्री श्रीमती अपराजिता भल्ला का २० दिसम्बर, १९९१ को जयपुर में ६८ वर्ष की आयु में देहावसान होगया। आप स्वतन्त्रता सेनानी थीं और १९४२ के भारत छोडो आंदोलन में जेल गई थी। आप कवयित्री, लेखिका तथा सम्पादक भी थीं। आपकी रचनायें भारतभर के समाचारपत्रों में प्रकाशित होती थी।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

गतांक से आगे—

			रुपये
१		श्री प्रधान आर्यसमाज गोन्दर जि० करनाल	१००
२	,,	चौ० जयसिंह प्रधान आर्यसमाज कुताना जि. करनाल	१००
३	,,	आर्यसमाज साकौती जि० सोनीपत	२०
४	,,	चौ० सूरतसिंह आर्य नम्बरदार प्रधान आर्यसमाज सौबोली जि० सोनीपत	५१
५	,,	ब्र० मागेलाल आर्य आर्यसमाज सोबोली जि. सोनीपत	११
६	,,	सत्यपाल एडवोकेट अम्बावता सं. ४ म.नं. ९९१ फरीदाबाद	१०१
७	,,	भूपराम सुपुत्र चौ० डल्लनसिंह आर्य बनचारी जि० फरीदाबाद	५१
८	,,	आर्यसमाज सैक्टर ३ फरीदाबाद	५१
९	,,	मन्त्री आर्यसमाज कंवारी जि० हिसार	५१
१०	,,	,, ,, नलवा ,,	५१
११	,,	महावीरप्रसाद प्रभाकर बवानीखेडा जि० भिवानी	५१
१२	,,	इन्द्रजीत गुप्ता ,, ,,	५१
१३	,,	धर्मवीर सु० श्री भगवानदास डिपू होल्डर बवानीखेडा जि० भिवानी	५१
१४	,,	मा० बलजीतसिंह आर्य चिमनी जि० रोहतक	२५
१५	,,	धर्मपाल शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज मांडवा जि. भिवानी	१००
१६	,,	कप्तान तिरखाराम ग्राम धाधलान जि० रोहतक	१०१
१७	,,	मन्त्री आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका जि. गुडगावां	५००
१८	,,	प्रतापसिंह आर्य ग्राम किसरेटी जि. रोहतक	२५
१९	,,	मन्त्री आर्यसमाज रामपुर कुण्डल जि. सोनीपत	५१

(क्रमश:)

—सभामन्त्री

वेदप्रचार

दिनांक ४-१-९२ को गांव आसन जि. रोहतक में श्री जयपालसिंह भजनोपदेशक व श्री हरध्यानसिंह आर्य की भजनमण्डलियों ने श्री दयानन्द के सरपंच बनने के उपलक्ष्य में वेदप्रचार किया। जिसमें शराब, दहेज, पाखण्ड व गांव में बढती हुई कुरीतियों का पुरजोर खण्डन किया। गाव की मौजूदा पंचायत ने विश्वास दिलाया कि हम अपने गांव में नशाबन्दी का पूरा यत्न करेंगे। सभा को १४१ रु० दान दिया गया।

आर्यसमाज सोहटी जि० सोनीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री बलवीरसिंह सरपंच, उपप्रधान—श्रीलाल, मन्त्री—कवलसिंह, उपमन्त्री—रतिराम, कोषाध्यक्ष—प्रेमसिंह।

आदर्श विवाह

श्री सुमरनसिंह पटवारी गांव भीतरौल जिला फरीदाबाद ने अपने सुपुत्र चि० शिवकुमार की शादी चौ० फकीरासिंह की पौत्री आयु० विमलेश कुमारी गांव अलावलपुर जि० फरीदाबाद के साथ दिनांक १२-१२-९१ को बिना दहेज तथा ११ बाराती ले जाकर वैदिकरीति से कराई। पाणिग्रहण संस्कार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक श्री भजनलाल आर्य द्वारा संपन्न कराया। सभा को ५१ रु. दान दिया।

आर्य पर्वों की सूची

१	मकर संक्रान्ति	१४-१-९२	मंगलवार
२	बसन्त पंचमी	९-२-९२	रविवार
३	सीता अष्टमी	२५-२-९२	मंगलवार
४	दयानन्द बोधरात्रि	२-३-९२	सोमवार
५	लेखराम तृतीया	७-३-९२	शनिवार
६	होली	१८-३-९२	बुधवार
७	नव सस्येष्टि	१९-३-९२	बृहस्पतिवार
८	आर्यसमाज स्थापना दिवस	४-४-९२	शनिवार
९	रामनवमी	११-४-९२	शनिवार
१०	हरि तृतीया	१-८-९२	शनिवार
११	श्रावणी उपाकर्म	१३-८-९२	गुरुवार
१२	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२१-८-९२	शुक्रवार
१३	विजयदशमी (सिद्धांती जयन्ती)	६-१०-९२	मंगलवार
१४	श्री गुरु विरजानन्द दिवस	९-१०-९२	शुक्रवार
१५	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	२५-१०-९२	रविवार
१६	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३-१२-९२	बुधवार

नोट—सभी आर्यसमाज इन पर्वों को सोत्साह मनावें और इन्हें आर्यसमाज के प्रचार का साधन बनावें।

—सभामन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

समाज का शक्तिशाली संगठन है। जिसके अधीन ५०० आर्यसमाज चलती हैं। स्वामी जी से प्रेरणा पाकर ही अनेकों जवान आर्यसमाज के प्रचार में लगे। जिनमें पं० काशीनाथ प्रमुख थे।

स्वामी जी मोका प्रांत के संपीयर के अन्तर्गत ग्राम नुबेल-दे-कुवेत में अपने "स्वतन्त्रानन्द आश्रम" में आकर ठहरते थे। उनके आश्रम के साथ ही नुबेल-दे-कुवेत ग्राम का आर्यसमाज मन्दिर है जो बहुत ही सुन्दर है। जब मैं गतवर्ष नुबेल-दे-कुवेत आर्यसमाज के यजुर्वेद यज्ञ में सम्मिलित हुआ तो स्वामी जी के आश्रम में भावविभोर होकर एकपल को सब कुछ भूल गया। स्वामी जी के विषय में पूज्य मोहनलाल मोहित जी से सब कुछ सुना था। भारत में (हरयाणा में) स्वामी जी के अनेक बार दर्शन किये थे। उनकी प्रचार की शैली के बारे में पूछा था तो उन्होंने बहुत ही श्रद्धा से सब कुछ बताया। स्वामी जी वहां प्रचार करते समय नेत्ररोग से पीड़ित होगए। उन्हें चिकित्सा के लिए २० नवम्बर, १९१६ को वापिस भारत लौटना पड़ा।

मौरीशस में स्वामी जी ने राजनीतिक जागृति पैदा की। जिनसे प्रेरणा पाकर मोहनलाल मोहित, शिवसागर रामगुलाम, वासुदेव विष्णुदयाल आदि आर्यसमाज के लोगों ने स्वतन्त्रता के संग्राम में भाग लिया। इसी कारण १२ मार्च, १९६८ को मौरीशस स्वतन्त्र होगया। उसके पश्चात् वे पुन: १९५३ में मौरीशस गए। मौरीशस में आर्यसमाज के प्रचार का मुख्यश्रेय स्वामी जी को ही है। वैसे तो उनके पश्चात् अनेको विद्वान्, साधु-सन्यासी, आचार्य, शास्त्री मौरीशस गए हैं जिन्होंने बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किये हैं। उनका इतिहास फिर कभी··· । ऐसे वीर सन्यासी, आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी को उनके जन्मदिवस पर सादर श्रद्धांजलि। साथ ही उनसे प्रेरणा पाकर आर्यसमाज के प्रचार-कार्य के लिए एक दृढ़संकल्प भी।

शराबबन्दी समर्थक सरपंचों तथा पंचों की सूची

दिसम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में हरयाणा की ग्राम पचायतों के चुनाव सम्पन्न हुए हैं। कुछ ग्राम पचायतों में ऐसे सरपच तथा पंच चुने गये हैं जो स्वय भी शराब आदि का सेवन नहीं करते और अपने ग्राम में भी शराबबन्दी करवाने में रुचि रखते हैं। सभा के सर्वहितकारी पत्र में इस प्रकार के सरपंचों तथा पंचो की सूची प्रकाशित की जावेगी और उनका सहयोग प्राप्त करके ग्राम में शराबबन्दी का प्रस्ताव पारित करवाकर आगामी वर्ष से शराब के ठेकों की नीलामी बन्द करवाने तथा शराब आदि पीने पर पूर्ण पाबन्दी लगाने के पंचायती नियम लागू करवाये जावेंगे।

अत: हरयाणा के आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध है कि अपने ग्राम तथा निकटवर्ती ग्राम पंचायतों के चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपचो तथा पचो को सूची तथा पासपोर्ट साइज के काले रंग में फोटो को प्रति यथाशीघ्र आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक के कार्यालय में भेजने का कष्ट कर।

आशा है आप हरयाणा प्रदेश से शराब जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त करवाने के पवित्र कार्य में सभा को सहयोग देंगे।

—सूबेसिंह सभामन्त्री

अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज कंवारी (हिसार) के वरिष्ठ सदस्य श्री पहलवान वजीरसिंह आर्य बी० ए० सुपुत्र श्री हरिकिशन जो किसान परिवार से है, का शुभ विवाह दिनांक २२-१२-९१ को जिला नालन्दा (बिहार) के श्री रामभजन जी की सुपुत्री संगीता बी०एड० (हिन्दू तेली) जो बिहार प्रांत में उच्च स्वर्णजाति मानी जाती है, वैदिक-रीति से सस्कार सपन हुआ।

विवाह सस्कार आचार्य प० रामस्वरूप शास्त्री द्वारा किया गया। श्री दलबीरसिंह स्योराण भी बधाई एव धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने कई अपवादो एव बाधाओं को लांघकर बड़ी हिम्मत एव उदारता के साथ एक सच्चे आर्य का परिचय देते हुए विवाह के सारे कार्यक्रम की रस्म व व्यवस्था अपने निवास म०न० ३१० डोफेंस कालोनी हिसार में की। इस शुभ अवसर पर शहर के आर्य नरनारियों ने भी बढ-चढ़कर भाग लिया। वर-वधू पक्ष की ओर से १०१-१०१ रुपये गु०कु० आर्यनगर तथा २१-२१ रुपये आर्यसमाज कवारी को दान दिया। इस साहसिक कदम अन्तर्जातीय विवाह को सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशसा की गई।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
प्रधान आर्यसमाज कवारी

हरयाणा के मुख्यमन्त्री के नाम सभाप्रधान का पत्र

पंजाब विधानसभा ने १९६२ में एक कानून बनाया था कि यदि पंचायत प्रस्ताव पास करके सरकार के पास भेज दें कि उनके गाव में शराब का ठेका नहीं खुलेगा और यदि है तो बन्द कर दिया जाए, तो सरकार को उस प्रस्ताव पर अमल करना पड़ेगा। कानून के अन्तर्गत सरकार ने जो नियम बनाए उनके अनुसार पचायत का प्रस्ताव सरकार के पास ३० सितम्बर तक पहुंचना चाहिए।

यह कानून और उसके अन्तर्गत बनाए नियम हरयाणा में लागू होते हैं।

दिसम्बर, १९९१ के अन्तिम सप्ताह में आपने सभी पचायतो के चुनाव करवा लिए हैं। मेरा आपसे यह अनुरोध है कि इन नई पचायतों को भी इस कानून का लाभ उठाने का अवसर दिया जाए। अत: मेरा यह सुझाव है कि नई पचायतो को ३१ जनवरी १९९२ तक अपने प्रस्ताव भेजने का अवसर दिया जाए और ३० सितम्बर, १९९१ को इस वर्ष के लिए अनिवार्य रूप से अन्तिम तिथि न माना जाए।

मैं आशा करता हू कि आप मेरे इस सुझाव को स्वीकार करते हुए नई चुनी हुई पचायतो को प्रस्ताव भेजने का अवसर प्रदान करेंगे। धन्यवाद सहित।

आपका
प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

मकडौली कलां में वेदप्रचार

श्री मा० प्रतापसिंह आर्य ने दिनांक २८-२९ दिसम्बर, ९१ को गाव मकडौली कला, जिला रोहतक में अपने पुत्र श्री सुरेन्द्रसिंह शास्त्री के सर्विस मिलने के उपलक्ष्य में श्री जयपालसिंह आर्य व श्री ईश्वरसिंह की भजनमण्डलियों द्वारा वेदप्रचार कराया। इस अवसर पर श्री सुदर्शनदेव जी आचार्य द्वारा यज्ञ करवाया गया। श्री सुरेन्द्रसिंह व इनकी धर्मपत्नी को यज्ञोपवीत पहनाये गये। यज्ञ के पश्चात् श्री ईश्वर-सिंह तूफान और जयपाल आर्य के मधुर भजन और महिलाओं के गीत गाए गए, जिनको सुनकर नर-नारियां बहुत प्रभावित हुईं। इस उपलक्ष्य में २७१ रु० सभा को दान दिया।

स्मृति-यज्ञ तथा शोकसभा

गुरुकुल झज्जर के विशेष सहयोगी श्री म० नत्थूराम जी ढाकला निवासी का अचानक स्वर्गवास होगया। इस अवसर पर उनके भानजे श्री कृपाराम ने उनकी स्मृति में यज्ञ करवाया तथा शोकसभा का आयोजन किया गया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ-कार्य सम्पन्न कराया गया। शोकसभा में ग्राम ढाकला के गणमान्य लोगों ने म० नत्थूराम जी को श्रद्धाजलि भेंट की।

इस अवसर पर इनके परिवार ने गुरुकुल झज्जर के बलिदान भवन हेतु ११०० रु० तथा ३२१ रु० गुरुकुल हेतु दान किये। यह अन्तिम इच्छा म० नत्थूराम जी ने अभिव्यक्त की थी। इसीलिए उनकी आत्मा की शांति के लिए उनके आदेश का पालन किया गया। प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति एव पारिवारिक शोक संतप्तजनों को धैर्य प्रदान करे।

—म० फतहसिंह भण्डारी, गुरुकुल झज्जर

शोक समाचार

आर्यसमाज बीकानेर गगायचा अहीर (रेवाड़ी) के वयोवृद्ध एव कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री रामप्रसाद का निधन दिनाक ३०-१२-९१ को होगया। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे एव इस दुःख की घड़ी मे हमारी उनके परिवार के प्रति गहरी सवेदना है।

—मन्त्री आर्यसमाज बीकानेर (रेवाड़ी)

किसानों को फसल के बदले कर्ज मिल सकेगा

रोहतक, ६ जनवरी (ट्रिब्यू)। हरयाणा सरकार ने किसानों की उपज को गोदामों में रखकर कर्ज देने का फैसला लिया है ताकि समय आने पर किसान अपनी फसल का लाभकारी मूल्य वसूल कर सके।

सरकारी सूत्रों के अनुसार अब राज्य के किसान अपनी फसल को सरकारी गोदामो में रखकर उसके बराबर की राशि को कर्ज के रूप में ले सकेंगे। उल्लेखनीय है कि हरयाणा यंग फार्मर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष तथा सांसद भूपिन्द्रसिंह हुड्डा पिछले कई वर्षों से किसानों को यह सुविधा दिलाने के लिए प्रयास कर रहे थे।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

रेलवे में भर्ती रुकी

नई दिल्ली, ६ जनवरी (भाषा)। रेलवे के कनिष्ठ संवर्ग में २५ प्रतिशत सीधी भर्ती पर अगले दो वर्ष के लिये रोक लगादी है। सभी क्षेत्रीय रेलवे कार्यालयों को पिछले महीने जारी किये गये सरकारी आदेश के अनुसार रेलवे बोर्ड ने ६५०-१५०० वेतन वर्ग के क्लर्क ग्रेड और १२००-२०४० वेतन वर्ग के वरिष्ठ क्लर्क वर्ग में २५ प्रतिशत सीधी भरती पर रोक लगादी है।

हृदयरोग इलाज के लिए नयी विधि

नयी दिल्ली, ३ जनवरी (वार्ता)। हार्ट केयर फाउंडेशन आफ इण्डिया ने दावा किया है कि दिल के मरीजों तथा दिल के भयंकर दौरे से पीड़ित मरीजों के इलाज के लिए एक नयी विधि विकसित की गई है, जिसके प्रयोग सफल रहे हैं।

फाउंडेशन के अध्यक्ष डा० (कर्नल) के० एल० चोपड़ा ने आज यहां संवाददाताओं को बताया कि देश में उपलब्ध दो दवाओं यूरोकिनाज तथा स्ट्रेप्टोकिनाज के संपुट सेवन से रक्त में जमे थक्के को पिघलाकर दूर करनेवाला इलाज शुरु होने से दिल के मरीज को जीवनदान मिल जायेगा।

उन्होंने कहा कि यह दोनों दवाये अभी भारत में बनाई नहीं जारही हैं, इन्हें क्रमश: जर्मनी तथा जापान से मगाया जाता है। इसकी कीमत कुल चार हजार रुपये पड़ती है।

नयी दिल्ली में हाल में सम्पन्न विश्व हृदय-रोग सम्मेलन में फाउंडेशन ने इस सफल प्रयोग की जानकारी दी। सम्मेलन में विश्वभर से आये लगभग एक हजार से अधिक हृदय-रोगविशेषज्ञ डाक्टरों ने हिस्सा लिया।

फाउंडेशन के उपाध्यक्ष डा० के० के० अग्रवाल ने बताया कि अगर इस दवा को दौरा पड़ने के तीन घण्टे के भीतर मरीज को दिया जाये तो उसके जीवन को काफी हद तक बचाया जा सकता है।

उन्होंने बताया कि यह इलाज प्रशिक्षित डाक्टर द्वारा मरीज के घर में अथवा मोबाइल वैन द्वारा ही शुरु कर दिया जाना चाहिए। डा० चोपड़ा ने बताया कि सम्मेलन में कर्नल चोपड़ा तथा अमरीकी विशेषज्ञ डा० सलीम यूसुफ द्वारा पेश किये गए शोध-पत्र में बताया गया कि कई बार शरीर में मेगनीशियम की कमी से दिल का दौरा पड़ता है। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में मेगनीशियम के इंजेक्शन देने से काफी लाभ पहुंचता है और वह इजेक्शन दस रुपए तक में मिल जाता है।

उन्होने कहा कि अधिक वृक्ष लगाने से भी दिल के दौरे से बचा जा सकता है क्योंकि वृक्ष की पत्तियों से जमीन को मेगनीशियम की परत मिलती है।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

कुरुक्षेत्र में शराब की बिक्री पर प्रतिबन्ध

चण्डीगढ़, ६ जनवरी (प्रैट्र)। हरयाणा सरकार ने कुरुक्षेत्र के धार्मिक महत्त्व को देखते हुए शहर की सीमा में शराब की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाने का फैसला किया है।

यहां एक संवाददाता सम्मेलन में आबकारी व कराधान मन्त्री ए०बी० चौधरी ने बताया कि कुरुक्षेत्र शहर में चल रहे शराब के १० ठेके एक अप्रेल से बन्द कर दिये जायेंगे।

सरकार ने ठेकों के साथ चलते 'अहातों' को भी बन्द करने का फैसला किया है ताकि सार्वजनिक स्थलों पर शराब पीने पर रोक लगाई जा सके।

उन्होंने कहा कि सरकार ने कथित भ्रष्टाचार के आरोप में अतिरिक्त आबकारी एवं कराधान आयुक्त एम० एम० आर० मिनलानी को निलम्बित कर दिया है।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

हरयाणा में शराब छोड़ो शिविरों का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा ने निश्चय किया है कि जो शराब पीनेवाले शराब छोड़ना चाहते हैं उनके लिए शराब छोड़ो शिविरों का आयोजन किया जावेगा। इन शिविरों में इस प्रकार के रोगियों के लिए सभा की ओर से नि:शुल्क भोजन, आवास तथा औषधियों की सुविधा दी जावेगी। इस प्रकार का पहला शिविर सभा कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक में लगाया जारहा है। इसके बाद जि० भिवानी में श्री हीरानन्द आर्य (पूर्व शिक्षामन्त्री) के सहयोग से शिविर आयोजित किया जावेगा।

अत: जो व्यक्ति शराब छोड़ना चाहते हैं, वे अपना नाम तथा डाक का पूरा पता लिखकर सभा कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक में शीघ्र भेजने का कष्ट करें, जिससे उन्हें शिविर की सूचना भेजी जावे। इस रचनात्मक कार्य को सफल करने के लिए सभा की ओर से एक उप-समिति का गठन किया गया है।

शराबबन्दी पंचायतों का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार जनवरी मास में शराबबन्दी सर्वखाप पंचायतों का आयोजन निम्न प्रकार किया गया है—

१. ग्राम मातनहेल जिला रोहतक	१८ जनवरी	समय १२ बजे
२. ग्राम खेड़ीबूरा जिला भिवानी	१६ ,,	११ ,,
३. ग्राम बेरी जिला रोहतक	२६ ,,	११॥ ,,

शराबबन्दी समर्थक कार्यकर्त्ताओं तथा निकटवर्ती खापों से संबंधित नेताओं, सरपंचों, पंचों एवं आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि इन पंचायतों में सम्मिलित होकर शराबबन्दी कार्यों में सहयोग देवें।

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

आर्यसमाज लोपो (यमुनानगर) का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रणबीरसिंह आर्य, उपप्रधान—मोलूराम आर्य, मन्त्री—सतीशचन्द आर्य, उपमन्त्री—शादीराम आर्य, कोषाध्यक्ष—ओमप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—कुलदीपसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—रामेश्वरदास।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०७/७३   पोस्ट नं० P-RTK-४३

प्रधान सम्पादक - सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक - वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक — प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९   अंक ९   २१ जनवरी, १९९२   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

२३ जनवरी नेताजी सुभाष जयन्ती के अवसर पर

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

—शुचिव्रत शास्त्री गुरुकुल होशंगाबाद

जब मैं सोचता हूं कि स्वतन्त्रता सेनानियों में आज के दिन सबसे अधिक सम्मान का पात्र कौन है तो पहला नाम मुझे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का सूझता है। सुभाषचन्द्र जी ऐसे विलक्षण पुरुष थे जिन्होंने सुदूर देश में जाकर अपने शौर्य एवं ओजस्विता के बल से कहा था—

"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा"

तत्पश्चात् आजाद हिन्द सेना का निर्माण कर भारत माता की परतन्त्रता की बेड़ी काटने में सफल हुए। उनके नाम के स्मरणमात्र से ही भारतीयों का सिर गर्व से ऊंचा उठ जाता है। भारत की इस विशाल क्रांति में स्वतन्त्र नवयुग का जो सुप्रभात उदित हुआ है उसका सर्वाधिक श्रेय नेताजी को ही है। उन्हीं से ही सम्पूर्ण देश ने आजादी का पाठ पढ़ा है। नेताजी त्यागी, परम उत्साही, महान् वीर और उद्भट राजनीतिज्ञ थे। बचपन से ही वे उन्नत, तेजस्वी एवं कुशाग्रबुद्धि के थे। नेतृत्व के गुण और अन्याय के प्रति विद्रोह की प्रबल भावना आप जन्म से ही साथ लाये थे। एक सादी धोती और एक चद्दर बस यही आपकी वेशभूषा थी। आपकी आंतरिक रुचि स्वभावतः ही तप, त्याग और संयम की तरफ थी। इसी कारण आप सांसारिक जाल से विक्षुब्ध होकर विद्यार्थी अवस्था में घर, माता-पिता व बन्धुओं का मोह त्याग महर्षि दयानन्द की तरह सत्य की खोज के लिये एक दिन चुपके से घर से भाग निकले। जंगलों और पहाडों को लांघते हुए घनघोर अन्धेरी रात में, प्रचण्ड धूप में यह धुन का धनी वीरव्रत युवा हिमालय की बर्फीली गुफाओं में सत्य की प्राप्ति के लिए मारा-मारा फिरने लगा। परन्तु वहां अपना मनोरथ सिद्ध न होता देख नीचे मैदानी क्षेत्र में उतर आये और काशी, मथुरा, वृन्दावन आदि अनेक प्रसिद्ध धर्म-स्थानों का भ्रमण किया, किन्तु कहीं भी सत्य के दर्शन न होने पाये। सब जगह कर्महीन पाखण्डी लोगों की भरमार देखी। जो धर्म का ढोंग रचकर दुनियां को धोखा देकर केवल अपना ही पेटपालन कर रहे थे। धर्म के नाम पर संन्यास जीवन का गर्हित दुरुपयोग देखकर आपको इन व्यक्तियों से बड़ी घृणा होगई। वैराग्य मार्ग छोड़कर समाज में रहकर गरीब प्राणियों की सेवा को ही एकमात्र कल्याणकर समझा।

आपने सोचा सत्य को खोजने दूर जाने की क्या आवश्यकता है, बल्कि सत्य मेरे में ही निहित है। मुझे हिमालय की हिमाच्छादित गुफाओं में घूमने की कोई जरूरत नहीं। मुझे तो देश के निरीह, भूखे और नंगे प्राणी पुकार रहे हैं। जननी भारत मां पुकार रही है, ऐसा सोचकर आप वापिस घर लौट आये। घर पर रहते हुए भी कभी वीरव्रत होकर समाधिस्थ होने की सोचते तो कभी दीन-दुखियों की सेवा में ही लगे रहना चाहते। इस प्रकार काफी समय तक विचारों का संघर्ष चलता रहा। अन्त में प्राणी-सेवा को ही आपने सर्वोच्च समझा। सबके भले में ही अपना भला माना और अपने कार्य में जुट गये। जन्म से ही आपकी रग-रग में स्वाधीनता व देशभक्ति कूट-कूटकर भरी हुई थी। भारत मां की पराधीनता की बेडियों को काटने के लिये आपका हृदय तड़फा करता था कि किस प्रकार प्यारे भारतवर्ष को आजाद कराया जाये। बस यही एक चिंता आपको सताया करती थी।

आपके स्वाभिमानी व्यक्तित्व की झलक विद्यार्थी जीवन में प्रकट होगई थी। जब आप कलकत्ता प्रेसिडेंसी कालेज में पढ़ते थे, उन दिनों एक ओटन नामक अंग्रेज प्रोफेसर साहब ने भारतीयों को कई अपमानपूर्ण बातें कहदीं। आपसे वह अपमान सहा नहीं गया। आपने खड़े होकर कहा—प्रोफेसर साहब जरा जबान सम्भालकर बोलिये, किन्तु राज के नशे में चूर होकर वह प्रोफेसर कब माननेवाला था। उल्टा सुभाष को ही उसने कुत्ते के नाम से सम्बोधित किया और ऊपर से बास्टर्ड की भी भद्दी गाली दी। गाली क्या थी मानो पराधीनता के मारे अभागे भारतीयों का उपहास था। शासन के घमण्ड की सूचक थी, जिसे सुनकर वीर तरुण सुभाष का खून खौल उठा, रोम-रोम कांप उठा और लपककर अभिमानी ओटन का गला पकड लिया तथा क्रोध में कांपते हुए कहने लगे—हम कुत्ते हैं, काले बन्दर हैं। लुटेरो, सफेद शैतानो किस मुंह से यह गाली निकाली? खींच लूंगा जलील कुत्ते की जबान को। तुमको शर्म नहीं आता यहां आकर हमारी नौकरी कर, हमारे दिये हुए टुकड़ों पर पलकर उल्टा हमें ही बास्टर कहते हो और देखते-देखते उस स्वाभिमानी युवक ने अपने सबल हाथ से ऐसा करारा थप्पड़ मारा कि गोरी चमड़ी पर पांचों अंगुलियों के निशान उभर आये। यह थप्पड़ क्या था, अंग्रेजी शासन को खुली चुनौती थी। अपराध के लिये भले ही आपको कालेज से निकलना पड़ा, किन्तु आपने भारत का अपमान सहन नहीं किया।

आपके पिता ने आपको विदेश भेजा। वहां कुछ समय रहकर आपने आई० सी० एस० की परीक्षा पास की। पश्चात् लंदन के इंडिया हाउस में भारत के उन दिनों के एक अंग्रेज मन्त्री द्वारा रखा गया ऊंची नौकरी का प्रस्ताव भी यह कहकर ठुकरा दिया कि मैं किसी भी मूल्य पर नौकरी नहीं करूंगा तथा अपना सम्पूर्ण जीवन अपने देश की सेवा में ही लगाऊंगा और भारत मां का लाडला त्यागी सपूत आई० सी० एस० के आकर्षक पद पर लात मारकर स्वदेश लौट आया। जब आप विदेश से लौटे, तब भारत की धरती पर क्रांति की प्रचण्ड ज्वाला धधक रही थी। सम्पूर्ण भारत मुक्ति के लिये कृतनिश्चय था। स्वर्ग समान जन्मभूमि भारत को तड़पते देखा तो वीर सुभाष बाबू का रोम-रोम विप्लवी हो उठा और सबसे पूर्व बंगाल के उपनायक देशबन्धु चित्तरंजनदास से मिले। दोनों का निश्चय हुआ कि देश के लिए एक करोड़ राष्ट्रीय स्वयं-सेवक बनाये जायं और खर्च के लिए भी एक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महौषधि है—आंवला

—डा० वी० के० राघव

भारतीय चिकित्सा पद्धति में आंवले का एक विशेष महत्त्व है। यह स्वास्थ्य के लिए जहां रामबाण है वहीं विभिन्न रोगों की महौषधि है। यह एक ऐसा फल है जिसकी हर मौसम में मांग रहती है।

आंवला स्वाद में कसैला व खट्टा होता है। यह एक ऐसा रसायन है जिसे चाहे कच्चा खाया जाए या पकाकर अथवा सुखाकर, इसके विटामिन हमेशा इसमें विद्यमान रहते हैं। इसलिए आंवले को लोग नित्यप्रति सब्जी, अचार, मुरब्बे और चूर्ण के रूप में सेवन करते हैं। इसमें जहां शरीर निरोग रहता है, वहां पाचन-क्रिया सुदृढ़ रहती है। शरीर में उत्पन्न अकस्मात् रोगों के विरुद्ध मुकाबला करने की शक्ति उत्पन्न करने के साथ-साथ मन मस्तिष्क में शांति व शरीर की गर्मी व रक्त उष्णता को शांत करता है। इसके निरन्तर प्रयोग करने से जहां भूख बढ़ती है वहीं वृद्धावस्था में धमनियों व शिराओं को पूरी शक्ति प्रदान करता है। यह एक सस्ता फल होने के साथ अत्यधिक मूल्यवान् एवं अनेक गुणों से युक्त महौषधि है जिसका प्रयोग अनेक रोगों में कर स्वयं को निरोग करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

पायरिया

ताजे कच्चे एक-दो आंवले को नित्य-प्रति खाया जाये तो जहां दांतों की विशेष रक्षा होती है, मसूड़ों से खून बन्द हो जाता है, मुख की गर्मी शांत हो जाती है, वहीं पायरिया जैसी बीमारियों को जड़ से समाप्त कर देता है।

मोतियाबिन्द

ताजे आंवले का रस दो चाय के चम्मच को एक चम्मच शहद में मिलाकर नित्य-प्रति सेवन से जहां नेत्र-ज्योति में वृद्धि होती है, वहीं मोतियाबिन्द तक रोगों में काफी आराम पहुँचता है।

कब्ज

रात्रि में नित्य-प्रति आंवले चूर्ण को ताजे पानी से लेने पर कब्ज दूर हो जाता है। अधिक कब्ज की अवस्था में ताजे पानी के स्थान पर गर्म पानी लेना अधिक लाभदायक है।

नकसीर

नाक से नकसीर आने की अवस्था में भी आंवले का चूर्ण अति गुणकारी है। नित्यप्रति एक चम्मच आंवले का चूर्ण ताजे पानी से लेने पर नकसीर आना बन्द हो जाता है।

वायुरोग

वायुरोग अथवा पेट में गैस बनने की अवस्था में आंवले का प्रयोग रामबाण है।

गठिया रोग

गठिया रोग जैसी निसहाय बीमारी में आंवले का उपयोग अति लाभकारी है। एक चम्मच आंवले के रस को शहद में मिलाकर चाटने पर गठिया रोग में काफी लाभ प्रतीत होता है।

बालों की सुरक्षा

बालों के घने एवं लम्बे तथा सुरक्षित रखने में भी आंवले का प्रयोग अति उत्तम है। रात्रि में थोड़े सूखे आंवले लेकर उन्हें लोहे के बर्तन में भिगोकर अगले दिन प्रातः उसमें रीठे व शिकाकाई का चूर्ण मिलाकर बाल धोने से बाल घने व चमकदार होते हैं। बालों का झड़ना भी दूर हो जाता है।

खूनी बवासीर

नित्य-प्रति आंवले का चूर्ण गाय के दूध से सेवन करने पर खूनी बवासीर को दूर किया जा सकता है।

सिर में चक्कर

गर्मियों में सिर चकराने एवं घबराहट की अवस्था में आंवले का शर्बत रामबाण औषधि है। इसके सेवन से न सिर में चक्कर आयेंगे और न घबराहट होगी तथा न ही दिल की धड़कन तीव्र होगी।

जलन पेशाब

पेशाब में जलन की अवस्था में नित्यप्रति एक-दो आंवले सेवन करने से लाभ पहुंचता है।

सफेद बाल

सफेद बाल होने की अवस्था में आंवले का पानी लगाने से बाल काले होने आरम्भ हो जाते हैं।

कफ की अधिकता

कफ (बलगम) की अधिकता में आधा चम्मच आंवला चूर्ण को आधा चम्मच मुलहठी चूर्ण के साथ गर्म पानी से नित्यप्रति लेने से आराम पहुंचता है।

जुकाम

जुकाम जैसे रोग में नित्यप्रति आंवले का प्रयोग अति लाभकारी है।

छूतरोग

छूत रोगों में भी आंवला अति गुणकारी है। यह छूत के रोगों से रक्षा करता है क्योंकि आंवले के रस के सेवन से विष तक का प्रभाव कम हो जाता है।

खुजली

चमेली के तेल में आंवले के चूर्ण को मिलाकर बने मरहम के लगाने से खुजली में आराम पहुंचता है।

उदररोग

उदर के सभी विकार बदहजमी, डकार, पेट फूलना आदि में आंवला चूर्ण महौषधि है।

शक्तिवर्धक

आंवले का हर प्रकार से सेवन करना बल, वीर्य एवं शक्तिवर्धक है।

सौन्दर्यवर्धक

आंवले का प्रयोग जहां शरीर को निरोगी बनाता है और नई शक्ति व नई चेतना जागृत करता है वहीं चेहरे की कांति बढ़ाकर सौन्दर्यवर्धक भी है।

अतः आंवला वास्तव में ही एक जीवनदायी फल है जिसका किसी भी रूप में कैसे भी सेवन किया जाए, लाभ ही लाभ पहुंचता है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह मल साफ करके आंतों की क्रिया को संचालित करता है जिससे भूख बढ़ती है, रक्त साफ होता है और स्वास्थ्य में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती है तथा शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है।

साभार : जनसन्देश

आर्थिक साम्राज्यवाद बनाम सम्पुष्ट सामाजिक-आर्थिक संरचना

—प्रो॰ शेरसिंह भूतपूर्व सदस्य योजना आयोग

गतांक से आगे—

गांधी दर्शन के अनुसार दूसरों के परिश्रम से अपना घर भरना घोर अपराध है। देश को संकट से उबारना है और कालेधन की समानांतर अर्थ-कुव्यवस्था को समाप्त करना है तो निश्चित अवधि में कालाधन पेश करने की सख्त चेतावनी देनी होगी, आर्थिक संकट का हल बाजारी अर्थव्यवस्था नहीं, गांधी की अर्थव्यवस्था है।

विदेशी मुद्रा संकट

तेल का आयात : भारत अब इतना तेल स्वयं पैदा करने लगा है कि यदि सबभ्रष्टाचारी से बचा जाए तो तेल के आयात की आवश्यकता नहीं रहेगी। इस वर्ष हमने १०,००० करोड़ रुपये का तेल आयात किया है। चीन की तरह यदि हमारे लोग साईकलों और बसों में ही चलें, कारों का उपयोग कम से कम करदें, बसें भी एक के पीछे एक बंधकर चलें तो तेल की बहुत बचत होगी। कारें थोड़ी से थोड़ी देश में खपायें, बाकी का निर्यात हो सके उतना निर्यात करें, निर्यात सम्भव न हो तो उन कारखानों में बसें या दूसरी मशीनें बनाई जायें। बड़े ट्रैक्टर बनाना बन्द करदें, भारत के ६० प्रतिशत किसानों के पास १५ एकड़ से कम जमीन है। निर्यात हो सके उतना निर्यात करें, आवश्यकतानुसार छोटे ट्रैक्टर बनायें, अधिकतर काम बैलों, ऊंटों और भैंसों से लिया जाए। ट्रैक्टर के कारखानों का भी ट्रक, बसें या अन्य मशीनें बनाने में उपयोग करें।

उर्वरक (खाद) का आयात : रासायनिक खाद तथा कीटनाशक दवाओं के बढ़ते हुए उपयोग से फसलों, जमीन, पर्यावरण और स्वयं मनुष्यों के लिए खतरा बढ़ रहा है, इसलिए उसका कम से कम उपयोग करने और उसके साथ-साथ गोबर को खाद, हरी खाद और बायो खाद को अधिक से अधिक उपयोग में लाया जाए। ऐसा करने से थोड़ा ही खाद आयात करना पड़ेगा और शायद आधे से भी ज्यादा विदेशी-मुद्रा बचाई जा सके। पिछले दिनों कोयम्बटूर जहां बायो खाद पर बड़ा सफल प्रयोग हो रहा है, वहां के लोगों ने चिंता प्रकट की कि पड़ोस के केरल प्रदेश मे गोवध करके मांस विदेशों में भेजने के कारण वहां गोबर के खाद की भयंकर समस्या पैदा होगई है। गांधी जी बड़े दूरदर्शी थे, इसलिए गोवध बन्द करने पर जोर देते थे और बाद में विनोबा जी ने भी गोवध रोकने के लिए जान की बाजी लगाई थी। मैं न्यूजीलैंड गया तो मैंने वहां के गवर्नर जनरल द्वारा उद्घाटित एक कुत्ते का बुत देखा। दक्षिण न्यूजीलैंड की अर्थव्यवस्था भेड़ों को ऊन पर खड़ी है और उसमें कुत्ता भेड़ों के चराने और घेरने का काम करता है, इसलिए कृतज्ञता प्रकाशन के लिए उन्होंने कुत्ते का बुत लगाया। गाय जो दूध देती है, खाद देती है, बछड़ा देती है जो हल चलाता है और बोझा ढोता है, चमड़ा देती है जिसके खुर और सींगों से भी अनेक वस्तुयें बनती हैं, उसकी रक्षा करना क्या अन्धविश्वास है? गोरक्षा और गोसंवर्धन से अधिक तर्कसंगत और वैज्ञानिक चिन्तन तो हो ही नहीं सकता।

कच्चा माल और आधुनिक टैक्नालाजी : हमारे देश में आजादी के बाद से ही टैक्नालाजी का आयात होता आया है, जिसके अनुभव बहुत कटु हैं। हमको अधिकतर पुरानी अविकसित और लुप्तप्राय टैक्नालाजी दी जाती रही है और करारों में जो अवधि रखी गई उसकी अवहेलना करके यही नहीं कि आधुनिकतम टैक्नालाजी दी जाती, बल्कि अवधि बढ़ाई जाती रही और रायल्टी ली जाती रही। हो सकता है बहुदेशीय कम्पनियां लुप्तप्राय टैक्नालाजी लायें और देश में ही माल बेचकर देश को लूटें। शत-प्रतिशत निर्यात होनेवाली वस्तुयें बनानेवाली फैक्टरियां लगें और उनके लिए कच्चा माल जितना आवश्यक हो, बाहर से आए वह तो झेला जा सकता है परन्तु शीघ्र ही देश को विदेशी वस्तुओं की होली जलानी पड़ सकती है। जैसे गांधी जी ने मांचेस्टर के विदेशी कपड़ों की होली जलवाई थी।

आयात और निर्यात के काम में लगे भारतीयों ने विदेशी मुद्रा के बहुत घपले किये हैं। उदाहरणार्थ वे लोग झूठे बीजक बनाकर विदेशी-मुद्रा देश से बाहर ही जमा कर देते हैं और देश में कम से कम आने देते हैं। कांधला की बन्दरगाह तो विदेशी-मुद्रा के घोटाले का अन्तर्राष्ट्रीय अड्डा ही बन गया है। दुःख की बात यह है कि यह काम महात्मा गांधी के जन्मस्थान के पास ही हो रहा है।

सबसिडी : गांधी जी तो दरिद्र को नारायण कहकर पुकारते थे और उसी में नारायण का दर्शन करते थे। परन्तु आज की व्यवस्था में तो जो सहायता दरिद्रनारायण को मिलती थी, सबसे पहला प्रहार उसी पर हुआ है। गरीब आदमी का ८० प्रतिशत बजट तो अनाज पर ही खर्च होता है और कुछ तो वह खरीद ही नहीं सकता। खाद पर आर्थिक सहायता थी, उसके कारण उनका उत्पादन मूल्य कम होने से बाजार में उसका मूल्य कम होता था, कुछ अतिरिक्त सहायता भी थी, कई राज्य सरकारों की ओर से वह सबसिडी अब समाप्त की जारही है। अन्न का भाव महंगा हुआ तो गरीब मजदूर और छोटे किसान को भुगतना पड़ेगा।

गांधी का यह देश भारत ही ऐसा निराला देश है जहां सबसिडी गरीब को नहीं, अपेक्षातर सम्पन्न और मालदारों को मिलती है। गरीब आदमी के लिए जो विद्यालय देहात में हैं, उनमें न ब्लैक बोर्ड, न टाट, न मकान और न दूसरा शिक्षक है। उनके बच्चे तो पढना-लिखना बड़ी संख्या में मिडल तक छोड़ते जाते हैं, कालिज तक तो कोई पहुंच पाता है। सब खर्चा सरकार से मिलने पर हरिजन बच्चे थोड़े बहुत कालिज तक चले जाते हैं। कालेजों तक वही बच्चे पहुंच पाते हैं जो मध्यम श्रेणी के लोगों के और अमीरों के बच्चे हैं। मध्यम श्रेणी के भी अधिकतर वे ही बच्चे कालेज तक पहुंच पाते हैं जिनके माता-पिता सरकारी नौकरी पर हैं या सार्वजनिक अथवा निजीक्षेत्र के कारखानों में काम करते हैं। कालिज में पढ़नेवाले ४० लाख विद्यार्थियों में से ३५ लाख बच्चे अपेक्षातर सम्पन्न परिवारों के हैं। इन विद्यार्थियों पर सरकार औसतन १०,००० रुपये वार्षिक व्यय करती है, परन्तु वर्ष में फीस लेती है कुल २०० रुपये वार्षिक। ३५०० करोड की आर्थिक सहायता क्या सबसिडी नहीं है? संगठित क्षेत्र में काम करनेवाले लोग दुनियांभर की सुविधायें भोगते हैं और फिर हड़तालें भी करते हैं और पूरे देश को नचाते हैं। गरीब आदमी की चिकित्सा मुफ्त नहीं है, वह बाजार से दवाई खरीदता है, नहीं खरीद सके तो जीवन से हाथ धोना पड़ता है, परन्तु ये विशेषाधिकारों को भोगनेवाले लोग चिकित्सा मुफ्त करवाते हैं और फर्जी मेडिकल बिल बनाकर अरबों रुपये का घोटाला करते हैं। सभी भ्रष्ट नहीं हैं, परन्तु इनमें से अधिकतर का आचरण समाज-विरोधी है।

उद्योग लगानेवाले धनी लोग १५ लाख रुपये की सबसिडी पिछड़े क्षेत्र में कारखाना लगाने के नाम के ले जाते हैं, सरकार से जमीन का अधिग्रहण करवाकर सस्ते दामों में जमीन लेते हैं, एक अवधि तक करों से छूट तथा अनेक सुविधायें लेते हैं। अनेक प्रकार की आर्थिक सहायता सम्पन्न लोगों को मिलती है गरीब को नहीं। सबसिडी के चलते उसे कुछ सस्ता अन्न मिलने लगा, अर्थशास्त्रियों की सारी तान इनको समाप्त करने पर लगी है। सम्पन्न लोगों को दी जानेवाली सबसिडी उनको दिखाई ही नहीं देती। बड़े घराने खरबों रुपये बैंको से कर्ज लेकर उन्हें बट्टे खाते में डलवा चुके। टैक्सों का बकाया भी इसी मात्रा में पड़ा है, अदालतों से स्टे मिल जाता है जो जान-बूझकर अनदेखा किया जाता है। टैक्स के कानून को संविधान की ९वीं सूची में डालने की बात ये धुरन्धर नहीं कहते। टैक्सों की चोरी न हो, उनका बकाया न रहे और उनके कारण घाटे के बजट न बनें, यह बात कोई

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान एवं दयानन्दमठ रोहतक के मन्त्री

महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थी का देहावसान

रोहतक १६ जनवरी, ९२ को दोपहर पश्चात् ४ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान एवं दयानन्दमठ रोहतक के मन्त्री स्वतन्त्रता सेनानी म० भरतसिंह जी वानप्रस्थी का हृदयगति बन्द होने पर ८१ वर्ष ३ मास की आयु में देहावसान होगया। वे कुछ समय से अस्वस्थ थे, परन्तु प्रतिदिन दयानन्दमठ तथा सभा कार्यालय सिद्धांती भवन में आते थे और सभा के कार्यों का मार्गदर्शन करते थे। उन्होने मकर संक्रांति-पर्व पर १४ जनवरी को सभा कार्यालय में आयोजित यज्ञ में भाग लिया और १६ जनवरी को सभा कार्यालय में दोपहर पश्चात् १ बजे तक रहे और सभामन्त्री से फोन पर सभा के कार्यों पर वार्ता की, फिर विश्राम करने के लिए दयानन्दमठ में चारपाई पर धूप में लेट गये। सभा के सेवक श्री सत्यवीर को कहा कि मेरा बिस्तर धूप में सूखा दो और स्वामी कर्मानन्द जी से कहकर चाय मगवाकर पीकर लेट गये। कुछ समय के बाद स्वामी कर्मानन्द जो कि उनके पास सेवा के लिए बैठे थे, को कहा कि मेरा अन्तिम समय आगया है डाक्टर सत्यपाल को बुलवा लेवें। परन्तु डाक्टर के आने से पूर्व ही अचानक हृदयगति बन्द होने के कारण सदा के लिए इस संसार से विदा होगये। स्वामी कर्मानन्द जी ने सभा कार्यालय में सूचना दी, तब सभागणक श्री ओमप्रकाश शास्त्री, सभा टाइपिस्ट श्री सत्यवान, श्री शेरसिंह तथा सेवक श्री सत्यवीर वहां गये। सभासेवक की सूचना पर पूर्वमन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, प्रधान मोहल्ला आर्यसमाज रोहतक के मन्त्री श्री गुरुदत्त आर्य, पाल भारती स्कूल के संचालक मा० दीपचन्द आर्य, सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह, वैद्य भरतसिंह आर्य कोषाध्यक्ष दयानन्दमठ रोहतक तथा महाशय जी के भतीजे श्री ईश्वरसिंह आदि दयानन्दमठ में पहुच गये। जिन्होने भी इस शोक समाचार को सुना स्तब्ध रह गये। सभा कार्यालय तुरन्त बन्द कर दिया गया।

दिनांक १७ जनवरी को दोपहर बाद २ बजे दयानन्दमठ के प्रांगण में जहां महाशय जी ने अपने जीवन के लगभग ४० वर्ष व्यतीत किये। पूर्ण वैदिकरीति के अनुसार अन्त्येष्टि संस्कार सभा के महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री ने करवाया। इस अवसर पर सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह, उपप्रधान श्री लक्ष्मणदास (बल्लबगढ़), सभामन्त्री श्री सूबेसिंह, उपमन्त्री डा० सोमवीर, श्री सत्यवीर शास्त्री, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता श्री धर्मचन्द, श्री देवेन्द्रसिंह, श्री लालचन्द (गढ़ी बोहर), सभा के प्रतिष्ठित सदस्य श्री चन्द्रपाल राणा, श्री रणवीर शास्त्री (बुवाना), वैद्य कर्मवीर आर्य मन्त्री कन्या गुरुकुल नरेला, मा० पूर्णसिंह आर्य (अध्यापिकाओं सहित), गुरुकुल झज्जर से श्री फतेहसिंह भण्डारी, आचार्य विजयपाल, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा कार्यकर्ताओं सहित, गुरुकुल कागड़ी विद्यासभा के मन्त्री प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, कन्या गुरुकुल खानपुर एवं गुरुकुल भैसवाल के पूर्वमन्त्री श्री धर्मचन्द शास्त्री, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के प्रति-कुलपति डा० सर्वदानन्द आर्य, गुरुकुल सिंहपुरा के संस्थापक म० हरद्वारीलाल, गुरुकुल टटेसर जौंती (दिल्ली) के पूर्वप्रधान स्वामी वेदमुनि, गोशाला उचानी (जींद) के संचालक स्वामी गोरक्षानन्द तथा रोहतक के आर्यसमाजों एव आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी व सैनी हाई स्कूल रोहतक के अध्यापक एवं छात्र भी भारी संख्या में उपस्थित थे। अन्त्येष्टि के पश्चात् दयानन्दमठ में महाशय जी की आत्मा को शांति तथा सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना प० विद्याव्रत शास्त्री ने करवाई। सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने अपनी शोक-संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि म० भरतसिंह जी आर्यसमाज के एक कर्मठ नेता थे। वे अनेक वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान, मन्त्री तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य रहे। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं को उन्नत करने में व्यतीत कर दिया। दयानंदमठ रोहतक के वे निर्माताओं में प्रमुख थे।

उन्होंने आर्यसमाज के सभी आंदोलनों में बढ़-चढकर भाग लिया था। उनके स्थान की पूर्ति कर पाना असम्भव है। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती अत्यधिक अस्वस्थ होने के कारण इस अवसर पर चाहते हुए भी सम्मिलित नहीं हो सके तथापि उन्होंने अपनी ओर से एक पीपा गोघृत तथा एक बोरी सामग्री अन्त्येष्टि संस्कार हेतु भेजी। महाशय जी के बचपन के साथी तथा पूर्वमन्त्री सेठ श्रीकृष्णदास तथा हरयाणा के मुख्य संसदीय सचिव श्री सुभाष बत्रा ने भी महाशय जी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

आर्यनेता म० भरतसिंह वानप्रस्थी को भावभीनी श्रद्धांजलि

रोहतक, १६ जनवरी। दयानन्दमठ रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान एवं दयानन्दमठ रोहतक के मन्त्री स्वर्गीय म० भरतसिंह वानप्रस्थी को आर्यजनता की ओर से सभामन्त्री श्री सूबेसिंह जी की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

२ बजे दयानन्दमठ के प्रांगण में शांति-यज्ञ किया गया। श्री वेदप्रकाश जी साधक ने ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शांति प्रदान करे। इसके पश्चात् दयानन्दमठ के कोषाध्यक्ष वैद्य भरतसिंह आर्य, गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक के संचालक श्री राममेहर एडवोकेट, आर्यसमाज कैथल के प्रधान डा० मनोहरलाल आर्य, सभा के आदरी महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री, सभा के कोषाध्यक्ष श्री रामानन्द सिहल, आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता प्रिंसिपल लाभसिंह, स्वतन्त्रता सेनानी श्री रामसिंह जाखड, आर्यसमाज जसौर खेड़ी के संरक्षक मा० निहालसिंह आर्य, स्वतन्त्रता सेनानी एवं सभा के पूर्व उपदेशक श्री महासिंह वर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रवक्ता प्रिंसिपल होशियारसिंह, हरयाणा के उद्योगपति श्री प्रियव्रत, गुरुकुल झज्जर के प्रधान म० फतहसिंह भण्डारी, वैदिक भक्ति आश्रम के संचालक वानप्रस्थी रमणमुनि, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के प्रवक्ता आचार्य बलवीरसिंह, हरयाणा संस्कृत अध्यापक संघ के मन्त्री श्री रणवीर शास्त्री, सैनी सभा के कार्यकर्त्ता श्री चन्द्रभान एवं श्री रतनसिंह सैनी, हरयाणा के पूर्व उद्योगमन्त्री सेठ श्रीकृष्णदास, आर्य प्रादेशिक सभा के उपप्रधान श्री निहालचन्द बुगनानी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री सूबेसिंह, उपमन्त्री डा० सोमवीरसिंह, दयानन्दमठ के कार्यवाहक प्रधान श्री विजयकुमार, गुरुकुल टटेसर जौंती (दिल्ली) के पूर्वप्रधान स्वामी वेदमुनि ने महाशय जी को अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें आर्यसमाज का लगनशील नेता परिश्रमी, कर्मठ संघर्षशील, व्यायाम प्रेमी, स्वाध्याय एवं यज्ञप्रेमी, समाज सुधारक निर्भीक वक्ता तथा सादगी का प्रतीक बताया।

अन्त में प्रमुखवक्ता के रूप में सभाप्रधान प्रो. शेरसिह ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मेरा उनसे ५५ वर्ष से गहरा सम्बन्ध रहा है। वे आर्यसमाज के कार्यों के लिए अधिक से अधिक समय देनेवाले नेताओं में गिने जाते थे। वे एक व्यक्ति नहीं अपितु एक संस्था थे। उन्होंने आर्यसमाज रिटोली, कबूलपुर तथा झज्जर रोड रोहतक व वनवस्ती आर्य कन्या विद्यालय रोहतक की स्थापना की। दयानन्दमठ रोहतक के निर्माण मे प्रमुख भूमिका निभाई आदि। आपने घोषणा की कि दयानन्दमठ में इनका स्मारक बनाया जावेगा, जिससे आगामी पीढी इनके कार्यों से प्रेरणा ले सके।

—केदारसिंह आर्य

शोक सभा

२८ जनवरी मंगलवार को दोपहर बाद २ बजे म० भरतसिंह जी की शोकसभा सैनी हाई स्कूल रोहतक में होगी। श्रद्धालु सज्जन पधारें।

—[illegible] वानप्रस्थी (मा० [illegible])

अपूर्णीय क्षति

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वरिष्ठ उपप्रधान, दयानन्दमठ रोहतक के मन्त्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भूतपूर्व मन्त्री श्री महाशय भरतसिंह जी का १६ जनवरी, १९९२ को ८१ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन से समस्त आर्यजनता को बड़ा कष्ट हुआ है। श्री महाशय जी आजीवन आर्यसमाज की सेवा में समर्पित रहे। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के आंदोलन से लेकर आर्यसमाज द्वारा चलाये गये सभी आंदोलनों में बढ़-चढ़कर भाग ही नहीं लिया, अपितु सूत्रधार भी रहे। रोहतक का दयानन्दमठ "आर्यसमाज की व आर्यवीर सैनिकों की छावनी बनकर हिन्दी आंदोलन, गौ आंदोलन, शराबबन्दी आंदोलन, चण्डीगढ़ व हरयाणा निर्माण के आंदोलनों का अग्रणी पुरोधा रहा। यह सब आपकी कार्यक्षमता, दृढता, कुशलता, निडरता एवं पुरुषार्थ के जीते-जागते उदाहरण हैं। जहां आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में आपका बहुत बडा योगदान रहा है, वहां अन्य सामाजिक कार्यों में भी सदैव तत्पर रहे। आप जैसे जुझारु, कर्मठ, त्यागी, तपस्वी के निधन से आर्यसमाज एवं सामाजिक संस्थाओं की बड़ी क्षति हुई है। आपका अनेक शिक्षण संस्थाओं से भी गहरा सम्बन्ध रहा है।

हम सभी आर्यबन्धु एवं स्नातक मण्डल गुरुकुल झज्जर के सभी सदस्य व कुलवासी इस अवसर पर पारिवारिक इष्टमित्रों के प्रति हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति की प्रार्थना करते हैं। परमात्मा हमें भी उनके आदर्शों पर चलते रहने की शक्ति प्रदान करे।

—रणवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री स्नातक मण्डल गुरुकुल, झज्जर

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज टीकरी ब्राह्मण जि० फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव २७-२८ जनवरी, ९२ को मनाया जारहा। जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध साधु, संन्यासी, विद्वान् व आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

(पृष्ठ ३ का शेष)

नहीं कहता। गरीब को दी गई सहायता और रियायत इन्हें सताये जारहो है।

वास्तविकता तो यह है कि संकट टालने का बावेला करनेवाले लोग संकट समाप्त नहीं करना चाहते, क्योंकि उसके लिए जो नई व्यवस्था बनानी होगी, मजबूत कदम उठाने होंगे, उससे तो इसका धन्धा चोपट हो जाएगा। इनके बारे-न्यारे तो संकटकाल में ही होते हैं, इसलिए संकट का हौवा बनाए रखना और उसमें हाथ रंगते रहना यही इनका प्रोग्राम है।

क्या ईमानदारी, सादा जीवन, संयम और सेवा, शराबबन्दी, गोवध निषेध, कुटीर उद्योगों, ग्राम उद्योगों तथा छोटे धन्धों के द्वारा हर हाथ को काम, स्वदेशी की भावना, शोषणमुक्त समाज की रचना तथा कालेधन की समाप्ति की बात करनेवाले गांधी और उनके समर्थक दकियानूस हैं और विज्ञान के प्रगतिशील युग में अप्रासंगिक हैं?

टंकारा का ऋषि-मेला

प्रतिवर्ष की भांति शिवरात्रि के अवसर पर महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में १, २, ३ मार्च, १९९२ को ऋषि-मेला का आयोजन किया जा रहा है। आयजगत् के संन्यासी, महात्मा, विद्वान् और देश-विदेश से ऋषि-भक्त टंकारा पहुंचकर महर्षि को श्रद्धांजलि देंगे। उत्तर भारत के आर्य परिवारों को टंकारा ले जाने हेतु २८-२-९२ सायं आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली (फोन नं० ३४३७१८ ३१२११०) से बसें चलेंगी, जो ७-३-९२ को रात्रि देहली आयेंगी। यात्री टंकारा के साथ देखेंगे—द्वारका, ओखा, पोरबन्दर, सोमनाथ का मन्दिर, माउंट आबू, उदयपुर, चित्तौड़, अजमेर, पुष्कर और जयपुर भी देखेंगे। चलने वाले ऋषि-भक्त हमसे सम्पर्क करें। किराया बस ७८५ रुपये प्रति यात्री।

निवेदक : रामचन्द्र आर्य
प्रबन्धक यात्रा आर्यसमाज मन्दिर मार्ग,
नई दिल्ली

घर का पता :
४६६, भीमनगर, गुड़गांवा

शराबबन्दी समर्थक नवनिर्वाचित सरपंचों की सूची

१ श्री महाबीरसिंह दुहन सरपंच ग्राम कंवारो जिला हिसार
२ ,, मगतराम ,, ,, बालावास ,,
३ ,, महेन्द्रसिंह कसमा ,, ,, नलवा ,,
४ ,, कप्तान चन्द्गीराम ,, ,, भोजराज ,,
५ ,, रतनसिंह मलिक ,, ,, उमरा ,,
६ ,, उमेदसिंह ,, ,, भगाना ,,
७ ,, शिशपाल कसमा ,, ,, चमार खेड़ा ,,
८ ,, जिलेसिंह ,, ,, बूरा ,,
९ ,, धर्मबीर ,, ,, हरिता ,,
१० ,, मोतीराम ,, ,, दाहिमा ,,
११ ,, का० शमशेरसिंह ,, ,, डाबड़ा ,,
१२ ,, सू विजेसिंह सिवाच ,, ,, कालीरावन ,,
१३ ,, अमरसिंह फोगाट ,, ,, दुबेठा ,,
१४ ,, रोशनलाल ,, ,, सहाड़वा ,,
१५ ,, देवराज ,, ,, ढकेरी ,,
१६ ,, श्रीमती सुदेश गुजर ,, ,, ढाणी मिरान जि० भिवानी

१ श्री किशोरसिंह सरपंच गांव नांगलजाट जि० फरीदाबाद
२ ,, गोविन्दसिंह ,, ,, पहाड़ी ,,
३ ,, हरचन्दी ,, ,, अहरवां ,,
४ ,, रामचन्द ,, ,, नगलो ,,
५ ,, रामस्वरूप ,, ,, घोड़ी ,,
६ ,, खचेडूसिंह ,, ,, मीसा ,,
७ ,, किशोरीलाल ,, ,, दूधौला ,,
८ ,, नत्थूसिंह ,, ,, मिर्जापुर ,,
९ ,, रघुवीरसिंह ,, ,, जनौली ,,
१० ,, रामचन्द ,, ,, गहलब ,,
११ ,, बूलचन्द ,, ,, मुस्तफाबाद जि० यमुनानगर

(क्रमशः)

—सभामन्त्री

वैदिक विद्वान् पं० पृथ्वीराज शास्त्री का निधन

दिल्ली के प्रसिद्ध समाजसेवी और चारों वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् पं० पृथ्वीराज शास्त्री का १४ जनवरी, ९२ को ७३ वर्ष की आयु में दिल्ली के कालरा नर्सिंग होम में निधन होगया। शास्त्री जी के निधन से आर्यसमाज को गहरा आघात पहुंचा है। वह कई वर्षों से सार्वदेशिक सभा के अधिकारी भी थे। उन्होंने दैनिक संध्या से ब्रह्मयात्रा और सध्या-यज्ञ और आर्यसमाज का परिचय नामक दो आध्यात्मिक ग्रन्थों की रचना की थी।

१५ जनवरी को प्रातःकाल रानीबाग स्थित, शवदाहगृह में उनका अंतिम संस्कार किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव तथा आर्यसमाजों व अनेक संस्थाओं की ओर से भारी संख्या में लोगों ने दिवंगत को अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में शोकसभा के पश्चात् दिवंगत के सम्मान में सभा कार्यालय बन्द कर दिया गया।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

(पृष्ठ १ का शेष)

करोड रुपये भी एकत्रित किये जायें। नेताजी तुरन्त इस काम के लिए जुट गये और देखते-देखते कई हजार स्वयंसेवक तैयार कर दिये। उनको सैनिक शिक्षा तथा वर्दियां भी दी गईं। इन सैनिकों का सेनापतित्व भी सुभाष बाबू ने ही सम्भाला।

सरकार ने सोचा यदि इस मनचले विद्रोही युवा को यूं ही बढ़ने दिया तो एक दिन यह सरकार के विनाश का कारण बनेगा। परिणाम-स्वरूप सुभाष बाबू को जेल की कालकोठड़ियों का संग करना पड़ा। भारत का वह सिंह जीवन में पहली बार जेल के सीखचों में दहाड़ा। न्यायालय में मुकदमा चला और सुभाष को छः महीने की सजा दी गई। जिसे सुनकर हंसते हुए सुभाष ने कहा—क्या मैंने मुर्गी चुराई है जो मुझे इतनी कम सजा दी जारही है। कितना महान् था वह हमारा प्यारा सुभाष। आप वेष बदलकर एकाएक लोगों के बीच से अदृश्य हो बर्लिन पहुंच गये और हिटलर से मिले। हिटलर ने आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आपको वहां की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया। जर्मन सरकार ने तो आपको एक विशाल महल, एक वायुयान, एक कार और एक रेडियो ट्रांसमीटर भी भेंट किया। बैंकाक में पूर्वी एशिया के भारतीयों का एक बड़ा सम्मेलन हुआ, जिसमें जावा, सुमात्रा, हिंद-चीन बोर्निया हांगकांग, बर्मा, मलाया और जापान के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। उस सम्मेलन में आजाद हिंद संघ का नियमपूर्वक निर्माण हुआ। जिसका ध्येय था—विश्वास, एकता, बलिदान और देखते-देखते सारे भारतीय इस संघ के एक ध्वज के नीचे एकत्र होगये। इस महान् अवसर पर सुभाष ने आजाद हिंद फौज को सम्बोधित करते हुए कहा—

आजाद सेना के सेनानियो! हमारी खुशी का आज सबसे बड़ा गौरवमय दिन है। आज भगवान् ने यह शुभावसर दिया है कि हमारे देश की आजाद सेना तैयार खडी है। यह वह सेना है जो भारत माता की परतन्त्रता की बेड़ियों को काटेगी। साथियो! मातृभूमि बलिदान चाहती है। देशभक्तों तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा। साथियो सिपाहियो! मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मैं तुम्हारे साथ रहूंगा सुख में, दुःख में, रात में, दिन में, हार में, जीत में। इसलिये सूरमाओ आगे बढ़ो, हमारा नारा है दिल्ली चलो दिल्ली। हमारा अभियान तब शांत होगा, जब हमारी आजाद फौज दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा ध्वज फहरायेगी। भगवान् हमें शक्ति दे कि हम अपना सर्वस्व होम कर भी विजयी हों। आज सुभाष बाबू हमारे बीच नहीं हैं, वे देश को स्वर्ग बनाना चाहते थे।

अन्त में परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि प्रभु हमें भी उन्हीं के पथ का पथिक बनने की शक्ति दे।

गणतन्त्र दिवस २६ जनवरी

भारत की आजादी का प्रतीक तिरंगा

भारत को स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् तिरंगा तो १५ अगस्त, १९४७ को ही फहरा दिया गया था। किन्तु अंग्रेजों का संविधान भारत पर ऐसे ही छाया हुआ था। आज अंग्रेज भारत में तो नहीं हैं किन्तु उनकी अंग्रेजियत समूचे भारत में छायी हुई है और सांसद से लेकर एक छोटी-सी झोपड़ी तक अपना अधिकार जमाती चली जा रही है। हमारा गणतन्त्र राज्य २६ जनवरी को ही हुआ था और तिरंगा झण्डा फहराया गया था। झण्डे के भाव वही थे जिनको सुनकर आज दुःख होता है कि मेरा प्यारा भारत किधर जारहा है। जबकि उस तिरंगे का भाव है कि—

हरा रंग है हरी हमारी धरती की अंगड़ाई।
केसरिया बल भरनेवाला सादा है सच्चाई॥

परन्तु आज दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि न इन शहीदों की धरती पर हरियाली दिखाई दे रही है, न स्वाभिमान, न बल और न ही सच्चाई है। आज की सरकार एवं देशवासियों के ऊपर एक प्रश्नचिह्न खड़ा है कि—क्या इसीलिए भारत माता के अमर शहीदों ने अपनी कुर्बानियां दी थी ?

ऐ भारत के नागरिको ! भारत को यदि एक सूत्र में बांधना चाहते हो, भारतीय संस्कृति को बचाना चाहते हो, भारत की एकता एवं अखण्डता को कायम रखना चाहते हो तो अंग्रेजियत को बढ़ावा मत दो। मेरा प्यारा भारत जिसको सोने की चिड़िया कहकर पुकारा जाता था, आज वह किधर जारहा है। आज मेरी आजाद भारत माता पर भी अत्याचार ढाये जारहे हैं। जैसे एक मां या बहन को अपनी इज्जत बचाने के लिए एक साड़ी या (चीर) की आवश्यकता होती है और चीर खींच उसे नग्न कर देने से मा का अपमान होता है, उसी प्रकार आज मेरी प्यारी मातृभूमि भारत की संस्कृति सभ्यता रूपी साड़ी को खींचकर अपमानित किया जारहा है। हजारों गौवें काटी जारही हैं और आतंकवादियों को बढ़ावा दिया जारहा है, मुस्लिम कौम को बढ़ावा दिया जारहा है। देश के अहित में कूटनीतियां हो रही हैं। जो व्यक्ति अपने देश से प्यार नहीं रखते और अपने बच्चों से पापा, डेडी, मम्मी कहलवाकर प्रसन्न होते हैं एवं अण्डा, मांस, शराब का सेवन करते हैं, वे उन शहीदों के प्रति गद्दार हैं, ऋणी हैं जिन्होंने भारत की आजादी के लिए कुर्बानियां दी थी। उन वीरों ने ही तो कहा था कि—

जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं वह पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥
मरते-मरते मर गये लेकिन न छोड़ा मान को।
याद रखो दोस्तो हिन्दुस्तानी शान को॥

भगतसिंह के इस भारत में जगह नहीं जयचन्दों की।
सबसे कहदो यह भूमि है आजादी के बन्दों की॥

अपने पूर्वजों एवं वीर शहीदों के इतिहास को पढ़कर वह दिन याद आता है जिस दिन यह मेरी भारत माता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी थी, तब भारत माता के सपूत रामप्रसाद बिस्मिल ने मरते समय कहा था—

मरते बिस्मिल रोशन लहरी असफाक अत्याचार से।
पैदा होंगे सैंकड़ों इनकी रुधिर की धार से॥
क्यों करता बगावत यदि, फांसी का डर होता।
चढ़ाता भेंट माता को अगर एक सिर और होता॥

यदि अपने देश के प्रति मरना भी पड़े तो कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि—

क्या हुआ अगर मिट गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबुले कुर्बान होती हैं अपने चमन के वास्ते॥

इसलिए आओ सभी मिलकर आजादी के प्रतीक तिरंगे की रक्षा करें और आजादी को कायम रखें। तभी २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस मनाना सार्थक होगा।

—प० रामफल शास्त्री 'धर्म शिक्षक'
डी०ए०वी० सैंटिनरी पब्लिक स्कूल
हांसी (हिसार)

❀ गरीब व दलित की सेवा ईश्वर की सच्ची सेवा है।
❀ ईश्वर खेतों और झोंपड़ियों में रहता है, जाओ वहां ईश्वर को ढूढो
❀ भूले भटके लोगों को पुनः वैदिक-धर्म में लाना होगा।

जाखड़ कुछ किसानों पर आयकर के पक्ष में

नई दिल्ली, १२ जनवरी (प्रेट्र)। केन्द्रीय कृषिमन्त्री बलराम जाखड़ ने कुछ किसानों पर आयकर लगाने की वकालत की है। उन्होंने कहा है कि कुछ लोग अपने काले धन को सफेद बनाने के लिए खेती किसानों का सहारा ले रहे हैं, उनसे आयकर वसूला जाना चाहिए।

एक इंटरव्यू में श्री जाखड़ ने कहा कि कृषि के नाम पर कुछ लोग धोखाधड़ी कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि बहुत दिनों से कृषि-नीति सम्बन्धी जिन प्रस्तावों का इन्तजार किया जारहा है उन्हें बजट सत्र के दौरान संसद में पेश किये जाने की उम्मीद है। इन प्रस्तावों में कृषि उत्पाद के निर्यात और क्षेत्रीय असंतुलन दूर करने की कोशिशों पर जोर होगा।

इसके अलावा कृषि के विकास के लिए अच्छे जल प्रबन्ध और बारानी खेती की समस्यायें दूर करने के उपाय भी प्रस्ताव में शामिल किये जायेंगे।

श्री जाखड़ ने बताया कि कृषि-नीति पर प्रस्तावों के दस्तावेज पर राज्य सरकारों और विश्वविद्यालयों जैसी संस्थाओं से मिले राय-मशविरों के जरिए मसविदा तैयार हो रहा है।

साभार : दैनिक जनसत्ता

डा० एस० आर्य ने पदभार सम्भाला

रोहतक, ६ जनवरी (ह०सं०)। डा० एस० आर्य ने आज महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के प्रति-कुलपति (प्रो० वी० सी०) का पदभार सम्भाल लिया है। श्री आर्य हिसार के दयानन्द पी० जी० कालेज में प्रिंसिपल पद पर कार्यरत थे।

दहिया कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रति–कुलपति

कुरुक्षेत्र, ६ जनवरी (निस)। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर तथा पूर्व विधायक भीमसिंह दहिया को प्रति-कुलपति नियुक्त किया गया है।

श्री दहिया ने कल दोपहर को ही अपने पद का कार्यभार सम्भाल लिया।

अब फोन पर एक दूसरे को देखा भी जा सकेगा

वाशिंगटन, ६ जनवरी (भाषा)। अमेरिका की एक कम्पनी ने विक्रय के लिये पहले रंगीन वीडियो फोन का उत्पादन शुरु कर दिया है। इससे न सिर्फ दुनियां के किसी हिस्से से दो व्यक्तियों के बीच बात-चीत, बल्कि एक-दूसरे को बात करते हुए देखना भी सम्भव है।

अमेरिका की सबसे बड़ी टेलीफोन कम्पनी एल एड टी का कहना है कि ये रंगीन वीडियो फोन घरेलू टेलीफोन के तांबे के तारों से भी काम लाये जा सकते हैं। ऐसे एक वीडियो टेलीफोन की शुरुआती कीमत १४६५ डालर रखी गई है।

आर्यसमाज टोहाना जि० हिसार का चुनाव

प्रधान—(आजीवन) डा० वृजलाल गुप्ता, (कार्यकर्त्ता) महाशय धर्मपाल आर्य, उपप्रधान—श्री निहालचन्द व हकीकतराय, मन्त्री—डा. रामनारायण ढींगडा, उपमन्त्री—श्री ओमप्रकाश आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री अर्जुनदेव, कार्यालयमन्त्री—श्री धर्मप्रकाश शास्त्री।

गोहाना में नशीले पदार्थों का प्रकोप बढ़ा

निस/गोहाना

यहां नशीली दवाओं यानि 'नारकोटिक्स' का चलन बढ़ता जा रहा है। अफीम, गांजा, सुल्फा पीने का अनुपात आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा है। शराब के नये-नये अहातों से हमारे शहर, हमारे गांव की जमीनें बिची पड़ी है। जिले सोनीपत की गोहाना तहसील के गांवों के गम्भीर सर्वेक्षण से अत्यन्त विस्फोटक स्थिति का पता चला है। इन गांवों में गामड़ी, खानपुर कलां, मुण्डलाना, सिसाना, ईसराना, शाहपुर आदि प्रमुख हैं। माहरा, घिलोड़, असिया का जिक्र भी किया गया है। बीधल, पिनाना, जौली, लाठ गांव भी वर्णनीय हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में इन जीवनघातक मादक-द्रव्यों का इस्तेमाल युवा-पीढ़ी को तो घुन की तरह खाये जा रहा है। सर्वेक्षण के अनुसार अब ८-१३ वर्षीय बच्चे भी इस आत्मघाती प्रचलन के शिकार हुए जारहे हैं। शराब की खपत गेहूं की अपेक्षा अधिक हो रही है। ठेकेदार शराबखानों पर तो सरेआम ये जहर बेचते ही हैं।

अब तो गांवों में फेरी लगानेवाले जो कि गांव में आवश्यक वस्तुओं को बेचने का कार्य करते हैं, शराब की बोतलें अपने बोरों में भरकर ले जाते हैं और गेहूं के बदले, सब्जी आदि की तरह शराब के प्याले भरकर बेचने लगे हैं। देखने में आरहा है कि इस कारण परिवार के परिवार तहस-नहस हो रहे हैं और सरकार की शराब-नीति के कारण और भी होते जारहे हैं। इन सभी को वितरित करनेवाले गांव के व बाहर के कुछ भ्रष्ट, स्वार्थी व समाजविरोधी तत्त्व हैं। सुलफा, अफीम व गांजे के नियमित सेवन से मस्तिष्क शून्य होने लगता है। मस्तिष्क में सदैव अर्द्धबेहोशी की अवस्था छाई रहती है। किन्तु इस जहर के खिलाफ कोई आवाज नहीं उठाता। सभी बर्बादी में मग्न हैं और कहते हैं, यही है जिंदगी, ऐश करलो। किसी भी समाज के नेता या राज के नेता का ध्यान इसकी ओर नहीं जारहा। ना ही गांव की पंचायतें, ना बुजुर्ग इस जहर को रोकने का खास प्रयत्न करते हैं और प्रशासन को तो आवश्यकता ही क्या पड़ी है इस व्यर्थ की सिरदर्दी मोल लेने की।

इन गांवों में कुछ समझदार व पढ़े-लिखे बुजुर्गों का कहना है कि स्वतन्त्रता के बाद निस्संदेह हमने कुछ क्षेत्रों में तरक्की की है, उत्पादन बढ़ा है, नये कारखाने, नये उद्योग, नई राहों पर अपना देश अग्रसर हुआ है। धन कमाना तो अवश्य आगया है किन्तु जीना भूल गए हैं। यदि हमारी युवा-पीढ़ी इसी तरह जंग खाती रही। यदि इसी तरह का जहर हमारी रगों में उतरता रहा और इसी तरह जहरीला प्रभाव बढ़ता रहा तो एक दिन हम पुन: दासता के बन्धनों में जकड़े जायेंगे। हमारी नशीली युवा-पीढ़ी ने विकास की योजनायें तो क्या बनानी हैं। इन्हें नशे करके नवयौवनाओं से बदनीतियों से ही फुर्सत नहीं। क्या यही है क्रांतिकारी वीरों के सपनों का भारत? क्या यही है फांसी के फन्दों को चूमनेवाले फरिश्तों के बलिदानों का बदला। इन लोगों की मांग है कि राज्य व केन्द्र सरकार को इस बुराई को रोकने के लिए शीघ्र ही सख्त कदम उठाने चाहियें और संचार माध्यमों से शिक्षा प्रचार तेज होना चाहिए।

साभार : जनसन्देश

वेदप्रचार

गत दिसम्बर मास में सभा के भजनोपदेशक श्री मुरारीलाल बेचैन ने मेवला महाराजपुर, फरीदाबाद तथा दिल्ली में वेदप्रचार एवं पारिवारिक सत्संग किया तथा सर्वहितकारी साप्ताहिक के निम्न-लिखित आजीवन सदस्य बनाये—

१. श्री तिलकराज आर्य सुपुत्र चौ० मंगलसिंह बंसला, ग्राम मेवला महाराजपुर, जि० फरीदाबाद
२. श्री राजू चपराना सुपुत्र म० परमालसिंह, गांव मेवला महाराजपुर जि० फरीदाबाद
३. आर्यसमाज करोलबाग दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०७/७३ रजि. न० P/RTK-४९ मुष्टिसब० २८ जनवरी,

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए

वर्ष १९ अंक १० २८ जनवरी, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

भारत के उत्थान में आर्यसमाज का हाथ

—सन्तराम बी०ए०

किसी राष्ट्र को उठाने के लिए उतनी राजनीतिक संग्राम की आवश्यकता नहीं होती जितनी कि उसकी सामाजिक बुराइयों को दूर करके उसे भीतर से सुदृढ़ करने की। इसीलिएं आर्यसमाज के पूज्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने हिन्दूसमाज की सामाजिक त्रुटियों पर भारी बल लगाया।

नौवीं शताब्दी में अफगानिस्तान में भी पालवंश के हिन्दू राजे राज करते थे। उस समय सारा अफगानिस्तान हिन्दू था। परन्तु आज अफगानिस्तान तो दूर आधा पंजाब और आधा बंगलादेश भी मुसलमान हो चुका है। दक्षिण में हिंदू धड़ाधड़ ईसाई बन रहे हैं।

हिन्दुओं के राजपूत जितने वीर और लड़ाकू थे उतने उत्तर-पश्चिम से आक्रमण करनेवाले मुसलमान नहीं। इसी प्रकार हमारे ब्राह्मण जितने विद्वान् थे उसका पासंग भी मुसलमान पठान न थे। भारत के पतन का प्रधान कारण हिन्दुओं की भीतरी फूट के सिवा कुछ नहीं। यह फूट जिसका दूसरा नाम वर्णव्यवस्था या जात-पात है, सारे भारत को ही ले डूबी है। इसी ने भगवान् के करोड़ों अमृत-पुत्रों से वह मानवी प्रतिष्ठा छीन ली है जिसके बिना यह जीवन जीने योग्य ही नहीं रह जाता। तुलसीदास जैसे कवि कहते थे—

पूजिए विप्र शील गुण हीना।
शूद्र न गुणगण-ज्ञान प्रवीणा॥

इसी से दु:खी होकर अछूत और शूद्र, मुसलमान और ईसाई हुए। स्वामी दयानन्द के जन्ममूलक वर्णव्यवस्था पर कुल्हाड़ा चलाया। बाद को जब उन्होंने अनुभव किया कि जन्म से हो या कर्म से यह वर्ण-व्यवस्था समाज के लिए घोर हानिकारक है, तो उन्होंने साफ कह दिया—'यह वर्ण-व्यवस्था तो आर्यों के लिए मरण-व्यवस्था बन गई है, देखें इस डाकिन से इनका पीछा कब छूटता है।'

जातपात को मिटाने के लिए अन्तर्जातीय विवाह होने चाहियें। आर्यसमाज ने इस ओर क्रियात्मक पग उठाया। पुण्यश्लोक महात्मा मुन्शीराम (बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी) सबसे बड़े और पहले आर्य-समाजी थे जिन्होंने अपनों और परायों के घोर विरोध की परवाह न करके अपनी पुत्री का विवाह जातपात तोड़कर किया।

हिन्दूसमाज की दूसरी बुराई स्त्री और शूद्र को पढ़ने का अधिकार न देना थी। आर्यसमाज ने ही सबसे पहले लड़कियों की शिक्षा के लिए जालन्धर में कन्या महाविद्यालय खोला और अछूत बच्चों को अपने स्कूलों में पढ़ने की अनुमति दी। इससे पहले शंकराचार्य कहता था कि यदि शूद्र के कान में वेद का मन्त्र पड़ जाए तो उसके कान में पिघला हुआ सीसा भर देना चाहिए और उसने नारी को नरक का द्वार कहा है। परन्तु आर्यसमाज ने इसका खण्डन करते हुए कहा—

नारी निन्दा न करो, नारी नर की खान।
नारी से नर होते हैं, ध्रुव प्रह्लाद समान॥

आर्यसमाज से पहले लड़कियों का विवाह बारह वर्ष की आयु से पहले ही कर दिया जाता था। कहा जाता था कि लड़की की आयु बारह वर्ष से ऊपर हो जाने पर उसके विवाह का पुण्य माता-पिता को नहीं लगता। आर्यसमाज ने इस धारणा का खण्डन करके लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में करने की प्रथा चलाई।

स्वामी दयानन्द जी जन्म से गुजराती थे परन्तु उन्होंने राष्ट्रीय एकता के लिए आर्यभाषा हिन्दी का प्रचार किया और अपना अमर ग्रन्थ (सत्यार्थप्रकाश) हिंदी में ही लिखा।

सब मुसलमान शीया हो या सुन्नी एक ही अल्लाह को मानते हैं और एक ही मस्जिद में बैठकर नमाज पढ़ सकते हैं। इसी प्रकार सब ईसाई रोमन कैथोलिक हों या प्रोटेस्टेंट, एक ही गिरजाघर में बैठकर प्रार्थना कर सकते हैं। सब मुसलमानों का एक ही धर्मग्रन्थ कुरान है। इसी प्रकार सब ईसाइयों का धर्मग्रन्थ एक 'अंजील' ही है। इसके विपरीत हिंदू, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं को मानते और पीपल, तुलसी, गरुड, कैलाश, ज्वालामुखी और गंगा प्रकृति पेड़, पत्ती, पर्वत और नदी-नालों आदि को पूजते हैं। इनके अठारह पुराण और कई स्मृतियां हैं। यह सब एक मन्दिर में बैठकर पूजा नहीं कर सकते। आर्यसमाज ने केवल वेद को धर्मग्रंथ और 'ईश्वर' को पूज्य देव बताकर एकता का प्रचार किया। आर्यसमाज के मंदिर में सवर्ण अवर्ण, तथाकथित अछूत और शूद्र सब इकट्ठे बैठ सकते हैं। सनातनी हिंदू केवल ब्राह्मण जाति के व्यक्ति को ही मंदिर का पुजारी और पुरोहित मानते हैं। आर्यसमाज ने शूद्र कहलानेवाले बढ़ई, नाई और कहार इत्यादि जाति के विद्वानों को भी अपने पुरोहित बनाया।

मुसलमान सब सलाम कहकर एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं, ईसाई गुडमोर्निंग या गुडइवनिंग कहकर, परन्तु हमारे हिंदू लोग राम-राम, कोई जयहिंद, कोई सतश्री अकाल और कोई राधेश्याम कहकर एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं। आर्यसमाज ने एकता के लिए (नमस्ते) का प्रचार किया।

इस प्रकार आर्यसमाज ने सामाजिक फूट को दूर करके सारी जाति को एकता के सूत्र में लाने का यत्न किया। इसके प्रचार से प्रादेशिक भेदभाव भी दूर होता गया। परन्तु आज देश की रक्षक एक-मात्र संस्था आर्यसमाज भी ढीला पड़ गया है। देखें कब कोई महापुरुष पैदा होता है और आर्यसमाज को फिर से मैदान में लाता है।

साभार : 'आर्य विजय'

ऋषि जन्म-दिवस पर सरकारी अवकाश की मांग

युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा के निश्चय के अनुसार १२ फरवरी, १८२४ तदनुसार संवत् १८८१ फा० वदि दशमी, शनिवार माना गया है। धर्मार्य सभा की २९-५-१९५५ को बैठक में महर्षि की जन्मतिथि पर विचार हुआ। पं० भीमसेन शास्त्री के संयोजकत्व में पं० भगवतदत्त जी, बी० ए० रिसर्च स्कालर, श्री इन्द्रदेव पीलीभीत, पं० ऋषिमित्र बम्बई और पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड की एक समिति भी गठित की गई थी। इस समिति की २७-१-५७ और २३-७-६० को बैठकें हुईं। इन बैठकों में पं० भीमसेन शास्त्री, पं० इन्द्रदेव, पं० अखिलानन्द (दयानन्द दिग्विजय के रचयिता), जगदीशसिंह गहलोत और पं० भगवतदत्त के विभिन्न तर्कों पर गम्भीरता से विचार हुआ था। अन्त में धर्मार्य सभा ने महर्षि के जन्मतिथि के विषय पर जो निर्णय लिया, उसकी पुष्टि सार्वदेशिक सभा की २ अप्रैल, १९६७ की अंतरंग सभा द्वारा की गई।

अतः समस्त आर्यसमाज १२ फरवरी को महर्षि दयानंद का १६८वां जन्मदिन धूमधाम से मनाव और एक सप्ताह पूर्व से निम्न कार्यक्रमों का आयोजन करें—

१. प्रातः नगर में प्रभात-फेरियों का आयोजन।
२. यजुर्वेद पारायण-यज्ञ।
३. आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्यजनों के भवनों पर ओ३म्-ध्वज फहराया जाये।
४. वैदिक विद्वानों के प्रवचन।
५. वैदिक सिद्धांतों के प्रचार हेतु साहित्य वितरण।
६. सार्वजनिक सभाओं का आयोजन।
७. आर्यसमाज में अन्य लोगों को सदस्य बनाना।
८. छुआछूत और ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाने के लिए सहभोज का आयोजन करना।
९. महर्षि के जन्म से लेकर अब तक आर्यसमाज के द्वारा धर्म-जाति और राष्ट्र की रक्षा तथा एकता के लिये किये गये कार्यों का विवरण जनता तक पहुंचाना आदि।

अतः सभी आर्यसमाज १२ फरवरी को यज्ञ की पूर्णाहुति समारोह पूर्वक करें और सार्वजनिक सभा का आयोजन करके भारत सरकार से मांग करें कि अन्य धार्मिक महापुरुषों की तरह महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर प्रतिवर्ष १२ फरवरी को सरकारी अवकाश घोषित किया जावे।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान

आदर्श विवाह

दिनांक ११-१-९२ को डीघल निवासी चौ० मनफूलसिंह अहलावत के पौत्र श्री कैप्टन राजेन्द्रसिंह अहलावत के सुपुत्र चि० दीपक का शुभ विवाह संस्कार मा० दीपचन्द आर्य रोहतक की सुपुत्री आयु० विजया के साथ वैदिक-रीति से हुआ। पं. धर्मवीर, पं. रतनसिंह आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने विवाह संस्कार करवाया और विवाह का अर्थ और पति-पत्नी का कर्त्तव्य अच्छी तरह से समझाया, जिसका सुननेवालों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। चौ० मनफूलसिंह जी ने एक रुपये का रिश्ता लिया और कोई भी चीज दहेज में नहीं ली। संस्कार पर चौ० मनफूलसिंह की तरफ से १०० रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दान दिया गया।

—रतनसिंह आर्य

शराब हटाओ, देश बचाओ

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट-३६३६५० (गुजरात)
उप कार्यालय : आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

इस वर्ष ऋषिबोधोत्सव १-२-३ मार्च, १९९२ तदनुसार रवि, सोम, मंगल को ऋषि जन्म-स्थली टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जारहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण-यज्ञ होगा। देश-देशांतर से पधारे ऋषि-भक्त, आर्य विद्वान् तथा कलाकार इस सुअवसर पर ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इस वर्ष आर्यवानप्रस्थाश्रम के अध्यक्ष महात्मा आर्यभिक्षु जी, आचार्य यशपाल सुधांशु एम० ए०, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, श्री ओमप्रकाश वर्मा भजनोपदेशक यमुनानगर पधार रहे हैं। कन्या गुरुकुल बड़ौदा, पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्यायें, टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी, आर्यवीर दल प्रांगध्रा एवं केंद्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली तथा अन्य संस्थाओं के युवक समारोह में कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। पधारनेवालों के आवास, भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगा, किन्तु बाहर से पधारने वाले सज्जन ऋतु अनुकूल अपने-अपने बिस्तर अवश्य साथ लायें।

इस समय टंकारा ट्रस्ट के अधीन निम्न कार्य चल रहे हैं—

(१) अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
(२) दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र गृह
(३) आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र
(४) गो-संवर्धन केन्द्र (गोशाला)
(५) अतिथि गृह
(६) वेदप्रचार
(७) पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय

ऋषि जन्म-स्थली टंकारा में अभी और भी अनेक विशेषकरणीय कार्य हैं जैसे—ऋषि जन्म-गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार में लेना, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा जन्म-स्थली को विश्वदर्शनीय बनाना। टंकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता-जनार्दन के सहयोग से टंकारा उत्सव को सफलता, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा अन्यान्य कठिनाइयों को दूर करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं। इन सब कार्यों के लिए कम से कम ८-१० लाख रुपये की और आवश्यकता है।

टंकारा की गोशाला में आजकल २५ से अधिक गायें हैं। इस गोशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है। परन्तु हर वर्ष इस गोशाला में घाटा हो जाता है। यह घाटा ऋषि-भक्तों और गोभक्तों के दान से ही पूरा होता है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि ऋषिबोधोत्सव पर आप इष्ट मित्रों सहित टंकारा पधारिये और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए। यह दानराशि आप क्रास चैक/ड्राफ्ट अथवा मनिआर्डर से महर्षि दयानंद स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम से इसके दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से अपने आर्य-समाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा अन्य सम्बधित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेजकर ऋषि ऋण से अनृण होकर पुण्य के भागी बनिए।

विशेष सूचना : टंकारा ट्रस्ट को दी जानेवाली राशि पर आयकर की छूट है।

निवेदक :

ओंकारनाथ	शांतिप्रकाश बहल	रामनाथ सहगल
मेनेजिंग ट्रस्टी	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

पद्मश्री आचार्या सुभाषिणी अभिनन्दन-समिति

माननीय सज्जनो !

बहिन सुभाषिणी जी की लगातार पचास वर्ष तक सामाजिक-सेवाओं के कारण उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करने का निश्चय किया गया है। इस सन्दर्भ में नवम्बर, १९९१ में एक बैठक छोटूराम पार्क रोहतक में आयोजित की गई, जिसमें अभिनन्दन की रूप-रेखा तैयार की गई। इस बीच विभिन्न व्यक्तियों, प्रतिनिधिसभाओं व संगठनों से सम्पर्क स्थापित किया गया। सभी का भरपूर लिखित व मौखिक सहयोग प्राप्त हुआ। अब तक जो सहयोग राशि अभिनन्दन के लिए प्राप्त हुई है उसकी सूची छपवाई जारही है। जिसमें प्रिंसिपल डा० शकुन्तला, सुश्री साहबकौर, सुश्री ज्ञानवती, श्रीमती कृष्णा, श्रीमती शारदा शर्मा, डा० सुदर्शन शास्त्री और बाबू रघुवीरसिंह का बड़ा भारी योगदान रहा है। सभी के पास पहुंचना भी सम्भव नहीं है। अतः निवेदन है शीघ्रातिशीघ्र इस शुभ-कार्य में अपनी आहुति डालने का अवश्य मन बनाये, ताकि अभिनन्दन तिथि शीघ्र तय की जा सके। अब तक जिनकी राशि हमें प्राप्त हुई, उनके प्रति समिति आभार प्रकट करती है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दिल्ली व पंजाब के सभाप्रधानों का सहयोग वचन प्राप्त हो चुका है।

शेरसिंह मलिक
अध्यक्ष

महेश्वरसिंह मलिक
कार्यकारी अध्यक्ष

प्रकाशवीर विद्यालंकार
संयोजक

अभिनन्दन सहयोग राशि

	रुपये
१ प्रो· सतबीरसिंह खूहन जींद	११,०००
२ श्री समुन्द्रसिंह लाठर जुलाना	११,०००
३ ,, ला० हरकिशनदास बहादुरगढ़	५१००
४ ,, चौ. प्रियव्रत राजौरी गार्डन दिल्ली	५१००
५ श्रीमती प्रेमवती जींद रोड गोहाना	२१००
६ डा० महेन्द्रसिंह ,, ,,	२१००
७ श्री जयनारायण गुप्ता, गुप्ता प्रिंटिंग प्रेस गोहाना	२१००
८ श्रीमती रिसालकौर मलिक गोहाना	२१००
९ ,, किताबो देवी ८ मरला पानीपत	२१००
१० ,, प्रकाशवती १५८० नारायणसिंह पार्क पानीपत	२१००
११ ,, राजबाला २५ टिचरज कालोनी सोनीपत	२१००
१२ ,, रामदेवी १२९८/१४ सोनीपत	२१००
१३ श्री लछमनदास बख्शीराम काठमण्डी गोहाना	२१००
१४ ,, रघबीरसिंह माडल टाउन रोहतक	११११
१५ सुश्री डा. शकुन्तला प्रिंसिपल खानपुर कलां	११११
१६ प्रो. प्रकाशवीर विद्यालंकार रोहतक	११००
१७ श्री रामधन काठमण्डी गोहाना	११००
१८ सेठ जगमन्द्रदास गोयल काठमण्डी गोहाना	११००
१९ श्री पीरुराम बजाज काठमण्डी गोहाना	११००
२० सेठ बंसीधर मेन बाजार गोहाना	११००
२१ श्रीमती शकुन्तला ३०० माडल टाउन रोहतक	११००
२२ श्री जितेन्द्र मलिक प्रोपर्टी डीलर नांगलाई (जींद)	११००
२३ ,, हंसराज ब्रजमोहन नया बाजार दिल्ली	२५१
२४ ,, विमल भण्डारी १६४/६ रोहणी सैक्टर II दिल्ली	२५१
२५ ,, मल्लूसिंह (प्रीतमपुरा)	५१
२६ ,, ओमप्रकाश मलिक बसन्त विहार, दिल्ली	११००
२७ चौ. होश्यारसिंह प्रिंसिपल कंभावला	११००
२८ श्रीमती शीला राणा (सोम बाजार) शालीमार बाग दिल्ली	११००
२९ ,, शांता नानीवाला बाग आजादपुर दिल्ली	११००
३० डा. सुशीला दीप क्लीनिक जुलाना	११००
३१ श्री महेश्वरसिंह मलिक सीख	११००
३२ श्रीमती शकुन्तला हुड्डा २०३ माडल टाउन रोहतक	११००
३३ ,, कृष्णादेवी माडल टाउन रोहतक	११००
३४ ,, धर्मवती सुहाग २१/३५ सोनीपत रोड रोहतक	११००
३५ ,, राजकुमारी नजदीक सिविल हस्पताल रोहतक	११००
३६ ,, राकेश मलिक अध्यापिका कन्या गुरुकुल खानपुर	११००
३७ श्री ऋषिकुमार नजदीक सिविल हस्पताल रोहतक	११००
३८ श्रीमती परमेश्वरी देवी ग्राम गामड़ी (सोनीपत)	११००
३९ सुश्री ब्रह्मवती शास्त्री अध्यापिका क. गु. हाई स्कूल खानपुर	११००
४० ,, साहबकौर मुख्याध्यापिका ,, ,, ,,	११००
४१ ,, शांति कंसल अध्यापिका ,, ,, ,,	११००
४२ ,, ज्ञानवती प्राध्यापिका खानपुर कलां	११००
४३ सुश्री विजयलक्ष्मी क. गु. हाई स्कूल खानपुर	११००
४४ ,, यशवन्ती ,, ,,	११००
४५ श्रीमती शारदा शर्मा प्रिंसिपल खानपुर कलां	११००
४६ श्री सुदर्शन शास्त्री ,, ,, ,,	११००
४७ श्रीमती डा० कृष्णा ,, ,,	११००
४८ ,, कमलमोहिनी बंसल ,, ,,	११००
४९ ,, शशीप्रभा गुरुकुल खानपुर	११००
५० ,, कृष्णा राठी खानपुर कलां	११००
५१ ,, अत्तरकौर मलिक पटियाला चौक जींद	११००
५२ चौ. प्रीतसिंह सेवामुक्त एच,सी.एस. जींद	११००
५३ सुश्री कंवलप्रीत नेशनल मैडिकल हाल गोहाना	११००
५४ सेठ रामकुवार ट्रांसपोर्टर गोहाना मण्डी	११००
५५ श्री मातूराम हलवाई कचहरी चौक गोहाना	११००
५६ श्रीमती कमला देवी भिवानी रोड जींद	११००
५७ श्री शिवराज XEN बिजली बोर्ड जींद	११००
५८ सुश्री दर्शना आचार्या कन्या गुरुकुल खरल जींद	११००
५९ श्रीमती सन्तोष ,, ,, ,, ,,	११००
६० श्री टेकराम भू.पू. सरपंच राजपुरा (भैण) जींद	११००
६१ ,, सूरजभान ,, ,, ,,	५००
६२ श्रीमती गार्गीदेवी W/o कर्नल मखेराम करनाल	११००
६३ श्री प्रह्लाद रणसिंह ग्राम दुभेटा	११००
६४ ,, महेन्द्रसिंह ५४० आर माडल टाउन पानीपत	११००
६५ श्रीमती स्नेहलता कोहली खानपुर कलां	११००
६६ ,, शकुन्तला खरेटा ,, ,,	११००
६७ ,, सन्तोष दहिया ,, ,,	११००
६८ ,, ओमवती २८ हाउसिंग बोर्ड सोनीपत	११००
६९ श्री महेन्द्रसिंह मोर हैडमास्टर गोहाना	११००
७० श्रीमती सुमित्रा देवी मलिक चांदनगर रोहतक	११००
७१ ,, शांतिदेवी मुख्याध्यापिका ,,	११००
७२ श्री ओमप्रकाश मुरली मिष्ठान्न भण्डार गोहाना	११००
७३ ,, रामदत्त शास्त्री कासण्डी	११००
७४ श्रीमती सावित्री भरत कालोनी रोहतक	५०२
७५ ,, प्रेमवती W/o श्री होशियारसिंह	११००
७६ ,, परमेश्वरी देवी लैक्चरर जींद	११००
७७ ,, मुखत्यारी देवी सुभाषनगर रोहतक	१०१
७८ ,, शांति देवी ७३३ दहिया भवन दिल्ली रोड रोहतक	११००
७९ ,, सरिता विज खानपुर कलां	११००
८० ,, इन्दिरा लाकड़ा १४ डी यूनि० कालेज रोहतक	११००
८१ ,, मुन्नी देवी रोहतक बाईपास जींद	११००
८२ ,, मिसरी देवी पटेलनगर पटियाला चौक जीद	११००
८३ श्री सूबेसिंह (सगतपुरा) हांसी रोड ,, ,, ,,	११००
८४ श्रीमती सावित्री अध्यापिका ३२६ हाउसिंग बोर्ड जीद	११००
८५ ,, डा० सुशीला ५१ ,, ,, ,,	११००

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्यसमाज के लिए समर्पित सर्वस्व त्यागी

म० भरतसिंह जी का स्वर्गारोहण

'यत्सृष्ट तन्नष्टम्' के सिद्धांत अनुसार परमात्मा के अधीन जन्म-मरण की व्यवस्था की न्यायपरम्परा में सारा प्राणी संसार बंधा हुआ है। आज अचानक इस शोक सूचना को सुनकर मानसिक खेद हुआ कि ८१ वर्षीय महाशय भरतसिंह जी आर्यनेता महर्षि दयानन्दमठ रोहतक में स्वर्ग सिधार गए। आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरयाणा के प्रतिष्ठित लब्धकीर्ति, त्यागी, तपस्वी महापुरुष तथा महर्षि दयानन्दमठ रोहतक के शीर्ष स्तम्भ थे। आप पचास वर्षों से रोहतक के आर्यसमाजों तथा दयानन्दमठ रोहतक में निवास करके आर्यसमाज के प्रचार में सहयोगी तल्लीन रहते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के आय विधानों गतिविधियों का आपको पूरा ज्ञान था और अनेक वर्षों से आप सभा के मन्त्री और उपप्रधानपद पर आरूढ़ थे। आपका जीवन धर्मात्मा, सरल एवं याज्ञिक था। आपके आर्यजीवन की श्रेष्ठता, लग्न, सेवा तथा निर्देशन और सगठन के आधार पर ही अक्तूबर, १९८८ ई० में रिवाड़ी में एक आर्य भव्य समारोह में आपको अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया गया था जिसमे हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौधरी देवीलाल जी ने भी पधार कर आपके सम्मान में उद्गार प्रकट किये थे।

महर्षि दयानन्दमठ रोहतक में होनेवाले हर प्रकार के आर्य समारोहों में सध्या हवन तथा भोजन व्यवस्था और आर्य अतिथियों के वस्त्र आदि शयन का प्रबन्ध आप ही करते थे। इस मठ के अधिग्रहण एव संरक्षण में आपका विशेष सहयोग था।

ऐसे धर्मात्मा, परोपकारी, स्वदेश-भक्त, समाज-सुधारक आर्यनेता को दिल्ली के सारे आर्य अध्यापको और आयसमाजों की ओर से हम पावन श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं। परमात्मा उनकी दिवगत आत्मा को स्थिर शाति प्रदान करे।

हम हैं दिल्ली के आर्य अध्यापक तथा
आर्यसमाज नांगलोई के सदस्य

शोक प्रस्ताव

स्वर्गीय महाशय भरतसिंह जी के निधन पर निम्नलिखित आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं तथा महानुभावों ने शोक प्रस्ताव भेजते हुए दिवंगत आत्मा को शाति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है तथा उनके गुणों का उल्लेख किया है।

१ गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद
२ आर्यसमाज मन्दिर कृष्णानगर, भिवानी
३ ,, झज्जर रोड, रोहतक
४ सैनी कल्याण संघ, करनाल
५ आर्यसमाज कालिज विभाग, प्रधाना मौहल्ला, रोहतक
६ श्री राममोहनराय एडवोकेट मन्त्री आर्यसमाज पानीपत
७ दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र
८ आर्यसमाज थानेसर, कुरुक्षेत्र
९ ,, रायपुर जि० यमुनानगर
१० ,, रेवाड़ी
११ ,, बीकानेर गगायचा अहीर (रेवाड़ी)
१२ ,, शिवाजी गुड़गांव
१३ महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर आर्यसमाज सफीदों (जींद)
१४ श्री जंगदेवसिंह मान, ग्राम राजथल जि० हिसार
१५ आर्य सीनियर सेकेण्डरी स्कूल सिरसा
१६ आर्यसमाज नरेला दिल्ली
१७ ,, होली मौहल्ला करनाल
१८ मुख्याध्यापिका आर्य कन्या उच्च विद्यालय झज्जर (रोहतक)
१९ प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् पलवल (हर०)
२० अधिकारी रामेश्वरदास आर्य कन्या विद्यालय होली मौहल्ला करनाल

शोक समाचार

डा० मंगलदेव लाम्बा आचार्य छोटूराम किसान कालेज, जींद के ज्येष्ठ पुत्र श्री अश्विनीकुमार का असामयिक निधन २२-१-९२ को हो गया है। दिनांक ३१-१-९२ को प्रातः ११ बजे शोक-यज्ञ का आयोजन किया गया है।

डा० मंगलदेव लाम्बा
४५४१ डिफेंस कालोनी
नजदीक एस.पी. निवास, जींद

आदर्श विवाह

दिनांक ११-१-९२ को मा० दीपचन्द जी आर्य रोहतक की सुपुत्री सौ० विजया का शुभविवाह संस्कार डीघल निवासी कैप्टन राजेन्द्रसिंह अहलावत के सुपुत्र चि० कैप्टन दीपक के साथ वैदिक-रीति से पं० रतनसिंह आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने करवाया। मा० दीपचन्द जी आर्य ने सभा को १०० रुपये दान दिया

—रतनसिंह आर्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

८६ श्रीमती कलावती १२१६ अर्बन एस्टेट जींद	११००
८७ डा. सुनहरासिंह १७१३ ,, ,, ,,	११००
८८ श्रीमती रामकौर १४९९ ,, ,, ,,	११००
८९ ,, विद्यावती अहलावत १८१६ अर्बन एस्टेट जींद	११००
९० ,, बीरमती १८१५ ,, ,, ,,	११००
९१ ,, कुसुम १०९३ ,, ,, ,,	११००
९२ श्रीमती अगूरी देवी ४५४६ अर्बन एस्टेट जींद	११००
९३ श्री गुलशन बजाज पुस्तक भण्डार गोहाना	११००
९४ श्रीमती शाति देवी नौलथा (करनाल)	११००
९५ ,, बिमला देवी वार्डन खानपुर कलां	११००
९६ ,, गायत्री देवी ८०९ अर्बन एस्टेट पानीपत	११००
९७ ,, भानमती २१६ माडल टाउन सोनीपत	११००
९८ ,, दीपकौर २७/३१८ सोनीपत	११००
९९ ,, सुखदा आर्यनगर ,,	११००
१०० ,, बसन्तो देवी ६९५ बी/३१ सोनीपत	११००
१०१ ,, कुसुम ६३४/२१ आजादगढ रोहतक	११००
१०२ डा. दलेलसिंह ५१७/२५ रोहतक	११००
१०३ श्रीमती विद्यावती दुर्गा कालोनी रोहतक	११००
१०४ ,, विद्यावती ८२१/२१ कैलाश कालोनी रोहतक	११००
१०५ ,, करतार देवी ६८/१४ कृपाल नगर रोहतक	११००
१०६ ,, मूर्ति देवी ४२८/१९ दुर्गा कालोनी ,,	११००
१०७ ,, उषारानी प्रेमनगर नरवाना	११००
१०८ श्री मायाचन्द (राजगढ)	११००
१०९ ,, राजपाल ओवरसियर, नरवाना	११००
११० ,, दरियासिंह माहरा (जुआ)	११००
१११ ,, राकेश मलिक सक्रेटरी गोहाना	११००
११२ डा० धर्मचन्द जनता हस्पताल गोहाना	१५००
११३ ,, ओमप्रकाश छिकारा ,,	११००
११४ श्री हंसराज व सुरेन्द्रसिंह मलिक ,,	२२००
११५ प्रो० रामकुमार मलिक ,,	११००
११६ श्री चन्द्रगुप्त शास्त्री आवली	११००

(क्रमशः)

भूकम्प पीड़ितों में आर्यसमाज का सेवा-कार्य जारी रहेगा

दिल्ली १५ जनवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज एक विज्ञप्ति में बताया कि आर्यसमाज गढ़वाल के भूकम्प पीड़ितों में अपना सेवा सहायता कार्य बराबर जारी रखेगा। उन्होंने बताया कि इस भयंकर ठण्ड के मौसम में भी वहां दर्जनों आर्यवीर उत्तरकाशी स्थित आर्यसमाज के सेवा केंद्र के माध्यम से पीड़ितों की सहायता में लगे हुए हैं। स्वामी जी ने बताया कि दो दिन पूर्व ही लोहे की चादरों का एक ट्रक भरकर वहां और भिजवाया गया है। अब तक कम्बल, लोहे की चादरें, तिरपाल, वस्त्र तथा अन्न आदि के रूप में वहां लगभग १ करोड़ रुपये की सामग्री आर्यसमाज के राहत केन्द्र के माध्यम से वितरित की जा चुकी है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आदर्श पाणिग्रहण संस्कार

आर्यसमाज प्रधाना मौहल्ला के पूर्वप्रधान श्री यशपाल जी शास्त्री के सुपुत्र चि० सुशील बजाज रोहतक निवासी का शुभविवाह सौ० कंचन सुपुत्री श्री वी० डी० चांदना सोनीपत निवासी के साथ ७-१२-९१ शनिवार को श्री बोधराज शास्त्री के पौरोहित्य में पूर्ण सादगी एवं वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। जिसमें वरपक्ष से बारात में केवल १५ सदस्य गये। इस शुभावसर पर विभिन्न संस्थाओं एवं विद्वानों को ६१४ रुपये दान दक्षिणा के रूप में प्रदान किये गये।

—गुरुदत्त आर्य

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को दान

हरयाणा के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं दानी चौ० करतारसिंह भड़ाना अनंगपुर निवासी जि० फरीदाबाद ने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को २० रजाई, गद्दे बनवाकर दान दिया है।

इसी प्रकार नार्थवासी श्रीमती मीना गुप्ता एवं गौतम गुप्त, गौरव गुप्त (कोठी न० ८४१ सेक्टर-१५ फरीदाबाद) ने दिनांक १२ जनवरी को गुरुकुल में पधारकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा वासियों को फलाहार भेंट किये तथा मकर संक्रांति-पर्व हेतु ५१ रु० दान दिया। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी गुरुकुल के विकास हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनेंगे।

—राजेन्द्रसिंह बिसला विधायक
कार्यकारी अध्यक्ष
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद)
डाकघर नई दिल्ली-४४

हरयाणा के आर्य प्रतिनिधियों को सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २ फरवरी, ९२ को प्रातः ११ बजे रोहतक में होगा। सभा के प्रतिनिधियों की सेवा मे अधिवेशन का एजेण्डा १८ जनवरी को डाक द्वारा भेज दिया है। जिन आर्यसमाजों ने अभी तक प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क नही भेजा है, वे यथाशीघ्र सभा को भेज देवे। प्रवेश-पत्र २ फरवरी को दे दिये जावगे।

—सोमवीरसिंह सभा उपमन्त्री

वेदप्रचार

गतमास १२-१३ दिसम्बर, ९१ को गाव में पं० जयपाल आर्य की भजनमण्डली ने भजनों के द्वारा किलोई खास में वेदप्रचार किया तथा शराब, दहेज आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा दी। दोनों दिन प्रातःकाल यज्ञ भी किया गया और कई लोगों ने जनेऊ धारण किये। प्रचार के फलस्वरूप ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना होगई। गांव में पहले आर्यसमाज स्थापित था। लगभग १० वर्ष के शिथिल हुए आर्यसमाज को जागृत किया गया और समाज का चुनाव निम्न प्रकार किया गया—

प्रधान—सर्वश्री रघुनाथ आर्य, उपप्रधान—ईश्वरसिंह आर्य, मन्त्री—जयसिंह हुड्डा, उपमन्त्री—जिलेसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—कर्मवीर आर्य, प्रचारमन्त्री—महेन्द्रसिंह आर्य। —ब्र० ईश्वरसिंह आर्य

मन्त्री आर्यसमाज

मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में हवन

१४ जनवरी, ९२ को आर्यसमाज कंवारी (हिसार) की ओर से मकर संक्रांति-पर्व के उपलक्ष्य में चौपाल में हवन किया गया। हवन पर विशेषकर नवयुवकों ने भाग लिया। कई सज्जन बड़ी श्रद्धा से अपने-अपने घरों से घृत लाये। प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी एवं डा० ओमप्रकाश आर्य ने मकर संक्रांति-पर्व के महत्त्व तथा नवयुवकों के कर्त्तव्य पर विचार रखे। साथ में दुर्व्यसनों को छोड़ आर्यसमाज के सम्पर्क में आने की अपील की।

—सूबेदार रामेश्वरदास आर्य
मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

शुभ विवाह

श्री डा० सोमवीर उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा एवं प्रधान चिकित्सक स्वामी स्वतन्त्रानन्द धर्मार्थ औषधालय दयानन्दमठ की सुपुत्री कुमारी सुमेधा का शुभविवाह संजीवकुमार सुपुत्र ले० कर्नल दलीपसिंह जी के साथ वैदिकरीति से दिनांक १४-१-९२ को सम्पन्न हुआ। वर-वधू की ओर से निम्न दान दिया गया—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ऋषिलंगर हेतु २२ रु०, गुरुकुल झज्जर १०१ रु०, बाढ पीड़ित हेतु १०१ रु०।

सर्वश्री विजयकुमार आई.ए.एस., वेदव्रत शास्त्री, सत्यवीर शास्त्री, सुखदेव, प्रिंसिपल गुगनसिंह आदि अनेक महानुभावों ने बधाई दी।

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

गतांक से आगे— रुपये

क्रम	नाम	रुपये
१	मन्त्री आर्यसमाज बरोदा त. गोहाना जि. सोनीपत	५०१
	चौ. मनफूलसिंह कसवां गली नं. ३ कोर्ट कालोनी सिरसा द्वारा संग्रहीत राशि	
२	श्री बुधराम	३५
३	„ स्याली	१०
४	„ माडू	५
५	„ चूनी	१००
६	„ रावत	१०
७	„ मनीराम	५
८	„ मनफूल	५
९	„ रोशन बंसल	२०
१०	„ महावीर पटवारी	२०
११	„ नेकीराम	२०
	मुख्याध्यापक आर्य हाई स्कूल पटेलनगर हिसार द्वारा संग्रहीत राशि	
१२	आर्यसमाज पटेलनगर हिसार	१०१
१३	स्टाफ आर्य हाई स्कूल पटेलनगर हिसार	१७३
१४	छात्र „ „ „ „ „	३३९
१५	चौ. रामचन्द्र गहलौठ ग्राम सलीमसर माजरा जि. सोनीपत	१०१
१६	श्री महेन्द्रसिंह आर्य ग्राम बटगांव „	१०१
१७	श्री मा. नारायणसिंह साबौली „	२०
१८	महिला आर्यसमाज मालवीय नगर दिल्ली	५१
१९	आर. एल. गुप्ता मन्त्री द्वारा आर्यसमाज ग्रेटर कैलास पार्ट वन दिल्ली-४८	१०१
२०	चौ. बनसिंह छिल्लर एच. पी. एल. कालोनी जंगपुरा भोगल दिल्ली-१४	१०१
२१	श्री ओमप्रकाश गर्ग कबाड़ी इन्द्रलोक दिल्ली-३५	५१

(क्रमशः)

—सभामन्त्री

बचो इस डायन से

बचो इस डायन से ओ ! भारत के नौजवान बचो इस डायन से।
सुनलो धरके ध्यान बचो इस डायन से॥

यादव जैसे वीर खा लिए, बड़े-बड़े रणधीर खा लिए।
तेरा क्या अनुमान, बचो इस डायन से......
ओ ! भारत के नौजवान ....

राजाओं के राज खालिए, मुगलों के मिजाज खालिए।
यह जाने सकल जहान, बचो इस डायन से।
ओ ! भारत के नौजवान......

जिसने इसको मुंह लगाया, आखिर में सिरधुन पछताया।
उसके बच्चे हुए वीरान, बचो इस डायन से।
ओ ! भारत के नौजवान....

घर और जमीन बेचदी सारी, पत्नी फिरती मारी-मारी।
धक्के खाता फिरे नादान, बचो इस डायन से।
ओ ! भारत के नौजवान....

पीना और पिलाना छोड़ो, इस डायन की गर्दन तोड़ो।
मिटादो इसका नामोनिशान, बचो इस डायन से।
ओ ! भारत के नौजवान ....

'प्रभाकर' की बात मानलो, यह डायन मदिरा है जानलो।
यह पापिन बड़ी महान्, बचो इस डायन से।
ओ ! भारत के नौजवान .....

रचयिता : कप्तान मातुराम शर्मा प्रभाकर (रिवाड़ी)

त्याग और श्रद्धा का अनुपम उदाहरण

—गजानन्द आर्य मन्त्री, श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर

इस बार परोपकारिणी सभा के ऋषि मेले पर एक ऐसे व्यक्ति के दर्शन हुए, जिनके त्याग और श्रद्धा के स्वरूप को जानकर आदर से नतमस्तक होगया। पं० आशानन्द भजनीक की चर्चा करना चाहता हूँ। ९१ वर्षीय इस वृद्ध भजनोपदेशक में आज भी ऋषिभक्ति का सागर उमड़ पड़ता था जब अपनी बुलन्द आवाज में श्रोताओं को ऋषिजीवनी की पवित्र धारा में स्नान करवाते थे। उनकी मस्ती में नकलीपन की बू नहीं थी बल्कि बड़ा पवित्र लगा वह व्यक्ति जब उनको ऋषि उद्यान की उबड़-खाबड और कांटेभरी भूमि में नंगे पांव घूमते देखा। मैंने उनसे नंगे पांव चलने का कारण पूछा, तब मेरी ऋषि-भक्ति बहुत छोटी लगने लगी। कहने लगे बेटा! इस भूमि पर मेरे ऋषि की अस्थियां बिखरी पड़ी हैं, अतः इस पर जूते पहनकर चलना मुझे अच्छा नहीं लगता। श्रद्धा से ओतप्रोत यह भावना सचमुच में त्यागी सिखाती है। ऋषि के गीत गा-गाकर, जीवन को तपस्वी व मितव्ययी बनाकर इस मानव ने एक लाख रुपये की पूंजी एकत्र की। इस पूंजी को भी समर्पित कर दिया ऋषि की उत्तराधिकारिणी सभा को। इदन्न मम के उदाहरण से आहुति देनेवाले हम आर्यलोग जरा कल्पना तो करें इस त्याग की।

सभा को प्राप्त इस सात्विक दान से ऋषि उद्यान का प्रवेशद्वार निर्मित होगा। प्रवेशद्वार निर्माण की परिकल्पना तथा पं० आशानन्द जी को सभा के दान के लिए दान की प्रेरणा में सभा के प्रधान श्रद्धेय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का महत्त्वपूर्ण योगदान है। द्वार को भव्यता के लिये स्वामी जी महाराज की विशेष रुचि है। निश्चय ही प्रवेशद्वार सुन्दर बनाया जावेगा। किन्तु सुन्दर बनाने में एक लाख रु० राशि पर्याप्त नहीं है। कुछ और धन इस कार्य के लिये जुटाना होगा। इसके लिये धन जुटाना बहुत अधिक कठिन नहीं है। जहां धनी-मानी सज्जनों से उद्यान में कमरे बनाने के लिये आश्वासन मिला है, वहां द्वार निर्माण में भी सहयोगी मिल सकते हैं। किंतु हम चाहते हैं कि पं० आशानन्द जी जैसे त्यागी, तपस्वी, श्रद्धालुजनों की पवित्र कमाई का अंशदान द्वार निर्माण के लिये मिल जाये, ताकि महाभारत के नेवले की तरह हमारा यह द्वार आधा ही स्वर्णिम न होकर पूरा सुनहरा लगे।

दृष्टान्त : सर्वोत्तम यज्ञ का—

महाभारत के चक्रवर्ती सम्राट् महाराज युधिष्ठिर ने एक राजसूय यज्ञ किया। वह बृहद् यज्ञ सम्भवतः उस समय अनुपम था। देश-देशांतरों में उस यज्ञ की बहुत चर्चा थी। यज्ञकर्त्ताओं को अपनी दान-शीलता पर अभिमान न आजाये इसके लिए एक कहानी महाभारत में आती है—

एक नेवला था। उसका आधा अंग सुनहरा था और आधा बदरंग था। महाभारत के यज्ञ से कीचड़भरी मिट्टी में वह नेवला लोटपोट हो रहा था। किसी ने इस नेवले से लोटपोट होने का कारण पूछा। नेवले ने उत्तर दिया कि मैं एक यज्ञ में लोटपोट होकर आया हूं, वहां का कीचड़ इतना कम था कि पूरे शरीर में नहीं लग सका, किन्तु जितना लिपटा उतना यह शरीर सुनहरा होगया है। बाकी मेरा यह आधा शरीर ज्यों का त्यों है। उस जैसी यज्ञीय मिट्टी की तलाश में मैं यहां आया था। सुना था बहुत बड़ा यज्ञ हुआ है अवश्य ही मैं सुनहरा हो जाऊंगा। किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ।

पूछनेवाले ने आश्चर्यचकित होकर महाभारत से भी महान् यज्ञ को जानने की इच्छा व्यक्त की, तब नेवले ने बताया—किसी गांव में एक निर्धन ब्राह्मण परिवार रहता है। कई-कई दिनों तक भरपेट भोजन की व्यवस्था इस परिवार की नहीं होती। ब्राह्मण-ब्राह्मणी और एक पुत्र और पुत्रवधू चार प्राणियों के इस परिवार को एक दिन कुछ भोजन प्राप्त हुआ। हाथ मुंह धोकर यह परिवार भोजनार्थ बैठा ही था कि एक अतिथि आ पहुंचा। भूखे अतिथि के सत्कार में ब्राह्मण ने अपना भोजन अतिथि देवता को समर्पित कर दिया। भूखे अतिथि की भूख शांत न होने पर ब्राह्मणी ने अपना अंश अतिथि को भेंट कर दिया। अतिथि फिर भूखा रहा तब छोटे से ब्राह्मण पुत्र और पुत्रवधू ने भी अपना हिस्सा समर्पित कर दिया। अतिथि की भूख शांत हुई। आशीर्वाद देकर विदा हुआ। बहुत दिनों से भूखा ब्राह्मण परिवार जल का आचमन करके सो गया। अतिथि और आतिथेय द्वारा गीली हुई उस जमीन पर जब मैं लोटा, तब मेरा यह शरीर सोने जैसा होगया। बाकी का यह शरीर उस जैसे सर्वत्यागी यज्ञ की धूलि से ही सुनहरा बनेगा। यह किसी ने बताया है और मैं उस यज्ञ की तलाश में घूमता फिरता हूं।

सर्वत्यागी यज्ञ की तुलना में महाभारत का वह बृहद् यज्ञ छोटा प्रतीत होने लगा।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज कवारी (हिसार) का वार्षिक उत्सव दिनांक ३-४-५ जनवरी, ९२ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी रत्नदेव, स्वामी जगतमुनि, स्वामी सुमेधानन्द, महात्मा ताराचन्द, पं० रामस्वरूप शास्त्री, पं० दयानन्द शास्त्री व्याकरणाचार्य, महावीरप्रसाद प्रभाकर, पं सत्यवीर शास्त्री, श्री शिवराम आर्य विद्यावाचस्पति- मा. शेरसिंह, आचार्या बहिन दर्शना तथा स्वतन्त्रता सेनानी, भगत रामेश्वरदास आदि विद्वानों ने भाग लिया। देश की आजादी में आर्य क्रांतिकारियों की कुर्बानी इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुक्सान से लोगों को अवगत कराया तथा विशेषकर नवयुवकों से शराब, मांस, धूम्रपान आदि बुराइयों से सदा दूर रहने की अपील की।

आर्यजगत् के प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं० चिरंजीलाल तथा पं. चन्द्रभान जी का अभिनन्दन एवं स्वागत किया गया। उपरोक्त महानुभावों को एक-एक शाल, वैदिक साहित्य तथा अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया तथा अन्य आर्यसदस्यों ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

इसके अतिरिक्त महाशय खेमसिंह क्रांतिकारी, पं० चन्द्रभान, पं० चिरंजीलाल तथा महाशय फूलसिंह आर्य आदि के समाज-सुधार के क्रांतिकारी शिक्षाप्रद भजन हुए। उत्सव पर कन्या गुरुकुल खरल की छात्राओं, गुरुकुल आर्यनगर के विद्यार्थियों तथा गांव के स्कूली बच्चों ने भी बहुत ही रोचक एवं प्रेरणादायक भाषण व भजनों का कार्यक्रम रखा। मंच का संचालन क्रांतिकारी जी ने कुशलतापूर्वक किया। ऋषिलंगर का कार्य पं० बृजलाल एवं पं० ओमप्रकाश आर्य ने किया। हवन पर कई प्रतिष्ठित सज्जनों ने यज्ञोपवीत धारण किये। सभी श्रोताओं ने विद्वानों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। सभा को ८६० रुपये दान दिया गया।

—सूबेदार रामेश्वरदास आर्य

शेरसिंह ने भजन के बयान को गद्दारी बताया

समाचार सेवा

रोहतक, २० जनवरी। भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल के इस वक्तव्य को कायराना और गद्दारीपूर्ण बताया है कि अकालियों की सन्तुष्टि होती है तो वे चण्डीगढ़ के साथ हरयाणा को भी पंजाब में शामिल करने के लिए राजी हैं।

पत्रकारों से बातचीत करते हुए प्रो० शेरसिंह ने कहा कि हरयाणा बनाने के लिए कितना संघर्ष करना पड़ा है, इसे भजनलाल नहीं जानते। उन्हें तो कुर्सी सौदेबाजी में मिल गई, इसलिए अब वे हरयाणा का भी सौदा करने लग गए हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमन्त्री ऐसे ओछे बयान देने से बाज आयें, पंजाब पहले ही जल रहा है। ऐसे बयान देकर वे अब हरयाणा को भी आतंकवाद की ओर धकेलना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि भजनलाल को ऐसे बयान देने का किसने अधिकार दिया है।

प्रो० शेरसिंह ने कहा कि अकाली बेईमान हैं। वे हर दफा मसलों को उलझाकर नई मांग खड़ी कर देते हैं। क्षेत्रीय फार्मूले के तहत जिसे सन्त फार्मूला भी कहा जाता था, अबोहर फाजिल्का के एक सौ पांच गांव हरयाणा को दिये जाने थे और चण्डीगढ पंजाब को, लेकिन चण्डीगढ भी पंजाब को दे दिया जाये और अबोहर फाजिल्का का मामला ज्यों का त्यों अटका रहे, ऐसा कदापि नहीं हो सकता। यही स्थिति सतलुज-यमुना लिंक नहर के पानी की है।

१९६० में विश्व बैंक ने माना था कि इस नहर का पानी भारत का है, लेकिन आश्चर्य की बात है कि वह पानी आज तक पाकिस्तान में बह रहा है और अकाली उसकी लेशमात्र भी परवाह नहीं कर रहे हैं। क्या यह देशद्रोह नहीं है। उन्हें यह मन्जूर नहीं कि पानी हरयाणा को मिले, लेकिन यह मन्जूर है कि भारत का पानी पाकिस्तान में बहता रहे।

प्रो० शेरसिंह ने कहा कि भजनलाल जैसे दोमुंही बात करनेवाले राजनीतिज्ञों ने पंजाब में सिख-हिंदू का जहर घोला है। एक तरफ वे सिखों को भी हिन्दू मानते हैं तो दूसरी तरफ पंजाब के हिन्दुओं की अलग से बात करते हैं। पंजाब में हिन्दुओं को दूसरे दर्जे का कहना ही पंजाब समस्या को विकराल बनाना है।

साभार : नवभारत

चीन में कुंवारों की फौज !

पेईचिंग, २१ जनवरी (एएफपी)। चीन में स्त्री-पुरुषों की संख्या का अन्तर अगर इसी रफ्तार से बढ़ता रहा तो इस सदी के अन्त तक यहां कम से कम पांच करोड़ 'कुंवारों की फौज' तैयार हो जायेगी।

चीन के महिला संगठन की मुख्य पदाधिकारी छान मू हुंवा पुरुष को नारी से श्रेष्ठ समझने की सामंतवादी मनोवृत्ति को इसके लिये जिम्मेदार मानती हैं। उनके मतानुसार चीन की आबादी में मौजूदा असन्तुलन इसी वजह से पैदा हुआ है।

उन्होंने कहा कि इस भेदभावपूर्ण मनोवृत्ति की वजह से अभिभावक बालिका का जन्म होने पर उसे डुबा देते हैं या किसी वीरान जगह पर छोड़ आते हैं। इसके पहले परीक्षण के दौरान अगर उन्हें बालिका के जन्म की सम्भावना प्रतीत हुई, तो वे गर्भपात तक करा लेते हैं।

श्रीमती छान चीनी संसद की उपाध्यक्षा भी हैं। आंकड़ों का हवाला देकर उन्होंने बताया कि एक अरब १५ करोड़ की चीन की आबादी में ५१.२ प्रतिशत पुरुष हैं। इसका अर्थ यह है कि इस देश में महिलाओं की निस्बत दो करोड़ पुरुष अधिक हैं। उन्होंने आग्रह किया कि आबादी का यह अन्तर इसी तरह बढ़ता गया तो २१वीं सदी शुरु होते-होते चीन में पांच करोड़ कुंवारों की फौज तयार हो जायेगी।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

रक्त का विकल्प विकसित

बम्बई, ११ जनवरी (प्रेट्र)। यहां चिकित्सा वैज्ञानिकों ने रक्त का विकल्प विकसित कर लिया है। आपातकाल में जरूरत पड़ने पर किसी भी रक्तसमूह के रोगी को रक्त के स्थान पर यह घोल दिया जा सकेगा।

यहां इम्यूनोहीमेटोलोजी संस्थान (आई०आई०एच०) के निदेशक डा० एस० वी० आप्टे ने कहा कि 'यह द्रव्य दुर्घटना आदि में जीवन को खतरे तथा रक्तसमूह उपलब्ध न होने के दृष्टिगत दिया जा सकता है।

जापान तथा अमेरिका में रक्त के सिंथेटिक विकल्प को विकसित किया जारहा है परन्तु आई०आई०एच० ने इस विकल्प को ब्लड बैंकों द्वारा बेकार करार दिये गये रक्त से तैयार किया हैं।

मानवरक्त का ३० दिनों से ज्यादा भण्डारण नहीं किया जा सकता तथा भारतीय रक्त बैंक तिथि समाप्त होने पर कम से कम एक प्रतिशत रक्त को फेंक देते हैं।

डा० आप्टे के अनुसार संस्थान ने इस बेकार रक्त की मदद से हीमोग्लोबिन का घोल तैयार किया है। इसे स्ट्रोमा फ्री हीमोग्लोबिन (एस० एफ० एच०) कहा जाता है। यह घोल शरीर के ऊतकों को न केवल आक्सीजन देता है बल्कि शरीर के द्रव्य आयतन (फ्ल्यूइड वोल्यूम) को बनाये रखने में मदद देता है।

यह द्रव्य २४ से ७२ घण्टे तक मरीज को आपातकाल में बचाये रखता है। इस अवधि के बाद अन्य उपाय भी किये जा सकते हैं।

आई०आई०एच० ने इस तकनीक का मानकीकरण कर दिया है तथा शीघ्र ही इस द्रव्य का उत्पादन किया जावेगा।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

विरासत में भी कैंसर व हृदयरोग

कैंसर और हृदयरोग जैसी घातक बीमारियां माता-पिता से उनकी सन्तानों में टूटे-फूटे या विकृत 'जींस' की वजह से पहुंच सकती हैं। 'जीन' व्यक्ति की विशेषताओं को निर्धारित करते हैं। ये कोशिकाओं के न्यूक्लियस (केन्द्रक) में स्थित 'क्रोमोसोम' में होते हैं।

एडिनबरा, स्टाटलेंड में हुए जेनेटिक वैज्ञानिकों के एक सम्मेलन में यह बात सामने आई। डाक्टरों का मानना था कि प्रमुख बीमारियां पर्यावरण सम्बन्धी कारणों के अलावा जीन-सम्बन्धी विकृतियों से भी हो सकती हैं। अब डाक्टर इस बात की वकालत कर रहे हैं कि जिन परिवारों में किसी को कैंसर की बीमारी रही हो उनमें बच्चों के 'जींस' का परीक्षण किया जाना चाहिए, ताकि यदि विकृत जीन जैसा कोई खतरा हो तो उसका पता लगाया जासके। इससे कैंसर रोगों पर समय रहते काबू पाया जा सकेगा।

एडिनबरा के पश्चिमी अस्पताल के मानव जेनेटिक्स इकाई के निदेशक प्रो० जान इवांस ने सम्मेलन में बताया कि अधिसंख्य बीमारियां, जिन्हें पहले हम पर्यावरण सम्बन्धी कारणों से उत्पन्न होनेवाली मानते आए थे, वे अब जीन-सम्बन्धी गड़बड़ियों के नतीजे के रूप में सामने आरही हैं।

प्रो० इवांस का कहना है कि कुछ मामलों में वैज्ञानिक पहले से उन जींस को पहचान सकते हैं जो बाद में कैंसर का कारण बननेवाले हों या जिनसे हृदयरोग का खतरा हो। ऐसे मामलों में डाक्टर सम्भावित रोगियों को उनकी जीवन-पद्धति इस तरह बदल लेने की सलाह दे सकेंगे जिनसे उनकी रक्षा की जा सके।

सम्मेलन में विभिन्न बीमारियों में लिप्त 'अपराधी जींस' को पकड़ने के दो तरीके भी बताये गये। इसके लिये उन परिवार के लोगों के 'फिंगर प्रिंट्स' को जिनमें कैंसर का इतिहास रहा हो उन परिवारों से तुलना की गई जिनमें किसी को कैंसर नहीं हो।

साभार : दैनिक हिंदुस्तान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०/७३ रजि. न० P/RTK-

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक ११ ७ फरवरी, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

तथाकथित पंजाब समस्या वास्तव में हरयाणा और राष्ट्र की समस्या

—प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी तथा पूर्व केन्द्रीय मन्त्री

जिसे हम पंजाब की समस्या कहते हैं, यह वास्तव में पंजाब के अकालियों तथा हिंदुओं द्वारा उत्पन्न की हुई समस्या है जिसका परिणाम भुगतना पड़ रहा है, हरयाणा को और समूचे राष्ट्र को। थोड़ा गहराई से विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पंजाब की कोई समस्या है ही नहीं। पंजाब भारत का सबसे समृद्ध प्रदेश है। पंजाब के सिख और हिंदू भाई सारे देश की आर्थिक और राजनैतिक गतिविधियों में अपनी संख्या से बहुत अधिक प्रभाव बनाये हुए हैं। सरकारी नौकरियों में उनकी संख्या, जनसंख्या के अनुपात से कई गुना अधिक है, व्यापार और उद्योग धन्धे भी अपनी संख्या से कई गुना उनके पास हैं। आज के युग में जिस प्रकार की योग्यता चाहिए तथा कर्मठता भी, वे दोनों उनके पास हैं। प्रति व्यक्ति आय पंजाब की सबसे अधिक है और बेरोजगारी सबसे कम। खेती और दूसरे मजदूरी के कामों के लिए पंजाब में लाखों की संख्या मे पूर्वी उत्तरप्रदेश और बिहार से लोग आते हैं। पंजाब में इस प्रकार की मजदूरी के लिए आदमी उपलब्ध नहीं है। अकालियों के अनेक बड़े जो सिखों के साथ भेदभाव के बर्ताव की बात करते हैं, वे कभी इसके कोई प्रमाण आज तक नहीं जुटा पाए। मास्टर तारासिंह के नेतृत्व में अकाली दल ने १९६० में सिखों से भेदभावपूर्ण व्यवहार की शिकायत की थी। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने दास कमीशन का गठन कर दिया, परन्तु उस कमीशन के सामने वे कोई प्रमाण नहीं दे सके और खिसक गए। मैंने उस समय हरयाणा लोक समिति की ओर से हरयाणा के साथ किये जाते रहे भेदभावपूर्ण व्यवहार के अनेक उदाहरण रखते हुए ४१ पृष्ठ का ज्ञापन दिया था और अकालियों तथा दूसरे पंजाब के भाइयों को चुनौती दी थी कि वे उनको गलत प्रमाणित करें, परन्तु पंजाब का कोई भाई सामने नहीं आया। १९६२ के चुनावों में वही ज्ञापन हमारा घोषणा-पत्र बन गया था।

मैं बड़े विनम्रभाव से सभी दलों के नेताओं तथा पंजाब के भाइयों को यह चुनौती देता हूं कि वे या तो बतायें कि पंजाब के लोगों की क्या कठिनाई है, उनको कौन-सी चीज नहीं मिल रही जो देश के दूसरे लोगों को मिल रही है, नहीं तो "पंजाब समस्या, पंजाब समस्या" का राग अलापना बन्द करें। पंजाब के किसी भी व्यक्ति को या अकालियों की कोई समस्या नहीं है, वे देश के अन्य प्रदेशों के नागरिकों से कहीं अधिक सुविधायें भोग रहे हैं। वास्तविकता यह है कि पंजाब के अकालियों और दूसरे पंजाब के भाइयों ने हरयाणा के लिए और राष्ट्र के लिए समस्यायें खड़ी कर रखी हैं। तथाकथित पंजाब की समस्या को इस परिप्रेक्ष्य में ही देखना चाहिए। ऐसा न करके सभी राजनैतिक दल और उनके नेता बेकार की खुशामद में लगे हुए हैं और पंजाबियों द्वारा खड़ी की गई इस समस्या का हल उनको समस्या खडी करने के लिए पुरस्कृत करने में ही समझ बैठे हैं। समस्याये खड़ी करने पर जब कोई पुरस्कृत होता रहेगा तो जाहिर है कि वह नई से नई समस्यायें खड़ी करता रहेगा और पुरस्कृत होता रहेगा। १९४७ के बाद का पंजाब का इतिहास इसका साक्षी है।

पंजाब द्वारा खडी की जाती रही समस्याओं ने हरयाणा और राष्ट्र के लिए जो खतरनाक रूप-धारण कर लिया है, इसके लिए चार दोषी हैं। (१) पंजाब का हिन्दू नेतृत्व, (२) अकाली नेतृत्व, (३) भारत सरकार समेत भारत के मुख्य राजनीतिक दल, (४) पाकिस्तान।

पंजाब का हिन्दू नेतृत्व

१९५६ में बम्बई और पंजाब को छोडकर सभी प्रांतों का गठन भाषा के आधार पर होगया। कुछ वर्षों के बाद बम्बई का पुनर्गठन भी भाषा के आधार पर होगया। अकेला पंजाब द्विभाषी रह गया। १९६६ में उसका भी भाषा के आधार पर पुनर्गठन होगया। परन्तु पंजाब का हिन्दू नेतृत्व महापंजाब का नारा लगाता रह गया, उसने हृदय से पंजाबी सूबे के गठन को स्वीकार नहीं किया। वह दोमुही बातें करता रहा और आज भी वही किये जारहा है। वह कहता रहा कि यह पंजाबी सूबा नहीं बना, सिख सूबा बन गया। यहां सिखशाही चल रही है और हिन्दू दूसरे दर्जे का शहरी बन गया है। दूसरी तरफ वह यह भी कहने से नहीं टलता कि सिख तो हिन्दूधर्म का अंग है, वे हिन्दुओं से अलग हो ही नहीं सकते। सिख या तो हिन्दूधर्म का अंग है या हिन्दुओं से अलग है और हिन्दुओं पर अत्याचार करनेवाले हैं। एक साथ दोनों बातें तो ठीक नहीं हो सकतीं। १९६६ से आज तक इस प्रचार ने कि हिन्दू दूसरे दर्जे का शहरी है, सिखशाही चल रही है, पंजाब के सिखों को अलगाव की तरफ धकेला है। आज भी सस्ती लोकप्रियता के लिए यदि भजनलाल यह कह दे कि हरयाणा को पंजाब में मिलाकर महा-पंजाब बनादो, तो पंजाब का हिन्दू उछल पड़ता है, यह सोचे बिना कि इसकी प्रतिक्रिया क्या होगी। वे यह नहीं सोचते कि यदि ४४ प्रतिशत हिन्दू ५६ प्रतिशत सिखों के साथ एक प्रांत में नहीं रह सकता तो यदि डेढ़ प्रतिशत सिख यह कहे कि वह ८५ प्रतिशत हिन्दुओं के राष्ट्र में रहने को तैयार नहीं, तो पंजाब के हिन्दू के पास उसका क्या जवाब है? पंजाब का हिन्दू नेतृत्व यह नहीं सोचता कि उनके चिंतन में राष्ट्र के लिए कितने खतरे छिपे हुए हैं। यही तो अलगाववादियों, आतंकवादियों की खुराक है जो इतने बुद्धिमान् होते हुए भी मेरे भाई उनको दिये जारहे हैं। पंजाब के हिन्दू नेतृत्व को पंजाबी सूबे के अस्तित्व को हमेशा के लिए स्वीकार करना चाहिए और सिख और हिन्दू को बहुमत और अल्पमत में न बांटकर सगे भाई की तरह (जो वे वास्तव में हैं) रहने के लिए और मिलकर प्रदेश की प्रगति मे जुटने के लिए अपना मानस तैयार करना चाहिए।

अकाली नेतृत्व

अकाली नेतृत्व के साथ बर्ताव करना टेढ़ीखीर है। सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि ये किसी बात पर टिकते ही नही। देश की आजादी के लिए इन्होंने बड़े बलिदान दिए। परन्तु जब अंग्रेज ने इनको हिन्दुओं से अलग निकालकर, नौकरियों में और विधानसभाओं में अलग अधिकार देने की बात कही, तो अलगाव के रास्ते पर चल दिये, अलग दल बना लिया। १९४६-४७ में रावलपिंडी में जब हिन्दुओं और सिखों का कतलेआम हुआ, तो मास्टर तारासिंह तलवार घुमाकर हिंदू-सिख और राष्ट्रीय-एकता का नारा देकर मैदान में उतर आए। परन्तु फिर खालिस्तान के लिए जिन्ना और माऊंटबेटन का सहारा लेने पहुंच गए। १९४७-४८ में कांग्रेस में शामिल होगए। १९५१ में फिर कांग्रेस छोड़ गए और रिजनल फार्मूला स्वीकार करके १९५६ में फिर कांग्रेस में शामिल होगए।

अक्तूबर १९५६ में कन्दूखेड़ा समेत फाजिल्का अबोहर हिंदी-भाषी मानकर हिन्दी क्षेत्र के अम्बाला, गुहला, रतिया, सिरसा, कैथल आदि मांग बैठे। फिर दिसम्बर में अकाल तख्त पर हरयाणा के प्रतिनिधियों के साथ बैठकर १९५६ के फैसले पर मोहर लगादी। १९६५-६६ में घोषणा करदी कि भाषा के आधार पर पंजाबी सूबे के निर्माण के बाद उनकी कोई माग नही रहेगी, वे राष्ट्र के सभी दूसरे प्रदेशों के बराबर आजायेंगे। भेदभाव समाप्त हो जाएगा। अप्रैल १९६६ में हरयाणा और पजाबी सूबे के लिए हिंदी-भाषी और पजाबी-भाषी ग्रामो की पहचान के लिये संयुक्त समिति बनाकर भाई-भाई की तरह बैठकर हल निकालने में लग गये। शाह कमीशन बनते ही फिर उससे उलटी बोली बोलने लगे। शाह कमीशन ने चण्डीगढ़ समेत खरड़ तहसील हरयाणा को दी तो चण्डीगढ़ मांगने लगे। उनके दबाव में आकर जब प्रधानमन्त्री ने चण्डीगढ़ को केन्द्र शासित क्षेत्र बनाकर हरयाणा और पंजाब दोनों की राजधानी वहां रखदी, तो थोड़े समय के बाद चण्डीगढ़ पंजाब को देने के लिये भूख हड़ताल और उसके बाद जलने की धमकी दे डाली। हरयाणा के द्वारा दिल्ली में अकालियों के जवाब में दो गुना बड़ा प्रदर्शन करने पर सन्त फतहसिंह ने मेरे पास पेशकश भेजदी (स. हरकिशन सिंह सुरजीत और सोहनसिंह बसी के द्वारा) कि पंजाब को चण्डीगढ़ और हरयाणा को फाजिल्का अबोहर दे दिये जाये। उसी पेशकश के आधार पर प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने २९ जनवरी, १९७० में अपना फैसला दे दिया। उस पर दीवाली मनाली। थोड़े समय बाद उससे भी मुकर गए।

१९७२-७३ में तथाकथित आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव मे फिर अम्बाला, करनाल और हिसार जिले के इलाके और चण्डीगढ़ मांग बैठे और फाजिल्का अबोहर से मुकरने लगे। १९७८-७९ में फिर बरनाला समिति गठित करके आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को नई व्याख्या करते हुए १९७२-७३ की इन इलाको की माग फिर दोहरा दी। जुलाई १९८५ में राजीव लोंगोवाल समझौते के आधार पर अगस्त, १९८५ में अपने बलिदान से पहले फिरोजपुर को सन्त लोंगोवाल ने फाजिल्का अबोहर के ५५ गांव हरयाणा को देने की बात कही। मैथ्यू कमीशन के सामने कन्दूखेड़ा का लंगडा-सा बहाना लेकर फिर उससे भी मुकर गए। राजीव लोंगोवाल समझौते की धारा ७.२ के अन्तिम वाक्य के आधार पर कन्दूखेड़ा का पंजाबी-भाषी होना ही तो चण्डीगढ़ के बदले में फाजिल्का अबोहर के हिंदी-भाषी गांव हरयाणा को दिये जाने का औचित्य ठहराता है। क्योंकि समझौते की धारा ७.२ और ७.४ के अनुसार हरयाणा को मिलनेवाले हिंदी-भाषी गांव अलग-अलग होने चाहिये। मैथ्यू तथा वेंकटरमैया दोनों कमीशनों ने यह बात अपने निर्णय में स्पष्ट की है। १९७६ और १९७८ में दो बार सतलुज यमुना जोड़ नहर के बनाने के लिए एक-एक करोड़ रुपया हरयाणा सरकार से लेकर उससे भी मुकर गये। राजीव लोंगोवाल समझौते पर अमल करने की बात कहते हैं, उसमें १५ अगस्त, १९८६ तक लिंक नहर का काम पूरा करने का आश्वासन है। अब उस नहर का निर्माण आतंकवादियों ने इंजीनियरों और मजदूरों को मारकर रोका हुआ है। बार-बार धमकी देते रहते हैं कि हरयाणा को एक घूंट पानी भी नहीं देंगे। हस्ताक्षर करके, अकाल तख्त पर बैठकर फैसला करके, स्वय पेशकश करके मुकरना अकालियों के लिए साधारण-सी बात है। जो किसी बात पर टिकते ही नहीं, उनके साथ कोई भी क्या फैसला करे। उनकी बात मानते रहिए, वे उससे मुकरते जायेंगे, नित नई मांग खड़ी करते रहेंगे। हर पांच वर्ष में कम से कम आंदोलन उनका धन्धा बन गया है। उनकी मांग अपना अधिकार मांगने की नहीं, दबाव डालकर और धौंस से दूसरों का अधिकार छीनने की है। उनकी अपनी कोई समस्या नहीं है, परन्तु हरयाणा और देश के लिए समस्याय खड़ी करते रहना ही उन का धन्धा बन चुका है।

भारत सरकार तथा देश के मुख्य राजनीतिक दल

बनते-टूटते दलों को यदि छोड़ दें तो सभी दलों में हरयाणा का कोई प्रभावशाली नेता न होने के कारण हरयाणा का यह दुर्भाग्य रहा कि हरयाणा की बात उचित होते हुए भी किसी दल ने खुलकर उसका समर्थन नही किया। पंजाब के बड़े राजनीतिक दलों में प्रभावशाली नेता होने के कारण अपने-अपने दलों को वे पंजाब के समर्थन में जुटाते रहे। परिणाम यह निकलता रहा कि चाहे किसी भी दल की सरकार बनी हो, सबको पंजाब की ओर ही झुकना पड़ा। हिंसा, तोड़-फोड़, मारकाट करनेवाले को शांत करने के लिए वैसे भी सरकार कोई रास्ता खोजती है। इस वातावरण में हरयाणा के प्रतिनिधि भी सदा दबते रहे, इकट्ठे होकर हिम्मत से मुकाबले में नहीं डट पाये और हर बार कुछ न कुछ खोते रहे। पंजाब का पुनर्गठन तो भाषा के आधार पर हुआ था, इसलिए चण्डीगढ़ और फाजिल्का अबोहर के १०५ गांव हिंदी भाषी होने के नाते हरयाणा को ही मिलने चाहिएं थे। आज भी चण्डीगढ़ और फाजिल्का अबोहर दोनों की जनता पंजाब में नहीं रहना चाहती। परन्तु पहले चण्डीगढ़ को केन्द्र शासित क्षेत्र बनाया, खरड़ तहसील का बड़ा भाग पंजाब को दे दिया। अब चण्डीगढ़ भी पंजाब को देने के लिए सब उतावले हो रहे हैं, धरा रह गया भाषा का आधार, धरा रह गया न्याय। जब देश की सरकार और सभी मुख्य दल किसी बात पर भी न टिकनेवाले लोगों को खुश करने में ही लगे रहेंगे तो नतीजा तो यही निकलेगा कि वे समस्यायें खड़ी करते रहेंगे और सरकार और मुख्यदल उनकी तुष्टी करते रहेंगे। यही होता रहा है, फिर पंजाब में खड़ी की गई समस्यायें खतरनाक रूप धारण करती जायें, उसकी जिम्मेदारी से सरकार और सभी दल कैसे बच सकते हैं। जो फैसले हो चुके और अकाली उन्हें मान चुके, उनके बारे में पुनर्विचार करने मात्र से भी जब तक इन्कार नहीं किया जाएगा और दृढ़ता से उन पर अमल नही किया जाएगा तो नित नई समस्यायें उपजती रहेंगी और देश के लिए खतरा पैदा करती रहेंगी।

पाकिस्तान का हाथ

सीमा से लगे प्रदेश में यदि देश के लिए समस्यायें पैदा करने में वहीं के लोग लगे हों तो पाकिस्तान उसका लाभ उठाएगा ही। पाकिस्तान एक ओर तो बंगलादेश का बदला लेने के लिए कटिबद्ध है ही, दूसरी ओर यदि फाजिल्का अबोहर से लगती हुई पजाब की सीमा भी पंजाब के आतंकवादियों को मनमानी करने के लिये पंजाब में रहने के कारण खुली रहे तो उनको हथियारों, अपने प्रशिक्षित आतंकवादियों और हीरोइन को भारत में घुसाने और तस्करी में मदद मिलती है, इसलिए पाकिस्तान तो चाहेगा कि फाजिल्का अबोहर हरयाणा में न जाये तथा गंगानगर और बाकी पंजाब के बीच आवागमन बना रहे। इसके साथ-साथ पाकिस्तान यह भी चाहेगा कि लिंक नहर न बनने पाये और सतलुज, व्यास, रावी नदियों का पानी पाकिस्तान में आता रहे और उसकी लाखों एकड़ भूमि को मुफ्त पानी मिलता रहे।

समाधान

यह समझ लेना चाहिए कि पंजाब की कोई समस्या नहीं है। जिसे हम पंजाब की समस्या कर रहे हैं वह तो हरयाणा का मनोबल गिराने के लिए और राष्ट्र को तोड़ने के लिए जान-बूझकर पैदा की हुई समस्या है। हरयाणा तो भारत की सुरक्षा चौकी है। यदि हरयाणा बीच में न होता तो वर्तमान में कई गुनी समस्या देश की राजधानी के लिए पैदा करदी जाती। पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध अघोषित युद्ध

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

रोहतक, २ फरवरी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन सिद्धांती भवन में उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम प्रातःकाल पं. रघुवीरसिंह शास्त्री की स्मृति में नवनिर्मित यज्ञशाला में सभा के उपदेशकों, भजनोपदेशकों एवं सभा के उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया गया।

११ बजे सभा के अधिवेशन की कार्यवाही आरम्भ होगई। इसकी अध्यक्षता सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा मच का सचालन सभा उपमन्त्री डा० सोमवीर जी ने कुशलतापूर्वक किया। अधिवेशन की कार्य-सूची के अनुसार सर्वप्रथम आर्यसमाज के गतवर्ष में हुए आर्य नरनारियों, मुख्यतया सभा के उपप्रधान म० भरतसिंह वानप्रस्थी एवं उग्रवादियों द्वारा हरयाणा के मुख्यमन्त्री के सहायक श्री वर्मा जी के परिवार की निर्मम हत्या पर शोक प्रकट करते हुए दो मिनट खड़े होकर श्रद्धांजलि दी गई।

सभा के गतवर्ष के साधारण अधिवेशन की कार्यवाही, वार्षिक कार्य वृत्तांत तथा गतवर्ष के आय-व्यय को पढकर सुनाया गया। प्रतिनिधि महानुभावों ने विचार-विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से इसकी सम्पुष्टि की।

इसी प्रकार सभा के वेदप्रचार विभाग तथा अन्य आर्य सस्थाओं आदि के आगामी वर्ष के प्रस्तावित बजट को भी प्रतिनिधि महानुभावों ने सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान करदी।

हरयाणा प्रदेश में वेदप्रचार के प्रचार-प्रसार, शराबबन्दी के अभियान को गतिशील करने एवं पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह जो कि १५ से १७ मई, ९२ को चरखी दादरी जि० भिवानी में होगा, को सफल करने के लिए निम्नलिखित प्रतिनिधियों एवं आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने अपने-अपने उपयोगी सुझाव दिये —

सर्वश्री धर्मचन्द्र मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, भद्रसेन शास्त्री, रामगोपाल आर्य (सोनीपत), ला० रामानन्द, प्रि० लाभसिंह, राममोहनराय एडवोकेट, स्वामी धर्मानन्द (पानीपत), प्रियव्रत (बेडी आसरा), आचार्य सत्यप्रिय (तिजारा), हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री हरयाणा, धर्मवीर शास्त्री (लोहारू), प्रि० होशियारसिंह (दिल्ली ग्रामीण वेदप्रचार मण्डल), कपिलदेव शास्त्री पूर्व सांसद (गुरुकुल भैसवाल), चन्द्रपाल राणा (पाकसमा), महेश्वरसिंह शास्त्री (सींक जि० करनाल), महावीर शास्त्री (रोहतक) तथा मध्यप्रदेश से पधारे हिन्दी प्रेमी वेदप्रकाश वैदिक, प्रो० सत्यवीर शास्त्री (डालावास), सत्यनारायण आर्य (चरखी दादरी) निरंजन (नारायणगढ़ जि. अम्बाला) रामचन्द्र बेवड़क (असावटा फरीदाबाद), श्यामलाल आर्य (बुढ़गांव), अतरसिंह आर्य (हिसार), बद्रीप्रसाद आर्य (जींद), आचार्य देवव्रत (कुरुक्षेत्र) रामचन्द्र आर्य (रेवाड़ी), वैद्य गेन्दाराम आर्य (यमुनानगर), प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार (कन्या गुरुकुल खानपुर), प्रि. दलीपसिंह (सिरसा) आदि।

सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने प्रतिनिधि महानुभावों के विचार तथा सुझाव सुनने पर उन्हें आश्वासन दिया कि आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने के लिये सभा भरसक प्रयत्न कर रही है। सभा की ओर से जिलेवार वेदप्रचार मण्डलों का गठन किया जारहा है। जिला जींद तथा जि० पानीपत के वेदप्रचार मण्डल ने प्रभावशाली भजनमण्डलियों को नियुक्त करके वेदप्रचार का ग्राम-ग्राम में विस्तार कर रहे हैं। सभा के विद्वान् वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य सुदर्शनदेव जी आर्यसमाज मन्दिर झज्जर को अपना केन्द्र बनाकर उधर के आर्यसमाजों में अनुकरणीय वेदप्रचार की व्यवस्था कर रहे हैं। आपने प्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि प्रत्येक जिले में ऐसे सेवा-निवृत्त संस्कृत अध्यापकों की सेवायें प्राप्त करे जो कि तहसील अथवा जिले के किसी मुख्य आर्यसमाज को अपना केन्द्र बनाकर ग्रामों में वेदप्रचार, विवाह आदि वैदिक संस्कार से करवा सकें। सभा की ओर से उन्हें मासिक दक्षिणा आदि दी जावेगी।

आपने सभा द्वारा चरखी दादरी में आयोजित पं गुरुदत्त शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए सभी प्रतिनिधि महानुभावों को तन, मन तथा धन से सहयोग देने की अपील करते हुए कहा कि पं० गुरुदत्त जी आर्यसमाज के प्रकांड विद्वान् तथा ऋषि दयानन्द के मुख्य शिष्य थे। उनका जन्म पजाब में हुआ था। यह समारोह पजाब सभा ने मनाना चाहिये था, परन्तु वहां उग्रवादियों की राष्ट्रद्रोही गतिविधियों के अशांत वातावरण में समारोह नहीं रखा जा सकता। श्री विद्यार्थी जी का कार्यक्षेत्र हरयाणा प्रदेश भी रहा है, क्योकि उन दिनों हरयाणा भी पजाब का ही एक भाग था। अत हमें इस उत्तरदायित्व को उत्साह से निभाकर अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए और उनके शानदार कार्यों की जानकारी जन-जन तक पहुचानी चाहिये। इस उद्देश्य हेतु हरयाणा के प्रत्येक जिले में आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित करके १५ से १७ मई को आर्यसमाज तथा शराबबन्दी का प्रचार करते हुए चरखी दादरी शताब्दी समारोह मे सम्मिलित होने का कार्यक्रम बनाया जावेगा। आपने शराबबन्दी अभियान को प्रगति देने के लिए सुझाव दिया कि पं. गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी के अवसर पर सभा हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी के लिए ठोस कार्य करना चाहती है। इस उद्देश्य हेतु ३ सूत्री कार्यक्रम बनाया गया है—

१) ग्राम पचायतों से शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर सरकार को भिजवाना।

२) शराब की बुराई के विरुद्ध नगर-नगर तथा ग्राम-ग्राम में प्रभावशाली प्रचार करना।

३) शराब पीनेवालों से शराब छुडाने हेतु निःशुल्क शिविरों की स्थापना करना।

आर्यजगत् के विख्यात सर्वमान्य संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी जो कि वैदिक यतिमण्डल के अध्यक्ष भी हैं, ने शराबबन्दी अभियान को सफल कराने के लिए हरयाणा की जनता को अपना आशीर्वाद तथा समर्थन दिया है।

सभामन्त्री श्री सूबेसिंह जी ने प्रतिनिधि महानुभावों को सूचना देते हुए बताया कि हम स्वामी ओमानन्द जी महाराज को इस अधिवेशन में लाने के लिये गुरुकुल झज्जर गये थे, परन्तु वे गम्भीर अवस्था में रुग्ण हैं, अतः वे चाहते हुए भी नही आसके। उन्होने रोग शय्या पर लेटे हुए सभी आर्यसमाज के प्रतिनिधियो को प० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी तथा सभा द्वारा चलाये जारहे शराबबन्दी अभियान को सफल करने के लिए पूरी शक्ति के साथ आज से ही कार्य में जुट जाने का सन्देश भेजा है। अतः हमें प्रमाद त्यागकर तथा आपसी मतभेद भुलाकर इस रचनात्मक कार्य में सभा को पूर्ण सहयोग तथा समर्थन देकर पूज्य स्वामी जी की आज्ञा का पालन करके आर्यसमाज का उज्ज्वल भविष्य बनाने हेतु अपना योगदान तथा उपयोगी सुझाव सभा को देना चाहिए। सभा के पत्र सर्वहितकारी में आपके सुझावों को प्रकाशित किया जावेगा तथा कार्यान्वित किये जावेंगे।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी समारोह के संयोजक श्री विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त ने शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए सभा कार्यालय से प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा लिखित विद्यार्थी जी की जीवनी तथा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा लिखित पापों की जड़ शराब एवं पूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी द्वारा शराबबन्दी और शंका समाधान नामक ट्रैक्ट एवं प्रचार सामग्री को प्राप्त करके इनका सभी स्थानों पर प्रचार करें तथा धनसंग्रह भी करें। जिन दानियों ने अपने वचन लिखवा रखे हैं, उनसे भी अनुरोध है कि अपनी राशि तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करे, जिससे तैयारी करने में सभा को सहायता मिल सके। आपने शराबबन्दी अभियान के लिये एक नारा देते हुए जनता को आह्वान किया कि—

शराब पीकर न मरें अपितु शराबबन्दी करके मरें

इस उद्देश्य हेतु प्रत्येक प्रतिनिधि को अपने-अपने क्षेत्र की ग्राम

पंचायतों से शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर सरकार को भेजें। आपने प्रसन्नता प्रकट करते हुए बताया कि सभाप्रधान जी ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री को पत्र लिखकर माग की थी कि नये चुने गये सरपंचों को भी ३० सितम्बर को बजाये अब भी शराबबन्दी के प्रस्ताव करने का अवसर दिया जाये। इसके उत्तर में निदेशक विकास एवं पचायत हरयाणा ने अपने पत्र दिनाक ३०-१-९२ क्रमांक पी० एस० १-९२ द्वारा सभाप्रधान जी को पत्र लिखा है कि—

यदि पंचायत अपने गांव में शराब का ठेका बन्द करवाना चाहें तो वह पंचायत अपना प्रस्ताव पास करके आबकारी आयुक्त एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़ को भेजें।

अत: इस सुविधाकर का लाभ नई पंचायतों को उठाना चाहिए।

अधिवेशन के अवसर पर सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता ने प्रतिनिधियों से वेदप्रचार कार्य में पूर्ण सहयोग देने की अपील करते हुए कहा कि सभा का मुख्य उद्देश्य वेदप्रचार करना है।

अधिवेशन पर निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किये गये—

१) यह सभा हरयाणा सरकार द्वारा शराब जैसे मादकद्रव्यों के प्रोत्साहन और फैलाव की घोर निन्दा करती है। आश्चय है कि एक ओर तो खाद बीज आदि पर दी जानेवाली सबसिडी (सहायता) समाप्त करने की बात की जारही है और दूसरी ओर शराब के लिये पंचायतों को सबसिडी (सहायता) दी जारही है। शराब के फैलाव से महिलाओं और बच्चो का जीवन नरक बनकर रह गया है और दूसरी ओर सुरा तथा जहरीली शराब सस्ते दामों पर मिलने के कारण किसान और मजदूर हजारों की सख्या में मरते हैं और अन्धे हो जाते हैं।

यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि राजस्व की हानि का ५० प्रतिशत देकर सम्पूर्ण राष्ट्र में शराबबन्दी लागू करे और हरयाणा सरकार अपने प्रदेश में पूण नशाबन्दी लागू करे।

यह सभा हरयाणा की जनता से अपील करती है कि अपने-अपने बच्चों और महिलाओ के कल्याण के लिये शराबबन्दी आंदोलन को तेज करें और शराब को हरयाणा में से निकालकर ही दम ल।

२) पजाब का पुनर्गठन भाषा के आधार पर किया गया था और पंजाबी सूबा तथा हरयाणा में कौन से इलाके शामिल किये जायेंगे, इसके लिये शाह आयोग बना था। भाषा के आधार पर चण्डीगढ़ समेत खरड़ तहसील हरयाणा को दिये जाने की सिफारिश उस आयोग ने की थी। उस आयोग ने यह भी माना था कि फाजिल्का तहसील का दो तिहाई भाग हिन्दी-भाषी है परन्तु तहसील को इकाई मानकर उन्होंने फाजिल्का अबोहर के हिन्दीभाषी गांवों को भी अलग करके हरयाणा में मिलाने की सिफारिश नहीं की थी। परन्तु अक्तूबर, १९५६ में हिन्दी और पजाबी क्षेत्रों की पहचान करते समय अकालियों ने फाजिल्का अबोहर के कन्दूखेड़ा समेत १०५ गांव हिन्दी क्षेत्र में शामिल करने के फैसले पर अपने हस्ताक्षर किये थे और दिसम्बर, १९६५ में अकालतख्त पर हरयाणा के प्रतिनिधियों के साथ बैठकर अकालीनेताओं ने १९५६ के फैसले पर मोहर लगाई थी। दिसम्बर, १९६९ में सन्त फतहसिंह के इस प्रस्ताव के आधार पर कि चण्डीगढ़ पंजाब को तथा फाजिल्का अबोहर के गांव हरयाणा को दिये जायें। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने २९ जनवरी, १९७० को अपना निणय दिया। सन्त फतहसिंह का यह प्रस्ताव प्रो. शेरसिंह के पास साम्यवादी नेता श्री हरकिशनसिंह, सुरजीत और श्री सोहनसिंह बस्सी, राजस्व मन्त्री गुरनामसिंह लेकर आये थे। साम्यवादी होते हुए भी पंजाब के मामलों में श्री सुरजीत का चिन्तन और उनकी मनोवृत्ति वही रही और है जो अकालियों की रही है।

यह स्पष्ट है कि पुनर्गठन के आधार पर चण्डीगढ़ और फाजिल्का अबोहर और १०५ गाव हिन्दीभाषी हैं और उन दोनों पर हरयाणा का ही हक बनता है। यह सभा माग करती है कि फाजिल्का अबोहर के १०५ गांव तुरन्त हरयाणा को दिये जाये तथा चण्डीगढ या तो हरयाणा को मिले अथवा वहां की जनता की इच्छा अनुसार केन्द्र शासित क्षेत्र के रूप में बना रहे।

३) पंजाब पुनर्गठन कानून के अनुसार दो वर्ष तक हरयाणा पजाब का फैसला न होने पर रावी व्यास के पानी का मामला भारत सरकार को सौंपा गया था। पुनर्गठन से पहले इन्जीनियरों की खाद्य समिति ने हरयाणा को ७ एम०ए०एफ० में से ४.५६ एम०ए०एफ० हरयाणा क्षेत्र के लिए प्रस्तावित किया था तथा केन्द्रीय सिंचाई तथा विद्युत बोर्ड के इन्जीनियरों ने ३.७८ एम०ए०एफ० और १९७३ में योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री डी० पी० धर ने ३.७४ एम०ए०एफ० प्रस्तावित किया था। भारत सरकार ने मार्च, १९७६ में अपना निर्णय देते हुए हरयाणा को ३.५ एम०ए०एफ० प्रस्तावित किया तथा आगे चलकर जो भी अतिरिक्त पानी उपलब्ध होगा वह हरयाणा को मिलेगा परन्तु दिसम्बर, १९८१ में हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल के अतिरिक्त पानी में से जो हरयाणा को मिलना चाहिए था वह ७ एम० ए०एफ० पंजाब को देना मान लिया। राजीव लोंगोवाल समझौते के अनुसार गठित इराडी पंचाट ने अतिरिक्त पानी की और मात्रा बढ़ने की सम्भावना को लेकर पंजाब को ८ एम०ए०एफ० देकर कुल ५ एम० ए०एफ० देना स्वीकार किया और हरयाणा को केवल ३.८३ एम०ए० एफ० दिया। जिस पंजाब को कुल ३.५ एम०ए०एफ० मिलना था उसे मिल गया ५ एम०ए०एफ० और हरयाणा को उससे १.२ एम०ए०एफ० कम। यह हरयाणा के साथ अन्याय हुआ है।

आश्चर्य यह है कि अकाली तो रावी व्यास का एक बूंद पानी भी हरयाणा को नहीं देना चाहते, यह कहकर कि हरयाणा सिंधु जलक्षेत्र में नही आता है, जबकि सिंचाई आयोग तथा डा० गुलाटी हरयाणा का ९३९९ वर्ग किलोमीटर इलाका उस जलक्षेत्र में मानते हैं। उधर पंजाब के राज्यपाल अब यमुना के अतिरिक्त पानी उपलब्ध होने की संभावना का अध्ययन किये बिना ही पजाब के लिए १.४८ एम०ए०एफ० पानी की मांग कर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीयस्तर पर जो भी अदालतों और पंचाटों के फैसले हुए, उनके आधार पर हरयाणा का हक इराडी पंचाट के फैसले से कहीं ज्यादा बनता है। राज्यपाल की मांग अनुचित और अवांछनीय है।

यह सभा मांग करती है कि न्याय की दृष्टि से तथा अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय फैसलों के प्रकाश में हरयाणा को न्यायोचित हिस्सा रावी व्यास के पानी में मिलना चाहिये। यह स्पष्ट है कि वह हिस्सा इराडी पंचाट के फैसले से कहीं अधिक होगा।

यह सभा यह भी मांग करती है कि सतलुज यमुना लिंक नहर का काम जो १९७६ के बाद दो वर्ष में पूरा होना चाहिए था, वह १५ अगस्त, १९९२ से पहले पूरा हो जाना चाहिए। हरयाणा को लिंक नहर न बनने के कारण २०० करोड़ रुपये की वार्षिक हानि होती जा रही है।

४) १९५५ में राज्य पुनर्गठन आयोग ने यह सिफारिश की थी कि भाषा के आधार पर प्रदेशों के पुनर्गठन के पश्चात् दूसरी राजभाषा वही बन सकेगी जिसके बोलनेवालों की संख्या ३० प्रतिशत से अधिक हो। १९६० में पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में मुख्यमन्त्रियों की बैठक ने इसी निर्णय पर अपनी मोहर लगाई थी। इसलिए हरयाणा में पंजाबी को दूसरी भाषा के रूप में मान्यता दिये जाने की मांग के पक्ष में कोई तर्क नहीं बनता और उस पर विचार करना न तो उचित है और न ही वांछनीय। वैसे भी दूसरी राजभाषा बनने पर सरकारी व्यय बहुत बढ़ जायेंगे, जबकि आर्थिक संकट के कारण सब प्रकार के अपव्यय रोकना आवश्यक है।

जहां तक त्रिभाषा सूत्र के अधीन दूसरी भाषा के रूप में पंजाबी को मान्यता देने की बात है, उसके सम्बन्ध में यह स्पष्ट करना जरूरी है कि उसे सबके लिए अनिवार्य नहीं किया जा सकता। दक्षिण भारत के और विशेष रूप से तमिलनाडू की यह शिकायत रही है कि हिन्दीभाषी प्रदेश दक्षिण भारत की भाषाओं को अपने विद्यालयों में दूसरी भाषा के रूप में नहीं पढाते और हिन्दी को दक्षिण भारत के विद्यालयों में अनिवार्य रूप से पढ़ाने की बात करते हैं। इसलिए राष्ट्र की एकता के लिए यह आवश्यक है कि हरयाणा के विद्यालयों में भी सभी भारतीय भाषाओं को दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाये जाने का विकल्प रहना चाहिए। सभा का इस सम्बन्ध में यही मन्तव्य है।

मकर संक्रांति पर यज्ञ एवं दान

श्री ला० दीवानचन्द जो सिंगला मण्डी डबवाली वालों ने प्रति-वर्ष की भांति इस वर्ष भी मकर संक्रांति के पवित्र पर्व पर १४-१-९२ को अपने परिवार में श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी गुरुकुल भटिण्डा से हवन-यज्ञ कराया और श्री दीवानचन्द सिंगला ने इस शुभ अवसर पर नीचे लिखे अनुसार दान दिया—

शहीद परिवार फण्ड के लिए	२१२५
गोशाला मण्डी डबवाली	२०१
आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा	१००

श्री ओमप्रकाश जो वानप्रस्थी ने मकर संक्रांति पर्व पर अपने विचार रखे और सारे परिवार को फूलों द्वारा आशीर्वाद दिया।

व्याकरण वेद विद्यालय में प्रवेश आरम्भ

जिन नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को व्याकरणादि ग्रन्थ पढ़ने की इच्छा है तथा जिनका लक्ष्य समाज में प्रचार-प्रसार कर दुरितों को हटाना है, उन्हें संस्था सम्पूर्ण व्यय देगी तथा अध्ययन के बाद भी व्यवस्था संस्था ही करेगी।

सम्पर्क सूत्र : आदित्य अनन्तांशु
आचार्य ओमानन्द योगाश्रम
गोम्मटगिरि पो. गांधीनगर, इन्दौर (म.प्र.)

(पृष्ठ २ का शेष)

छेड़ा हुआ है उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए हरयाणा का मनोबल तोडना जरूरी है। हरयाणा का मनोबल टूटे और अन्दर ही अन्दर रोष की अग्नि जलती रहे या हरयाणा के लोग भी विद्रोह पर उतर आये, दोनों अवस्थाओं में पाकिस्तान और उसके एजंटों के हाथ में लड्डू हैं। जिन पर देश का शासन चलाने का उत्तरदायित्व है उनको गम्भीरता से सोचना चाहिए और बीमारी का सही निदान करके ही उसकी चिकित्सा करनी चाहिए।

क्या पंजाब का हिन्दू नेतृत्व पंजाब के ९० प्रतिशत से अधिक देश-प्रेमी सिख जनता तथा भारत सरकार और मुख्य राजनैतिक दल पंजाब की नब्ज पर हाथ रख के बीमारी को पहचान कर, मिलकर इस खतरे का मुकाबला करने के लिए दृढ़ता के साथ फैसला लेंगे और उस पर अमल करेंगे।

शोक समाचार

दिनांक १९-१-९२ को श्री शेरसिंह जी आर्य ग्राम नीमड़ीवाली जि० भिवानी के पिता श्री मुन्शीराम आर्य का निधन होगया, वे ६४ वर्ष के थे। महाशय जी ईश्वर भक्त, परिश्रमी किसान, व्यायामशील तथा अतिथि-सेवा में निपुण थे। हमारी भगवान् से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा परिवारजनों को दुःख सहन करने की शक्ति दे।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

गतांक से आगे— रुपये

१ श्री डा० सुभाष ऋषिनगर हिसार ३०
२ बहन शकुन्तला आर्या ग्राम कोका पो० अहरी जि० रोहतक ५१
१ श्री शिवलाल थानेदार ग्राम सिहोर जि० महेन्द्रगढ़ ५१
४ ,, फतेहसिंह मन्त्री आर्यसमाज दूबलधन जि० रोहतक ५०
५ आर्यसमाज मालवीयनगर दिल्ली ५१
६ श्री पं० धर्मदेव आर्य बसई धनकोट जि० गुड़गावां ५१
७ ,, राधेश्याम शर्मा ग्राम सुधार युवा संगठन कालवा जि. जींद ५१

म० जोखीराम आर्य ग्राम नांगल पो० बहल जि० भिवानी द्वारा संग्रहीत राशि

१ श्री गोपीचन्द और रिछपाल के ग्राम नांगल डा० बहल जि० भिवानी १५१
२ ,, जोखीराम आर्य सु० श्री किशनाराम ,, जि० भिवानी १०५
३ ,, वेदव्रत सु० रतिराम आर्य ग्राम नांगल डा० बहल जि० भिवानी १०१
४ ,, महीपाल सु० हरभजराम ,, ,, जि० भिवानी १०१
५ ,, जयसिंह सु० श्री रामरख ,, ,, जि० भिवानी १०१
६ रतिराम आर्य सु० बीरबल ,, ,, २५

५१ रु० देनेवाले सज्जन

सर्वश्री बुधराम सु० बक्साराम, दरियासिंह सु. श्रीचन्द, हरद्वारीलाल सु० उदमीराम, रामचन्द्र सु० रुड़मल, लोकराम सु० श्योचन्द, हेतराम सु० हीराराम, महीपाल सु० चन्दगीराम सु० हीराराम।

२१ रु० देनेवाले सज्जन

सर्वश्री मगाराम सु० जीतराम, वेदपाल सु० रतीराम, शीशराम सु० मामराज, शीशराम सु. बीरबल, भरतसिंह सु. होराराम, रामचन्द्र किशोरनाथ, रामस्वरूप सु० गुगनराम, रामजीलाल सु० जस्साराम।

११ रु० देनेवाले सज्जन

सर्वश्री बोहतराम सु० धन्नाराम, मनफूल सु. उदमीराम, हरद्वारी सु० गणपतराम, रामस्वरूप सु० बल्लूराम, चन्द्रपाल सु० गंगाराम, तेजपाल सु० श्योदान, उमराव सु० श्योदान, सत्यपाल सु० शीशराम, सोमवीर सु० नन्दलाल, भगवानसिंह सु० मामचन्द, तुलसीराम सु० रामस्वरूप शर्मा, ईश्वरसिंह सु० मोकमराम, शिवलाल सरपंच सु० बुज्जाराम, गणपतराम सु० मुहलाराम, रामस्वरूप सु० श्योराम, जुगलाल सु. बल्लूराम, देवकरण सु. छल्लूराम, बनवारी सु. जुगतीराम, महावीर सु. हेमराज, माननाराम सु. तोखाराम, गुगनराम सु. लिछमन राम, डोगाराम सु० जीराम, रामूराम सु० अगड़ोराम, मालाराम सु० खेमाराम, गिरधारी सु० लक्ष्मण।

१० रु० देनेवाले सज्जन

सर्वश्री रामानन्द सु० खेमाराम, छल्लूराम सु० पेमाराम, जयसिंह आर्य सु० रामजीलाल, राजेन्द्रसिंह सु. दानीराम, लेखराम सु. रूपराम, सरजीत सु० सांवलराम, महावीर सु० चुन्नीलाल, फूलसिंह सु. रूपराम

५ रु० देनेवाले सज्जन

सर्वश्री मगाराम सु० धुक्काराम, जुगलाल सु० बक्साराम, भरतसिंह सु० रतीराम, ईश्वरसिंह सु० रतीराम, रिछपाल सु० छज्जूराम, शीशराम सु० गणपतराम।

श्री मगलाराम आर्य सु० श्री नत्थूराम ग्राम बुढ़ेड़ी डा० चहड़कलां २१
,, केशरसिंह आर्य सु० श्री अगनाराम ग्राम किरताण जि० चुरु (राज.) ११
श्री रामेश्वर ग्राम बिग्गा डा० रामसरा जि० चुरु (राज०) ५

(क्रमशः)

—सभामन्त्री

भारत में नारी के द्वारा ही नारी का अपमान

अभी हमने देखा कि मध्यप्रदेश विधानसभा में एक कांग्रेसी महिला सदस्या ने मुख्यमन्त्री श्री सुन्दरलाल पटवा के पुरुषत्व को चुनौती देते हुए कुछ चूड़ियां पेशकर भारतीय संसद के साथ ही सामाजिक मर्यादा को लक्ष्मण रेखा को तिलांजलि देकर समस्त भारतवासियों का घोर अपमान किया है। जवाब में भाजपा सदस्य ने तो उन पर अपने अश्लील कटाक्षों के द्वारा विधानसभा को तुरन्त एक मल्लयुद्ध के अखाड़े में परिवर्तित कर दिया। जूते चप्पल कुर्सियों के हत्थे को हमारे सम्मानित सदस्यों ने एक ब्रह्मास्त्र के रूप में प्रयोग किया। वास्तव में बड़े ही दुःख की बात रही कि इन प्रतिनिधियों ने इस समय भारतीय संविधान में प्राप्त भावनाओं की अभिव्यक्ति में स्वतन्त्रता के अधिकार को पूर्णरूपेण 'स्वच्छन्दता' का अधिकार मान लिया है।

विधानसभा में सभी सदस्यों को बार-बार शांत करने में असफल हुए श्री सुन्दरलाल पटवा अपने आंतरिक कष्ट की विषम स्थिति में अपने आंसुओं की अविरल धारा से ही अपने बोझिल हृदय को हल्का करने का बार-बार प्रयास कर रहे थे।

भारतीय राजनीति के कर्णधार इस घटना को चाहे जिस रूप में भी लें। भारतीय लोकतन्त्र के लिए ये दोनों घटनायें एक दुखद एवं विनाशकारी प्रवृत्ति का आह्वान करती हैं और यदि इसमें शीघ्रातिशीघ्र समुचित सुधार नहीं हुआ तो भारतीय राजनीति निश्चय ही एक चौराहे पर खड़ी मिलेगी, जहां से वापिस आना शायद सम्भव नहीं होगा और इस भूल के लिए वे स्वयं को माफ चाहे करलें, पर निश्चय ही भारतीय संसद का इतिहास इन्हें कभी माफ नहीं करेगा।

भारतीय नारी-समाज एक ओर जहां महिला के ऊपर अश्लील कटाक्ष के लिए भारतीय संसद को कोसता रहेगा वहीं चूड़ियां पेश करनेवाली कुमारी कल्याणी पांडेय से भी बार-बार प्रश्न करता रहेगा कि क्या उनके पास अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए क्या कोई और विकल्प ही शेष नहीं था? क्या उन्होंने इससे नारी-जाति का अपमान नहीं किया है?

अन्ततः मैं भारत के माननीय राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री एवं लोकसभाध्यक्ष के साथ ही भारतीय राजनीति के कर्णधारों से निवेदन करता हूं कि अब भारतीय संसद को और अपमान से बचाने का शीघ्रातिशीघ्र प्रयास करें।

"जय भारत, जय स्वामी दयानन्द"

—डा० राकेशकुमार दूबे
मांडी गांव, मेहरौली, नई दिल्ली-४७

वार्षिक महोत्सव

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आपके अपने 'विश्व भारती शिक्षा संस्थान गुरुकुल भैयापुर लाढौत' का प्रथम वार्षिक महोत्सव २२-२३ फरवरी, १९९२ शनिवार रविवार को धूमधाम से मनाया जा रहा है। इष्टमित्रों एवं सपरिवार सहित पहुंचने की कृपा करें।

मार्ग—रोहतक के बोहाना स्टैंड व सुखपुरा चौक से मिलनेवाली भैयापुर लाढौत की सवारियों में बैठकर गुरुकुल में उतरें।

प्रबन्धक :
गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक

"जो मद्य पीता है, वह विद्यादि शुभ गुणों से रहित होकर उन दोषों में फंसकर अपने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष फलों को छोड़ पशुवत् आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि कर्मों में प्रवृत्त होकर अपने मनुष्य-जन्म को व्यर्थ कर देता है। इसलिए नशा अर्थात् मदकारक द्रव्यों का सेवन भी न करना चाहिये।"

(गोकरुणानिधि) महर्षि दयानन्द सरस्वती

बूराखेड़ा जि० भिवानी में शराबबन्दी पंचायत का आयोजन

गत दिनांक १९ जनवरी को जिला भिवानी के ग्राम बूराखेड़ी में सांगवान खाप के सभी ४० ग्रामों के प्रतिनिधियों ने एक विशाल पंचायत आयोजित की। जिसकी प्रधानता इस खाप के सरदार कर्नल रिसालसिंह (चरखी) ने की इस पंचायत का स्थल वही स्थान था जहाँ पर दादा सांगू का अन्तिम संस्कार किया गया था। इस पंचायत में मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी थे। इस अवसर पर प्रि० बलबीरसिंह (फतहगढ़), श्री धर्मवीर एडवोकेट (च. दादरी), श्री रामफल सरपंच (बिरही), श्री राजेन्द्रसिंह (साहूवास), आचार्य ऋषिपाल (आर्य विद्यालय च० दादरी), श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त श्री हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री हरयाणा इस पंचायत में शामिल हुए। कुछ अन्य प्रतिनिधियों तथा प्रो० शेरसिंह, कर्नल रिसालसिंह प्रधान पंचायत ने समाज में व्याप्त शराब पीने जैसी व विवाहों में फिजूलखर्ची और दहेजप्रथा की कुरीतियों की निन्दा करते हुए इनके विरुद्ध कड़ा संघर्ष छेड़ने का आह्वान किया। विशेष रूप से शराब के बढते हुए प्रचलन को लेकर, भावी-पीढ़ी के भविष्य के प्रति गहरी चिंता व्यक्त की गई। इस पंचायत के मंच का कुशल संचालन आचार्य ऋषिपाल जी ने किया। विस्तार से विचारोपरांत पंचायत द्वारा सर्वसम्मति से इस आशय के प्रस्ताव पारित किये गये कि भविष्य में वे सांगवान खाप के किसी ग्राम में शराब की कोई दुकान नहीं खुलने देंगे तथा विवाह संस्कार दिन में ही सादे ढंग से किये जायेंगे।

दहेजप्रथा महिलायें ही खत्म कर सकती हैं : शर्मा

नई दिल्ली, २३ जनवरी (भाषा)। उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने छात्राओं से कहा कि वे समाज में दहेज और निरक्षरता जैसी बुराइयों को दूर करने की दिशा में आगे आयें।

उपराष्ट्रपति आज यहां गार्गी कालेज की रजत-जयन्ती समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि इन दोनों बुराइयों के कारण आज हमारे समाज में अनेक समस्यायें पैदा हो गई हैं। इनको समाप्त करने में छात्राय और महिलाय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। उन्होंने कहा कि अगर परिवार में महिला शिक्षित है तो निश्चित ही परिवार शिक्षित होगा, जब परिवार शिक्षित होंगे तो समाज शिक्षित होगा।

उन्होंने कहा कि हमारे विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को ज्ञान मिले यह तो जरूरी है ही, लेकिन इससे भी अधिक आवश्यक यह है कि विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ अपने आसपास के वातावरण के प्रति जागरूकता पैदा हो।

साभार : जनसन्देश

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में गणतन्त्र दिवस

२६ जनवरी, ९२ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के प्रांगण में राष्ट्रीय-ध्वज महाशय श्रीचन्द अनंगपुर ने फहराया। इस अवसर पर गुरुकुल के मुख्याध्यापक श्री रामकंवार शर्मा, श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी व नत्थूसिंह यादव गमक ने अपने विचार रखे। गुरुकुल के विद्यार्थियों ने इस अवसर पर देशभक्ति के भजन प्रस्तुत किये। गुरुकुल की तरफ से बच्चों को मिठाई व फल वितरित किये गये। महाशय श्रीचन्द जी ने इस अवसर पर गुरुकुल के छात्रों को पुरस्कारस्वरूप १०० रु० प्रदान किये।

मकर-संक्रांति पर वेदप्रचार

१४ जनवरी, ९२ को आर्यसमाज कासनी (रोहतक) की ओर से मकर-संक्रांति के उपलक्ष्य में आर्यसमाज मन्दिर में श्री मा० दीपचन्द द्वारा हवन हुआ। श्री जयपालसिंह आर्य व श्री ईश्वरसिंह तूफान भजनोपदेशक ने बड़े मधुर भजनों द्वारा वेदप्रचार किया। इस कार्य को सुचारुरूप से चलाने के लिए मा० बलदेव जी को अध्यक्ष चुना गया। इस अवसर पर सभा को ३५० रु० दान दिया गया।

राजस्थान सरकार से मांग

जोधपुर नगर की समस्त आर्यसमाजों की महासभा राजस्थान सरकार से निवेदन करती है कि वह 'अजमेर विश्वविद्यालय' का नामकरण राष्ट्रीय विचारधारा के अग्रदूत तथा महान् समाज-सुधारक महर्षि दयानन्द के साथ कर इसे अविलम्ब 'महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर' घोषित करे। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि स्वामी दयानन्द का निधन ३० अक्तूबर, १८८३ को अजमेर में ही हुआ था और उनके पश्चात् अजमेर की शैक्षिक प्रवृत्तियों में आर्यसमाज का योगदान सर्वाधिक रहा। आज भी अजमेर नगर में आर्यसमाज द्वारा संचालित अनेक शिक्षण संस्थायें समाज की उन्नति में अपना योगदान कर रही हैं। स्वयं महर्षि दयानन्द भी महान् देशभक्त, शिक्षा शास्त्री तथा स्वराज्य भावना के प्रबल समर्थक थे।

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह सर्वथा उचित ही है कि 'अजमेर विश्वविद्यालय का नाम—महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय' घोषित किया जाये।

—भवानीलाल भारतीय

मातनहेल में शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन

दिनांक १८ जनवरी को जिला रोहतक के मातनहेल ग्राम में वहां के आर्यसमाज द्वारा शराबबन्दी तथा विवाह-संस्कार सादे ढंग से कराये जाने हेतु एक जनसभा का आयोजन किया गया। इसमें आस-पास के अन्य ग्रामों के लोग भी सम्मिलित हुए। इसका आयोजन मातनहेल के डा० विजयकुमार के प्रस्ताव पर किया गया था। जिसकी अध्यक्षता चौ० समेरसिंह आर्य स्वरूपगढ़ीवासी ने की और इसमें मुख्य अतिथि थे प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा। इस अवसर पर मा० छत्तरसिंह बिरोहड, आचार्य ऋषिपाल आर्य, हिंदी महाविद्यालय चरखी दादरी, ब्र० विजयपाल गुरुकुल झज्जर, स्वामी व्रतानन्द जी गूगोढ, ताराचन्द (खाचरोली), प० सत्यनारायण आर्य, प्रधान आर्य-समाज चरखी दादरी, डा० सत्यवीर (कन्हेटी), श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त, श्री समेरसिंह आर्य स्वरूपगढ़ तथा प्रो. शेरसिंह जी ने शराब से हो रहे सर्वनाश पर तथा विवाह आदि पर की जारही फिजूलखर्ची एवं दहेजप्रथा की सामाजिक कुरीति पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इसके अतिरिक्त पं० जयपाल, श्री हरध्यानसिंह सभा के भजनोपदेशकों ने भजनों द्वारा सामाजिक बुराइयों का प्रभावशाली ढंग से खण्डन किया। स्कूल के बच्चों द्वारा देशभक्ति के गीत एवं धार्मिक भजन प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर आर्यसमाज मातनहेल की ओर से ५०० रुपये गुरुकुल झज्जर तथा ५०० रुपये सभा को शराबबन्दी अभियान के लिये दिये और इसी अभियान के लिए सभा को १०१ रु० ग्राम झाड़ली पचायत की ओर से दिये गये। सभा में उपस्थित विभिन्न ग्रामो के प्रतिनिधियो द्वारा सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध कड़ा संघर्ष करने का निश्चय किया गया और यह निर्णय लिया गया कि भविष्य में वे अपने ग्राम में शराब की दुकान नहीं खुलने देंगे तथा विवाह-संस्कार बड़े सादे ढग से एवं दिन में ही सम्पन्न किये जावेंगे। इस अवसर पर मच का संचालन श्री राजपाल (मातनहेल) ने बड़ी कुशलता से किया।

रोमिला थापर द्वारा पद्मभूषण लेने से इन्कार

नई दिल्ली, २८ जनवरी (वार्ता)। प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो० रोमिला थापर ने इस वष गणतन्त्र दिवस पर उन्हे दिया गया नागरिक सम्मान पद्मभूषण ग्रहण करने से इन्कार कर दिया है।

प्रो० थापर ने कहा है कि वह सिद्धांतरूप में इस तरह के सरकारी सम्मान दिये जाने से सहमत नहीं है इसलिए वह पद्मभूषण स्वीकार नहीं कर सकती, लेकिन पुरस्कार देने की सरकार की भावना का आदर करती है।

उन्होने राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरामन को पत्र लिखकर कहा है कि पुरस्कार देने से पहले उनसे पूछा नहीं गया था। उन्होंने कहा कि यह पुरस्कार अस्वीकार करके सरकार को असहज स्थिति में डालने के लिए उन्हें खेद है।

प्रो० थापर ने कहा कि सरकारी सम्मान सरकारी आश्रय का प्रतीक समझा जाने लगा है और इसकी बढ़ती हुई प्रवृत्ति चिंता का विषय है। किसी व्यक्ति के काम को सरकार द्वारा नहीं आंका जा सकता।

शराब हटाओ,

देश बचाओ

आर्यसमाज बेरी जि० रोहतक का वार्षिकोत्सव एवं शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस पर आर्यसमाज बेरी का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता बेरी के भूतपूर्व ले० श्री अखेराम ने की। इनके नाम का प्रस्ताव सूबेदार हरिसिंह (बेरी) ने तथा अनुमोदन श्री डा० सोमवीर उपमन्त्री सभा ने किया। इस अवसर पर शराब से हो रहे भयंकर विनाश एवं विवाह संस्कारों में की जानेवाली फिजूलखर्ची एवं शिक्षा के गिरते हुए स्तर को लेकर विभिन्न वक्ताओं द्वारा गहरी चिंता व्यक्त की गई। जिनमें सर्वश्री धर्मचन्द पूर्व अतिरिक्त रजिस्ट्रार सहकारी समितियां, डी० आर० चौधरी सम्पादक पीग, सत्यवीर शास्त्री उपमन्त्री सभा, सूबेसिंह सभामन्त्री, विजयकुमार पूर्व उपायुक्त, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार मन्त्री आर्यविद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, सभा के उपदेशक चन्द्रपाल शास्त्री, भूपसिंह, महेन्द्रसिंह, वीरेन्द्रसिंह (बेरी), प्रहलाद-सिंह, मा० चन्द्रभान आर्य (जहाजगढ) सम्मिलित थे। अस्वस्थ होने के कारण स्वामी ओमानन्द जी, सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह नहीं आसके।

इस अवसर पर कई बच्चों ने देशभक्ति एवं धार्मिक गीत प्रस्तुत किये। सभा के भजनोपदेशक ईश्वरसिंह तूफान, जयपालसिंह तथा हरध्यानसिंह ने भी अपने प्रभावशाली भजनों द्वारा शराब, दहेज तथा गोहत्या का खण्डन किया। इस उत्सव में बेरी के आसपास के अनेक ग्रामों से बड़ी संख्या में लोग आये थे। विस्तार से विचार-विमर्श के बाद सभा में उपस्थित लोगों ने हाथ उठाकर प्रस्ताव पास किये कि भविष्य में अपने ग्राम में शराब की कोई दुकान नही खुलने देंगे और विवाह संस्कार दिन में बड़े सादे ढंग से करेंगे तथा २५ से अधिक बाराती नहीं ले जायेंगे, न बुलावेंगे। वार्षिकोत्सव के इस अवसर पर विभिन्न ग्रामों के लोगों द्वारा दिल खोलकर आर्यसमाज के लिए दान दिया गया। जिससे ७ हजार रु० से अधिक की राशि प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त व्यायाम में रुचि रखनेवाले बच्चों के प्रोत्साहन हेतु अनेक व्यक्तियों ने दान दिया। उत्सव प्रारम्भ होने से पूर्व यज्ञ किया गया तथा बच्चों को यज्ञोपवीत देकर सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा की गई। इस अवसर पर मंच का संचालन सूबेदार हरिसिंह (बेरी) द्वारा बड़ी कुशलता से किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] रजि. नं० २३२०/७३ [illegible] P/RTK-[illegible] [illegible] १,९६, [illegible]

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक १२ १४ फरवरी, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

विपत्ति में प्रभु का एकमात्र सहारा

ले०—यशपाल आर्यबंधु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

मनुष्य के ऊपर दुःख भी आते हैं और सुख भी। सुख में साथ देने वाले बहुत होते हैं किन्तु दुःख में कोई-कोई ही साथ दे पाता है। कहा भी है कि "धीरज, धर्म, मित्र, नर नारि, आपत्काल परखिये चारि।" वस्तुतः धीरज, धर्म, मित्र और नारी की परख आपत्काल में ही होती है। क्योंकि आपत्काल में कोई-कोई ही साथ देता है, अन्यथा यही कहा जाता है कि—"तारीकी में साया भी जुदा रहता है, इन्सां से।" फिर भी एक सहारा ऐसा भी है जो सदा-सर्वदा साथ निभाता है। वह सहारा है दुःखविनाशक प्यारा प्रभु। जब सब सहारे जवाब दे जाते हैं, तब वही सहारा हमारा साथ देता है। इसीलिये उसे बेसहारा का सहारा कहा गया है।

मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह सुख में इस सहारे को प्रायः भुला देता है और जब दुःख और विपत्ति आती है, तभी इस सहारे की याद आती है। किन्तु सन्त कबीर का कहना कुछ और है। वे कहते हैं कि—

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करें, तो दुःख काहे को होय॥

एक अन्य विद्वान् का कथन है कि सम्पत्ति में लोग सुनार के पास जाते हैं और विपत्ति में करतार के पास। तात्पर्य यह कि सुख में हम ईश्वर को सर्वथा भुला देते हैं और जब दुःख या विपत्ति आ पड़ती है, तब उसकी याद आने लगती है। अतः यदि हम दुःखों और विपत्तियों से बचना चाहते हैं तो हमें सुख में भी उसका स्मरण करना ही चाहिए। तथापि यह सोचना भी यथार्थ नहीं कि चूंकि हमने सुख में उसका स्मरण नहीं किया तो अब दुःख में कैसे करें? हमें सुख में प्रभु का स्मरण अवश्य ही करना चाहिए था किन्तु यदि आलस्य और प्रमाद के वशीभूत होकर ऐसा नहीं किया गया, तो इसका यह अर्थ तो नहीं कि अब भी उसी भूल को दोहराया जाय? दुःख में यदि दुःखों के नाश करने वाले प्रभु की शरण में नहीं जायेंगे तो फिर किसकी शरण में जाया जायेगा? दुःख में प्रभु का स्मरण दुःख को सहन करने की अद्भुत शक्ति प्रदान करता है। महर्षि ईश्वर की स्तुतिप्रार्थनोपासना के जहां अनेक लाभ बतलाते हैं, वहां यह भी लिखते हैं कि—"इससे आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख होने पर भी न घबरावेगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है?" (स०प्र० सप्तम समु०) दूसरे जैसे शीत से आतुर पुरुष यदि अग्नि के पास जाता है तो उसके शीत की निवृत्ति हो जाती है, वैसे ही दुःख-विनाशक प्रभु के समीप जाने से दुःखों की निवृत्ति होती है।

यह भी कहा जाता है कि दुःख में ईश्वर बहुत समीप अर्थात् अति निकट होता है और वह शीघ्र सुनता भी है। ऐसा इसलिए कि दुःख में व्यक्ति आतुर होकर उसे पुकारता है। यही आतुरता, व्यग्रता अथवा व्याकुलता हमें परमात्मा के निकट पहुंचा देती है। वैसे भी प्रार्थना शब्द में जो 'प्र' उपसर्ग लगा है, वह प्रकर्षता का ही परिचायक है। जिस प्रार्थना में प्रकर्षता नहीं वह अर्थना तो हो सकती है, प्रार्थना नहीं। प्रार्थना के लिए तो प्रकर्षता अर्थात् व्यग्रता, व्याकुलता और आतुरता की आवश्यकता है। कतिपय भक्तजन तो दुःख की केवल इसीलिए कामना करते हैं कि दुःख में परमात्मा का सामीप्य प्राप्त होता है और प्रभु का स्मरण तो हो ही जाता है। सन्त कबीर ने कहा है कि—

सुख के माथे सिल पड़े जो नाम हृदय से जाये।
बलिहारी वा दुःख के पल-पल नाम रटाये॥

सत्य है—

दुःख दर्द मिटाने को अजब राज तेरा नाम।
मालिक को सुनाने को है आवाज तेरा नाम॥

गुरु नानकदेव जी का कथन है कि—'दुःख दारु सुख रोग भया।' अर्थात् सुख रोग है एवं दुःख औषधि। जिससे ईश्वर से मनुष्य विमुख हो जावे, वह रोग के समान नहीं तो और क्या है? और जिससे व्यक्ति ईश्वर के निकट हो जावे, तो वह औषधि समान नहीं तो और क्या है? वस्तुतः वह बेसहारों का सहारा है। वह ऐसा दर है जहां आदमी की आबरू नहीं जाती। अन्यथा अन्य जिस किसी के आगे अपना दुखड़ा नहीं रोना चाहिए। यह ठीक है कि कह देने से दुःख हलका होता है किन्तु यह भी ध्यान रहे कि—

सुख में दुःख में जो अन्तर है। दुःख का इक-इक पल मन्वन्तर होता है।
कह लेने से दुःख हलका होता है। सह लेने से छूमन्तर होता है।

कविवर रहीम ने कहा है कि—

रहिमन निज मन की व्यथा मन में राखो गोय
सुन इठलहियें लोग सब, बांट सके न कोय॥

उर्दू के एक शायर ने भी क्या सुन्दर कहा है—

शरीके दर्द बनाने चले हो 'शाद' किसे?
शरीके दर्द यह दुनिया कभी नहीं होती॥

सत्य है कि—

सुख के साथी बहुत हैं, दुःख का साथी न कोय।
दुःख का साथी साईंयां, काहे न सुमिरे सोय॥

वस्तुतः प्रभु का ही एकमात्र ऐसा दर है, जहां दुःखी की पुकार अवश्यमेव सुनी जाती है। साथ में वहां इठलानेवाला भी कोई नहीं होता, इसीलिये वहां आबरू भी नहीं जाती। इसलिए अपना दुःख यदि सुनाकर ही हलका करना है तो वह भी सांसारिक लोगों की अपेक्षा अपने प्यारे प्रभु को सुनाओ। वह दुःखहर्ता और दुःखों का नाश करने वाला है। वही सुखस्वरूप और सुखों का दाता भी है। अतः यदि दुःखों से छुटकारा पाना है तो प्रभुभक्ति का सहारा लेना आवश्यक है। दुःख की घड़ियों में हृदय से निकली प्रार्थना अमृतधारा का काम करती है। कष्ट के क्षणों में जब हम अपनी समस्यायें लेकर प्रभु के निकट जाते हैं, तब प्रार्थना के द्वारा हमारी आत्मा में उत्साह, समस्याओं को सुलझाने की अनोखी सूझ, कष्टों को सहन करने की अपारशक्ति और प्रभु की महति अनुकम्पा प्राप्त होने से दुःखों से भी शीघ्र छुटकारा मिल जाता है।

१२ फरवरी १८२५, महर्षि दयानन्द के जन्म के पवित्र अवसर पर—

जब महर्षि दयानन्द आये

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

मनुष्य को संसार में रहते हुए अपने जीवन की यात्रा को किस प्रकार सफल बनाना चाहिए, इसको सफलता के लिए आदेश देते हुए अथर्ववेद आदेश देता है कि—

"इमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै। शते शरत्सु नो पुरा"

अर्थात् संसार में रहते हुए अपने जीवन की यात्रा को इस प्रकार से नापना चाहिए, जैसे कि आज तक किसी भी वस्तु को न नापा गया हो और जीवन के इन सौ वर्षों में हमारे जैसा उच्च जीवन किसी का भी न हुआ। वेद के आदेशानुसार मनुष्य को अपनी जीवन गुणों के आधार पर बहुत ही श्रेष्ठ बनाना चाहिए।

इस गुणों की उच्च परम्परा में महर्षि दयानन्द का नाम हम सबसे अग्रिम पंक्ति में पाते हैं। महाभारत के युद्ध के बाद इन पांच हजार वर्षों में महर्षि दयानन्द के समान कोई भी व्यक्ति ऐसा न हुआ। महाभारत से पहले अनेक ऋषि-महर्षि हुए, किन्तु इतने भयंकर अन्धकार के काल में महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हमें यह सोचने पर बाध्य करता है कि महर्षि दयानन्द ने अपना इतना उच्च निर्माण करके सभी क्षेत्रों में महान् कार्य किये। तत्कालीन घोर संकटकाल का विवरण देते हुए आर्य कवि प्रकाश जी लिखते हैं—

अन्धकार मिथ्यापन्थन को,
शुद्ध बुद्ध ईश्वरीय ज्ञान बिसराया था।
आर्यसभ्यता को अस्तव्यस्त करने के काज,
पश्चिमी कुसभ्यता ने रंग बिठलाया था।
गौ, अबला, अनाथ, यहां त्राहि-त्राहि करते थे,
धर्म और कर्म चौके चूल्हे में समाया था।
रक्षक नहीं था कोई, भक्षक बने थे सभी,
ऐसे घोर संकट में ऋषि दयानन्द आया था।

इसी अन्धकार का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द के विषय में एक उर्दू का कवि भी लिखता है—

देश पर छाया हुआ बादल था इक जुल्मात का।
हिन्द के दिन पर गुमा होता था काली रात का।
बाल विधवा की प्रथा थी, शूद्र सब बेचैन थे।
वेद की तालीम पर कब्जा था ऊंची जात का।
तेरे आने से जहां में रोशनी इक छागई।
तेरी हस्ती जुल्म के तूफान से टकरा गई।
पासबाने कौम था, स्वामी निगहबाने वतन।
हिन्द का इक पेशवा था और था शाने वतन।
जब खिजा से धर्म के असजार मुरझाने लगे।
तूने अपने खून से सींचा गुलिश्ताने वतन॥

इस प्रकार जब यह भारत भूमि समाज में व्याप्त कुप्रथाओं और कुरीतियों की धूल से ढक गई थी। जब यह देश अपने प्राचीन गौरव व वैदिक संस्कृति को भूलकर अन्धविश्वासों व पाखण्डों का शिकार था। जब मानवसमाज नारी जाति को अपमानित करने में अपनी श्रेष्ठता का उद्घोष कर रहा था। जब मानवता अनेक अन्तर्वेदनाओं से सिसक रही थी। जब सारा ही वातावरण अशांति की चरम सीमा को छूने जारहा था। उस समय आवश्यकता थी एक ऐसे क्रांतिकारी महापुरुष की, जिसमें गौतम, कपिल, कणाद, पतञ्जलि और व्यास जैसे महर्षियों की योग्यता हो, जिसमें हनुमान व भीष्म जैसी ब्रह्मचर्य की शक्ति हो, जिसमें भीम जैसा बल हो, जिसमें म० बुद्ध जैसा अनुपम त्याग व वैराग्य हो, जो राम जैसा मर्यादा पुरुषोत्तम हो, जिसमें योगेश्वर श्रीकृष्ण और चाणक्य जैसी नीतिज्ञता हो, जिसमें म० प्रताप व छत्रपति शिवाजी जैसा शौर्य हो, जिसमें प्राचीन महर्षियों जैसी आध्यात्मिकता हो। इन सब गुणों से सुभूषित व अलंकृत होकर युग-पुरुष महर्षि दयानन्द युग-प्रवर्तक बनकर गुजरात के मोर्वी राज्य के ग्राम टंकारा में कर्षण जी तिवारी के घर मे फाल्गुन बदि दशमी, सम्वत् १८८१ एवं १२ फरवरी सन् १८२५ में महर्षि ने जन्म लेकर भारत भूमि पर पदार्पण किया। १८२९ में घर पर ही शिक्षा आरम्भ हुई। वैदिक विधान के अनुसार १८३२ में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। १८३७ में महाशिवरात्रि के अवसर पर मूर्तिपूजा के लिए शिव मन्दिर में गए। एक चूहे को देखकर मूर्ति-पूजा से आस्था दूर होगई। सच्चे शिव की प्राप्ति की लगन लगी। इसी घटना को लेकर एक कवि ने यों लिखा—

तुम जागे उस दिन भोर हुआ, तुम गए दिवाली थी उस दिन।
शिव तेरस का जागरण, मूलशंकर को वरदान बना।
है धन्य उस मूषक को, जो दयानन्द का ज्ञान बना।
अज्ञान अविद्या की रजनी, जब छाई काली थी उस दिन।
तुम जागे उस दिन भोर हुआ, तुम गए दिवाली थी उस दिन।
मूल में वृद्धि वह हुई, पीढ़ियां चुका न पायेंगी ऋण को।
जो दयानन्द दे गया हमें, कूतेगा कौन मूलधन को।
सोया था सारा राष्ट्र मगर, सौराष्ट्र में लाली थी उस दिन।
तुम जागे उस दिन···
वेद की विभा लौटी उन दिन, लौटा था भारत का मान सम्मान।
विश्व का महामंगल जन्मा, जागा जब ऋषि का ज्ञान-ध्यान।
भास्वर भविष्य मुस्काया, चहुंदिशि उजियाली थी उस दिन।
तुम जागे उस दिन भोर हुआ, तुम गए दिवाली थी उस दिन॥

उस समय महर्षि के जन्म की आवश्यकता को समझते एक कवि यह सोचकर यों कहने लगा—

आदमी बन जो धरा का भार कन्धों पर उठाए।
बांट दे जग को, न अमृत बूंद अधरों से लगाए।
है जरूरत आज ऐसे आदमी की सृष्टि को फिर।
विश्व का विष सिन्धु पीजाए, पर हिचकी न आए।

इस प्रकार महर्षि का जीवनक्रम आगे बढ़ ही रहा था तो जीवन में कुछ घटनाये घटने लगी।

सन् १८४१ में बहन की मृत्यु से उनका मन बड़ा दुःखी हुआ। इसके बाद उनके प्रिय चचा की भी मृत्यु होगई। दयानन्द फूट-फूटकर रोया। सच्चे शिव की प्राप्ति तथा मृत्यु पर विजय की भावना मनमें जागने लगी। वैराग्य भावना पैदा होती चली गई। ऐसा दृढ-संकल्प करके १८४६ में गृह त्यागकर योगियों की खोज में निकल पड़े। अनेक योगियों से योग की सिद्धियों का ज्ञान प्राप्त किया। १८४७ में व्यास आश्रम में योगानन्द से योग सीखा। १८४८-४९ में श्रीकृष्ण शास्त्री से व्याकरण शास्त्र का अध्ययन किया। इस प्रकार जहां भी कोई योगी विद्वान् मिला, उससे शिक्षा ग्रहण करते रहे। १८५६ में स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास लिया। १८५७ में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में पूर्णरूप से भाग लिया। किन्तु कई कारणों से स्वातन्त्र्यसंग्राम विफल होगया। इसी बात का विचार करते हुए चिन्ता में पड़े एक कवि ने उस समय यों सोचा था—

जो किनारा मिल गया होता।
जो शासन का दयानन्द को सहारा मिल गया होता।
तो जो कुछ वेदवाणी ने पुकारा मिल गया होता।
उजाले के लिए कितने जलाये दीप प्राणों के,
मिटाने अन्धेरा धरती को सितारा मिल गया होता।
जो किनारा ·· जो शासन का ··
तो होता रूप ही कुछ और इस स्वाधीन भारत का,
जो खोया पुस्तकों में चित्र प्यारा मिल गया होता।
जो किनारा ·· जो शासन का······
न करती राम की जन्मस्थली इस भांति आह्वान,
हमें राम ही सचमुच दोबारा मिल गया होता।
न रोती राष्ट्रीयता अब तक, न बहता आंख का काजल,
समानो मन्त्रः समितिः समानी का सहारा मिल गया होता।
जो किनारा ·····
बनी नासूर हैं चोटे, मगर मलहम नहीं मिलता,

(शेष पृष्ठ ७ पर)

क्या शराबबन्दी का सपना पूरा होगा ?

शराबबन्दी : प्रशासन : समाज और हम

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(प्रो० शेरसिंह गांधी युग के उन इने-गिने मनोषियों में हैं, जिनकी निष्पक्षता, देशभक्ति और ईमानदारी पर ऊंगली नहीं उठाई जा सकती। शेरसिंह जी केन्द्रीय सरकार के विभिन्न विभागों में मन्त्री रहे हैं। निर्भीक चिन्तनशील व्यक्तित्व आपकी विशेषता है। आजादी की लड़ाई के आप निष्ठावान् सेनानी हैं। प्रस्तुत निबन्ध में शराबबन्दी के सवाल पर आपके हृदय की पीड़ा उजागर हुई है। लेख में प्रोफेसर साहब ने शराबखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति के कारणों की ओर इशारा करते हुए समाज और सरकार को इसके सम्भावित दुष्परिणामों के प्रति सतर्क किया है। लेखक के चिन्तन में तीव्रता और शब्दों में तीखापन है, लेकिन इससे कहीं ज्यादा है देश और समाज के प्रति मार्मिक सहानुभूति, जिसमें देश और समाज के सम्यक् निर्माण की भावना निहित है। —सम्पादक)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण अंग था शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करना, क्योंकि देश में पूर्ण मद्यनिषेध एक राष्ट्रीय कार्यक्रम माना जाता था। इसीलिए स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जो सरकारें बनीं, उन्होंने कुछ प्रदेशों में पूर्णरूप से शराबबन्दी की और कुछ में आंशिक रूप से। आजादी मिलने पर पं० जवाहरलाल नेहरू और उनकी राष्ट्रीय सरकार ने नौकरशाही को वैसे का वैसा स्वीकार कर लिया। अधिकतर नौकरशाह इस कार्यक्रम को फिजूल मानते थे, इसलिए धीरे-धीरे उन्होंने नेताओं को ऐसी पट्टी पढ़ाई कि उनका उत्साह तो ढीला हो ही गया, उनको जनता पर सीधा टैक्स लगाये बिना राजस्व की प्राप्ति का लालच भी होगया। परिणाम यह निकला कि एक-एक करके राज्य मद्यनिषेध का कार्यक्रम छोड़ते चले गये। पर श्री मोरारजी देसाई का संकल्प ढीला नहीं हुआ। वित्तमन्त्री के नाते उन्होंने मद्यनिषेध के कारण होनेवाले घाटे की ५० प्रतिशत राशि राज्यों को भारत सरकार की ओर से देने का निर्णय करवाया। जब वे १९७७ में प्रधानमन्त्री बने तो ५ वर्ष में देशभर में पूर्ण मद्यनिषेध का संकल्प किया। जनता पार्टी के घटकों की अन्दरूनी कलह तो थी ही, उधर मोरारजी भाई के विरोधियों को शराब की लाबी ने दिल खोलकर धन दिया और उनकी सरकार टूट गई। शराब की लाबी ने इसे अपनी बहुत बड़ी विजय माना।

वर्तमान दशा

आज गुजरात प्रदेश में तो शराबबन्दी है तथा चर्च के दबाव से मिजोरम और नागालेंड में पिछले दिनों शराबबन्दी हुई, बाकी देश में कहीं-कहीं जिलों में नाममात्र की शराबबन्दी है। तमिलनाड में वहां की मुख्यमन्त्री जयललिता ने बड़ी हिम्मत के साथ महिलाओं से किये गये अपने वायदे को पूरा करने के लिए देशी शराब बन्द की है। संयोगवश आज देश का कोई भी मुख्य राजनीतिक दल ऐसा नहीं है, जिसकी किसी न किसी प्रदेश में सरकार न हो। सभी सरकारें अपनी समस्या के हल के लिए और अपने विरोधियों और विद्रोहियों का मुंह बन्द करने के लिये गांधी जी का और संविधान का वास्ता देती हैं। सभी दल अपने विरोधियों के विरुद्ध मुद्दे ढूंढने में लगे रहते हैं। मुद्दे न मिलने पर बना लिए जाते हैं और उन मुद्दों को लेकर कड़ी से कड़ी आलोचना करते हैं, यहां तक कि सीधे या घूम-फिर कर एक दूसरे को देशद्रोही तक प्रमाणित करने में कसर नहीं उठा रखते। परन्तु शराबबन्दी के मुद्दे पर सब एक-दूसरे का साथ देते हैं और शराब पिलाने की दौड़ में एक-दूसरे को मात देने में जी-जान से लगे हुए हैं।

आंकड़े बोलते हैं :

उनके इन प्रयासों का नतीजा यह है कि जहां आबकारी से पूरे देश में आजादी से पहले केवल ५० करोड़ राजस्व इकट्ठा किया जाता था, आज वह बढ़कर लगभग ५,००० करोड़ तक पहुंच गया है। शराब की खपत अब १०० करोड़ लीटर को पार कर गई है। दिल्ली में पिछले दशक में शराब की खपत पहले से दोगुनी होगई है। इस रफ्तार से यदि यह खपत बढ़ी तो जब भारत २१वीं शताब्दी में प्रवेश करेगा, तब यह खपत २०० करोड़ लीटर तक पहुंच जाए तो आश्चर्य नहीं होगा। बढ़ती हुई शराब की खपत के लिए शराब निर्माण के कारखाने लगाने की चिंता सरकार को पूरी-पूरी है। इसलिए अब यह निर्णय कर लिया लगता है कि हर चीनी मिल के साथ शराब का कारखाना जरूर लगे, क्योंकि शीरा तो वहां उपलब्ध है ही।

हरयाणा मिसाल है :

हरयाणा तो बहुत से कामों में देश का मार्गदर्शन करता है। वहां इसी वर्ष रोहतक और शाहबाद स्थित चीनी मिलों के साथ शराब का कारखाना लगना है। ८० हजार ग्रामों में पीने का पानी उपलब्ध नहीं है, परन्तु शराब वहां भी मिलती है। दुग्धालयों की संख्या से कई गुणा संख्या है मधुशालाओं, मदिरालयों की।

सम्प्रदायों की भूमिका :

तथाकथित धर्माचार्यों और अपने आपको धार्मिक नेता कहनेवालों की हालत राजनैतिक दलों से भी खराब है। इनको तो यह मौज है कि इनको जनता को भी जवाब नहीं देना पड़ता। सभी सम्प्रदायों और पंथों ने शराब को बुरा ही नहीं कहा, सब पापों की जननी कहा है। इस्लाम में शराब हराम है, खलीफा ने शराब पीने पर अपने लड़के को कोड़े मारने का हुक्म दिया और मरने के बाद बचे हुए कोड़े उसकी लाश को मरवाये। आज सारे देश में और मुसलमानों में बढ़ती हुई शराबखोरी के विरोध में न शाही इमाम बोलता है, न शहाबुद्दीन और न ही हाजी मस्तान।

हिंदुओं के धर्मग्रन्थों में शराब को सब पापों की जननी कहा है, परन्तु करोड़ों देशवासियों और हिंदुओं के परिवार, महिलाये और बच्चे शराबखोरी के कारण बर्बाद हो रहे हैं, परन्तु क्या डालमिया, सिंघल, महंत अवेद्यनाथ या शंकराचार्यों को इसकी चिंता है? क्या अकाल तख्त और गुरुद्वारों के प्रबन्धियों ने शराब से बर्बाद होनेवालों की सुधबुध ली है?

इन सभी धर्म के ठेकेदारों की सारी शक्ति, मुद्दे ढूंढकर या नए मुद्दे गढ़कर सम्प्रदायों को आपस में लड़ाने में ही लगती है। इन धन्धों से सस्ती चौधर और ठाठ-बाट करने के लिए अन्धाधुन्ध पैसा मिलता है। धर्मग्रन्थ पुकारते रहे कि दुखिया और दरिद्र नारायण की सेवा ही भगवान् तक पहुंचने का और आशीर्वाद प्राप्त करने का रास्ता है, पर ये स्वयंभू धर्म के ठेकेदार तो लड़ायेंगे, ठगेंगे और ठाठ करेंगे। इनको क्या चिंता पड़ी है महिलाओं की, बच्चों की या परिवारों की और फिर देश की। जनता को ही नहीं, धर्म के ठेकेदार और राजनेता एक-दूसरे को ठगने में ही जुटे हुए हैं। भगवान् को ईंटों की बनी दीवारों में, जिनका नाम मन्दिर, मस्जिद व गिरजाघर रख दिया है, कैद कर दिया है और उनका नाम लेकर भोली जनता को लड़ाते हैं और लूटते हैं। भगवान् की सर्वव्यापकता को अपने असत्य से नकारनेवाले इन लोगों से बड़ा कोई नास्तिक हो सकता है क्या?

गरीबी हटाओ, महिला कल्याण तथा बाल कल्याण कार्यक्रम

शराबबन्दी के अभाव में गरीबी हटाने, महिला तथा बालकल्याण की बात केवल छलावा है। गरीबी की रेखा से नीचे के लोगों के आंकड़े गलत और भ्रामक हैं। प्रति व्यक्ति आय को मापदण्ड मान लिया गया है, परन्तु उस आय से जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करनेवाले सामान की कितनी मात्रा खरीदी जा सकती है, उसी से पता लगेगा कि उस आयवाला व्यक्ति गरीबी की रेखा से नीचे है या ऊपर।

(क्रमशः)

एक साथी और चला गया

—श्री कपिलदेव शास्त्री, भू०पू० सांसद

पिछले कुछ वर्षों में हरयाणा के आर्य सामाजिक क्षेत्र के कुछ मूर्धन्य व्यक्ति धीरे-धीरे उस लोक को जारहे हैं जहां से जाकर कभी कोई लौटता नहीं। इस क्रम में सबसे पहले श्री जगदेवसिंह सिद्धांती गये और उनके बाद चौ० माड़ूसिंह, रघुबीरसिंह शास्त्री, आचार्य हरिश्चन्द्र, आचार्य विष्णुमित्र, प० विद्यानिधि, आचार्य महामुनि, मुन्शी प्रभुदयाल आदि अनेक ऐसे आर्यनेता थे जिन्होंने अपने-अपने ढग से अपने-अपने क्षेत्र में आर्यसमाज के लिए समर्पित भावना से घर परिवार का मोह छोडकर जनता-जनार्दन की सेवा में अपने को अर्पित कर दिया। इसी श्रेणी में १६ जनवरी, ९२ को महाशय भरतसिंह जी शामिल होगये हैं।

मुझे स्मरण नही आता कि मैंने पहले-पहल महाशय जी को कब और कहां देखा था। इतना जरूर याद है कि १९३९ में हैदराबाद सत्याग्रह के समय रोहतक आर्यसमाज के प्रधान ला. गणेशीलाल और मन्त्री मा० जयसिंह के साथ उन्हें अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह के साथ काम करते हुए देखा था और जब हम हैदराबाद जाने के लिए आचार्य हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में गुरुकुल भैंसवाल से चलकर रोहतक आये तब वे हमको छोडने के लिए आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली तक गये थे। इसके बाद उन्होंने भक्त फूलसिंह के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्यसमाज की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया। उनके साथ रोहतक के ही रामबख्श मिस्त्री सैनी भी जुटे रहते थे। पढते समय मैंने इस जोडी को गुरुकुल भैंसवाल में भक्त जी महाराज के पास परामर्श करते अनेक बार देखा था। महाशय जी गुरुकुल भैंसवाल, कन्या गुरुकुल खानपुर, गुरुकुल झज्जर आदि संस्थाओं से बहुत निकट से जुड़े हुए थे और वे सभी समारोहों मे सदा सम्मिलित होते रहते थे।

गोरक्षा आंदोलन के दौरान जब जत्थे दयानन्दमठ रोहतक आते थे और महाशय भरतसिंह, वैद्य भरतसिंह, श्री बनवारीलाल आदि सत्याग्रहियों की सेवा में जुटे रहते थे। सत्याग्रहियों को खाना परोसना, सकोरे बांटना, पत्तल उठाना आदि उनका नित्य नैमित्तिक कर्म बन गया था। गुरुकुल भैंसवाल से जब जगदीशचन्द्र शास्त्री के नेतृत्व में वहा के ब्रह्मचारी गोरक्षा आन्दोलन मे भाग लेने के लिए आये तब उन नवयुवक छात्रों को अपने बेटों की तरह छाती से लगाकर पुचकारते हुए और साहस बढ़ाते हुए मैंने महाशय भरतसिंह को देखा था।

१९७३ में जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का बटवारा हुआ तब इसकी पहल करनेवाले सबसे पहले मैं और महाशय भरतसिंह ही थे और उसी समय जब सभा का नया मन्त्री और प्रधान बनाने की बात आई, तब स्वामी रामेश्वरानन्द के प्रधान बनने के बाद मन्त्री पद के लिये म. भरतसिंह के लिये जिद् करके आग्रह करनेवाला मैं था, जबकि मेरे अन्य साथी उस समय राममेहर एडवोकेट को मन्त्री बनाने के पक्षधर थे। महाशय जी ने मन्त्री बनने के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नये संगठन को संस्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। उनके सहयोगी के रूप में कुछ समय मैं भी सभा का उपमन्त्री था। उस समय आर्यसमाज हरयाणा अपने सर्वोच्च शिखर पर था। सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य हरयाणा के इतिहास में पिछली अर्धशताब्दी में जो हुआ वह था १९६९-७० में चण्डीगढ़ आंदोलन। स्वामी ओमानन्द सरस्वती उस समय चण्डीगढ आंदोलन संघर्ष समिति के अध्यक्ष थे, म. भरतसिंह मन्त्री और मैं प्रचारमन्त्री था। हरयाणा में चण्डीगढ़ के लिये जो लडाई लड़ी वह हरयाणा के इतिहास में अभूतपूर्व थी।

उस समय प्रो० शेरसिंह केन्द्र में मन्त्री थे। चौ० बन्सीलाल हरयाणा के मुख्यमन्त्री थे। दयानन्दमठ रोहतक में संघर्ष समिति की जो बैठक होती थी उनमें चौ० देवीलाल, चौ. रिजकराम, चौ. सुलतानसिंह आदि छोटे-बड़े नेता भाग लेते थे। चौ० रिजकराम ने चण्डीगढ के मामले पर ही राज्यसभा की सदस्यता से त्यागपत्र दिया था। इस संघर्ष की बदौलत ही २९ जनवरी, १९७० को इन्दिरा अवार्ड के रूप में चण्डीगढ के बदले हरयाणा को अबोहर-फाजिल्का और १०७ गांव मिले थे। उस समय पंजाब के दर्शनसिंह फेरुमान ७५ दिन की भूख हड़ताल के बाद मृत्यु को प्राप्त हुए थे और उदयसिंह मान एम० एल० सी० की भूख हड़ताल ४२ दिन के बाद तत्कालीन भारत के गृहमन्त्री उमाशंकर दीक्षित ने खुलवाई थी। उस समय प्रो० शेरसिंह मन्त्री भारत सरकार श्री रणबीरसिंह एम०पी० लोकसभा, चौ० माड़ूसिंह मन्त्री हरयाणा सरकार आदि भी उपस्थित थे।

पिछले दिनों मैं बराही कांड के सम्बन्ध में म. भरतसिंह से मिलने आया था और उनसे कहा था कि बराही गांव में ३५ स्त्रियों के सामने ६ पुरुषों को पुलिस ने जिस प्रकार नंगा किया है इस सम्बन्ध में आर्यसमाज को आगे आना चाहिए। इस सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो न्याय के लिये लड़ सकती है। यदि आर्यसमाज आगे नहीं आता है तब राजनैतिक नेता इसका अपने-अपने तरीके से लाभ उठायेंगे। तब महाशय जी ने थके हुए स्वर में कहा था कि आप किसी दिन समय निकालकर आयें, बैठकर बातें करेंगे, अब वह पहलेवाला आर्यसमाज नहीं रहा। आर्यसमाज की शक्ति बिखर गई है, इसीलिए यदि हम हाथ डाले भी तब हम जनता का अपेक्षित सहयोग सम्भवत: प्राप्त नही कर सकेंगे। उनकी इस बात को सुनकर मुझे महसूस हुआ कि एक आर्यसमाज का सशक्त प्रवक्ता धीरे-धीरे इस बात को स्वीकार कर चुका है कि वे दिन लद गये जब आर्यसमाज हरयाणा को ही नही, देश को हिलाने की शक्ति रखता था।

एक अच्छे मित्र सहयोगी और साथी के इस निधन पर मैं सोचता हूं कि हमारी पीढ़ी के लोग धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं और जनसंख्या के इस विस्फोट में नयी पीढी इन नैतिक मूल्यों को नकार रही है जो भारतीय संस्कृति के मूलाधार हैं। क्या आर्यसमाज इस सम्बन्ध में सोच समझकर कोई ठीक निर्णय ले सकेगा जिससे हरयाणा के युवक शराब आदि बुराइयों से बचकर सन्मार्ग के पथिक बन सकें।

सूरजकुण्ड के मेले पर संघर्ष के वातावरण में यज्ञ किया गया

आजकल हरयाणा प्रदेश के प्रसिद्ध स्थान सूरजकुण्ड जि० फरीदाबाद में हस्तशिल्प कला से सम्बन्धित एक मेला लग रहा है, जहां प्रतिदिन भारी संख्या में इस मेले को देखने के लिए पर्यटक आते हैं। मेले में एक चौपाल बनाई गई है जिसके एक चबूतरे पर हवन-कुण्ड भी बनाया गया है। यज्ञ-प्रेमियों की मांग पर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों द्वारा ९ फरवरी, रविवार को यज्ञ किया गया। परन्तु तत्कालीन मेला प्रबन्धक श्री रामनिवास इस परोपकारी कार्य को सहन नहीं कर सका और उसने पुलिस को आदेश दिया कि हवन करने वाले बदमाशों को मारपीट करके भगादो। उनको समझाने का यत्न किया गया कि यज्ञ से चारों ओर सुगन्धी फैलती है और वातावरण शुद्ध होता है। उन्होने एक न सुनी और यज्ञ करनेवालों को गिरफ्तार करने की धमकियां दीं। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने यज्ञ पूरा करके ही शांतिपाठ किया। श्री रामनिवास के इस यज्ञ-विरोधी आदेश की आर्यसमाज के अनेक नेताओं ने निन्दा की है।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जि. रेवाड़ी का चुनाव

प्रधान—मा० राममेहरसिंह आर्य, उपप्रधान—मा० सत्यपाल आर्य, मन्त्री—मा० दयाराम आर्य, उपमन्त्री—नरेशकुमार आर्य, प्रचारमन्त्री—म० जयप्रकाश, कोषाध्यक्ष—ज्ञानचन्द आर्य, निरीक्षक—कन्हैयालाल आर्य।

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रोल जि. फरीदाबाद	१४ से १६ फरवरी
२	,, गांधीनगर हिसार	१७ से १९ ,,
३	विश्व भारती शिक्षा संस्थान गुरुकुल भैयापुर लाढौत जि० रोहतक	२२ से २३ ,,
४	कन्या गुरुकुल खानपुरकलां जि० सोनीपत	२२ से २३ ,,
५	गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल	२१ से २३ ,,
६	आर्यसमाज सैक्टर २२-ए चण्डीगढ	२४ फरवरी से २ मार्च
७	,, मानपुर जि० फरीदाबाद	२३ से २७ फरवरी
८	गुरुकुल झज्जर (रोहतक)	१ से २ मार्च
९	,, राजपुर जि० सोनीपत	१ से ३ मार्च
१०	दयानन्द उपदेशक विद्यालय शादीपुर यमुनानगर	२ से ३ मार्च
११	आर्यसमाज सालवन जि० करनाल	६ से ८ ,,
१२	,, बदरपुर ,,	१२ से १४ ,,
१३	,, माहूलाना जि० रोहतक	१३ से १४ ,,
१४	,, मम्धार जि० यमुनानगर	१९ से २० ,,
१५	,, घरोंडा जि० करनाल	२४ से २६ ,,

—डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वेदप्रचाराधिष्ठाता

शोक प्रस्ताव

स्वर्गीय महाशय भरतसिंह जी के निधन पर निम्नलिखित आर्यसमाजों तथा महानुभावों ने शोक प्रस्ताव भेजते हुए दिवगत आत्मा को शांति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है तथा उनके गुणों का उल्लेख किया है—

१ आर्यसमाज पुराना नारनौल जि० महेन्द्रगढ़
२ ,, तिजारा जि० अलवर (राज०)
३ आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव
४ डा० गेंदाराम आर्य मन्त्री आर्यसमाज माडल कालोनी यमुनानगर
५ रामकुमार आर्य मन्त्री आर्य युवक परिषद् गोहाना जि० रोहतक
६ श्री लालचन्द विद्यावाचस्पति, श्री मंगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम निनानियां खेड़की जि० महेन्द्रगढ़
७ पं० शांतिप्रकाश आर्य, ४५३ बरकत कालोनी जयपुर (राज०)
८ ब्र० हरिदेव 'काव्यतीर्थ' मु० पैजावा पो० बरढ़ जि० पटना (बिहार)
९ श्री हलिवाराम गुप्ता बंगाल प्रिंटिंग वर्क्स २१ सायगोगू स्ट्रीट कलकत्ता-१
१० आचार्य बलदेव आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा जि० जींद
११ राधाकृष्ण आर्य मन्त्री आर्यसमाज नरवाना जि० जींद
१२ आचार्य गुरुकुल आर्यनगर हिसार

रोहतक में महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस पर रोहतक में १२ फरवरी को श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस उपलक्ष्य में १०-११ फरवरी को आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक में प्रभातफेरी निकाली गई तथा १२ फरवरी को प्रातः यज्ञ के अवसर पर महर्षि दयानन्द की जीवनी पर सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल शास्त्री, आर्यसमाज के प्रधान श्री घनश्यामदास आर्य ने प्रकाश डाला तथा प० जयपाल की भजनमण्डली ने महर्षि महिमा पर गीत सुनाया।

इसी प्रकार १२ फरवरी प्रातः ६ बजे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की भव्य यज्ञशाला में यज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें विश्वविद्यालय के प्रति उपकुलपति डा० सर्वदानन्द आर्य, कुलसचिव श्री गजराजसिंह, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० ईश्वरसिंह तथा विश्वविद्यालय के अनेक प्राध्यापकों एवं छात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य सुदर्शनदेव ने ऋषि दयानन्द के जीवन की विशेष घटनाओं तथा उनके सिद्धांतों पर प्रभावशाली प्रवचन दिया। सभा महोपदेशक पं० सुखदेव जी ने यज्ञ पर प्रार्थना करते हुए महर्षि के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा की। श्रीमती सुमन ने महर्षि दयानन्द महिमा पर प्रभावशाली गीत प्रस्तुत किया। श्री महावीर शास्त्री ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि जिस प्रकार पंजाबी विश्वविद्यालय ने पंजाबी को अनिवार्य रूप से पढ़ाने की व्यवस्था की है, इसी प्रकार महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में संस्कृत अनिवार्य रूप में पढाई जावे और अंग्रेजी को ऐच्छिक विषय घोषित किया जावे।

प्रति उपकुलपति श्री सर्वदानन्द जी ने यज्ञ में सम्मिलित होने वालों का धन्यवाद किया तथा विश्वास दिलाया कि मैं जब तक इस पद पर रहूंगा, महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिये भरसक प्रयत्न करता रहूंगा। इसी दिन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धांती भवन में भव्य-यज्ञ का आयोजन किया गया।

—केदारसिंह आर्य

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव का चुनाव

प्रधान–ओमप्रकाश आर्य, उपप्रधान–म० चन्दनसिंह, महामन्त्री–ओमप्रकाश चुटानी, मन्त्री—जगदीशचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष–श्यामसुन्दर आर्य, लेखानिरीक्षक—जवाहरलाल आर्य।

हरयाणा की पंचायतों से निवेदन

हरयाणा प्रदेश की पंचायतों से निवेदन है कि चालू वर्ष में अपने ग्राम से शराब के ठेकों की नीलामी बन्द करवाने के लिये प्रस्ताव पास करके तुरन्त आबकारी कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ के पते पर भेज देवें।

सभा की मांग पर हरयाणा सरकार ने नई चुनी गई पचायतों को यह प्रस्ताव भेजने की सुविधा दे दी है। शराब हटेगी तो हरयाणा बचेगा।

आशा है हरयाणा में शराब का कलंक मिटाने के परोपकारी कार्य में नई पंचायतें सहयोग देकर पुण्य की भागी बनगी।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

शराब हटाओ, देश बचाओ

आर्यसमाज मन्दिर रेवाड़ी में धार्मिक गोष्ठी

दिनांक १६-१-९२ को आर्यसमाज रेवाड़ी के मंदिर में एक धार्मिक गोष्ठी हुई। इसका संयोजन आर्यसमाज के मन्त्री श्री रामकुमार शर्मा जी ने किया। महात्मा धर्मवीर जी वानप्रस्थी ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। इसमें आर्यसमाज, सनातन धर्म, विश्व हिन्दू परिषद् आदि संस्थाओं के कार्यकर्त्ता एवं नगर के विभिन्न मन्दिरों के पुजारी, पुरोहित, पण्डित और नगर के प्रतिष्ठित नागरिक सम्मिलित हुए।

गोष्ठी में सर्वश्री महाशय रामचन्द्र आर्य प्रधान आर्यसमाज, रामकुमार शर्मा मन्त्री आर्यसमाज, श्रीनिवास शर्मा शास्त्री प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य, पुजारी शिवचन्द्र इष्टधारी, दलीप शास्त्री, लालसिंह यादव जिला प्रधान विश्व हिन्दू परिषद् आदि ने गोष्ठी में अपने-अपने विचार प्रकट किये। निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये—

१. सभी पुजारियों से अनुरोध किया गया कि विवाह मुहूर्त दिन में बताया करें, जिससे बिजली की बचत हो और बारातों में मद्यपान का प्रचलन बन्द हो।

२. जनता में सत्य सनातन वैदिकधर्म की ऐसी व्याख्या करें कि लोग अन्धविश्वासों से मुक्त हों।

३. आकाशवाणी की भांति दूरदर्शन से भी संस्कृत भाषा में समाचार प्रसारित करने की मांग की गई।

४. चाणक्य धारावाहिक राष्ट्रधर्म की रक्षा करनेवाला है। अतः इसकी ५२ कड़ियों में कटौती न की जाये।

५. सभी आर्य सामाजिक एवं सनातनधर्म की संस्थाओं से निवेदन किया गया कि अप्रासंगिक हो चुके, छद्म धर्म निरपेक्षता और दम्भूपन के प्रतीक गांधीवाद के स्थान पर स्वामी दयानन्द के सुधारवाद, वीर सावरकर के आर्यत्व (हिन्दुत्ववाद) और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के राष्ट्रवाद का प्रचार करें।

६. धर्मप्राण जनता से निवेदन किया गया कि ४ अप्रैल, १९९२ को संवत् २०४९ के दिन अपने-अपने घरों पर केसरिया ओ३म् अंकित ध्वज लगाकर अपना नववर्ष उत्साह से मनाये।

पारिवारिक-यज्ञों द्वारा वेदप्रचार

सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी द्वारा दिनांक २५-१-९२ को आर्यसमाज मन्दिर नलवा में हवन किया गया। २६-१-९२ को प्रातः ८ बजे श्री रघुवीरसिंह खिचड़ के घर पारिवारिक हवन किया गया। इस अवसर पर क्रांतिकारी जी ने शराब से होनेवाले नुकसान पर मार्मिक दृश्य खींचा। विचारों से प्रभावित होकर तीन खूंखार शराबियों दीवानसिंह, वजीरसिंह, रघुवीरसिंह ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की तथा जनेऊ धारण किये। हवन पर काफी नर-नारियों ने भाग लिया। श्रद्धा से अपने-अपने घरों से घृत लाये। १०॥ बजे हिसार सूर्यनगर में नवगृह के उपलक्ष्य में श्री रामनारायण मिस्त्री के घर पर हवन किया तथा सज्जनों ने यज्ञोपवीत लिया।

—सत्यवान आर्य

नशा सिर्फ नशा

मैं उन भाइयों की ओर ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूं, जो आज नशा करने में इतनी बुरी तरह घुल गए हैं कि उन्हें अपने घर-द्वार तथा अपने से कोई मतलब नहीं रहा है। लेकिन वह यह नहीं जानते कि नशा चाहे सिगरेट, शराब या बीड़ी का हो, अच्छा नहीं है। न जाने दुनिया में कितने लोग हर वर्ष 'कैंसर' के शिकार हो रहे हैं। जहरीली सुरा ने अनगिनत माताओं को विधवा एवं अनाथ बना दिया। नशे के बिना पार्टियों का मतलब ही नहीं रहा। अगर नशे की ओर बढते बच्चों को रोका न गया तो २१वीं सदी आते-आते न जाने यह संसार कहां तक गिर जाएगा।

—नीरजकुमार 'आकांक्षा'
टुंगरी, चाईबासा (प.) सिंहभूम (बिहार)

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

रुपये

गतांक से आगे—

१ श्रीमती किताबकौर ग्राम पाकस्मा जिला रोहतक २१
२ „ सविता कुमारी धर्मपत्नी श्री कुलबीरसिंह मान आदर्शनगर रोहतक २१
३ अपने पुत्र के जन्मदिन के उपलक्ष्य में ऋषि लंगर हेतु २१

(क्रमशः)

—सभामन्त्री

ऋतुराज—बसन्त

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, दिल्ली

तर्ज—बृजबहर

आया ऋतुराज बसन्त, ले करके छटा निराली ॥
ले करके छटा निराली, ले करके छटा निराली ॥

पंचम स्वर आपिनी कोयल ने आवाज लगाई।
मृदुतर वाणी बोल बोलकर देने लगी बधाई ॥
चहक रही चंचल चिड़ियाय हो करके मतवाली।
पतझड़ वृक्षों की फिर से हरियाई डाली-डाली ॥

हुआ विदा ऋतु हेमन्त, ले करके छटा निराली ॥१

जौ गेहूं और मटर, चना, अरहर लेरहो तरुणाई।
पीली-पीली सरसों फूली खेत रहे लहराई ॥
मखमल-सा हरियालो का भूपर बिछ रहा बिछौना।
उगल रहा हीरे मोती भारत का कौना-कौना ॥

हो रहा शीत का अन्त—ले करके छटा निराली ॥२

शीतल मलय बयार सुगन्धित आया मस्त महोना।
आलू, बेंगन, गाजर, मूली खड़े तानकर सीना ॥
लाल-लाल फूलों से सेमल ढाक लदे छवि छाई।
सुख-श्रृंगार बहार प्यार का अमृत रहा लुटाई ॥

ऋतुराज बसन्त महन्त—ले करके छटा निराली ॥३

मौसम मनभावन फागुन का सुखद महीना आया।
बजे ढोल ढप ढोलक चिमटा उर आनन्द सवाया।
ऋतुओं का राजा आया नूतन बात निराली।
कहे स्वरूपानन्द है यही घर-घर में खुशहाली ॥

गाये प्रभु गुण साधु सन्त—ले करके छटा निराली ॥४

आर्यसमाज रामनगर गुड़गांव का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री भक्त राजेन्द्रप्रसाद, उपप्रधान—ओमप्रकाश मनचन्दा, वीरभान सेठी, मन्त्री—ओमप्रकाश चुटानी, उपमन्त्री—राधाकृष्ण सोलंकी, कोषाध्यक्ष—ताराचन्द मनचन्दा, पुस्तकाध्यक्ष—गणपतराय, शिक्षानिरीक्षक—जवाहरलाल आर्य।

(पृष्ठ २ का शेष)

न होती दुर्दशा यह, सुख हमारा मिल गया होता।
जो किनारा······
है झंझावात में भीषण, नियन्त्रण खो चुका नाविक,
भंवर में है फंसी नौका, किनारा मिल गया होता ॥

१८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के विफल होने पर महर्षि १८६० में गुरु विरजानन्द से विद्या ग्रहण करने के लिए मथुरा में चले गये। १८६३ में दीक्षा लेकर धर्मप्रचार के कार्य में लगे। १८६९ में काशी में मूर्तिपूजा के विरुद्ध शास्त्रार्थ हुआ। उनके प्रचार को अब धूम मच गई थी। उनको इस अवस्था को देखकर काशी के बाजार में खड़ा होकर किसी ने कहा था—

हुआ चमत्कृत विश्व अरे ! यह कौन ? वीरवर सन्यासी।
जिसकी भीषण हुंकारों से कांप उठी मथुरा काशी।
यह किसका गर्जन-तर्जन है, कौन उगलता ज्वाला है।
किसकी वाणी में से निकली आज धधकती ज्वाला है।

महर्षि के इस प्रचार उत्साह को देखकर कवि शंकर ने लिखा था—

जो न हटा मुख फेर, बढ़ा जीवनभर आगे।
जिसका साहस हेर, विघ्न भय संकट भागे।
उस दयानन्द मुनिराज का प्रवृत पाठ जनता पढ़े।
कवि शंकर आर्यसमाज का वैदिक बल-गौरव बढ़े।

जब उन्होंने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी, तब उसके परिणाम को देखकर एक कवि ने महर्षि को श्रद्धांजलि देते हुए लिखा था—

तुम गए जहा भी मूक होगई, वागीशों की बोलियां।
सिंहनाद से दहल उठी साधक सिद्धों की टोलियां।
तर्कतीर से पाखण्डों की ध्वस्त होगई हस्तियां।
तोड़ फक दी लाखों ने अपने कण्ठों की कण्ठियां।
याद कर रही राव कर्ण की वह टूटी तलवार है।
टंकारा में जन्मे योगी तुम्हें नमस्कार सौ-सौ बार है।

३० अक्तूबर, १८८३ को हुए उनके बलिदान पर श्रद्धांजलि देते हुए कवि शंकर ने कहा था—

ओ ! टंकारा की ज्वलित ज्योति तू कभी न बुझने वाली।
तुझ से जगमग यह जगतीतल तुझ से भारत गौरवशाली।

महर्षि दयानन्द की प्रशंसा में प्रकाश कवि—

वेद की ज्योति जिसने जगाई विमल,
भक्ति सिखलाई शिव सच्चिदानन्द की।
मन्त्र स्वाधीनता का पढ़ाया प्रथम,
कुप्रथा भिन्नता भेद की बन्द की।
नारियों को दिलाया उचित स्वत्व फिर,
की प्रगति मन्द, पाखण्ड छल छन्द की।
मन वचन कर्म से सभी जन धारण कर,
उच्च शिक्षा उस महर्षि दयानन्द की।

अन्त में वैदिकधर्म के प्रचार के दृढ़-संकल्प के साथ श्रद्धांजलि।

७७वां वार्षिक महोत्सव

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (जिला रोहतक) का ७७वां वार्षिक महोत्सव १, २ मार्च, १९९२ शनिवार रविवार को सम्पन्न होगा। २५ फरवरी मंगलवार से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ चल रहा है। पूर्णाहुति २ मार्च को प्रातःकाल होगी। उत्सव पर अनेक सम्मेलन तथा व्यायाम प्रदर्शन भी होगा। गुरुकुल की स्वामिनी "विद्यार्य सभा गुरुकुल झज्जर" का वार्षिक अधिवेशन १ मार्च को सायकाल ८ बजे होगा।

– ओमानन्द सरस्वती
आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता

ब्राह्मण सरपंचों ने मांस व मदिरा को त्यागने की शपथ ली

पलवल, २ फरवरी (ए० सं०)। ब्राह्मण सभा पलवल में जिला फरीदाबाद के ब्राह्मण पंचों एवं सरपंचों का स्वागत समारोह अध्यक्ष जिला ब्राह्मण सभा श्री शिवप्रसाद वशिष्ठ की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। सभा में अखिल भारतीय परशुराम मन्दिर समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं युवा कांग्रेसी नेता नित्यानन्द ने कहा जो वर्ग सभी को शिक्षा का उपदेश किया करता था आज वह शराब, मांस, अण्डा खाने जैसे बुरे व्यसनों आदि का आदी हो गया है। उन्होंने कहा कि हम कमजोर ब्राह्मण युवतियों के विवाह के लिए एवं गरीब ब्राह्मण छात्रों का पूरा खर्चा बर्दाश्त करेंगे और पंचों एवं सरपंचों के मार्ग में आनेवाली प्रशासनिक कठिनाइयों का समाधान करेंगे। पचों एवं सरपचों ने इस अवसर पर मांस, मदिरा का सेवन न करने एवं अपने परिवार-जनों को भी ऐसी बुराइयों से दूर रखने की शपथ खाई। सभा में ७५ सरपंचों एवं १५० पंचों का स्वागत किया गया।

हिमाचल में हिन्दी में काम करने का आदेश

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री शांताकुमार ने आज आदेश दिया कि प्रशासन में हर स्तर पर पूर्णरूप से हिन्दी का प्रयोग किया जाए। उन्होंने चेतावनी दी कि सरकार के इस आदेश की अवहेलना करनेवाले को दण्डित किया जाएगा।

मुख्यमन्त्री उच्च स्तरीय अधिकारियों की एक गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सभी राजस्व अदालतों के साथ-साथ वित्त आयुक्त की अदालतों में भी १५ अप्रैल तक सभी कामकाज हिंदी में ही हों तथा ऐसे प्रयास किये जायें कि अदालतों के अन्य अधीनस्थ कर्मचारी भी अदालत का कार्य हिंदी में करें।

श्री शांताकुमार ने कहा कि अब से जिला तथा उपमण्डलों के स्तर पर भी अंग्रेजी टाइपराइटरों को हिंदी टाइपराइटरों में बदल दिया जाएगा।

गुरुकुलों को और ज्यादा मदद पर बल

पानीपत, ५ फरवरी (ह० सं०)। प्रकृति की विजय का नाम ही शिक्षा है। यह विचार हरयाणा विधान सभा के अध्यक्ष ईश्वरसिंह ने यहां से २२ किलोमीटर दूर गांव मोरमाजरा के आर्य कन्या गुरुकुल के तीन दिवसीय वार्षिक समारोह के दूसरे दिन कन्याओं व उनके अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। श्री सिंह ने व्याख्या करते हुए बताया कि दो प्रकार की प्रकृति में से एक पर विजय प्राप्त कर हम अपनी सुख सुविधा के लिए बिजली, सौर ऊर्जा व उद्योग इत्यादि का निर्माण करते हैं जबकि अपने भीतर की प्रकृति पर विजय प्राप्त कर हम अच्छे चरित्र का निर्माण करके सभ्य समाज की रचना में सहयोग देते हैं।

विधान सभा अध्यक्ष ने आगे कहा कि गुरुकुल हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति से जुडी पद्धति है जिसमें विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ चरित्र-निर्माण हेतु नैतिक शिक्षा का समावेश भी रहता है। उन्होंने कहा कि देश में लडकियों की शिक्षा की कमी है जबकि शक्ति का प्रतीक नारी शिक्षित होकर हर क्षेत्र में अपनी शक्ति का परिचय दे सकती है।

चौ० ईश्वरसिंह ने कहा कि चरित्र निर्माण व प्राचीन संस्कृति की शिक्षा देने में जुटे गुरुकुलों को सरकार का अधिक से अधिक योगदान मिलना चाहिए क्योंकि दान के सहारे कोई भी संस्था लम्बे समय तक उद्देश्य की पूर्ति में नहीं लगी रह सकती।

समारोह मे गुरुकुल कन्याओं ने योग व लाठी चलाने का शानदार प्रदर्शन किया।

वेदों का सर्वांगीण अध्ययन जरूरी

नई दिल्ली, ५ फरवरी (वार्ता)। उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा ने वेद-वेदांगों के गहन अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया है।

डा० शर्मा ने आज यहां 'वेदकालीन स्त्रियां' पुस्तक का लोकार्पण करने के बाद कहा कि आधुनिकता के प्रतीक कंप्यूटर के उपयोग में भी वैदिक गणित का सहारा लिया जाता है। हमें वेदार्थ को पूरी तरह ग्रहण करने की ओर पूरा ध्यान देना चाहिये।

उपराष्ट्रपति ने पुस्तक के लेखक नागपुर निवासी मधुकर आएटीकर को वेदकाल में महिलाओं को दिये गये महत्त्व को उजागर करने के लिये बधाई दी। डा० शर्मा ने समारोह के अध्यक्ष पूर्व केन्द्रीय मन्त्री वसंत साठे के इस सुझाव से सहमति व्यक्त की कि इस पुस्तक का सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जाना चाहिए।

डा० शर्मा ने कहा कि वेदों का गहन अध्ययन न केवल सामाजिक राजनीतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से उपयोगी है। बल्कि वैज्ञानिक ज्ञान बढ़ाने के लिए भी जरूरी है।

डा० शर्मा और अन्य वक्ताओं ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि समाज में नारी के महत्त्व को स्वीकार तो किया जाता है। लेकिन हमारी कथनी और करनी में अन्तर है। श्री साठे ने कहा कि वेद और अन्य रचनाओं से सन्दर्भ से हटकर की गई व्याख्याओं के कारण महिलाओं के बारे में कई प्रकार की गलतफहमियां हैं जिन्हें दूर करना जरूरी है। पुस्तक के लेखक आएटीकर विश्वविद्यालय अध्यापक और महाराष्ट्र पाठ्यपुस्तक बोर्ड के अध्यक्ष हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०७ | स० P/RTK-११ | संवत् १,९६ ०८, ५३ ०९०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री | सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री | सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक १३ २१ फरवरी, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

दु:खों से छुटकारा कैसे मिले ?

ले०—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

दु खों से छूटकर सुखों को प्राप्त करना प्रत्येक जीव की स्वाभाविक कामना रहती है। किन्तु ऐसा देखा गया है कि कभी तो न चाहते हुए भी वह दु ख भोगता है और कभी चाहने पर भी सुख की उपलब्धि नहीं कर पाता। ऐसा क्यों? इसका उत्तर महर्षि दयानन्द इन शब्दों में देते हैं—"सब जीव स्वभाव से सुख प्राप्ति की इच्छा और दु ख का वियोग होना चाहते हैं, परन्तु जब तक धर्म नहीं करते और पाप नहीं छोड़ते तब तक उनको सुख का मिलना और दु ख का छूटना न होगा। क्योंकि जिसका कारण अर्थात् मूल होता है, वह नष्ट कभी नहीं होता। जैसे—छिन्ने मूले वृक्षो नश्यति तथा पापे क्षीणे दु ख नश्यति। जैसे मूल कट जाने से वृक्ष नष्ट होता है, वैसे पाप के छोड़ने से दु ख नष्ट होता है।" (सत्यार्थप्रकाश, नवम समुल्लास) स्पष्ट है कि दु खो से बचने के लिये, पापो से बचना आवश्यक है। किन्तु प्राय होता यह है कि लोग पाप के फल से तो बचना चाहते हैं किन्तु पाप-कर्म से नहीं। विपरीत इसके लोग पुण्य के फल को तो चाहते हैं पर पुण्य करते नहीं। यथा—

पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवा।
न पापफलमिच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नत ॥

अर्थात् मनुष्य पुण्य के फल की तो इच्छा करते हैं किन्तु पुण्य अर्जित नहीं करते और पाप के फल की इच्छा वे नहीं करते, फिर भी यत्नपूर्वक नित्य पाप करते रहते हैं। ऐसी स्थिति में दु ख से छुटकारा कैसे मिल सकता है? अत दु खों से बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम पापकर्म करने छोड़ देवें और केवल पापकर्म करने छोड़े ही नहीं, पुण्य कर्म भी प्रयत्न के साथ करते रहें। क्योंकि सुख की उपलब्धि तो पुण्यकर्म करने से ही होगी।

जीवों को सुख-दु ख की प्राप्ति का एक अन्य कारण भी है और वह है हमारा शरीरधारी होना। यद्यपि सुख-दु ख का भोक्ता शरीर नहीं, आत्मा ही है, तथापि वह शरीर के द्वारा ही सुख-दु ख को भोगा करता है। इसीलिए शरीर को भोगायतन भी कहा गया है। सुख दु ख शरीर का धर्म है। शरीर के रहते सुख-दु ख से बचा नहीं जा सकता। क्योंकि सर्दी, गर्मी, क्षुधा, प्यास आदि के लगने से सुख दु ख की अनुभूति तो होगी ही। अत शरीर के रहते दु खों से छुटकारा और सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसमें महर्षि का कथन प्रमाण है। महर्षि लिखते हैं कि—"मुक्ति के बिना दु ख का नाश नहीं होता, क्योंकि जो देहधारी है, वह सुख-दु ख की प्राप्ति से पृथक् नहीं रह सकता।" (सत्यार्थप्रकाश पंचम समुल्लास) वैसे भी शरीर को व्याधि मन्दिरम् कहा है। स्पष्ट है कि भोगायतन से छुटकारा पाना आवश्यक है और यह बिना मुक्ति के सम्भव नहीं। यदि जन्म का कारण समाप्त हो जाये तो दु ख का कारण भी नहीं रहेगा। अत जैसे भी हो मनुष्य को मोक्षमार्ग का पथिक बनना ही चाहिये।

दु ख के सम्बन्ध में श्वेताश्वतरोपनिषद् मे आया है कि—

यदा चर्मवदाकाश वेष्टयिष्यन्ति मानवा।
तदा देवमविज्ञाय दु खस्यान्तो भविष्यति ॥ ६/२०

अर्थात् जब लोग चमडे के समान आकाश को लपेटने में समर्थ हो जावेंगे, तब सम्भवत प्रभु को जाने बिना दु खो से छूट सकेंगे। तात्पर्य यह कि जैसे आकाश का चमडे के समान लपेटना असम्भव है वैसे ही प्रभु को जाने बिना दु खो से छूटना भी सम्भव नहीं। अत दु खो से छूटने की इच्छा रखनेवालों को जहा दुष्कर्मों से बचकर शुभकर्मों में प्रवृत्त होना चाहिए, वहा उस दु खविनाशक परब्रह्म को भी जानने का उद्योग अवश्य करना चाहिए और फिर केवल जानना ही पर्याप्त नहीं, जानकर उसे पाने का भी प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। इसके लिए साधक को उपासना योग का मार्ग पकड़ना चाहिए।

मनुष्य उन पदार्थों मे सुख की खोज करता है, जिनमे वह होता नहीं। तभी वह दु खी भी होता है। पचतन्त्र मे कहा है कि—

धनादिकेषु विद्यते येऽत्र मूर्खा सुखाशया।
तप्तग्रीष्मेण सेवन्ते शैत्यार्थं ते हुताशनम् ॥ २/१५८

अर्थात् जो मूख धन आदि भोग्य वस्तुओं में सुख की आशा करते हैं, वे धूप से सतप्त होकर शीतलता के लिए अग्नि का सेवन करते हैं। वस्तुत जिसके अन्त में दु ख हो, वह सुख नहीं दु ख है और जिसके अन्त में सुख हो वह दु ख न होकर वस्तुत सुख ही होता है। अत दुखो से छूटने के लिये क्षणिक सुख देनेवाले भोगो के पीछे नहीं भागना चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि भोगो को भोगने से तृष्णाय शात नहीं होती, अपितु भड़क उठती हैं। फिर भोगे रोगभयम् के अनुसार भोगो में रोग का भी भय रहता है। भोगों और विषयों का दास बनना भी दु ख का कारण बनता है। क्योंकि सर्वं परवश दु खम् सर्वमात्मवश सुखम् अर्थात् जितना परवश होना है वह सब दु ख और जितना आत्मवश होना है वह सुख है। जब हम विषयों के वश मे हो जाते हैं तो दु ख उठाते हैं किन्तु जब हमारी इन्द्रिया और मन आदि विषयो के दास नहीं होते, तब सुख की प्राप्ति होती है। फिर विषय तो विष से भी अधिक घातक हुआ करते हैं। क्योंकि विष तो खाने से घातक बनता है, जबकि विषय स्मरणमात्र से घातक बन जाते हैं। इसीलिए भर्तृहरि ने कहा था कि—

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्त वयमेव तप्ता।
कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा ॥

भोगो को क्या भोगा हमने, भोग हमे भुगताय गये।
तपते रहे तपों को हम क्या, तप ही हमको ताय गये ॥
रहे सोचते काल काटल, काल हमें ही काट गया
तृष्णा तू तो हुई न बूढी हमे बुढापा चाट गया ॥

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वास्थ्य चर्चा—

नजला-जुकाम

—डा० सोमवीर उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वैसे देखने में अनेक रोग ऐसे होते हैं जो साधारण प्रतीत होते हैं और थोड़ी सावधानी से जल्दी ही बिना दवाई के ठीक हो जाते हैं, किंतु यदि लापरवाही की जावे तो भयंकर रोग का रूप धारण कर लेते हैं। नजला-जुकाम भी ऐसा ही रोग है। यदि हम थोड़ी सावधानी बरतें तो बिना किसी दवाई के दो-तीन दिन में ठीक हो जाते हैं।

शायद ही कोई ऐसा आदमी होगा जिसे कभी न कभी यह बीमारी न हुई हो।

यदि इस रोग के प्रति हम लापरवाही करें—विषम भोजन व प्रतिकूल आहार-विहार करें तो नजला बढ़कर खांसी, दमा तथा तपेदिक जैसी भयंकर व्याधि का रूप धारण कर सकता है। अतः हमें सावधानी के साथ रहकर आवश्यकता अनुसार दवाई का प्रयोग करना चाहिए।

आयुर्वेद के मतानुसार इसे वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज चार प्रकार का मानते हैं।

कारण—मलमूत्र के वेग को रोकने से, नाक में धूलि जाने से, अजीर्ण से, रात को अधिक जागने से, बहुत चिल्लाकर बोलते रहने से, क्रोध से, ऋतु बदलने से, सिर में बहुत धूप लगने से, दिन में सोने से, नया पानी पीने से जैसे वर्षा के बाद तालाब या जोहड़ का पानी पीने से, ठण्डे जल में अधिक देर तक स्नान करने से, धूआं लगने से, वर्षा में अधिक भीग जाने से, तेज ठण्डी हवा में स्कूटर या मोटर साईकल पर नंगे सिर सफर करने से, रात को ठण्ड लगने से या ओस में रहने से आदि कारणों से सिर में कफ एकत्रित हो जाता है, जिससे वायु बढ़कर नजला-जुकाम उत्पन्न होता है। नासिका मल में रोगाणु पैदा हो जाते हैं जो अधिक बढ़ने पर नाक की अन्दर की झिल्ली को प्रभावित करके व्याधि का उग्ररूप धारण कर लेते हैं। जिसके कारण गला भी प्रभावित हो जाता है। खांसी व दमा तथा तपेदिक भी हो जाता है।

जिन लोगों की धातु क्षीण होती है उनमें रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होती है। इसलिए बार-बार जुकाम की शिकायत होती है।

जुकाम होने से पूर्व शरीर में सुस्ती-सी अनुभव होती है। रोम खड़े होते हैं, बार-बार छींक आती है, सिर भारी हो जाता है और कनपटियों में दर्द होता है, आंखों से पानी आना, भूख कम लगना तथा नाड़ी की गति थोड़ी तेज होती है।

वायु का प्रकोप अधिक होगा तो नत्थनों में मल भरा रहता है और सांस लेने में भी कष्ट होता है। सुर भी बढ़कर कनपटियों में दर्द होता है, गला बैठ जाता है। यदि पित्त का प्रभाव होगा तो प्यास अधिक लगती है, नाक से गर्म धुआं-सा निकलता है, नाक में पपड़ी-सी जम जाती है। कफ का प्रभाव अधिक होने पर सिर का भारीपन, गले में खुजली पैदा होना, गला बैठ जाना तथा मल सूखक होकर रुकावट व भारीपन होता है। छोटे बच्चों में पसलियां चलने लगती हैं।

उपचार—जिन कारणों से जुकाम होता है वे नहीं करने चाहियें। जैसे अधिक सफर करना, तेज हवा में घूमना, ठण्डे जल से स्नान करना, नंगे सिर घूमना, जुकाम से पीड़ित रोगी का तौलिया व रूमाल प्रयोग में लाना आदि कार्य जुकाम में नहीं करने चाहियें। सिर को ढक कर रखें तो अच्छा है। रात सोने के लिए है। अतः रात्रि जागरण करने से दोष कुपित होकर रोग पैदा करते हैं। जुकाम से पीड़ित रोगी को दिन में सोना व रात को बहुत देर तक जागना उचित नहीं है।

जिन लोगों को सदा ठण्डे पानी से स्नान करने व शुद्ध ठण्डी हवा में नंगे सिर घूमने की आदत है उनको प्रायः जुकाम नहीं होता। रोगों का प्रभाव सदा ऐसे व्यक्तियों पर ही होता है जिनके दोष धातु और मल दूषित होते हैं तथा रोगप्रतिरोधक शक्ति अर्थात् Immnity कम होती है।

कई लोगों का मत है कि जुकाम होते ही कफ को रोकनेवाली दवाई नहीं देनी चाहिए, इससे जुकाम बिगड़ जाता है। नाक के मल को बाहर निकालना चाहिए। वायु की वृद्धि न हो ऐसे पदार्थ खाने चाहियें। एक-दो दिन गर्म पानी पीने को देवें, भोजन न करें तो अच्छा है।

कुछ नुस्खे :

बनफ्शादि क्वाथ—

गुल बनफ्सा ४ ग्राम, गाजवां ४ ग्राम, रेशाखत्मी ४ ग्राम, मुलहटी ४ ग्राम, अंजीर जर्द ३ दाने, लिसोड़ा ६ दाने, मुनक्कादाख ७ दाने, काली मिर्च ५ दाने, सबको २५० ग्राम पानी में मिलाकर पकावें, चौथाई शेष रहने पर उतारकर छानकर थोड़ी चीनी या खस-खस का शर्बत मिलाकर रोगी को दिन में २-३ बार गर्म-गर्म पिलाने से २-३ दिन में सभी तरह का जुकाम ठीक हो जावेगा।

❀ सौंफ १० ग्राम, बिहिदाना ४ ग्राम, मुलहटी ४ ग्राम, नीलोफर के फूल ४ ग्राम इन सबका काढ़ा बनाकर प्रातः सायं तीन दिन लेने से जुकाम ठीक हो जाता है।

❀ पिप्पली, सोंठ, कालीमिर्च, कूठ, बिल्व मूल प्रत्येक १ ग्राम लेवें, ४०० ग्राम पानी में काढा बनाकर चौथाई पानी रहने पर उतारकर छानकर दिन में २-३ बार ३ दिन पिलाने से जुकाम में लाभ होगा।

❀ सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, चीते की जड़, तालीस पत्र, अम्ल-बेतस, जीरा प्रत्येक १० ग्राम, छोटी इलायची, तेजपत्र इनका चूर्ण २ ग्राम सबको मिलाकर कूट-छानकर रखें। इसकी १ ग्राम मात्रा प्रातः सायं गर्म पानी से लेने से जुकाम ठीक होता है।

कफकेतु रस—२-२ गोली गर्म पानी या शहद के साथ प्रयोग करने से सभी प्रकार के नजलों-जुकाम में लाभ होगा।

❀ बेसन को घी में भूनकर उसमें अद्रक व कण्टकारी का क्वाथ छानकर चीनी व किशमिश डालकर हलवा बनाकर प्रातः सायं खाने से जुकाम अवश्य ठीक होगा। हलवा खाकर कुछ देर हवा में न निकलें।

❀ नासिका रुक जाने पर कोई नसवार जैसे कटफलादि नस्य सूंघने से लाभ होगा।

❀ व्याघ्री तैल, षड्बिन्दु तैल, करवीरादि तैल नाक में २-३ बार ३ बूंद डालने से पके हुए जुकाम में लाभ होगा। यदि झिल्ली पकी हुई हो तो उसमें इस दवा से बड़ा लाभ होगा।

(क्रमशः)

हरयाणा की पंचायतों से निवेदन

हरयाणा प्रदेश की पंचायतों से निवेदन है कि चालू वर्ष में अपने ग्राम से शराब के ठेकों की नीलामी बन्द करवाने के लिये प्रस्ताव पास करके तुरन्त आबकारी कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़ के पते पर भेज देवें।

सभा की मांग पर हरयाणा सरकार ने नई चुनी गई पंचायतों को यह प्रस्ताव भेजने की सुविधा दे दी है। शराब हटेगी तो हरयाणा बचेगा।

आशा है हरयाणा में शराब का कलंक मिटाने के परोपकारी कार्य में नई पंचायतें सहयोग देकर पुण्य की भागी बनेंगी।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

क्या शराबबन्दी का सपना पूरा होगा ?

शराबबन्दी : प्रशासन : समाज और हम

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे—

हर महीने और हर वर्ष वस्तुओं के मूल्य बढते रहते हैं तो आय का मापदण्ड भी बदलता रहता है। यदि एक परिवार की आय से उसके सदस्यों की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपेक्षित सामान या उससे भी अधिक खरीदा जा सकता हो तो वह परिवार साधारणतया गरीबी की रेखा से ऊपर जायेगा, परन्तु यदि उस आय का एक बड़ा भाग शराब पीने में लगे और केवल बची हुई आय न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति से कम पड़े तो आय अधिक होते हुए भी वह परिवार गरीबी की रेखा से नीचे है। ऐसे परिवारों की संख्या घटने की बजाये रोज बढती जारही है।

स्पष्ट है कि नशों से (चाहे शराब का नशा हो या स्मैक का) मुक्ति पाये बिना साधारण स्थिति के परिवारों की गरीबी दूर नहीं हो सकती। नशे से मुक्ति पाते ही एक ओर तो काम करने की क्षमता और कुशलता में वृद्धि होगी और उससे आय बढेगी और दूसरी ओर उस आय का उपयोग परिवार की उचित आवश्यकताओं की पूर्ति में होगा। गरीबी हटाने का यही रास्ता है। जिस परिवार में नशे घुस गए उस परिवार की सुख-शांति समाप्त हो जाती है, पत्नी और बच्चे भूखमरी के शिकार होने के कारण अपनों और परायों के अत्याचार का शिकार तो होते ही हैं, जीवित रहने के लिए समाजविरोधी तत्त्वों के हाथो में पड़कर घृणित और गन्दे धन्धों में पड़ने पर मजबूर होते हैं। हमारे देश की महिलाय इस नारकीय जीवन से इतनी तग आचुकी हैं कि उन्होने तमिलनाडु में में जयललिता से एक स्वर से एक ही माग की, शराब बन्द करने की। महिला कल्याण और बाल कल्याण का शराबबन्दी से बढकर कोई कार्यक्रम नही है।—

किसानों और मजदूरों के संगठनों की भूमिका

यह सर्वविदित है कि अपने गाढ़े पसीने की कमाई से किसान और मजदूर ही शराब पीता है और सस्ती शराब के चक्कर में जहर पीकर हजारों की संख्या में हर वर्ष मरता है या अन्धा हो जाता है। अन्य शराब पीनेवालों को तो सस्ती महंगी की चिंता ही नहीं, क्योंकि वे तो अपनी कमाई की पीते ही नहीं, दूसरों की कमाई की पीते हैं। राजनेता चन्दे, सम्मान थैलियों और भ्रष्टाचार के पैसे से शराब पीते हैं। व्यापारी और उद्योगपति नौकरशाहो और राजनेताओं से मिलकर चोरबाजारी तथा करों की चोरी से कमाये हुए पैसे से शराब पीते हैं। यह सब कुछ जानते हुए भी किसानों और मजदूरों के नेता शराबबन्दी के लिए बोलते ही नहीं, बोलते हैं तो उल्टा बोलते हैं। वे जानते हैं कि यदि किसान और मजदूर ने अपनी आमदनी बढाने की क्षमता पैदा करली और उसका उपयोग ठीक ढंग से करने लग गया तो उसमें अपने अधिकारों की लम्बी लडाई लड़ने की क्षमता पैदा हो जाएगी, फिर मजदूरों का नेता उद्योगपतियों से सौदा कैसे कर सकेगा, सौदा तो तभी सम्भव है जब मजदूरों की क्षमता नाममात्र है और उनकी इस कमजोरी का लाभ उठाकर उनका नेता जब चाहे सौदा करले और अहसान उन्हीं पर रखे।

किसान भी अपने उत्पादन का पूरा मूल्य लेने के लिए यदि अपनी जिन्स को रोकने की क्षमता पैदा करले तो महीनेभर से अधिक अपना माल रोक सकता है और उचित मूल्य प्राप्त करने के लिए सरकार और उपभोक्ताओं को मजबूर कर सकता है।

किसान और मजदूर इसी तरह लुटता और बेमौत मरता रहे भूखमरी से। उसका परिवार जूझता रहे, इसमें दोनों के नेताओं का निहित स्वार्थ है। शंकर गुहा नियोगी ने दिल्ली रज्हरा कच्चे लोहे की खानों में काम करनेवाले मजदूरों से शराब छुड़वाई और इस प्रकार बचाये हुए पैसे में से ५० लाख रुपए उनसे इकट्ठे करके उनके लिए ५० शय्याओं का हस्पताल तथा अनेक विद्यालय चलाये। तथाकथित मजदूर नेताओं ने उन पर अनेक हमले करवाये, उन्हें बन्दी किया गया और षड्यन्त्र करके अन्त में मार दिया गया। उसमें पूजीपति, मजदूर नेता, सरकार के अधिकारी कौन-कौन शामिल हैं, शायद जांच निष्पक्ष हो तो पता चल जाये। जो मजदूर नेता आज नियोगी की हत्या की सी० बी० आई० द्वारा जांच करवाए जाने की आवाज उठा रहे थे, जीते जी नियोगी उनको फूटी आख नही भाता था।

नक्सलवादियों और आतकवादियो की ऐसी हिंसात्मक कार्यवाहियां जिनसे देश के कानून और व्यवस्था तथा उसकी एकता पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है, निन्दनीय है और उनकी जितनी भर्त्सना की जाए थोड़ी है। परन्तु कुछ राजनेताओं, नौकरशाहों, धर्म के ठेकेदारों तथा किसानों और मजदूरों के तथाकथित नेताओं की दुरभिसन्धि (जिसके कारण शराबखोरी और नशाखोरी बढती जारही है) पर उनका प्रहार, फिर चाहे वह हिंसात्मक हो क्यों न हो सराहनीय है।

को बड़ छोट कहत अपराधन.

देश का कितना बडा दुर्भाग्य है कि सम्बन्धित सरकारों की प्राथमिकता शराब के ठेको को बचाने की है। बैंक लूटे जाते हैं, जलाए जाते हैं, परन्तु वहां सरकार की तरफ से कोई सुरक्षा का प्रबन्ध नही है। अपहरणों की सख्या बढती जारही है, रेलों बसों में लोग मारे जारहे हैं। दफ्तरों मे, सड़कों पर, खेतों में आना-जाना खतरे से खाली नही। इन सबके लिए सुरक्षा के लगड़े प्रबन्ध है, परन्तु शराब के ठेकों पर सुरक्षा प्रदान करना सरकार अपना परम कर्त्तव्य मान बैठी है।

शराब के ठेकेदारों को सशस्त्र पहरेदार रखने की आवश्यकता नहीं, सरकार जो उनकी पहरेदार है। पंजाब में पुलिस ने और आबकारी तथा दूसरे अधिकारियों ने खड़े होकर शराब बिकवाई और इसको अपनी उपलब्धियों में गिनवाया। आंध्रप्रदेश की सरकार के कलैक्टरों तक ने पुलिस और आबकारी के अफसरों के द्वारा ताडी के थैले सामने खड़े होकर बिकवाए, थानों के साथ तम्बू और शामियाने लगाकर बिकवाए। आंध्रप्रदेश की सरकार को लज्जा तो क्या आती थी, वे तो गर्व का अनुभव कर रहे हैं और सरकारी अफसरों को इसके नम्बर मिल रहे हैं।

हरयाणा और पजाब की सरकारे पचायतों को शराब की एक बोतल गाव में बिकने पर एक रुपया अनुदान दे रही हैं, जितनी बोतल बिक उतने रुपए। पचायतो का काम शराब बिकवाना रह गया और सरकार का काम अनुदान देना। शराब के ठेकेदारों को यह परिदान (सबसिडी) नहीं दी जारही है क्या ? भारत सरकार अवकाश प्राप्त सैनिकों को दो बोतल प्रतिमास आधी कीमत पर अपनी कांटीनों से देती है। यह शराब पर सबसिडी नहीं है क्या ? खाद पर दी जानेवाली सबसिडी (जो आधी से ज्यादा खाद के कारखानेदारों को मिलती है) समाप्त करने में तो सारे अर्थशास्त्री और सरकार लग गये, परन्तु शराब पर दी जानेवाली सबसिडी को तो अर्थशास्त्री और स्वयं सरकार अपना कर्त्तव्य मानती हैं।

नारायणराव की याचिका :

महात्मा गांधी के उद्गारों और संविधान द्वारा राज्यों को दिए गए निदेशक तत्त्वों के अनुपालन को आधार बनाकर श्री नारायणराव ने आंध्रप्रदेश के उच्च न्यायालय में आंध्रप्रदेश सरकार के विरुद्ध याचिका दायर की है। गांधी जी ने कहा था—

(क्रमशः)

मध्यमार्ग अपनाकर जीवन सफल बनाइये

– वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति

भारतीय संस्कृति न तो केवल भोगवादी है और न ही केवल त्यागवादी है। केवल भोगवादीनीति तो निश्चित रूप से पतन की ओर ले जानेवाली होती है। आधुनिक जगत् इसी भोगवादी प्रवृत्ति का शिकार होकर दिन-प्रतिदिन अशांति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है। केवल भोगवादी सिद्धांत के कारण ही ब्रह्मचर्य आश्रम प्राय: समाप्त हो चुका है। इसीलिए वेद भगवान् का अमृत उपदेश है—तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: अर्थात् त्यागमय भावना से ही सब पदार्थों का भोग करने का आदेश भगवान् की वेदवाणी कर रही है। अलिप्त होकर भोग करो, ताकि अति से बच सको। इसके लिए पूर्ण सावधानी बरतनी है, ताकि विनाश के कंटीले क्षणभंगुर स्वाद से बचा जासके। चाहे धन के उपभोग का प्रश्न हो, चाहे भोजन के भोग लगाने का प्रश्न हो अथवा किसी भी इन्द्रिय के भोग का सवाल हो। किसी भी इन्द्रिय के भोग में अतीव सावधानी बरतनी होगी। उसमें अति करना ही स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के सदृश ही है। इसे पहले ही समझकर सतर्क हो जावें तो सर्वोत्तम है। वरना पैरों पर कुल्हाड़ी चलाकर ही अनुभव करना चाहें तो आपकी इच्छा है।

आगेवाले को गिरता देखकर जो व्यक्ति सावधान हो जाता है अर्थात् दूसरों की दुर्गति देखकर जो सम्भल जाता है, वही बुद्धिमान् कहलाता है। वही जीवन के सच्चे सुख का उपभोग करता है। अत: भलाई इसी में है कि हमें 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' के सर्वतन्त्र सिद्धांत को अपनाकर ही कल्याणमार्ग का पथिक बनना चाहिये। इसी सिद्धांत को अपने जीवन में अपनाकर विषयभोगों को तिलांजलि देकर मुन्शीराम स्वामी श्रद्धानन्द बन गये थे, जो कि अमर शहीद होकर इतिहास के स्वर्णाक्षरों में अंकित हो चुके हैं।

स्मरण रहे कभी घी घना और कभी मुट्ठीभर चना और वह भी कभी मना वाली स्थिति बहुत ही दु:खदायी सिद्ध होती है। जो व्यक्ति अति भोगवादी वृत्ति के दुष्परिणामों से बचेंगे, उन्हें ही मानवजीवन का अमरफल प्राप्त होगा।

पति-पत्नी को गृहस्थ जीवन के आरम्भकाल से ही अतीव सावधानी से रहने की आवश्यकता है। इसलिए कि गृहस्थ-रूपी गाड़ी के दोनों ही चक्र (पहिये) हैं। उनके बहुत ही सोच समझकर चलने से ही उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा।

अति का परिणाम तो सदैव दु:खदायी ही होगा। ऐसा चस्का पड़ जायेगा, जो कि छोड़ने से भी नहीं छूट सकेगा। एक दिन ऐसा आयेगा कि आप रो-रोकर पश्चात्ताप के आंसू बहायगे। किन्तु अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियां चुग गई खेत। जवानी के जोश में मनुष्य अपनी सुधबुध खो बैठता है, उसे अपने भविष्य का तनिक भी ध्यान नहीं रहता है। भले ही फैशन का मामला हो, टीपटाप दिखाकर अपनी शानो-शौकत दिखाने का मामला हो, सैर सपाटा या अन्य मनोरंजन करने का सवाल हो। इन सभी संदर्भों में बहुत ही सोच समझकर चलने की आवश्यकता है। अति त्यागवृत्ति भी अतीव हानिकारक है। भगवान् बुद्ध निराहार रहकर जब सूखकर कांटा होगये थे, तब देवियों के गीतों के मधुर स्वर में उन्हें सुनाई पड़ा कि वीणा के तार इतने मत खींचो कि वीणा ही टूटकर बेसुरी बजने लगे। तत्त्वज्ञान होगया और देवियों की लाई खीर खाकर महात्मा बुद्ध बन गये।

मेरा इस लेख के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वेद के इस मन्त्र को याद करके अपने जीवन में चरितार्थ करने का यत्न करें।

ओ३म् ईशा वास्यमिदं सर्वम् यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

कासनी में महायज्ञ तथा प्रवचन

कासनी में फाल्गुन बदी १२, १ मार्च, १९९२ रविवार को प्रात: १० बजे महायज्ञ तथा प्रवचन।

१० मई, ९१ को पूज्यपाद स्वामी सेवानन्द जी साधक छत से गिरकर बहुत बुरी तरह से टूट-फूट गये थे। प्रभु की दया से वे ८६ वर्ष की आयु में ठीक हो गये हैं। हड्डियों के जुड़ जाने को डाक्टर अचम्भित मानते हैं।

अत: यज्ञ के उपरांत दयालु पिता का धन्यवाद किया जावेगा। पूज्य स्वामी महाराज की केवल एक ही कामना है कि देश में गोहत्या बन्द हो। उनका कहना है कि अंग्रेज मांसाहारी था, पर उसने मांस को व्यापार का धन्धा नहीं बनाया। यह सरकार गांधी के नियमों पर चलनेवाली मांस तथा शराब को व्यापार का धन्धा बना रही है। देश की सरकार का ध्यान इस ओर दिलाने का प्रस्ताव भेजना है। साथ ही हरयाणा सरकार से कहना है कि हरयाणा में दुध-दहीवाले उदाहरण को जीवित करना है तो गाय को उसके स्थान किसान मजदूर के घर भेजना होगा तथा गोचर भूमि छोड़नी होगी। मेलों में अंग्रेज के समय भी बिना हिलाये बछड़े नहीं बिकते थे, पर आज लाल-लाल के बछड़े मेलों में बिकते हैं। शराब तथा मांस का व्यापार सरकारीतौर पर बन्द कराने का प्रस्ताव भेजा जावेगा।

यह सभी कार्य ग्रामीण स्वयं चेतेंगे तभी होंगे। पहले जो पाबंदी थी, वे सब पंचायतों की ही थीं। सरकार का उसमें कोई हाथ नहीं था। मुसलमानों की आबादी भी अच्छी-खासी थी, पर पाबन्द वे भी पूर्णरूप से थे। आज उसका उलट इसीलिए हो रहा है कि पंचायतों ने यह सब काम राज्य पर छोड़ दिया है। यदि पंचायतों ने अपना कर्त्तव्य नहीं सम्भाला तो हरयाणा अतिशीघ्र बर्बाद हो जावेगा। आज हरयाणा से गाय लोप होगई और शराब घर-घर में आगई है। महर्षि की चेतावनी साक्षात् हो रही है। अब महर्षि की बात मान अपना कल्याण करें।

मांस का प्रचार करनेवाले सब राक्षस के समान हैं।
वेदों में मांस खाने का कहीं भी उल्लेख नहीं है।
शराब सब बुराइयों की जड़ है। —महर्षि

—प्रार्थी दीपचन्द

मण्डी कालांवाली में महर्षि दयानन्द जन्मदिवस

दिनांक १२-२-९२ को सायंकाल ७॥ बजे श्री मदनमनोहर जी आर्य की दुकान पर नई मण्डी के प्रांगण में श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा की अध्यक्षता में महर्षि दयानन्द जी का जन्म दिवस मनाया गया। मौसम खराब होते हुए भी कार्यक्रम बड़ा अच्छा रहा। सबसे पहले श्री मदनमनोहर जी आर्य ने अपने भजनों द्वारा कार्यवाही प्रारम्भ की। फिर श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी ने महर्षि दयानन्द के उपकारों को विस्तार से बताते हुए कहा—

मुमकिन हैं गिने जावें सहरा के जर्रे।
समुद्र के कतरे फलक के सितारे॥
मगर दयानन्द तेरे अहसान।
गिनती में आवें न सारे के सारे॥

सभी उपस्थित भाई-बहिनों का मिठाई से सत्कार किया गया।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी
गुरुकुल बठिण्डा

शराबबन्दी समर्थक नवनिर्वाचित सरपंचों की सूची

१ राज पहलवान सरपंच गगनखेड़ी डा० खास तह० हांसी जि० हिसार
२ श्री गुलजारीलाल सरपच ग्राम मुकलान जि० हिसार
३ ,, साधुराम ,, ,, पातन ,,
४ ,, शीशपाल ,, ,, पायबा ,,
५ ,, चन्दगीराम ,, ,, चिडौद ,,
६ ,, गोपालाराम ,, ,, ढाया ,,
७ ,, प्रतापसिंह ,, ,, बाडाजाटान ,,
८ ,, श्योनारायण ,, ,, रावतखेड़ा ,,
९ ,, लाखसिंह ठाकुर सरपंच ग्राम तलवण्डी रूका जि० हिसार

सूचना

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि स्वर्गीय पूज्य स्वामी खेतानाथ (क्षेत्रनाथ) जी महाराज के जीवन व कार्यों पर हमारे आश्रम द्वारा शीघ्र ही स्मारिका प्रकाशित की जारही है। अतः जो भी सज्जन इस विषय में लेख, संस्मरण देना चाहें तो कृपया नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें। प्रामाणिक और सिद्धांत-सम्मत सामग्री ही स्वीकार की जाएगी।

पता : लेखक लालचन्द विद्यावाचस्पति
श्री मगस जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम
निनानिया खेड़की, डा० बेरावास जि० महेन्द्रगढ़

वि०वि० में प्रशासनिक काम हिन्दी में कराने के निर्देश

जयपुर, १३ फरवरी (भाषा)। राजस्थान के शिक्षा सचिव ईश्वर चन्द्र श्रीवास्तव ने राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से अनुरोध किया है कि वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय के समस्त प्रशासनिक कार्य हिंदी में करायें।

उन्होंने कुलपतियों को लिखे पत्र में कहा है कि विश्वविद्यालय के प्रवेश के फार्म, प्रोस्पेक्टस आदि हिंदी में छपाये जाये। यह सुझाव भी दिया कि विश्वविद्यालयों की नियमावलियों आदि का हिंदी अनुवाद योजनाबद्ध रूप में करवाया जाये जिसके लिये कुलपति एक समिति का गठन कर सकते है।

विवाह संस्कार

दिनांक १६-२-९२ को गांव खरावड़ जि. रोहतक के चौ. उमेदसिंह की सुपुत्री राजरानी का शुभविवाह संस्कार पं० रतनसिंह आर्य, उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने वैदिकरीति से करवाया। जिस पर चौ० उमेदसिंह मलिक ने सभा को ५१ रु० दान दिया।

—रतनसिंह आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस समारोह सम्पन्न

दिल्ली १२ फरवरी। नई दिल्ली के हिमाचल भवन के सभागार में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आयोजित महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए महामहिम डा० शंकरदयाल शर्मा उपराष्ट्रपति भारत सरकार ने कहा कि महर्षि दयानन्द सत्य के शोधक और साधक थे। उन्होंने खोये हुए सत्य की खोज और सत्य के अनुकूल जीवन में आचरण का भारत में ही नहीं, अपितु विश्व के सामने वैदिक जीवन का सच्चा आदर्श प्रस्तुत किया था। उनका यह सत्य केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक ही नहीं, अपितु व्यावहारिक भी था। गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होंने अपने विचारों के प्रचार माध्यम के लिए हिंदी को चुना और हिंदी को ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने का प्रयास किया। स्वामी जी ने सत्य, अहिंसा और करुणा को धर्म का सही रूप माना था। बिना इन्हें अपनाए कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र कभी उन्नति नही कर सकता। स्वामी जी ने स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज की स्थापना के उद्देश्य से ही १८७५ में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना की थी। उस युगपुरुष दयानन्द के १६८वें जन्म दिवस पर मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राष्ट्रवासियों से उनके आदर्शों और सिद्धांतों पर आचरण करने की अपील करता हूँ।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि उस महापुरुष का १८५७ के स्वतन्त्रता आंदोलन में बड़ा भारी योगदान रहा था। स्वामी जी ने भारत सरकार से अपील करते हुए कहा कि अन्य महापुरुषों की तरह महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस पर भी सरकार अवकाश घोषित करे।

समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव, मन्त्री डा० धर्मपाल, आर्य केन्द्रीय सभा के डा० शिवकुमार शास्त्री, प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, माता सरला मेहता तथा अन्य अनेक विद्वज्जन उपस्थित थे। —सच्चिदानन्द शास्त्री

२ दिनांक १२-२-९२ को आर्यसमाज टोहाना द्वारा सचालित महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय मे महर्षि दयानन्द का १६८वां जन्म दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर समाज के पुरोहित प० धर्मप्रकाश शास्त्री ने प्रवचनों एवं भजनों के द्वारा ऋषि के कार्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सभी बच्चों ने ऋषि के मार्गों पर चलने का सकल्प लिया।

—अरविन्द्रकुमार 'कमल'

३. आर्यसमाज कंवारी (हिसार) की ओर से १२-२-९२ को महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस बडो श्रद्धापूर्वक मनाया गया। प्रात: ९ बजे डाक बंगले में हवन किया गया। आर्य सदस्यों के अतिरिक्त स्कूली बच्चों ने बढ-चढकर भाग लिया। प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी व पं० ओमप्रकाश आर्य ने विस्तार से स्वामी जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। साथ में बच्चों को धूम्रपान, ताश खेलना तथा शराब आदि बुराइयों से दूर रहने तथा स्वामी जी के बताये हुए रास्ते पर चलने का आग्रह किया। तत्पश्चात् प्रधान जी की अध्यक्षता में एक मीटिंग हुई। उसमें सर्वसम्मति से दो महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए। (१) ८ मार्च को शराबबन्दी सातवास समेत २५ ग्रामों की कवारी में पंचायत बुलाई जावेगी। (२) प. गुरुदत्त विद्यार्थी की निर्वाण शताब्दी जो १५ से १७ मई, ९२ को दादरी जि० भिवानी में मनाई जारही है, उसमें बढ-चढकर भाग लिया जावेगा।

—सूबेदार रामेश्वरदास आर्य

४. दिनांक १२ फरवरी, ९२ को प्रात: ९ बजे आर्यसमाज बीकानेर गगायचा अहीर के प्रांगण में महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में दैनिक यज्ञ का आयोजन किया गया तथा म० हरिसिंह, रामकरण थानेदार व मा० धर्मसिंह आदि वक्ताओं ने महर्षि के जीवन पर एवं देश की सच्ची सेवा के लिए उनके कार्यकलापों पर प्रकाश डाला।

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

गतांक से आगे—

		रुपये
१	आर्यसमाज सबीलपुर जाटान पो० तलाकौर जि० यमुनानगर	५०
२	श्री जगमालसिंह मन्त्री ,, ,, ,,	२०
३	,, म० केहरसिंह ,, ,, ,,	१०
४	,, वानप्रस्थी बचनसिह आर्य सबीलपुर जाटान पो० तलाकौर जि० यमुनानगर	१०
५	,, नरेन्द्रकुमार जि० यमुनानगर ,, ,, ,,	१०
६	,, ज्ञानसिंह जि० यमुनानगर ,, ,, ,,	१०
७	,, रिसालसिंह पूर्व सरपंच जि० यमुनानगर ,, ,, ,,	१०
८	,, सतपाल सरपंच जि० यमुनानगर ,, ,, ,,	२०
९	,, जसवन्तसिंह ,, ,, ,,	१०

(क्रमशः)

—सभामन्त्री

ऋषिबोधोत्सव

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्वावधान में ऋषिबोधोत्सव (महा शिवरात्रि पर्व) रविवार १ मार्च, ९२ को अपराह्न ३ बजे से ६ बजे तक रोहतक नगर की सभी संस्थाओं के सम्मिलित प्रयास से सेनोपुरा चौपाल (सुभाष टाकीज के सामने) सोत्साह मनाया जाएगा।

—मेघराज आर्य

आदर्श विवाह

दिनांक ९-२-९२ को बसन्त पचमी के दिन ग्राम ढाबीपाव (हिसार) में श्री जवाहरसिंह आर्य की सुपुत्री सरोजबाला शास्त्री एवं ग्राम मोखंड (महेन्द्रगढ) के सूबेदार छाजूराम आर्य के सुपुत्र श्री बाबूलाल एम.ए. का वैदिकरीति से विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। संस्कार पं० रविदत्त शास्त्री (हिसार) ने करवाया। दम्पती को पं० सत्यवीर शास्त्री (हांसी) तथा सभा उपदेशक अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने प्रेरणादायक शब्दों से आशीर्वाद दिया। साथ में उपस्थित नर-नारियों को विवाह के अवसर पर शराब आदि बुराइयों से दूर रहने तथा वैदिकरीति से संस्कार करवाने की अपील की।

—मा० चन्द्रप्रकाश आर्य

(पृष्ठ १ का शेष)

यदि दु:खों से बचना है तो फिर भोगों के पीछे भागना छोड़ना पड़ेगा। फिर तो हमारी वासना पर विवेक का आधिपत्य होना ही चाहिए, क्योंकि "विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपात: शतमुख:" अर्थात् विवेकभ्रष्ट लोगों का पतन अनेक प्रकार से होता है। इतना ही नहीं— "येषां चित्ते नैव विवेकस्ते पच्यन्ते नरकमनेकम्" अर्थात् जिनके चित्त में विवेक नहीं रहता, वे नाना दु:ख उठाते हैं। अत: दु:खों से बचने के लिए विवेकशील होना अत्यन्त आवश्यक है। विवेकशील व्यक्ति ही संसार में सुख पाता है। प्रभु करे हमारे अन्दर विवेक उत्पन्न हो और हम खोटे कर्मों से बचकर निष्पाप जीवन व्यतीत करें।

जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत की गतिविधियां

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित जि० वेदप्रचार मण्डल पानीपत के संयोजक एवं सभा के कोषाध्यक्ष ला० रामानन्द जी सिंगल के निर्देशन में पं० रामकुमार जी आर्य भजनोपदेशक की भजनमण्डली ने दिनांक १-१-९२ से ३१-१-९२ तक निम्नलिखित ग्रामों में वेदप्रचार का कार्य किया। शिथिल आर्यसमाजों में जागृति उत्पन्न की। कुछ ग्रामों में यज्ञवेदी पर दर्जनों नवयुवकों और बहनों को भी यज्ञोपवीत देकर, यज्ञोपवीत के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा मकर संक्रांति के पवित्र पर्व पर यज्ञ किया, पर्व का महत्त्व समझाया।

१. आर्यसमाज पुठर में चौ० वेगराज जी आर्य प्रधान ने उदारता के साथ १०१ रु० मण्डल को दान दिया।

२. बांधकलां में श्री बलवानसिह सुपुत्र श्री ताराचन्द के दरवाजे में वैदिक प्रचार हुआ।

३. बांधखुर्द में चौ० चेतराम जी के यहां पारिवारिक सत्संग किया। पाखण्ड, अन्धविश्वास, शराबबन्दी, दहेजप्रथा, नारी-शिक्षा, बालविवाह आदि विषयों पर प्रकाश डाला तथा चरित्र-निर्माण व यज्ञोपवीत ग्रहण करने की शिक्षा दीगई।

४. ग्राम बलाणा में चौ० धर्मपाल सुपुत्र रतनसिह तथा नवनिर्वाचित सरपच श्री दरियासिह जी ने विशेष योगदान दिया।

५. ग्राम न्योलथा मे भूतपूर्व सरपंच चौ० कर्मसिह सूबेदार ने वैदिक प्रचार को सफल बनाने मे पूर्ण सहयोग दिया तथा मण्डल को १०१ रु० दान दिया।

६. ग्राम जोन्धनकलां में मिस्त्री ओमप्रकाश आर्य के सुपुत्र रवीन्द्रकुमार के जन्मदिन की खुशी में यज्ञ व पारिवारिक सत्सग किया। प्रात:काल की पवित्र वेला में यज्ञवेदी पर कुछ नवयुवको ने समाज मे फैली बुराइयो से दूर रहने का व्रत भी लिया।

७. आर्यसमाज बाधखुर्द में मकर संक्रांति के पवित्र पर्व पर हवन किया गया तथा पर्व मनाने का महत्त्व समझाया गया। यज्ञ श्री सुन्दरसिह सुपुत्र श्री बारुराम आर्य के घर पर किया गया तथा कुछ नवयुवकों ने यज्ञोपवीत धारण किये और समाज में बढ़ती हुई कुरीतियो से दूर रहने का व्रत भी दिलाया गया।

८. ग्राम चमराड़ा में तीन दिन वेदप्रचार किया, जिसमें श्री बलवानसिह सुपुत्र श्री चन्दगीराम भूतपूर्व मेम्बर पंचायत ने उदारता के साथ १०१ रु० मण्डल को दान दिया और भोजन आदि का भी विशेष प्रबन्ध किया तथा वेदप्रचार को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया।

९. दिनांक १८-१-९२ से २५-१-९२ तक ग्राम डिकवाड़ी जिला पानीपत में वेदप्रचार का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। महर्षि दयानन्द का सन्देश भजनों द्वारा घर-घर पहुँचाया गया। प्रतिदिन हाजरी बढती गई। बहुत रुचि के साथ लोगों ने प्रचार सुना। श्री सतबीरसिह सुपुत्र श्री अमेराम आर्य ने भोजन आदि का रुचि के साथ विशेष प्रबन्ध किया तथा श्री सुखबीरसिह सुपुत्र श्री असमत ने १०१ रु. उदारता के साथ मण्डल को दान दिया। श्री सुशीलकुमार सुपुत्र श्री हरसरूप हैडमास्टर ने २५५ रु० दान दिया। ग्राम से कुल धनराशि ५१६ रु० सभा को दान दीगई।

१०. ग्राम टिटाना में श्री रामकुमार तथा चौ० बारुराम जी भूतपूर्व सरपंच ने वेदप्रचार मंडल पानीपत के लिये विशेष योगदान दिया। ग्राम टिटाना से कुल धनराशि २२७ रु० प्राप्त हुई।

११. ग्राम बुड़श्याम में प्रधान लालचन्द आर्य के पूज्य पिता की पुण्य-स्मृति में वैदिक प्रचार हुआ। उदारता के साथ हवन करवाया तथा वेदप्रचार मण्डल को १०१ रु० दान दिया। सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का व्रत दिलाया गया। दूसरे दिन बहुत हाजरी हुई, प्रचार को लोगों ने श्रद्धापूर्वक सुना। हैडमास्टर श्री ओमप्रकाश जी आर्य सहसंयोजक जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत ने ग्रामवासियों को सुखी जीवन जीने का सन्देश दिया। बड़ी रुचि से लोगों ने प्रोग्राम सुना।

आर्यनेता श्री नवनीतलाल एडवोकेट का निधन

आर्यसमाज के प्रसिद्ध आर्यनेता एवं एडवोकेट श्री नवनीतलाल जी का दिनांक २४ जनवरी, ९२ को निधन होगया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान, ला० दीवानचन्द ट्रस्ट के मन्त्री, स्वामी श्रद्धानन्द ट्रस्ट, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, आर्यसमाज निजामुदीन तथा भोगल, दिल्ली आदि आर्य संस्थाओं के काफी समय तक सक्रिय अधिकारी रहे हैं।

२७ जनवरी को एक शोकसभा में उन्हें श्रद्धांजलि दी गई, जिसमें अनेक वक्ताओं द्वारा उन द्वारा आर्यसमाज की कीगई सेवाओं की सराहना की गई। आपने स्वर्गीय पं० जगदेवसिह सिद्धांती द्वारा की गई चुनाव याचिका उच्चतम न्यायालय में बहुत ही परिश्रम तथा सफलतापूर्वक पैरवी की थी।

—केदारसिह आर्य

सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए जागरूक होना आवश्यक

निस/जींद

स्त्रियों को सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए तथा समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए उनका जागरूक होना अति आवश्यक है।

यह विचार गत दिवस यहां से लगभग ३० किलोमीटर दूर स्थित गांव करसिधुखेड़ा में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के प्रांगण में संस्कृत भवन के शिलान्यास के अवसर पर आयोजित एक समारोह में जिला उपायुक्त सुदीपसिंह ढिल्लो ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर महाविद्यालय की ओर से रखी गई मांगों के संदर्भ में उपायुक्त ने ६० हजार रुपये की राशि इसी वित्त वर्ष में भवन निर्माण हेतु देने, १० सिलाई मशीन जिला रेडक्रास द्वारा देने तथा गुरुकुल में १० सुलभ शौचालयों के निर्माण हेतु राशि उपलब्ध करवाने की घोषणा की। इस अवसर पर उन्होंने साक्षरता तथा अल्पबचत योजना पर विशेष बल दिया।

इस अवसर पर उपायुक्त महोदय का स्वागत करते हुए कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के प्रबन्धक स्वामी हीरानन्द ने बताया कि इस संस्था की स्थापना १९८४ में की गई थी और इसकी शुरुआत मिडल कक्षाओं तक की गई थी। इस समय यहां पर स्नातक की कक्षाय हैं जिनमें ५०० लड़कियां शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। उन्होंने आगे बताया कि यहां पर २० कमरे हैं जिनमें से १० कमरों में पढ़ाई करवाई जाती है व १० कमरे बतौर होस्टल प्रयोग किये जाते हैं।

इस अवसर पर संस्था के संस्थापक स्वामी गोरक्षानन्द जी ने ५० हजार रुपये की राशि अल्प बचतों में जमा करवाई।

संस्कृतभाषा को बढ़ावा दें : शांता

नयी दिल्ली, १२ फरवरी (वार्ता)। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री शांताकुमार ने कहा कि बढ़ते औद्योगिकीकरण के कारण हमारी मातृभाषायें संस्कृत और हिंदी अपनी महत्ता खोती जारही हैं। इस स्थिति को देखते हुए संस्कृत विषय को हिमाचल में दसवीं तक अनिवार्य घोषित कर दिया गया है।

श्री शांताकुमार यहां दिल्ली संस्कृत नाट्य अकादमी द्वारा आयोजित विद्यालय संस्कृत नाट्य समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि संस्कृतभाषा भारतीय संस्कृति की प्रतीक है और इसके हितों की रक्षा के लिये हमे हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। संस्कृत ही मात्र ऐसी भाषा है जिससे देशभक्ति की भावना पनपती है।

श्री शांताकुमार ने संस्कृत को बढ़ावा देने के लिये दिल्ली संस्कृत अकादमी के योगदान को सराहना की और नाट्य विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये।

वेदप्रचार

दिनांक १०-२-९२ को श्री राजवीर आर्य सुपुत्र श्री गणेशी गांव लाढ़ौत जि० रोहतक ने अपने सुपुत्र के नामकरण संस्कार पर प्रातः श्री धर्मवीर शास्त्री द्वारा यज्ञ करवाया। सभा की तरफ से श्री जयपालसिंह आर्य की भजनमण्डली ने वेदप्रचार किया व शराब, दहेज व पाखण्ड का खण्डन किया। यज्ञ पर तीन नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण किये। सभा को १०१ रु० दान दिया गया। इस अवसर पर प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया।

शराब हटाओ, देश बचाओ

बच्चों को स्कूल न भेजनेवाले गरीबों को जेल भेजेंगे : लालू

पटना। मुख्यमन्त्री लालूप्रसाद ने कहा है कि जो गरीब तथा हरिजन अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने पाठशाला नहीं भेजेंगे, उन्हें तीन माह का कारावास एवं एक हजार रुपया जुर्माना करने हेतु सरकार शीघ्र नियम बनायेगी।

श्री प्रसाद कल उग्रवाद प्रभावित बिहार के जहानाबाद जिले में करमी कुर्था अबल तथा अन्य कई स्थानों पर जनसभाओं को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गरीबी, पिछड़ों में जब तक शिक्षा का व्यापक प्रचार नहीं होगा, वे शिक्षित नहीं होंगे तब तक उनका शोषण बन्द नहीं होगा। उन्होंने कहा कि अन्धविश्वास एवं पाखण्ड के चक्कर में भी गरीब अशिक्षा के कारण हैं।

सन्दर्भ : आज, वाराणसी

गुरुकुल कांगड़ी से मान्यता प्राप्त हरयाणा के गुरुकुलों के लिए सूचना

गुरुकुल वेद मन्दिर मताना डिग्गी जी० टी० रोड फतेहाबाद जि० हिसार के पत्र क्रमांक २८१ दिनांक १०-१२-९१ के सन्दर्भ में सूचित किया जाता है कि बोर्ड की बैठक दिनांक ७-११-९१ के अन्तगत गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की विद्याधिकारी (मैट्रिक) परीक्षा को इस बोर्ड की मैट्रिक परीक्षा के समकक्ष मान्यता इस शर्त पर दी गई है कि जिन छात्रों ने यह परीक्षा वैज्ञानिक वर्ग के गणित विषय के साथ पास कर रखी को वे विज्ञान तथा कामर्स ग्रुप में १०+१ कक्षा में प्रवेश लेने के पात्र होंगे और बाकी छात्र मानविकी वर्ग में प्रवेश के पात्र होंगे तथा विद्याविनोद परीक्षा इस बोर्ड की सीनियर सैकण्डरी (१०+२) सर्टीफिकेट परीक्षा को केवल कलावर्ग के समकक्ष मान्यता प्रदान की गई है।

—कृते सचिव
हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी
दिनांक १३-१२-९१

आर्यसमाज सुदकैनकलां जि० जींद का चुनाव

प्रधान—मा० वेदपाल, उपप्रधान—चांदीराम, मन्त्री - दिलबाग शास्त्री, उपमन्त्री—ओमसिंह रामदिया, कोषाध्यक्ष—सुरेन्द्रकुमार उपकोषाध्यक्ष—रणबीरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—प्रेमदास।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि. नं. P/RTK-[illegible] ५ [illegible]

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक १४ २८ फरवरी, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

ऋषिबोध अंक

सत्यार्थप्रकाश के प्रकाश में

—[illegible] "चैतन्य" १९०/एस-२ सुन्दरनगर-१७४४०२ (हि०प्र०)

गत शताब्दी में अनेक समाज-सुधारक हुए—जिनके कालांतर में अलग-अलग मत व सम्प्रदाय चल पड़े, मगर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा [illegible] बात नहीं। नया मत चलाने का बिल्कुल भी लक्ष्य नहीं है। वे सही अर्थों में मानवता के वास्तविक पालक और पोषक थे। उनकी प्रतिभा बड़ी ही विलक्षण थी। यही कारण है कि वे मान अपमान को एक ओर रखकर

केवल मानवता के प्रचार व प्रसार में आजीवन लगे रहे और अन्त में परोपकार के पथ पर ही "प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो" कहकर आहुत होगए।

महर्षि दयानन्द एक ऐसे युग में इस धरा पर अवतरित हुए, जब चारों ओर मानवजाति को समाप्त करने के षड्यन्त्र स्वय मानवों द्वारा ही किये जारहे थे। आपस के बैर विरोध, अन्धविश्वास, पाखण्ड और अधर्म का सर्वत्र साम्राज्य था। धर्म के राग तो अवश्य अलापे जाते थे, किन्तु धर्म एक रूढ़िवाद के दायरे में सिमटकर रह गया था। वेदों का पठन-पाठन कल्पना की बातें थीं। नारी-जाति की गरिमा पांव की जूती कहलाने तक गिर चुकी थी। वह मात्र भोग की वस्तु रह गई थी। जातिवाद का जहर अपने पूरे यौवन पर आकर फुफकार रहा था। हम पराधीनता की बेड़ियों में किंकर्तव्य विमूढ़ से होकर लाचार और असहाय बने हुए थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ऐसे ही विकट समय में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रयोग करके इन सभी समस्याओं पर एक साथ ही प्रहार करते हुए समूचे विश्व के सामने डटकर खड़े हो गए। धर्म के नाम पर चलनेवाली सभी दुकानों की उन्होंने जड़ हिला-कर रखदी। उन्होंने धर्म को पोथियों और पोथों की कैद से मुक्त करके उसे क्रियात्मकता की ओर [illegible]। वेदों के पठन-पाठन का प्रचलन कराकर उन लोगों को चौंकाकर रख दिया, जो कहते थे कि वेदों को तो शंखासुर चुराकर लेगया है। वेदज्ञान के समक्ष आडम्बर और पाखण्डों की पोलें खुलने लगीं तथा अज्ञानान्धकार छिन्न-भिन्न होने लगा।

इस बात का श्रेय महर्षि दयानन्द जी को ही जाता है कि मैक्स-मूलर जैसे पाश्चात्य विद्वानों के हृदयों में भी वेद के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई जो वेदों को मात्र गडरियों के गीत कहा करते थे। महर्षि दयानन्द जी का दर्शन किसी विशेष जाति, क्षेत्र, सम्प्रदाय या राष्ट्र के लिए नहीं था, बल्कि वे तो "वसुधैव कुटुम्बकम्" को कार्यान्वयन करनेवालों में थे। उनका लक्ष्य था कृण्वन्तो विश्वमार्यम्—अर्थात् सारे ससार को श्रेष्ठ बनाना। नारी-जाति को उन्होंने दयनीय दशा से ऊपर उठाते हुए पूजनीय अवस्था तक पहुंचाया था। यह जो हम अपने राष्ट्र में आज नारी को प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ता हुआ देख रहे हैं, यह सब उस परम कृपालु देव दयानन्द के प्रयासों का ही सुफल है। आज उन लोगों को भी नारी उत्थान का [illegible] बनते हुए देखा जासकता है जो उस समय महर्षि जी का विरोध करते थे। जाति-पाति को समाप्त करने के लिए उन्होंने रचनात्मक कदम उठाये। उनकी दृष्टि मे मानवमात्र को केवल एक ही जाति थी—'मनुष्य'।

महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा इतनी सरल, अकाट्य, हृदयग्राही और वैज्ञानिक है कि उसको गहराई से समझ लेने पर हर किसी का कायाकल्प हो सकता है। आजकल आमतौर पर देखा जाता है कि वर्तमान आर्यसमाजों में आर्यसमाज के मान्य सिद्धांतो की चर्चा नही हो पाती है, बल्कि सिद्धांतहीनता की बात भी कई बार मचो पर से सुनने को मिलती हैं उसका सबसे बड़ा कारण यही है कि लोगो ने महर्षि जी के ग्रन्थों का स्वाध्याय व उन पर मनन करना छोड़ दिया है। महर्षि जी ने हमें इतने विलक्षण ग्रन्थ दिये हुए हैं कि उनकी मौजूदगी में कोई भी अपने मत एव मजहब की डींगे नही हांक सकता है। यूं तो महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित प्रत्येक ग्रन्थ का एक-एक वाक्य अद्भुत है, मगर "सत्यार्थप्रकाश" में इनका दार्शनिक पक्ष भली प्रकार से समझा जासकता है। यह एक ऐसा अमर ग्रन्थ है कि इसके स्वाध्याय से कितने ही लोगों ने अपने जीवनो को निखारकर कुन्दन बना लिया। इसे जितनी बार पढ़ा जाए, उतनी ही बार इससे कोई न कोई नया रत्न प्राप्त होता है। इसलिए कई लोगों ने अनेक बार इस ग्रन्थ का स्वाध्याय किया है। यह एक ऐसा अनमोल हीरा है जिसका कोई मूल्य नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि इसमें विश्लेषित रहस्यों को समझकर अपने जीवन में धारण किया जाये, क्योंकि महर्षि जी का धर्म पोथियों में रखकर पूजने के लिए नही है, बल्कि जीवन को सुजीवन बनाने के लिए है। यदि इस ग्रन्थ की मान्यताओं को प्रत्येक व्यक्ति हृदय में धारण करके चले तो आज जितने भी मत, मजहब और सम्प्रदाय चल पड़े हैं उनका समूल नाश होकर एक ऐसे सार्वभौमिक धर्म की स्थापना हो सकती है जो समूचे विश्व में मानवता का प्रसार करने में सक्षम सिद्ध हो सकता है। प्रेम और सौहार्द का ऐसा वातावरण तैयार हो सकता है जहां सभी एक सद्‌गुरु के अनुचर बनकर इस धरती को स्वर्ग बना सकते हैं।

इस प्रकार ग्रन्थ की रचना चौदह समुल्लासों में की गई है। प्रथम दस समुल्लासों में वैदिक मान्यताओं के आधार पर ईश्वर, ब्रह्मचर्य, बालशिक्षा, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आदि का वर्णन तथा राजनीति, वेद, मोक्ष, भक्ष्य-अभक्ष्य आदि का विवेचन किया गया है। यह विवेचन सार्थक और ग्राह्य ही नहीं, बल्कि वेदानुमोदित होने से ईश्वरीय भी है। मण्डनात्मक समुल्लासों के बाद ग्रन्थ के चार समुल्लासों में महर्षि जी ने खण्डनात्मक विवेचन किया है। ईसाई, मुसलमान, सिख, हिंदू ही नही, बल्कि तत्कालीन छोटे-मोटे प्रत्येक सम्प्रदाय का कच्चा चिट्ठा महर्षि जी ने अपनी अतुल प्रतिभा और वेद-ज्ञान के अनुसार खोलकर रख दिया है। यह लोगों को कड़वा तो लग सकता है, मगर यह कड़वाहट किसी रोग के शमनार्थ पीगई दवाई की कड़वाहट के समान ही समझनी चाहिए, ताकि स्वस्थता प्राप्त की जा सके। मगर देखा यह भी गया है कि लोगों ने इसे कड़वाहट के कारण कुदृष्टि से भी देखा है, मगर इसमें दवाई की श्रेष्ठता की तो कोई हानि नही होती है, उल्टा रोगी ही घाटे में रहता है। जिसे दवाई ही अच्छी न लगे, उसे भला स्वस्थता कहां से प्राप्त हो सकती है। महर्षि जी ने इस ग्रन्थ में समस्त सत्यों को उद्‌घाटित किया है। अतः असत्य तो इसके समक्ष तिलमिलायेगा ही। कुछ लोगों ने अपने-अपने सम्प्रदायों की कूपमण्डूकता में ही डूबे होने के कारण इस ग्रंथ की आलोचना भी की है, मगर जिसने भी खुले मस्तिष्क से इसका स्वाध्याय किया, उसके हाथ तो मानो ईश्वर, धर्म, मोक्ष आदि के सभी द्वार खुल गए। इसे खण्डन का पिटारा कहनेवाले वास्तव में इसलिए घबरा जाते हैं, क्योंकि इसके प्रकाश में उनके आडम्बर नष्ट होकर उनकी धर्म के नाम पर खोली गई दुकान बन्द होने से उनकी भौतिक हानि होती है। सत्यार्थप्रकाश में खण्डनात्मक कटुता अपने बच्चे को हृदय से चाहने वाली मा की प्यारी झिड़की के समान है। जिस बच्चे ने इस झिड़की की महत्ता को समझ लिया, उसने अपना जीवन बना लिया और जिसने मा का इस दुलारमयी झिड़की को अनसुना कर दिया या इससे नाराज होकर अलग बैठ गया उसने मानो अपना जीवन बर्बाद कर दिया।

इस लघु लेख में इस अनमोल ग्रन्थ के प्रत्येक समुल्लास पर प्रकाश डालना यहां पर सम्भव नही है, मगर इसकी सार्वभौमिकता और उत्कृष्टता तथा मानवहितैषी पक्ष को स्पष्ट करने के लिए भूमिका पर थोड़ी-सी चर्चा करनी आवश्यक है, ताकि उन लोगों को इसकी विलक्षणता का आभास हो सके। जो इसे देखनेमात्र से ही अपने नाक मुँह सिकोड़ लेते हैं। लोगों को भ्रम है कि इस ग्रन्थ मे महर्षि जी ने पक्षपात से काम लिया है, मगर उनकी भूमिका में ही लिखे शब्दों का जरा अवलोकन करले—"मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नही कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाश किया जाए, किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना ही सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।"

महर्षि जी द्वारा लिखित उपरोक्त शब्द मनन करने योग्य हैं तथा इसी से इस बात का अनुभव किया जासकता है कि "सत्यार्थप्रकाश" का मुख्य उद्देश्य क्या है। वे किसी प्रकार के द्वेषवश, किसी भी मत या सम्प्रदाय की पुष्टि के लिए उचित अनुचित तक देने के पक्ष में नहीं थे। वास्तव में मानवमात्र की भलाई करने के लिए ही उन्होंने इस ग्रन्थ की रचना की है। अलग-अलग बटी हुई मानवता को एक सूत्र में पिरोने का लक्ष्य भी उनके सामने था। वे सही अर्थों में मानवहितैषी थे। भूमिका में ही वे लिखते हैं—"परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है और न ही किसी का मन दुःखाना व किसी की हानि का तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्यजाति की उन्नति और उपकार हो। सत्यासत्य को जानकर मनुष्य सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करे। क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्यजाति की उन्नति का कारण नहीं है।" वे चाहते थे कि यदि प्रत्येक विद्वान् अपने-अपने दायरों को अपनी एषणाओं को मध्यनजर रखते हुए न बढ़ाकर समूची मानवता की उन्नति पर ध्यान दें तो ही प्रत्येक हृदय में मानवता के अंकुर प्रस्फुटित हो सकते हैं। "यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं। वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे में के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्यागकर परस्पर प्रीति से वर्तें-वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।

"महर्षि दयानन्द जी की इस मान्यता को आज भी यदि मानकर प्रयास किया जाए तो समूचे राष्ट्र का ही नहीं, विश्व का कल्याण हो सकता है। महर्षि जी ने अपने जीवन में इस प्रकार के एक सर्वधर्म सम्मेलन के कार्यान्वयन का प्रयास भी किया था, मगर सत्य के प्रदीप के समक्ष आने में सभी ने आनाकानी की और इस प्रकार एक सार्वभौमिक धर्म की स्थापना करने से महर्षि को वंचित कर दिया। वास्तविकता यह है कि यदि इस प्रकार की एकता स्थापित हो जाए तो उन लोगों की दुकाने बन्द हो जाती हैं जिन्होंने अलग-अलग मजहब एवं सम्प्रदाय चलाकर अपने-अपने हलवे मांडे का प्रबन्ध करा रखा है और सैकड़ों-लाखों चेले-चेलियाँ अपनी सेवा के लिए तैयार कर रखी हैं। अपने-अपने राजनैतिक या गद्दीधारी बनने के स्वार्थों ने ही ये दीवारें खड़ी कर रखी हैं। इसलिए महर्षि दयानन्द जैसा कोई मानवहितैषी या टूटी-फूटी मानवता को जोड़नेवाला कोई पैदा होता है तो ये ही अपनी-अपनी गद्दियां सलामत रखनेवाले एषणाओं से आकण्ठ ग्रसित लोग विरोध करना प्रारम्भ कर देते हैं। क्योंकि मानवता की छिन्न भिन्नता और अज्ञानता का बना रहना ही इनके अस्तित्व का आधार है। मगर महर्षि दयानन्द ऐसे विलक्षण महापुरुष थे जो व्यक्ति के विचारों को पूर्णरूप से स्वतन्त्र रखकर उसे विकसित होने का अवसर प्रदान करना अपना लक्ष्य समझते थे। बाबा वाक्य प्रमाणम् की पद्धति उन्हें स्वीकार नहीं थी। उन्हें यह भी विश्वास था कि उनके द्वारा उद्‌घाटित कटु सत्य को पचा पाना हर किसी के बस की [illegible] इसलिए वे लिखते हैं—

"श्रोता व पाठकगण भी प्रथम प्रेम से देखकर इस ग्रन्थ का सत्य-सत्य तात्पर्य जानकर यथेष्ट करें। इसमें यह अभिप्राय रखा गया है कि जो-जो सब मतो में सत्य बातें हैं, वे-वे सभी में अविरुद्ध होने से उनको स्वीकार करके जो-जो मतमतांतरों में मिथ्या बातें हैं, उन-उन का खण्डन किया है।" महर्षि दयानन्द की शिक्षायें देश, काल और क्षेत्रवाद के दायरों से बहुत ऊपर हैं। किसी प्रकार का पक्षपात उन्हें छू तक भी नही गया है—"यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं तथापि जैसे इस देश के मतमतांतरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूं, वैसे ही दूसरे देशस्थ व मतवालों के साथ भी बरतता हूं—मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्द करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर है, क्योंकि जैसे पशु बलवान् होकर निर्बलों को दुःख देते और मार भी डालते हैं। जब मनुष्य शरीर पाकर वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभावयुक्त नहीं, किंतु पशुवत् हैं और जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर हानिमात्र करता रहता है वह माना पशुओं का भी बड़ा भाई है।" महर्षि जी ने इन शब्दों में विश्वबन्धुत्व तथा जीओ और जीने दो का अमर सन्देश निहित है। यह ग्रन्थ आज भी सम्प्रदायवाद, देशी-विदेशी, गोरे-काले, ऊंचे-नीचे, तेरे-मेरे के संकुचित दायरों से हमें बाहर निकालने की क्षमता रखता है।

महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थों और आर्यसमाज संस्था के प्रति लोगों में अनेक प्रकार की भ्रांतियां फैली हुई हैं। लोग दूर-दूर से ही सुनी-सुनाई बातों या पूर्वाग्रहों के कारण दूर भाग जाते हैं, मगर आवश्यकता इस बात की है कि हम मिशनरी की भावना से कार्यक्षेत्र में उतरें। हमें अपने व्यक्तिगत कार्यों से भी बढ़कर आर्यसमाज के कार्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए। मगर जिस बात की सबसे बड़ी

(शेष पृष्ठ ५ पर)

क्या शराबबन्दी का सपना पूरा होगा ?

शराबबन्दी : प्रशासन : समाज और हम

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे—

"यदि मुझे एक घण्टे के लिए भारत का डिक्टेटर बना दिया जाए तो मेरा पहला काम यह होगा कि शराब की दुकानों को बिना मुआवजा दिए बन्द करा दिया जाएगा और कारखानों के मालिकों को अपने मजदूरों के लिए मनुष्योचित परिस्थितियों का निर्माण करने तथा उनके हित में ऐसे उपहारगृह और मनोरंजनगृह खोलने के लिए मजबूर किया जाएगा, जहां मजदूरों को ताजगी देनेवाले निर्दोष पेय और उतने ही निर्दोष मनोरंजन प्राप्त हो सके।"

संविधान के अनुच्छेद ३७ के अनुसार "भाग ४ में दिये गए उपबन्ध किसी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय न होंगे, किन्तु जो भी इनमें दिये गए तत्त्व देश के शासन में मूलभूत हैं और विधि बनाने में इन तत्त्वों का प्रयोग करना राज्य का कर्त्तव्य होगा।

वास्तव में भाग ४ में दिये गये निदेशक तत्त्व संविधान के प्राण और आत्मा हैं। संविधान के अन्य भाग तो इन तत्त्वों के अनुपालन के लिए प्रक्रिया और कार्यप्रणाली का विवरण हैं।

अनुच्छेद ४७ में आदेश दिया गया है—"राज्य विशेषतया मादक पेयों और स्वास्थ्य के लिए हानिकर औषधियों के औषधीय प्रयोजनों के अतिरिक्त उपयोग का प्रतिबन्ध करने का प्रयास करेगा।"

गांधी जी के उद्गारों और संविधान के अनुच्छेद ४७ में दिये गये निदेश में लेशमात्र भी अस्पष्टता नहीं है। देश के अधिकतर राज्यों के समाजविरोधी और संविधानविरोधी आचरण से जहां गांधी जी के उद्गारों का निरादर किया जारहा है, वहाँ संविधान की अवमानना और उसका तिरस्कार भी किया जारहा है। इस अवस्था में कायदे से तो अनुच्छेद ३५६ को हरकत में आना चाहिए, परन्तु यहां तो आवा का आवा ही बिगड़ा हुआ है। राष्ट्रपति शासन कहां तक लागू करेंगे और यदि करें भी तो केन्द्रीय सरकार भी तो इस मामले में निर्दोष नहीं। देखते हैं आंध्रप्रदेश का उच्च न्यायालय कैसा न्याय करता है।

नक्सलवादी-आतंकवादी बनाम सरकारें

शराबबन्दी के मामले में नक्सलवादी और आतंकवादी गांधी जी के उद्गारों का आदर करते दिखाई देते हैं और संविधान के सम्बन्धित निदेशक तत्त्व का अनुपालन दूसरी ओर पग-पग पर गांधी और संविधान का वास्ता देनेवाली सरकारें गांधी जी के उद्गारों और संविधान की मान्यताओं की खिल्ली उडाती दिखाई दे रही है। उनकी ढिठाई तो देखिए। करोड़ों महिलाओं और बालक-बालिकाओं को नारकीय जीवन में धकेल कर जो राजस्व बटोरते हैं, उसके अभाव में उनके अनुसार न विकास सम्भव है और न सरकारें ही चल सकती हैं। उनको तो इस बात का अफसोस है कि गुजरात की सरकार क्यों चल रही है और वहां विकास अधिकतर राज्यों से अधिक क्यों हो रहा है। ९वें वित्त आयोग ने तो शराब बिकवाकर राजस्व न बटोरने की धृष्टता के लिए गुजरात को सजा देने की धमकी दो थी और भारत सरकार की ओर से मदद में कटौती की बात कही थी।

दोनों की आपस में तुलना करें तो इस मामले में सरकार से घृणा होनी स्वाभाविक है और नक्सलवादियों-आतंकवादियों की प्रतिष्ठा मनों पर अंकित होती है। कुछ भावुक लोग उनका आदर करने लगते हैं और कुछ उनके श्रद्धालु भी बन जाते हैं। जब सरकार करोड़ों लोगों के जीवन से खिलवाड़ करे और संविधान की छीछालेदार करे।

दूसरों को संविधान का वास्ता दे तो लोग या तो तटस्थ हो जाते हैं या प्रतिक्रिया में संविधान के प्रतिकूल आचरण करनेवाले अतिवादियों के साथी बन जाते हैं, बच जाते हैं—कुछ राष्ट्र के लिए समर्पित लोग या झूठी खुशामद करके अपना स्वार्थ साधनेवाले लोग समर्पित तिजोरियां तो नहीं भर सकते, जो बचे उनके उतार-चढाववाले समर्थन से तो देश नहीं चलेगा। जो मुद्दे स्पष्ट हैं और लोगों के हृदयों को छूने वाले तथा जन-जन के कल्याण से जुड़े हुए हैं उनको स्वयमेव या नोटिस में लाये जाने पर बिना आंदोलन के तुरन्त हल करना चाहिए। परन्तु कुछ ऐसा होगया है कि बिना हिंसा के न तो सरकार उनका नोटिस लेती है और न समाचारपत्र प्रसार माध्यम। फलत: आंदोलन और हिंसा को दावत देना और फिर उनके दबाव में अनुचित मांगें मानना और सौदे करना, यही तो आज हो रहा है।

इस मामले में नक्सलवादियों और आतंकवादियों का उद्देश्य तो ठीक है, चाहे साधन गांधी जी की मान्यताओं के अनुकूल न हों। परन्तु शराब के प्रसार के लिए सरकारों द्वारा अपनाये जारहे सभी घृणित हथकण्डे कोई और रास्ता ही नहीं छोडते। इससे देश को उबारने के लिए, शराब के लिए घृणा पैदा करके शराब छुडवानी होगी। यह गांधी जी का रास्ता है तथा पिकेटिंग करके शराब की दुकानें भी बन्द करवानी होंगी। परन्तु यदि सरकारें एक ठेका बन्द करके थोडी दूरी पर फिर ठेका खोल दे और घर-घर में शराब ठेकेदारों तथा फौजी अवकाश प्राप्त जवानों से भिजवाने से बाज न आए तो ठेके बन्द करने के लिए नक्सलियों का रास्ता अपनाना होगा। क्या यह एक विडम्बना नही कि संविधान की मान्यताओं और गांधी जी के मन्तव्यों की रक्षा के लिए नक्सलियों का रास्ता ही बना रहे? (युगवार्ता)

आर्यवन में योग-शिविर

(२६ मार्च से ४ अप्रैल, ९२ तक)

श्री स्वामी सत्यपति जी महाराज की अध्यक्षता में अष्टांग योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जारहा है। क्रियात्मक रूप से योग साधना सीखने में रुचि रखनेवाले स्त्री-पुरुष अपनी योग्यता, व्यवसाय आदि के विवरण सहित शीघ्र आवेदन करें।

शिविरार्थी की अवस्था १५ वर्ष से अधिक हो, ८वीं कक्षा की योग्यता हो, अतिवृद्ध अथवा रोगी न हो, धूम्रपान आदि व्यसनों से रहित हो। शिविर शुल्क २०० रु० होगा। ५ अप्रैल को उत्सव मनाया जायेगा।

सम्पर्क करें :
आचार्य, दर्शन योग महाविद्यालय,
आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर
जि० साबर कांठा (गुजरात)-३८३३०७

ऋषि-बोधोत्सव

—प्रा० भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर)

आर्यसमाज शिवरात्रि को ऋषि-बोधोत्सव के रूप में मनाता है। इस पर एक स्वाभाविक प्रश्न उभरता है कि शिव शब्द का जब सीधा-सा अर्थ है-कल्याण सुख और रात्रि का रात, तो पुन: जिज्ञासा उभरती है कि प्रचलित परम्परा से यहां क्या विशेष अभिप्राय है ? इस शब्दार्थ का क्या कोई परस्पर तालमेल है ? शिवरात्रि इस समस्तपद से एक और प्रश्नमाला यह भी पनपती है कि यहां इन दोनों समस्तों का क्या तात्पर्य है तथा यह पर्व व्रत रात को ही क्यों आयोजित किया जाता है? जबकि बहुत सारे भारतीयों के घरों तथा दुकानों में शिव का एक अनोखा-सा चित्र भी देखने में आता है, जिसमें शिव की जटाओं से गंगा प्रवाहित हो रही है, मस्तिष्क के ऊपरी भाग पर चन्द्रमा चमक रहा है तथा नीचे एक तीसरी आंख भी है इत्यादि।

जब शिवपुराण चर्चित इन भावनाओं के साथ अनेक वर्षों से शिवरात्रि मनाई जारही थी तो १८३८ को गुजरात प्रांत के टंकारा ग्राम में एक ऐतिहासिक घटना घटी। घटना में उलझे बालक मूलशंकर ने अपने पिता जी को जगाकर मनमें उभरे प्रश्न पूछे, पर उत्तरों से मूल के मन को सन्तोष न हुआ। हां, यह सुनते ही कि 'सच्चे शिव तो यहां नहीं हैं।' मूल ने मन ही मनमें सच्चे शिव के दर्शन को प्रतिज्ञा की और पिता जी से अनुमति लेकर मूल मन्दिर से घर लौट आया। व्रत भग और पूजा से विरक्ति के कारण पिता का रोष मूल के प्रति धीरे-धीरे जहां कुछ शांत हुआ, वहां पूर्ववत् मूल की पढाई चलती रही।

मूलशंकर का जीवन जब मैदानी नदी की तरह चल रहा था तो एक दिन सूचना आई कि मूल को बहिन की हैजे से मौत होगई है। मूल के जीवन में मौत की यह पहली घटना थी। अत: मूल को समझ में कुछ न आया। वह केवल परिवार की विह्वलता को देखता रह गया। कुछ वर्ष बाद जब मूल के प्रिय चाचा की मृत्यु हुई तो मूल को पता चला कि मृत्यु अपनों को छीनकर उनकी छत्रछाया से किस प्रकार वंचित कर देती है। मृत्यु से उभरी अनेक जिज्ञासाओं ने मूल की वैराग्य भावनाओं को खूब बढ़ाया। अत: मृत्यु विजय का विचार उभरा।

इस प्रकार सच्चे शिवदर्शन की पहली गांठ के साथ दूसरी गांठ भी आकर जुड़ गई। इन दोनों गाठों को खोलने की उधेड़-बुन के दिनों में मूल को जो भी विद्वान्, साधु मिला, मूल ने उसी के सामने अपनी जिज्ञासा रखी। सभी से एक-सा उत्तर मिला कि यह सब योग से ही साधा जासकता है। इन्हीं दिनों मूल ने माता-पिता से विशेष अध्ययन के लिए काशी जाने की अनुमति मांगी, पर समीपवर्ती पाठशाला की ही स्वीकृति मिली। वहां पाठ्यपुस्तकों को पढते हुए समय-समय पर मूल ने अपनी विशेष जिज्ञासाय भी हल करनी चाही और योग सीखने की इच्छा प्रकट की। पढानेवाले ने मूल के पिता को ही तब सावधान कर दिया। अत: मूल को घर वापस बुलाकर उसके विवाह की तैयारियां शुरु करदी गई।

इस नये बन्धन को भांपकर मूल एक दिन सायंकाल योग सिखाने वाले गुरु की खोज में निकल पड़ा। इस खोज के लिए वह मूल से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर लगातार १४ वर्ष भटकता रहा। इसके लिए मैदानों, पहाड़ों, जंगलों, बर्फीली नदियों की खाक छानी और अन्त में मथुरा में ब्रह्मर्षि विरजानन्द दण्डी गुरु के रूप में मिले, जिनसे लगभग तीन वर्ष विशेष रूप से अष्टाध्यायी और महाभाष्य का अध्ययन किया।

एक दिन दयानन्द अपने गुरु से विदा लेने के लिए पहुंचे तो गुरु ने पूर्व प्रतिज्ञाओं को परोक्ष में करके जीवन का कांटा ही बदल दिया। गुरु आज्ञा के अनुरूप आर्षज्ञान का दीप जलाते हुए ऋषि दयानन्द सरस्वती एक नगर से दूसरे नगर पहुंचे। इस ज्ञानदीप को सदा प्रज्व-लित रखने के लिये महर्षि दयानन्द ने १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज ने अपने कर्त्तव्य को पहचाना, अपनाया और फिर महर्षि के प्रति अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने के लिये शिवरात्रि को ऋषि-बोधोत्सव का रूप दिया। क्योंकि इसी दिन मूल के मनमें विचार-क्रांति का बीज अंकुरित हुआ था।

ऋषिजीवन की सारी कथा सामने आने पर एक प्रश्नमाला और भी उभरती है कि ऋषि-बोधोत्सव का अभिप्राय क्या है ? क्या अर्जुन ने योगेश्वर श्रीकृष्ण से गीताज्ञान प्राप्त करने पर कहा था—'नष्टो मोह: स्मृतिर्लब्धा' (१८, ७३) क्या वैसी ही यहां भी बात है। हां, ऐसी स्थिति स्वीकार करने पर पुन: जिज्ञासा उभरती है कि वह ऋषि का बोध कौन-सा है, जिसका उत्सव (खुशी) आर्यसमाज आयोजित कर रहा है। ऋषि का वह बोध क्या मेरे आपके पास अब यहां है या वह ऋषि के साथ ही चला गया है। यदि वह बोध अब भी है तो हमारे अन्दर अन्यों की अपेक्षा क्या कोई अनोखापन है ? जैसे किसी वस्तु का प्राप्तकर्त्ता या प्रकाशवाला सन्तोष, विश्वास अनुभव करता है, जिससे स्पष्ट होता है कि कोई विशेष बात है, क्या वैसी खुशी हमारे अन्दर इस समय है ?

या केवल दूसरों की तरह हम भी आज यहां घटना को याद करने या गाने के लिये ही आये हैं। हां, यदि ऋषिबोध में कोई खूबी है तो उस पर एक नई प्रश्नपंक्ति यह उभरती है कि आज की परिस्थितियों में उस बोध का क्या उपयोग है ? अर्थात् आज के हमारे जीवन में यह बोध कहां, कितना सहायक है। हां, यदि उस बोध ने केवल अपने समय पर कुछ अनोखापन दर्शाया था तो फिर वह ऋषिबोध जार्ज स्टीफेंसन जेम्सवाल के इंजन की तरह केवल पुरातत्व की वस्तु ही होगा और तब वह बोध स्मरणीय, अभिनन्दनीय तो कहा जासकता है, अनुकरणीय नहीं।

आर्यसमाज यदि ऋषि दयानन्द के तत्वबोध को सूर्य आदिवत् सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वजनीन मानता है तब तो यह खुले दिल से कहा जासकता है—

'जिसका दिल चाहे—वह आजमाये'

हां, यहां कुछ यह भी पूछ सकते हैं कि ऋषि दयानन्द ने क्या कोई अपूर्व देन दी है, जिसको इतना महत्त्व दिया जारहा है। जबकि हम यह देखते हैं कि महर्षि और आर्यसमाज दूसरों की तरह ही वेद, उप-निषद्, स्मृति, रामायण, महाभारत तथा यज्ञ, भक्ति की बात करते हैं। ऐसी स्पष्ट स्थिति होने पर यह बताना और भी आवश्यक हो जाता है कि सारे भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द का अपना योगदान क्या है ? आइये ! पूर्व उभारे गये प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए पहले अन्तिम बात से ही चर्चा आरम्भ करते हैं।

(क्रमश:)

सर्वहितकारी के स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म 4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	—दयानन्दमठ, रोहतक
2. प्रकाशन अवधि	—साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
4. प्रकाशक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
5. सम्पादक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझीदार या हिस्सेदार हों।	—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं में स्वामी दयानन्द जन्मदिवस का अवकाश घोषित

नई दिल्ली, बुधवार दिनांक १२-२-९२ को परिषद् के तत्वाधान में स्वामी दयानन्द जन्मदिवस समारोह स्पीकर हाल, विट्ठल भाई पटेल भवन नई दिल्ली में प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल की अध्यक्षता में मनाया गया। इस उत्सव पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान श्री दरबारीलाल जी ने घोषणा की कि अगले वर्ष से महर्षि दयानन्द जन्मदिवस पर भारत वर्ष की समस्त डी० ए० वी० संस्थाओं में सार्वजनिक अवकाश रहेगा। इस समारोह में डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान श्री जी० पी० चोपड़ा एवं जनरल सैक्रेटरी श्री एम० एल० खन्ना, जो कि उस समय उपस्थित थे ने भी इसकी सम्पुष्टि की और मैनेजिंग कमेटी से इसको पारित करवाने का आश्वासन दिया।

—अजय सहगल

आर्यसमाज भीमनगर गुडगांव का चुनाव

प्रधान—जसवन्तराय गुगनानी, उपप्रधान—धर्मपाल पुलियाणी, मन्त्री—अमीरचन्द श्रीधर, उपमन्त्री—उमेशकपूर, कोषाध्यक्ष—हीरानन्द आर्य, लेखापरीक्षक—सत्यपाल आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का चुनाव

प्रधान—स्वामी सुमेधानन्द, उपप्रधान—रोशनलाल बहल, प० विद्याधर, श्रीमती चांदरानी शर्मा, मन्त्री—श्रीकृष्णचन्द्र आर्य, वेदप्रचार अधिष्ठाता एवं संयुक्तमन्त्री—भगवानदेव 'चैतन्य', कोषाध्यक्ष-अरुणेश सूद, लेखानिरीक्षक—करतारनाथ गण्डोतरा।

(पृष्ठ १ का शेष)

आवश्यकता है उसकी ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। वह यह है कि हमें महर्षि प्रणीत ग्रन्थों का बड़ी ही बारीकी के साथ अध्ययन, चिन्तन और मनन करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हम किसी भी अन्य व्यक्ति को प्रभावित करने की क्षमता नहीं रख सकते हैं। आजकल के युग में बहुत ही तार्किक होने की आवश्यकता है। बड़े धैर्य और लगन के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। अज्ञानता को भी हमें एक रोग की दृष्टि से देखना चाहिए और ऐसे रोगी को बड़े ही साहस और लगन के साथ ठीक करने की आवश्यकता है। आरम्भ में भले ही कोई हमारी बातों का बुरा भी मान जायेगा, मगर जब उसे दयानन्द के ज्ञान की आंख मिल जायेगी तो वही हमें लाख-लाख धन्यवाद भी देगा। हमें निःस्वार्थभाव से निरन्तर कर्मपथ पर आरूढ़ रहना है और सत्यार्थप्रकाश के प्रकाश में कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सपना साकार करना है।

पद्मश्री आचार्या सुभाषिणी जी का सार्वजनिक अभिनन्दन

अभिनन्दन समिति की कार्यसमिति की बैठक चौ० शेरसिंह कुलपति की अध्यक्षता में दिनांक २३-२-९२ को कन्या गुरुकुल खानपुर में हुई। बैठक में समिति के उपाध्यक्ष श्री हृदयराम मलिक प्रधान, महासभा उपाध्यक्ष डा० शकुन्तला प्रिंसीपल, उपाध्यक्ष बहिन साहिब-कौर, स्नातिका मण्डल की अध्यक्षा बहिन गार्गी देवी, उपाध्यक्ष बाबू रघुवीरसिंह, संयोजक प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार व राष्ट्रीय पंचायत के अध्यक्ष चौ० राजमल हुड्डा आदि ने अपने विचार प्रकट किये। विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मत निर्णय के अनुसार पद्मश्री आचार्या सुभाषिणी का सार्वजनिक अभिनन्दन दिनांक २२-३-९२ को रोहतक स्थित 'सर छोटूराम पार्क' में पूर्व दोपहर दस बजे होगा। यह निर्णय भी लिया गया कि इस अवसर पर "अभिनन्दन ग्रन्थ" भी प्रकाशित किया जावे तथा कुछ प्रतिष्ठित संन्यासियों, समाजसेवी महिलाओं, गुरुकुल की आचार्यों को भी सम्मानित किया जावे।

इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष चौ० शेरसिंह मलिक की 'आत्मकथा' का भी विमोचन किया जावेगा। अभिनन्दन के लिए अथक परिश्रम करनेवाली डा० शकुन्तला, बहिन साहबकौर तथा कु. ज्ञानवती को कुलपति जी ने आशीर्वाद दिया। इस बैठक में खानपुर गांव के भूतपूर्व दो सरपंच श्री होशियारसिंह व श्री सुरजाराम भी समय निकालकर पधारे।

—जयसिंह वकील
गोहाना, उपाध्यक्ष अभिनन्दन समिति

कन्या गुरुकुल खानपुर का उत्सव सम्पन्न

कन्या गुरुकुल खानपुरकलां जि० सोनीपत का वार्षिक उत्सव बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण में २२-२३ फरवरी को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल की बालिकाओं ने भाषण व गीत प्रस्तुत किये। कु० निर्मल व कु० समता को क्रमशः प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार मन्त्री आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार तथा श्री सुखदेव शास्त्री ने १०२ रु० तथा ५० रु० पुरस्कार के रूप में दिये। उत्सव में हरयाणा सरकार के मन्त्री प्रो० छत्तरपालसिंह भी पधारे। मुख्य वक्ताओं में श्री सुनील शास्त्री सुपुत्र स्व० लालबहादुर शास्त्री, श्री कपिलदेव शास्त्री भू०पू० सांसद, प्रो. प्रकाशवीर विद्यालंकर, श्री राजमल अध्यक्ष राष्ट्रीय पंचायत, चौ० कुलवीरसिंह मलिक भू०पू० मन्त्री हरयाणा सरकार, सभा के भजनोपदेशक प० चिरन्जीलाल जी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने संस्था, राष्ट्र तथा अन्य सामयिक विषयों पर अपने विचार प्रकट किये। श्री सुनील शास्त्री ने बताया कि इस संस्था का विशाल रूप बहिन सुभाषिणी की देन है और वास्तविक रूप में हम सबके लिए श्रद्धा को पात्र हैं। मैं आज इस संस्था में आकर अपने आपको पवित्र हुआ मानता हूं। बाद में बातचीत के दौरान श्री सुनील शास्त्री ने बहिन सुभाषिणी का सार्वजनिक अभिनन्दन किये जाने के प्रति अपनी शुभकामनायें प्रकट कीं और आयोजकों की प्रशंसा की।

—योगेशचन्द्र मलिक, खानपुरकलां

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर का ११२वां वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शिवरात्रि के पावन-पर्व पर २८ फरवरी से २ मार्च, ९२ तक समारोहपूर्वक आर्यसमाज भवन व श्रद्धानन्द पार्क में मनाया जाना निश्चित हुआ है। शुक्रवार २८ फरवरी, ९२ को सायं-काल ४ बजे से शोभायात्रा (नगर कीर्तन) प्रारम्भ होगी। उत्सव में आर्यजगत् के सन्यासी, महोपदेशक तथा भजनोपदेशक आदि पधार रहे हैं। सभी सादर आमन्त्रित है।

—डा० विजयपाल शास्त्री, मन्त्री

शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन का कार्यक्रम

हरयाणा सरकार वर्ष १९९२-९३ के लिए शराब के ठेकों की नीलामी ३ मार्च से २१ मार्च तक कर रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने गतवर्षों की भांति इस अवसर पर सरकार की आबकारी नीति (शराब के प्रचार तथा विस्तार) का विरोध करने के लिए निम्न-लिखित कार्यक्रम बनाया गया है। अतः हरयाणा प्रदेश के सभी धार्मिक सामाजिक तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि हरयाणा में शराब पर पूर्णपाबन्दी लगवाने की मांग करने के लिए अपने जिलों के मुख्यालय पर सभी के सहयोग से भारी संख्या में पहुंचकर प्रदर्शन करें।

१	करनाल	३ मार्च, १९९२ मंगवार
२	जींद	४ ,, ,, बुधवार
३	हिसार	५ ,, ,, वीरवार
४	भिवानी	६ ,, ,, शुक्रवार
५	सिरसा	७ ,, ,, शनिवार
६	जगाधरी	९ ,, ,, सोमवार
७	अम्बाला	१० ,, ,, मंगलवार
८	कैथल	११ ,, ,, बुधवार
९	कुरुक्षेत्र	१२ ,, ,, वीरवार
१०	पानीपत	१३ ,, ,, शुक्रवार
११	सोनीपत	१४ ,, ,, शनिवार
१२	रोहतक	१६ ,, ,, सोमवार
१३	फरीदाबाद	१७ ,, ,, मंगलवार
१४	नारनौल	१८ ,, ,, बुधवार
१५	रिवाड़ी	२० ,, ,, शुक्रवार
१६	गुड़गांव	२१ ,, ,, शनिवार

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद के वार्षिकोत्सव पर दिनांक १ मार्च से ८ मार्च, ९२ तक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जारहा है, जिसमें १६ संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

आर्यसमाज सफीदों में तदर्थ समिति का गठन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने सभा से सम्बन्धित आर्यसमाज सफीदों जि० जींद की तदर्थ समिति का गठन निम्न प्रकार किया है—

संरक्षक—प्रि० मंगलदेव लाम्बा, प्रधान—श्री जयभगवान आर्य, मन्त्री/संयोजक—श्री ओमप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री बलदेवसिंह आर्य, सदस्य—श्री ओमप्रकाश चौहान, श्री जयदेवसिंह वकील, श्री राजेन्द्रप्रसाद।

—सभामन्त्री

शोक समाचार

मोहीनगर क्षेत्र के प्रसिद्ध समाज-सेवक आर्यसमाज के नेता श्री अमरजलाल बजाज का ७६ वर्ष की आयु में ७ फरवरी को निधन हो गया। वे आर्यसमाज के प्रचार-कार्य में बहुत सहयोग देते थे। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

—सभा उपमन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा—

नजला-जुकाम

—डा० सोमवीर उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे —

❀ तुलसी के पत्ते १०० ग्राम, केशर २ ग्राम, सोंठ, पीपल व काली मिर्च प्रत्येक १० ग्राम। सबको भली प्रकार कूटकर छान लेने के बाद में केशर मिलावें। इसमें बबूल की छाल का काढ़ा तथा अद्रक का रस डालकर घोटें और मटर के बराबर गोली बनायें। दिन में ३-४ बार एक गोली गर्म पानी से सेवन करायें। यह नजला-जुकाम की सस्ती व अच्छी दवा है।

❀ छोटी इलायची, तेजपत्र मुनक्का, पीपल सब १०-१० ग्राम लेवें, इनको कूटकर रखें। इसमें छुआरा, मिश्री और मुलहटी भी बराबर मिला लेवें। थोड़ा शहद या अद्रक का रस मिलाकर गोली बना लेवें। २ गोली दिन में ३-४ बार खाने से जुकाम में लाभ होगा।

❀ कफज जुकाम में काकड़ासींगी, पुष्कर मूल, जायफल सबको बराबर मात्रा में लेकर कूट छानकर रखें। १ ग्राम दवाई शहद के साथ देने से २-३ दिन में जुकाम ठीक हो जायेगा।

❀ पित्तज नजला-जुकाम में—सफेद चन्दन, सुगन्धवाला, पित्त पापड़ा नेत्रवला, नागरमोथा, खसखस, सोंठ, चिरायता प्रत्येक ५ ग्राम, पानी ४०० ग्राम काढ़ा बनाय। चौथाई रहने पर छानकर दिन में २-३ बार पिलाने से पित्त से होनेवाला नजला-जुकाम ठीक हो जाता है।

❀ तुलसी के पत्ते १०, काली मिर्च ८ दाने, सोंठ १ ग्राम, दारचीनी १ ग्राम। इनको चाय की तरह उबालकर मीठा व दूध डाल। गर्म-गर्म पीने से जुकाम ठीक होता है।

❀ केवल तुलसी के पत्तों की चाय बनाकर पीने से भी लाभ होता है।

❀ चित्रक हरितकी अवलेह—१० ग्राम प्रातः साय गर्म जल या दूध से लेने से पुराने से पुराना जुकाम भी ठीक होता है।

❀ सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, तालीसपत्र, जीरा सफेद, चित्रक, अम्लवेतस, चव्य प्रत्येक १० ग्राम, बड़ी इलायची, तेजपत्र, दारचीनी प्रत्येक ३ ग्राम। इन सबको भली प्रकार कूटकर छान लेवें। इसमें १०० ग्राम साफ पुराना गुड़ मिलाकर अच्छी तरह कूटलें, ताकि दवाई का चूर्ण गुड़ में अच्छी तरह मिल जावे। इसकी मटर के बराबर गोली बनाकर रखे। दिन में ४-८ बार गोली चूसने को दे या गर्म पानी के साथ खिलादे। इसका नाम व्योषादिवटी है। यह गोली सभी प्रकार के नजले, जुकाम, खांसी व गले की खराबी के लिए उत्तम औषध है।

❀ बिगड़े हुए जुकाम में च्यवनप्राश १०-१० ग्राम प्रातः सायं दूध के साथ लेने से आराम होता है।

❀ किशमिश, सोंठ, पीपल, दारचीनी प्रत्येक १ ग्राम लेकर ४०० ग्राम पानी में उबालें। १०० ग्राम शेष रहने पर १ चम्मच गाय का शुद्ध घी डालकर थोड़ा उबालें। बाद में उतारकर छानकर शहद या चीनी मिलाकर थोड़ा गर्म-गर्म पिलाने से जुकाम, खांसी, गले की खुश्की व खराहट दूर होती है।

❀ सुहागाखील—गोंद की भस्म, फिटकड़ी, भस्म तीनों २-२ रत्ती लेकर शहद के साथ दिन में २ बार खाने से जुकाम, खांसी ठीक होता है।

❀ लक्ष्मी विलास रस—१ गोली, त्रिभुवनकीर्ति रस १ गोली, गोदन्ती भस्म १२५ मि०ग्राम तीनों को अद्रक के रस में शहद मिलाकर चाटने को दें। सभी प्रकार के नजला-जुकाम के लिए बहुत उपयोगी दवा है। जुकाम अवश्य ही ठीक होगा।

❀ अद्रक का रस व शहद मिलाकर दिन में २ बार चाटने से जुकाम ठीक होता है।

❀ रात को सब कामों से निवृत्त होकर १०-१५ ग्राम बूरा में ७ काली मिर्च मिलाकर रोगी को खिलावें। सुबह तक ठण्डा पानी न पीवें तथा हवा में भी न निकलें। सुबह तक जुकाम जरूर ठीक हो जायेगा।

❀ हमें चाहिए कि नजला-जुकाम होते ही सावधानी बरतें, ताकि यह बढ़कर भयंकर रोग का रूप धारण न करे।

बोध दिवस के उपलक्ष्य में—

महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा-सुमन

—वेदमित्र हापुड़वाले, मन्त्री वैदिक प्रचारमण्डल अम्बाला छावनी

सभी आर्य भाई-बहन प्रत्येक वर्ष ऋषिबोध-पर्व मनाते हैं। इस बार भी २ मार्च, ९२ को हम सब ऋषि-बोधोत्सव मनायेंगे। इस दिन हमें आत्मनिरीक्षण करके अपनी बुराइयों को दूर करने का संकल्प लेना चाहिए तथा ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों को समझकर अपना और आर्यसमाज का विकास और हित करना चाहिए। इस प्रकार के पर्व मनाने का यही प्रयोजन होता है उसका यही सन्देश होता है। हमें चाहिए कि इस दिन हम इन बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें—

१. क्या हम सत्य से प्रेम करते हैं और असत्य का परित्याग करते हैं?

२. मानवसमाज (आर्यसमाज) की निष्काम सेवा करते हैं?

३. विश्वबन्धुत्व की भावना हमारे अन्दर है?

४. क्या हम वैदिक सिद्धांतों का पालन करते हैं?

५. क्या हम आपसी प्रेमभाव के साथ संगठन को गति देते हैं?

६. प्रभु-भक्ति एवं उसकी आज्ञापालन हमारे जीवन का लक्ष्य है?

क्योंकि ऋषि दयानन्द मानवजाति को अन्धविश्वास से मुक्त करके मूर्तिपूजा छुड़ाने, धर्म के नाम पर होनेवाले अधर्म का बहिष्कार कराने, सामाजिक बुराइयों को दूर करने, वैदिकसमाज के निर्माण हेतु वे क्षेत्र में उतरे। उनके अमूल्य उपकारों को समाज कभी भी भूल नहीं सकेगा।

महर्षि ने अकेले ही बुराई एवं असत्य से युद्ध किया और विजयी हुए। उनकी शक्ति अखण्ड ब्रह्मचर्य, तप, त्याग, बलिदान और वेद-शास्त्रों के विशाल ज्ञान में निहित थी।

मानवजाति के कल्याण की भावना तो उनके हृदय में थी तथा थोड़े जीवनकाल में जो देश एवं समाज के लिए वह कार्य कर गये, नये युग का संचार किया, उसे चमत्कार कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। ऋषिवर ने जो मानवजाति के उद्धार के बीज बोये थे, उनके सुन्दर फल सामने आये। जिससे हमारा भारत आजाद हुआ, देश में शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ, सामाजिक बुराइयां दूर हुई, जिससे उनका नाम संसार के इतिहास में मानवसमाज और भारत के उद्धारक जगद्‌गुरु के रूप में सदैव प्रकाशमान रहेगा। इसलिए अकबर अली (पूर्व राज्यपाल उत्तरप्रदेश) ने कहा था कि 'आर्यसमाज न होता तो आजादी प्राप्त करना मुश्किल था।" दूसरे स्थान पर मैडम ब्लेवेटस्की लिखते हैं "यह निश्चित है कि शंकराचार्य के पश्चात् दयानन्द से अधिक संस्कृतज्ञ, गम्भीर आध्यात्मिक, आश्चर्यजनकवक्ता और बुराई पर निर्भीक प्रहार करनेवाला भारत को प्राप्त नहीं हुआ।"

महर्षि दयानन्द की भावना भ्रांति एवं पक्षपात से रहित घने आवरण में से निकलकर चमकी, क्या यह कम हर्ष की बात है? श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी जी ने एक स्थान पर इस प्रकार श्रद्धांजलि दी है कि—मैं स्वामी जी की विद्वत्ता और उनके कार्यकलाप को भारत के सौभाग्य का सूचक चिह्न मानता हूं। उनका चित्र चिरकाल तक मेरे नेत्रों के सामने रहकर मेरी आत्मा को बल और मेरे बैठने के कमरे की शोभा प्रदान कर रहा है। स्वामी जी के विषय में इससे अधिक लिखने की शक्ति इस समय मेरे जराजीर्ण शरीर में नहीं है।

अन्त में मैं सभी आर्यबन्धुओं से नम्र-निवेदन करता हूं कि शिवरात्रि पर जिस प्रकार चूहे की घटना से बोध पाकर मूलशंकर से दयानन्द बन गये, हमें भी बोध प्राप्त करने की आवश्यकता है। हमारे शिथिल हो जाने पर अन्य विधर्मी सिर उठा रहे हैं। आर्यो जागो! अब भी समय है। स्वयं क्रांतिकारी, तेजस्वी बनकर अधर्म को ध्वंस करदो। स्वयं सच्चे आर्य बनकर (हिंदुओं) को आर्य बनाओ। अपना तन-मन-धन लगाकर वैदिक क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित करो, यह शिवरात्रि (बोधपर्व) का सन्देश है।

हरयाणा के तीन धार्मिक नगरों में शराब नहीं बिकेगी

चण्डीगढ़, २० फरवरी। हरयाणा सरकार ने फैसला किया है कि कुरुक्षेत्र सहित तीन धार्मिक नगरों में शराब की बिक्री नहीं हो सकेगी। देसी शराब के ठेकों के साथ खुलनेवाले अहातों पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। उपर्युक्त निर्णय आज प्रात यहां मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल की अध्यक्षता में हुई मन्त्रिमण्डल की बैठक में किया गया। उन्होंने बताया कि शिक्षण संस्थान, बस अड्डे, धार्मिक स्थल, हरिजन तथा श्रमिक बस्ती के आसपास १५० मीटर के क्षेत्र में शराब का ठेका खोलने की अनुमति नहीं दी जायेगी। कुरुक्षेत्र, पेहवा और थानेसर जैसे पवित्र शहरों की पालिका सीमा में शराब की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा मुख्यमन्त्री के इस फैसले का स्वागत करती है तथा मुख्यमन्त्री से मांग करती है कि हरयाणा प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी लागू करे। आज हरयाणा में शराब की नदियां बह रही हैं। शराब के कारण हजारों घर बर्बाद हो रहे हैं।

—डा० सोमवीरसिंह
सभा उपमन्त्री

आर्थिक फार्मूला खोजना असम्भव पालकीवाला

नई दिल्ली १९ फरवरी (पेट्र)। प्रख्यात वकील ननी पालखीवाला ने आज उच्चतम न्यायालय में दावा किया कि आर्थिक आधार पर आरक्षण उपलब्ध कराना एक 'असम्भव' काम है। उन्होंने कहा कि कई दशकों की माथापच्ची के बाद भी सरकार आर्थिक आधारवाला फार्मूला नहीं तैयार कर पाएगी।

विप्र सरकार और नरसिंहराव सरकार की आरक्षणनीतियों को चुनौती देनेवाले मुकदमे के दौरान श्री पालखीवाला ने आज एक नौ सदस्यीय संविधान पीठ के समक्ष अपने तर्क पेश किये। उन्होंने कहा कि जो सरकार आर्थिक आधार पर आरक्षण देने की बात करती है, वह वास्तव में आरक्षण के मुद्दे को ही डुबोना चाहती है, क्योंकि यह काम हकीकत में किया ही नहीं जासकता। उन्होंने कहा, सिर्फ वही सरकार इस तरह से आरक्षण देने पर राजी हो सकती है जो सत्ता में बने रहने के स्वार्थवश मुद्दे को ही अन्धेरे में ढकेलना चाहती है।'

उन्होंने कहा कि जब भी कोई आर्थिक आधार की बात करता है तब, 'ऐसे सवाल जहन पर होने लगते हैं, जिनका जवाब इन्सानी दिमाग नहीं दे सकता।'

श्री पालकीवाला ने आशा व्यक्त की कि सिर्फ उच्चतम न्यायालय ही देश की ८९ करोड़ की आबादी के लिए आर्थिक फार्मूला खोजने के सवाल पर एक निर्वैयक्तिक और निरपेक्ष निर्णय ले सकता है। उन्होंने कहा, 'अब अदालत ही इस मुद्दे पर आखिरी फैसला सुनाये कि देश की एकता बरकरार रहे। अगर समय रहते इस समस्या को नहीं सुलझाया गया तो आगे आकर इस 'चतुर निष्क्रियता' से भारी तकलीफ उठानी पड़ेगी।'

मण्डल रिपोर्ट गलत :

श्री पालकीवाला ने मण्डल आयोग की रिपोर्ट को ही संविधान के बुनियादी ढांचे के विरुद्ध बताया और कहा कि इसमें हमारी जातीय व्यवस्था के कैंसर को नया जीवन मिल जाएगा। उन्होंने कहा कि इस रिपोर्ट को लागू करने से देश में टूटन का भी खतरा रहेगा। इस रिपोर्ट से देश अगले और पिछड़ेवर्गों में बंटेगा और पिछड़ापन एक निहित स्वार्थ बन जाएगा।

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, 'अगर आरक्षण की आपकी यह टूटी-फूटी थ्योरी सही है तो इसे सशस्त्र सेनाओं पर लागू करके दिखाइए। आपकी सरकार का [illegible] नहीं रहेगा।'

बहुचर्चित वकील ने आगे कहा कि मण्डल आयोग से सार्वजनिक सेवाओं में आरक्षण की वांछनीयता पर विचार करने को कहा गया था, किन्तु उसने इसकी उपेक्षा की, जबकि आयोग के विचारणीय विषयों में यह बहुत महत्त्वपूर्ण था।

आयोग ने इस बात की भी जांच करने की जरूरत नहीं समझी कि विभिन्न राज्यों में आरक्षण लागू होने से अच्छे किस्म की जगह खराब किस्म के कर्मचारी सरकारी सेवा में आये हैं या नहीं और कर्मचारियों के मनोबल में गिरावट तथा विशेष रूप से पुलिस बल में असन्तोष पैदा हुआ है या नहीं।

उन्होंने कहा कि आयोग ने पिछली जातियों के आरक्षण के लिए सिर्फ जाति को आधार मानकर इस वर्ग के सभी लोगों को प्राथमिकता दे दी है। उन्होंने कहा कि इससे पिछड़ेवर्ग के धनी लोगों को भी आरक्षण मिल जाएगा, जबकि ऊंची जातियों के निर्धन व्यक्ति चाहे वे कितने ही योग्य क्यों न हों, वंचित रह जायेंगे।

उन्होंने कहा कि समाज में सामंजस्य और एकता लाने का पिछले चालीस वर्ष में जो भी प्रयास किया गया है, वह मण्डल आयोग की रिपोर्ट को लागू करने से समाप्त हो जायेगा। मडल आयोग की रिपोर्ट योग्यता को नजरअन्दाज करती है और वह अवसर की समानता के भी विरुद्ध है, अतः यह संविधान के बुनियादी ढांचे के खिलाफ मानी जाएगी।

मण्डल आयोग की सुनवाई करनेवाली पीठ में मुख्य न्यायाधीश एम० एच० कनिया, न्यायाधीश एम० एन० वेंकटचलैया, एस० आर० पंडियन, पी० के० थोमेन, ए० एम० अहमदी, कुलदीपसिंह, पी० बी० सामंत, आर० एम० सहाय तथा बी० पी० जीवनरेड्डी शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि मण्डल आयोग के पास पिछड़ेपन की जांच के लिए जो सूचना उपलब्ध थी, वह अपर्याप्त थी। ऊंची और पिछड़ी जातियों को बांटनेवाली रेखा अस्पष्ट है और वह विभिन्न राज्यों में एक दूसरे से अलग है। आयोग ने इसके लिये १९३१ की जनगणना को आधार माना जो बहुत पुराना पड़ चुका है।

साभार : दैनिक नवभारत

हरयाणा की पंचायतों से निवेदन

हरयाणा प्रदेश की पंचायतों से निवेदन है कि चालू वर्ष में अपने ग्राम से शराब के ठेकों की नीलामी बन्द करवाने के लिये प्रस्ताव पास करके तुरन्त आबकारी कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़ के पते पर भेज देवें।

सभा की मांग पर हरयाणा सरकार ने नई चुनी गई पंचायतों को यह प्रस्ताव भेजने की सुविधा दे दी है। शराब हटेगी तो हरयाणा बचेगा।

आशा है हरयाणा में शराब का कलंक मिटाने के परोपकारी कार्य में नई पंचायतें सहयोग देकर पुण्य की भागी बनेंगी।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ एजि. न० P/RTK-९३ दूरभाष १,६६, ०८, ९३, ०१२

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक १५ ७ मार्च, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

पंजाब समझौता और उस पर अमल—एक विश्लेषण

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

२४ जुलाई, १९८५ के दिन समझौते के विवरण-पत्र पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी और अकालीनेता सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल के हस्ताक्षर हुए। इस विवरण-पत्र को "पंजाब समझौते" के नाम से पुकारा जाता है। इस समझौते में न तो हरयाणा को पक्ष बनाया गया और न ही उससे कोई परामर्श किया गया, परन्तु समझौते की धाराओं ७२, ७४ और ९२ में यह प्रावधान किया गया कि ७२ और ७.४ धाराओं के तहत गठित किये गये आयोगों के फैसलों तथा धारा ९.२ के तहत गठित किये गये पंचाट का फैसला मानने के लिए दोनों पक्ष (पंजाब और हरयाणा) बाध्य होंगे। इन धाराओं के फलस्वरूप पहले जितने भी फैसले क्षेत्रीय तथा नदी-जल विभाजन के सम्बन्ध में किये गये और जिन्हें अकालियों के नेतृत्व में पंजाब ने स्वीकार किया वे सब रद्द माने जायेंगे। हरयाणा से सम्बन्धित मुद्दों पर निर्णय लेते समय सरकार और विरोधीदल यह मानकर चलते हैं कि उसकी अनुमति और स्वीकृति तो जैसे सदा उनकी जेब में ही रहती है और अकालियों को (जो पंजाब के एकमात्र प्रतिनिधि बन चुके हैं) खुश करने के लिये हरयाणा की जनता के हितों की बलि देशहित का वास्ता देकर चढ़ाई जा सकती है। अकालियों का यह विशेष अधिकार मान लिया गया है कि वे चाहे फैसले को स्वीकार करलें, फिर भी जब चाहें उसे नकार सकते हैं और चाहें तो पुनर्विचार के लिये मामले को फिर खोलने के लिये बाध्य कर सकते हैं। वे समझौते के मसौदे के नये अर्थ लगाने और व्याख्या करने के लिये स्वतन्त्र हैं और सरकार तथा विरोधीदल उस सम्बन्ध में उनसे यही नहीं कि सफाई नहीं मांग सकते, बल्कि नये अर्थ और नई व्याख्या के आधार पर नये सिरे से बातचीत करने के लिये बाध्य हैं।

यह सर्वविदित है कि आतंकवादियों और अलगाववादियों ने पंजाब समझौते को तुरन्त ठुकरा दिया था और उस पर हस्ताक्षर करने वाले सन्त लोंगोवाल को मौत के घाट उतार दिया था तथा आगे चलकर बरनाला समेत सभी अकाली गुटों और नेताओं ने समझौते से मुंह फेर लिया था, परन्तु फिर भी माकपा, भाकपा, भाजपा तथा अन्य दलों तथा उनके नेताओं ने भारत सरकार को ही समझौते पर अमल न करने के लिये दोषी ठहराया और आज भी ठहरा रहे हैं। इन नेताओं ने कभी ध्यान से समझौते को शायद पढ़ने का कष्ट भी नहीं किया होगा, परन्तु अकालियों की हां में हां मिलाकर वे अपना पुराना राग अलापे जारहे हैं कि यदि भारत सरकार ने पंजाब समझौते पर अमल कर दिया होता तो आतंकवादियों और अलगाववादियों द्वारा पैदा की गई समस्याओं का हल करने में सहायता मिलती और चुनावों के लिये अनुकूल वातावरण बन जाता। अपने वक्तव्यों में वे तीन बातों पर जोर देते हैं—

१. चण्डीगढ़ तुरन्त पंजाब को हस्तांतरित कर देना चाहिए (उसके बदले में हरयाणा को फाजिल्का, अबोहर का इलाका दिये बिना)।

२. नदियों के पानी के बंटवारे का मामला उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश को सौंप दिया जाये।

३. पंजाबी को हरयाणा की दूसरी राजभाषा बना दिया जाये।

उनके अनुसार ऐसा करने से समझौते की भाषा और भावना पर अमल पूरा हो जायेगा। यदि सरकार उनके कहने के अनुसार तुरन्त अमल करदे तो सरकार की विश्वसनीयता पंजाब और देश की जनता में बहाल हो जायेगी।

समझौते पर किया गया अमल सार्थक तभी हो सकेगा जब समझौते की पृष्ठभूमि और विवरण-पत्र की भाषा को गहराई से समझ लिया जाये। ऐसा करने से यह भी स्पष्ट हो सकेगा कि समझौते के कार्यान्वयन में अड़ंगे कौन से दल और व्यक्ति डाल रहे हैं। सरदार हरकिशनसिंह सुरजीत तथा अन्य नेता जो तीन बिन्दु बार-बार उठा रहे हैं उन पर एक-एक करके विचार करना होगा।

१. पंजाब को चण्डीगढ़ का हस्तांतरण :

पंजाब का पुनर्गठन भाषा के आधार पर हुआ और प्रधानतया हिंदी-भाषा होने के नाते चण्डीगढ़ समेत खरड़ तहसील शाह कमीशन ने हरयाणा को देने की सिफारिश की। हरयाणा के कांग्रेसी विधायकों ने शाह कमीशन की सिफारिशों पर अमल करने का काम प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी पर छोड़ दिया। प्रधानमन्त्री ने चण्डीगढ़ को केन्द्र शासित क्षेत्र बना दिया और पंजाब और हरयाणा की राजधानी भी। हरयाणा को त्याग करने को कहा गया। कुछ समय पश्चात् श्री फेरुमान ने आमरण अनशन कर दिया चण्डीगढ़ पंजाब को देने के लिये, उधर हरयाणा को देने के लिये उदयसिंह मान ने भी अनशन कर दिया। श्री फेरुमान चल बसे और कुछ समय बाद सन्त फतहसिंह ने आत्मदाह की धमकी देकर चण्डीगढ़ की मांग की। पंजाब और हरयाणा दोनों ओर से दिल्ली में विशाल प्रदर्शन हुए। सन्त फतहसिंह ने मेरे पास स० हरकिशनसिंह सुरजीत और स० सोहनसिंह बस्सी को भेजा और पेशकश की कि यदि चण्डीगढ़ पंजाब को देना मानले तो फाजिल्का अबोहर क्षेत्र हरयाणा को दे दिया जायेगा। जब अकालियों को यह पता चला कि प्रधानमन्त्री सन्त फतहसिंह का फार्मूला मानने को तैयार होगई हैं तो स० गुरनामसिंह तत्कालीन मुख्यमन्त्री पंजाब ने प्रधानमन्त्री को पत्र लिखकर सन्त फतहसिंह के फार्मूले से मुकरना चाहा। परन्तु जब प्रधानमन्त्री ने उनसे कहा कि उन्होंने सन्त जी की जान बचाने के लिये उनका फार्मूला मान लिया है फिर भी वे मुकरना चाहते हैं तो वे जानें। तब अकालियों ने फैसला माना और ३० जनवरी १९७० को दीवाली मनाई। ज्ञानी जैलसिंह ने स्थिति का लाभ उठाकर अकालियों और सन्त फतहसिंह पर आरोप लगाया कि उन्होंने और सन्त ने अपनी जान बचाने के लिये सौदा करके पंजाब से धोखा किया।

कुछ समय बाद अकालियों और उनके समर्थकों ने भी फैसले पर मामला टाला और बाद में चण्डीगढ़ के बदले फाजिल्का अबोहर का इलाका हरयाणा को देने से मुकरने लगे। १९७२ में कांग्रेस की सरकार बनी और १९७७ में फिर अकाली सरकार। १९८० में अकाली सरकार अपदस्थ करदी गई और १९८२ में अकालियों ने आंदोलन शुरु कर दिया। २४ जुलाई, १९८५ को राजीव लोंगोवाल समझौता होगया।

समझौते की धारा ७.२ में इन्दिरा गांधी का हवाला देते हुए यह कहा गया कि चण्डीगढ के बदले हरयाणा को दिये जानेवाले हिंदी-भाषी इलाकों की पहचान के लिये एक आयोग का गठन किया जायेगा। यह ध्यान रहे कि श्रीमती इन्दिरा गांधी, सन्त फतहसिंह, राजीव गांधी और सन्त लोंगोवाल सबने सिद्धांतरूप में यह माना कि चण्डीगढ़ हिंदी भाषी होने के नाते हरयाणा को जाना चाहिए, इसलिये यदि वह पंजाब को देना हो तो उसके बदले में हरयाणा को इलाके देने चाहियें। परन्तु तर्क तो अकालियों से निबटने के लिए नहीं चलता, इसलिये श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सन्त फतहसिंह का फार्मूला उन्हें खुश करने के लिये माना और चण्डीगढ़ के बदले हिंदी-भाषी फाजिल्का अबोहर के इलाके देना मान लिया। आज स्थिति यह है कि अकाली और उनके मुख्य सलाहकार श्री हरकिशनसिंह सुरजीत जो सन्त फतहसिंह के सन्देश-वाहक बनकर आये थे उस फैसले से मुकर गये हैं और अब हरयाणा को हिंदी-भाषी फाजिल्का अबोहर दिये बिना ही चण्डीगढ़ पंजाब को दिए जाने की हठ कर रहे हैं। उनकी इस मांग से पंजाब समझौते पर अमल कैसे होता है इसकी जांच करनी होगी।

धारा ७.२ के तहत मैथ्यू कमीशन नियुक्त किया गया, उन हिंदी-भाषी इलाकों की पहचान करने के लिए जो चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को दिये जाने हैं। न्यायमूर्ति मैथ्यू ने सुनवाई के दौरान तथा अपनी रिपोर्ट में चार महत्त्वपूर्ण बातें कही हैं—

१- हिंदी-भाषी इलाकों की पहचान करते समय वे केवल फाजिल्का अबोहर और १०५ गांवों तक ही अपना विचार सीमित रखेंगे, क्योंकि धारा ७.२ में यही संकेत है।

२—अकालियों द्वारा सुझाये गए अन्य गांव और इलाकों पर वे विचार नहीं करेंगे, उन पर विचार करने के लिए धारा ७.४ के तहत बनाये जानेवाला आयोग ही करेगा।

३—फाजिल्का अबोहर के इलाके के गांवों का सर्वेक्षण करने के बाद वे इस नतीजे पर पहुँचे कि १९६१ की जनगणना ही ठीक थी, १९८१ की जनगणना विश्वसनीय नहीं है।

४—जब अकालियों ने मांग की कि केवल कन्दूखेड़ा का सर्वेक्षण कर लिया जाये, यदि वह पंजाबीभाषी हुआ तो फाजिल्का अबोहर के बाकी गांव हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए नहीं होंगे, तब वे हरयाणा को नहीं दिये जा सकते। न्यायमूर्ति मैथ्यू ने उनकी बात अस्वीकार करते हुए कहा था कि उनको इस इलाके के सब गांवों की पहचान करनी है कि वे हिंदी-भाषी कितने हैं, उनका काम पहचान करना है, हरयाणा को देना न देना सरकार का काम है।

न्यायमूर्ति मैथ्यू ने सही कहा था, परन्तु सर्वेक्षण के पश्चात् हिंदी-भाषी इलाकों की पहचान होने पर हरयाणा को देने न देने के मामले में वे क्यों पड़े और उन्होंने कलाबाजी क्यों की यह वही जानें। न्यायमूर्ति मैथ्यू के सामने १२ अगस्त, १९८५ को फिरोजपुर के वकीलों के समक्ष दिए गए सन्त लोंगोवाल के वक्तव्य को भी रख दिया था जिसमें उन्होंने कहा था कि उनके अन्दाजे के मुताबिक अबोहर के चारों ओर के ५५ गांव हरयाणा में शामिल होंगे। उन्होंने ५५ गांव इसलिए कहे थे कि ये गांव १९६१ और १९८१ दोनों ही जनगणनाओं के अनुसार हिंदी-भाषी थे। यदि सर्वेक्षण के पश्चात् जो न्यायमूर्ति मैथ्यू ने करवाया, अन्य गांव भी हिंदी-भाषी प्रमाणित हो जायें तो उनको हरयाणा को देने में सन्त लोंगोवाल कैसे आनाकानी कर सकते थे? वे यह भी जानते थे कि धारा ७.२ के अन्तिम वाक्य के अनुसार धारा ७.२ तथा धारा ७.४ के तहत हरयाणा को दिये जानेवाले गांव अलग-अलग होने चाहियें। यदि कन्दूखेड़ा भी हिंदी-भाषी होता तो सीमासमायोजन के नाते फाजिल्का अबोहर के हिंदी-भाषी गांव ७.४ के तहत ही हरयाणा को मिल जाते। कन्दूखेड़ा पंजाबी-भाषी होने से फाजिल्का अबोहर के इलाके के गांव सीमासमायोजन में हरयाणा को जानेवाले गांवों से अलग हो जाते हैं और इसीलिये चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को दिए जाने चाहियें। यह व्याख्या जब मैंने कुछ समय बाद श्री राजीव गांधी के समक्ष रखी तो वे कायल होगए, परन्तु अकालियों के दबाव के कारण वे न खुलकर कह सके और न हरयाणा में मिलाने का फैसला ही कर सके।

वैंकटरमैय्या आयोग का गठन पहले ही हो चुका था ताकि वह कोई दूसरे इलाके हरयाणा को देने का सुझाव दे सके। जांच करते समय आयोग को ३२ गांव ऐसे मिले जो १९६१ और १९८१ की जनगणनाओं के अनुसार हिंदी-भाषी थे, परन्तु उन्होंने उनके चण्डीगढ़ के बदले में देने की सिफारिश इसलिए नहीं की, क्योंकि वे गांव तो धारा ७.४ के तहत हरयाणा को वैसे ही मिलनेवाले थे। उन्होंने निर्णय किया कि इनसे अलग ७०,००० एकड़ भूमि के गांव दिए जायें, यह जरूरी नहीं कि वे हिंदी-भाषी ही हों।

श्री सुरजीतसिंह बरनाला ने ३२ गांवों को वैंकटरमैय्या ने चण्डीगढ़ के बदले में देने से इन्कार कर दिया था। उनके २५००० एकड़ के गांव मिलाने की बात कही। ७०,००० एकड़ जमीन की पहचान के लिए बनाए जानेवाले आयोग की बात इसी कारण छोड़नी पड़ी, क्योंकि अकाली अपनी जिद् पर अड़े हुए थे।

धारा ७.३ के अनुसार चण्डीगढ़ और उसके बदले में हरयाणा को दिए जानेवाले इलाकों का हस्तांतरण एक साथ होगा। यह स्पष्ट है कि समझौते की भाषा और भावना के अनुसार चण्डीगढ़ पंजाब को तब तक नहीं दिया जासकता, जब तक हरयाणा को उसके बदले में इलाका न दिया जाए।

यह भी उतना ही स्पष्ट है कि अकाली और उनके हिमायती ही समझौते पर अमल न होने के लिए जिम्मेदार हैं। भारत सरकार इस हद तक जिम्मेदार है कि उसने अकालियों को स्वीकार करके खिसकने की आदत को नजर अन्दाज करके हिम्मत से अमल क्यों नहीं किया।

२. नदियों के पानी का बंटवारा:

धारा ९.२ के अनुसार नदियों के पानी में पंजाब और हरयाणा के हिस्से का फैसला करने के लिए उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश की अध्यक्षता में पंचाट का गठन किया जाएगा। पंचाट का फैसला मानने के लिए दोनों पक्ष बाध्य होंगे।

पंचाट का गठन उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश श्री इराडी की अध्यक्षता में होगया। पंचाट ने पंजाब और हरयाणा द्वारा उठाए गए सभी प्रश्नों पर विस्तार से विचार करने के पश्चात् १९८७ में अपना निर्णय दे दिया। पंजाब तो समझौते पर हस्ताक्षर करनेवाला एक पक्ष था, वह तो धारा ९.२ के तहत फैसला मानने के लिए बाध्य था। परन्तु ५ वर्ष बीत जाने पर भी पंजाब ने और अकालियों ने उस पर अमल नहीं होने दिया। अब मांग की जारही है कि पानी के बंटवारे का मामला उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश को सौंप दिया जाए। क्या न्यायमूर्ति इराडी उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश नहीं थे? इस प्रकार से हास्यास्पद होते हुए भी अकालियों के मुख्य सलाहकार स० हरकिशनसिंह सुरजीत और अन्य नेता अपना राग अलापते जारहे हैं। भारत सरकार का यह दोष है कि वह ऐसी बेतुकी मांग को एकदम नामंजूर करके पंचाट को लागू क्यों नहीं कर देती।

धारा ९.३:

इस धारा में साफ लिखा है कि "SYL नहर के निर्माण का काम चलता रहेगा, नहर के निर्माण का काम १५ अगस्त, १९८६ तक पूरा कर दिया जाएगा।"

क्या पंजाब और भारत सरकार वचनबद्ध नहीं थे? क्या कारण है कि जो महारथी पंजाब समझौते पर अमल न किए जाने की शिकायत कठोर से कठोर शब्दों में करते जारहे हैं, वे इस धारा का जिक्र क्यों नहीं करते? क्या यह जिक्र इसलिए नहीं, क्योंकि इसका सम्बन्ध

(शेष पृष्ठ ७ पर)

हजारों लोगों ने शराब न पीने की कसम खाई

लोहारू, २९ फरवरी (हं०स०)। गतदिनो यहां से ३० किलोमीटर दूर स्थित गांव अटेला में दस गांवों की नशाबन्दी पंचायत आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता राज्य के पूर्वमन्त्री श्री हीरानन्द आर्य ने की। इस नशाबन्दी पंचायत में दस गांवों से आये हजारों लोगों ने शराब न पीने की सामूहिक शपथ ली। यह पंचायत श्री हीरानन्द आर्य द्वारा चलाये गए नशाबन्दी अभियान के अन्तर्गत बुलाई गई थी।

नशाबन्दी पंचायत को सम्बोधित करते हुए श्री हीरानन्द आर्य ने कहा कि समाज में फैली निर्धनता, द्वेष एवं भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों की जड़ शराब है। शराब के कारण ही समाज में अशांति व्याप्त है। श्री आर्य ने शराब के अवगुणों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज में शराबरूपी जहर फैलाने में सरकार का महत्वपूर्ण हाथ है, क्योंकि इससे उसे करोड़ों रु० का लाभ होता है।

श्री आर्य ने लोगों को सजग किया कि अपने एवं अपने परिवार व समाज के भविष्य के लिये मेहनत से की गई कमाई शराब के रूप में खराब न करें। उन्होंने लोगों का आह्वान किया कि वे मानव के स्वास्थ्य एवं धन के दुश्मन शराब का सेवन हमेशा के लिये त्याग दें। यहां अपाल मुढाल के पूर्व विधायक श्री बलबीरसिंह ग्रेवाल ने भी लोगों से की।

क्षेत्र में पूर्णनशाबन्दी लागू करने के लिये दस गांवों की उक्त पंचायत ने नशाबन्दी अभियान समिति का गठन किया एवं सर्वसम्मति से श्री दीवानसिंह को इसका अध्यक्ष चुना। प्रत्येक गांव से दो-दो व्यक्ति इस समिति में शामिल किये गये और प्रत्येक गांव में अलग-अलग समितियां इस उद्देश्य के लिए गठित करने का निर्णय लिया गया। इसी बैठक में श्री दीवानसिंह ने उपस्थित हजारों लोगों को शराब न पीने व पिलाने की शपथ दिलाई।

उक्त नशाबन्दी पंचायत ने सर्वसम्मति से एक निर्णय लेते हुए पंचायत में शराब पीकर आये ग्राम पंचायत के एक पंच पर एक हजार रुपये जुर्माना किया। नशाबन्दी अभियान समिति के अनुसार लोगों को समझाकर उन्हें शराब छोड़ने के लिए प्रेरित किया जायेगा, लेकिन फिर भी उनकी आदत में सुधार न हुआ तो जुर्माना आदि करके दण्डित करने की कार्यवाही की जाएगी। उक्त पंचायत में भारी जोश देखते ही बनता था एवं ऐसा लगता था जैसे श्री आर्य का नशाबन्दी अभियान शीघ्र ही एक जन-आंदोलन के रूप में पूरे प्रदेश में फैल जाएगा।

साभार : दैनिक हिन्दुस्तान

कौल में शराबबन्दी अभियान आरम्भ

आर्यसमाज कौल जिला कैथल के अधिकारी दिनांक १२ फरवरी ९२ से डा० ताराचन्द जी आर्य की अध्यक्षता में शराबबन्दी अभियान चला रहे हैं। इसमें गांव के सैकड़ों नवयुवक संघर्ष कर रहे हैं। इस कार्य में श्री महावीरसिंह आर्य मन्त्री, आचार्य बलजीतसिंह, मा० जसबीरसिंह आर्य, मा० रामकुमार आर्य, मनोजकुमार आदि सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। इसी प्रकार गांव पबनावा में श्री चरणसिंह प्रधान आर्यसमाज के नेतृत्व में शराबबन्दी अभियान चल रहा है।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली का रजत-जयन्ती समारोह सम्पन्न

दिल्ली की प्रसिद्ध आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-१ नई दिल्ली का रजत-जयन्ती समारोह १० से २३ फरवरी, ९२ तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर १० से १६ फरवरी तक प्रभातफेरी तथा १७ से २३ फरवरी तक यजुर्वेदीय महायज्ञ तथा वेदकथा का आयोजन किया गया। दिनांक २२ फरवरी को विशाल शोभायात्रा में सभा की ओर से स्वामी देवानन्द, पं० मुरारीलाल बेचैन की भजनमण्डली तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त महिला सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा आर्ययुवक सम्मेलन भी किये गये।

—केदारसिंह आर्य

शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन का कार्यक्रम

हरयाणा सरकार वर्ष १९९२-९३ के लिए शराब के ठेकों की नीलामी ३ मार्च से २१ मार्च तक कर रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने गतवर्षों की भांति इस अवसर पर सरकार की आबकारी नीति (शराब के प्रचार तथा विस्तार) का विरोध करने के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम बनाया गया है। अतः हरयाणा प्रदेश के सभी धार्मिक सामाजिक तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि हरयाणा में शराब पर पूर्णपाबन्दी लगवाने की मांग करने के लिए अपने जिलों के मुख्यालय पर सभी के सहयोग से भारी संख्या में पहुंचकर प्रदर्शन करें।

६	जगाधरी	९ मार्च, १९९२	सोमवार
७	अम्बाला	१० ,, ,,	मंगलवार
८	कैथल	११ ,, ,,	बुधवार
९	कुरुक्षेत्र	१२ ,, ,,	वीरवार
१०	पानीपत	१३ ,, ,,	शुक्रवार
११	सोनीपत	१४ ,, ,,	शनिवार
१२	रोहतक	१६ ,, ,,	सोमवार
१३	फरीदाबाद	१७ ,, ,,	मंगलवार
१४	नारनौल	१८ ,, ,,	बुधवार
१५	रिवाड़ी	२० ,, ,,	शुक्रवार
१६	गुड़गांव	२१ ,, ,,	शनिवार

वैदिक यतिमण्डल की बैठक

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेशानुसार वैदिक यतिमण्डल की एक आवश्यक बैठक १४ मार्च, १९९२ रविवार को ११ बजे (दोपहर) आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी में रखी गई है। सभी यति महानुभाव समय पर अवश्य पधारें। इसमें स्वामी सर्वानन्द जी महाराज भी पधार रहे हैं। इसमें पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का कार्यक्रम तैयार किया जायेगा। यह शताब्दी समारोह १५, १६, १७ मई, १९९२ को चरखी दादरी में होगा।

ओमानन्द सरस्वती
संरक्षक
पं० गुरुदत्त शताब्दी समारोह

२०वां वार्षिक महोत्सव

वैदिक आश्रम गूंगोढ़, त० कोसली जिला रेवाड़ी का २०वां वार्षिक महोत्सव १८ मार्च, १९९२ बुधवार को मनाया जायेगा। इस अवसर पर उच्चकोटि के साधु, महात्मा तथा विद्वान् नेता पधार रहे हैं।

१८ तारीख को प्रातःकाल यज्ञ होगा। यज्ञोपवीत प्रदान किये जायेंगे और दोपहर बाद आकर्षक व्यायामों का प्रदर्शन भी होगा।

—व्रतानन्द सरस्वती

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

दिनांक २५-२-९२ को प्रातः ८ बजे श्री बीरराम खिचड़, नलवा निवासी के यहां सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी द्वारा हवन किया गया। क्रांतिकारी ने शराब व धूम्रपान की बुराइयों पर प्रकाश डाला। यजमान व रामस्वरूप सरपंच ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। श्री दरियावसिंह ने हुक्का बीड़ी न पीने का व्रत लिया। दो महिलाओं तथा दो पुरुषों ने जनेऊ लिये। हवन पर अन्य महिलायें भी श्रद्धा से अपने-अपने घरों से घृत लाईं। स्कूली बच्चों व नवयुवकों ने भी हवन में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

—मलेराम आर्य, नलवा

ऋषि-बोधोत्सव

—प्रा० भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर)

गतांक से आगे—

नि सन्देह महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट घोषणा की है कि—'जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको कि मैं भी मानता हूं, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सबको एक-सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतांतर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किंतु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।
(स्वा० वेदानन्द प्रकाशित संस्करण) स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश पृ०५८२

'(पूर्वपक्ष) तुम्हारा मत क्या है? (उत्तरपक्ष) वेद अर्थात् जो-जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस-उसका हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं। जिस लिए वेद हमको मान्य हैं, इसलिए हमारा मत वेद है।' सत्यार्थप्रकाश समु० ३, पृ० ६७।

ऐसी स्पष्ट स्थिति में जब हम महर्षि के योगदान की बात करते हैं तो तुलनात्मक विवेचन से यह बात सामने आती है कि महर्षि का अपूर्व योगदान यही है कि महर्षि ने वेद की मान्यताओं को एक सुसगत रूप दिया और यही महर्षि का तत्त्वबोध है। यह तत्त्वबोध जहां शास्त्रों के प्रमाणों से परिपुष्ट है वहां वह तर्क युक्ति के भी अनुकूल है। शास्त्र तथा तर्क का सगतिकरण ही महर्षि के तत्त्वबोध का सुसगतपन है। जैसे कि—

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे एक दौड़-सी लगी हुई है। हर एक सफल होने के लिए जल्दी से जल्दी सबसे पहले मंजिल पर पहुंचना चाहता है। मंजिल पर पहुंचने और सफलता, प्रगति के लिए जहां रास्ता स्पष्ट सुनिश्चित होना चाहिए वहां यदि मार्ग सरल, सीधा हो तो सफलता, प्रगति सरलता से मिल जाती है। क्योंकि प्रगति में गति शब्द जुड़ा हुआ है। अच्छी गति के लिए रास्ते का सरल-सपाट-सक्षम-सुरक्षित होना बहुत जरूरी है। अधिकतर दो तरह के रास्ते होते हैं जिनको सगत और असगत के नाम से स्मरण किया जा सकता है। जैसे कि—पुराने और नये नगरों की गलियां, सड़कें। परिवहन के पथों की तरह जीवन के भी सुसगत और असगत रूप में दो पक्ष हो सकते हैं।

महर्षि के तत्त्वबोध की दूसरी खूबी यह भी है कि यह प्रकाश की तरह स्पष्ट, सुनिश्चित और सन्देह-भ्रम, भय रहित है। जैसे कि प्रकाश में वस्तु और स्थल के स्पष्ट होने से कार्य करना सरल होता है और अन्धकार मे कार्य करना कठिन तथा वहा ठोकर, भय, भ्रम, सशय बना रहता है। इसी दृष्टि से ही अन्याय-अत्याचार के लिए अन्धेर शब्द का प्रयोग होता है। प्रकाश के समान ही महर्षि का तत्त्वबोध जीवन के हर व्यवहार का एक स्पष्ट, सुनिश्चित और भय-भ्रम-सशय रहित रूप दर्शाता है, तब उसको अपनाने से कार्य की सिद्धि सरल हो जाती है। इसके साथ सिद्धि न होने पर होनेवाली असफलता, ठोकर और धोखे का डर नहीं होता।

ऋषिबोध कितना सुसगत और प्रकाश सदृश है, इसकी पहचान के लिए पहला स्पष्ट-सा नमूना है—विवाह विषयक ऋषि का वर्णन।

इसके सम्बन्ध मे सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में महर्षि ने विस्तारपूर्वक विवेचन किया है। इसके लिए जहां वेदादि शास्त्रों के प्रमाण दिए हैं, वहा युक्ति एव तर्क से भी विचार किया है। उदाहरण के लिए यह एक ही उद्धरण पर्याप्त होगा—

आठ, नौ, और दसवें वर्ष पर्यन्त विवाह करना निष्फल है, क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होती हैं।' ४, ७६

इसका दूसरा उदाहरण पारस्परिक अभिवादन का लिया जा सकता है। जब एक व्यक्ति दूसरे से मिलता है तो आपस में मिलने पर स्वाभाविक रूप से आदर की भावना उभरती है। जिससे परस्पर प्रसन्नता, सम्मान और अपनापन आता है। अत एव सभी देशों, वर्गों, धर्मों में आपस के अभिवादन के लिए कोई न कोई शब्द और शारीरिक चेष्टा आदि के अनेक रूप प्रचलित हैं। एतदर्थ महर्षि दयानन्द का विचार है—'बड़ों को मान्य दे, उनके सामने उठकर जाके उच्चासन पर बैठावे, प्रथम 'नमस्ते' कहे।' सत्यार्थ० २, ३६

'दिन-रात में जब-जब प्रथम मिलें वा पृथक् हों तब-तब प्रीतिपूर्वक 'नमस्ते' एक दूसरे से करें।' सत्यार्थ० ४, ८९

अभिवादन के लिये नमस्ते शब्द का प्रयोग अवसर के अनुरूप, तर्कसंगत, शास्त्रसम्मत और आधारभूत मूलभावना से हर तरह मेल खाता है।

ऋषिबोध के सुसंगतपन की तीसरी कसौटी—सामूहिक नाम आर्य है। व्यवहार में सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक का अपना-अपना नाम होता है। प्रत्येक का जहां अपना-अपना वैयक्तिक नाम होता है, वहां सामूहिक दृष्टि से भी प्रत्येक समूह का एक नाम होता है। जिस-जिस दृष्टि से आपस में एकता होती है, उस-उस दृष्टि से एक सामूहिक नाम भी होता है। जैसे कि धर्म राजनीति, देश की दृष्टि से सामूहिक नाम प्राप्त होते हैं। ऐसे ही वर्ण कारोबार यूनियन के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, फौजी, दुकानदार आदि नाम हैं। इन समूहों की तरह इन समूहों का भी एक सामूहिक नाम होना चाहिए। अत महर्षि दयानन्द का सिद्धांत है कि हमारा सामूहिक नाम आर्य है, क्योंकि हमारा जितना भी मान्य साहित्य है उसमें आर्य शब्द का सर्वत्र इस दृष्टि से प्रयोग मिलता है। यह प्रयोग इतना अधिक प्रभावपूर्ण, सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा सार्वजनिक है कि किसी भी देश का नागरिक जहां कहीं इसका प्रयोग करना चाहे कर सकता है। प्रयोग करनेवाले के जीवन की प्रत्येक प्रगति, आकांक्षा और भावना को आर्यशब्द पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है, क्योंकि आर्यशब्द का सीधा-सा अर्थ है—अच्छा, श्रेष्ठ, भला। अतः नमस्ते की तरह आर्यशब्द से भी स्पष्ट होता है कि महर्षि के मन्तव्य शास्त्रसम्मत तथा तर्कसंगत हैं।

इन सामान्य बातों की तरह जब हम जीवन के मूलभूत तत्त्वबोध के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो पता चलता है कि महर्षि दयानन्द ने जीवन के सर्वांगीण विकास और निखार के लिए भी एक सुसगत तत्त्वबोध दिया है जो कि 'एकेश्वरवाद, मनुष्यजाति की एकता, धर्म, अच्छे आचरण का नाम है और सभी महापुरुषों का सम्मान' के रूप में हैं। आइए! अब इन पर भी कुछ सक्षिप्त विचार करलें।

एकेश्वरवाद—इसका अर्थ है—एक ईश्वर की मान्यता। हमारे चारों ओर पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, सूर्य आदि अनेक प्राकृतिक पदार्थ हैं। जो कि हम जैसे किसी मनुष्य ने नहीं बनाये। इन प्राकृतिक पदार्थों की रचना, व्यवस्था किसी के करने से ही होती है। इनकी व्यवस्था बताती है कि इसका कोई न कोई कर्त्ता, धर्त्ता और नियामक है और वही ईश्वर है। ईश्वर के प्राकृतिक कार्य सभी स्थानों पर एकरूप में हो हो रहे हैं। तभी तो सभी स्थानों पर अन्न, फूल, फल, खनिज, धातुयें एकरूप में ही मिलती हैं। यह एकरूपता एवं समान व्यवस्था अपने उत्पादक, व्यवस्थापक की एकता को ही सिद्ध करती है।

इसी प्रकार सभी प्राणियों की अपनी-अपनी शरीर रचना, अग सस्थान और उनका कार्य एक-सा ही है। प्रदेशों का सामान्य-सा ही प्रभाव होता है। यह एकरूपता, समानता भी अपने कर्त्ता की एकता को ही सिद्ध करती है। शास्त्रों में एक जगत्कर्त्ता, धर्त्ता, संहर्त्ता का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। हां, वहां प्रकरण के अनुरूप उसके गुण, कर्म, स्वभाव को बताने के लिए भिन्न-भिन्न नामों का सकेत मिलता है, पर उन नामों का नामी एक ही है। इसके विशेष विवेचनार्थ 'वेद की कुञ्जी—प्रथम समुल्लास' पढ़िए।

(क्रमशः)

ऋषि दयानन्द

ऋषि दयानन्द तेजस्वी ने भारत का उद्धार किया।
जातपात का भेद मिटाकर मानवता से प्यार किया॥

दासता की जजीरो से भारत माता जकडी थी,
कायर और कपूतो ने यहा डोर देश की पकडी थी,
ब्रह्मचर्य और स्वाभिमान का ऋषि ने एक विचार दिया।
ऋषि दयानन्द तेजस्वी ने ॥१

आर्यजाति बुरी तरह से थी अविद्या अधकार मे फसी हुई,
आलस्य, अविद्या भूख, स्वार्थ की दल दल मे धसी हुई,
वेदो की शिक्षा दे करके ऋषि ने देश उबार लिया।
ऋषि दयानन्द तेजस्वी ने ॥२

कन्याये पैदा होते ही इस देश में मारी जाती थीं
विधवाओ की बुरी दशा थी पति की चिता में जारी जाती थीं,
स्त्री शिक्षा दिलवा करके ऋषि ने बडा उपकार किया।
ऋषि दयानन्द तेजस्वी ने ॥३

बालविवाह और छूतछात को ऋषि ने बिल्कुल दूर किया,
अन्धविश्वासी पाखण्डियो के पाखण्ड को काफूर किया,
सत्य असत्य के निर्णय के लिए तर्क का हथियार दिया।
ऋषि दयानन्द तेजस्वी ने ॥४

हिन्दू जाति को बरबस विधर्मी बनाया जाता था
हिन्दुओं की कमजोरी को पग पग पर दिखाया जाता था
सत्यार्थप्रकाश बनाकर ऋषि ने उन पर वार किया।
ऋषि दयानन्द तेजस्वी ने ॥५

उठो आर्यो देश जगाओ गहरी नींद मे डूबो ना,
ऋषि ने जो उपकार किये तुम उनको कभी भी भूलो ना,
मातुराम 'प्रभाकर' ने यह इसीलिए प्रचार किया।
ऋषि दयानन्द तेजस्वी ने भारत का उद्धार किया।
जातपात का भेद मिटाकर मानवता से प्यार किया॥६

रचयिता—कप्तान मातुराम शर्मा प्रभाकर
रिवाडी

मुख्याध्यापक की आवश्यकता

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि फरीदाबाद हेतु एम ए बी एड मुख्याध्यापक की आवश्यकता है। सेवा-निवृत्त चरित्रवान् तथा आर्यसमाज के विचारोवाले को प्राथमिकता दी जावेगी। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जावेगा। इच्छुक निम्न पते पर १६ मार्च, ९२ तक योग्यता तथा अनुभव के प्रमाण-पत्रो सहित आवेदन करे।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डा० नई दिल्ली ४४

योग द्वारा नशाखोरी का उपचार

—ओमप्रकाश कादियान, बी० डी० पी० ओ० रिटायर्ड, १०/३५३ देवकालोनी, रोहतक

विश्व में सभी वर्गों के बहुत अधिक लोग, चाहे वह किसान हैं, कल कारखानों में काम करनेवाले श्रमिक हैं या उच्च पदस्थ अधिकारी हैं। किसी न किसी प्रकार के नशे जिनमे धूम्रपान मुख्य है, के आदी हैं। इनमें से बहुत लोग धूम्रपान के कारण फफड़ो और मुंह के कैंसर के रोग से पीड़ित हैं। धूम्रपान के इस विनाशकारी प्रभाव के फलस्वरूप असामयिक मृत्यु की दर बढ़ रही है। धूम्रपान बहुत-सी अन्य बिमारियों जिनमें क्षयरोग, उच्च रक्तचाप, हृदयगति का रुकना, मानसिक तनाव, टोंसिलस, बहरापन आदि प्रमुख है, को जन्म देता है। धूम्रपान से मनुष्य के श्वासतन्त्र सहित शरीर के विभिन्न अंगो में भयंकर दोष उत्पन्न हो जाते है। सिगरेट, हुक्का, पाइप, चिलम, सुल्फा, गांजा आदि धूम्रपान के विभिन्न पदार्थ मनुष्य के शरीर में विकृतियों का जन्म देते हैं। मानव इस लत का इतना आदी हो जाता है कि एक बार धूम्रपान शुरु करने पर वह इससे छुटकारा पाने मे स्वयं को असहाय अनुभव करता है।

मैं प्रायः बसों, रेलगाड़ियों, सरकारी कार्यालयो, खेतो, कारखानो और यहां तक कि अपने घरो में लोगो को धूम्रपान करते, खासते और थूकते हुए देखता हूं। यहा तक कि वे लोग भी जो धूम्रपान नही करते ऐसे लोगो की संगत में धुयें से प्रभावित होते है और इन रोगो से ग्रस्त हो जाते है। धूम्रपान समाज के लिये अभिशाप है और सम्बन्धित सरकारो के स्वास्थ्य विभागो के लिए इस बुराई पर काबू पाना दिनो-दिन बहुत कठिन होता जारहा है। अत एव धूम्रपानजनित रोगो से निवृत्ति के लिये यह आवश्यक है कि दृढ़ निश्चय के साथ धूम्रपान का परित्याग किया जाये, जो योग द्वारा सम्भव है। योग अपने अष्टांगी स्वरूप यम-नियम आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान और समाधि से पूर्ण स्वास्थ्य का स्रोत है।

मैने अपने बाल्यकाल से ही लगातार १५ वर्ष तक धूम्रपान किया। सौभाग्यवश मैं एक योग केन्द्र के सम्पर्क मे आया और मैंने 'जलनेति' (नमकयुक्त पानी का नासिका में प्रवाह, 'दुग्धनेति' (गाय के दूध का नासिका में प्रवाह), 'घीनेति' (गाय के घी का बूंद नासिका मे डालना), आसन, प्राणायाम और ध्यान आदि योगक्रियाओ का अभ्यास किया। मैं इस सुखद अनुभव से आश्चर्यचकित था कि इस प्रकार अभ्यास से एक मास के उपरांत मेरे अन्तःकरण ने धूम्रपान की अनुमति नही दी और मैं चाहते हुए भी धूम्रपान न कर सका था। इस प्रकार योग क्रियाओ का अभ्यास करते हुए मुझे १८ वर्ष का समय हो गया। और अब मै इससे बहुत दूर हू।

योग का अभ्यास करने से मनुष्य में आत्मविश्वास बढ़ता है और वह आधुनिक जीवन की व्यस्तताजनित मानसिक तनावो का सहन करने मे सक्षम हो जाता है। 'यम' और 'नियम' का अभ्यास करने से मस्तिष्क ऊर्जायुक्त और अनुशासित हो जाता है। इससे धूम्रपान, चाय, काफी, मदिरा, कुल्फी और इसी प्रकार का अन्य बुरी चीजो के लिए लिप्सा धीरे-धीरे घटती चली जाती है और शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्ति बढ़ती चली जाती है। योग व्यक्ति को स्वस्थ एव दीर्घायु प्रदान करता है और वह आत्मिक स्तर पर बहुत ऊंचा उठ जाता है। उच्च नैतिक एव निर्मल आचरण योग का आधार है। 'आसन' का अभ्यास करने से शारीरिक शक्ति बढती है और इससे मनुष्य का व्यवहार शांत, लचीला व उद्यमी हो जाता है। योग क्रियाये शरीर के विभिन्न अंगो जिगर, अग्न्याशय, ताप तिल्ली, दिल, आंतों, फफडो, मस्तिष्क और महत्त्वपूर्ण चितरा ग्रन्थियो का क्रियाशील करता है। प्रतिदिन कुछ आसनों का अभ्यास कर लेने से ही व्यक्ति को चिकित्सक के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहती।

प्राण ही जीवन है। श्वास क्रिया के माध्यम से शरीर स्वच्छ, शुद्ध एव निरोग हो जाता है और इसके सतत अभ्यास से आत्मिक शक्ति बढती है, मानसिक शांति प्राप्त होती है और चित्त प्रसन्न हो उठता है, श्वास शरीर मे शांतिमान चेतना होती है। इससे फेफड़ों को शुद्ध आक्सीजन मिलती है। श्वास खीचने, इसे रोके रखने और बाहर निकालने की क्रिया जैसे 'कपाल भाति', 'अनुलोम विलोम और गहरी सांस लेने की क्रिया से फेफड़ों का बहुत विकास होता है और इससे रक्त में विद्यमान अशुद्ध तत्त्व निष्कासित हो जाते है। इससे कार्बनिक-अम्ल युक्त गैस बाहर निकल जाती है और कोशिकाओ व टिस्सयूज को अधिक आक्सीजन मिलती है जो जीवन है। शरीर मे हानिकारक मलिन द्रव्यों का संग्रह दमा, मिग्रेन, पायोरिया, गले में सूजन, क्षयरोग, रूक्ष आवाज और इसी प्रकार के अन्य रोगो को जन्म देता है। रबड़नेति और जलनेति परिशोधक कारवाई है। इससे गला व नाक साफ हो जाते है और आख, कान, नाक, गला व मस्तिष्क के रोगो का उपचार होता है। नाक वायु को निखारकर मानवशरीर एव दीर्घायु के लिए आवश्यक है कि नाक निर्मल रहे। यदि यह प्रवशद्वार (नासिका) गन्दगी से अवरुद्ध है तो शरीर को आक्सीजन की प्रचुरमात्रा नहीं मिलेगी और इससे शरीर की सभी प्रणालियां कुप्रभावित होगी। अतः नासिका और गला जलनेति की क्रिया द्वारा साफ किया जाना चाहिए। दुग्धनेति की क्रिया (गाय के दूध का नासिका मे प्रवाह) द्वारा रक्तचाप, नाड़ी तन्त्र की दुर्बलता, क्षीणदृष्टि, बहरापन और मानसिक तनाव आदि रोगो का उपचार किया जासकता है। सिरदर्द दूर हो जाता है और मानसिक शक्ति बढ़ती है। यह मस्तिष्क को ताजगी प्रदान करता है, नाड़ी तन्त्र को सम्पुष्ट करता है और ऐसे रोगियो के लिए विशेषकर लाभदायक होता है जो कमजोर हृदय से पीड़ित हैं। रबड़नेति और जलनेति गले से ऊपर की कई बिमारियों के इलाज के लिये लाभप्रद है।

आत्मबोध हमारे जीवन का लक्ष्य है। हम में से हरेक मानसिक शांति चाहता है। लेकिन इन्द्रिय सुखों के प्रति आसक्ति वास्तविक शांति के मार्ग में बाधा है। नैतिक आचरण और मानसिक सन्तुलन 'यम' के आधार हैं। 'नियम' के पालन के लिए आवश्यक है कि शरीर स्वच्छ हो, आहार नियोजित हो और मानसिक सन्तुलन हो। 'प्रत्याहार' वह क्रिया है जिसमे मनुष्य स्वयं को अपनी अन्तरात्मा से जोड़ता है। 'धारणा' के द्वारा ध्यान एक बिंदु पर केन्द्रित हो जाता है। ध्यान अर्चना है और धारणा तथा ध्यान के समागम से मनुष्य चेतना के ऊंचे शिखर पर पहुंच जाता है। 'समाधि' एक ऐसी स्थिति है जिससे मनुष्य की अन्तरात्मा प्रकाशमान हो उठती है। वह बोध को प्राप्त करके ईश्वरीय शक्ति से तादात्म्य स्थापित कर लेती है। समाधि के माध्यम से शनैः-शनैः एकाग्रचित्तता का अभ्यास करने से मस्तिष्क तनावमुक्त हो जाता है और एकाग्रता बढ़ती है। इस स्थिति में नाड़ी तन्त्र शिथिल होकर तनावमुक्त हो जाता है और शरीर के विभिन्न अंग ठीक से कार्य करने लगते हैं। इस प्रकार योग के माध्यम से मनुष्य तनावमुक्त होकर पूर्णतया स्वस्थ शरीर व दीर्घायु को प्राप्त कर लेता है। आध्यात्मिक चिंतन और मनन के लिये यह आवश्यक है कि चट्टान की भांति स्थिर व सीधा बैठना चाहिए और शरीर को शिथिल रखते हुए पद्मासन अथवा सिद्धासन या सुखासन का अभ्यास करना चाहिए। आसन की मुद्रा मे मस्तिष्क तनाव रहित होना चाहिये, गर्दन और रीढ़ की हड्डी एक रेखा में हो तथा आखे बन्द करके भौहों के बीच के स्थान पर या नाक के शीर्ष पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। इस प्रकार दृढ़ निश्चय के साथ एव अपने मन की इन्द्रियों को सुख से परे रखते हुए सतत अभ्यास करने से सफलता निश्चय ही प्राप्त होती है। ध्यान के माध्यम से मनुष्य का सुषुप्त मन आलोकित हो उठता है। ब्राह्ममुहूर्त ध्यान के लिये उत्तम समय है। वैदिक सध्या के मन्त्रों व गायत्री का जाप करना चाहिये और ओ३म् का उच्चारण इस प्रकार करना चाहिये कि मन सांस की गति द्वारा नियमित हो कि श्वास खींचने के साथ 'ओ३म्' शब्द के अक्षर 'ओ' का उच्चारण तथा सांस छोड़ने की क्रिया के साथ 'म्' का उच्चारण किया जाना चाहिये। इस प्रकार श्वास व मन्त्र उच्चारण की क्रियायें सकेन्द्रित होनी चाहिये। इस रीति से उच्चारण करने से प्राण हिलोरे लाने लगते हैं और व्यक्ति शरीर में अद्भुत संवेग महसूस करता है और जैसे मस्तिष्क में आनन्ददायक चारु प्रकाश किरणों का उदय होता है। इससे मनुष्य को मानसिक शांति के अथाह सागर की प्राप्ति होती है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

हरयाणा और हरयाणा के लाखों किसानों के हितों से है जो पिछले १६ वर्ष से अपने हिस्से का पानी इस नहर के द्वारा मिलने की प्रतीक्षा करते चले आरहे है ?

३. पंजाबी को हरयाणा की दूसरी राजभाषा का दर्जा :

पंजाब समझौते में इसका कहीं जिक्र नहीं है। धारा नं० ११ में केवल इतना लिखा है कि "पंजाबीभाषा के प्रोत्साहन के लिए केन्द्रीय सरकार कुछ कदम उठाये।" भारत सरकार ने पंजाबी समेत सभी भाषाओं को एक-एक करोड रुपये ऐसे साहित्य के सृजन के लिए दिये थे जिनके द्वारा महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में इन भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दी जासके। भारत सरकार ने पंजाबी तथा अन्य भारतीयभाषाओं के प्रोत्साहन के लिए अन्य कदम भी उठाये हैं। जहां तक पंजाबी को हरयाणा की दूसरी राजभाषा बनाये जाने का प्रश्न है, यह काम हरयाणा सरकार का है जो हरयाणा के पंजाबीभाषी लोगो की मांग पर विचार कर सकती है। राज्य पुनगठन आयोग ने १९५५-५६ में यह निर्णय लिया था कि राज्य की भाषा के अलावा दूसरी भाषा राजभाषा तभी बन सकती है जब उस भाषा के बोलनेवालों की संख्या प्रदेश की कुल जनसंख्या के ३० प्रतिशत से अधिक हो। १९६० में मुख्यमन्त्रियों के सम्मेलन ने भी जिसकी अध्यक्षता पं० जवाहरलाल नेहरू ने की थी, इस निर्णय पर अपनी मोहर लगादी थी। उस सिद्धांत के आधार पर पंजाबी को हरयाणा की दूसरी राजभाषा का दर्जा नही दिया जासकता।

जहा तक त्रिभाषा फार्मूले के तहत स्कूलों में पंजाबी को दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाने का प्रश्न है। कुछ स्कूलों में अब भी पजाबी दूसरी भाषा के रूप में पढाई जारही है। परन्तु अनिवार्य रूप से केवल पंजाबी ही दूसरी भाषा के रूप में सब स्कूलों में पढ़ाई जाये, यह स्वीकारीय नहीं हो सकता। हिंदी-भाषी प्रदेशों में दक्षिण भारत की भाषायें भी दूसरी भाषा के रूप में स्कूलों में पढ़ाई जानी चाहिएं, यह राष्ट्रीय एकता के लिए जरूरी है।

पंजाब समझौते की भाषा और भावना को सही परिप्रेक्ष्य में समझना चाहिए और यदि हम ऐसे करेंगे तो मानना पड़ेगा कि जो लोग आज चुनाव का बहिष्कार कर रहे हैं तथा जो लोग समझौते पर अमल का शोशा उठाए हुए हैं, वे ही समझौते पर अमल न होने दिये जाने के लिए जिम्मेदार हैं। अकालियों के विभिन्न धड़े और उसके मददगार अपनी बेतुकी मांगों की धमकियां देकर भारत सरकार से मनवा लेना चाहते हैं। अभी तक भारत सरकार इन धमकियों के सामने नहीं झुकी है, परन्तु उसका यह आश्वासन कि चुनाव के बाद जो सरकार पंजाब में बनेगी उससे परामर्श करके पंजाब की सब समस्याओं का समाधान कर दिया जायेगा, हरयाणा के लिए खतरे की घण्टी है। वास्तव में पंजाब की अपनी कोई समस्या है हो नहीं। वही तो हरयाणा और राष्ट्र के लिए समस्या पैदाकर रहा है। पंजाब को और सिखों को हर क्षेत्र में अपनी संख्या से कई गुना प्राप्त है। अकाली सिखों और पंजाब के साथ भेदभाव की बात करते हैं। वास्तव में उलटा भेदभाव है। पंजाब और सिख स्वयं फैसला करें कि क्या वे वास्तव में भेदभाव दूर करना चाहते हैं। वे समझलें कि यदि भेदभाव दूर करने की बात चली तो उलटा भेदभाव भी दूर करना पड़ेगा।

आर्यसमाज कौल जिला कैथल का चुनाव

प्रधान—डा० ताराचन्द आर्य, उपप्रधान—स० किशनसिंह आर्य, मन्त्री—पु० महावीरसिंह आर्य, उपमन्त्री—आचार्य बलजीतसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—पृथ्वीसिंह आर्य, जिलेसिंह आर्य, पं० ताराचन्द आर्य, मा० महावीर आर्य, कोषाध्यक्ष—मा. प्रकाशचन्द आर्य, संरक्षक—म. खेमसिंह आर्य, रामकिशन आर्य, निरीक्षक—बाबू रामसिंह आर्य।

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में दिनांक १५, १६ व १७ मई, १९९२ को जिला भिवानी के नगर चरखी दादरी में महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह राष्ट्रीय-स्तर पर मनाया जारहा है। इस अवसर पर अनेक अन्य सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया है, जिनमे नशाबन्दी सम्मेलन की प्रमुख भूमिका रहेगी। अत सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि वे इस समारोह को सफल बनाने हेतु तन, मन व धन के योगदान के साथ इस अवसर पर अपने परिवार व मित्रों के साथ पधारने का कष्ट करें।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती (संरक्षक) प्रो० शेरसिंह (प्रधान) सूबेसिंह (मन्त्री)

सत्यनारायण आर्य, प्रधान आर्यसमाज चरखी दादरी

सिर्फ औषधि नहीं, पूरा औषधालय है नीम

वाशिंगटन, १८ फरवरी (वार्ता)। भारतवासी नीम वृक्ष के गुणों से लम्बे अर्से से परिचित रहे हैं और अब अमरीका भी इसके चिकित्सकीय गुणों पर अनुसंधान शुरु कर रहा है। अमरीका की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी का कहना है कि नीम वनस्पति जगत् में सबसे ज्यादा फायदेमन्द मालूम होता है। अन्ततः यह धरती पर प्रत्येक व्यक्ति को लाभ पहुंचा सकता है। अकादमी के नोएल विएतमेयर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि नीम कई तरह के दर्द, बुखार और रोगों से छुटकारा दिलाता है और इसे ग्रामीण औषधालय कहा जासकता है। वाशिंगटन पोस्ट ने विएतमेयर के हवाले से आज लिखा है कि कम से कम १२ देशों के सैकड़ों वैज्ञानिक नीम पर शोध कर रहे हैं। लेकिन उनका कहना है कि अभी और अनुसंधान की जरूरत है। इंग्लैंड और कीनिया में १९७० के दशक में हुए शोध में पाया गया कि नीम का सत्व काफी, कपास और बन्दगोभी को कीटों से बचाता है। एक अध्ययन में इसे मेलेथियान नाम के कीटनाशक जितना कारगर पाया गया।

नीम का मिश्रण मच्छर भगाने को व्यावसायिक दवाइयों में इस्तेमाल होनेवाले डीट से कहीं अधिक कारगर मालूम होता है। सबसे बढ़कर यह कि कीटनाशकों के इस्तेमाल के साथ कई दुष्प्रभाव जुड़े हैं, लेकिन नीम के साथ ऐसा कुछ नहीं है। वाशिंगटन पोस्ट ने लिखा है कि १९२० के दशक में दो भारतीय वैज्ञानिकों आर० एन० चोपड़ा और एम० ए० हुसैन ने यह देखा था कि नीम के मिश्रण से टिड्डे दूर भागते हैं। उसके बाद सूडान में काम कर रहा जर्मनी का एक वैज्ञानिक १९५० में यह देखकर हैरान रह गया कि टिड्डीदल गुजरने के बाद सभी फसलें, पेड़ आदि का सफाया होगया, केवल नीम की हरीतिमा शेष रह गई थी।

हेनरिक श्मटर नामक इस वैज्ञानिक ने देखा कि टिड्डे नीम के पेड़ों पर बैठे, लेकिन उसका भोजन किये बिना उड़ गये। स्वास्थ्य की दृष्टि से नीम के बीजों और पत्तियों का काफी महत्त्व है और इनमें रोगाणु प्रतिरोधक क्षमता है। नीम में एस्प्रिन दवा के समान गुणोंवाले तत्त्व हैं तथा यह उच्च रक्तचाप को घटाने में सहायक है। जर्मनी में शोधों के बाद जब पुष्टि हुई कि नीम में दांतों की सड़न रोकनेवाले पदार्थ हैं, तब भारत और जर्मनी के बाजारों में नीम के दन्त मंजन आये।

साभार : जनसन्देश

हिन्दी-भाषा बी. ए. तक अनिवार्य करने की मांग

शिमला, २३ फरवरी (ट्रिब्यू)। हिमाचल प्रदेश स्नातकोत्तर एवं शोध छात्र हिन्दी संघ के प्रदेशाध्यक्ष डा० हेमराज शर्मा ने सरकार से मांग की है कि बी० ए० तक अंग्रेजी की अनिवार्यता फौरन समाप्त करदे और हिन्दी विषय को तुरन्त स्नातक स्तर तक अनिवार्य करे।

डा० शर्मा ने कहा कि १० अप्रैल को विधानसभा की राजभाषा कार्यान्वियन समिति द्वारा सभापटल पर प्रस्तुत सिफारिशों को फौरन पूरी तरह लागू किया जाए।

वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल एवं गोशाला खिकाडला (पानीपत) का २१वाँ वार्षिकोत्सव २१, २२, २३ फरवरी को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। गुरुकुल शिक्षा, गोरक्षा, शराबबन्दी विषयों पर प्रकाश डाला गया। जिला पानीपत के उपायुक्त श्री आर०पी० सिंह ने २५ हजार रुपए का सहयोग दिया। इनामी कुश्तियों का दंगल भी कराया। नकद के अतिरिक्त वैदिक साहित्य का इनाम भी चौ० मुन्शीराम बिम्भोल धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से वितरित किया गया।

—ओमस्वरूप कुलपति

रेल बजट एक नजर में

❀ सभी ऊंचे दर्जों के यात्री किराये में २० प्रतिशत वृद्धि।

❀ साधारण गाड़ियों में दूसरे दर्जे के यात्री किराये में ५० पैसे से ५ रुपये तक वृद्धि। लेकिन दस किलोमीटर तक के किराये में कोई वृद्धि नहीं।

❀ मेल व एक्सप्रेस गाड़ियों में दूसरे दर्जे के किराये में एक रुपए से लेकर २१ रुपए तक की वृद्धि।

❀ ५०० किलोमीटर से अधिक दूरी के लिए दूसरे दर्जे का शयन यान अधिभार २० रुपए की जगह अब २५ रुपए।

❀ सभी मासिक टिकट दरों में भी बढ़ोतरी।

❀ प्लेटफार्म टिकट के दाम में कोई परिवर्तन नहीं।

❀ पार्सल और अन्य सामान पर न्यूनतम प्रभार १७ रुपए से बढ़कर ३० रुपए। लेकिन ताजा फलों और सब्जियों पर यह प्रभार सिर्फ २० रुपए होगा।

❀ खाद्यान्न, दाल, नमक, गुड़, चीनी चाय, फल, सब्जी, मिट्टी के तेल, तिलहन और पशुचारे को छोड़ सभी वस्तुओं के लिए भाड़े की दरों में ७.५ प्रतिशत वृद्धि। लेकिन कोयले की भाड़ा दरों में बढ़ोतरी सिर्फ चार प्रतिशत।

❀ नई दरें पहली अप्रैल से लागू।

❀ अगले वित्तवर्ष में कुल मिलाकर १३६८ करोड़ रुपए के अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति की आशा।

❀ १ जुलाई से १५ नई रेलगाड़ियां चलाई जायेंगी। इनके अलावा नई दिल्ली से सिकन्दराबाद और बंगलूर के बीच राजधानी एक्सप्रेस का प्रस्ताव।

नयी आबकारी-नीति का कड़ा विरोध

रोहतक, २ फरवरी (ट्रिब्यू)। हरयाणा जन अधिकारी समिति ने प्रदेश में पूर्णनशाबन्दी लागू करने और पंचायत व पालिका को प्रति बोतल दिये जानेवाले राजस्व को समाप्त करने की मांग की है। भजनलाल सरकार की नई आबकारी-नीति की कड़ी आलोचना करते हुए समिति के प्रांतीय अध्यक्ष विजयकुमार (सेवा-निवृत्त) आई० ए० एस० ने कहा कि पंचायतों और पालिकाओं को प्रति बोतल राशि का लोभ देकर सरकार न केवल वर्तमान बल्कि भावीपीढ़ी का भी भविष्य अन्धकारमय बना रही है।

उन्होंने कहा कि कुरुक्षेत्र, पेहवा और थानेश्वर क्षेत्रों में शराब की बिक्री पर रोक लगाने का निर्णय लेकर मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। अगर उन्हें इन धार्मिक स्थलों की इतनी ही चिन्ता है तो उन्हें कुरुक्षेत्र के समस्त क्षेत्र में शराब की बिक्री पर रोक लगा देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि लोक कल्याणकारी राज्य का दम भरनेवाली सरकार को शराब की बिक्री से कमाये गए धन से विकास कराना शोभा नहीं देता है। कांग्रेस की यह नीति तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सिद्धांतों के विपरीत है, क्योंकि महात्मा गांधी तो शराब की बिक्री के विरोध में इनकी बिक्री वाली दुकानों पर धरना देते थे।

प्रतिबंध

गांव हरसानाकलां जि० सोनीपत में सरोहा खाप ने अपनी मीटिंग में शराब के सेवन पर प्रतिबंध लगाने और उल्लंघन करनेवाले व्यक्ति पर जुर्माना लगाने का निर्णय किया। शराब पीनेवाले व्यक्ति पर ११०० रु० तथा शराब पिलानेवाले पर ११२५ रु० जुर्माना होगा। जुर्माने के बावजूद शराब सेवन करनेवाले व्यक्ति पर ११ हजार रुपए जुर्माना होगा तथा उसे गांव से एक वर्ष के लिए निकाला जाएगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०७/७३ । म० प्रक्षौं । दूरभाष १,६६, ०८, ५१, ०६२

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक १६ १४ मार्च, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

पदम्श्री आचार्या सुभाषिणी का सार्वजनिक अभिनन्दन

सभी धर्म-प्रेमियों, समाज-सेवियों, शिक्षाविदों तथा बहिन जी के अन्य शुभचिन्तकों को जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि कन्या गुरुकुल खानपुर को अपनी कर्मभूमि बनाकर अपने सहयोगियों के साथ मिलकर बहिन सुभाषिणी ने जो चिरस्मरणीय समाजसेवा व स्त्री-शिक्षा सेवा लगातार पचास वर्ष तक की है उसकी स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर २२-३-९२ को उनका 'सर छोटूराम पार्क रोहतक' में पूर्व दोपहर १० बजे सार्वजनिक अभिनन्दन किया जा रहा है, जिसकी अध्यक्षता गुरुकुल की सर्वप्रथम स्नातिका श्रीमती गार्गी देवी करेंगी। इस अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों को निमन्त्रित किया गया है। बहिन सुभाषिणी जी को एक अभिनन्दन ग्रन्थ और सामाजिक कार्य को और अधिक गति देने के लिए एक कार भेंट की जावेगी।

बहिन सुभाषिणी जी का अभिनन्दन करने का जो संकल्प नवम्बर, १९९१ में 'छोटूराम पार्क' में लिया गया था उसको मूर्तरूप देने में डा० शकुन्तला प्रिंसिपल, कु. साहबकौर प्रिंसिपल, कु. ज्ञानवती प्राध्यापिका तथा बाबू रघुबीरसिंह ने दिन-रात बडा परिश्रम करके सफलता प्राप्त करली है। इस सफलता में प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार का बहुविध योजनात्मक योगदान भी बड़ा सहायक रहा है।

आप सभी से प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाने में योगदान दें, ताकि आयोजकों का हौंसला और भी बढ़ सके।

—शेरसिंह मलिक
कुलपति
अध्यक्ष अभिनन्दन समिति

ग्राम इमलोटा में पंचायती सम्मेलन

'सतगामा' खाप इमलोटा—प्रधान श्री ओमप्रकाश सरपंच की अध्यक्षता में दिनांक ५-३-९२ को एक सम्मेलन हुआ, जिसमें पंचगामा मिल्कपुर, अचेज पहाड़ीपुर, रूफोपुर व गोधड़ी भी सम्मिलित हुए।

सभी ग्रामों की पंचायतों ने अपने-अपने विचार रखे। जिसमें श्री सुमेरसिंह जी सरूपगढ़, डा० सत्यवीर जी कनेहटी, डा० प्रवीण इमलोटा, मा० सूरतसिंह, श्री भद्रपाल, श्री ओमप्रकाश सरपंच ने शराबबन्दी के विषय में विशेष रूप से जोर दिया।

इस अवसर पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, श्री सूबेसिंह मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री विजयकुमार उपायुक्त रिटायर्ड, श्री हीरानन्द आर्य पूर्व शिक्षामन्त्री हरयाणा, श्री बलबीरसिंह ग्रेवाल पूर्व एम०एल०ए०, आचार्य ऋषिपाल तथा मा० दीवानसिंह ने भी अपने विचार रखे।

श्री मांगेराम प्रधान आर्यसमाज इमलोटा, श्री महेन्द्रसिंह आर्य, श्री राजेन्द्रकुमार, म० छोटूराम जी ने विशेष रूप से इस सम्मेलन में सहयोग दिया।

इस सभा के अवसर पर नशाबन्दी अभियान हेतु निम्न सज्जनों ने दान दिया।

		रुपये
१	श्री मांगेराम	१००
२	,, राजेन्द्रसिंह	१००
३	श्री बस्तीराम	१०२
४	,, रतिराम सुपुत्र मोहनलाल	१०१
५	,, राजेन्द्र सुपुत्र जयमल	१००
६	म० छोटूराम	५०
७	श्री ओमप्रकाश सरपच	५१
८	,, लखन व भगवाना	५१
९	डा० प्रवीनकुमार	५१
१०	श्री श्योनारायण तहसीलदार	५०
११	,, भद्रपाल आर्य	५०
१२	,, चेतराम टोडर	५१
१३	मा० सूरतसिंह	२१
१४	श्री ताराचन्द	२१
१५	,, धर्मपाल	२१
१६	मेजर रामकरण	२१
१७	चौ० दीवानसिंह	२०
१८	श्री नफेसिंह	२१
१९	,, पृथ्वीसिंह	२०

इस सम्मेलन का बहुत अच्छा प्रभाव रहा और प्रस्ताव पारित करके दिनांक ६-३-९२ को उपायुक्त जि० भिवानी को भिवानी पहुचकर ज्ञापन दिया गया। जिले के अन्य ग्रामों से भी उपायुक्त को शराबबन्दी के बारे में ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

—डा० सोमवीर सभा उपमन्त्री

लेखराम बलिदान पर उनकी स्मृति में—

उनकी वसीयत हमारे नाम

आर्यसमाज से लेख का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

मार्च सन् १८९७ में आर्यपथिक पं. लेखराम एक मतान्ध मुसलमान के छुरे से बलिदान हुए। महर्षि दयानन्द के पश्चात् आर्यसमाज को बलिवेदी पर यह उनका दूसरा बलिदान था। जिसने न केवल पं० लेखराम को अमर बलिदानी बना दिया, अपितु आयसमाज में भी नवजीवन का सचार कर दिया। निस्सन्देह यह उनके तप, त्याग और बलिदान का ही पुण्य परिणाम था कि उनके पश्चात् आर्यसमाज के लिए बलिदानों की झड़ी लग गई। स्वामी श्रद्धानन्द, लाजपतराय, रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशनसिंह, राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, श्यामजी कृष्ण वर्मा, शुकराज शास्त्री, भगत फूलसिंह, पं० तुलसीराम, वीर रामचन्द्र, महाशय राजपाल आदि लगभग ११९ वीर बलिदान हुए। देश की स्वतन्त्रता के लिए वीर सावरकर, भाई परमानन्द आदि तथा अन्य हजारों लोग काले पानी तक गये।

लेखराम के वीरगति पाने के बाद अन्य अनेक आर्यवीर जीवन दान देकर आर्यसमाज के लिए मरते रहे। जितने भी आर्यसमाज ने सत्याग्रह किये उसमें कितने ही आर्यवीर बलिदान हुए। इतिहास इस बात का साक्षी है देश के सामाजिक व राजनीतिक उत्थान के लिए आर्यसमाज ने सबसे अधिक बलिदान दिये हैं।

प० लेखराम का जन्म चैत्र ८ सौर १९१५ वि० शुक्रवार के दिन सन् १८५८ में पजाब के जेहलम जिले के एक अप्रसिद्ध ग्राम सैदपुर में एक अप्रसिद्ध सारस्वत ब्राह्मणकुल में हुआ था। किन्तु उनके पूर्वज महता नारायणसिंह पंजाब के सिखकालीन विप्लव के वीरयोद्धा थे और कई लडाइयों में लड़ चुके थे। उनके चाचा पं. गंडाराम जो पुलिस में इन्स्पेक्टर पद पर थे। उन्ही की सहायता से लेखराम भी पेशावर पुलिस में सार्जेण्ट पद पर नियुक्त होगये थे। लेखराम बाल्यकाल से ही बड़े धार्मिक एवं भावुक नौजवान थे। वे गीता का पाठ करते और कृष्ण की भक्ति में लीन रहते थे।

किन्तु उन्ही दिनों लुधियाना के मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी की कुछ पुस्तक पढने का उन्हें अवसर मिला। अलखधारी के ग्रन्थों के पढ़ने से उन्हें महर्षि दयानन्द के वैदिकधर्म और आर्यसमाज की स्थापना का वृतांत ज्ञात हुआ। इन प्रेरणाओं से उन्होंने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को मगाकर पढ़ना आरम्भ किया। उनके विचार बदल गये और वे आर्यसमाजी बन गये। उन्होंने पुलिस में रहते हुए पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। लेखराम के मनमें जीव ब्रह्म के विषय में तथा अनेक अन्य शकायें भी थीं, जिनके निवारण के लिए उन्होंने पुलिस से एक मास की छुट्टी लेकर १७ मई, १८८० को अजमेर जाकर महर्षि के दर्शन किये। उनसे सब शंकायें निवारण कीं, महर्षि दयानन्द से मिलकर उन्हें बड़ी शांति मिली।

महर्षि से धर्मप्रचार की प्रेरणा पाकर उन्होंने २४ जुलाई, १८८४ में पुलिस की सेवा से भी त्यागपत्र दे दिया। अब वे दिन-रात वैदिकधर्म के प्रचार में संलग्न रहने लगे। वैदिकधर्म के विरोधियों की आक्षेप पूर्ण पुस्तकों के भी वे लिखित रूप से उत्तर देने लगे। रात-दिन प्रचार के लिए यात्रा करने से उन्हें आर्यमुसाफिर कहा जाने लगा।

पं० लेखराम एक निःस्पृह, त्यागी एवं आर्यसमाज के अनथक कार्यकर्त्ता महोपदेशक थे। वे पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा से निर्वाहमात्र २५ रुपये मासिक लेकर दिन-रात २४ घण्टे वैदिकधर्म के प्रचार में व्यस्त रहते थे। उनका जीवन इस समय के उपदेशकों के लिए अनुकरणीय एवं प्रेरणाप्रद हो सकता है।

महर्षि दयानन्द से २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने की दीक्षा लेकर भी उन्होंने ३६ वर्ष की आयु में विवाह किया। वे अपनी धर्मपत्नी लक्ष्मी देवी को भी धर्मप्रचार कार्य में सहयोगी बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने उसे भी वैदिकधर्म के सिद्धांत पढ़ाने आरम्भ कर दिये थे। विवाह के दो वर्ष पश्चात् उनके यहां पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम 'सुखदेव' रखा। अपनी पत्नी को उपदेशिका बनाकर साथ ही छोटे से पुत्र को भी साथ लेकर वे धर्मप्रचार यात्रा में जाने लगे। किन्तु लगातार यात्रा करने के कारण वह छोटा बालक रुग्ण होकर संसार से विदा होगया। लेखराम ने इस दारुण दुःख का वीरता से सामना किया।

पंजाब प्रतिनिधि सभा ने महर्षि दयानन्द का जीवनचरित्र लिखवाने के लिए भी पं० लेखराम की नियुक्ति की थी। पं० लेखराम द्वारा महर्षि दयानन्द की जीवनी में साक्षियों समेत मौलिक और लिखित वर्णन ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। यदि वे महर्षि दयानन्द का जीवनचरित्र न लिखते तो महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज का कार्य विलुप्त हो जाता।

बलिदान का कारण

पं० लेखराम के लेखबद्ध प्रचार तथा उनकी पुस्तकों के प्रचार से मुसलमानों के अहमदिया सम्प्रदाय के संस्थापक कादियांनगर, जिला गुरदासपुर के निवासी मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी के साथ संघर्ष शुरु होगया। शुरु में मिर्जा ने एक पुस्तक 'बुराहीन-ए-अहमदिया' लिखी थी, जिसमें आर्यसमाज पर बड़े कटु आक्षेप किये गये थे। मिर्जा का जवाब देते हुए पं० लेखराम ने एक पुस्तक "तकजीब बुराहीन-ए-अहमदिया" लिखी। मिर्जा ने फिर एक पुस्तक "सुर्म-ए-चश्म आरिया" लिखी, जिसमें आर्यसमाज को गालियां लिखी थीं। पं० लेखराम ने इसके उत्तर में "नुस्ख-ए-खब्त-अहमदिया" लिखी। इन पुस्तकों से घबराकर मुसलमानों ने पं० लेखराम पर अमृतसर में मुकदमा करना चाहा, किन्तु वकीलों ने सम्मति न दी। फिर मिर्जापुर में मुसलमानों ने मजिस्ट्रेट के यहां अर्जी दी, किन्तु वह भी खारिज होगई। इसी प्रकार इलाहाबाद में तथा लाहौर के मुसलमानों ने मुकदमा दायर किया। इसमें लाला लाजपतराय ने पैरवी की, मुकदमा खारिज हुआ। मेरठ व दिल्ली में डिप्टीकमिश्नर की अदालत में अर्जी दी, वह भी डिप्टीकमिश्नर ने खारिज करदी। दिल्ली से निराश होकर मुसलमानों ने बम्बई की अदालत में अभियोग चलाया। वह भी पं० लेखराम को बिना बुलाये खारिज होगया। पेशावर, बम्बई, अमृतसर, पटना, दिल्ली आदि सब नगरों से समाचार आने लगे कि मुसलमान पं० लेखराम को मरवा देने के षड्यन्त्र कर रहे हैं। किन्तु पं० लेखराम इन धमकियों से कब डरनेवाले थे। उन्होंने बड़े जोरों से मुसलमानों को शुद्ध करने का कार्य आरम्भ कर दिया। यहां तक कि जो मिर्जा यह कहता था कि "मेरे पास ईश्वर के दूत सन्देश लाते हैं और मैं अलौकिक चमत्कार दिखा सकता हूं"। जिस मनुष्य की मृत्यु के लिए मैं खुदा से प्रार्थना करूंगा वह वर्ष के भीतर मर जाएगा, जो कोई मेरे पास कादियां रहकर परीक्षा करे मैं उसे २०० रुपये मासिक की दर से २४०० रुपये दूंगा। पं० लेखराम ने मिर्जा के इस चैलेंज को स्वीकार किया और वे स्वयं सीधे कादियां पहुंचे। मिर्जा के घर पर जाकर उसे शास्त्रार्थ में हराया। इतने निर्भीक मर्दमानस थे लेखराम।

धर्म पर बलिदान

फरवरी महीने के मध्य में एक काला बूचड़ कसाई, गठे हुए बदन का भयानक, नाटा युवक दयानन्द कालिज में पं० लेखराम को पूछने आया। वहां से पता लेकर वह पं० लेखराम के निवास पर पहुंचा और पं० जी से हाथ जोड़कर कहने लगा कि "मैं असल में हिन्दू था, दो वर्षों से मुसलमान होगया हू। अब पुनः शुद्ध होने के लिए आपकी शरण में आया हूं। लेखराम ने प्रतिज्ञा की कि वह उस पतित को शुद्ध

(शेष पृष्ठ ७ पर)

हरयाणा में शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शनों का आयोजन

(कार्यालय संवाददाता)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आह्वान पर हरयाणा में ३ मार्च से आरम्भ हुई शराब के ठेकों की नीलामी का आर्यजनता की ओर से जबरदस्त विरोध किया गया है। सभा गत ४-५ वर्षों से शराबबन्दी अभियान चला रही है। सभा के अधिकारी तथा प्रचारक शराबबन्दी सम्मेलनों, खापों की पंचायतों आदि के माध्यम से शराब जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहने तथा ग्राम पंचायतों को शराब के ठेके बन्द करवाने हेतु प्रस्ताव कराने की प्रेरणा निरन्तर कर रहे हैं। गतवर्ष २०० से अधिक पंचायतों ने शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सरकार के पास भिजवाये हैं। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने समाचारपत्रों में सरकार की शराब को बढ़ावा देने की नीति के विरुद्ध लेख प्रकाशित करवाये हैं और हरयाणा का भ्रमण करके जनता को जागृत किया है। सरकार द्वारा शराब के ठेकों की नीलामी की घोषणा होने पर एक विज्ञप्ति द्वारा आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं से नीलामी के अवसर पर जिलेवार विरोध प्रदर्शन करने की अपील की गई थी। सभा के कार्यालय में प्राप्त समाचार के अनुसार निम्नलिखित स्थानों पर विरोध प्रदर्शन किये गये हैं–

१–जींद

जींद ४ मार्च। जींद स्थित आर्यसमाजों, वेदप्रचार मण्डल जिला जींद तथा श्री रामधारी शास्त्री आदि आर्यमहानुभावों के संयुक्त तत्त्वावधान में जींद न्यायालय परिसर में एक भव्य एवं सशक्त आयोजन किया गया, जिसमें हरयाणा सरकार से आग्रह किया गया कि आबकारी-नीति को कठोर बनाया जाये तथा हरयाणा प्रांत को शराब के अभिशाप से छुटकारा दिलवाया जाये। शराब ने लहलहाते हरयाणा को सर्वनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। इससे जनजीवन तबाह हो रहा है तथा सामाजिक अपराध बढ़ रहे हैं। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशानुसार धरना दिया गया। प्रातः १० बजे से दोपहर १२ बजे तक विभिन्न वक्ताओं ने शराब से होनेवाले विनाश पर प्रकाश डाला तथा शराबबन्दी की आवश्यकता पर बल दिया। वक्ताओं में सभा के प्रचारक सर्वश्री प० वासुदेव शास्त्री, धर्मवीर आर्य, सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य, स्वामी रत्नदेव सरस्वती, संयोजक जिला जींद वेदप्रचार मण्डल, चौ० अभयसिंह आर्य भू०पू० चेयरमैन नगरपालिका जींद, चौ० कुलवीरसिंह मलिक भू०पू० उपाध्यक्ष हरयाणा विधानसभा, रामधारी शास्त्री, टेकचन्द नैन पूर्व विधायक, कर्णसिंह आर्य कोषाध्यक्ष आर्यवीर दल हरयाणा, वैद्य दयाकृष्ण आदि प्रमुख थे। सभी वक्ताओं ने राजनीति से दूर, विशुद्ध समाज-सुधार की भावना से एकमत होकर मंच से अपने विचार दिये। श्री चन्द्रभान आर्य भजनोपदेशक ने भी अपने प्रेरणादायी भजन प्रस्तुत किये।

उल्लेखनीय है कि इतना जोरदार प्रदर्शन जिला मुख्यालय पर इससे पहले शायद ही कभी हुआ हो। शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर शराब के विरुद्ध किया गया यह प्रदर्शन बहुत ही प्रभावशाली रहा। इसमें लगभग ७००-८०० स्त्री-पुरुष बहुत ही उत्साह से शामिल हुए। जिनमें सौ से ऊपर तो महिलायें थीं। आर्यसमाज जींद शहर, आर्यसमाज रामनगर जींद, वेदप्रचार मण्डल जिला जींद तथा श्री रामधारी शास्त्री और मा० रायसिंह आर्य (घोगड़ियां) के शराब के विरुद्ध चलाये गये संयुक्त अभियान को श्रेय जाता है कि यह धरना और प्रदर्शन सफल हुआ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक से निवेदन है कि वह अपनी रहनुमाई में मद्यनिषेध के इस अभियान को चालू रखे तथा ऋषियों की भूमि हरयाणा को शराब की बुराई से निजात दिलवायें। वेदप्रचार मण्डल जिला जींद गांव-गांव में प्रचार करके शराब के विरुद्ध जन-जागरण अभियान चला रहा है।

—प्रो० ओमकुमार आर्य
सह-संयोजक वेदप्रचार मण्डल, जींद

२–हिसार

५ मार्च, ९२ को हिसार में सभा उपदेशक एवं शराबबन्दी समिति जिला हिसार के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी के नेतृत्व में महाबीर स्टेडियम में शराब के ठेकों की नीलामी पर शराबबन्दी हेतु भारी विरोध प्रदर्शन हुआ। जिसमें ११ गांवों के नर-नारियों ने भाग लिया। कई देर पुलिस विरोध के बावजूद गेट पर शराबबन्दी नारेबाजी हुई तथा महिलाओं ने स्यापा किया। वहीं एक सभा का आयोजन हुआ, जिसमें श्री क्रांतिकारी जी ने सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की तथा जनहित में शराबबन्दी की मांग करते हुए हरयाणा को ऋषि-मुनियों की भूमि बताया। प० सत्यबीर शास्त्री (हांसी), चौ० जवाहरसिंह आर्य (ढाणीपाल), प० जब्बरसिंह खारी (वेदप्रचार मण्डल हांसी), श्री धर्मवीर शास्त्री सभा उपदेशक, श्री राजपाल आर्य (कुम्भा) तथा श्री वासुदेव शास्त्री सभा उपदेशक आदि ने भी शराब से होनेवाले नुकसान पर विचार रखे। दो घण्टे प्रदर्शन करने के बाद सिटी मजिस्ट्रेट चाहल साहब वहां आये। उन्हें हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी तथा ग्राम नलवा में शिक्षण संस्थाओं के बीच शराब के ठेके को तुरन्त हटाने के बारे में ज्ञापन दिया। कुछ समय के बाद सिटी मजिस्ट्रेट वापिस आये और प्रदर्शनकारियों को बताया कि नलवा ग्राम का ठेका बन्द कर दिया जायेगा। इस वर्ष नीलामी नहीं होगी। दूसरा ज्ञापन हरयाणा सरकार को भेजने का आश्वासन दिया।

ज्ञातव्य है कि क्रांतिकारी जी के प्रयत्न एवं सुझाव से ग्राम पंचायत नलवा ने १६-२-९२ को ठेका बन्द करवाने का रेजुलेशन पास कर सरकार व अधिकारियों को भेज दिया था। अतः जनशक्ति के आगे सरकार को झुकना पड़ा। प्रदर्शन में भाग लेनेवाले प्रमुख सर्वश्री महेन्द्रसिंह सरपंच नलवा पंच व ठेकेदार, श्रीमती परमेश्वरी देवी महिला पंच, श्रीमती सुनेहरी आर्या धर्मपत्नी क्रांतिकारी, श्रीमती केला देवी आर्या, रामपत दहिया रामचन्द्र प्रजापत तथा प० अमरसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज नलवा, हेतराम आर्य, सूबेदार प्रभुराम, श्रीमती लजावन्ती आर्या बालावास, विजेराम आर्य, कर्णसिंह आर्य, शमशेरसिंह आर्य, महाशय चन्दगीराम आर्य तथा ताई नौरती, श्रीमती धर्मो देवी, श्रीमती रामप्यारी देवी, श्रीमती तारावती देवी (कंवारी) आदि बदलूराम आर्य, भादरसिंह आर्य मुकलान, लजेराम आर्य डाबड़ा, संग्रामसिंह आर्य दड़ौली, ईश्वरसिंह आर्य गगनखेड़ी, राजपाल आर्य, श्रीमती मानो देवी, रतनसिंह आदि पहुंचे। श्री जयसिंह योगी (हिसार) भगत रामेश्वरदास (लाडवा) का भी विशेष सहयोग रहा।

—सूबेदार रामेश्वरदास आर्य

३–भिवानी

दैनिक जनसन्देश के ७ मार्च में प्रकाशित समाचार के अनुसार ६ मार्च को जिले के विभिन्न गांवों से आये ग्रामीणों ने अपने-अपने ग्राम में शराब के ठेके बन्द करवाने की मांग को लेकर भारी प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन को सफल करने के लिए फरवरी सप्ताह में सभा के मन्त्री सर्वश्री सूबेसिंह, पूर्व उपायुक्त विजयकुमार तथा पूर्वमन्त्री हीरानन्द आर्य ने खेड़ीबूरा, बामला, धनाना, जूई, ढाणीटा तथा तहसील लोहारू के ग्रामों में पंचायतों का आयोजन करके शराब के विरुद्ध जनमत तैयार किया था तथा अपनी-अपनी खापों में शराब के ठेके खोले जाने के विरुद्ध पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाये थे। सभा की भजनमण्डली सर्वश्री जयपाल आर्य, ईश्वरसिंह तूफान, पं० हरिसिंह प्रभाकर, पं० दीनदयाल प्रभाकर आदि ने भी ग्रामों में शराब की बुराइयों के विरुद्ध प्रचार किया था।

प्रदर्शन से पूर्व सभा के प्रचारक पं० रतनसिंह आर्य, पं० वासुदेव

(शेष पृष्ठ ४ पर)

होलिका महोत्सव

—वेदप्रकाश 'साधक' द०म० रोहतक

भारत की पवित्र-भूमि में इस त्यौहार का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। सर्वसाधारण का हृदयोल्लास का प्रकाश करना इसका मुख्योद्देश्य है। ऋतुराज बसन्त के आगमन से प्रकृति का सौन्दर्य आकर्षक दिखाई देता है। आषाढी की फसल अन्नदाता किसान को मुग्ध कर देती है। इसलिए इस अवसर पर आनन्द और रंग-रलियां मनाना स्वाभाविक है।

अग्नि में भूने हुए अधपके अन्न को होलक कहते हैं। होला शब्द इसका अपभ्रंश है। इस शुभ अवसर पर जौ, गेहूं के कच्चे अन्न का होम किया जाता था और इन होलों का विशेष आहार, जो कि पित्तादि दोषों का शमन करता है, इसका भक्षण किया जाता था।

प्राचीनकाल से वैदिकधर्म में यह प्रथा चली आरही है कि नवीन फसल को देवों को समर्पण किये बिना अपने उपयोग में नहीं लाया जाता था। जिस प्रकार मानव देवों में ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ है, उसी प्रकार भौतिक देवों में अग्नि श्रेष्ठ है। इसलिए अग्निहोत्र का विधान किया गया है ताकि मानवमात्र में दिव्य भावना बनी रहे। वेद कहता है—"केवलाघो भवति केवलादी" अकेला खानेवाला केवल पाप खाता है। यज्ञ शेष अर्थात् दूसरे को खिलाकर ही अन्न पान का विधान किया गया है। आजकल लोगों में यह रिवाज है कि लकड़ियां इकट्ठी करके उनको जलाया जाता है। यह होम का बिगड़ा हुआ रूप है। इसीलिए देव-यज्ञ ही होली का वास्तविक रूप है। इसके अतिरिक्त जो होली के दिन आनन्दोत्सव मनाने की परम्परा है वह भी युक्ति-युक्त है।

पर्व की पर्वता इसी में है कि हमारा हृदय हर्ष से परिपूर्ण हो यह तभी सम्भव है जब कि हम अपनी प्रवृत्तियों को सांसारिक चिन्ताओं से निवृत्त करके अपने मनको आनन्द उत्साह से भरपूर करदे।

सांसारिक चिन्ताओं से तब मुक्त हो सकते हैं जब ऊंच-नीच छोटे-बड़े का विचार हमारे मनमें न आये। वैर-विरोध, वैमनस्य शत्रुता की कुत्सित भावनाओं से हमारा मन खाली रहे।

होली परस्पर प्रेम करने का त्यौहार है। दो फटे हृदयों को मिलाता है, एकता का पाठ पढ़ाता है। परन्तु प्रेम विश्वास पर स्थिर है और विश्वास सत्य सच्चाई पर आधारित है। सच्चाई ईमानदारी के लोप होने से घृणा शत्रुता का साम्राज्य होगया। इसीलिए आजकल विस्फोटक स्थिति बनी हुई है और वातावरण आतंकित है।

होली के शुभ अवसर पर यह संकल्प करना चाहिए कि हम अपने जीवन में सत्य और धर्म की रक्षा करेंगे। झूठ, छलकपट, भ्रष्टाचार, अत्याचार की कुत्सित भावनायें अपने मनमें नहीं आने देंगे, ताकि प्रेम का सागर प्रवाहित रहे।

आजकल भारतभर में हिन्दू भाई जिस तरीके से होली मनाते हैं, उसे देखकर बुद्धिमान्, विचारक लोग परेशान हो जाते हैं।

शराब मांस का विशेष सेवन कर परस्पर लड़ाई झगड़े करके दुःख की वृद्धि करते हैं। होली जैसे पवित्र पर्व को कीचड़, गन्दा पानी फेंककर कलंकित और दूषित कर दिया है।

स्त्री-पुरुष इस आड़ में दुराचार, व्यभिचार की होली खेलते हैं, जो कि मूर्खों और गंवारों की लीला कही जा सकती है। विलासिता और कामक्रीड़ा का नंगा प्रदर्शन किया जाता है, जो कि मनुष्यता से बाहर है। इस धर्मपरायण देश में पाशविक वृत्तियों का बोलबाला है जो कि चिन्ताजनक है।

बड़े खेद और शोक की बात है कि आनेवाली सन्तान इन दूषित क्रीड़ाओं में संलग्न होकर लम्पट और व्यभिचारी बनती जारही है।

सही मनाने का तरीका यह है कि पुरुष पुरुषों के साथ, स्त्रियां सभ्यता, शिष्टाचार का ध्यान रखकर परस्पर मनोरंजन करें। कटुता और घृणा छोड़ने का संकल्प करके प्रेम का प्रदर्शन करें। अश्लील गाने न गाकर शुद्ध संगीत में रस लें। लक्ष्मणयति और सीता की स्मृति करके मातृवत् भाभियों के साथ होली मनाकर इस पर्व की पवित्रता भंग न करें।

शुद्ध पौष्टिक आहार करके प्रीतिपूर्वक संगठन का प्रमाण प्रस्तुत करें, ताकि राष्ट्रीय प्रेम दिन-दुगुनी रात-चौगुनी तरक्की करे और विघटन का नाश हो जाये, यही मेरी शुभकामना है।

पुराण के आधार पर हिरण्यकशिपु और प्रह्लाद की कथा प्रचलित है। वह सृष्टिक्रम के प्रतिकूल है और अवैदिक है। उसको अलंकारिक मानकर यह शिक्षा ली जासकती है कि प्रह्लाद की तरह संकट आपत्तियां आने पर लोक निन्दा की परवाह न करते हुए मनुष्य को सत्य पथ से विचलित नहीं होना चाहिये।

नशीले पदार्थों के बढ़ते चलन पर चिन्ता जताई

एक संवाददाता/पानीपत

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में युग-प्रवर्तक आर्यसमाज संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का बोधोत्सव माडल टाउन आर्यसमाज में धूमधाम से मनाया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि हरयाणा की इस पावन धरती पर दूध और दही की जगह शराब ने ले ली है जिससे व्यक्ति समाज और राष्ट्र विनाश को ओर जारहा है।

उन्होंने हैरानगी प्रकट करते हुए कहा कि पश्चिमी देश तो इससे तंग आकर आध्यात्मवाद अपना रहे हैं और जगत् गुरु कहलानेवाला भारत देश नशीले पदार्थों के सेवन को अपनाता जारहा है, उन्होंने नशीले पदार्थों के बढ़ते सेवन में सरकार को दोषी ठहराया है।

समारोह की मुख्यवक्ता हरयाणा हैंडलूम अपेक्स की चेयरमैन श्रीमती संध्या बजाज ने स्वामी दयानन्द के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि महिलाओं को आज जो अधिकार मिले हैं वह स्वामी जी की ही देन है।

समारोह के अध्यक्ष एवं जिला उपायुक्त कंवर आर.पी.सिंह ने इस अवसर पर कहा कि हमें सरकार को दोषी बताने की बजाये लोगों को शराब न पीने की प्रेरणा देनी चाहिए।

समारोह में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल की छात्रा कु. मुक्ता ने स्वामी दयानन्द पर भाषण दिया तथा ज्ञानचन्द आर्य व चमनलाल आर्य ने स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धी कवितायें पढ़ी। मंच संचालन चमनलाल आर्य ने किया। अन्त में अतिथियों का देवराज डावर ने आभार व्यक्त किया।

(पृष्ठ ३ का शेष)

शास्त्री एवं पं० धर्मवीर आर्य ने आर्यसमाज मन्दिर भिवानी पहुंचकर प्रदर्शन की तैयारी की थी। इस प्रदर्शन में अधिक संख्या ग्रामीण महिलाओं की थी। प्रदर्शन के अवसर पर शराबबन्दी सम्मेलन किया गया, जिसमें सरकार को चेतावनी दी गई कि यदि शराबबन्दी करने वाले ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी की गई तो आर्यजनता संघर्ष करने पर विवश होगी और ठेकों को चलने नहीं देगी। चाहे इसके लिए बड़े से बड़ा बलिदान भी क्यों न देना पड़े। जिले के ग्राम बामला, नौरंगाबाद, रिवाड़ी खेड़ा, फूलपुरा, सिरसा, घुसकानी, निनाद आदि ग्रामों के हजारों नरनारियों द्वारा ग्रामों में शराब के ठेके खोले जाने का कड़ा विरोध किया। कई ग्रामों से ट्रैक्टर आदि में नरनारी भिवानी आते समय मार्ग में हरयाणा सरकार की कल्याणकारी विरोधी शराब नीति के विरोध में नारे लगाते हुए आये।

४—यमुनानगर

८ मार्च को यमुनानगर तथा १० मार्च को अम्बाला शहर में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर आर्यजनता की ओर से शराब के ठेकों की नीलामी स्थान पर विरोध प्रदर्शन किया गया।

यमुनानगर में श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों के साथ सभा के प्रचारक पं० धर्मवीर आर्य, भजनोपदेशक पं० शेरसिंह आर्य बाजारों में शराबबन्दी नारे लगाते हुए नीलामी स्थान पर गये तथा शराबबन्दी ज्ञापन दिया।

५—अम्बाला

इसी प्रकार अम्बाला शहर में सभा के प्रचारक पं० वासुदेव शास्त्री आर्यसमाज नारायणगढ़ तथा अम्बाला आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के सहयोग से नीलामी स्थान पर उत्साहपूर्वक प्रदर्शन किया तथा शराबबन्दी ज्ञापन दिया।

शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन का कार्यक्रम

हरयाणा सरकार वर्ष १९९२-९३ के लिए शराब के ठेकों की नीलामी ३ मार्च से २१ मार्च तक चल रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने गतवर्षों की भांति इस अवसर पर सरकार की आबकारी नीति (शराब के प्रचार तथा विस्तार) का विरोध करने के लिए निम्न-लिखित कार्यक्रम बनाया गया है। अतः हरयाणा प्रदेश के सभी धार्मिक सामाजिक तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि हरयाणा में शराब पर पूर्णपाबन्दी लगवाने की मांग करने के लिए अपने जिलों के मुख्यालय पर सभी के सहयोग से भारी संख्या में पहुंचकर प्रदर्शन करें।

१	रोहतक	१६ मार्च,	१९९२	सोमवार
२	फरीदाबाद	१७ ,,	,,	मंगलवार
३	नारनौल	१८ ,,	,,	बुधवार
४	रिवाड़ी	२० ,,	,,	शुक्रवार
५	गुडगांव	२१ ,,	,,	शनिवार

केरल के आर्यविद्वान् को पुरस्कार

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के समाचार के अनुसार केरल के आर्यविद्वान् आचार्य नरेन्द्रभूषण को केरल साहित्य अकादमी द्वारा वैदिक साहित्य के प्रचारार्थ पुरस्कार दिया गया है। यह समाचार चित्र सहित मलयालम एवं इण्डियन एक्सप्रेस में भी प्रकाशित हुआ है।

—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु

जिला हिसार में वेदप्रचार

दिनांक २५-२६ फरवरी ९२ को ग्राम नलवा में वेदप्रचार किया गया। प्रातः हवन किया गया। २७ फरवरी को प्रातः खेतों की ढाणी में हवन किया गया तथा २८ फरवरी को ग्राम धमाना में वेदप्रचार किया गया। उपरोक्त स्थानों पर सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी तथा पं० सत्यवीर शास्त्री द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जीवन व कार्य तथा शराब, धूम्रपान, व जूआ से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। पं. जब्बरसिंह खारी की भजनमण्डली द्वारा फुटकर समाज-सुधार के भजनों के अतिरिक्त पं० लेखराम, वीर ऊधम-सिंह तथा स्वर्णकुमार का इतिहास रखा। कार्यक्रम बहुत ही रोचक रहा।

—भलेराम आर्य नलवा

मुख्याध्यापक की आवश्यकता

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि. फरीदाबाद हेतु एम.ए.बी.एड. मुख्याध्यापक की आवश्यकता है। सेवा-निवृत्त, चरित्रवान् तथा आर्यसमाज के विचारोंवाले को प्राथमिकता दी जावेगी। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जावेगा। इच्छुक निम्न पते पर १६ मार्च, ९२ तक योग्यता तथा अनुभव के प्रमाण-पत्रों सहित आवेदन करें।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डा० नई दिल्ली-४४

ऋषि-बोधोत्सव

—प्रा० भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर)

गतांक से आगे—

ईश्वर के एक होने से ही उसके सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक, सर्वेश्वर, सर्वशक्तिमान् आदि गुण चरितार्थ होते हैं तथा ऐसे गुणयुक्त ईश्वर को मानने से ही उसकी कर्मफल-व्यवस्था पर विश्वास जमता है। इसी विश्वास पर कोई सदा शुभकर्मों में जुटा रहता है। भक्ति द्वारा ईश्वर से अपना निकट सम्बन्ध अनुभव करने से आत्मिक-शक्ति और शांति मिलती है।

एकेश्वरवाद की मान्यता के अनुसार महर्षि का यह दृढ़विश्वास है कि ईश्वर के कार्य जब अन्य कोई नहीं कर सकता है तो ईश्वर की इस दया को ध्यान में रखते हुए हमें कृतज्ञता के रूप में ईश्वर की ही पूजा, भक्ति, उपासना करनी चाहिए। ईश्वर के स्थान पर अन्य देवी-देवताओं, अवतारों, पैगम्बरों, गुरुओं की उपासना नहीं करनी चाहिए अर्थात् हमारी उपासना और प्रार्थना का एकमात्र आधार इष्टदेव ईश्वर ही है।

मानवजाति की एकता

सभी मनुष्यों के शरीर, अंगसंस्थान एवं उनका कार्य एक ढंग का ही है। भौगोलिक दृष्टि से रूप, रंग का बहुत कम ही अन्तर होता है। सभी के हृदयों में सुख-शांति, स्नेह की एक-सी ही भावना होती है। सभी के खून का रंग लाल और आत्मा सबकी अजर-अमर ही है। अतः प्रदेश, रंग के भेद के आधार पर परस्पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। एक मानव से दूसरे मानव में शिक्षा, योग्यता, सदाचार आदि के कारण ही अच्छे-बुरेपन का अन्तर होता है। मानवसमाज के स्त्री-पुरुष में भी सामान्य-सा ही भेद होता है, इतने भेद से कोई ऊंचा-नीचा नहीं हो जाता। वस्तुतः ये दोनों समाज के महत्त्वपूर्ण अंग हैं और दोनों का अपना-अपना महत्त्व है। दोनों को समान रूप से एक दूसरे के सहयोग, सद्भाव की आवश्यकता होती है, एक के बिना दूसरा अधूरा है।

अतः मानवजाति की एकता, समानता के कारण सबको समान रूप से प्रगति एवं प्रगतिदायक शिक्षा, धर्म आदि का समान अवसर और अधिकार प्राप्त होना चाहिए। सबको सबसे स्नेह, सौहार्द, सहयोग का व्यवहार मिलना चाहिए। ऐसा वहीं हो सकता है जहां सबमें समानता की भावना होती है। ऐसा व्यक्ति फिर किसी से सामाजिक उच्चता-नीचता और जन्मना स्पृश्यता-अस्पृश्यता का भेद-भाव नहीं करता।

जब किसी व्यक्ति में यह पूर्ण विश्वास होता है कि सारी मानव-जाति एक जैसी ही है, तब वह किसी को केवल किसी परिवार में जन्म लेने के कारण हलका, अछूत नहीं मानता और न ही इस आधार पर किसी से ईर्ष्या, द्वेष करता है। क्योंकि ऐसा करने से परस्पर दूरी बढ़ती है और तब सामाजिक कार्यों में स्नेह, सद्भाव, सहयोग प्राप्त होना कठिन हो जाता है। इससे परस्पर एकता, संगठन भी नहीं पनपता। दूसरी ओर जब कोई किसी को केवल किसी विशेष वर्ग में जन्म लेने के कारण अधिक अच्छा मानता है तो ऐसे विशेष अपने आपको दूसरों से अलग रखने लगते हैं। इससे आपस की एकता को भी ठेस पहुंचती है।

वार्षिक उत्सव

दिनांक २-३-९२ को आर्यसमाज राजपुर का वार्षिक उत्सव बड़े हर्षोल्लास से माननीय शिक्षामन्त्री हरयाणा सरकार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिला सोनीपत के सभी आफिसर इस उत्सव में शामिल हुए। इस अवसर पर समाज के प्रधान बालकिशन व सचिव श्री सुखलाल राठी ने इस सभा का संचालन किया। सर्वप्रथम महाशय टेकचन्द कुराड ने आर्यों के प्रति अपने विचार रखे। इस शुभ अवसर पर पं० रतनसिंह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उत्सव में उपस्थित हुए। उन्होंने अपने मनोहर विचार शराबबन्दी के विषय में रखे। कुछ युवकों को शराब न पीने का नियम दिलवाया। ग्राम पंचायत ने सभा को लिखकर दिया है कि इस ग्राम में शराब बिल्कुल बन्द कर देंगे। माननीय शिक्षामन्त्री शांति राठी ने आर्यसमाज के पुस्तकालय का भवन निर्माण स्वयं करवाने का वचन दिया। मन्त्री जी आर्य परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। सारी सभा ने मन्त्री जी का विचार सुनकर उनका धन्यवाद किया। सभा में मन्दिर के निर्माण के लिए अनेक दानियों ने दान दिया, लगभग ५-६ हजार रुपया इकट्ठा हुआ। इस दान में से सभा ने महाशय पं० रतनसिंह जी को १०१ रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए दान दिये।

—सुखलाल राठी मन्त्री आर्यसमाज

गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी प्रचार हेतु गीत

मई के महीने में चलियो सब दादरी ॥टेक

१५-१६-१७ मई तिथि, चले आइयों पति-पत्नी।
सुन सत्संग सुधरजा मति, चलियो सब दादरी ॥१

ट्रैक्टर टैम्पू रेढ़ो ओढ़, जीप कार बस भर बेजोड़।
चलें पैदल जत्थे होड़म-होड़, चलियो सब दादरी ॥२

वहां विश्वार्य सम्मेलन हो, ऋषियों का मिलन हो।
सत्य असत्य मंथन हो, चलियो सब दादरी ॥३

साधु सन्त महन्त आवें, ब्रह्म-ज्ञान समझावें।
बड़े-बड़े भजनी भजन सुनावें, चलियो सब दादरी ॥४

ऋषि का वहां लंगर चले, सब्जी पूरी चावल मिले।
दीनदयाला स्वागत करे, चलियो सब दादरी ॥५
मई के महीने में चलियो सब दादरी।

शोक समाचार

आर्य विद्या सभा के मन्त्री प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार के बड़े भाई ५६ वर्षीय श्री सूरजभान दलाल का दिनांक १८-२-९२ को सायं ४-३० बजे मेडिकल कालेज रोहतक में देहावसान होगया। वे अपने पीछे अपनी विधवा पत्नी, तीन लड़के तथा दो लड़कियों को छोड़कर गये हैं। दाह संस्कार १९-२-९२ को उनके पैतृक गांव माण्डौठी में किया गया। जिसमें महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के लगभग दो सौ कर्मचारी सम्मिलित हुए। राजकीय महाविद्यालय दुजाना, कुल-सचिव म० द० वि०, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व दिल्ली से भी शोक सन्देश भेजे गए। म० द० वि० के गैर शिक्षक संघ के प्रधान श्री साधुराम फोगाट भी शोक सन्तप्त परिवार को सांत्वना देने पहुंचे। दिनांक २८-२-९२ को राजकीय महाविद्यालय दुजाना के प्राचार्य समेत सारा स्टाफ भी रस्म तेरहवीं के अवसर पर शांति-यज्ञ में पहुंचा। स्व० श्री सूरजभान म० द० वि० रोहतक में सुरक्षा विभाग में सेवारत थे। इसलिए विश्वविद्यालय अधिकारियों ने उनके परिवार से एक व्यक्ति को नौकरी देने की प्रक्रिया शुरु करके बड़ा उत्तम पग उठाया है।

—रणसिंह दलाल, गांव माण्डौठी

आभार

मेरे बड़े पुत्र श्री सूरजभान का दिनांक १८-२-९२ को स्वर्गवास होगया। इस दुःखद स्थिति में हमारे परिवार के प्रति म० द० वि० रोहतक, राजकीय महाविद्यालय दुजाना, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व दिल्ली, कन्या गुरुकुल खानपुर व भैंसवाल के अधिकारियों व कर्मचारियों तथा अन्य रिश्तेदार व परिचितों ने जो सहानुभूति दिखाई उससे हम अवश्य अपने दुःख को हलका करने में समर्थ हुए हैं। इस सामयिक सौहार्द व स्नेह के लिए मैं अपने समस्त परिवार की तरफ से आप सभी का हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

—रामानन्द दलाल, गांव माण्डौठी

होली आई

सजे हुए घर-वन खलिहान, गूंज रहा है मंगल-गान,
चौतालों की धूम मची है पिकी सुनाती मधुरिम तान।

स्पन्दन ही, स्पन्दन है, कण-कण में चेतनता छायी।
होली आई, होली आई॥

फैल रहा चहुं हर्षोल्लास, मधु ऋतु का है मधुर विकास,
प्रकृति के सारे तत्त्व अनूप, करते हर्षित हो परिहास।

नई बहारों की रोचकता, कोपल किसलय में है आई।
होली आई, होली आई॥

फैली निधियां अमित अनन्त, शिशिर की शोषणता का अन्त,
गिरि-गह्वर में, कानन में है, आज चतुर्दिक विपुल बसन्त।

ऐश्वर्यों को वैभव के संग, मानों होती आज सगाई।
होली आई, होली आई॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

(पृष्ठ २ का शेष)

कर लेंगे। अनेक लोगों ने पं० जी को सचेत किया, किन्तु वे न माने। यह बूचड भी पं० जी के साथ छाया की तरह रहने लगा। रात को यह उन लोगों के पास ठहरता था, जहां पण्डित जी को मारने के षड्यन्त्र रचे जाते थे। ६ मार्च, १८९७ को प्रातः वह फिर पण्डित के घर पहुँचा। पण्डित जी घर न मिले, वह सभा कार्यालय पहुंचा, वहां से निराश लौटा। २ बजे पण्डित लेखराम सभा कार्यालय गए। उस दिन वह सारे शरीर पर कम्बल ओढ़े हुए था, वह कांपता था। पण्डित जी ने उसे पीने की दवा दिलवाई। बाजार में फिर किसी ने उस बूचड़ को पण्डित जी के साथ देखकर कहा—पण्डित जी! बहुत भयानक आदमी को साथ लिए फिरते हो। घर जाकर पण्डित जी ऋषि दयानन्द की मृत्यु का अन्तिम दृश्य लिख रहे थे। माता जी ने पण्डित जी से रसोई के लिए तेल लाने को बात कही। पण्डित जी लिखना छोड़कर जिधर घातक बैठा था उधर से आंखें बन्द कर दोनों बाहों को ऊपर उठाकर जोर से अंगड़ाई लेने लगे। अवसर पाकर घातक कसाई ने एकदम अभ्यस्त हाथ से भयानक छुरी इस प्रकार पेट में घुसादी कि पेट के अन्दर आठ-दस घाव आये और अन्तड़ियां बाहर निकल पड़ीं। इस प्रकार वह घातक अपने आपको लेखराम जी व उनकी माता तथा धर्मपत्नी से छुड़ाकर भाग गया। मरते दम तक वे गायत्री का जाप करते रहे। उन्हें हस्पताल ले जाया गया। उन्हें वहां भी यदि कोई चिन्ता थी तो आर्यसमाज की। जो यज्ञ महर्षि रचाकर गये थे उसमें आज लेखराम ने अपने जीवन की पूर्णाहुति दे दी थी। रात्रि के दो बजे संसार से विदा होते हुए अपने सभी सहयोगियों को अन्तिम वसीयत दी। उन्होंने कहा—

"आर्यसमाज से तहरिर और तकरीर का काम बन्द न होना चाहिए।" अत एव आर्यसमाज के विद्वानों ने अनेकों सिद्धांत सम्बन्धी पुस्तकें लिखी व भाषण देकर इस वसीयत का पालन किया। इतना कहकर यह आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द का सिपाही स्वर्ग सिधार गया।

विचारणीय विषय आज यह है कि आज हम में न तो पण्डित लेखराम जैसा अदम्य उत्साह है और न स्वामी श्रद्धानन्द जैसी असीम श्रद्धा और न गुरुदत्त एम०ए० जैसी विद्वत्ता व धर्मपरायणता और न त्यागमूर्ति म० हंसराज जैसी निष्काम-सेवा व समर्पित जीवन हमारा है। आज हमारे अन्दर शिथिलता आगई है, उसे दृढ़संकल्प के साथ फिर से जागृत करना होगा।

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

गतांक से आगे—	रुपये
१ श्री वेदपाल आर्य एकसियन सु० श्री मूलचन्द १६/८५४ ननवाली नगर सोनीपत	१०१
२ ,, पवनकुमार बांसल, जाखल जिला हिसार	१००
३ ,, दुर्गादास वाईस चेयरमेन मार्किट कमेटी हिसार	१००
४ ,, नाथूराम ठेकेदार जाखल जिला हिसार	१००
५ ,, मंगतराम सु० नरातराम जाखल जिला हिसार	१००
६ ,, सोनी इंस्पेक्टर एफ०सी०आई ,,	१००

(क्रमशः)

—सभामन्त्री

अम्बाला छावनी में बोध-पर्व की धूम

वैदिक प्रचार-मण्डल रामनगर अम्बाला छावनी के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोध-पर्व दिनांक १-३-९२ को बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया, जिसमें सभी स्थानीय समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर ब्रह्मचारी रामप्रकाश जो, श्री महीपाल जी एम०ए० ने ऋषि के कार्यों पर प्रकाश डाला तथा उन्हें सत्य का साधक बताते हुए प्रत्येक आर्य को उनके बताये मार्ग पर चलने का आह्वान किया। प० दाऊदयाल जी के भजनों को सभी ने सराहया। कार्यक्रम सफल रहा। मण्डल सभी पर्वों को श्रद्धापूर्वक मनाता है। समाज के प्रधान श्री वेदप्रकाश की ओर से प्रसाद वितरण किया गया।

दिनांक २-३-९२ को स्वामी दयानन्द मार्ग में ऋषिबोध-पर्व मनाया, जिसमें डा० दिवाकर पुरोहित आर्यसमाज दिवान हाल दिल्ली ने क्रांतिकारी विचार रखे। डा० शांता मल्होत्रा प्राचार्य आर्य कालेज का भी भाषण हुआ। समाज के प्रधान श्री सतीश मित्तल पूर्व अध्यक्ष ह० खा०ग्रा० बोर्ड ने इस अवसर पर पुनः आर्य केन्द्रीय सभा बनाने की घोषणा को तथा संगठन को गतिमान करने का आश्वासन दिया। ऋषिलंगर भी हुआ। इसी कड़ी में आर्यसमाज कच्चा बाजार की प्रधाना ने भी समाज में ऋषिबोध-पर्व मनाया तथा पंजाबी मोहल्ला समाज में भी यह पर्व उत्साह से मनाया गया।

—वेदमित्र हापुड़वाले

ऋग्वेद

यजुर्वेद

वैदिक यतिमण्डल की प्रेरणा और सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक
के तत्त्वावधान में

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

एवं

पूर्ण नशाबन्दी अभियान

चरखी दादरी (जिला भिवानी) में १५, १६ व १७ मई, ९२

उपकार्यालय : आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी (जि० भिवानी, हर.)

मान्यवर !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिये समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिनांक १५, १६, १७ मई को चरखी दादरी जिला भिवानी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, विद्वान् वक्ता तथा गायक पधारेंगे और पं० गुरुदत्त के जीवन एवं व्यक्तित्व को उजागर करनेवाले अनेक कार्यक्रम रखे जायेंगे। इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार-गोष्ठियां, कवि सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन, भाषण-प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायेंगी। अत: आपसे निवेदन है कि—

१) आप अपने आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्था से सम्बद्ध सभी महानुभावों को इस अपूर्व समारोह में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें तथा दिवंगत पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये चरखी दादरी (जिला भिवानी) में पधारें।

२) इस विशाल एवं भव्य आयोजन को सफल करने में तन, मन एवं धन से योगदान करें, विशेषत: स्वयं भी आर्थिक सहायता दें तथा अन्यों से दिलावें।

३) अपना सहयोग एवं सुझाव कार्यालय तक अवश्य पहुंचावें तथा यहां से प्रकाशित होनेवाली सूचनाओं और विज्ञप्तियों को जन-जन तक प्रचारित करें।

४) इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के लिए अपना विद्वत्तापूर्ण लेख तथा अपने व्यावसायिक संस्थान का विज्ञापन अवश्य भेजें। निवेदक :

स्वामी ओमानन्द सरस्वती — संरक्षक
सुमेधानन्द सरस्वती — संयोजक
प्रो. शेरसिंह — प्रधान

सूबेसिंह
मन्त्री

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सत्यनारायण
प्रधान आर्यसमाज चरखी दादरी

कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) का उत्सव सम्पन्न

दिनांक १४, १५, १६ फरवरी, ९२ को वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया गया, जिसमें स्वामी अग्निकुंन, स्वामी रतनदेव, श्री उमेद शर्मा, रामधारी शास्त्री, प्रो० ओमकुमार, सुखदेव शास्त्री, सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी आदि ने आर्यसमाज का इतिहास, महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्य, वेदशिक्षा, आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है, शराब से होनेवाले नुकसान पर विचार रखे। उत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप में सिंचाई व बिजली मन्त्री श्री शमशेरसिंह सुरजेवाला भी पधारे। २१ हजार रुपये का दान दिया। उत्सव पर गुरुकुल को एक लाख सत्तर हजार रु० दान प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त पं. चन्द्रभान, पं. सहदेव बेधड़क, प. रामनिवास तथा महाशय झाब्बेराम के शिक्षाप्रद क्रांतिकारी भजन हुए। गुरुकुल की छात्राओं का भाषण व भजनों का कार्यक्रम बहुत ही रोचक रहा। मंच संचालन स्वामी रतनदेव जी ने किया। नर-नारियों से पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की शताब्दी जो दादरी (भिवानी) में मनाई जारही है उसमें बढ़-चढकर भाग लेने का आग्रह किया गया।

—आचार्या दर्शना,
कन्या गुरुकुल खरल

ऋषि-बोधोत्सव

दिनांक २ मार्च, ९२ को आर्यसमाज मन्दिर सैक्टर-२२ चण्डीगढ में शिवरात्रि (ऋषि-बोधोत्सव) का पर्व चण्डीगढ़ की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के पूर्ण सहयोग से विशेष समारोह के साथ मनाया गया। ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में यहां साप्ताहिक वेदकथा का आयोजन किया गया था, जिसमें आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अमृतवर्षा से आर्य-जनता ने धर्म लाभ प्राप्त किया। स्थानीय विद्वानों द्वारा इस अवसर पर महर्षि के कृत्यों पर प्रकाश डालते हुए सर्वसाधारण को वेदमार्गी होने का आह्वान किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सुयोग्य भजनमण्डली पं० मुरारीलाल बेचैन एवं स्वामी देवानन्द द्वारा मधुर गीत गाये गये।

—मन्त्री आर्यसमाज

अश्लीलविज्ञापनों पर रोक लगाने की मांग

नयी दिल्ली, ५ मार्च (भाषा)। राज्यसभा में आज महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुंचानेवाले अश्लील विज्ञापनों और प्रकाशनों पर रोक लगाने की पुरजोर मांग की गई।

सदन में यह मांग उस समय उठी जब जनता दल की श्रीमती कमला सिन्हा ने शून्यकाल के दौरान उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में महिलाओं के साथ अत्याचार की एक घटना का वर्णन किया।

इस पार्टी के श्री दिनेश ने भी ऐसी घटनाओं पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए शिकायत की कि महिलाओं की प्रतिष्ठा को आघात लगानेवाले अश्लील विज्ञापनों और प्रकाशनों का इन दिनों धड़ल्ले से प्रचलन हो रहा है।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

तम्बाकू और शराब आंखों के लिए हानिकर

नई दिल्ली, ९ मार्च (वार्ता)। तम्बाकू तथा शराब आंखों के लिए भी खतरनाक हो सकती है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान केन्द्र के डा० राजेन्द्रप्रसाद, नेत्र विज्ञान केन्द्र के प्रमुख प्रो० पी०के० खोसला के अनुसार तम्बाकू तथा शराब आंखों पर खतरनाक प्रभाव डाल सकते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०/७३ रजि. न० P/RTK-४१ दयानन्दाब्द १६९

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक— सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक १७ २१ मार्च, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

कैथल, कुरुक्षेत्र, पानीपत, सोनीपत तथा रोहतक में शराबबन्दी प्रदर्शन आयोजित

हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की मांग हेतु ज्ञापन दिये गये

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशन में गत सप्ताह निम्नलिखित स्थानों पर सभा के उपदेशकों, भजनोपदेशकों एवं जिले के आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं ने शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन किये तथा शराबबन्दी लागू करने के लिये ज्ञापन दिये गये—

कैथल :

दिनांक ११ मार्च को प्रातः ११ बजे शराब के ठेकों की नीलामी स्थल पर प्रदर्शन करते हुए जिला उपायुक्त को ज्ञापन दिया गया। इस अवसर पर सभा के उपदेशक पं० धर्मवीर आर्य, पं० वासुदेव शास्त्री, पं० चिरंजीलाल सभा भजनोपदेशक, सभा के अन्तरंग सदस्य डा० मनोहरलाल आर्य, श्री अमरसिंह प्रधान आर्यसमाज कैथल, श्री बलवीर शास्त्री, श्री हरिराम आर्य आदि ने उपस्थित शराब के ठेकेदारों तथा कार्यकर्ताओं को शराब की बुराइयों से सावधान किया।

कुरुक्षेत्र :

दिनांक १२ मार्च को शराब के ठेकों की नीलामी स्थल पर सभा के उपदेशक के साथ गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत, श्री धर्मपाल आर्य, श्री कृष्णचन्द सेठी आदि आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया तथा एक ज्ञापन देकर हरयाणा सरकार से मांग की कि कुरुक्षेत्र को ४८ कोष की धार्मिक तथा ऐतिहासिक भूमि में शराब के ठेके रद्द करके पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाये।

पानीपत :

दिनांक १३ मार्च को पानीपत में शराब के ठेकों की नीलामी स्थल पर सभा के निर्देशन में शराबबन्दी संघर्ष समिति पानीपत के अध्यक्ष स्वामी धर्मानन्द, आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत के मन्त्री राममोहन राय एडवोकेट, आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता प्रि० रामसिंह, सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल शास्त्री, श्री वासुदेव शास्त्री, पं० धर्मवीर आर्य, पं० चिरंजीलाल के अतिरिक्त सुनीता राठी, आर्यसमाज माडल टाउन पानीपत के मन्त्री श्री ज्ञानचन्द, नागरिक मंच के अध्यक्ष श्री महेशदत्त शर्मा, प्रचारमन्त्री श्री प्रियदत्त शास्त्री एवं आर्य विद्यालय के छात्रों ने प्रदर्शन में भाग लिया तथा उपस्थित जनता को सम्बोधित किया एवं शराबबन्दी ज्ञापन दिया।

सोनीपत :

दिनांक १४ मार्च को सोनीपत के सुभाष चौक माडल टाउन में शराब के ठेकों की नीलामी स्थल पर सभा के अन्तरंग सदस्य एवं आर्यसमाज सोनीपत के प्रधान श्री रामगोपाल आर्य, श्री पंजूराम आर्य एवं आर्यसमाज राजपुर के श्री बालकिशन, श्री धर्मसिंह, आर्यसमाज सटगांव के प्रधान श्री महेन्द्रसिंह आर्य, आर्यसमाज सैक्टर १४ के मा० छाजूराम आर्य, श्री अखिलेश शास्त्री के सहयोग से सभा के उपदेशक पं० अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, पं० चन्द्रपाल शास्त्री, पं० वासुदेव शास्त्री, पं० धर्मवीर आर्य, पं० चिरंजीलाल आर्य, पं० मुरारीलाल बेचैन, पं० रतनसिंह आर्य, मा० बलदेव आर्य मूहाना आदि ने शराबबन्दी प्रदर्शन किया तथा ज्ञापन दिया।

रोहतक :

दिनांक १६ मार्च को प्रातः १० बजे सभा के कार्यालय सिद्धांती भवन से सैंकडों की संख्या में जिला रोहतक के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने शराब विरोधी प्रदर्शन आरम्भ किया। टैम्पो पर ओ३म् ध्वज, शराब विरोधी बैनर तथा ध्वनिविस्तारक (लाउड स्पीकर) लगा रखे थे। रोहतक के मुख्य मार्ग गोहाना अड्डा, छोटूराम पार्क, तहसील, जिला कचहरी, सुभाष चौक, माडल टाउन, मैडिकल मोड़, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय छात्रावास, जाट महाविद्यालय होते हुए कृषि ज्ञान केन्द्र स्थल पर जहां सरकार की ओर से शराब के ठेकों की नीलामी हो रही थी पहुंचे। प्रदर्शन एक शराबबन्दी सम्मेलन में बदल गया। वहां पुलिस भी भारी संख्या में उपस्थित थी। आर्यसमाज के प्रदर्शनकारियों के भय से इस बार जिला के अधिकारियों ने दौलता की कोठी के स्थान को बदलकर नगर के एक कोने पर कृषि ज्ञान केन्द्र पर नीलामी की। शराबबन्दी सम्मेलन में सभा के उपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री, पं० अत्तरसिंह आर्य एव वैद्य भरतसिंह आर्य, डा० राजसिंह आर्य, पं० चन्दरूप आर्य टिटौली, श्रीनिवास, बलवीरसिंह आर्य, श्री शेरसिंह, श्री झाबेराम आर्य मकड़ौली कलां, चौ० बलवन्तसिंह मन्त्री आर्यसमाज बाघपुर बेरी, स्वामी धर्मानन्द सांघरा, स्वामी धर्मानन्द पानीपत, चौ० धर्मचन्द मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, पं० जयपाल आर्य, पं० चिरंजीलाल आर्य, स्वामी देवानन्द, पं० ज्योतिस्वरूप आर्य आदि ने उपस्थित शराब के ठेकेदारों, पुलिस कर्मचारियों तथा अन्य जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सरकार की शराब की नीति की आलोचना की। इस अवसर पर ग्राम दूबलधन, कलावड़, सिवाना, बाबली, मकड़ौली कलां, लाढ़ौत, शिवाजी कालोनी, प्रेमनगर रोहतक आदि ने ५०० से अधिक कार्यकर्त्ताओं ने प्रदर्शन किया। जिला उपायुक्त महोदय रोहतक को ज्ञापन दिया गया।

अमूल्य निधि नेत्र

आंखें हमारे शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग हैं बिना आंखों के हमारा जीवन व्यर्थ है। आंख के द्वारा ही हमें संसार की प्रत्येक अच्छी-बुरी चीज दिखाई पड़ती है। शरीर के दूसरे अंगों की तरह आंख का पोषण भी रक्त के द्वारा होता है और आंख पर नियन्त्रण स्नायुओं द्वारा होता है। आजकल देखा जाता है कि अधिकतर लोगों की आंखें कमजोर होती जारही हैं। जिसका कारण असन्तुलित भोजन, प्रदूषित वातावरण व मानसिक तनाव आदि हैं। चिकित्सकों के अनुसार आंख में खराबी या कमजोरी आने का प्रमुख कारण मानसिक तनाव है। मानसिक तनाव होने पर आंख को मांसपेशियों एवं स्नायु तन्तुओं पर भी तनाव पड़ता है। जिससे आंख में खराबी आजाती है। अतः आवश्यक हो जाता है कि आख को मांसपेशियों का तनाव दूर किया जाये। इसके लिए मस्तिष्क और आखो को ढीला छोड़ देने की क्रिया की जानी चाहिए। जिसके लिए निम्न क्रियायें लाभदायक सिद्ध होती हैं।

पार्मिंग क्रिया

पार्मिंग से अर्थ है दोनों हथेलियों से आंखों को ढकना। प्रातःकालीन सूर्य के सामने रीढ़ की हड्डी को सीधे रखते हुए बैठ जायें, आंख बन्द करलें। तत्पश्चात् दोनों हथेलियों को क्रास बनाते हुए बायीं हथेली को दाहिनी आंख पर, दायीं हथेली को बायी आंख पर इस प्रकार रखें कि अंगुलियां माथे पर तिरछी-सी रखी हों। आंख इस प्रकार ढके कि न तो दबाव पड़े, न ही रोशनी जाये और अब मनमें विचार करें कि मैं मस्तिष्क की मांसपेशियो को ढीला छोड़ रहा हूं। सूर्य के माध्यम से नेत्र ज्योति बढ़ानेवाली शक्ति हथेलियों से अन्दर जारही है।

दो-तीन मिनट तक आंख ढकने के बाद धीरे से आंख खोल लेनी चाहिए। शुरुआत में पार्मिंग क्रिया पांच मिनट तक करें, फिर धीरे-धीरे पन्द्रह मिनट तक करें। इतने समय तक आंखें बराबर बन्द रखें। क्रिया पूरी होने पर आखें खोल लें और पलकों को दो मिनट तक जल्दी-जल्दी झपकायें। यदि आप शवासन करना जानते हैं तो पार्मिंग करने से पहले शवासन के द्वारा शरीर को तनाव रहित करलें। यदि आप चाहें तो दिन में किसी भी समय इस क्रिया को कर सकते हैं, लेकिन तब सूरज के सामने न करें।

आंखों की धुलाई

सफाई की दृष्टि से आंखें धोना एक अच्छी क्रिया है। जिनकी आंख अस्वस्थ्य हों उन्हें दिन में कम से कम तीन बार आंखों की धुलाई अवश्य करनी चाहिए। शीतल जल से आंख की मांसपेशियां व स्नायु तन्तु तनावरहित हो जाते हैं। आंखें ठीक प्रकार से धोने के लिए व्यक्ति को आंख धोने का कप खरीद लेना चाहिए, जो किसी भी सर्जिकल स्टोर से प्राप्त किया जासकता है। उस कप में शुद्ध शीतल जल भरकर गर्दन नीचे करके उसे आंख से लगाया जाता है और आधे मिनट तक आंख उसी में खोली व बन्द की जाती है। फिर कप को हटाकर पानी बदल लेते हैं। इसी प्रकार दूसरी आंख की धुलाई करते हैं।

यदि आपको आंख धोने का कप उपलब्ध न हो तो आप किसी बर्तन में पानी भरलें, तत्पश्चात् दोनों हाथों की अंजुली बनाकर धीरे-धीरे अधखुली आंखों पर छींटे देते हैं। छींटे बहुत हल्के हाथों से ही मारने चाहियें, जिससे आंखों पर कोई चोट न पहुंचे। आयुर्वेद के मतानुसार मुंह में पूरी तरह पानी भरकर प्रतिदिन दिन में तीन बार शीतल जल से अच्छी प्रकार से आंखें धोने से उनमें कोई रोग नहीं होता।

भ्रूमध्य में देखना

पहले सीधे सावधान की स्थिति में सहज भाव से खड़े हो जायें, फिर गर्दन को पीछे झुकालें, जितनी झुक सकती हो अधिक जोर न लगायें। अब आंतरिक बल लगाते हुए दोनों भौहों के मध्य जहां महिलायें बिंदी लगाती है बिना पलक झपकाये, एकटक देखते रहें, जब आंखों में थकावट महसूस हो या आंसू बहने लगें तो आखें बन्द करलें। एक-एक मिनट के अन्तर से आरम्भ में तीन बार इस क्रिया को करें। बाद में पांच बार तक कर सकते हैं। नेत्रों के समस्त रोगों को खत्म करनेवाली यह एक प्रकार की यौगिक क्रिया है।

मालिश एवं टहलना

व्यक्ति के पांवों के तलवों का सीधा सम्बन्ध आंखों से होता है। अतः आंखों में कोई रोग न हो, इसके लिए आवश्यक है कि पैरों के तलवों को हमेशा अच्छी तरह साफ रखा जाये। रात में बिस्तर पर जाने से पहले तलवों में सरसों के तेल की मालिश की जाये। मालिश अधिक देर तक न चले।

साभार : जनसन्देश

लहसुन खाइए—कैंसर भगाइए

—गणेशकुमार पाठक

इलिनायस प्रोद्योगिकी संस्थान, शिकागो के वैज्ञानिक रिचार्ड मून ने लहसुन में डाइ एलाइल डाइसल्फाइड नामक गन्धक यौगिक का परीक्षण चूहों पर किया। इसके बाद इन चूहों को मिथाइल नाइट्रोसो यूरिया नामक कैंसरजनक रसायन के वातावरण में रखा गया। इन परीक्षणों में जो चूहे मिथाइल नाइट्रोसो यूरिया की उपस्थिति में रखे गये थे तथा जिनको डाइएलाइल डाइसल्फाइड से प्रभावित नहीं किया गया था, इनके गले में ट्यूमर की उत्पत्ति ४६ प्रतिशत तक पाई गई। किंतु जिन चूहों को डाइएलाइल सल्फाइड की खुराक देने के बाद मिथाइल नाइट्रोसो यूरिया के माध्यम में रखा गया था, उनमें ट्यूमर की शिकायत मात्र १४ से १६ प्रतिशत तक ही पाई गई।

उल्लेखनीय है कि लहसुन में कम से कम ६० रसायन पाये जाते हैं, जिनमें से कई सल्फर यौगिक हैं। टेक्सास विश्वविद्यालय के माइकेल वारगोविच, जो अमरीका के राष्ट्रीय कैंसर संस्थान के लिए लहसुन में विद्यमान यौगिकों का अध्ययन कर रहे हैं। उनका कहना है कि हमारे खाद्य पदार्थों में शायद लहसुन ही पहला ऐसा पदार्थ है जिसके उपयोग से कैंसर की रोकथाम होने के ठोस आधार मिले हैं।

साभार : दैनिक हिन्दुस्तान

आर्यसमाज पनिहार (हिसार) का उत्सव सम्पन्न

दिनांक ९-१० मार्च, ९२ को आर्यसमाज पनिहार का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी रुद्रवेश जी, जगवीर, पं० रणवीरसिंह शास्त्री, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी आदि ने देश की समस्याओं, शराबबन्दी, राष्ट्ररक्षा, नवयुवकों तथा विद्यार्थियों का कर्तव्य, नारी-शिक्षा आदि पर विस्तार से विचार रखे। इसी अवसर पर एम० पी० विद्वान अतिरिक्त उपायुक्त हिसार तथा डा० दुलसिंह एच० ए० यू० हिसार आदि ने भी भाग लिया। इसके अतिरिक्त पं० ईश्वरसिंह, पं० चन्द्रभान, पं० रामनिवास तथा स्वामी रुद्रवेश जी ने समाज-सुधार के शिक्षाप्रद भजन रखे। श्री बदलूराम प्रधान आर्यसमाज मुकलान व सूबेसिंह आर्य मुकलान का इस उत्सव में विशेष योगदान रहा। गांव गुवांड के हजारों नरनारियों ने बढ़-चढ़कर उत्सव में भाग लिया। लोगों ने दिल खोलकर दान दिया। हवन पर २०-२५ नवयुवकों ने यज्ञोपवीत लिये।

— इन्द्रसिंह आर्य
प्रचारमन्त्री आर्यसमाज पनिहार, हिसार

आर्यवीर दल सुन्दरकलां जि० जींद का चुनाव

प्रधान—डा० महावीर, उपप्रधान—श्री रामफल, मन्त्री—सुरेन्द्रकुमार, उपमन्त्री—श्री रमेशकुमार आर्य, दिलबाग शास्त्री।

वेदप्रचार मण्डल जि० जींद की बैठक

वेदप्रचार मण्डल जि० जींद की मासिक बैठक ५ अप्रैल, ९२ को दोपहर बाद १ बजे आर्यसमाज उचाना मण्डी में होनी निश्चित हुई है। —प्रो० ओमकुमार आर्य सह-संयोजक

२३ मार्च, १९३१ को हुए उनके बलिदान दिवस पर—

जब वे फांसी चढ़े

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

बलिदानी वीर किसी भी राष्ट्र के आधार होते हैं। उन्हीं की शक्ति पर राष्ट्र उठा करते हैं व उनका निर्माण होता है। अत एव जो जाति अपने शहीदों का सम्मान करती है वह अजेय होती है और शहीदों को भुला देनेवाली जाति अपनी स्वतन्त्रता को भी खो बैठती है।

आज महान् बलिदानी वीर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को भुलाया जारहा है। कटक में उनका जन्मस्थान का मकान आज नष्टप्राय हो गया है। अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का सारा ही परिवार देश की बलिवेदी पर अपने जीवनों की आहुतियां देगया, किन्तु सिवाय आर्यसमाज के उनका नाम लेनेवाला भी भारत सरकार की तरफ से कोई भी नहीं है। गतवर्ष उनकी बहन शास्त्री देवी का, जिनकी अब मृत्यु होगई है, उनका भी दिल्ली में अपमान किया गया था। कितने ही शहीद हैं जिन्होंने अपने बलिदान देकर देश की स्वतन्त्रता के भवन में अपनी हड्डियों और खून को गारा बनाकर आजादी की नींव रखी थी। किसी स्वतन्त्रता सेनानी ने वर्तमान परिस्थितियों से निराश होकर ठीक ही कहा था—

उनकी समाधि पर एक दीपक भी नहीं,
जलते थे जिनके खून से चिराये वतन।
आज जगमगाते हैं मकबरे उनके,
जो चुराते थे शहीदों के कफन॥

भारत मां की पराधीनता की बेड़ियां काटने में सर्वाधिक योगदान आर्यसमाज के वीर कर्मठ कार्यकर्ताओं का रहा है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का प्रेरणा-स्रोत आर्यसमाज ही रहा है। यह कहना भारतीय इतिहास के विस्मृत स्वर्णपृष्ठों का उद्घाटन करना है।

सामाजिक सुधार और स्वतन्त्रता के संघर्ष के प्रत्येक क्षेत्र में आर्यसमाज की दिव्य-ज्योति ने प्रकाशित किया था और देश, धर्म के लिए गोलियां खाकर, विष पीकर, फांसी के फन्दे पर हंसते-हंसते चढ़कर आर्यवीरों ने बलिदान का दिव्य-पथ प्रशस्त कर मां भारती की मंगलमय आरती उतारी थी

बलिदानी वीरों के प्राणों का संगीत जिस गीत को गुंजाता है उसकी स्वरलहरी में अजेयशक्ति संचारित हो जाती है। उनकी प्रतिभा की प्रतिमा का पवित्र प्रकाश लोगों के मनमन्दिर में श्रद्धा का प्रतीक बनकर अजस्र गौरव का प्रेरक बन जाता है।

आर्यसमाज राष्ट्र के शहीदों के प्रति सदा ही प्रणत रहा और आगे भी रहेगा। आज के राष्ट्रीय संकट की घड़ी में भी देश पर छायी सभी प्रकार की कालिमा को धोने को समर्थ हो सकता है शहीदों का स्मरण। उनके देश के लिए समर्पित जीवनों से राष्ट्र के लोग प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। जिन की स्वार्थ भावनाओं का परित्याग कर राष्ट्र को सभी प्रकार के संकटों से उबार सकते हैं। अत एव आज आवश्यकता है त्याग, बलिदान और राष्ट्र के प्रति सर्वस्व समर्पण की। हमारे कार्यों में राष्ट्रहित सर्वोपरि हो। अपने स्वार्थ जलाकर, राष्ट्र पर अपनी बलि चढ़ाकर, अपने को कुन्दन सुगन्धित सुवर्ण बनाकर राष्ट्र कल्याण में जुट जावें, इसी भावना की आज देश को आवश्यकता है।

जिन कर्मयोगी राष्ट्रनायकों ने महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के पवित्र सन्देश को हृदयंगम कर स्वतन्त्रता की देवी को रिझाने के लिए अपनी मदमाती जवानी, अपना बहुमूल्य जीवन सहर्ष समर्पित कर दिया और जिनके पावन स्मरण से देश की तरुणाई राष्ट्रसेवा के पुनीत-पथ पर अग्रसर होकर चुनौतियों की विभीषिका से लोहा लेने और भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय लिखने के लिए एकजुट होकर कटिबद्ध हो सकती है उन्हीं नवयुवकों में से हैं—राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह।

वीर भगतसिंह का जन्म १९०७ में खटकर ग्राम, जिला जालन्धर पंजाब में हुआ था। इनके दादा सरदार अर्जुनसिंह महर्षि दयानन्द के उपदेशों और सत्यार्थप्रकाश से प्रभावित होकर आर्यसमाज में सम्मिलित हुए थे। भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह पर भी ऐसा रंग चढ़ा कि वे भी आर्यसमाज के प्रचारक ही बन गये थे। आर्यसमाज द्वारा स्थापित अनाथाश्रम में काम करते थे। इनके चाचा सरदार अजीतसिंह ने तो महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज से ही देशभक्ति का पाठ पढ़ा था। १९०७ में आपने लाला लाजपतराय से मिलकर पंजाब प्रांत में क्रांति की ज्वाला जलाई थी। अंग्रेजी सरकार द्वारा किसानों पर लगाये टैक्स के कारण आपने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध नारा दिया था—पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा। इसी कारण से लाला जी व अजीतसिंह को मांडले जेल में भेजा गया था।

ऐसे एक आर्यपरिवार में जन्म लेकर भगतसिंह ने जीवन प्रारम्भ किया। दादा अर्जुनसिंह ने आर्यपरम्परा के अनुसार भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार आर्यसमाज के महोपदेशक पं० लोकनाथ जी से करवाया, उन्होंने ही उसे गुरु मन्त्र दिया। लाहौर के डी० ए० वी० कालेज में व नेशनल कालेज में भाई परमानन्द व जयचन्द्र विद्यालंकार जैसे गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की और ये ही इसकी आजादी लेने की भावनाओं के प्रेरक गुरु थे।

ऐसे ही सुखदेव भी प्रसिद्ध आर्यसमाजी थापर परिवार के रत्न थे। आप हर बात में भगतसिंह के सहयोगी, सांडर्स हत्याकांड में भी साथी, सभी मुकदमों में भी शामिल, फांसी व अन्त्येष्टि तक भी साथ रहनेवाले बलिदानी युवक थे। कालेज में पढ़ते समय ही भगतसिंह का अनेक क्रांतिकारियों से परिचय होगया था। जिनमें सुखदेव सबसे उग्र विचारधारा के थे। भगतसिंह से सुखदेव की मित्रता होगई थी। साथ ही भगवतीचरण व चन्द्रशेखर से भी भगतसिंह का पूरा परिचय होगया था। देश में क्रांतिकारियों ने अपने संगठन बना लिये थे, जिनमें रामप्रसाद व बिस्मिल ने भी प्रमुख भूमिका निभाकर १९ दिसम्बर, १९२८ में अपना बलिदान दे दिया था।

२० अक्तूबर, १९२८ में साईमन कमीशन लाहौर आया था। लाला लाजपतराय ने कमीशन का बहिष्कार करने के लिए विशाल जलूस लाहौर में निकाला। उसमें पुलिस कप्तान अंग्रेज स्काट ने लाला जी पर लाठियों से प्रहार किया। १७ नवम्बर, १९२८ को लाला जी का बलिदान होगया। १७ दिसम्बर, १९२८ को लाला जी की मृत्यु का बदला लेने के लिए राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह व चन्द्रशेखर ने पुलिस सुपरिन्टेंडेंट मिस्टर सांडर्स की हत्या करदी। ८ अप्रैल, १९२९ को भगतसिंह व बी० के० दत्त ने असेम्बली में बम फेंके और उन्होंने वहां खड़े होकर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' 'साम्राज्य का नाश हो' नारे लगाये। वे दोनों गिरफ्तार होगये। उन्हें लाहौर जेल में रखा गया। जेल में क्रांतिकारी बन्दियों के साथ सद्व्यवहार की मांग को लेकर यतीन्द्रदास ने ६२ दिन का अनशन किया। वे भी १९३१ में अनशन के कारण बलिदान होगए। २७ फरवरी, १९३१ को पुलिस से लड़ते हुए इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में चन्द्रशेखर भी शहीद होगए।

लाहौर षड्यन्त्रकांड व असेम्बलीकांड का फैसला अक्तूबर, १९३० में सुनाया गया। इसमें भगतसिंह राजगुरु, सुखदेव को फांसी की सजा दीगई। उस समय कांग्रेस के लोगों ने गांधी से मांग की थी कि लार्ड इरविन से समझौते की शर्तों में भगतसिंह व उसके साथियों की सजा रद्द करने की मांग भी रखी जावे। गांधी जी ने इसे स्वीकार न किया। यदि गांधी जी इसे स्वीकार कर लेते तो इनकी सजा रद्द हो जाती। इस प्रकार भारत की आजादी के लिए लड़ते हुए ये तीन वीर २३ मार्च

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सिरसा तथा फरीदाबाद में शराब के ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशन के अनुसार ७ मार्च, ९२ को सिरसा में आबकारी एव कराधान कार्यालय के नये पंचायत घर के सम्मुख सभा के उपप्रधान एवं सिरसा स्थित आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं आर्यसमाज के प्रधान डा० रणधीरसिंह सांगवान, श्री सत्यपाल आर्य मन्त्री, प्रिंसिपल दलीपसिंह, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा, विद्यालय के छात्रों और आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के साथ सरकार की आबकारीनीति के विरुद्ध प्रदर्शन किया तथा शराब के ठेके बन्द करो, शराब पीना छोड़ दो आदि के नारे लगाये।

फरीदाबाद :

इसी प्रकार १७ मार्च को सेक्टर-६ फरीदाबाद स्थित आबकारी एवं कराधान कार्यालय के सामने जहां शराब के ठेकों की नीलामी हो रही थी, सभा के निर्देशन में जि० फरीदाबाद के आर्यसमाजों, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल गदपुरी के अध्यापकों एव छात्रों ने शराबबन्दी प्रदर्शन किया। प्रात: १० बजे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ से एक टैम्पो में शराबबन्दी बैनर, ओ३म्-ध्वज तथा ध्वनिविस्तारक लगाकर स्वामी श्रद्धानन्द बस्ती, गुरुकुल औद्योगिक क्षेत्र, ख्वाजा सराय, आर्यनगर, बड़खल मार्ग, पुराना फरीदाबाद, लघु सचिवालय मार्ग पर शराबबन्दी के नारे लगाते हुए आबकारी कराधान कार्यालय पहुंचे। वहां पूर्व ही आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं ने धरना दे रखा था। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के प्रचारवाहन पहुंचने पर वहां शराबबन्दी सम्मेलन का रूप धारण कर गया। सभा के उपदेशक प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, प० चन्द्रपाल शास्त्री, पं० धर्मवीर आर्य, शराबबन्दी संघर्ष समिति के श्री रामधारी शास्त्री, श्री शिवराम वाचस्पति, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के संस्कृत अध्यापक श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी आदि के शराबबन्दी पर भाषण तथा सभा के भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द, प० मुरारीलाल बेचैन, पं० चिरंसिंह आर्य एवं श्री रामचन्द बेधड़क के भजन हुए।

शराब के ठेकेदारों एव उनके सहयोगियों पर आरोप लगाये गये कि वे अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु जनता को जहररूपी शराब बेचकर राष्ट्रविरोधी कार्य कर रहे हैं। शराब के कारण हमारी प्राचीन वेदिक संस्कृति एव अर्थव्यवस्था नष्ट हो रही है, परन्तु सरकार शराब की बिक्री से होनेवाली आमदनी के लालच में ठेकों की नीलामी करके अकल्याणकारी पग उठा रही है। सम्मेलन के पश्चात् जिला उपायुक्त महोदय को हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का ज्ञापन सभा के प्रतिनिधियों ने दिया तथा वापसी पर भी मार्ग में शराबबन्दी नारे लगाते हुए गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पहुंच गये।

—केदारसिंह आर्य

जिला भिवानी के ग्रामों में शराबबन्दी अभियान में प्रगति

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों, उपदेशकों एवं आर्य सरपंचों के प्रयत्नों से जिला भिवानी के ग्राम मितायल, धनाना, बड़ेसरा, घुसकानी तथा बामला में पूर्ण शराबबन्दी लागू करदी गई है। यहां शराब बेचनेवालों पर १०००) दण्ड, पीनेवालों पर ५००) दण्ड तथा इसकी सूचना देनेवाले को १००) इनाम देने का निर्णय किया गया है। सभा की ओर से मनाई जारही पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह की तैयारी हेतु इन ग्रामों में पं० जयपाल आर्य की भजन-मण्डली ने शराबबन्दी प्रचार किया। शराबबन्दी शताब्दी समारोह का सम्मिलित कार्यक्रम है। सभा के उपदेशकों द्वारा प्रत्येक ग्राम में प्रचार कराने का निश्चय किया गया है। इस प्रकार जिला भिवानी में शराबबन्दी अभियान तथा शताब्दी प्रचार-कार्य प्रगति पर है।

—सत्यनारायण आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती का योगदान

महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम राष्ट्र निर्माताओं में हमेशा आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में जागृति का शंखनाद किया था। उन्होंने देशवासियों को स्वराज्य के महत्त्व से भी अवगत कराया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के हृदय में भारत को स्वाधीन कराने की बड़ी प्रबल इच्छा थी। 'स्वराज्य' की उनकी अवधारणा नितांत मौलिक थी। वे आपसी वैमनस्य को समाप्त करने, समान पूजा पद्धति, समान शिक्षा और एकभाषा के पक्षधर थे। एक शताब्दी से अधिक समय हो चुका है, परन्तु समाज में उसी प्रकार की कुरीतियां आज भी विद्यमान हैं, बल्कि समाज और भी ज्यादा टुकड़ों में बंट गया है। आये दिन प्रांतीयता, क्षेत्रीयता, जातियता, भाषा और समुदाय के नाम पर झगड़े होते रहते हैं। महर्षि दयानन्द ने जातिभेद और अस्पृश्यता की बुराइयों को दूर करने के लिए घोर परिश्रम किया था।

वह युग-प्रवर्तक महापुरुष थे। उन्होंने दासता की जंजीर से जकड़े भारत के शरीर में अपनी अजेयशक्ति, अविचल कर्मण्यता और पराक्रम फूंक दिया था। उनमें विचारक और नेता की उपयुक्त प्रतिभा और कई दुर्लभ गुण विद्यमान थे। उनमें प्रतिभाशाली नेतृत्व और समन्वित कर्मशील विचारणा का अद्भुत संगम था।

स्वामी दयानन्द ने अस्पृश्यता के अन्याय को सहन नहीं किया। उनसे अधिक अस्पृश्यों के अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक उनके जैसा दूसरा कोई नहीं हुआ।

भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में महर्षि दयानंद सरस्वती ने बड़ी उदारता और साहस से काम लिया। आर्यसमाज ने कन्या पाठशालायें खोलीं। आज सर्वत्र कन्याओं को पढ़ने की सुविधा मिल चुकी है और महिलायें विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय योगदान कर रही हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुरातन वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रतिपादन किया। हमारी वर्ण-व्यवस्था जन्म पर आश्रित होगई थी। इस व्यवस्था में दलितवर्ग का स्थान बहुत ही नीचा बन चुका था। महात्मा गांधी ने आर्यसमाज से प्रभावित होकर हरिजनोद्धार का कार्यक्रम बनाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद को ही परम प्रमाण माना। वेद स्वतः प्रमाण है। महर्षि ने वेदों के उद्धार के लिए अत्यधिक परिश्रम किया। महर्षि के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप आज वेदों का अध्ययन भारत में ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में किया जारहा है। महर्षि दयानन्द की यह धारणा कि वेद में धर्म और विज्ञान दोनों की सच्चाइयां पाई जाती है कोई कल्पित बात नहीं है। वेदों की सम्पूर्ण अन्तिम व्याख्या कोई भी हो, महर्षि दयानन्द का यथार्थ के साथ जोड़ने का प्रयास सदा सराहा जाएगा।

उस समय की मिथ्याज्ञान की अव्यवस्था और अस्पष्टता के कोहरे में यह उनकी ऋषि दृष्टि थी जिसने सच्चाई को निकाल लिया और उसे वास्तविकता के साथ बांध दिया। समय ने जिन द्वारों को बन्द कर रखा था उनकी चाबियों को उसने पा लिया।

स्वामी दयानन्द ने सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ी। शिक्षा और सत्यधर्म के लिए उन्होंने अपनी मौलिक व्याख्या प्रदान की। जिन्होंने उनका घोर विरोध किया था, वे भले ही शब्दों में उनका आभार न मानें, पर कार्यरूप में उनका अनुसरण कर रहे हैं। अनेक सामाजिक, राजनैतिक कार्यक्रम इसके स्पष्ट एवं सबल प्रमाण हैं।

(सामयिकी, आकाशवाणी से साभार)

—डा० धर्मपाल

महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज	[illegible] जि० भिवानी	२१ से २३ मार्च
”	बहू अकबरपुर जि० रोहतक	२४ से २५ ”
”	तेवड़ी जि० सोनीपत (यजुर्वेद पारायण यज्ञ)	२५ से २९ ”
”	ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२७ से २९ ”
”	फोब	२७ से २९ ”
”	गुरुकुल भैंसवाल जि० सोनीपत	२८-२९ ”
”	बाकनेर निकट नरेला	२९ मार्च से १ अप्रैल
”	मनाना जि० पानीपत	२९ से ३१ मार्च
”	गुरुकुल मटिण्डू जि० सोनीपत	२७ से २९ ”
”	बरोटा जि० करनाल	२७ से २९ ”
”	नरवाना जि० जींद	३ से ५ अप्रैल
”	माडल टाउन सोनीपत	३ से ५ ”
”	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	३ से ५ ”
”	मुवाना जि० जींद	३ से ५ ”
”	श्रद्धानन्द नगर पलवल जि० फरीदाबाद	१० से १२ ”

—सुदर्शनदेव आचार्य
वेदप्रचाराधिष्ठाता

शराब विक्रेता की पिटाई

गतमास राजपुर जिला सोनीपत में एक शराब के ठेकेवाला ठेकेदार स्कूटर पर शराब सप्लाई करने आता था। राजपुरा के आर्यों ने उसका पीछा करके एक दिन उसको पकड़ लिया और उसे खूब पीटा एवं सारी बोतलें फोड़दीं और उसका स्कूटर छीन लिया। कई दिन के बाद जब शराब के ठेकेदार ने यह नेम कर लिया कि इस गांव में कभी शराब सप्लाई नहीं करूंगा, तब स्कूटर उसे दिया। १४-३-९२ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से सोनीपत में शराब की नीलामी के विरुद्ध प्रदर्शन किया गया। उसमें राजपुर आर्यसमाज के प्रधान बालकिशन और कोषाध्यक्ष धर्मसिंह उसमें भी सम्मिलित हुए। आज ऐसे साहसी आर्यों की आवश्यकता है।

—रतनसिंह आर्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

१९३१ को लाहौर जेल में प्रातः ७ बजकर २३ मिनट पर इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाते हुए साम्राज्यवाद का नाश हो, जोरों से जयघोष करते हुए और भगवान् से बिस्मिल के शब्दों में प्रार्थना करते हुए फांसी पर चढ़ गए।

इलाही वो भी दिन होगा, जब अपना राज देखेंगे।
अपनी जमीं होगी और अपना आसमां होगा॥
शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मिटनेवालों का यही बाकी निशां होगा॥

पाश्चात्य दासता का बोझ

हमारा नववर्ष अंग्रेजीयत की चकाचौंध में हम अपनी पुरानी संस्कृति को विस्मृत करते जारहे हैं। प्रतिवर्ष नववर्ष की शुभकामनायें तथा बधाई सन्देश भेजकर हम प्रसन्न होते हैं और तनिक भी विचार नहीं करते कि हमारा वास्तविक वर्ष कब से शुरु होता है। जब तक आनेवाली पीढ़ियों को यह न बताया जाए कि हमारा नववर्ष कब और क्यों शुरु होता है तो यह परम्परा चलती रहेगी और हमारा वास्तविक स्वरूप विकृत हो जाएगा। ईसा से पूर्व भारत के उत्तरी-उत्तर, पश्चिमी भू-भाग पर कई गणराज्य थे जो अपने गणाधीश का प्रजातन्त्रीय ढंग से चयन करते थे। इन गणराज्यों में मध्यप्रदेश में स्थित मालवा का गण-राज्य था, जिसके गणाधीश या गणपति प्रजापालक न्यायप्रिय और शिरोमणि विक्रमादित्य हुए हैं। इनकी राजधानी उज्जैन नगरी आज भी अपने अतीत के गौरव को छुपाये हुए है। मालवा गणराज्य के नेतृत्व में वीर विक्रमादित्य ने शकों को जो विदेशी आक्रांता थे उनको युद्ध में परास्त किया और भारत भू-भाग में से उन्हें खदेड़ दिया। उसके पराक्रम और शौर्य का मुकाबला ये विदेशी आक्रांता न कर सके। विजयश्री इस महान् योद्धा को प्राप्त हुई। इसी खुशी में बैशाखी के दिन एक नये सम्वत् का शुभारम्भ किया गया जो विक्रम सम्वत् के नाम से जाना जाता है। यह ईसाइयों के पैगम्बर ईसा मसीह के जन्म से ५७ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ।

बैशाखी किसानों का पर्व है। इस समय उत्तर-पश्चिम भारत में कृषि की फसल पककर तैयार हो जाती है और इस पर्व को सभी कृषक हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। पंजाब में भंगड़ा और नृत्य करते हैं। इसी दृष्टि से हम सबके लिए यह एक महत्त्वपूर्ण दिन है। सारा देश कृषि पर आधारित है। सारा देश कृषि की कमाई खाता है। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, कीड़े-मकोड़े कृषि पर आश्रित हैं। शहरों की अटालिकायें बड़े-बड़े कारखाने, व्यापारियों के व्यापारिक इदारे सब कृषक के ऊपर अवलम्बित हैं। फल, मेवे, साक-सब्जी, दूध-घी, मक्खन, दाल-भात, वस्त्र, औषधियां सब कृषक के द्वारा ही पैदा होती हैं। अतः भारतवर्ष जो एक कृषि-प्रधान देश है और जिसकी समृद्धि कृषि पर निर्भर करती है। हमारे पूर्व प्रधानमन्त्री मान्यवर लालबहादुर शास्त्री ने देश को जय जवान जय किसान का नारा दिया था। विक्रम सम्वत् वीरता पौरुषता और देश की आर्थिक समृद्धि का सूचक है। जबकि पहली जनवरी हमारी दासता का सूचक है, हमारी बुद्धिहीनता का सूचक है, हमें लकीर का फकीर बनाता है, इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय नया वर्ष होते हुए भी अपने आत्मसम्मान और गौरव के लिए १३ अप्रैल बैशाखी का दिन ही हमारे नये वर्ष के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। हम इसके महत्त्व को जानें तथा २०४९वां नया वर्ष बैशाखी का दिन हर्षोल्लास के साथ मनायें और अपने वीर पुरखाओं की याद बनाये रहें।

—प्रि० होशियारसिंह
संस्थापक सचिव एस० सी-आर० ई० टी०
कंझावला, दिल्ली-८१

सम्पादक के नाम पत्र—

संग्रहणीय विशेषांक

सर्वहितकारी का 'ऋषिबोध विशेषांक' प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। इस पत्रिका के विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है। यह अंक भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
मन्त्री आर्य युवक परिषद् गोहाना (सोनीपत)

हिन्दी का प्रयोग किये जाने की आवश्यकता

अब भारत सरकार और हिन्दी-भाषी राज्यों की सरकारों द्वारा अपने प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग के लिए जोर दिया जारहा है। एक स्वतन्त्र राष्ट्र में ऐसा किया जाना जरूरी भी है। व्यापारियों और उद्योगपतियों आदि का भी देश की स्वतन्त्रता में उल्लेखनीय योगदान रहा है। आशा है उसी परम्परा में वर्तमान पीढ़ी के व्यापारी और उद्योगपति भी अपने पूर्वजों का अनुसरण करेंगे तथा यथासम्भव हिंदी का प्रयोग करके सरकारी प्रयत्नों को बढ़ावा देंगे। राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिंदी का प्रयोग राष्ट्रनिर्माण में एक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक कार्यक्रम है। इस प्रकार वे उत्पादों की लोकप्रियता भी बढ़ा सकेंगे। कुछ व्यावहारिक सुझाव निम्न प्रकार हैं—

१) सामान्य जनता हिंदी को भली-भांति समझती है। दक्षिण और पूर्व के राज्यों में भी अब काफी अधिक संख्या अंग्रेजी जाननेवालों की अपेक्षा हिंदी जाननेवालों की है। अतः अपने माल को लोकप्रिय बनाने के लिए यह जरूरी है कि आप अपने विज्ञापन हिंदी पत्र-पत्रिकाओं और हिंदी स्मारिकाओं आदि में भी दें और वे हिंदी में ही दिये जायें। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं आदि के पाठकों में ऐसे कम ही व्यक्ति हैं जो अंग्रेजी के माध्यम से विज्ञापन को पूरा समझ सकें।

२) आप यह चाहेंगे कि आपकी फर्म/कम्पनी का नाम तथा आपके उत्पाद (प्रोडक्ट्स) अधिक से अधिक लोकप्रिय हों। इस दृष्टि से यह उचित होगा कि आप अपने समस्त उत्पादों पर और उनके पैकेटों पर उनका नाम, प्रयोग करने का तरीका, कम्पनी तथा फर्म का नाम आदि हिंदी में भी छपवायें। अब भारत सरकार ने भी अपने सभी उत्पादों पर विवरण हिंदी में भी दिये जाने अनिवार्य कर दिये हैं। दिल्ली के सैकड़ों शाखाओंवाले सुपर बाजार की थैलियां अब केवल हिंदी में छपने लगी हैं और दूध के धातु के टोकन सरकारी मदर डेरी द्वारा केवल हिंदी में बनवाये जारहे हैं।

३) आप अपने नाम के बोर्ड, अपनी लेखन तथा प्रचार सामग्री को हिंदी में ही बनवायें, क्योंकि अंग्रेजी को समझ सकनेवाले मात्र २-३ प्रतिशत ही लोग हैं। चाहें तो साथ में अंग्रेजी अथवा अन्य भाषा का भी प्रयोग कर सकते हैं।

४) सम्भवतः आपको विदित होगा कि देवनागरीलिपि के माध्यम से भेजे जानेवाले तार रोमनलिपि के मुकाबले सस्ते पड़ते हैं और लिखने में आसान भी हैं। अतः निवेदन है कि अपने तार भी देवनागरी में ही भेजें। इसमें पैसों की भी बचत होगी।

अनुरोध है कि आप अपने मित्रों तथा सहयोगियों को भी ऐसा करने की प्रेरणा दें। निर्णय से मुझे भी अवगत करा सकें तो हम उसकी जानकारी अन्य को भी दे सकेंगे।

आपका
धर्मपाल
प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी मस्तानानन्द सरस्वती का निधन

आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी व स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी मस्तानानन्द सरस्वती का ९३ वर्ष की आयु में खिड़वाली(?) हस्पताल गोहाना (सोनीपत) में गतदिनों स्वर्गवास होगया। स्वामी जी कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। बाल्य अवस्था में ही स्वामी जी आर्य-समाज के प्रभाव में आकर कट्टर आर्यसमाजी बन गये थे। उन्होंने सारी उमर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगादी। उन्होंने कुछ वर्ष अपने गांव बरोदा में एक वैदिक पाठशाला भी चलाई। पूज्य स्वामी जी एक कुशल वैद्य भी थे। आर्यसमाज के प्रत्येक सत्याग्रह और आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उनका अन्तिम संस्कार पं. रामसुखराम शास्त्री ने वैदिकरीति से करवाया। शवयात्रा में आर्यसमाज बरोदा, आर्यसमाज गोहाना मण्डी, स्वतन्त्रता सेनानी साथी और आसपास देहात के लोग शामिल हुए। कुछ वर्षों से स्वामी जी अपने गांव बरोदा में आर्यसमाज की स्थापना करके वहीं आर्यसमाज मन्दिर में रह रहे थे। स्वामी जी का पूर्व नाम पं० दुलीचन्द शर्मा था।

—मन्त्री आर्यसमाज बरोदा गोहाना, सोनीपत

गुरुकुल धीरणवास (हिसार) का उत्सव सम्पन्न

दिनांक २२-२३ फरवरी, ९२ को गुरुकुल धीरणवास का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी जगतमुनि, स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी सुमेधानन्द, महात्मा आनन्द मुनि, श्री रणवीर शास्त्री, प्रो० ओमकुमार, प्रो० रामविचार, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, प्रि० डा० रूपरेखा तथा मेजर करतारसिंह आर्य आदि ने वेदशिक्षा, गुरुकुल प्रणाली का महत्त्व, आर्यसमाज का गौरवमय इतिहास तथा शराबबन्दी बारे विस्तार से विचार रखे तथा आबकारी एवं कराधान आयुक्त श्री राधेश्याम शर्मा हिसार ने भी महर्षि को युग-पुरुष बताया और उनके रास्ते पर चलने का आग्रह किया। गुरुकुल को ११ हजार रुपये दान दिया। गुरुकुल आर्यनगर व गुरुकुल धीरणवास के छात्रों के भजन व व्यायाम पीटी का प्रेरणादायक कार्य हुआ।

इसके अतिरिक्त पं० ओमप्रकाश वर्मा, पं० रामनिवास तथा म० फूलसिंह आर्य के शिक्षाप्रद भजन हुए। मंच का संचालन क्रांतिकारी जी ने कुशलतापूर्वक किया। साथ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा दादरी (भिवानी) में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी की निर्वाण शताब्दी जो १५-१६-१७ मई, ९२ को मनाई जा रही है, उसमें बढ़-चढ़कर भाग लेने का आग्रह किया।

—मा० सत्यपाल आर्य

आर्यसमाज बनाया

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सम्वत् अठारह सौ पिचत्तर, दिवस सुहाना आया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने, आर्यसमाज बनाया॥

स्वाभिमान राष्ट्रप्रहरी ने, ध्रुवसम व्रत लिया था।
पावनपथ की खोज लगाने, जहां-तहां भ्रमण किया था॥
लक्ष्य पवित्र प्राप्त करने को, जीवन सुख बिसराया।
आर्यसमाज बनाया॥१

पुण्य भूमि भारत गारत हो रही अविद्या छाई।
ऊंच-नीच और भेदभाव का चलन महा दुखदाई॥
फूंका आर्यजाति में जीवन भीषण कष्ट मिटाया।
आर्यसमाज बनाया॥२

बालविवाह सतीप्रथा पर्दाप्रथा को दूर किया।
मतमतांतर पाखण्डों के गढ़ को चकनाचूर किया॥
वातावरण प्रशांत वेद का सुखद मार्ग दर्शाया।
आर्यसमाज बनाया॥३

रच सत्यार्थप्रकाश काट दिये मतपन्थों के बाजू।
सत्य असत्य तोल दिखलाया लेकर धर्म तराजू॥
कहे 'स्वरूपानन्द' पिया विष अमृत हमें पिलाया।
आर्यसमाज बनाया॥४

शोक समाचार

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर के उपमन्त्री श्री महाजीतदेव के पिता जी श्री मनीराम का देहांत दिनांक २६-१-९२ को होगया। वे ९२ वर्ष के थे। शवयात्रा में भारी संख्या में नगरवासी सम्मिलित हुए। शोक विमोचन सभा का आयोजन दिनांक ५-२-९२ को हुआ। इस अवसर पर श्री वागीश्वर जी आचार्य श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर का मृत्यु, जीवन व कर्मफल विषयक मार्मिक भाषण हुआ व श्री विद्याव्रत शास्त्री रोहतक ने भजन सुनाया। इस अवसर पर परिवार ने १७००० रु० कुछ संस्थाओं को दान दिया। आर्यसमाज रेलवे रोड यमुनानगर को १५०० रु० व श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर को ७५०० रु. का दान इसमें सम्मिलित है।

ऋषि-बोधोत्सव

दिनांक २-३-९२ को आर्यसमाज हांसी की ओर से आर्यसमाज मन्दिर में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रातः ८ बजे हवन किया गया। तत्पश्चात् सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी की अध्यक्षता में एक सभा हुई, जिसमें मानवती कन्या उच्च विद्यालय की छात्राओं का भाषण व भजनों का रोचक कार्यक्रम हुआ। प० विश्वामित्र शास्त्री ने स्वामी जी के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। क्रांतिकारी जी ने अध्यक्षीय भाषण में बुराई छोड़ने तथा अच्छे कार्य करने का व्रत लेकर ऋषि ऋण से अनृण होने पर जोर दिया। इसी अवसर पर प. जबरसिंह खारी के महर्षि की महिमा पर भजन हुए। मंच का संचालन पं० सत्यवीर शास्त्री ने किया। शांतिपाठ के बाद सभी आर्यों ने परिवार सहित प्रीतिभोज किया।

—विजयकुमार आर्य
मन्त्री आर्यसमाज हांसी

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुडी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन०आई०टी०, फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुड़गांव।

ऋग्वेद

यजुर्वेद

वैदिक यतिमण्डल की प्रेरणा और सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक
के तत्त्वावधान में

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

एवं

पूर्ण नशाबन्दी अभियान

चरखी दादरी (जिला भिवानी) में १५, १६ व १७ मई, ९२

उपकार्यालय : आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी (जि० भिवानी, हर.)

मान्यवर !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिये समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिनांक १५, १६, १७ मई को चरखी दादरी जिला भिवानी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, विद्वान् वक्ता तथा गायक पधारेंगे और पं० गुरुदत्त के जीवन एवं व्यक्तित्व को उजागर करनेवाले अनेक कार्यक्रम रखे जायेंगे। इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार-गोष्ठियां, कवि सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन, भाषण-प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायेंगी। अत: आपसे निवेदन है कि—

१) आप अपने आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्था से सम्बद्ध सभी महानुभावों को इस अपूर्व समारोह में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें तथा दिवंगत पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये चरखी दादरी (जिला भिवानी) में पधारें।

२) इस विशाल एवं भव्य आयोजन को सफल करने में तन, मन एवं धन से योगदान करें, विशेषत: स्वयं भी आर्थिक सहायता दें तथा अन्यों से दिलावें।

३) अपना सहयोग एवं सुझाव कार्यालय तक अवश्य पहुंचावें तथा यहां से प्रकाशित होनेवाली सूचनाओं और विज्ञप्तियों को जन-जन तक प्रचारित करें।

४) इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के लिए अपना विद्वत्तापूर्ण लेख तथा अपने व्यावसायिक संस्थान का विज्ञापन अवश्य भेजें।

निवेदक :

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	सुमेधानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह
संरक्षक	संयोजक	प्रधान

सूबेसिंह
मन्त्री

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सत्यनारायण
प्रधान आर्यसमाज चरखी दादरी

रजनीश जैसे ढोंगियों ने देश की संस्कृति को ग्रहण लगाया : आर्य

बाबिया/थानेसर

देश में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने तथा दलितों, दीनहीनों और महिलाओं के उत्थान के लिए आज आर्यसमाज की प्रासंगिकता और अनिवार्यता उस समय से भी अधिक है, जब महर्षि दयानन्द ने सामाजिक और धार्मिक अंधकार के खिलाफ आवाज बुलन्द की थी। देश के युवा-वर्ग विशेषकर बालकों में ही आर्यसमाज के गुण भरे जाने चाहिये, ताकि आगामी वर्षों में देश का भविष्य पतन की ओर जाने से थामा जासके।

स्थानीय आर्यसमाज सभा में डी० ए० वी० कालेज चण्डीगढ़ के प्रिंसिपल डा० कृष्णसिंह आर्य ने स्वामी दयानन्द के बोधोत्सव अवसर पर ये विचार रखे। दयानन्द के बौद्धिक जन्म को मनाने के लिए स्थानीय आर्यसमाज द्वारा यह समारोह आयोजित किया गया था। डा० आर्य ने कहा कि यह देश का दुर्भाग्य है कि आज स्वामी दयानन्द विवेकानन्द, विरजानन्द जैसे महात्माओं को बजाये आचार्य रजनीश जैसे ढोंगी लोगों ने देश की संस्कृति को ग्रहण लगा दिया है। आज हर गली में रावण घूम रहा है। अन्धविश्वास, अन्धकार और पाखण्ड के आचार संहिता समाप्त हो रही है। देश में कथित रूप से पढ़े-लिखे लोग भी आडम्बरों और अन्धविश्वासों की गिरफ्त में आजाते हैं। हिमाचल में निरक्षरता के कारण ईसाई मत का प्रचार गरीब हिंदुओं में बढाया जारहा है, लेकिन शहरों में पढ़े-लिखे लोग अनपढ़ों से भी अज्ञान में आगे बढ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द ने प्रत्येक व्यक्ति को पैदाइशी अछूत बताया जो अपने कर्म और गुण के आधार पर समाज में अपना स्थान बना सकता है। कर्म की कुशलता का महत्त्व उन्होंने बताया और ईश्वर के बाद शिक्षा को सबसे अधिक महत्त्व दिया। उन्होंने महिलाओं को समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए शिक्षा ग्रहण करने की बात कही।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग के प्रो० योगेन्द्र यादव ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने अछूतों को समाज में ऊंचा दर्जा दिलवाकर देश के स्वतन्त्रता आंदोलन में भागीदारी के लिए प्रेरित किया था, लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् कुछ लोगों ने उन्ही लोगों के लिए आरक्षण मांगकर उनको फिर अछूत बना दिया। स्वामी जी जीवनभर ज्ञान प्रकाश के लिए शिक्षित होने की बात करते रहे, लेकिन आजादी के बाद ज्ञान-विज्ञान की बढ़ोतरी के बावजूद सामाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वास बढा है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज को अपनी गिरेबान में झांककर अपनी कमियां पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए और इसे बूढ़ों का क्लब बनाये रखने की बजाये बालकों और युवकों को अपनाने के लिये प्रेरित करना चाहिए।

समारोह में श्री ओमप्रकाश आर्य, डा० के० सी० यादव और डा० रामप्रसाद मल्होत्रा ने भी उनके विचार रखे।

साभार : जनसन्देश

दयानन्द पीठ स्थापित

रोहतक (ससे)। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में दयानन्द सरस्वती की पीठ (चेयर) स्थापित करने का निर्णय किया गया है। पीठ आनेवाले सत्र से विधिवत् रूप में काम शुरु कर देगी। यह निर्णय हाल ही में विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद् की बैठक में लिया गया।

पीठ स्थापित होने से अब ऋषि दयानन्द के साहित्य का प्रचार-प्रसार और उनके ग्रन्थों पर शोधकार्य शुरु किया जासकेगा। इलाके के आर्यसमाजियों की पीठ स्थापित करने की लम्बे समय से मांग थी।

साभार : दैनिक नवभारत टाइम्स

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

द्वारा पंजि. नं० ३३२०/७३ — दूरभाष १,९९, ०८, ९९, ०९२

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९   अंक १८   २८ मार्च, १९९२   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां की आचार्या एवं सभा उपप्रधान बहिन सुभाषिणी देवी पद्मश्री का सार्वजनिक अभिनन्दन

रोहतक २२ मार्च—आज यहां स्थानीय छोटूराम पार्क में कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जिला सोनीपत की ८० वर्षीया आचार्या बहिन सुभाषिणी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता कन्या गुरुकुल की प्रथम स्नातिका श्रीमती गार्गीदेवी ने की। इसके आयोजन में कन्या गुरुकुल के कुलपति श्री शेरसिंह मलिक, कु० ज्ञानवती प्राध्यापिका, कु० साहबकौर प्रिंसिपल, डा० शकुन्तला प्रिंसिपल एवं प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार, बा० रघुवीरसिंह तथा कन्या गुरुकुल की पुरानी छात्राओं तथा बहिन जी की शिष्याओं का योगदान उल्लेखनीय रहा।

इस अवसर पर प्रातः १० बजे छोटूराम पार्क के सभागार में हवन की कार्यवाही के पश्चात् कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने मंगलाचरण गीत गाया। मंच पर उपस्थित आर्य नेताओं ने बहिन सुभाषिणी जी को फूलों के हार भेंट कर के अभिवादन किया। सभा के कार्यवाहक मन्त्री डा० सोमवीर ने समस्त हरयाणा की आर्यजनता की ओर से बहिन जी का ५० वर्ष तक निरन्तर गुरुकुल तथा आर्यसमाज की शानदार सेवा करने पर स्वागत करते हुए कहा कि मैंने अपने जीवन में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा बहन सुभाषिणी जी के अतिरिक्त लम्बे समय तक गुरुकुलों की निस्वार्थ सेवा करते अन्य किसी को नहीं देखा। आनेवाली पीढ़ियां इन त्यागी तपस्वी नेताओं को नहीं भूलेंगी और इनके जीवन एवं कार्यों से प्रेरणा प्राप्त करेंगी।

गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर महासभा के प्रधान श्री हृदयराम मलिक, पूर्व प्रधान श्री जगजोतसिंह मलिक, पूर्व सांसद श्री कपिलदेव शास्त्री, पूर्व मन्त्री महासभा श्री महेश्वरसिंह शास्त्री, प्रिंसिपल होशियारसिंह, श्री रामानन्द शालीमार बाग दिल्ली, सभा के कोषाध्यक्ष एवं आर्यसमाज पानीपत के प्रधान श्री रामानन्द सिंहल, श्री जयदेवसिंह मंगोलपुरी दिल्ली, गुरुकुल महासभा के वर्तमान मन्त्री धर्मवीर मलिक, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, श्रीमती राजबाला सोनीपत, पं. प्रभातशोभा विद्यालंकृता स्नातिका कन्या गुरुकुल देहरादून, श्री बलवन्तसिंह एडवोकेट मुजफ्फरनगर (उ० प्र०), श्री किताबसिंह मलिक विधायक, आचार्या शान्तिदेवी लोवा कलां (रोहतक) पं० सुखदेव शास्त्री, कन्या गुरुकुल खानपुर की पूर्व मुख्याध्यापिका श्रीमती प्रियम्वदा, श्रीमती शान्तिदेवी आदि ने सुभाषिणी जी द्वारा कन्या गुरुकुल खानपुर की ५० वर्ष तक निरन्तर सेवा करके गुरुकुल को विशाल रूप देने, अपने पिता भक्त फूलसिंह जी के आदेशानुसार सरकारी नौकरी छोड़कर जीवन भर गुरुकुल सेवा करने के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की।

सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने मुख्य वक्ता के रूप में बहिन जी के अभिनन्दन के लिए सभा की ओर से ५१०० रु० की भेंट देते हुए कहा कि हरयाणा की आर्यजनता को गर्व है कि एक आर्य महिला ने अपने पिता श्री भक्त फूलसिंह की इच्छानुसार (वसीयत) कन्याओं की शिक्षा के प्रचार तथा विस्तार के लिए जीवन भर संघर्ष का जीवन अपनाया है। ऐसी विदुषी बहिन का अभिनन्दन करके एक स्वच्छ परम्परा स्थापित की है। बहिन जी के कारण कन्या गुरुकुल खानपुर को राष्ट्रीय स्तर का विद्यालय बना दिया जहां छात्राओं की संख्या भारतवर्ष में सबसे अधिक है। इसी कारण हरयाणा के इतिहास में बहन जी का प्रथम अभिनन्दन है। वैदिक संस्कृति के अनुसार महिला का दर्जा पुरुषों से अधिक है क्योंकि महिला सन्तान के निर्माण में अग्रणी हैं। इन्होंने भारतीय सभ्यता को जीवित रखा है।

सभा के अन्त में आर्यजगत् के सर्वमान्य वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के अभिनन्दन समिति की ओर से कार की चाबी तथा अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करते हुए आर्यजनता को बहिन जी के शानदार जीवन से प्रेरणा लेने को कहा और उनके पदचिह्नों पर चलकर गुरुकुलों की तन, मन तथा धन से सेवा करनी चाहिए। हमें त्रुटियों को न देखकर गुणों का आदर तथा सम्मान करना चाहिए। बहिन सुभाषिणी ने अपने जीवन में वह शानदार कार्य किया है जिसे स्त्री जाति के इतिहास में सदा स्मरण किया जावेगा। बहिन जी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साथ रहकर शराब बन्दी कार्य करें।

समारोह के अन्त में बहिन सुभाषिणी ने आर्यजनता तथा गुरुकुल की स्नातिकाओं एवं छात्राओं द्वारा किये गये अभिनन्दन के लिए आभार प्रकट किया तथा विश्वास दिलाया कि वे शेष जीवन भर भी गुरुकुल तथा आर्यसमाज की सेवा करती रहेंगी।

—केदारसिंह आर्य

शराबन्दी मुहिम को हाथों-हाथ ले रहे हैं लोग

भिवानी, २१ मार्च (निस)। दो पूर्व विधायकों हीरानन्द आर्य व बलबीरसिंह ग्रेवाल द्वारा चलाये गये शराबबन्दी अभियान को काफी हद तक देहातियों ने स्वीकार कर लिया है। जिले के कुछ गांवों में इस बार आबकारी विभाग द्वारा छोड़े जा रहे शराब के वार्षिक ठेके गांवों वालों के विरोध के कारण छोड़े नहीं जा सके। ग्रामीणों में जागृति के जो आसार नजर आये हैं, उन्हीं की शुरुआत में जिले के कुछ बड़े गांवों बामला, धनाना, मिताथल, इमलोटा, झोजू के अतिरिक्त सांगवानों व स्योराण में शराब पर पूरी तरह पाबन्दी लगा दी गई है।

श्री रामसिंह वर्मा ने बताया कि कुछ गांवों में तो शराब पीने व पिलानेवालों पर तो आर्थिक दण्ड का प्रावधान पंचायतों ने कर दिया है। इन गांवों में से कुछ में शराब पीने पर ५०० रुपये या अवैध शराब बेचने वाले पर एक हजार रुपये के जुर्माने भी लोगों ने अदा किए हैं। पूर्व मंत्री हीरानन्द आर्य ने पत्रकारों को बताया कि आज शराब की हालत यह पहुंच गयी है कि लोकतंत्र का सबसे बड़ा अधिकार वोट भी शराब की बोतलों में बिकने लगा है। आर्य ने तो गांव गांव जाकर नशाबन्दी के खिलाफ पंचायतें कर अलख जगानी शुरू कर रखी है।

बलबीरसिंह ग्रेवाल ने बताया कि लोग अब शराब पीने का संकल्प लेने के लिए स्वयं ही आगे आ रहे हैं। (सा० दैनिक ट्रिब्यून)

हरयाणा के आर्यवीर सैनिक

सभी सम्बन्धित सज्जनों को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल झज्जर की ओर से हरयाणा के वीर शहीदों का सचित्र जीवन परिचय शीघ्र ही प्रकाशित किया जारहा है। इस ग्रन्थ में १९६२ ई० के भारत चीन युद्ध, १९६५ के भारत पाक युद्ध और १९७१ के भारत बांग्ला देश युद्ध में शहीद होनेवाले हरयाणावासी वीर सैनिकों का जीवन परिचय दिया जायेगा।

ऐसे जोवित वीरों की रोमांचकारी गाथा भी प्रकाशित की जायेगी जिन्होंने अद्भुत साहस और शौर्य का प्रदर्शन किया हो। इसलिये पाठकों से नम्र-निवेदन है कि अपने परिचित ऐसे वीर शहीदों का संक्षिप्त परिचय, युद्ध समय की वीरगाथा और शहीद का चित्र भेजकर अनुगृहीत करें। २० वीरों का परिचय प्राप्त हो चुका है। ३० जून, १९९२ तक उक्त सब सामग्री हमें मिल जाये तो सुविधा होगी। क्योंकि श्रावणी पर्व १९९२ तक हम यह ग्रन्थ प्रकाशित कर देना चाहते हैं।

निवेदक :
स्वामी ओमानन्द सरस्वती
गुरुकुल झज्जर, रोहतक

प्रवेश सूचना

आर्यजगत् के लिए प्रसन्नता का विषय है कि 'विश्वभारती शिक्षा संस्थान गुरुकुल लाढौत' जिला रोहतक में उपदेशक विद्यालय का प्रारम्भ होगया है। प्रवेशार्थी संस्था में पहुंचकर सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार के ब्रह्मचारियों का पूरा खर्च संस्था ही वहन करेगी।

नियम :

१ ब्रह्मचारियों का अपने परिवार या माता-पिता आदि बांधवों से कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिये।

२ ब्रह्मचारी आर्ष-अनार्ष कोई परीक्षा नहीं देंगे।

३ ब्रह्मचारियों को अध्ययनकाल में अन्त तक कोई अवकाश नहीं मिल सकेगा।

४ ब्रह्मचारियों की वेशभूषा केवल चद्दर कटिवस्त्र और भोजन सादा होगा।

५ ब्रह्मचारियों की सभी आवश्यकतायें संस्था पूरी करेगी।

६ छात्र अविवाहित एवं दशम कक्षा की योग्यता रखता हो।

७ घर से विरक्त ५०-६० वर्ष के प्रौढों के लिए भी पुरोहित प्रशिक्षण का प्रबन्ध है।

आचार्य
विश्वभारती शिक्षा संस्थान
गुरुकुल लाढौत, रोहतक (हर०)

आर्यसमाज स्थापना दिवस

एवम्

नव-वर्ष मंगलमय हो

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा संवत् २०४९ विक्रमी
४ अप्रैल १९९२ ई० शनिवार
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, ०९३
दयानन्दाब्द १६८

आज से २०४८ वर्ष पूर्व महान् तेजस्वी आर्यसम्राट् वीर विक्रमादित्य द्वारा शकों पर प्राप्त विजय का स्मरण दिलानेवाले नव-वर्ष के इस पावन-पर्व पर हम वर्तमान भारत को आर्थिक व वैचारिक दासता से मुक्त कर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सन्देश प्रसारित कर, प्रजातन्त्र की रक्षा करके वैभवशाली एवं स्वावलम्बी आर्य राष्ट्र बनाने तथा संस्कृत व हिन्दी-भाषा को उन्नत करने हेतु संगठित एवं अनुशासित राष्ट्र-निर्माण का संकल्प लें।

रिवाड़ी तथा गुड़गांव में शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशानुसार २० मार्च, ९२ को आर्यसमाज रिवाड़ी तथा निकट के कार्यकर्त्ताओं ने नीलामी स्थल पर सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल शास्त्री, पं० वासुदेव शास्त्री, पं० धर्मवीर आर्य, पं० मातूराम शर्मा प्रभाकर के सहयोग से आर्यसमाज मन्दिर से जलूस के रूप में शराब विरोधी नारे लगाते हुए हरयाणा सरकार की शराब-नीति का विरोध किया।

जिला उपायुक्त महोदय को शराबबन्दी ज्ञापन देते हुए सभा के अन्तरंग सदस्य एवं आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य, मन्त्री श्री रामकुमार आर्य, श्री सुखराम आर्य, श्री खुशीराम लोक सेवक प्रतिनिधि अखिल भारतीय नशाबन्दी समिति आदि ने हरयाणा सरकार से कहा कि सरकार राजस्व कमाने के लालच में शराब के ठेकों की नीलामी कर आनेवाली पीढ़ी को समाप्त करना चाहती है जो कि निन्दनीय है। पहले शराब पीने तथा पिलानेवालों के हाथ का पानी पीना भी पाप समझा जाता है। परन्तु आज सरकार ग्रामों के चुने हुए उन सरपंचों को इनाम दे रही है जो शराब की अधिक बोतल बेचेंगे। शराब मनुष्यता के नाम पर कलंक है। अत: जिला रिवाड़ी की आर्यजनता सरकार द्वारा शराब (जहर) के ठेकों की नीलामी का कड़ा विरोध करते हुए हरयाणा सरकार से मांग करती है कि भारत सरकार के विधान के निर्देशानुसार जनता के कल्याण का कार्य करे, परन्तु सरकार इससे उलट कार्य करके जनता के अकल्याण का काय करना छोड़कर पूर्ण नशाबन्दी लागू करे और दिन-प्रतिदिन शराब के कारण चरित्र पतन, दुराचार, भ्रष्टाचार तथा धन को बर्बादी हो रही है, उसे रोका जाये, जिससे जनसाधारण को शिष्टजीवन का अवसर प्रदान हो सके।

इसी प्रकार २१ मार्च, ९२ को गुडगांव में सभा के उपदेशक प० वासुदेव शास्त्री, पं० धर्मवीर आर्य, प० चन्द्रपाल शास्त्री, आर्यसमाज जैकमपुरा गुडगांव के मन्त्री श्री पदमचन्द आर्य तथा गुड़गांव के आर्यसमाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा को ओर से श्री ओमप्रकाश चुटानी मन्त्री एवं सवश्री रामानन्द, हरद्वारीलाल, धम्मन, सुखदेव, रामनाथ, जीतराम, राज निर्भीक, धमवीर, स्वामी वेदमुनि, दीवानसिंह, सत्यप्रकाश आर्य, रणजीतसिंह आदि ने शराब के ठेको की नीलामी स्थान आबकारी एवं कराधान कार्यालय पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया और एक ज्ञापन देकर हरयाणा सरकार से मांग की गई कि—

१) रविदास मार्किट में हरिजन बस्ती, निकट पुराना रेलवे मार्ग, (२) नई कालोनी मोड, दुर्गा मन्दिर के निकट, (३) राजकीय उच्च कन्या विद्यालय भीमनगर (४) आर्यसमाज मन्दिर रामनगर के निकट, (५) ग्राम वजीरपुर, (६) ग्राम जमालपुर आदि जहां को जनता शराब के ठेके नहीं खुलवाना चाहती वहां ठेकों की नीलामी न की जावे। क्योंकि आर्यजनता की ओर से दिनांक १३ तथा १५ मार्च, ९२ को कराधान एवं आबकारी अधिकारी महोदय को पूर्व भी ज्ञापन दिया गया था और उन्होंने उचित कार्यवाही करने का आश्वासन दिया था।

एक सुयोग्य आचार्य की तुरन्त आवश्यकता है

जुलाई, १९९२ से प्रारम्भ होनेवाले शैक्षिक सत्र में आर्यसमाज उचाना मण्डी में आर्य संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की जानी है जिसमें पुरुष-वर्ग के लिये शास्त्री स्तर तक की शिक्षा का प्रबन्ध होगा। उक्त प्रस्तावित महाविद्यालय के लिये एक सुयोग्य एवं अनुभवी आचार्य की आवश्यकता है जो शास्त्री की कक्षाओं को पढ़ा सके तथा प्रबन्ध व्यवस्था सम्भाल सके। वेतन योग्यतानुसार। इच्छुक व्यक्ति तुरन्त सम्पर्क करें।

—स्वामी रत्नदेव सरस्वती
कुलपति कन्या गुरुकुल खरल, जींद

श्री मीमांसक जी सत्य को ग्रहण करें

(विरजानन्द दैवकरणि, गुरुकुल झज्जर)

परोपकारिणी सभा अजमेर महर्षि दयानन्द सरस्वती के सभी हस्तलेखों को सुरक्षित रखने और उनके आधार पर शुद्धतम ग्रंथ प्रकाशित करने के लिये अधिकृत है। सभा के वर्तमान अधिकारियों का यह कर्त्तव्य है कि अपने यहां से प्रकाशित होनेवाले ग्रन्थों का सूक्ष्मेक्षिका से निरीक्षण करें और ध्यान रखें कि कोई आपत्तिजनक कार्य न होने पाये।

इसी भावना के अनुसार सर्वप्रथम सत्यार्थप्रकाश सदृश महत्त्वपूर्ण ग्रंथ को शुद्धतम प्रकाशित किया गया है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित इस ३७वें संस्करण पर श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक को घोर आपत्ति है। सो किसी व्यक्ति विशेष को आपत्ति होने के कारण से ही सभा सत्य को छुपा नहीं सकती। यदि सत्य को इसीलिये छुपाया जाये अथवा प्रगट न किया जाये कि असत्य का प्रचार बहुत व्यापक रूप से होगया है, यह असत्य सबके मनमें घर कर गया है, अब इसको दूर करना बहुत कठिन है तो महर्षि दयानन्द जी मूर्तिपूजा, सायण, महीधर आदि के वेदभाष्यों, कौमुदी आदि अनार्षग्रन्थों और विविध मतमतांतरों का खण्डन नहीं करते। वे तो सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा उद्यत रहते थे। यह उनके जीवन में पदे-पदे देखा जा सकता है।

अस्तु! परोपकारिणी सभा अजमेर के पास सत्यार्थप्रकाश की दो हस्तलिखित प्रतियां हैं। उनका प्रकार यह है कि एक प्रति महर्षि दयानन्द जी ने बोलकर लिखवाई थी, उसे वे स्वयं देखकर संशोधित भी कर चुके थे। इस संशोधित प्रति से ही द्वितीय प्रति तैयार कराई गई। इस प्रति को भी महर्षि दयानन्द जी ने संशोधित किया था। इसी द्वितीय प्रति के आधार पर सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित होता रहा है।

दोनों प्रतियों में भेद :

एक प्रति से दूसरी प्रति तैयार करने में मूलरूप से भेद नहीं होना चाहिये। भेद केवल वहीं होना चाहिये जहां महर्षि जी ने स्वयं अपने हाथ से कुछ काटा हो अथवा कुछ नया जोड़ा हो। यदि इससे अतिरिक्त भी दोनों प्रतियों में कोई मूलभूत विशेष अन्तर है तो उसका कारण जानने का यत्न करना चाहिये। सो सभा ने इसका कारण जाना और जानने के पश्चात् भूल का पता लगा लिया। इस सब कार्य का उत्तरदायित्व परोपकारिणी सभा ने सर्वसम्मति से मुझ पर डाला। मैंने इस कार्य को यथाशक्ति, यथामति पूरा किया और ईश्वर कृपा से यह प्रकाशित भी होगया। अब इसका स्पष्टीकरण तथा प० युधिष्ठिर जी मीमांसक की आपत्तियों का निराकरण किया जारहा है।

दोनों प्रतियों में अन्तर का कारण यह है कि मूलप्रति से जब लेखक ने दूसरी प्रति बनाई तो लिखते-लिखते बीच-बीच में अपनी ओर से शब्द डालता गया और प्रतिलिपि करता गया। ये शब्द इतनी चतुराई से डाले गये हैं कि विद्वान् लोग भी उनको तब तक नहीं पकड़ पाते जब तक कि दोनों प्रतियों को अक्षरशः नहीं मिलाया जाये। अनेक स्थल ऐसे भी हैं जहां कि लेखक असावधानी से एक से चार पंक्तियां तक भी छोड़ गया। उन पंक्तियों के अभाव में द्वितीय प्रति को शुद्ध करते समय ऋषि दयानन्द जी को भी संगति लगाने के लिए कठिनाई हुई और कहीं-कहीं संगति लगाते-लगाते असंगति भी होगई। उसी असंगति को शुद्ध मानकर मीमांसक जी जैसे विद्वान् भी अनुचित टिप्पणियां देकर असंगत को संगत सिद्ध करने का निरर्थक प्रयास करते रहे। इसके लिये उचित उपाय यही है कि सन्दिग्ध स्थलों पर दोनों प्रतियों को मिला लिया जाये, इससे सारे समाधान तुरन्त ही सहज भाव से हो जाते हैं।

प्रस्तुत ३७वें संस्करण में यही उपाय अपनाया गया है। प्रतिलिपिकर्त्ता लिखते-लिखते जहां-जहां ऋषि के मूल लेख को छोड़ता है अथवा शब्द, वाक्य, भाव आदि का परिवर्तन करता है, वहीं-वहीं मूलप्रति (जिसे पं० युधिष्ठिर जी रफकापी कहते हैं) का आश्रय लिया गया है। इससे इस ३७वें संस्करण में भाषा, भाव, वाक्यरचना आदि सर्वथा ऋषि दयानन्द जी कृत ही प्रकाशित हुए हैं। जिस किसी महानुभाव को इस विषय में शंका हो वह दोनों प्रतियों को देखकर निश्चय कर सकता है। आजकल परोपकारिणी सभा के अधिकारियों की उदारता से सभी सच्चे जिज्ञासु व्यक्तियों के लिये महर्षि दयानन्द जी के हस्तलेख प्राप्ति सुलभ हैं।

यदि यही सुविधा पहले पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक को मिल जाती अथवा दोनों प्रतियों में अन्तर का पता लग जाता तो यही कार्य सबसे पहले श्री मीमांसक जी के द्वारा ही होता। यह मेरा मत है। परोपकारिणी सभा में रहकर भी इन्होंने इसे क्यों नहीं किया यह तो वे ही जानते होंगे।

महर्षि दयानन्द जी जनहित के अनेक कार्यों में सतत लगे रहते थे। जैसे वेदभाष्य करना, उपदेश करना, शास्त्रार्थ और शंका समाधान करना तथा निजी उन्नति के लिये शरीर साधना और योगाभ्यास आदि करना। इन कार्यों में अति व्यस्त रहने के कारण वे दोनों प्रतियों को अक्षरशः नहीं मिला पाये। ऋषि जी अपने पहले लिखाये हुए शुद्ध वाक्यों को भी दूसरी प्रति में पूर्णतः उसी रूप मे शुद्ध नहीं कर पाये जिन्हें प्रतिलिपिकर्त्ता ने अपनी ओर से परिवर्तित कर दिया था। यदि ऋषि जी पहली प्रति को तभी देख लेते तो भूल तभी पकड़ी जा सकती थी। इसके अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

ऋषि दयानन्द जी के जीवनकाल में तो यह कार्य हो ही नहीं पाया था। उनके देहावसान के पश्चात् भी किसी विद्वान् ने इस कार्य की ओर ध्यान नहीं दिया। सम्भवतः सभी यही समझते रहे कि दोनों प्रतियों में कोई अन्तर नहीं है। प० भगवद्दत्त जी तथा प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने जिस संस्करण को शुद्ध किया है वह भी अधूरा कार्य है। उनके द्वारा क्या और कैसा कार्य किया गया है इसे यदि कोई देखना चाहे तो उस प्रति को देखा जा सकता है जो उन दोनों महानुभावों के द्वारा शुद्ध की हुई है। यह प्रति अभी तक परोपकारिणी सभा के पास सुरक्षित है। इस प्रति को देखने से पता लगता है कि इन दोनों विद्वानों ने भी इधर-उधर देखकर शुद्धि-सी करदी। जितनी गम्भीरता से कार्य होना चाहिये था, वैसा नहीं हो पाया।

ऋषि दयानन्द के मूल लेखों में परिवर्तन उनके लेखक ही किया करते थे। श्री पं० मीमांसक जी का कथन है—"समर्थदान से अतिरिक्त अन्य सभी व्यक्ति हृदय से प्रायः कुटिल थे।" ये कुटिल लोग महर्षि जी के जीवनकाल में ही अपनी दुष्टता करने में सफल होगये थे। उनकी यह कुटिलता सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण में भी पूरी तरह सफल हुई, इसका पता अभी चल पाया है। मुन्शी समर्थदान के आगे भी सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन समय यह कठिनाई आई थी। वे लिखते हैं—"कापी में गड़बड़ी बहुत आती है, असम्बद्धभाषा बहुत आती है।" यहां ध्यातव्य है कि ऐसी शिकायतें मूलप्रति में प्रायः नहीं हैं। यह शिकायत वहीं है जहां प्रतिलिपिकर्त्ता ने गड़बड़ की है। यदि समर्थदान जी भी उसी समय दोनों प्रतियों का मिलान कर लेते तो प्रतिलिपिकारों की पोल तभी खुल सकती थी।

१—पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी मुझ पर आक्षेप करते हुए कहते हैं कि पांडुलिपि (रफकापी) को मूलप्रति कहना क्या उचित है?

पं० युधिष्ठिर जी को शोधकार्य करते हुए लगभग पचास वर्ष होगये, परन्तु आश्चर्य है कि ये अभी तक यही नहीं समझ पाये कि मूलप्रति और रफकापी में कोई अन्तर नहीं होता। पांडुलिपि विज्ञान पर आज अनेक ग्रन्थ मिलते हैं, कम से कम उन्हीं को पढ़ लेते। भारत में सहस्रों हस्तलिखित ग्रन्थ मिलते हैं, वे सभी 'पांडुलिपि' नाम से व्यवहृत होते हैं। ऐसे ग्रन्थों से छपने के लिये जो प्रति तैयार की जाती है वह मुद्रणप्रति (प्रेस कापी) कहाती है। इसलिये पाडुलिपि मूलप्रति (रफकापी) नहीं कहायेगी तो क्या कहलायेगी। यदि मीमांसक जी मूलप्रति को रफकापी कहकर उपेक्षित नहीं करते तो इनके द्वारा सत्यार्थप्रकाश में दीगई सैंकड़ों टिप्पणियां व्यर्थ न होतीं। उन टिप्प-

णियों की निरर्थकता मूलप्रति के पाठ को देखते हुए स्वत: सिद्ध है। इन व्यर्थ की टिप्पणियों से [illegible]

२—ऋषि दयानन्द के आदेश के अनुसार मुन्शी समर्थदान द्वारा लिखी गई सब टिप्पणियां हटा दीगई।

ऋषिवर ने टिप्पणियां लिखने का 'आदेश' नहीं दिया था, अपितु इच्छा पर निर्भर था, यथेष्ट था। जैसे वे समर्थदान जी के लिये लिखते हैं—जहां-जहां उचित समझो वहां-वहां नोट दे देना।......तथा जो तुमको विचारपूर्वक नोट देना हो सो भी देते जाना।

इससे स्पष्ट है कि ये टिप्पणियां ऋषि दयानन्द जी की स्वयं की लिखी न थी। समर्थदान को जहां अपने विचारानुसार नोट देना था, दे दिया। न देने पर भी ऋषि दयानन्द जी का लेख और भाव अत्यन्त स्पष्ट है, उसे स्पष्ट करने के लिए किसी टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है। कालांतर में ये अनृषिकृत वाक्य हो ऋषिकृत माने जा सकते थे। जैसे रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में प्रक्षेप होते-होते उनका मूलरूप ही लुप्त होगया है। इसी भांति यदि हम यह प्रयास नहीं करते तो सत्यार्थप्रकाश भी लिपिकर्त्ताओं और टिप्पणीकारों के आघात से विकृत होने लग गया था।

३—ऋषि दयानन्द के आदेश के अनुसार मुन्शी समर्थदान ने भाषा में जो शब्दादि बदले थे, उन्हें हटा दिया।

यद्यपि हमने शुद्धपदों को हटाकर अशुद्ध शब्द रखने जैसा दुष्कर्म नहीं किया है। मीमांसक जी बिना पढ़े ही ऐसा लिख रहे हैं। पुनरपि मुन्शी समर्थदान जी को ऋषि जी ने यही कहा था कि यदि कहीं भाषा में असम्बद्धता रह गई हो या कोई अशुद्ध शब्द रख दिया गया हो तो उसके स्थान पर उचित धर देना। मूलप्रति में उर्दू शब्दों के प्रयोग से अतिरिक्त ऐसे पद नहीं हैं जो असम्बद्ध वा अनुचित हों। अत: ऋषि जी के अभिप्राय की आड़ मे किसी भी सम्पादक आदि को मनमानी नहीं करनी चाहिए। प्रस्तुत संस्करण मे ऋषि की इस मान्यता को पूरी तरह अपनाया गया है। वैसे भी महर्षि जी की भाषा ग्रन्थ लिखने तक पूरी परिमार्जित होगई थी, यह उन्होंने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में स्पष्ट लिख भी दिया है। हमारे द्वारा ऋषि की भाषा को सुरक्षित करने के कार्य को मीमांसक जी 'ऋषि के आदेशों पर पानी फेरना कहते हैं।' यदि श्री मीमांसक जी द्वारा दीगई टिप्पणियों को यहां दिखाया जाये तो पाठक स्वयं निर्णय कर लेंगे कि ऋषि के आदेशों पर पानी हम फेर रहे है या मीमांसक जी। उदाहरण के लिए युधिष्ठिर जी द्वारा सम्पादित सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास मे यज्ञकुण्ड निर्माण प्रकरण के पास 'यह जन्म से करना चाहिये' पर 'जन्म' शब्द पर दीगई टिप्पणी से स्पष्ट है। मीमांसक जी इसे आचार्य-गर्भ से विद्वान् होनेवाले का द्वितीय जन्म मानते हैं। जबकि यहां शुद्धपाठ है 'यह जप मन से करना चाहिए'। मूलप्रति में यही पाठ है। प्रतिलिपिकर्ता ने लिखते समय भूल से जप का पकार छोड़ दिया और वाक्य इस प्रकार बन गया—यह जमन से करना चाहिये। महर्षि दयानन्द जी ने इस 'जमन' पद को निरर्थक समझकर 'मन' को काटकर ऊपर 'न्म' लिख दिया इससे 'जन्म' पद बन गया। इसी 'जन्म' को मीमांसक जी दूसरा जन्म मानकर बड़ी-सी टिप्पणी लिख बैठे।

४—यह सब गड़बड़ हुई है एक व्यक्ति को संशोधन का अधिकार देने के कारण। धर्मसिंह कोठारी ने रफकापी और प्रेसकापी से यथावत् मिलान करके पाठभेद इकट्ठे करके पं० भगवद्दत्त और पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के सम्मुख रखकर उनके निर्देशानुसार शुद्ध किया। मूलकापी से मिलान नहीं किया, यह लिखना असत्य है।

वास्तविक सत्यता यही है कि इससे पूर्व किसी भी व्यक्ति ने दोनों प्रतियों को अक्षरश: मिलान करके सत्यार्थप्रकाश नहीं छपवाया। यदि मिलान करके छपवाते तो यह भारी श्रमसाध्य कार्य हमें अब कदापि नहीं करना पड़ता। पं० भगवद्दत्त और पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु द्वारा शोधितप्रति अजमेर में सुरक्षित है, उसे देखकर यह स्पष्ट है कि ये दोनों विद्वान् भी केवल द्वितीय प्रति तक ही सीमित रह गये अथवा श्री धर्मसिंह कोठारी उन्हें भी बहका गये कि मैंने सब मिलान कर लिया है और ये ही पाठभेद हैं उसी को दोनों विद्वानों ने सत्य मान लिया होगा, क्योंकि कोठारी जी द्वारा संगृहीत पाठभेदों का रजिस्टर भी हमने देखा है, यह भी अधूरा ही कार्य है। लगता है इतने वर्षों तक सभा में सत्यार्थप्रका[illegible] कोठारी जी सभा को धोखे में ही रखते रहे हैं। १९८२ में कोठारी जी ने मुझे इसी कारण मूलप्रति नहीं देखने दी थी।

इधर तो श्री मीमांसक जी मुझ अकेले व्यक्ति को संशोधन का अधिकार देने का विरोध कर रहे हैं और उधर अपने द्वारा सम्पादित सत्यार्थप्रकाश के विशिष्ट संस्करण को प्रकाशित करते हुए लिखते हैं—"शुद्धता की दृष्टि से सर्वोत्तम संस्करण प्रकाशित करने की योजना बनाई, इस कार्य को मैंने स्वयं किया।"

क्या मीमांसक जी यहां अकेले कार्य नहीं कर रहे, क्या इनका कोई सम्पादकमण्डल था जो ये मुझ पर दोषारोपण कर रहे हैं? क्या आप ही अकेले कार्य कर सकते हैं, क्या यह योग्यता अन्य व्यक्ति में नहीं हो सकती? इस विश्व में एक से एक अद्भुत प्रतिभायें भी हैं जो अकेले ही बड़े-बड़े चमत्कार करती रहती हैं। केवल अपने को ही सर्वाधिक मानना न्यायसंगत नहीं है।

५—१४वें समुल्लास में काटी हुई आयतें नहीं छापनी चाहिये थीं।

इसका स्पष्टीकरण यह है कि कुरान में दो-दो बार वा इससे अधिक बार आई हुई कई आयतों को ऋषिवर दयानन्द ने बहुत सोच-समझकर ही समीक्षा सहित लिखवाया था। सो इनके गूढ़भाव को न समझकर मुन्शी समर्थदान ने इनकी समीक्षा सहित काट दिया और सर्वत्र यह लिख दिया कि यह आयत या इसका भाव पहले आचुका है, इसलिये काट दीगई।

यहां मुन्शी जी और पं० महेशप्रसाद मौलवी इस बात को भूल गये प्रतीत होते हैं कि ऋषि जी ये आयत कुरान में पुनरुक्त दोष दिखाने के लिए लिखवा रहे हैं। वे चौदहवें समुल्लास के अन्त में लिखते हैं—"और पुनरुक्त दोष का तो कुरान जानो भण्डार ही है।" इस वाक्य की रचना तभी उपयुक्त है, जबकि पुनरुक्त दोष दिखाये गये हों।

यही नहीं सत्यार्थप्रकाश प्रथम संस्करण में भी चौदह समुल्लास थे। उनमें से १२ ही छपे थे। शेष दो अप्रकाशित हैं। उनमें से तेरहवें समुल्लास के पृष्ठ ३६१ पर कुरान की समीक्षा करते हुए ऋषि जी लिखते हैं—"क्योंकि पीसे का पीसना ये दोष तो अनेक कुरान में हैं, न्याय से विरुद्ध, प्रत्यक्षादि प्रमाणों से भी विरुद्ध और अनेक परस्पर विरुद्ध आयत अनेक हैं।" यहां भी ऋषि जी ने कुरान के पुनरुक्त दोष की चर्चा की है। इस पुनरुक्ति को पीसे को पीसना=पिष्टपेषण कहा है। (प्रथम संस्करण में कुरान की समीक्षा १३वें समुल्लास में थी।)

इसलिये सभा ने इस ३७वें संस्करण में जान-बूझकर छोड़ी हुई आयतों को पुन: प्रकाशित करके पहले की हुई भूल का समाधान कर लिया है। १३-१४वां समुल्लास तो वैसे भी महर्षि के देहावसान के पश्चात् ही छपा है। उनके पीछे (उनके अभाव में) कौन रोकने-टोकने वाला था अथवा छापने की शीघ्रता भी रही होगी।

विशेष—मीमांसक जी अपने लेख में व्यर्थ ही इस पचड़े में पड़ गये हैं कि पहला फार्म दुबारा छपा है। पहले यह था, अब यह है इत्यादि। सत्यार्थप्रकाश पृ० ६ से आरम्भ करके छापना आरम्भ किया था, उससे पूर्व प्रकाशकीय, सम्पादकीय, विषय-सूची तथा दानियों का परिचय आदि छापना था, सो उसके लिए जितने पृष्ठों में सामग्री समा सकती थी, उसी के अनुसार सभा के प्रकाशनप्रबन्धक को और पृष्ठ बढ़ाने पड़े। इसमें ऐसी कोई गहरी बात ही नहीं है कि उसे मीमांसक जी की दृष्टि से छुपाना पड़ता या इनके लिए सिरदर्द बनती। महर्षि के लेख से तो इन पृष्ठों का सीधा कोई सम्बन्ध भी नहीं है, इसके लिए मीमांसक जी को चिंतित होने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। इनकी सूक्ष्म दृष्टि ने यहां व्यर्थ ही कष्ट किया है।

चिन्ता तो इनको उन श्लोकों के अशुद्ध पाठ की होनी चाहिए थी जो इन्होंने अपने द्वारा सम्पादित सत्यार्थप्रकाश के प्रारम्भ में छापे हैं। कृपया उन्हें इस संस्करण के श्लोकों से मिलाकर शुद्ध कर लीजिये। ये श्लोक महर्षि दयानन्द जी ने प्रथम संस्करण में लिखे थे, परन्तु वे छप नहीं सके थे। हस्तलेख में अभी तक विद्यमान हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्व० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी हेतु

तेरे गुण गाते नहीं थकती जबां

(नाज़ सोनीपती)

ऐहले दिल, ऐहले नजर, ऐहले जबां।
एक वक्ता, साफ़गो, जादू ब्यां॥

बा-वफा, बा-होसला, मर्द-जबां।
बा-तमीज़ो बाशअर इक मेहरबां॥

साहिबे इल्मोअमल, आली दिमाग।
अजमते वैदिकधर्म का पास्बां॥

छू लिया तूने उसे मर्दानावार।
वेदे-अकदस में जो थीं गहराइयां॥

डी.ए.वी. कालिज का दिल के खून से।
तूने सींचा गुल्सितां का गुल्सितां॥

इक निडर, बेबाक, अनथक, शेरेनर।
मर्दे कामिल, मर्दे आमिल नौजवां॥

काबलियत और जहानत का तेरी।
चार सू दुनिया में है सिक्का रवां॥

मशअले-राह बन गया तेरा ग्याम।
राहे-हक पर चल पड़ा फिर कारवां॥

मुख़्तसिर-सी जिन्दगी में यह कमाल।
जाने-जां से बन गया जाने-जहां॥

क्या कहूं, कैसे कहूं, क्योंकर कहूं।
तेरे गुण गाते नहीं थकती जबां॥

उतरे मेदाने-अमल के "लाजवाब"।
थीं तेरी तहरीर में वे शोखियां॥

आह! कबल अज़ वक्त अपनी कौम से।
छिन गया, सरमाया-ए-हिन्दोस्तां॥

वह 'गुरुदत्त' आलिमो-बेदार मग़ज।
काश! होता आज अपने दर्मयां॥

रंग लाती है यकीनन, एक दिन।
व्यर्थ जा सकती नहीं कुर्बानियां॥

'नाज़! मीरे-कारवां पाइन्दाबाद।
ज़िन्दाबादो ज़िन्दाबादो ज़िन्दाबाद॥

हरयाणा की आबकारी नीति को चुनौती

चण्डीगढ़, २० मार्च (विस)। पंजाब व हरयाणा उच्च न्यायालय में हरयाणा सरकार की वर्ष १९९२-९३ की नयी आबकारी नीति को गत दिवस चुनौती दी गयी।

हरयाणा जन अधिकार समिति, रोहतक ने आई० ए० एस० (सेवा-निवृत्त) विजयकुमार के जरिये रिट याचिका दायर करके यह चुनौती दी।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

(पृष्ठ ४ का शेष)

श्री मीमांसक जी इस ३७वें संस्करण को जला देने की बात लिखते हैं।

सो निवेदन है कि ज्ञान के भण्डार को जलाना तो विद्या के शत्रुओं का कार्य है। *ग्रन्थ में दोष तो दिखाया नहीं,* सीधे जलाने पर उतारु होगये। आपने जलाने की बात तब नहीं लिखी जबकि अथर्ववेद में आपने एक मन्त्र अपनी ओर से बढ़ाकर भगवान् की वाणी को भी विकृत करने से नहीं छोड़ा। यह आप द्वारा किया गया महापाप नहीं तो क्या है ?

उस ग्रन्थ को जलाने की बात आपने कभी नहीं लिखी जिसमें आपने महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों से विरुद्ध लिखकर अपने आपको स्वामी दयानन्द को सबसे अधिक समझनेवाला लिखा है। यहां उनके सिद्धांतों की साक्षात् ही हत्या करदी है। (मेरी दृष्टि में ऋषि दयानन्द और उनका कार्य पुस्तक)।

इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश पर दोषपूर्ण की गई अपनी टिप्पणियों को तो जलाने का उल्लेख मीमांसक जी ने कहीं नहीं किया।

यदि मीमांसक जी की प्रेरणा से कोई व्यक्ति न्यायालय में भी जायेगा तो उसे मुंह की खानी पड़ेगी, क्योंकि हम सत्य को साथ लेकर चल रहे हैं। आपकी भांति हठ और दुराग्रह से चिपटे हुए नहीं हैं। लगता है इस नये संस्करण में हुए विशिष्ट कार्य को देखकर मीमांसक जी बौखला गये हैं, क्योंकि इससे इनके द्वारा सम्पादित सत्यार्थप्रकाश की टिप्पणी आदि का सारा कार्य व्यर्थ हो जाता है। मीमांसक जी को आर्यसमाज का चतुर्थ नियम ध्यान में रखकर अपनी भूल को सुधार लेना चाहिए।

यदि मुझ से भी कोई भूल इस संस्करण में होगई हो तो बतला दिये जाने पर उसमें सुधार कर लिया जायेगा। मुझे कोई हठ वा दुराग्रह नहीं है। मीमांसक जी को मुझे लेकर यह आपत्ति है कि वह सम्पादनकला से अनभिज्ञ है, लेखक भी नहीं है, सत्यार्थप्रकाश के इतिहास का ज्ञान भी नहीं है। रफकापी प्रेसकापी के भेद का भी ज्ञान नहीं है। ऐसे व्यक्ति से कोई कार्य कराया जायेगा तो उसका यही परिणाम होगा।

सो निवेदन है कि आपको चुनौती देने का वा आपसे बराबरी करने का दुस्साहस मैं कभी नहीं कर सकता, आप हमारे पूज्य हैं। मैं कितना जानता हूं इसके लिए मैं क्या बतलाऊं, परोपकारिणी सभा से ही आप पूछ लीजियेगा। आपके समक्ष तो मैं बालबुद्धि ही हूं। आप रुग्ण हैं। ईश्वर आपको स्वस्थ एवं दीर्घायुष्य करे। यदि आप इस सत्यार्थप्रकाश को स्वयं पढने में रुग्णतावश अशक्त हैं तो अपने किसी योग्यतम शिष्य को यह कार्य सौंप दें वह आपकी ओर से शंकासमाधान कर सकता है। हम चाहते हैं कि सत्य का प्रचार-प्रसार अवश्य हो।

वैसे एक स्पष्टीकरण और कर देना चाहता हूं कि सत्यार्थप्रकाश के इस शुद्ध-सस्करण का कार्य आरम्भ करने से पूर्व मैं श्री मीमांसक जी से भी मिला था। उस समय इन्होंने कहा था कि यह काय होना तो चाहिए था, अब नहीं, किंतु १०६ वर्ष पूर्व होना चाहिए था। अब कौन करेगा, बडा कठिन कार्य है। सो मैंने निवेदन किया कि कठिन तो है, परन्तु मैं करूंगा। तो ये कहने लगे कि जो पक्तियां छूट गई हैं, केवल वे ही जोड़ दो जाये। प्रतिलिपिकर्त्ता ने जो मिला दिया उसको ज्यों का त्यों रहने दिया जाये। इत्यादि लम्बा वार्तालाप हुआ। इसके पश्चात् भी २-३ बार इनके पास जाकर इसी विषय में चर्चा की है।

अब ये कहते हैं अनेक भाषाओं में इसके अनुवाद हो चुके हैं, लाखों करोड़ों रुपया लगा हुआ है, वह व्यर्थ हो जाएगा। सो यदि यही बात है तो अनार्षग्रंथों, पुराणो और रामचरितमानसादि ग्रंथों के प्रकाशन में भी करोड़ों रुपया लगा हुआ था। क्या इनका खण्डन महर्षि दयानन्द को नहीं करना चाहिए था। वे भी यही सोच लेते कि देश का अपारधन इनके प्रकाशन में लगा है। अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं, खण्डन करने से यह धन व्यर्थ जाएगा। सो सत्य के आगे इन बातों का महत्त्व नहीं हुआ करता।

इस लेख द्वारा श्री मीमांसक जी द्वारा फरवरी मार्च, १९९२ की वेदवाणी और आर्यजगत् के २२ मार्च के अंक में सत्यार्थप्रकाश के ३७वें संस्करण पर किये गये आक्षेपों का स्पष्टीकरण किया गया है। आशा है विद्वद् लोग सत्य को ग्रहण कर सकेंगे। ये संस्कारविधि के लिए भी आर्यजनता को सावधान कर रहे हैं। सो उनसे मेरा निवेदन है कि केवल संस्कारविधि ही नहीं, अपितु महर्षि दयानन्द जी के सभी ग्रंथों का उनके हस्तलेखों से मिलान कर लेना चाहिए, जिससे सत्य के अधिक निकट पहुंचा जासके।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश आरम्भ

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सराय ख्वाजा (फरीदाबाद) में चौथी से नवमी कक्षा तक एक अप्रैल से प्रवेश आरम्भ है। अन्तिम तिथि १५ मई है। पाठ्यक्रम सी० बी० एस० ई० गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है। विद्यालय के साथ छात्रावास की व्यवस्था है। स्थान सीमित है। अपने बच्चों को सुयोग्य, स्वस्थ तथा चरित्रवान् बनाने के लिए प्रविष्ट करवाकर लाभ उठावें। तुरन्त सम्पर्क करें। फोन : २७५३९८

मुख्याध्यापक की आवश्यकता

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद हेतु एम० ए० बी० एड० मुख्याध्यापक की आवश्यकता है। सेवानिवृत्त, चरित्रवान् तथा आर्य-समाज के विचारवाले को प्राथमिकता दी जावेगी। वेतन योग्यता तथा अनुभव के आधार पर दिया जावेगा। इच्छुक प्रत्याशी ६ अप्रैल, ९२ को प्रातः ११ बजे साक्षात्कार हेतु अपने प्रमाण-पत्रों सहित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सराय ख्वाजा जि० फरीदाबाद में पधारें।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डा० नई दिल्ली-४४

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज बांकनेर निकट नरेला	२९ मार्च से १ अप्रैल
,, मनाना जि० पानीपत	२९ से ३१ मार्च
,, नरवाना जि० जींद	३ से ५ अप्रैल
,, माडल टाउन सोनीपत	३ से ५ ,,
,, गुरुकुल कुरुक्षेत्र	३ से ५ ,,
,, मुवाना जि० जींद	३ से ५ ,,
,, श्रद्धानन्द नगर पलवल जि० फरीदाबाद	१० से १२ ,,

—सुदर्शनदेव आचार्य
वेदप्रचाराधिष्ठाता

ध्यान-योग-शिविर आर्यनगर ज्वालापुर हरिद्वार

गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी योगधाम में श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में शनिवार चैत्र शुक्ल १ वि० सं० २०४९ तदनुसार ४ अप्रैल, १९९२ ई० से चैत्र शुक्ल १० रविवार १२ अप्रैल, १९९२ ई० तक ध्यान-योग-शिविर का आयोजन किया जारहा है, जिसमें प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा यम नियमादि का पालन कराया जाएगा। शिविरार्थी शारीरिक, निर्बलता तथा मानसिक अशांति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। शिविर में यथा समय अन्य विद्वानों के प्रवचन तथा भक्ति संगीत भी होंगे। ७ अप्रैल मध्याह्नोत्तर २ बजे से 'योग और सामाजिक स्थिति' पर संगोष्ठी होगी। ८ अप्रैल बुधवार को साधिका सम्मेलन होगा। अतः योगाभिलाषी अपने इष्टमित्रों एवं परिवार सहित पधार कर प्रशिक्षण प्राप्त करें।

आर्यसमाज द्वारा राजनीतिक मंच के गठन की शुरूआत

७ सदस्यीय उच्च समिति का गठन

दो महीने बाद देश के ५०० बुद्धिजीवी प्रतिनिधियों का दिल्ली में सम्मेलन होगा

नई दिल्ली १७ मार्च,

आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्यों की बैठक में आज यह महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि आर्यसमाज का राष्ट्र के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक उत्थान व प्रगति में क्रांतिकारी योगदान तथा स्वतन्त्रता आंदोलन की लडाई और सामाजिक सुधारों में अग्रणी भूमिका को देखते हुए राष्ट्र के वर्तमान हालात में इसे एक मूकदर्शक संस्था बने रहने नहीं दिया जासकता। वर्तमान परिस्थितियां इस हद तक पहुंच चुकी हैं कि देश की एकता, अखण्डता, राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता पर पुन: खतरे के बादल मण्डरा रहे हैं।

यह सभा निश्चय करती है कि आर्यसमाज द्वारा दलगत राजनीति से अलग रहते हुए एक ऐसे राजनीतिक मंच की स्थापना की जाये जो देश की अखण्डता तथा उन्नति से जुड़े हुए समस्त पहलुओं पर आर्यसमाज का दृष्टिकोण जनता के समक्ष रखेगा और आवश्यकता पड़ने पर आंदोलनात्मक रवैया अपनायेगा।

इस मंच को विधिवत् स्थापित करने के लिए एक उच्चस्तरीय ७ सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। इस समिति में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, वरिष्ठ पत्रकार श्री वीरेन्द्र जी, पूर्व केन्द्रीय रक्षामन्त्री प्रो० शेरसिंह जी, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्वप्रधान श्री छोटूसिंह जी, हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती तथा बम्बई के श्री केप्टन देवरत्न आर्य शामिल हैं। यह समिति दो महीने तक सारे देश से आर्यसमाज के लगभग ५०० बुद्धिजीवी प्रतिनिधियों का विशेष सम्मेलन बुलाकर अपने समस्त उद्देश्यों को जनता के समक्ष रखेगी। इस सम्मेलन में ही मंच के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जायेगी।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभामन्त्री

आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री वेदपाल आर्य, उपप्रधान—केवलसिंह आर्य, मन्त्री—ईश्वरसिंह आर्य, उपमन्त्री—रमेशचन्द्र गुप्त, कोषाध्यक्ष—विश्वामित्र भीमवाल, लेखानिरीक्षक—देवेन्द्रकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—आनन्दसिंह।

शराबबन्दी जनजागरण पंचायत कार्यक्रम जारी

ग्राम उमरा (हिसार) में १५ मार्च, ९२ को शराबबन्दी, टेलों पर पानी न पहुंचने तथा अन्य सामाजिक बुराइयों पर विचार करने हेतु २० ग्रामों की पचायत हुई। जिसकी अध्यक्षता वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास मांडवा निवासी ने की। जिसमें डा० बाबूराम (उमरा), महावीरप्रसाद प्रभाकर (बवानीखेड़ा), मेवासिंह बागड़ी (बाड़ा जाटान), इन्द्रसिंह (उमरा), मनफूल आर्य (बालावास), मथुराराम (मुहम्मदपुर), पं० गुसाइराम (कंवारी), सभा उपदेशक एवं जिला शराबबन्दी समिति के अध्यक्ष श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी तथा कई ग्रामों के सरपंचों ने भी भाग लिया। इतिहास के उदाहरण देकर शराब व धूम्रपान से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। प्रभाकर जी ने कुर्ते की झोली फैलाकर इन बुराइयों को छोड़ने की भीख मांगी। जिससे प्रभावित होकर मथुराराम ने फौजी कार्ड फाड़ने तथा भीमसिंह आदि ने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की। सभी वक्ताओं ने पानी न पहुंचने तथा शराब की नदियां बहाने बारे हरयाणा सरकार की कटु आलोचना की।

—बलवन्तसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज उमरा

वेदामृत

मानव क्यों है दु:खी आज यह बात समझनी चाहिये।
वेदों के अनुसार पुन: अब हमको चलना चाहिये॥

सत्य विद्या जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं,
आदिमूल सबका परमेश्वर वेद हमें बतलाते हैं,
सत्य के ग्रहण असत्य त्याग में उद्यत रहना चाहिये।
वेदों के अनुसार पुन: अब ...

सवव्यापक सर्वअन्तर्यामी नित्य पवित्र ईश्वर है,
दयालु अजन्मा अनादि अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर है,
न्यायकारी सृष्टि का कर्त्ता, निराकार सब कहिये।
वेदों के अनुसार पुन: अब ...

वेद का पढ़ना और पढाना, सुनना और सुनाना है,
सभी सत्य विद्याओं का यह, वेद ही एक खजाना है,
सत्य असत्य विचार के हो हर काम को करना चाहिये।
वेदों के अनुसार पुन: अब ...

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, वेद में नाम नहीं है,
सम्प्रदायो मत पन्थों के, झगडे की खान नहीं है,
मानव बनकर मानवता का, सबको पाठ पढाइये।
वेदों के अनुसार पुन: अब ...

सामाजिक और सर्वहितकारी, नियम में परतन्त्र रहें,
हितकारी प्रत्येक नियम में, निर्भय बन स्वतन्त्र रहें,
'महेश आर्य' वैदिकपथ पर, अपना कदम बढ़ाइये।
वेदों के अनुसार पुन: अब, हमको चलना चाहिये॥

—ब्र० महेश आर्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

शोक समाचार

आर्यवीर दल हरयाणा के कर्मठ कार्यकर्त्ता तथा जि० फरीदाबाद के प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री ओमप्रकाश आर्य ग्राम नांगल (मोहनपुर) जिला महेन्द्रगढ़ की माता श्रीमती गिंदोड़ी देवी का दिनांक १०-३-९२ को निधन होगया। वह काफी दिनों से बीमार चल रही थी। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

—ओमप्रकाश शास्त्री सभागणक

ऋग्वेद यजुर्वेद

वैदिक यतिमण्डल की प्रेरणा और सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक
के तत्त्वावधान में

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

एवं

पूर्ण नशाबन्दी अभियान

चरखी दादरी (जिला भिवानी) में १५, १६ व १७ मई, ९२
उपकार्यालय : आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी (जि० भिवानी, हर.)

मान्यवर !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिये समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिनांक १५, १६, १७ मई को चरखी दादरी जिला भिवानी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, विद्वान् वक्ता तथा गायक पधारेंगे और पं० गुरुदत्त के जीवन एवं व्यक्तित्व को उजागर करनेवाले अनेक कार्यक्रम रखे जायेंगे। इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार-गोष्ठियां, कवि सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन, भाषण-प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायेंगी। अतः आपसे निवेदन है कि—

१) आप अपने आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्था से सम्बद्ध सभी महानुभावों को इस अपूर्व समारोह में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें तथा दिवंगत पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये चरखी दादरी (जिला भिवानी) में पधारें।

२) इस विशाल एवं भव्य आयोजन को सफल करने में तन, मन एवं धन से योगदान करें, विशेषतः स्वयं भी आर्थिक सहायता दें तथा अन्यों से दिलावें।

३) अपना सहयोग एवं सुझाव कार्यालय तक अवश्य पहुंचावें तथा यहां से प्रकाशित होनेवाली सूचनाओं और विज्ञप्तियों को जन-जन तक प्रचारित करें।

४) इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के लिए अपना विद्वत्तापूर्ण लेख तथा अपने व्यावसायिक संस्थान का विज्ञापन अवश्य भेजें।

निवेदक :

स्वामी ओमानन्द सरस्वती (संरक्षक) **सुमेधानन्द सरस्वती** (संयोजक) **प्रो. शेरसिंह** (प्रधान)

सूबेसिंह
मन्त्री
पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सत्यनारायण
प्रधान आर्यसमाज चरखी दादरी

तपस्वी प्रचारक पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

—वीरभान 'वीर'

गुरुदत्त जी लिखते हैं कि "मैंने अठारह बार सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ का पाठ किया, हर बार नई से नई शिक्षा और जानकारी प्राप्त हुई।" आपने जब महर्षि स्वामी दयानन्द से भेंट की और [illegible] प्राण त्यागते समय देखा तो उस दृश्य से प्रभावित होकर नास्तिक से आस्तिक बनकर ओजस्वी-वक्ता एवं कुशल प्रचारक बन गए। जितना ही ऋषि को समझ[illegible], उतना ही उन पर जादू-सा चढ़ता गया। उनके जीवन का कांट[illegible] गया। आर्यसमाज के पांच-पांच नियम दो कपड़ों पर लिखवा लिए। प्रातःकाल जलपान किया। एक कपड़ा आगे लटका लिया, दूसरा पीठ से बांध लिया और ऋषि सन्देश सुनाने चल पड़े। उनका रोम-रोम ऋषि की धरोहर बन गया और वह दीवाना ओजस्वी वक्ता बना। सुलझे हुए विचार जगह-जगह देने लग पड़े। आपका निधन २६ वर्ष की आयु में १८-१९ मार्च, १८९० को हुआ। इतनी अल्पायु में आपने जो काम वेदप्रचार का किया, वह प्रशंसनीय है। जन्म मुल्तान (पाकिस्तान) में हुआ। उस समय उर्दू, फारसी आदि भाषायें पढ़ाई जाती थी। आपने जब पढ़ना शुरु किया तो आपके प्रश्नों का उत्तर अध्यापक भी सन्तोषजनक रूप से नहीं दे सकते थे। मेधावी छात्र को लाहौर में हंसराज (महात्मा), लाजपतराय जैसे सहपाठी मिल गये। उन सब पर भारत की प्राचीन संस्कृति को उजागर करने का भूत सवार था। सबने मिलकर डी० ए० वी० संस्था की नींव डालने का निश्चय किया। शुद्ध हृदय से गुरुदत्त के विचारों से श्रोतागण प्रभावित हुए। धन एकत्र हुआ और लाहौर में ही डी० ए० वी० स्कूल की नींव रखी गई। कितना त्याग एवं कठिनाई का सामना इन लोगों ने उस समय किया जबकि विदेशी शासन ऐसी गतिविधियों को प्रोत्साहित नहीं करना चाहता था। तय हुआ कि सरकारी सहायता न लेकर अपने बलबूते पर खड़ा होना चाहिए। यह वह युग था जबकि लोग ईसाई तथा मुसलमान बनते जारहे थे। भारतीय संस्कृति तथा संस्कृत भाषा का चिराग टिमटिमा रहा था। भला हो स्वामी दयानन्द का जिसने बिगुल बजा दिया। लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना हुई और बच्छोवाली से ही इस कार्य को योजनाबद्ध ढंग से प्रारम्भ किया गया। संयोगवश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका हाथ लग गई। शब्दकोश की सहायता से उसका संस्कृत भाग पढ़ डाला। आर्यसमाज मुल्तान के अधिकारियों से कहा 'मैं अष्टाध्यायी तथा वेदभाष्य पढ़ना चाहता हूं इसका प्रबन्ध करदो अन्यथा मैं जनता में प्रसिद्ध कर दूंगा कि तुम्हारे एक भी व्यक्ति में संस्कृत पढ़ाने की योग्यता नहीं, आप केवल ढोल ही पीट रहे हैं।' तुरन्त ही पण्डित अक्षयानन्द को बुलाया गया और भक्त रैमलदास तथा गुरुदत्त ने संस्कृत पढ़नी आरम्भ करदी। यही थी तड़प और लगन जिससे गुरुदत्त ने पढ़ने और पढ़ाने का कार्य सम्भाला।

२४-२५ अप्रैल, १८८६ को आर्यसमाज पेशावर का उत्सव था। पं० लेखराम इस समाज के प्रधान थे। गुरुदत्त ने उत्सव पर भाषण दिया जो अतिरोचक एवं प्रभावशाली रहा।

पं० गुरुदत्त अंग्रेजी में भाषण देते और अपने लेख भी लिखते। उनके लेख जब विदेशों में गये तो वहां के लोगों का उपनिषदों के ज्ञान की जानकारी हुई तो वे दंग रह गये कि भारत के पास इतना ज्ञान का भण्डार है।

पं० गुरुदत्त ने "वैदिक मैगजीन" आंग्ल भाषा में शुरु की थी। आप उसके सम्पादक थे। उनके लेखों से पता चलता है कि वह खोज-पूर्ण सामग्री इन लेखों द्वारा जुटाया करते थे। इससे देश-विदेश में सर्वत्र पत्रिका का मान हुआ। इससे उनकी योग्यता, विशाल ज्ञान, ऋषि भक्ति तथा वैदिक संस्कृति में उनकी आस्था टपकती थी।

आज पूरे एक सौ एक वर्ष होगये कि गुरुदत्त जी इस पटल पर नहीं रहे। हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके ऋण से अनृण होवें के लिए उनके चलाये काम को जारी रखेंगे ताकि वेद का प्रचार चहुं ओर हो और मनुष्य सुख-शांति का जीवन व्यतीत कर सकें।

१३/१४, तिलकनगर, नई दिल्ली-१८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि. ऐल नं० ७८७ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक १९ ७ अप्रैल, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

चेतावनी

शराब से बुद्धि का नाश होता है। —स्वामी दयानन्द

शराब से शरीर व आत्मा दोनों का नाश होता है। —महात्मा गांधी

शराब पीना हराम है। —मुहम्मद साहब

शराब से सदा भयभीत रहना क्योंकि वह पाप और अनाचार की जननी है। —महात्मा बुद्ध

हरयाणा की ग्राम पंचायतों से

अपील

हरयाणा सरकार द्वारा हाल ही में प्रत्येक जिले के लिये शराब के ठेकों की नीलामी की गई है। अब शराब के ठेकेदार अपने-अपने ठेकों के नीचे ब्रांच ठेके खोलने के लिये ग्राम पंचायतों से बात करेंगे। एक ठेके के एरिया में उस ठेकेदार को अब तीन ब्रांच (छोटे) ठेके खोलने की छूट है। लेकिन किसी भी गांव की हद में ब्रांच ठेका तभी खुल सकता है जबकि वहां की ग्राम पंचायत ऐसा ठेका खोलने की रजामन्दी बारे आवश्यक प्रस्ताव पास करके उस ठेकेदार को दे। यदि कोई ग्राम पंचायत अपने गांव की हद में ब्रांच ठेका चलाने के लिये प्रस्ताव पास करके ठेकेदार को नहीं देती तो वहां ऐसा ठेका नहीं खोला जा सकता। किसी गांव में यदि पिछले साल कोई ब्रांच ठेका था तो इस साल वह ग्राम पंचायत जब तक नया प्रस्ताव पास करके ठेकेदार को नहीं देती तब तक वह ठेका आगे वहां नहीं चल सकता। शराब के ठेकेदार, ग्राम पंचायतों के सरपंचों व पंचों को लालच देकर या बहकाकर उनसे उनके गांव में ब्रांच ठेका खोलने के लिये प्रस्ताव पास करवाने की खूब कोशिश करेंगे। ऐसे किसी भी लालच से ग्राम पंचायतों को बचना चाहिये क्योंकि शराब का ठेका खुल जाने से सब परिवार, विशेषकर जवान पीढ़ी कतई बर्बाद हो जायगी। इसलिये शराब जैसी जहरीली नागिन से हो रहे सर्वनाश से समाज को बचाने के लिये ग्राम पंचायतें बुद्धि व विवेक से काम लें और किसी भी कीमत पर अपने यहां शराब का ठेका खोलने की इजाजत न दें। ग्राम पंचायतों को यह भी चाहिये कि जहां पर सरकार ने ठेके नीलाम किये हैं उन्हें भी बन्द करवाने के लिये सब गांववासियों को तय्यार करके ठेके के सामने लगातार धरने दिलवायें।

शराब हटेगी तो देश बचेगा।

प्रो० शेरसिंह
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक
एवं पूर्व केन्द्रीय मन्त्री

राष्ट्र, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रगीत

किसी भी स्वाधीन, प्रभुतासम्पन्न राष्ट्र के लिए उसका 'नाम' 'राष्ट्रभाषा' तथा 'राष्ट्रगीत' उसकी सांस्कृतिक तथा भावनात्मक एकता के प्रबल माध्यम होते हैं, लेकिन यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि तीनों बातों पर देश एक विचार पर दृढ़ प्रतीत नहीं हो रहा है।

देश के तीन नाम 'भारत, हिन्दुस्तान तथा इण्डिया' सभी स्तरों पर देश और विदेश में प्रचलित कर रखे हैं, जबकि हमारी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा जातीय पृष्ठभूमि के आधार 'भारत' नाम सर्वोत्तम है।

राष्ट्रभाषा पर भी अनेकता का ग्रहण चला आरहा है और अंग्रेजी सह-राष्ट्रभाषा ही नहीं, अपितु राष्ट्रभाषा को रौंदती हुई क्रूर अट्टहास के साथ उसका आसन ग्रहण किये हुए है।

इसी प्रकार राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान भी दो अलग-अलग माने गये हैं। राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' जहां आजादी प्राप्ति में निरन्तर भारतीय जन-जन में जोश भरता रहा उसे एक विशिष्ट समुदाय की सन्तुष्टि के लिए महत्त्वहीन कर दिया गया है तथा 'राष्ट्रगान' का नाम देकर 'जन मन गण' जिसे लार्ड पंचम के स्वागत में गाया था, जिससे प्रसन्न होकर टैगोर को नोबेल पुरस्कार देने की भूमिका बनी, ऐसा अनेक बार पढ़ने सुनने में आया है, को पूर्ण महत्त्व दिया गया। यह प्रचारित किया गया कि यह लार्ड पंचम को सम्बोधित नहीं है, अपितु भगवान् को सम्बोधित है। हमारे समस्त साहित्य में भगवान् को सकल चराचर का भाग्यविधाता तो बार-बार बताया गया है, लेकिन भगवान् को किसी एक देश का भाग्यविधाता 'जन गण मन' बताया गया है जो अवश्य अखरता और शक पैदा करता है। जो भी है लेकिन फिर भी राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान दोनों की क्या जरूरत थी। राष्ट्रगीत या गान एक को ही पूर्ण मान्यता देना उचित था, लेकिन इस भारत देश की तो स्थिति ही निराली है। सबको सन्तुष्ट करने के चक्र में यहां एक भी सन्तुष्ट नहीं हुआ। भारत के कर्णधारों को 'एक साधे सब सधे' वाली बात अच्छी नहीं जची, बल्कि वे 'सब साधे सब जाय' को ही जपते रहे और जप रहे हैं।

वोटों के चक्र में आज का हर नेता शराबी कबाबी, गुण्डों मुसटण्डों को पहले सन्तुष्ट करता है तथा बाद में भले कहे जानेवाले आदमियों को भाषण का जूस पिलाकर सन्तुष्ट करता है। स्वामी विवेकानन्द ने यूरोप की धरती पर जाकर कहा था कि—'यदि संसार सुख-शांति और एकता चाहता है तो वह संस्कृत को अपनाले, लेकिन भारत के राजनीतिज्ञों ने उसे भारत में भी नहीं अपनाया। सन्तुष्ट करने के लिए यह तो अवश्य कहा कि 'संस्कृत महान् ज्ञान विज्ञान की भाषा है इसका विकास किया जाएगा' लेकिन किया कुछ नहीं, बल्कि साथ ही यह भी कह दिया कि उर्दू को पूरे देश में दूसरी राजभाषा बनाया जाएगा। दो कदम और आगे बढ़कर ढिंढोरा पीटा कि हिंदी किसी पर नहीं थोंपी जाएगी। साथ ही अंग्रेजी सबी पर थोंप दी।

लेकिन प्रश्न पैदा होता है कि यह अवस्था कब तक चलती रहेगी? प्रत्येक भारतीय को अपने आप में चिंतन करना चाहिए। अपने आप से प्रश्न पूछना चाहिए कि हमारी राष्ट्रभाषा कैसे विकसित हो? मैं उसके लिए क्या योगदान दे सकता हूं? अपने छोटे से छोटे योगदान को आप छोटा न समझिये। आप हिंदी संस्कृत के विकास की सोचे यह भी एक सहयोग है। बैठकों में आये यह उससे बड़ा सहयोग है। सम्पादकों, मन्त्रियों, राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्रियों को १५ पैसे का पत्र लिखदें यह उससे भी बड़ा सहयोग है। दूसरे को प्रेरित करें यह उससे अगली सीढ़ी है। धन से सहयोग करें यह भी विशेष सहयोग है। स्वयं अपना कार्य हिंदी में करें यह बहुत बड़ा सहयोग है। आप थोड़ा-सा कदम आगे बढ़ायेंगे तो राष्ट्रभाषा का कदम भी आगे बढ़ेगा। आप राष्ट्रभाषा के लिए कुछ न कुछ अवश्य करें। संगठन से जुड़ने के लिए निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें—

१. महावीर शास्त्री, २१/१२२७ प्रेमनगर हैफेड मार्ग, रोहतक
२. सुरेश आर्य, एशियन प्रेस, सोनीपत स्टैंड, रोहतक

मालिश कीजिए रोग भगाइए

जोड़ों के दर्द, गठिया, लकवा आदि ऐसे कष्टदायी रोग हैं जिनका एलोपैथी तरीके से इलाज होता रहा है। इस रोग से ग्रस्त लोगों का जीना दूभर हो जाता है। इन सब बीमारियों के लिए पिछले काफी समय से केरल में आयुर्वेदिक चिकित्सा बहुत अधिक लोकप्रिय है। डा. श्रीमती के० सुधा अशोकन (बी० ए०एम०, एम०डी०) ने आर्थराइटिस, स्पोन्डोलिटिस, स्लिप डिस्क, साईटिका, पैरालिसिस, अस्थमा, साइनु-सिटिस आदि बीमारियां जो रक्तसंचार और नाड़ीप्रवाह से सम्बन्धित हैं के इलाज में विशेषरूप से योग्यता प्राप्त की है और अपने सफल इलाज से अनेक लोगों के जीवन में नई तन्दरुस्ती जगाई है।

गठिया रोग से पीड़ित लोग यह नहीं जानते कि वे इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था से ही इस रोग की पकड़ में आचुके होते हैं। साधा-रणतः लोग पीठ के दर्द, जोड़ों के दर्द, सूजन आदि को गम्भीरता से नहीं लेते। जब दर्द असह्य हो जाता है तो दर्द कम करनेवाली गोलियां खाते हैं और इस प्रकार रोग की ओर से असावधानी बरतने के कारण प्रारम्भिक दौर में ही इस रोग से बुरी तरह जकड़ जाते हैं और स्थायी तौर से जोड़ों के दर्द के मरीज बन जाते हैं। यह बीमारी आर्थीरटिस, स्पोण्डलाइटिस अथवा साईटिका इत्यादि भी हो सकते हैं।

उत्तरी भारत में गठिया से पीड़ित रोगियों की संख्या कई कारणों से बढ़ रही है। एक तो जलवायु का परिवर्तन कभी अधिक ठण्ड, कभी अधिक गर्मी, भोजन के गलततौर तरीके, व्यस्त जीवन, हर प्रकार के तनाव, प्रदूषण इत्यादि से आर्थराटिस माइग्रेन, सिनुसिटिस पैरालिसिस और गठिया के विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

आर्थरिटिस क्या है—शरीर के हर जोड़ में एक प्रकार का तरल पदार्थ रहता है जो शरीर में चिकनाईपूर्ण गति प्रदान करने में सहायक है। इन तरल पदार्थ को 'सिनोवियल फ्लूड' कहते हैं। इसकी कमी से सीढ़ियां चढ़ना, फर्श पर बैठना, लम्बी सैर करने में दिक्कत महसूस करता है। इस प्रकार के रोग को आर्थीरटिस कहते हैं।

स्पोन्डोलिटिस—तरल पदार्थ के खत्म होने से स्पोन्डोलिटिस भी हो जाता है। इसका असर वरटेबरल कॉलम की डिस्क पर पड़ता है। वरटेबरल कालम से गुजर रही रीढ़ की नाड़ियों का दबाव कम हो जाता है जिससे रीढ़ की नाड़ियों में दर्द उत्पन्न हो जाता है।

पैरालिसिस (लकवा)—लकवा नाड़ी प्रक्रिया से सम्बन्धित बीमारी है। सारा शरीर केन्द्रीय नाड़ी प्रक्रिया से संचालित होता है। यदि एकदम झटका अधिक ब्लड प्रैशर या कोलोस्ट्रोल की मात्रा अधिक होने से इसका असर सारी प्रक्रिया पर पड़ता है। इसका असर खून की आपूर्ति पर या तो हैमरेज द्वारा होता है या शनैः-शनैः लकवा उत्पन्न करता।

पोलियो—पोलियो भी नरवस सिस्टम से सम्बन्धित एक बीमारी है। बच्चों में पोलियो 'वायरल इन्फैक्शन' द्वारा होता है। जब दिमाग के सैलों पर असर पड़ता है तो ये नरवस सिस्टम के सन्तुलन को बिगाड़ देते हैं जिससे अंगों को लकवा मार जाता है।

साभार : नवभारत टाइम्स

होलिका-पर्व

दिनांक १९-३-९२ को आर्य निवास (क्राणी) में होली-पर्व के उपलक्ष्य में हवन किया गया। यज्ञ पर निकट की ढाणियों के लोगों ने भी भाग लिया। अपने-अपने घरों से घृत भी लाये। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने होलिका-पर्व का महत्त्व तथा वैदिक दृष्टिकोण रखा। साथ में लोगों से अभद्र तरीके से फाग खेलना, शराब पीना, जुआ खेलना आदि बुराइयों को छोड़ने की अपील की। स्कूली बच्चों को नमस्ते करना, प्रातः उठने तथा व्यायाम करने की प्रेरणा दी।

—बलेराम आर्य

शराब का बढ़ता प्रचलन हमें कहीं का नहीं छोड़ेगा

—विजयकुमार आई०ए०एस० (सेवा-निवृत्त), संयोजक, हरयाणा जन अधिकारी समिति, रोहतक

आज हमारे देश में शराब तथा अन्य नशीले पदार्थों का उत्पादन एवं सेवन इस कदर बढ़ गया है कि लगता है हमारा समस्त सामाजिक तथा आर्थिक ढांचा मानो हिल गया है। विशेषकर शराब तो आज घर-घर में पहुंच गई है। इस जहर के इतने अधिक प्रचलन से जन-साधारण की बर्बादी हो रही है और उनका जीवन नरक बनकर रह गया है। गरीब आदमी पर दोहरी मार पड़ रही है। एक तरफ गरीबी की तथा दूसरी तरफ शराब पीने की लत की। उसकी मेहनत व ईमानदारी की कमाई शराब की गन्दी नाली में चली जाती है और उसकी पत्नी व बच्चे भूखे व फटेहाल नरक भोगते हैं। आये दिन जहरीली शराब पीने से सैकड़ों अकाल मौतें हो रही हैं, जिनके शिकार झुग्गी झोंपड़ी में रहनेवाले गरीब लोग ही हैं। हाल ही में दिल्ली, महाराष्ट्र व गुजरात में सुरापान से कितनी बड़ी संख्या में गरीब लोग मरे हैं, इस बात का ताजा सबूत है। स्थिति इतनी भयानक है कि हमारी आने वाली पीढ़ियों का क्या भविष्य होगा, यह सोचकर दिल दहल जाता है। शराब का हर धर्म द्वारा निषेध किया गया है। दुनिया के सभी महापुरुषों ने इस जहरीली नागिन से खबरदार किया है।

स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में शराब तथा अन्य मादक पदार्थों के सेवन से होनेवाले सर्वनाश की चर्चा करते हुए कहा है कि शराब पीने से बुद्धि का नाश होता है। जब मनुष्य की बुद्धि का ही नाश हो जाये तो जीवन में बाकी क्या रह जाता है? महात्मा गांधी ने भी शराब के कारण होनेवाले सर्वनाश को खूब समझा था और इसलिये शराबबन्दी को उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना था। राष्ट्रपिता तो अन्यों के साथ-साथ महिलाओं को भी शराब की दुकानों पर धरना देने में शामिल करते थे, क्योंकि शराब के सेवन से जो भयानक परिणाम निकलते हैं उन्हें तो परिवार की महिलाओं व बच्चों को ही भुगतना पड़ता है। गांधी जी शराब से शरीर व आत्मा दोनों के नाश होने की स्थिति को जानते थे और इसलिये उन्होंने कहा था कि यदि उन्हें एक दिन के लिये भी भारत का तानाशाह बना दिया जाये तो उनका पहला काम होगा शराब की सब दुकानों को बिना मुआवजा दिये बन्द करना।

मुस्लिमधर्म के संस्थापक मुहम्मद साहब ने कहा है कि शराब पीना हराम है तथा गुरु नानकदेव जी ने भी शराब को बहुत बुरा बताया है। भारत गरीबों का देश है। यदि गरीबों की हालत सुधारनी है तो शराबबन्दी लागू करनी होगी। सबको अच्छी तरह मालूम है कि शराब के कारण अनेक साम्राज्यों, संस्कृतियों तथा सभ्यताओं का नाश हुआ है। फिर आम आदमी की तो औकात ही क्या? शराब की लत ने सबको कंगाल बना दिया है। इस भयानक स्थिति से चिंतित होते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने इसका धारा-४७ में स्पष्ट व्यवस्था की कि सरकार लोगों के स्वास्थ्य के हित में शराब व दूसरे मादक पदार्थों के उत्पादन व सेवन पर पाबन्दी लगाने का प्रयास करेगी। परन्तु इस सन्दर्भ में सरकार की जो नीति है उससे शराबबन्दी की बजाये शराबखोरी का ही बढ़ावा मिल रहा है और इस प्रकार संविधान की धारा-४७ का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन किया जारहा है। सरकार को अपने राजस्व की चिंता है, इसलिये वह शराबबन्दी लागू करने को तैयार नहीं। एक लोककल्याण राज्य का दम भरनेवाली महात्मा गांधी की नामलेवा सरकार के लिये यह कहां तक मुनासिब है कि वह लोगों का स्वास्थ्य खराब करके, उनकी बुद्धि बिगाड़कर, शराब की दुकान खोलकर उनकी मेहनत की कमाई पर डाका डालकर राजस्व इकट्ठा कर अपनी तिजूरियां भरे। सरकार कहती है कि उसे विकास योजनाओं के लिये धन चाहिये और यदि शराबबन्दी लागू की जाती है तो राजस्व का बहुत बड़ा घाटा होगा। ऐसा विकास किस काम का जो लोगों की बर्बादी करके उन्हें मिलता हो? राजस्व के कथित घाटे को करों की बेहतर वसूली करके व अनावश्यक सरकारी खर्च में कमी करके तथा समाज के सम्पन्नवर्ग पर और कर लगाकर काफी हद तक पूरा किया जासकता है।

इसके अलावा यह बात बड़ी भ्रामक है कि नशाबन्दी से राज्य की आमदनी हमेशा के लिये कम हो जाती है। यदि शराब की बिक्री से किसी राज्य सरकार को २०० करोड़ रुपये की आमदनी होती है तो पीनेवालों का तो इसमें १००० करोड़ यानि दश अरब रुपया चला जाता है। इसी तरह यदि सरकार शराब को बन्द कर देती है तो लोगों के पास जो हजारों करोड़ रुपया बचेगा उसे वे अपने दूसरे कामों में लगायेंगे जिससे राज्य सरकार को एक अच्छी-खासी रकम राजस्व की शक्ल में मिलेगी। इस प्रकार सरकार व लोगों दोनों को ही फायदा होगा। एक बात और है कि शराब पीने से समाज में जो अपराध, अनाचार व सड़क दुर्घटनायें बढ़ती हैं उनसे निपटने में सरकार को बहुत रुपया अफसरशाही, अदालत, पुलिसबल अधिक संख्या में खड़ा करने में लगाना पड़ता है। शराबबन्दी लागू किये जाने से जहां समाज में अपराध व दुर्घटनाओं में बड़ी कमी आयेगी, उधर दूसरी ओर सरकार के खर्च में भी बहुत कमी आसकेगी। शराबखोरी के विरुद्ध कानून बनाये बिना सफलता नहीं मिल सकती। अकेली शिक्षा व प्रचार-प्रसार से काम नहीं बन सकता। कानून द्वारा शराब बन्द करने व इसके विरुद्ध प्रचार, इन दोनों के समन्वय से ही शराब जैसी जहरीली नागिन से समाज को बचाया जासकता है। जो बुराई गैर-कानूनी घोषित करदी जाती है वह उतनी नहीं फैलती। वेश्यावृत्ति, चोरी व जुआखोरी को कानूनन जुर्म करार दिये जाने पर भी ये बुराइयां अभी भी मौजूद हैं, पर इसका मतलब यह नहीं कि इनके विरुद्ध बनाये गये कानून को ही खत्म कर दिया जाये। इसलिये समाज व देश के हित में शराब की दुकान कानूनन बन्द होनी चाहिये।

हरयाणा भी नशे की बढ़ती हुई इस रफ्तार में किसी से पीछे नहीं। इस धरती के लिये कहा जाता है—हरयाणा जहां दूध दही का खाना। राज्य सरकार की ओर से अपने विकास कार्यक्रमों बारे समाचार-पत्रों में दिये जानेवाले विज्ञापनों में हरयाणा की धरती पर एक स्वर्ग की संज्ञा दी जाती है। परन्तु यथार्थ में आज हरयाणा का रूप कतई बिगाड़ दिया गया है। जिसे वास्तव में एक आदर्श राज्य बनना चाहिये था, उसे यहां के कर्णधारों ने जनकल्याण के बजाये जनविरोधी नीतियां अपनाकर कलंकित कर दिया है। आज यहां शराब की नदियां बहती हैं। घर-घर में यह जहर जा चुका है। शराब के ठेकेदार गांव-गांव में शराब की पेटियां भिजवाकर, वहां पर चल रही परचून की छोटी-छोटी दुकानों पर इन्हें रखवा देते हैं। इन दुकानों से सारे गांव में शराब की सप्लाई की जाती है। सारी युवा पीढ़ी को इस जहरीली नागिन ने डस लिया है। छोटे छोटे बच्चे चोरी छिपे घर से अनाज ले जाकर गांव के दुकानदार को दे देते हैं जिसके बदले वहां से शराब की प्याली उन्हें मिल जाती है। क्या होगा इन बच्चों के जीवन का जिन्हें हमारे नेतागण देश का भविष्य कहते नहीं थकते?

हरयाणा सरकार की तो आबकारी नीति इतनी खतरनाक एवं साजिशभरी है कि शराबखोरी को कम करने की बजाये लोगों को शराब पीने के लिये शर्मनाक लालच व आकर्षण दिये जारहे हैं। इस नीति के अनुसार उस ग्राम पंचायत अथवा नगरपालिका को वहां पर चल रही शराब की दुकानों से बिकनेवाली देसी शराब व अंग्रेजी शराब की प्रति बोतल पर क्रमशः एक रुपया व दो रुपये मिलेंगे। इससे स्पष्ट है कि सरकार चाहती है कि इस लालच में फंसकर अधिक से अधिक ग्राम पंचायतें अपने-अपने क्षेत्र में शराब के ठेके खोले जाने के लिये प्रस्ताव पास करें। जो ग्राम पंचायत विवेक व बुद्धि से काम लेते हुए इस अनैतिक आकर्षण का शिकार नहीं होती और अपने यहां शराब की दुकान बन्द करने के लिये प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजती हैं तो उनके इस उचित अनुरोध को मानने की बजाये इसे किसी न किसी बहाने ठुकरा दिया जाता है। वर्ष १९९१-९- के दौरान दिनांक ३०-९-९१ तक हरयाणा की १५० ग्राम पंचायतों द्वारा उनके यहां चल

(शेष पृष्ठ ६ पर)

शराब कितनी खराब ?

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

मनुष्य सृष्टि के आदिकाल से लेकर वह कितना पवित्र अवसर एवं मनुष्यजीवन का पुण्य प्रभात था जब ऋषियों के पवित्र हृदय में पवित्र वेदज्ञान का प्रकाश हुआ था। उसी वेद के प्रकाश को पाकर युगो तक मनुष्य पावनपथ पर अग्रसर होकर अपने सासारिक एवं पारमार्थिक जीवन को उन्नत बनाकर मुक्ति सुख का द्वार प्राप्त कर लेते थे। अपनी जीवनयात्रा को वैदिक सस्कृति के अनुसार बिताकर सुख का अनुभव करते थे। वही विश्ववारा सस्कृति ही मनुष्य का पथ-प्रदर्शन करती थी।

उसी वैदिक विश्ववारा सस्कृति में शराब को कितना खराब बताया गया है। ऋग्वेद मण्डल ८।२।१२ में शराब को खराबियो का वर्णन करते हुए कहा गया है कि—

"हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्। ऊधन नग्ना जरन्ते।"

अर्थात् शराबी लोग मदमस्त होकर आपस में झगडते हैं और नगे होकर लडते एव अण्ड-बण्ड बकते हैं। इसी प्रकार अथर्ववेद ६।७०।१ में भी कहा गया है—

"यथामास यथासुरा यथाक्षा अधिदेवने" इस मन्त्र में मास, शराब, जुआ आदि को निन्दनीय कहा गया है। ऐसे ही इसी वेद के पांचवे काड के ११६ में कहा गया है—

"सप्त मर्यादा कवय." अर्थात् मनुष्यजीवन को पापो से बचाने के लिए विद्वानो ने सात मर्यादाये स्थापित की हैं, उनमें यदि एक भी मर्यादा सीमा का उल्लघन किया जाता है तो मनुष्य पापी हो जाता है। उन मर्यादाओ के लिए इस मन्त्र में "अहुरोगात्" अर्थात् पापी हो जाता है। महर्षि यास्क ने अपने निरुक्त शास्त्र में नैगम काड के अध्याय ५, पाद ५ में शब्द सख्या १११ मे "अहुर" शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है—अहुरोऽहस्वान् अहरणमित्यप्यस्य भवति। अर्थात्—अहुर, अहुरण और अहस्वान् ये तीनो पापी के वाचक हैं। सात मर्यादाओ को गिनाते हुए महर्षि यास्क "सुरापान—मद्यपान को पांचवी मर्यादा बतलाते है। शराबी पापी होता है ऐसा सिद्ध करते हैं। इसी प्रकार यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण की कण्डिका २० में लिखा है—"सुरा पीत्वा रौद्रमना भवति" शराब पीकर मनुष्य का मन रौद्र भयानक हो जाता है। इसी प्रकार प्राचीन भारतीय सविधान के निर्माता राजर्षि मनु इसका निषेध करते हुए लिखते हैं—"सुरा वै मलमन्नाना पाप्मा च मलमुच्यते" अर्थात् शराब अन्न का मल है। मल को पाप कहते हैं। यह मल मूत्र के समान है। अत: इसे सभी वर्ग के लोग न पीवें।

क्या सोमरस शराब है ? एक षड्यन्त्र

श्री के० एम० मुन्शी जो उत्तरप्रदेश के गवर्नर थे उन्होने अपनी पुस्तक "लोपामुद्रा" में लिखा है—'ऋषि सोमरस—शराब पीकर नशे में चूर रहते थे', इसी प्रकार अग्रेज तथा भारतीय लेखक भी सोमरस को शराब ही मानते हैं। हमारा सभी देसी तथा विदेशी तथाकथित विद्वानो को चेलज है कि वैदिक साहित्य में 'सोमरस' शराब के अर्थ में कही भी प्रयुक्त नही हुआ है। शतपथ ब्राह्मण मे 'श्रीर्वै सोम:। राजा वै सोम' आदि मे सोम के अर्थ—श्री, राजा, प्राण, प्रजापति, अग्नि, विष्णु, परमात्मा, वायु सम्राट्, क्षत्रिय, वीर्य, यश आदि सोम शब्द के अर्थ लिए जाते हैं। प्रकरणानुसार सोम शब्द का परिज्ञान मन्त्र के भीतर आये विशेषणो से जाना जाता है। देवता से ही मन्त्र के विषय का ज्ञान होता है। निरुक्त मे पर वेदज्ञ महर्षि यास्क ने परमात्मा और आत्मा के तत्त्व का वर्णन करने के लिए सोम देवता के मन्त्रो का उल्लेख 'सोम: पवते जनिता मतीनाम्' किया है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण कांड ५, अध्याय १, ब्राह्मण २, कण्डिका १० में लिखा है—जिससे सोम का असली अर्थ प्रकट हो जाता है। 'सत्य यश. श्री ज्योति- सोम, अनृत पाप्मा तम: सुरा:' अर्थात् सोम चार चीजो का प्रतीक माना जाता है—१. सत्य, २ यश, ३ श्री, ४. ज्योति ये चार सोम शब्द से कहे जाते हैं। शराब तीन का प्रतीक है—१. अनृत-झूठ, २. पाप, ३. अन्धकार। अग्रेजों ने वैदिक संस्कृति को नष्ट करने के लिए यह षड्यन्त्र रचा था। यह षड्यन्त्र महर्षि दयानन्द ने वेदों का भाष्य करके विफल बना दिया था।

महाभारतकाल में शराब

श्रीकृष्ण और बलराम ने शराबी यादवों के लिए मृत्युदण्ड की घोषणा की थी, किन्तु जब उनके ही परिवार के लोग शराब पीने लगे तो यादवों का शराब से सर्वनाश होगया।

कुरान शरीफ में वैसे तो शराब पीना निषिद्ध है किंतु बहिश्त का वर्णन करते हुए लिखा है—'वहां शराब की नदियां बहती हैं। बहिश्त वालों को शराब पीने और मांस खाने को मिलेगा'। इतिहास पढने से पता लगता है कि प्रायश. मुसलमान बादशाह व उनकी बेगमें सभी शराब पीते थे। शराब के कारण ही मुस्लिम साम्राज्य समाप्त होगया था। छत्रपति शिवाजी तथा महाराणा प्रताप अनुपम योद्धा थे, किन्तु उनके पश्चात् उनके पुत्र शराबी होगए थे, उन्होने सब मटियामेट कर दिया था। राजपूतों का राज्य भी शराब व अफीम से नष्ट होगया। जाट राज्य भी शराब की बलि चढ गया था।

शराब की खराबियों को बतलाने के लिए वेदशास्त्र तथा इतिहास के प्रमाण देने पड़े हैं। शराब से सर्वनाश हो जाता है। ऐसा सभी भारतीय विद्वानों का मत है।

कितनी खराब ?—शराब से धन की बर्बादी बुद्धि का नाश, इज्जत का दिवाला, परिवार के स्त्री, पुत्र, माता-पिता परेशान व दुखी एव स्वास्थ्य का सत्यानाश हो जाता है। शराब में अल्कोहल नामक विष होता है जिसके कारण जिगर का कैंसर, टी० बी०, हार्ट अटेक, लकवा, अल्सर, (पेट का फोड़ा), पीलिया, गुर्दे खराब, पेशाब बन्द, तिल्ली का बढना, पागलपन और अन्त में खून की उल्टी आने से मौत हो जाती है।

शराब की विक्रेता हरयाणा सरकार

आज सारा हरयाणा शराब में डूब गया है। कोई ऐसा कार्य या अवसर नही है जहा शराब न चलती हो। सारे काम शराब की बोतल से ही शुरु होते हैं। शराब की बोतल से ही विवाह सगाई, शराब की बोतल से परीक्षा में नकल, शराब की बोतल से ही सब फसले हो जाते हैं। किसान मजदूर सर्वनाश के मार्ग पर चल रहे हैं उन्हें कौन बचायेगा ?

हरयाणा की सभी सरकारें शराब की नदियां बहाती आरही हैं। राजस्व के नाम से, विकास के नाम पर बहाना बनाकर शराब बेचकर प्रदेश को श्मशान बनाने की तैयारी में जुटी है। आर्यसमाज इसके विरोध में एक बहुत बडा अभियान चलाने की तैयारी में जुटा है। अब तो इस शराब के कलंक से आर्यसमाज ही बचा सकता है, नही तो यह कहावत चरितार्थ हो जायेगी—

गुजर गया दौर अब वह साकी, कि छिपके पीते थे पीने वाले।
बनेगा सारा जहां शराबखाना, हर कोई वायदा ख्वार होगा॥

कन्साला जि० रोहतक में शराब का ठेका बन्द

हरयाणा सरकार ने ग्राम कन्साला जि० रोहतक में इस वर्ष शराब का ठेका खोल दिया था, परन्तु श्री राजसिंह सरपंच ने अपने साथियों के सहयोग से ग्राम में ठेका नही खुलने दिया। किसी ने भी ठेके के लिए स्थान नहीं दिया। विवश होकर ठेकेदार ने ग्राम में ठेका बन्द कर दिया।

—राजपाल खोखर

आर्यसमाज सैनी हाई स्कूल का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री सुखवीरसिंह शास्त्री, उपप्रधान—रेणुबाला, मन्त्री—चौ० पर्वतसिंह, उपमन्त्री—अमितकुमार, कोषाध्यक्ष—बलराज शास्त्री, सस्थापक एव सचालक—बलराज शास्त्री।

प्रथम स्थान कर दो

ओ३म् इन्तो नु किमाससे प्रथमं नो रथं कृधि ।
उपमं वाजयु श्रवः ॥ ऋ० ८।८०।४

साक्षात्कार पुष्प हृदय में क्यों न खिल रहा है ?
इन्द्रदेव किन कुकर्मों का यह फल मिल रहा है ?
तुम बैठे हो भीतर मगर जगा पाता नहीं हूं,
स्वयं की आकमण्यता को भगा पाता नहीं हू ।

तभी सामर्थ्य होते भी मेरा रथ पीछे खड़ा है,
सर्वोत्तम होते हुए भी यह अति नीचे खड़ा है ।
यह जीवन सागर की मझधार में अटक गया है,
जीवन की प्रबलतम झझाओं में भटक गया है ।

मुझमें भी राम, कृष्ण, दयानन्द-सी आत्मा है,
मुझमें भी तो तुम्हारा ही तेज हे परमात्मा है ।
फिर विजय पाने में समर्थ क्यों हो पाता नहीं ?
प्रयास करने पर भी यह रथ आगे बढ पाता नहीं ?

मेरे उद्बोधन से अब तो मिलने की कृपा करो,
मेरी पुकार को सुनकर मेरी अकथ व्यथा हरो ।
आपके पास तो सुलभ है ऐश्वर्य, बल व ज्ञान,
आपके पास तो सभी सामर्थ्य है विद्यमान ।

मुझे अपना ऐश्वय, ज्ञान व अनुपम वाज बल दो ।
साहस, धैर्य, कर्मठता, आत्मविश्वास सबल दो ॥
अहो इन्द्र मुझे भी अपने जैसा बलवान् कर दो ।
सबसे आगे करके इस रथ का प्रथम स्थान कर दो ॥

—भगवानदेव 'चैतन्य'
१९०/एस-३ सुन्दरनगर (हि०प्र०)

संध्या स्वाद

जिसकी कृपा से मिला है मनुष्य का जीवन,
उस प्यारे प्रभु से जरा दिल लगाकर तो देखो ।

वह सुख का है सागर, खुशी का है दरिया,
कभी इसमें डूबकी लगाकर तो देखो ।

मैं क्या बताऊं कि सध्या में कितना मजा है,
यह नुस्खा है बढिया, इसे आजमा करके देखो ।

वह दौलत जिसे तुम समझते हो अपना,
वह उसने हो दी है उसे ही जरा सौंप करके देखो ।

वह रहता है हरदम हमारे ही अन्दर,
लगाओ आसन, करो बन्द आंखे, चरणों में सर को झुकाके देखो ।

—देवराज आर्य
आर्यसमाज बल्लभगढ़

वैदिक विद्वानों से निवेदन

१५, १६ व १७ मई, १९९२ को चरखी दादरी में आयोजित होने वाले प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जारहा है। आर्यजगत् के विद्वान् लेखकों से निवेदन है कि वे विद्यार्थी जी, आर्यसमाज के सिद्धांत व वंदिक मन्तव्यों के बारे में अपने लेख यथशीघ्र अपने चित्र के साथ सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें। स्मारिका के प्रकाशन का कार्य २०-४-९२ से प्रारम्भ हो जावेगा। यदि आपकी जानकारी में कोई ऐसे विद्वान् हैं जिन तक हमारी प्रार्थना नहीं पहुंच पाई हो, उनसे भी आप लेख भिजवाकर सहयोगी बन सकते हैं। स्मारिका में कम से कम तीन विज्ञापन भिजवानेवाले महानुभावों के पृथक् से चित्र भी छापे जावेंगे।

—प्रकाशवीर विद्यालंकार
सदस्य, सम्पादक मण्डल स्मारिका

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का ९२वां वार्षिकोत्सव

निमन्त्रण-पत्र

समस्त आर्यबन्धुओ को यह जानकर परम प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का ९२वा वार्षिकोत्सव ८ अप्रैल से १४ अप्रैल, ९२ तक समारोहपूर्वक मनाया जारहा है। इस अवसर पर ८ से १४ अप्रैल तक श्री प० मदनमोहन विद्यासागर के ब्रह्मत्व में "यजुर्वेद पारायण यज्ञ" होगा। वैदिक प्रदर्शनी, गुरुकुल जन्मोत्सव, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन तथा व्यायाम सम्मेलन होंगे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक एवं विविध शारीरिक व्यायाम के कार्यक्रम भी प्रस्तुत होंगे। इस शुभ अवसर पर आर्य विद्वानों एवं सन्यासियों के विविध प्रवचन और भाषण सुनने को मिलेंगे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध जी सरस्वती, स्वामी ओमानन्द जी महाराज, श्री वन्देमातरम् जी तथा ओजस्वीवक्ता श्री क्षितीश वेदालंकार आदि पधार रहे हैं। आशा है आर्यजन अधिक से अधिक सख्या में पधारकर पुण्य के भागी बनेंगे और कुलवासियों के उत्साह को बढ़ायेंगे।

—सुभाष विद्यालंकार कुलपति

(पृष्ठ ३ का शेष)

रही शराब की दुकानों को अगले वर्ष (१९९२-९३) यानि दिनाक १-४-९२ मे बन्द करने के लिये आवश्यक प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजे गये थे। परन्तु राज्य सरकार द्वारा इनमें से केवल २२ प्रस्तावों को ही स्वीकार किया गया और बाकी १२८ प्रस्तावों को किसी बहाने रद्दी की टोकरी की भेंट कर दिया गया।

पिछले वर्ष (१९९१-९२) के लिये शराब की बिक्री से होनेवाली आय का लक्ष्य ३५२ करोड़ रुपया रखा गया था, जबकि चालू वर्ष (१९९२-९३) के लिये यह लक्ष्य बढ़ाकर ४२३ करोड़ रुपया कर दिया गया है जिसे चाहे कोई तरीका अपनाना पड़े, पूरा करना है। राज्य सरकार को इसकी तनिक भी चिंता नहीं कि इस प्रक्रिया में जनसाधारण की किस कदर बर्बादी होगी। अब तो लोगों को आपसी मतभेद भुलाकर एकजुट होकर अपनी ताकत से इन शराब की दुकानों को हटाना पड़ेगा। इसके लिये महिलाओं, पुरुषों एवं युवाओं को ठेकों के सामने धरने देने होंगे तथा जरूरत पड़ी तो भूख हड़ताल भी करनी होगी, तब जाकर शराब-रूपी राक्षस को मारा जाना सम्भव हो सकेगा। लोकशक्ति के सामने शराब के ठेकेदार तो क्या, सरकार भी नहीं ठहर सकेगी। आइये, हम सब एक होकर शराबबन्दी जैसे जनहित एवं लोक-कल्याण कार्यक्रम में जुट जाय ताकि हम तथा हमारी आनेवाली पीढ़ियां जी सकें। शराब हटेगी तो हम बचेंगे।

शराबबन्दी हेतु लाडवा में पंचायत

आदमपुर, २ अप्रैल (ह०स०)। गांव लाडवा में शराबबन्दी हेतु पंचायत हुई और कई गांवों के लोगों ने बैठक में भाग लिया। इस बैठक की अध्यक्षता सूबेदार हरचन्द आर्य बालावास ने की।

मद्यनिषेध समिति के अध्यक्ष क्रांतिकारी श्री अत्तरसिंह आर्य, स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास, डा० बारुराम तथा दिलीपसिंह नम्बरदार ने इस पंचायत को सम्बोधित करते हुए इतिहास का उदाहरण देकर शराब की हानियों से अवगत करवाया तथा मद्यपान न करने का आग्रह किया।

वक्ताओं ने सरकार की शराब बढावा नीति का घोर विरोध किया तथा ग्राम पचायत लाडवा से गांव में पूर्ण मद्यनिषेध लागू करने का आग्रह किया। इस अवसर पर कुछ सज्जनों ने शराब न पीने का व्रत लिया।

आर्यसमाज कौल (कैथल) का उत्सव सम्पन्न

दिनांक २७-२८-२९ मार्च, ९२ को आर्यसमाज कौल का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ, जिसमें स्वामी मोदकानन्द जी, सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, शिवराम विद्यावाचस्पति, प्रो० भागसिंह आर्य आदि ने क्रांतिकारियों का इतिहास, राष्ट्ररक्षा, वैदिक शिक्षा, चरित्र निर्माण तथा बढती हुई शराबखोरी, धूम्रपान एवं अव्यवस्था पर मार्मिक शब्दों में प्रकाश डाला। गांव के नवयुवकों से संगठित होकर गांव में शराब का ठेका बन्द करवाने बारे संघर्ष करने के लिए आह्वान किया। इस अवसर पर हल्का के विधायक एवं हरयाणा विधानसभा के अध्यक्ष श्री ईश्वरसिंह पधारे, सभा को सम्बोधित किया तथा ११०० रुपये आर्यसमाज कौल को दान दिये। इसके अतिरिक्त पं० रामनिवास व पं० मुरारीलाल बेचैन के समाजसुधार के क्रांतिकारी भजन हुए। कार्यक्रम बहुत ही प्रभावशाली रहा।

—महावीरसिंह आर्य मन्त्री

आर्यसमाज थानेसर में ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

२ अप्रैल, १९९२ को आर्यसमाज थानेसर में ऋषि दयानन्द बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता डा० जे० ए० यादव द्वारा की गई। मुख्य अतिथि एव मुख्यवक्ता श्री किशनसिंह आर्य, प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज चण्डीगढ़ द्वारा ऋषिबोध पर प्रकाश डाला गया। श्री ओमप्रकाश आर्य एवं श्री वेदमित्र जी के प्रवचन हुए। आर्य स्कूल थानेसर के बच्चों ने ऋषि दयानन्द की जीवनकथा का भजनों द्वारा वर्णन किया।

आर्यसमाज थानेसर का प्रस्ताव

आज दिनांक ८ मार्च, ९२ को आर्यसमाज थानेसर की अन्तरंग मीटिंग आर्य प्रतिनिधि सभा के पत्र अनुसार आर्यसमाज मन्दिर थानेसर में हुई और निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया गया—

सर्वसम्मति से पास किया गया कि आजादी के जन्मदाता राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं युगप्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के सपनों को साकार करने के लिए सारे हरयाणा प्रदेश में शराब एवं अन्य नशाबन्दी कानून बनाया और लागू किया जाये।

यह भी पास किया गया कि विशेषकर कुरुक्षेत्र जो कि एक धार्मिक स्थान है, जिसका क्षेत्र ४८ कोस माना गया है। इस क्षेत्र को तुरन्त ही नशामुक्त घोषित किया जाये।

शराब हटाओ,
देश बचाओ

सरोहा खाप ग्रामीण क्षेत्रों में शराब के ठेके खोले जाने का विरोध करेगी

सोनीपत, १७ मार्च (त्यागी)। यहां समीपवर्ती ग्राम राठधना में सरोहा खाप की एक पंचायत हुई, जिसकी अध्यक्षता खाप के प्रधान केहरसिंह ने की। पंचायत में हजारों लोग शामिल हुए।

इस अवसर पर पंचायत के नियमों का उल्लंघन करने वाले तीन व्यक्तियों पर ११००-११०० रुपये जुर्माना किया। इनमें दो व्यक्ति गांव लहराड़ा के हैं, जबकि एक व्यक्ति जठेड़ी गांव का रहनेवाला है। ये व्यक्ति शराब पीकर घुड़चढ़ी के दौरान नाच रहे थे। ज्ञातव्य है कि सरोहा खाप ने नशीली चीजों के सेवन तथा बारात आदि में नाचने पर प्रतिबन्ध लगा रखा है और पंचायत के नियमों की उल्लंघना करने वालों पर ११०० रुपये जुर्माना करने की घोषणा कर रखी है।

सरोहा खाप के प्रवक्ता ओमप्रकाश सरोहा के अनुसार गांव-गांव में उप-समितियां बना दीगई हैं, जो नशीली चीजों का सेवन करने वालों तथा बारात में नाचनेवालों की निगरानी रखती हैं और सप्ताह में इसकी रिपोर्ट खाप के प्रधान को देती हैं।

इसी बीच खाप ने चेतावनी दी है कि गांव लहराड़ा में यदि शराब का ठेका खोला गया तो इसका डटकर विरोध किया जाएगा तथा पंचायत शराब के ठेके के दरवाजे पर अपना ताला लगा देगी। बताया जाता है कि ग्राम लहराड़ा की पंचायत ने एक प्रस्ताव पास करके जिला प्रशासन से मांग की हुई है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए लहराड़ा में शराब का ठेका न खोला जाये, लेकिन आबकारी एवं कराधान विभाग के अधिकारी लहराड़ा में शराब का ठेका खोलना चाहते हैं।

पंचायत ने जिला प्रशासन से यह भी मांग की है कि ग्रामीणों की बर्बादी को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में शराब के ठेके न खोले जायें। पंचायत द्वारा नशा विरोधी अभियान चलाये जाने के अच्छे परिणाम निकले हैं तथा शराब पीकर हुड़दंग करनेवालों पर पूर्णत: अंकुश लग गया है, इससे निश्चित ही मौजूदा माहौल में परिवर्तन आएगा।

साभार : पंजाब केसरी

पश्चिम बिहार दिल्ली में ऋषिबोध दिवस

डा० बी० के० बाल ज्योति आर्य पब्लिक स्कूल पश्चिम बिहार दिल्ली में १ मार्च, ९२ को ऋषिबोध उत्सव मनाया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वतन्त्रता सेनानी पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी थे। श्री रामलाल मलिक जी द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री मुन्शीलाल गुलाटी, श्री रामचन्द्र आर्य, श्रीमती सुशीला आनन्द, श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती कृष्णा चड्डा आदि गणमान्य अतिथियों का विद्यालय के मन्त्री डा० धर्मपाल, अध्यक्षा श्रीमती प्रकाश आर्या, संयोजक श्री जगदेव चौधरी, प्रधानाचार्या पुनीता चौधरी, अध्यापिका कामिनी निशि एवं शारदा आदि ने वैदिक साहित्य भेंटकर उनका सम्मान किया।

पश्चिमी क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने गणेशदास अग्निहोत्री चलविजयोपहार प्रतियोगिता में भाग लिया। दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यरत डा० आशाजोशी, डा० शशीप्रभा, डा० महावीर जी ने ज्ञानविवेक एवं दूरदर्शिता से निष्पक्ष निर्णय दिया। स्वतन्त्रता सेनानी श्री वन्देमातरम् जी ने महर्षि दयानन्द को महान् सन्त, परम तपस्वी, समाज-सुधारक और चेतना का स्रोत बताया। उन्होंने कहा कि भारतीय राष्ट्र की आत्मा उसकी सांस्कृतिक चेतना है आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं, एक आंदोलन है। हम महर्षि से प्रेरणा लें और बच्चों का नैतिक विकास कर उन्हें जीवित ग्रंथ बनायें।

—पुनीता चौधरी प्रधानाचार्या

मंगलमय हो नव संवत्सर

सुख समृद्धि-सफलता सरसे, जन-जन में आए नवजीवन।
प्रमुदित-कुसुमित वसुन्धरा हो, हर्षित मानवता का अभिमन।
महिमण्डल से असुर वृत्तियों का हो अब सम्पूर्ण समापन।
द्वेष-घृणा के भाव तिरोहित हों, फैले फिर से अपनापन।
जाग्रत ज्योति जगे जगती पर ज्योतिर्मय हो अवनी अम्बर।
आलोकित हो जगती सारी उगे ज्ञान का पावन दिनकर।
प्राप्त करे देवत्व मनुज सब बहे प्रेम की अनिल धरा पर।
नव आभा विस्तृत हो भू पर मंगलमय हो नवसंवत्सर॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

श्री चन्दरसिंह सांघी की पुण्य तिथि पर दान

आर्यसमाज सांघी जि० रोहतक के प्रधान श्री भलेराम आर्य ने अपने स्वर्गीय पिता श्री चन्द्रसिंह की पुण्य तिथि पर दिनांक २५-२६ मार्च, ९२ को ग्राम में वेदप्रचार तथा यज्ञ का आयोजन किया। श्री सरदारसिंह की भजनमण्डली ने प्रभावशाली भजन सुनाये। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ५०) वेदप्रचारार्थ दान दिया।

ऋग्वेद 	यजुर्वेद

वैदिक प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा और सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक
के तत्वावधान में

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह एवं पूर्ण नशाबन्दी अभियान

चरखी दादरी (जिला भिवानी) में १५, १६ व १७ मई, ९२
उपकार्यालय : आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी (जि० भिवानी, हर.)
मान्यवर !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिये समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द महाराज की अध्यक्षता में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिनांक १५, १६, १७ मई को चरखी दादरी जिला भिवानी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, विद्वान् वक्ता तथा गायक पधारेंगे और पं० गुरुदत्त के जीवन एवं व्यक्तित्व को उजागर करनेवाले अनेक कार्यक्रम रखे जायेंगे। इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार-गोष्ठियां, कवि सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन, भाषण-प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायेगी। अत: आपसे निवेदन है कि—

१) आप अपने आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्था से सम्बद्ध सभी महानुभावों को इस अपूर्व समारोह में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें तथा दिवंगत पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये चरखी दादरी (जिला भिवानी) में पधारें।

२) इस विशाल एवं भव्य आयोजन को सफल करने में तन, मन एवं धन से योगदान करें, विशेषत: स्वयं भी आर्थिक सहायता दें तथा अन्यों से दिलावें।

३) अपना सहयोग एवं सुझाव कार्यालय तक अवश्य पहुंचावें तथा यहां से प्रकाशित होनेवाली सूचनाओं और विज्ञप्तियों को जन-जन तक प्रचारित करें।

४) इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के लिए अपना विद्वत्तापूर्ण लेख तथा अपने व्यावसायिक संस्थान का विज्ञापन अवश्य भेजें।

निवेदक :

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	सुमेधानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह
संरक्षक	संयोजक	प्रधान

सूबेसिंह
मन्त्री

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सत्यनारायण
प्रधान आर्यसमाज चरखी दादरी

वेदप्रचार मण्डल पानीपत द्वारा वेदप्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत के संयोजक एवं सभा कोषाध्यक्ष मा० रामानन्द जी सिंगला के निर्देशन में पण्डित रामकुमार जी आर्य भजनोपदेशक की भजनमण्डली ने निम्नलिखित ग्रामों में वैदिकप्रचार व हवन किया। यज्ञवेदी पर कुछ नवयुवकों को यज्ञोपवीत भी दिये। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी की निर्वाण शताब्दी समारोह जो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में चरखी दादरी, भिवानी में बड़ी धूमधाम से मनाने का निश्चय किया गया है। इसके लिए ग्रामों में खूब प्रचार किया गया। जिन ग्राम से सहयोग मिला है वह निम्न प्रकार है—

खानपुर कलां में वैद्य धर्मपाल आर्य, श्री जयसिंह आर्य, रघुवीरसिंह आर्य, मा० जसवन्तसिंह आर्य ने पूर्ण सहयोग दिया।

ग्राम कासण्डी—श्री रामदत्त जी शास्त्री ने पूर्ण योगदान दिया।

नूरनखेड़ा—डा० जयपाल आर्य तथा रामकरण आर्य ने सहयोग दिया।

ईशापुरखेड़ी—श्री ज्यानीराम जी आर्य ने बड़ी श्रद्धा दिखाई।

गंगाना—प्रधान रामसरूप आर्य तथा राजपाल आर्य, श्री फतेसिंह रिसलदार, श्री होकमसिंह आर्य, पृथ्वीसिंह जी ने तो बड़ी भारी श्रद्धा से वैदिकप्रचार का विशेष प्रबन्ध किया। दर्जनों युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किये। हररोज हाजरी बढ़ती रही, बड़ी शांतिपूर्वक प्रचार सुना।

ऐचराकलां—श्री जिलेसिंह जी सरपंच तथा प्रधान विजयसिंह आर्य, रामपाल आर्य ने शराब का ठेका हटवाने के लिए ग्राम पंचायत से प्रस्ताव पास करवाकर सभा कार्यालय को भेजा तथा पूर्ण सहयोग दिया।

ऐचराखुर्द—चौ० कलीराम जी का विशेष सहयोग रहा।

बागड़ुखुर्द—चौ० प्यारासिंह, श्री रणजीत, धर्मवीर जी पंच ने अपना विशेष योगदान दिया।

बागड़ुकलां—मा० धारासिंह, श्री धर्मेन्द्रसिंह जी आर्य का भी विशेष योगदान रहा।

शराबबन्दी जनजागरण पंचायत सम्पन्न

दिनांक २३ मार्च, ९२ को शहीदी दिवस पर ग्राम लाडवा, हिसार में शराबबन्दी पंचायत हुई। जिसमें कई गांवों के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पंचायत की अध्यक्षता सूबेदार हरचन्द आर्य (बालावास) ने की। सभा उपदेशक एवं जिला शराबबन्दी के अध्यक्ष श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास व श्री दलीपसिंह नम्बरदार (लाडवा), डा० बारूराम, इन्द्रसिंह (उमरा), महावीरप्रसाद प्रभाकर (बधानीखेड़ा), ला० बनवारी आर्य (बुडाक) आदि वक्ताओं ने सुझाव एवं विचार रखे। इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। शराब तथा धूम्रपान से दूर रहने का आग्रह किया। सभी ने सरकार की शराब बढ़ाओ नीति का घोर विरोध किया। ग्राम लाडवा में पूर्ण शराबबन्दी करने का आग्रह किया। दो-तीन शराबियों ने शराब न पीने का व्रत लिया। अगली पंचायत ग्राम दाहिमा में ४ अप्रैल को बुलाने का निर्णय लिया लिया।

—पं० सन्तलाल स्वतन्त्रता सेनानी

आर्यसमाज चन्देनी जिला भिवानी का चुनाव

संरक्षक—सर्वश्री धर्मवीरसिंह वकील सरपंच, प्रधान—शीशराम कप्तान, उपप्रधान—दयानन्द कप्तान, तथा म० होशियारसिंह, मन्त्री—रतनसिंह अध्यापक, उपमन्त्री—लक्ष्मीनारायण, कोषाध्यक्ष—सज्जनसिंह अध्यापक, सहायक—हरिराम अध्यापक, प्रचारमन्त्री—हरिसिंह आर्य, भजनोपदेशक सहायक—जवाहरसिंह।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

नरेला क्षेत्र में बूचड़खाने के घोर विरोध के लिए संघर्ष का बिगुल

दिल्ली प्रशासन आर्यजनता की शक्ति की परीक्षा करना चाहता है अथवा नरेला क्षेत्र के लोगों को कमजोर समझकर शहर की दुर्गन्ध व गन्दगी बूचडखाने को, जिसे सभी क्षेत्र के लोगों ने अस्वीकार कर दिया है, हरयाणा के निकट नरेला में लाने के लिए ३४० बीघे भूमि को अधिगृहीत कर दिया है। आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज ने जहा इस इलाके को शराब के ठेके व सिनेमाघरों तक नहीं बनने दिया है, वहां आर्यजनता इस बूचड़खाने को कैसे सहन कर लेगी। शायद दिल्ली प्रशासन ने हमें ललकारा है तो हम इस चैलेंज को आप सभी के सहयोग से स्वीकार करते हुए सरकार को चेतावनी देते हैं कि यहां बूचड़खाने नहीं बनने देंगे।

कुछ वर्ष पहले ही आप लोगों ने चौ० हीरासिंह जी की अध्यक्षता में पं० जगदेवसिंह जी सिद्धांती तथा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती आदि नेताओं के नेतृत्व में प्याऊ मनियारीवाले बूचडखाने को घोर संघर्ष करके बन्द करवा दिया था।

आर्यो ! एक बार फिर वही सिंहनाद गुंजादो।

अपील :—

सभी राजनैतिक पार्टियां, धार्मिक व सामाजिक संगठनों तथा प्रभावशाली व्यक्तियों से अपील है कि इस दुर्गन्ध (बूचड़खाने) का घोर विरोध करने के लिए दिल्ली प्रशासन को विरोध पत्र लिखें। जन-सभायें व हड़ताल करें और रास्ता रोकने तथा सत्याग्रह तक के लिए तैयार रहें। जो भी इस आंदोलन में कार्य कर रहे हैं आप उनको अपना पूरा सहयोग, सभी प्रकार के भेदभाव भुलाकर करें। संघर्ष ही जीवन है। बुराई को सहन नहीं करेंगे।

निवेदक :

डा० धर्मपाल	प्रो० शेरसिंह	मा० पूर्णसिंह आर्य
प्रधान	प्रधान	मन्त्री
देहली आर्य प्रतिनिधि सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	आ० नरेला

सुनहरा अवसर

आज के इस भौतिकवाद के युग में घर की चौखट से लेकर संसार की ऊंची-ऊंची शिखर चोटियों तक प्रायः सभी दीवारों पर युवकों को पथभ्रष्ट करने के लिए अश्लीलता के नगे चित्र, शराब, मास और नशीले पदार्थों के पोस्टर लगे हैं और युवक इसके आकर्षण में आकर अपने चरित्र को बिगाड़ रहा है। ऐसे समय में इन युवकों को कोई राह दिखा सकता है तो केवल आर्यसमाज। अतः समस्त आर्य सज्जनों तथा आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि आप युवकों के निर्माण के लिए अपने-अपने क्षेत्र में आर्यवीर दल के प्रशिक्षण शिविर लगाये।

आर्यवीर दल हरयाणा आगामी ग्रीष्म अवकाश में सारे हरयाणा में शिविरों की योजना बना रहा है। जो आर्यसमाज इस प्रकार के शिविर लगवाना चाहे वह शीघ्र ही स्थानीय आर्यवीर दल के अधिकारियों से सम्पर्क करे या प्रांतीय कार्यालय आर्यसमाज, शिवाजी कालोनी, रोहतक से पत्र व्यवहार करें। ध्यान रहे कि शिविरों में आसन, प्राणायाम, जुडो कराटे, धनुर्विद्या, लाठी, भाला, छुरी और जमनास्टिक इत्यादि का प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों के द्वारा दिया जायेगा।

भवदीय—वेदप्रकाश आर्य
प्रांतीय मन्त्री आर्यवीर दल हरयाणा
कार्यालय : आर्यसमाज शिवाजी कालोनी, रोहतक

शराबबन्दी की जरूरत

गांधी जी ने कहा था कि यदि उन्हें एक दिन के लिये भारत का तानाशाह बनाया जाए तो वह बिना किसी मुआवजे के एक ही दिन में देश में शराब के तमाम ठेकों को बन्द करवा देंगे। उनके अनुयायी शराब की दुकानों के सामने मदिरापान करनेवालों को रोकने के लिए पिकेटिंग किया करते थे। परन्तु स्वतन्त्र भारत में सरकारें ऐसी नीतियां बनाती आरही हैं, जिससे ज्यादा शराब की बिक्री की जासके। हमारे नेताओं का एकमात्र तर्क है कि शराब की बिक्री से सरकारों को जो आमदन होती है उसे वह विकास के कार्यों में लगाती हैं। कोई इन महानुभावों से पूछे कि जनता को जहर पिलाने से उनका भला कैसे हो रहा है। संविधान में दिये गये निदेशक सिद्धांतों में एक यह भी है कि सरकार जनता के कल्याण के लिए मदिरा-निरोध लागू करेगी। सरकारें मदिरासेवन के विरुद्ध प्रचार तो करती हैं मगर इसकी बिक्री रोकने के लिये ईमानदार नहीं। लोकतांत्रिक सरकार का यह नैतिक दायित्व बनता है कि भारत जैसे गर्म और गरीब देश में नशाबन्दी विशेषकर शराबबन्दी लागू करे।

—चमन सिंगला
भुच्चो मण्डी, भटिंडा

ग्राम नलवा (हिसार) का शराब का ठेका बन्द

गत १ अप्रैल, ९२ से नलवा गांव का ठेका बन्द होगया है। यह पिछली पचायत की भूल या अज्ञानता के कारण आई०टी०आई०, कालेज, हाई स्कूल, महात्मा गांधी पार्क, बस अड्डा एव मेन रास्ते की शोभा घटा रहा था। आये दिन लड़ाई झगड़ा होता था तथा विद्यार्थियों पर बहुत बुरा असर पडता था। गरीब किसान मजदूर अपनी खून-पसीने की कमाई लुटा रहा था। नई पचायत के सरपंच श्री महेन्द्रसिंह कसमा तथा सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी की अहम भूमिका रही। गत फरवरी मे प्रस्ताव दिया, अधिकारियों से मिले, प्रदर्शन किया, साथ में चेतावनी भी दी। इस पाप के अड्डे को समाप्त होने पर गाव व गुवाड के लोगो में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। ग्राम नलवा व कवारो में पूर्ण शराबबन्दी लागू करदी गई है। शराब बेचनेवाले तथा पीनेवाले पर १०० रुपये जुर्माना, सूचना देने वाले को २५ रुपये इनाम दिया जावेगा। शराब पीकर गलियो में हुडदग मचानेवाले को १०० रुपये दण्ड तथा पीटकर पुलिस मे देने का फसला लिया गया है। ठेकेदारो को भी चेतावनी दोगई है कि अगर अवैध तरीके मे मोटर साइकिल तथा जीप आदि द्वारा शराब डालने या बेचने की कोशिश की तो जोप जलादी जावेगी और जमकर पिटाई होगी, बाद में पुलिस में दिया जावेगा। किसी को भी गाव की शांति भंग करने की इजाजत नही दी जावेगी। ज्ञातव्य है कि ग्राम कवारी, मुहजाहदपुर, बालावास में ठेकेदार की जीप को कई महीनो से गाव में नही घुसने दिया जाता है।

—पहलवान वजीरसिंह पच
ग्राम कवारी

शराबबन्दी जनजागरण पंचायत सम्पन्न

दिनांक ४-४-९२ को ग्राम दाहिमा में १५ गांवों की शराबबन्दी पचायत हुई। जिसको अध्यक्षता स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास जी ने की। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, संग्रामसिंह आर्य दडौली, कप्तान चन्दगीराम सरपच भोजराज, श्री महावीरप्रसाद प्रभाकर बवानीखेडा, श्री बलराजसिंह पूनिया लाडवा, श्री मागेराम शीतल सर्वोदय हिसार, श्री महेन्द्रसिंह सरपच नलवा आदि ने अपने सुझाव व विचार रखे। सरकार की शराब बढावा नोति की घोर आलोचना की। लोगों से शराब, धूम्रपान न करने का आग्रह किया। श्री मोतीराम सरपच दाहिमा व अन्य लोगों से अपील की कि अपने गाव से शराब का ठेका बन्द करवाओ। सितम्बर मास से पहले प्रस्ताव पास करके अधिकारियो को भेज। श्री हवलदार ज्ञानीराम ने अपना फौजी कार्ड फाड़ने तथा शराब न पीने का व्रत लिया। श्री मनफूलसिंह ने भी शराब पीना छोड़ा। अगली पचायत १२ अप्रैल को ग्राम सहाड़वा में बुलाई गई है।

—हेतराम पूर्व सरपच
ग्राम भोजराज

धर्म-शिक्षक की आवश्यकता

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत के लिये धर्म-शिक्षक की आवश्यकता है। जो चरित्रवान् एव आर्यसमाज के सिद्धांतों से भली-भांति परिचित हो तथा कक्षा छटी से बारहवी तक के छात्रो को पढाने में सक्षम हो। कुल मासिक वेतन कम से कम १५००/- अधिक योग्यता एव अनुभव के आधार पर दिया जायेगा। आवासीय सुविधा भी मुफ्त प्रदान की जायेगी। इच्छुक व्यक्ति अपने प्रार्थना-पत्र दिनांक २०-४-९२ तक अपने प्रमाण-पत्रों की प्रतियों सहित प्रबन्धक के नाम भेज।

—प्रबन्धक

ग्राम जूई (भिवानी) का शराब का ठेका बन्द

दिनांक १-४-९२ को ग्राम जूई का ठेका समाप्त होगया है। इस ठेके को समाप्त करवाने के लिये गांववालों ने काफी संघर्ष करना पड़ा। गतमास नवम्बर में कुछ दिन धरना चला। ६ मार्च, ९२ को भिवानी के ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शन किया गया। २३ मार्च को पुन: हिसार में नीलामी पर प्रदर्शन किया, पंचायत प्रस्ताव दिया गया। कई बार अधिकारियों से सम्पर्क किया गया। सरकार व अधिकारियों को ग्रामवासियों ने चेतावनी भी देनी पड़ी, तब जाकर यह पाप का ठेका खत्म हुआ। यहां आये दिन शराबी लड़ाई झगड़े तथा हुड़दग मचाते रहते थे। किसान मजदूर अपनी लहू-पसीने की कमाई लूटा रहे थे। इस कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक, आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं का भी विशेष सहयोग रहा। स्थानीय गांव के नरनारी तथा पंचायत तो पूर्ण जागरूक एवं सक्रिय थी ही।

अब जूईकलां, जूई विचलो, जूई खुर्द में रतनसिंह वानप्रस्थी के प्रयास से ३-४-९२ से तीनों गावों में शराबबन्दी लागू करदी गई है। शराब बेचनेवाले पर १०० रुपये दण्ड, शराब पीनेवाले पर ५० रुपये दण्ड लगाया जाता है। उपरोक्त सारे सघर्ष में चौ० जयमलसिंह आर्य, श्री शीशराम आर्य, बाबूलाल आर्य, लीलूराम आर्य, अशोककुमार, रामचन्द्र, सुमेरसिंह, पृथ्वीसिंह आदि का विशेष सहयोग रहा।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

ऋषियों का देश

ऋषियों का देश मेरा, भारत है प्यारा,
आज भी है और कल भी रहेगा।

गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनि, व्यास और पतंजलि,
रच डाले शास्त्र अद्भुत, आंखें विश्व की खुली,
ज्ञान-विज्ञान का, किया है पसारा।
आज भी है और कल ...... ।।

महात्मा, विदुर चाणक्य, नीतिज्ञ महान् थे,
कृष्ण राम आये यहां, गुणों की जो खान थे,
भारत का बच्चा-बच्चा, जानता हमारा।
आज भी है और कल......।।

महापुरुषों के पथ पर, चले और चलाये,
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, सार्थक बनाये,
सर्वा आशा मित्र भवन्तु, हमारा है नारा।
आज भी है और कल .... ।।

'महेश' आर्यों के लिये, दुनियां झुकी थी,
वित्तैषणा, पुत्रैषणा, लोकैषणा नही थी,
देवताओं की भूमि को, झुके सिर हमारा।
आज भी है और कल भी रहेगा। ऋषियों का—

—ब्र० महेशार्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

प्रांतीय बैठक

आर्यवीर दल हरयाणा की प्रांतीय बैठक श्री उमेदसिंह शर्मा जी की अध्यक्षता में दिनांक १८ अप्रैल, १९९२ शनिवार रात्रि ८ बजे आर्यसमाज नरवाना जिला जीद में होगी। जिसमें आगामी ग्रीष्म अवकाश में शिविरों की योजना पर विचार होगा।

—वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

पं० गुरुदत्त : एक अद्भुत व्यक्तित्व

१—अपने युग के विद्याविशारदों में सम्मान्य, अंग्रेजी भाषा में मौलिक साहित्य लिखनेवाले प० गुरुदत्त विद्यार्थी आर्यसमाज के ऐसे ज्ञानसागर थे जिनके गौरवशाली साहित्य का उदाहरण मिलना कठिन है।

मुलतान में लाला रामकृष्ण के घर २६ अप्रैल, १८६४ को गुरुदत्त का जन्म हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के रूप में घर पर ही उर्दू, फारसी और फिर अंग्रेजी सीखी। विद्याव्यसनी होने के कारण हाई स्कूल की शिक्षा के साथ ही उन्होंने रूमी, हाफिज, चार्ल्स ब्रेडला, जॉन स्टुअर्ट मिल तथा जेरेमी बेन्थम जैसे पौरस्त्य तथा पाश्चात्य तत्त्वचिन्तकों का सम्यक् अनुशीलन किया। चार्ल्स डार्विन, हर्बर्ट स्पेन्सर तथा काम्टे जैसे वैज्ञानिक दार्शनिकों के प्रभाव ने उनके अनीश्वरवादी स्वरूप को उभारना प्रारम्भ किया किन्तु प० रेमलदास तथा लाला चेतनानन्द आदि मित्रों के साहचर्य से आर्यसमाज के सम्पर्क में आगए। सत्यार्थप्रकाश पढ़ा और २० जून १८८० को विधिवत् आर्यसमाज लाहौर के सदस्य बन गए। महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थों के साथ ही साथ पाणिनि मुनि प्रणीत अष्टाध्यायी तथा अन्य शास्त्रों का भी अध्ययन किया।

२—लाला हंसराज और लाला लाजपतराय पण्डित जी के सहपाठी थे। बी० ए० की परीक्षा में प० गुरुदत्त यूनिवर्सिटी भर में सर्वप्रथम रहे और लाला हंसराज द्वितीय, जबकि प० गुरुदत्त का अधिकतर समय आर्यसमाज के प्रचार में लगता था। १८८२ में उन्होंने ऐसे क्लब की स्थापना की जिसमें नाना प्रश्नों तथा समस्याओं पर पूर्वाग्रहों से रहित होकर खुले मस्तिष्क से विचार-विमर्श किया जाता था। मित्र लोग उनके सहयोगी थे और वे स्वयं उस क्लब के मन्त्री थे।

३—१८८३ में महर्षि दयानन्द की रुग्णता का समाचार सर्वत्र फैल गया, लाहौर आर्यसमाज की अन्तरंग सभा ने उन्हें तथा लाला जीवनदास को महर्षि की सेवा में भेजा, इसी वर्ष उनके विचारों में नास्तिकता के जिन विचारों का विषवृक्ष जड़ जमाने लगा था। महाप्रयाण के समय मृत्युञ्जय दयानन्द की अन्तिम छवि तथा दृढ ईश्वर विश्वास से भरे उद्गारों ने उसे समूल उखाड़ कर धराशायी कर दिया। जो चीज डार्विन और स्पेन्सर, न्यूटन और बेकन से न मिल सकी वह मिल गई और ईश्वर में कभी न डिगनेवाली आस्था दृढमूल होगई। महर्षि दयानन्द की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश का उन्होंने १८ बार आद्योपांत अध्ययन किया था। उनका कहना था कि मैंने जब-जब इसे पढ़ा तब-तब नई से नई शिक्षा और जानकारी प्राप्त हुई।

४—महर्षि दयानन्द के निर्वाण के बाद उन्हें ८ नवम्बर १८८३ को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु आयोजित शोकसभा में एक ऐसे कालेज की स्थापना का निश्चय हुआ जिसमें संस्कृत तथा वैदिक शास्त्रों की शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी एवं पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के शिक्षण की भी व्यवस्था हो। पण्डित गुरुदत्त ने १८८५ में बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और अपने अथक प्रयासों से थोड़े समय में ही पंजाबभर से संस्था के लिए पर्याप्त धनराशि एकत्र करली। १ जून, १८८६ को डी०ए०वी० स्कूल के रूप में संस्था का बीजारोपण होगया। १८८६ में ही उन्होंने भौतिक शास्त्र में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर एम० ए० पास की और गवर्नमेंट कालेज में प्रोफेसर नियुक्त होगए। १८८७ में आप उस शिष्टमण्डल में सम्मिलित हुए जिसे डी०ए०वी० संस्था की सहायता हेतु सारे पंजाब का दौरा करना था। लाला लाजपतराय भी उस शिष्टमण्डल में आपके साथी थे।

(क्रमशः)

शराब की कुछ दुकानें बन्द करने का आदेश

अम्बाला शहर, १० अप्रैल (ए०मं०)। जब तक शराब के ठेकों को घनी आबादी से बाहर नहीं खोला जाता तब तक आंदोलन जारी रखा जायेगा। इसमें किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी जायेगी। इस बात की जानकारी 'ठेका शराब आबादी से बाहर' आंदोलन के चेयरमैन श्री ओमप्रकाश मलिक ने दी।

श्री मलिक ने पत्रकारों को बताया कि यह निर्णय एक बैठक में सर्वसम्मति से पास किया गया। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि ठेका शराब आबादी से बाहर आंदोलन जो पिछले तीन वर्षों से लगातार चलाया जारहा है कि हरयाणा में शराब के अहाते बन्द हों व ठेके शराब आबादी से बाहर हों, को ध्यान में रखते हुए इनकी नीलामी से पूर्व ही हरयाणा के आबकारी एवं कराधान मन्त्री श्री ए०सी० चौधरी ने सर्वेक्षण के बाद बन्द करने का आदेश दिया।

श्री मलिक ने क्षोभ व्यक्त किया कि गत ११ मार्च को एक प्रस्ताव पास कर अम्बाला कैन्टोनमेंट एरिया में शराब ठेके न खोलने का निर्णय लिया था परन्तु इनकी अवहेलना कर लोगों का निरादर एवं उपेक्षा की है।

साभार : हिन्दुस्तान

शराबबन्दी पर अनोखा फैसला

बेरी ११ अप्रैल (एस)। बेरी ब्लाक के गावों के सरपंचों ने सामूहिक रूप से यह फैसला किया है कि शराब बेचनेवाले पर ११०० रुपये जुर्माना, पीकर गलियों में घूमनेवालों पर ५०० रुपये और शराब पीकर विवाह, शादियों में नाचनेवालों पर २१०० रुपये जुर्माना किया जायेगा।

श्री फूल सरपंच ने बताया कि शराब की अवैध दुकान बन्द करवाने के लिये सरपंचों ने थानाध्यक्ष बेरी, उप-पुलिस अधीक्षक झज्जर और प्रवर पुलिस अधीक्षक श्री बी० के० सिन्हा रोहतक को प्रार्थना पत्र भेजे हैं।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

पानीपत में वैदिक आश्रम बनेगा

पानीपत : आर्यसमाज बड़ा बाजार-पानीपत द्वारा पूर्व स्थानीय आर्य स्कूल के मैदान में सम्पूर्ण भारत में अद्वितीय तथा अनुपम शोध संस्थान, वैदिक आश्रम का निर्माण कार्य, नलकूप के शिलान्यास के साथ ही प्रारम्भ होगया। इस अवसर पर नलकूप की खुदाई के लिए वैदिक आश्रम समिति के अध्यक्ष स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने पहली कस्सी चलाकर निर्माण कार्य की शुरूआत की। तदुपरांत अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के अधिष्ठाता आचार्य वेदभूषण, विदुषी साध्वी सविता जी, आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता श्री योगेश्वरचन्द जी व ठाकरदास जी बत्रा ने कस्सी चलाई। इस प्रकार चिर-प्रतीक्षित वैदिक आश्रम के निर्माण के कार्य का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर भारी संख्या में लोग उपस्थित थे।

आर्यसमाज पानीपत के प्रधान श्री रामानन्द सिंगला के अनुसार इस वैदिक आश्रम में प्रमुखत: वेदों तथा आर्षग्रन्थों पर शोध संस्थान, आयुर्वेद शोध संस्थान व विद्वज्जन वृद्ध आश्रम का निर्माण होगा।

वैदिक आश्रम समिति के मन्त्री राममोहनराय एडवोकेट ने कहा कि आश्रम का निर्माण तथा इसमें कार्य पूरे देश में अनुपम तथा अद्वितीय होगा। इसी उपलक्ष्य में एक नवशस्येष्टि यज्ञ का आयोजन भी वैदिक आश्रम स्थल पर किया गया, जिसकी पूर्णाहुति पर ही शिलान्यास का कार्य प्रारम्भ हुआ।

गुरुकुल भैंसवाल का उत्सव सम्पन्न

दिनांक २६ मार्च, ९२ को संस्था के कुलपति श्री शेरसिंह जी मलिक की अध्यक्षता में गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल का ७२वां वार्षिकोत्सव उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। जिसमें राष्ट्रीय अखण्डता, शराबबन्दी और गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली पर अनेक वक्ताओं के महत्त्वपूर्ण भाषण हुए। स्वामी कर्मपाल ने हरयाणा, दिल्ली, पूर्वी राजस्थान और पश्चिमी उत्तरप्रदेश की पंचायतप्रणाली पर विशद प्रकाश डाला और उन्होंने कहा कि सरकार से भी ज्यादा शक्ति समाज में है। पंचायत की शक्ति को तोड़ने के लिए सरकार ने दिल्ली के चारों ओर के हरयाणा क्षेत्र को चार राज्यों में बांट दिया है। जिस पंचायतप्रथा को न मुगल समाप्त कर सके और न अंग्रेज, उस पंचायत शक्ति का राजशक्ति से कोई मुकाबला नहीं, इसलिए पंचायतों को दहेज, शराब आदि प्रथाओं के विरुद्ध खुलकर मैदान में आना चाहिए। पूर्व सांसद कपिलदेव शास्त्री ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि देश में दो देश बनते हैं। एक इण्डिया जिसमें ८ हजार परिवार आई० ए० एस०, आई० पी० एस० अफसरों के, तीन हजार परिवार राजनीतिज्ञों के और २०० परिवार उद्योगपति और खरबपतियों के जो अपने बच्चों को पब्लिक स्कूल के माध्यम से शिक्षा दिलाते हैं।

दूसरा देश भारत है जिसकी आबादी ८५ करोड़ है। जिनके बच्चे सामान्य स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करते हैं। उन्होंने कहा कि मैंने इस विषय को लोकसभा में भी उठाया था और केन्द्र सरकार से मांग की थी कि शिक्षा ऋषि दयानन्द की प्रणाली पर दी जाये। ७ वर्ष का बच्चा लड़कों के स्कूल में और बच्चा लड़कियों के स्कूल में भेजदी जाये जिससे उनको शिक्षा समान स्तर पर मिले। प्रधानमन्त्री के बेटे पोते और उनके घर में काम करनेवाले भंगी के बेटे-पोते एक ही स्कूल में शिक्षा प्राप्त करें। पब्लिक स्कूल गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की अंग्रेजी माध्यम द्वारा नकल है, इसीलिये गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली का प्रचार और प्रसार सारे देश में होना चाहिए। गोहाना के विधायक श्री किताबसिंह मलिक का कहना था कि हरयाणा में भ्रष्टाचार चरमसीमा पर है और मैंने सोनीपत जिले में भ्रष्टाचारी अधिकारियों के खिलाफ जो आंदोलन शुरु किया है उसमें आप सबके सहयोग की आवश्यकता है। सभा के अध्यक्ष हृदयराम मलिक, उपप्रधान होशियारसिंह मलिक और महासचिव धर्मवीर मलिक ने अपने विचार रखे।

प्रसिद्ध महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री ने अपने लम्बे भाषण में आर्यसमाज की स्वतन्त्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका पर वर्णन करते हुए कहा कि जब तक आर्यसमाज पहल नहीं करेगा, तब तक शराब और दहेज जैसी बुराइयों की समाप्ति नहीं हो सकती। उन्होंने पोपपाल द्वारा ईसाइयत के प्रचार के लिए भारत के अनेक प्रांतों में यूरोप और अंग्रेजी राज्य द्वारा पैसे भिजवाने की भी चर्चा की और अरब देशों द्वारा जिस प्रकार इस्लाम के प्रचार के लिए योजनाबद्ध पैसा भेजा जारहा है तथा गरीब लोगों को मुसलमान बनाया जारहा है। इसलिए समाज को आगे बढ़कर देशविरोधी गतिविधियों का मुकाबला करना चाहिए। हरयाणा के प्रसिद्ध उपदेशक श्री हरध्यान-सिंह जी ने कहा कि आज देश में जो स्वतन्त्रता का वातावरण दिखाई देता है उसमें ७५ प्रतिशत हिस्सा स्वतन्त्रता आंदोलन में आर्यसमाजियों का था। अब जो बुराइयां बढ रही हैं, नवयुवकों को बुराइयों से बचाने के लिए आर्यसमाज को पहल करने की आवश्यकता है। अच्छे उपदेशक तैयार करने के केन्द्र इस समय देश में नहीं हैं। गुरुकुल भैंसवाल जैसी बड़ी संस्था में ऐसा एक उपदेशक विद्यालय भी स्थापित करना चाहिए।

श्री कपिलदेव शास्त्री ने संस्था के कुलपति श्री शेरसिंह मलिक और उनके पुत्रों से गुरुकुल भैंसवाल में अस्पताल की स्थापना के लिए एक लाख रुपये की अपील करते हुए कहा कि तीन वर्ष पहले मैं नवादा और ककरोला से अस्पताल के लिए १.५० लाख रुपया मांगकर लाया था। चौ० शेरसिंह के पुत्र रणवीरसिंह और प्रतापसिंह का इस सम्बन्ध में सकारात्मक उत्तर था। इस प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भी संस्कृत में भाषण दिये, जिससे जनता बड़ी प्रभावित हुई।

—सत्यपाल शास्त्री, आचार्य गुरुकुल भैंसवाल कलां

संध्या करने से क्या लाभ है ?

बहुत से भाइयों का प्रश्न है कि संध्या करने से क्या लाभ है ? उनका कहना है 'जब कर्मफल बलवान् है तो संध्या क्यों प्रधान है ? क्या संध्या करने से ईश्वर अपराधों को क्षमा कर देता है ? यदि नहीं तो फिर संध्या करने की क्या आवश्यकता है ?

२—सबसे पहले मैं उन्हें यह बताना चाहता हूं कि संध्या करना भी एक श्रेष्ठकर्म है। इसका भी फल प्राप्त होता है। संध्या के महत्त्व को समझने से पहले परमपिता परमात्मा को जानना आवश्यक है। जब तक ईश्वर की सत्ता का ज्ञान नहीं होगा, तब तक संध्या नहीं हो सकती।

३—वह प्यारा प्रभु कैसा है ? इसका संक्षेप में परिचय स्वामी दयानन्द जी ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में दिया है, जिसके अन्त में लिखा है कि वह (ईश्वर) सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है। यदि आपका ईश्वर में विश्वास है और यह मानते है कि वह सृष्टिकर्त्ता है तो समझो आप संध्या के क्षेत्र में आगये हैं। संध्या क्यों करनी चाहिये ? इस प्रश्न का उत्तर भी आपको स्वयं सूझने लगेगा। थोड़ा-सा मनन चिंतन कीजिये।

४—संध्या करना कोई ईश्वर पर एहसान नहीं है, अपितु हमारा कर्त्तव्य है। जब हम कर्त्तव्य का पालन करेंगे तो हमें अधिकार भी मिलेगा। हम तो मनुष्य हैं, मैंने देखा पक्षी भी संध्या करते हैं। एक वृक्ष पर बहुत-सी चिड़ियां रात को विश्राम करती थी। प्रातः सूर्य उदय होने से पूर्व जागकर सब मिलकर एक स्वर में चहचहाट करना आरम्भ कर देती थीं। मुझे ऐसा लगता था जैसे सभी मिलकर प्रभु कीर्तन कर रही हैं। इसी प्रकार सायंकाल सूर्य अस्त होते समय करती थी। जब पक्षीगण प्यारे प्रभु का धन्यवाद करते है तो हम मनुष्यों को सोचना चाहिये, जिसने हमें सर्वश्रेष्ठ जीवन प्रदान किया है और जीवित रहने के लिये जलवायु, वनस्पतियां आदि नाना प्रकार की सुविधायें जुटाई हैं, हमें भी उसका धन्यवाद करना चाहिये। यदि कोई उपकार करनेवाले का धन्यवाद नहीं करता है तो वह कृतघ्न है।

५—इस संसार के दूषित वातावरण में तमोगुण प्रधान होने पर आत्मा पर दुर्गुणों का प्रभाव हर समय सम्भव है। दुष्कर्मों की मलि-नता से बचने के लिये प्रातः सायं एकांत में बैठकर ध्यान कीजिये कि दिन-रात में कितने गलत काम किये हैं। यदि जाने-अनजाने में कोई पाप कर दिया है तो उसका प्रायश्चित्त करते हुए भविष्य में सावधान रहें। इस प्रकार नित्य आत्मनिरीक्षण करने पर जैसे साबुन से वस्त्र साफ हो जाता है ऐसे ही संध्या करने से आत्मा निर्मल हो जाती है। जब आत्मा शुद्ध होती है तो सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। सन्मार्ग पर चलने से सुख प्राप्त होता है।

६—एक कहावत है जैसी संगत वैसी रंगत अर्थात् जिन लोगों की संगत में बैठोगे उनका प्रभाव अवश्य पड़ेगा। दुष्ट दुर्जनों के संग में दुर्गुण और सज्जन विद्वानों के संग में रहने से सद्गुण प्राप्त होते हैं। किसी धनवान् व्यक्ति की मित्रता से आप भी धनवान् बन सकते हैं। इसी प्रकार परमपिता परमात्मा की शरण में रहकर उसके निकट बैठने पर वह प्यारा प्रभु जो सर्वगुणों और सुखों की खान है, हमारे ऊपर अवश्य कृपा करता है। जिसने अपने आपको उसके चरणों में समर्पित कर दिया वही धर्म अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ पागया। समर्पण का अर्थ है ईश्वर की आज्ञा का पालन करना अर्थात् उसके नियमों के अनुकूल कार्य करना।

७—मेरा अनुभव है मेरे सामने जब भी कोई समस्या आई या कठिन समय आया, परमपिता परमात्मा ने मुझे संघर्ष करने का साहस दिया और उसे हल करने का उपाय सुझाया। मैं समझता हूं यह संध्या करने का ही फल है। ओ३म् नमः।

—देवराज आर्य 'मित्र'
आर्यसमाज बल्लभगढ़, फरीदाबाद

जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत में वेदप्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित जिला वेदप्रचार मडल पानीपत के सयोजक एव सभा के कोषाध्यक्ष ला. रामानन्द जी सिंगला के निर्देशन में प० रामकुमार जी आर्य भजनोपदेशक की भजनमण्डली ने दिनांक १ मार्च से ३१ मार्च तक निम्नलिखित ग्रामों में वेदप्रचार किया। शिथिल आर्यसमाजों में चेतना पैदा की। कुछ ग्रामों में हवन किया। यज्ञवेदी पर नवयुवकों तथा युवतियों ने यज्ञोपवीत धारण करके दुर्व्यसनों से बचने का व्रत लिया। निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डाला गया। जैसे—पाखण्ड, अन्धविश्वास, शराबबन्दी, दहेजप्रथा, नारीशिक्षा, फैशनपरस्ती एव चरित्रनिर्माण पर विशेष प्रकाश डाला गया।

१—ग्राम खानपुरखुर्द जि० सोनीपत में श्रीकृष्ण, प्रीतसिंह आर्य, कर्णसिंह जी का विशेष योगदान रहा। १८६ रु० दान प्राप्त हुआ।

२. ग्राम सरगथल—श्री प्रधान भूपसिंह के सुपुत्रों ने भजनमण्डली का विशेष प्रबन्ध किया। वेदपाल आर्य सुपुत्र रामसिंह आर्य, रणवीर-सिंह सरपंच, बलवीर, महावीर ने वैदिकप्रचार को रुचि के साथ सुना। वेदप्रचार को बढ़ाने हेतु १२१ रु० दिये।

३. ग्राम कासण्डा—श्री प्रीतसिंह, महाशय गुणपाल एव नव-निर्वाचित सरपच महेन्द्रसिंह जी आर्य ने धन्यवाद सहित १६२ रुपये सभा को दान दिये।

४. ग्राम शाहपुर जिला पानीपत में आर्यसमाज की स्थापना करके सभा के सम्बन्ध फार्म भरे। प्रधान देइचन्द आर्य, मन्त्री कर्णसिंह आर्य, प्रतापसिंह, धनपत आर्य आदि ने विशेष सहयोग दिया। कुल धनराशि मण्डल पानीपत को ५६६ रुपये दीगई।

५. आर्यसमाज केथ जिला पानीपत में आर्यसमाज की स्थापना की गई। प्रधान श्री दयानन्द आर्य के सहयोग से वेदप्रचार सफल हुआ। कुल धनराशि ४१४ रु० प्राप्त हुई।

६. आर्यसमाज बिजावा जिला पानीपत में दो दिन वेदप्रचार को रुचि के साथ सुना। सर्वश्री राजवीर आर्य, जगवीर आर्य, बलवीर आर्य, जोनसिंह आर्य, इन्द्रसिंह आर्य ने विशेष श्रद्धा से प्रचार सुना। ३५६ रु० वेदप्रचार को दान दिये।

७. आर्यसमाज ठोल जिला कुरुक्षेत्र का आठवां वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ५०५ रु० श्रद्धा से दान दिया।

८. आर्यसमाज मनाना जिला पानीपत का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। ४३२ रु० दान दिया।

वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज मन्धार जि० यमुनानगर का १८वां वार्षिकोत्सव १६-२० मार्च को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न विद्वानों ने भाग लिया—वानप्रस्थी श्री महाशय हरलाल, सभा के भजनोपदेशक श्री खेमसिंह की भजनमण्डली व शेरसिंह आर्य भजनोपदेशक, श्री विद्या-भूषण, श्री मानसिंह ब्याना निवासी। सभा को ८०० रु० वेदप्रचार दिया।

—शेरसिंह आर्य सभा भजनोपदेशक

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

		रुपये
१	श्री चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त म० नं० ६१, विकास नगर रोहतक	११००
२	,, सूबेसिंह सभामन्त्री म०न० ३४, विकास नगर रोहतक	११००
३	,, चौ० हीरानन्द आर्य पूर्व शिक्षामन्त्री हरयाणा, भिवानी	११००
४	,, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार म०नं० ५१/२६ चाणक्यपुरी, रोहतक	११००
५	,, वेदव्रत शास्त्री आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना रोड, रोहतक	११००
६	ग्राम निवासी ढाकला जिला रोहतक	५०१
७	श्री मनफूलसिंह आर्य सिरसा	१०१
८	गुरुकुल किशनगढ घासेड़ा जिला रेवाड़ी	१०१
९	आर्यसमाज लाम्बा जिला भिवानी	१०५
१०	श्री मा० टेकराम आर्यसमाज ग्राम मन्दोला जिला भिवानी	१०१
११	,, हैडमास्टर मोहरसिंह आर्य ग्राम मिच जिला भिवानी	४४२
१२	,, जगवीरसिंह आर्य ग्राम मिसरी जिला भिवानी	१३२
१३	,, सरपंच राव रामस्वरूप आर्य, श्री मोहरसिंह आर्य, जगवीर आर्य ग्राम हिंडोल	३५१
१४	,, वैद्य धर्मपाल आर्य सु० उदमीराम ग्राम खानपुर कलां जिला सोनीपत	१०१
१५	,, जयसिंह आर्य सु० हरनारायण ,, जिला सोनीपत	१०१
१६	,, रघवीरसिंह सु० श्री जयलाल ,, जिला सोनीपत	५१
१७	,, मा० जसवन्तसिंह ग्राम खानपुरकला जिला सोनीपत	५१
१८	,, हवासिंह आर्य सु० पूर्णसिंह ,, ,,	५१
१९	,, चतरसिंह भू०पू० सरपंच ,, ,,	५१
२०	,, रामदत्त शास्त्री ग्राम कासण्डी ,,	१०१
२१	,, रामपाल आर्य सु० श्री शोशराम ग्राम ऐंचराकलां जिला जींद	५१
२२	,, जिलेसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज ,, जिला जींद	१०१
२३	,, विजयसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज सरफाबाद पो० बागड़कलां जिला जींद	१०६
२४	,, रामनारायण सु० हरद्वारीलाल द्वारा ग्राम नूरनखेड़ा जिला सोनीपत	१०१
२५	,, ख्यालीराम सु० शीशराम ग्राम ईशापुरखेड़ी पो० नूरनखेड़ा जिला सोनीपत	५१
२६	,, राजपाल आर्य सु० भगवाना ग्राम गंगाना जि० सोनीपत	५१
२७	,, रामस्वरूप आर्य प्रधान ,, ,,	७३
२८	,, हवासिंह सरपंच सु. चौ. मांगेराम ,, ,,	१०१
२९	,, होकमसिंह सु. चौ. उदमीराम हुड्डा ,, ,,	१०१
३०	,, किशनसिंह सु० चौ० सुखतानसिंह ,, ,,	५१
३१	,, पृथ्वीसिंह सु० सरूपसिंह सामूहिक ,, ,,	४२३
३२	,, प्यारासिंह, श्री रणजीतसिंह ग्राम बागड़खुर्द जि० जींद	६६
३३	,, कलीराम आर्य, श्री टेकराम ऐंचराखुर्द ,,	५४
३४	,, रणवीरसिंह व धर्मवीर सु० जगतसिंह ग्राम बागड़खुर्द जिला जींद	१३१

(क्रमशः)

—रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

देव दयानन्द ने ज्ञान की गंगा बहायी और पं. गुरुदत्त विद्यार्थी नास्तिक से आस्तिक बन गये

—डा० रामप्रकाश राज्यमन्त्री, हरयाणा

नई दिल्ली : आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में आर्यसमाज का ११७वां स्थापना दिवस राजधानी की समस्त आर्य-समाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से हिमाचल भवन, मण्डी हाउस, नई दिल्ली में ४ अप्रैल को समारोहपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि डा० रामप्रकाश, विज्ञान व तकनीकी शिक्षामन्त्री हरयाणा ने कहा कि स्वामी दयानन्द की सोच बहुत गहरी, तीखी व पैनी थी और उन्होंने पाखण्डों के अन्धकार को दूर करने के लिए घोर संघर्ष किया। दयानन्द का व्यक्तित्व व चिंतन इतना विशाल है कि उसे पूरी तरह समझ पाना कठिन है और ऐसे व्यक्ति धराधर्म पर सदियों बाद ही पैदा होते हैं। डा० रामप्रकाश ने आगे कहा कि योगि-राज अरविन्द ने कहा था कि दयानन्द अपने आप में इतने महान् थे कि उनके साथ कोई विशेषण लगाने की आवश्यकता नहीं है। महान् मनीषी पं० गुरुदत्त ने जब दयानन्द की मृत्यु का दृश्य देखा तो वे नास्तिक से आस्तिक बन गये और उन पर इतना दीवानापन छा गया कि घर आकर आर्यसमाज के दस नियम कपड़े पर लिखवाकर अपनी छाती व पीठ पर डालकर वेदप्रचार को निकल पड़े।

डा० रामप्रकाश ने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द के जीवनचरित्र लिखनेवाले बंगाल के देवेन्द्र बाबू ने लिखा है कि पृथ्वी पर बहनेवाली गंगा नदी में नहाने या उसका कोसों दूर से नाम लेने से पौराणिकों के कथनानुसार पाप तो नहीं कटते हैं परन्तु दयानन्द जी की टंकारा से अजमेर तक बही ज्ञान की गंगा में नहाने से तो निश्चित रूप से कल्याण होता है। डा० रामप्रकाश ने कहा कि कवि के शब्दों में ऐसे ऋषिराज दयानन्द पर हजारों ऋषियों को वारा जासकता है। सत्य के प्रचार के लिये दयानन्द को अनेक बार जहर पीना पड़ा और एक बार कुछ भक्तों ने दुःखी होकर बताया कि स्वामी जी, आज लोगों ने एक आदमी का काला मुंह कर जूतों की माला डाल व गधे पर बैठाकर यह कहकर जलूस निकाला है कि यह दयानन्द है। जनकल्याण के लिए हर प्रकार का कष्ट सहनेवाले दयानन्द ने हंसते हुए जवाब दिया कि असली दयानन्द तो तुम्हारे सामने बैठा है और नकली दयानन्द का यही हाल होता है।

डा० रामप्रकाश ने कहा कि सत्य का उद्घाटन करनेवाला देवनागरी हिन्दी में लिखा दयानन्द का अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आज घर-घर में पढ़ा जाता है। उन्होंने कहा कि चुनौतियों का सामना करने के लिए आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा को सुदृढ़ करने के लिए आर्यजनों को आज के पवित्र दिन संकल्प लेना चाहिए। उल्लेखनीय है कि गणमान्य श्रोताओं ने ओजस्वी-वक्ता डा. रामप्रकाश के उद्गारों को अनेक बार करतल ध्वनि से हर्ष व्यक्त करते हुए सराहना की।

आर्य स्त्रीसमाज काठमण्डी सोनीपत का चुनाव

प्रधान—श्रीमती प्रियम्वदा भू०पू० मुख्याध्यापिका कन्या गुरुकुल खानपुरकलां, उपप्रधान—श्रीमती धर्मपत्नी स्व० सुमेरसिंह दबास, मन्त्री—श्रीमती दीपकौर अध्यापिका राजकीय उच्च विद्यालय लहराड़ा, उपमन्त्री—श्रीमती फूलपति धर्मपत्नी श्री धर्मवीर शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्रीमती शकुन्तला अध्यापिका धर्मपत्नी श्री कंवरसिंह आर्य।

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस

आर्यसमाज नरवाना (जींद) ने १२ फरवरी, ९२ को आर्यसमाज के प्रांगण में महर्षि दयानन्द का १६८वां जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया। जिसमें आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, आर्य कन्या पाठशाला व महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, नरवाना के विद्यार्थी व अध्यापक अध्यापिकाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर यज्ञ के उपरांत बच्चों ने ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज से सम्बन्धित भजन व भाषण दिये। श्री राधाकृष्ण आर्य मन्त्री आर्यसमाज नरवाना ने अपनी तरफ से सांत्वना पुरस्कार बांटे।

इस अवसर पर आचार्य विजयपाल ने बोलते हुए बच्चों से कहा कि जिस प्रकार से स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु विरजानन्द से कठोर दण्ड सहन करके वेदों की शिक्षा प्राप्त की, उसी प्रकार से कठोर दण्ड व दुःख सहन करके हमें सदाचार व अन्य ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

सत्यपाल शास्त्री ने अपना वक्तव्य देते हुए नरवाना नगरवासियों से स्वामी दयानन्द के शिष्य लाला पतराम की भांति अपना निर्माण करने के लिए कहा, क्योंकि आज विश्व को आर्य बनाने के लिए स्वयं आर्य कहलाना अति आवश्यक है। अतः हमें स्वामी दयानन्द के सत्य व साहस, मातृभूमि से प्रेम जैसे अनेक गुणों को अपने अन्दर धारण करना चाहिए। इसी अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज ने कहा कि आज मानव को अपने चरित्र को उत्तम रखना अति आवश्यक है क्योंकि चरित्र का दूसरे लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। चरित्र जीवन निर्माण की एक सीढ़ी है।

अन्त में श्री राधाकृष्ण आर्य मन्त्री के साथ आर्यसज्जनों ने उपमण्डल कार्यालय में जन्म उत्सव प्रस्ताव की एक कापी उपमण्डल अधिकारी नरवाना को दी व एक हरयाणा सरकार को तथा एक भारत सरकार को आवश्यक कार्यवाही हेतु भेजदी। इस प्रकार से सारा दिन नरवाना नगर का वातावरण एक धार्मिक वातावरण में परिवर्तित हुआ।

—राधाकृष्ण आर्य
मन्त्री आर्यसमाज नरवाना

स्वामी स्वतन्त्रानन्द धर्मार्थ औषधालय रोहतक

श्री दयानन्दमठ रोहतक, हरयाणा की प्रबन्धकारिणी सभा ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द धर्मार्थ औषधालय ८ दिसम्बर, ९१ से खोला था। वह सुचारु रूप से चल रहा है। रोगी संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है।

आपसे निवेदन है कि आप स्वयं तथा इष्टमित्रों सहित सभी प्रकार के इलाज के लिये फ्री चिकित्सा सुविधा का लाभ उठाएं। धनी महानुभाव दान देकर पुण्य प्राप्त करें।

निवेदक—डा० सोमवीर आयुर्वेदाचार्य
एम०ए०एम०एस० (गोल्ड मैडलिस्ट)
रिटायर्ड ए०एम० ओ०
प्रधान चिकित्सक

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर का

वार्षिकोत्सव व ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

यमुनानगर। श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, यमुनानगर का वार्षिकोत्सव व ऋषि दयानन्द बोधोत्सव आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान में दिनांक १-२ मार्च, ९२ को मनाया गया। दोनों दिन महाविद्यालय के आचार्य श्री वागीश्वर शास्त्री एम०ए० के पौरोहित्य में विशाल यज्ञ हुआ, जिसमें नगर व निकटस्थ गांवों के आर्य नरनारी भारी संख्या में उपस्थित रहे व पूज्य आचार्य जी ने यजुर्वेद के कुछ मन्त्रों के आधार पर सारगर्भित उपदेश भी दिया। १ मार्च को स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, श्री जगन्नाथ कपूर, प० रूवेलसिंह आर्य, महाशय हरलाल आर्य वानप्रस्थी, श्री बलवन्तसिंह, श्री शेरसिंह व श्री विद्याभूषण जी के प्रभावशाली उपदेशों, भजनों व गीतों से श्रोताओं ने प्रेरणा प्राप्त की।

दिनांक २ मार्च को ऋषिबोधोत्सव के दिन स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, आचार्य वागीश्वर, श्री देवव्रत आचार्य व उपरोक्त भजनोपदेशकों ने अपने प्रवचनों व गीतों के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की व उनके जीवन कार्यों पर प्रकाश डाला तथा उनके कार्यों को आगे बढ़ाने का व्रत लेने की प्रेरणा दी। भारी जनसमूह ने विद्वानों के विचारों को श्रद्धापूर्वक सुना। कार्यक्रम में स्वामी सदानन्द सरस्वती व श्री चमनलाल सेठ की आर्यजगत् को दीगई उनकी सेवाओं के प्रति इनका नागरिक अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन महाविद्यालय के उपमन्त्री श्री इन्द्रजित्देव ने किया। दोनों दिन ऋषिलंगर की भी सुव्यवस्था रही तथा महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा प्राणायाम व योगशक्ति का सफल व सुन्दर प्रदर्शन भी किया गया। जिसे देखकर आर्य नरनारियों ने ब्रह्मचारियों को पुरस्कार भी दिये।

कार्यक्रम को सफल बनाने में महाविद्यालय के प्रधान श्री जयपालसिंह, मन्त्री रवीन्द्र आर्य ने अनथक प्रयास किये। इस बार निकटस्थ गांवों में कई दिन पहले ही जा-जाकर सर्वश्री हरलाल वानप्रस्थ, शेरसिंह, बलवन्तसिंह, महावीरसिंह व इन्द्रजित्देव ने प्रचार किया था। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के अभिभावकों के अतिरिक्त अनेक गांवों व जगाधरी तथा यमुनानगर के सैकड़ों आर्य नरनारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भी दान दिया गया।

—इन्द्रजित्देव उपमन्त्री

राम ! तुम्हें है कोटि नमन्

वसुन्धरा की असुर वृत्ति का, पूर्ण रूप से किया समापन।
वेदों की आभा फैलाई, फैला जगती पर अपनापन।

विप्र-धेनु-सुर-सन्तजनों के कष्टों का कर दिया शमन।
राम ! तुम्हें है कोटि नमन् ॥

वैदिक-पथ पर स्वयं चले तुम, वेदपथिक संसार बनाया।
अनुपम शौर्य-शक्ति-साहस से, दानवता की वृत्ति मिटाया।

भरा तुम्हीं ने हे युगमानव ! युग में निर्भयता स्पन्दन।
राम ! तुम्हें है कोटि नमन् ॥

दिव्य तुम्हारे सत्कर्मों से—फैला धरती पर देवत्व।
सत्य-धर्म की मर्यादा से—पुलकित हुआ पुनः मनुजत्व।

आर्ष विचारों की सुगन्धि पा—हुआ प्रफुल्लित विश्व चमन।
राम ! तुम्हें है कोटि नमन् ॥

—राधेश्याम आर्य 'विद्यावाचस्पति'
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

वैदिक यतिमण्डल की प्रेरणा और सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक
के तत्त्वावधान में

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह एवं पूर्ण नशाबन्दी अभियान

चरखी दादरी (जिला भिवानी) में १५, १६ व १७ मई, ९२
उपकार्यालय : आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी (जि० भिवानी, हर.)
मान्यवर !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिये समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द महाराज की अध्यक्षता में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिनांक १५, १६, १७ मई को चरखी दादरी जिला भिवानी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान् वक्ता तथा गायक पधारेंगे और पं० गुरुदत्त के जीवन एवं व्यक्तित्व को उजागर करनेवाले अनेक कार्यक्रम रखे जायेंगे। इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार-गोष्ठियां, कवि सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन, भाषण-प्रतियोगिताय भी आयोजित की जायगी। अत आपसे निवेदन है कि—

१) आप अपने आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्था से सम्बद्ध सभी महानुभावों को इस अपूर्व समारोह में सम्मिलित होने की प्रेरणा करे तथा दिवंगत पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये चरखी दादरी (जिला भिवानी) मे पधारें।

२) इस विशाल एव भव्य आयोजन को सफल करने में तन, मन एवं धन से योगदान करें, विशेषत स्वयं भी आर्थिक सहायता दें तथा अन्यों से दिलावें।

३) अपना सहयोग एव सुझाव कार्यालय तक अवश्य पहुचावें तथा यहां से प्रकाशित होनेवाली सूचनाओं और विज्ञप्तियों को जन-जन तक प्रचारित करें।

४) इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के लिए अपना विद्वत्तापूर्ण लेख तथा अपने व्यावसायिक संस्थान का विज्ञापन अवश्य भेजें।

निवेदक :

स्वामी ओमानन्द सरस्वती — सरंक्षक
सुमेधानन्द सरस्वती — संयोजक
प्रो. शेरसिंह — प्रधान
सूबेसिंह — मन्त्री

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सत्यनारायण
प्रधान आर्यसमाज चरखी दादरी

दानी महानुभावों की सेवा में अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त तथा आर्यसमाज की अनुपम निधि अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सन् १९१६ में अरावली पर्वत की शृंखला पर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद की स्थापना की थी। यह गुरुकुल कांगड़ी की शाखा रही है। यहां से वैदिक शिक्षा प्राप्त करके अनेक विद्वान् विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक सेवा कर रहे हैं। स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान यह गुरुकुल अनेक शहीदों एवं देशभक्तों की कार्यस्थली रहा है। इसका संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा किया जारहा है। शिक्षित तथा प्रशिक्षित अध्यापकों की सेवाये प्राप्त की गई हैं जो कि छात्रों को बड़े परिश्रम से पढ़ाते हैं और दिन की पढाई के बाद रात्रि को भी पढ़ाई के कार्य में सहायता देते हैं। गुरुकुल पद्धति के अनुसार छात्रों को प्रात. ४ बजे उठाया जाता है। शौच, स्नान तथा व्यायाम के पश्चात् सामूहिक संध्या हवन में सभी छात्र भाग लेते हैं। चालू वर्ष से एस० बी० एस० ई० का पाठ्यक्रम जो गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा मान्यता प्राप्त है लागू किया जारहा है। इस पाठ्यक्रम में हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, इतिहास, नागरिक शास्त्र, विज्ञान के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है। इस प्रकार छात्रो मे भारतीय संस्कृति के स्रोतों का अध्ययन करने की क्षमता उत्पन्न होती है। इन परीक्षाओं को केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारों ने मैट्रिकुलेशन के समकक्ष मान्यता दी हुई है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए सभी श्रेणियों में प्रवेश मिल जाता है।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के पास विशाल भवन है। विद्यालय भवन के अतिरिक्त छात्रावास की भी व्यवस्था है। इन भवनो की मरम्मत, बिजली की फिटिंग, नलकूप के लिए नई मोटर तथा बच्चों के लिये सुलभ शौचालय तथा स्नानागारों की व्यवस्था तुरन्त करवाई जानी आवश्यक है। परन्तु धनाभाव के कारण ये कार्य अभी अधूरे पडे है। सभा तथा गुरुकुल की आर्थिक स्थिति बडी कमजोर है। अभी तक सरकार से भी किसी प्रकार का अनुदान नही मिल सका है। सभा गुरुकुल को एक आदर्श शिक्षा संस्था बनाना चाहती है जिससे यहा के छात्र उच्च शिक्षा ग्रहण करके अपना भविष्य उज्ज्वल बना सके और उन पर आयुभर वैदिकधर्म का प्रभाव रह सके। स्वामी श्रद्धानन्द के स्मारक के रूप मे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ परिसर मे स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय भवन का निर्माण करने का निर्णय किया है। यहा वैदिक सिद्धांतो पर पुस्तकों का सग्रह किया जावेगा। इसके अतिरिक्त छात्रावास भवन के नीचे ऐतिहासिक संग्रहालय का भी विकास किया जावेगा, जहा स्वतन्त्रता सेनानियों तथा आर्यसमाज के नेताओं के दुर्लभ चित्र हैं।

अत: हम आपसे अपील करते हैं कि अपनी नेक कमाई में से अधिक से अधिक राशि का दान अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा सस्थापित इस गुरुकुल के सचालन तथा भवनों की मरम्मत आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम बैंक ड्राफ्ट, मनीआर्डर अथवा नकद सभा के उपकार्यालय गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) डा० नई दिल्ली-४४ के नाम भेजने की कृपा करें। सभा को दीगई दानराशि आयकर से मुक्त है।

आशा है आप यथाशीघ्र अपना मूल्यवान् योगदान भेजकर यज्ञ के भागीदार बनेंगे।

निवेदक :

ओमानन्द सरस्वती — कार्यकारी प्रधान, परोपकारिणी सभा
प्रो० शेरसिंह, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री — प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक
सूबेसिंह — मन्त्री

धर्मचन्द — मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद, डा० नई दिल्ली-४४
राजेन्द्रसिंह बिसला विधायक — कार्यवाहक प्रधान

महाशय श्रीचन्द — अनगपुर
विजयकुमार I.A.S. — पूर्व उपायुक्त

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ पंजीकरण नं० P/RTK-११ फोन नं० दयानन्दाब्द १६८, सृष्टि संवत् १,६६, ०८, ५३, ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक २१ २१ अप्रैल, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

आर्यसमाज चुनौती स्वीकार करें। जनता सावधान !

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला (दिल्ली) के वार्षिकोत्सव पर आर्यसमाज नरेला द्वारा एक बृहद् विज्ञापन वितरित किया गया, जिस के द्वारा नरेला क्षेत्र के टीकरी ग्राम में बननेवाले बूचड़खाने के घोर विरोध के लिए संघर्ष का बिगुल बजाया गया है। जिसमें लिखा गया है कि "दिल्ली प्रशासन आर्यसमाज को शक्ति की परीक्षा करना चाहता है अथवा नरेला क्षेत्र के लोगों को कमजोर समझकर शहर की सारी दुर्गन्ध व गन्दगी बूचड़खाने को जिसे सभी क्षेत्र के लोगों ने अस्वीकार कर दिया है, आपके क्षेत्र नरेला में लाने के लिए ३४० बीघे किसानों की उपजाऊ भूमि को दिल्ली के उपराज्यपाल के आदेश द्वारा अधिगृहीत कर लिया गया है। जो एशियाभर में सबसे विशाल बूचड़खाना होगा, जिसमें प्रतिदिन सहस्रों गायों की हत्या की जायेगी।

विज्ञापन में सभी वर्गों के लोगों, विशेषकर आर्यसमाजों से विशेष सहयोग की अपील करते हुए कहा गया है कि "जब कि हमने इस दिल्ली क्षेत्र नरेला में शराब के ठेकों तथा सिनेमाघरों की स्थापना नहीं होने दी, वहां हम इस विशाल बूचड़खाने को कैसे बनने देंगे। दिल्ली प्रशासन की इस चुनौती को हम आप सभी के सहयोग के बल पर स्वीकार करते हैं कि यहां गोहत्या नहीं बनने देंगे। इससे पूर्व भी आर्यसमाज के नेता स्वामी ओमानन्द जी व श्री प० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती आदि नेताओं ने मनियारी प्याऊ पर बननेवाले बूचड़खाने को संघर्ष करके बन्द करवा दिया था, जिसके बन्द करवाने में प्रो० शेरसिंह जी व जनता ने महान् सहयोग दिया था।

इस अपील पर चौ० हीरासिंह जी व स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा आर्यसमाज नरेला के सभी अधिकारियों के हस्ताक्षर हैं।

हमें बहुत ही दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि इस विशाल बूचड़खाने की स्थापना की स्वीकृति १९८५ में स्वर्गीय राजीव गांधी की कांग्रेसी सरकार द्वारा प्रदान की गई थी। आज भी केन्द्र में कांग्रेस की ही सरकार है।

विगत शताब्दियों के भारतीय इतिहास को देखने से पता लगता है कि इस पवित्र एवं पुण्यभूमि भारत में गोहत्या का अधमकार्य आर्यों के राज्य से लेकर मुस्लिम शासनकाल तक नहीं होता था। यहां तक कि बहादुरशाह, अकबर तथा हुमायूं जैसे कट्टर मुस्लिम बादशाहों तक तक ने जनता के हित एवं देश की आर्थिक उन्नति को लक्ष्य में रखते हुए गोहत्या न करने के नियम व फरमान जारी किये थे।

किन्तु देश के दुर्भाग्यवश भारत में अंग्रेजों के पदार्पण के साथ ही गोहत्या प्रारम्भ करदी गई थी, जिसके विरुद्ध १८५७ में मंगल पांडे जैसे वीरों ने भारतीय सेना में रहते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाकर विद्रोह कर दिया था। अंग्रेज गोमांसभक्षी व शराबी थे। उन्होंने भारतीय वैदिक संस्कृति को नष्ट करने तथा भारतीयों को दरिद्र, दुःखी व दीन बनाने के लिए गोहत्या जैसे अधार्मिक नीच कार्य को प्रचलित ही नहीं किया, अपितु मुसलमानों को गोहत्या के लिए प्रेरित किया था।

अंग्रेजों की इस कुटिलनीति का सर्वप्रथम विरोध किया था महर्षि दयानन्द ने। उन्होंने गोवध बन्द करवाने का आजीवन प्रयत्न किया। उन्होंने जनता में जागृति पैदा करने के लिए सत्यार्थप्रकाश के दशम समुल्लास में गौ को मनुष्य के घी दूध आदि के लिए बहुत ही उपयोगी बताया तथा आर्थिक स्थिति को सुदृढ करने के लिए देश की सुख-समृद्धि को बढ़ाने के लिए गोकरुणानिधि एवं 'गोकृष्यादि रक्षिणी सभा' की स्थापना भी की। गोहत्याबन्दी के लिए करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर कराकर रानी एलिजाबेथ को भेजने के लिए अभियान आरम्भ किया था। उसके साथ ही उन्होंने कहा था 'गौ आदि उपकारी पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है। उन्होंने बहुत ही दुःखभरे शब्दों में सत्यार्थप्रकाश में लिखा था—"जब से इस देश में मांसाहारी मद्यपी विदेशी लोगों का शासन हुआ है तब से ही आर्यावर्त्त देश की हानि होती चली आई है।

महर्षि के पश्चात् आर्यसमाज के लोगों ने भी इस दिशा में गोपालन के लिये जनता में जागृति पैदा की है। नामधारी सिखों ने तो गोरक्षा के लिये बड़े-बड़े बलिदान दिये हैं। गोरक्षा के लिए गुरु रामसिंह का बलिदान हुआ था। गुरु नानकदेव जी बचपन में गौवें चराया करते थे। दशम पादशाह गुरु गोविन्दसिंह जी परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहते हैं—

"यही देह आज्ञा तुर्क को खपाऊं।
गोघात का दुःख जगत् से हटाऊं॥
आस पूर्ण करो तुम हमारी।
मिटे कष्ट गौअन छूटे खेद भारी॥

आज सिखों में यह गोरक्षा की भावना कहां तक शेष है यह तो स्वयं वे ही जानें। इसी प्रकार शैव, शाक्त, वैष्णव, कबीर, दादू, राधा स्वामी आदि जितने भी मतमतान्तर हैं सब ही गौ के प्रति सम्मान की भावनायें रखते हैं।

स्वातन्त्र्य संग्राम के दिनों में जिनमें अधिकतर आर्यसमाजी नेता कांग्रेस में थे। कांग्रेस के प्रमुख तत्कालीन नेताओं के साथ अंग्रेज की इस गोहत्या नीति का घोर विरोध किया था। कांग्रेस नेताओं ने स्वराज्य मिलने पर पूर्णतया गोहत्याबन्दी का आश्वासन दिया था। महात्मा गांधी जी ने तो यहां तक कह दिया था "गोरक्षा का प्रश्न स्वराज्य से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। वे गोहत्या को नरहत्या के समान मानते थे।

महात्मा गांधी के अतिरिक्त लाखों की सभा में बोलते हुए गोहत्याबन्दी का जनता को आश्वासन देते हुए श्री बालगंगाधर तिलक जी ने कहा था "जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तब पांच मिनट में कलम की एक नोक से गोहत्याबन्दी का कानून पास कर देंगे।"

(शेष पृष्ठ ६ पर)

बामला में ठेका न खुलने देने के लिए जन-आंदोलन

भिवानी, ११ अप्रैल (एस)। जिला भिवानी के गांव बामला में शराब का ठेका न खुलने देने के लिए गांववासियों ने जन-आंदोलन शुरु कर रखा है। इस गांव में आसपास के लगभग १२ गांवों की एक पंचायत धामाण खाप की हुई। बैठक की अध्यक्षता केलंगा गांव के सरपंच आनन्दसिंह शर्मा ने की।

पंचायत में वक्ताओं ने जिला प्रशासन को चेतावनी दी कि वह गांव में ठेका न खुलने दे। चेतावनी दीगई कि यदि ठेका खोला गया तो किसी भी प्रकार की अनहोनी की हालत में सारी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

उल्लेखनीय है कि नये वित्तीय वर्ष के ठेके खुलने से पूर्व ही गांव की पंचायत ने एक प्रस्ताव पारित कर उपायुक्त से निवेदन किया था कि ठेका न खोला जाये। शराब व नशाबन्दी का अभियान पूर्व विधायकों हीरानन्द आर्य व बलबीरसिंह ग्रेवाल ने काफी समय से चला रखा है।

पहली अप्रैल को नये वित्तीय वर्ष का ठेका छोड़े जाने के बाद बामला में ३ अप्रैल को आसपास के गांवों के हजारों ग्रामीण एकत्रित होगये और उस मकान को तोड़ डाला जिसमें ठेका था। जिला प्रशासन ने गांव में पुलिस का भारी बन्दोबस्त कर रखा था। भिवानी के उप-मण्डल अधिकारी राजेश खुल्लर की मौजूदगी में गांववालों ने स्पष्ट घोषणा करदी कि वे ठेका नहीं खुलने देंगे।

बामला गाव मुढाल विधानसभा क्षेत्र में है और यहां से विधायक प्रो० छत्तरसिंह चौहान भी यहां ठेका न खुलने देने के आंदोलन के समर्थक हैं। जन-पंचायत में उन्होंने भी ठेका न खुलने देने का समर्थन किया था।

जिले में इस बार कई स्थानों पर शराब-विरोधी आंदोलन के कारण ठेके खुलने में प्रशासन को परेशानी हो रही है। उधर भिवानी में वैश्य माडल स्कूल के सामने ही ठेका खोल दिया गया है।

चौबीसी खाप के सभी गांवों में नशीले पदार्थों पर प्रतिबन्ध

सोनीपत, ११ अप्रैल (एस)। आन्तिल चौबीसी पंचायत ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके चौबीसी खाप के सभी गांवों में नशीली चीजों के सेवन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है।

इस सन्दर्भ में यहां नांगल खुर्द में आन्तिल चौबीसी खाप की एक पंचायत खाप के प्रधान रतनसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें खाप के सभी गांवों के प्रमुख लोग शामिल हुए। पंचायत में प्रस्ताव पास करके शादियों में नाचने-गाने पर भी पाबन्दी लगादी गई है। प्रस्ताव में कहा गया है कि जो व्यक्ति पंचायत के आदेशों की उल्लंघना करेगा, उस पर ११०० रु० जुर्माना किया जाएगा और जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को शराब आदि पिलाएगा, उस पर ११२५ रु० जुर्माना होगा तथा फिर भी कोई व्यक्ति नहीं मानता तो पंचायत उस पर ग्यारह हजार रु० जुर्माना करेगी। इतना ही नहीं सम्बन्धित व्यक्ति का सामाजिक बहिष्कार भी किया जाएगा।

पंचायत ने उक्त आदेशों को सख्ती से लागू करने के लिए गांव-गांव में मुनादी करने के आदेश जारी कर दिये हैं।

उल्लेखनीय है कि इससे पहले सरोहा खाप ने भी इस खाप के सभी गांवों में नशे के सेवन तथा शादियों में नाच गाने पर पूर्ण पाबन्दी लगाई हुई है और अब तक पांच लोगों को दण्डित किया जा चुका है। इससे नशे का सेवन समाप्त-सा होगया है।

सरोहा खाप के प्रवक्ता ओमप्रकाश सरोहा ने आन्तिल चौबीसी पंचायत के फैसले को समाज के लिए हितकर बताया है। उन्होंने अन्य खापों से भी मांग की है कि वे भी नशीली चीजो के सेवन आदि प प्रतिबन्ध लगाने की दिशा में ठोस पग उठाकर समाज की भलाई करें।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश आरम्भ

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा अरावली पर्वत की शृंखला में स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा जिला फरीदाबाद में कक्षा चौथी से नौवीं तक प्रवेश आरम्भ है। यहां पर सी० बी० एस० ई० का पाठ्यक्रम (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा मान्यता प्राप्त) पढ़ाया जाता है।

गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला तथा संग्रहालय आदि की व्यवस्था है। यहां छात्रों के रहन-सहन, आचार व्यवहार, स्वास्थ्य तथा चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है तथा धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास पर बल दिया जाता है। शिक्षा निःशुल्क है।

अत: अपने बालकों को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल में १५ मई तक प्रवेश करवाकर उनका उज्ज्वल भविष्य बनावें। तुरन्त सम्पर्क करें।

—प्रिंसिपल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद)
डाकघर नई दिल्ली-४४
फोन : ८-२७५३९८

आर्यसमाज सैक्टर-९ पंचकूला जि० अम्बाला का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रणवीर आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान—धर्मवीर बत्रा, उपप्रधान—श्रीमती जगदम्बा गुप्ता, महामन्त्री—जयदेव आहूजा, मंत्री—(हवनयज्ञ) यशपाल, मन्त्री—(सूचना) मनोहरलाल मनचन्दा, मन्त्री—(सामान्य) धर्मपाल आर्य, मन्त्री (युवक विभाग) भास्कर आर्य, कोषाध्यक्ष—मामराज गुप्ता, लेखानिरीक्षक—जीवनप्रकाश, पुस्तकालयाध्यक्ष—राजेश्वरप्रसाद सिंगला।

पानी का मुद्दा चण्डीगढ़ तथा अबोहर फाजिल्का से न जोड़ा जाये : प्रो. शेरसिंह

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के सभागार में छात्रसंघ तथा शांति सेना द्वारा १२ अप्रैल, ९२ को सतलुज व्यास लिंक नहर का पानी और हरयाणा के भविष्य पर आयोजित एक गोष्ठी में मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने सत्ताधारी नेताओं को परामर्श दिया कि वे लिंक नहर के पानी के मुद्दे को चण्डीगढ़ तथा अबोहर फाजिल्का के हिंदी-भाषी क्षेत्र से न जोड़ें। आपने अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कहा कि "यदि पंजाब के उग्रवादी तथा नेता चण्डीगढ़ लेने से इन्कार कर देवें तो उस अवस्था में पानी का मामला उलझ जावेगा और हरयाणा को हानि उठानी पड़ेगी।" लोंगोवाल समझौते के अन्तर्गत चण्डीगढ़ के बदले अबोहर फाजिल्का के हिंदी-भाषी क्षेत्र जो कि पंजाब में रह गये हैं, को हरयाणा को दिये जाने हैं। अत: हमें अपने अधिकार को छोड़ने की भूल नहीं करनी चाहिये।

आपने नदियों के पानी के बंटवारे का उल्लेख करते हुए बताया कि सभी राष्ट्रों के कानून के अनुसार कोई भी नदी किसी प्रांत व राष्ट्र की नहीं होती। अत: पंजाब के नेता सतलुज व्यास नदियों को केवल अपना किस कानून के अनुसार कह रहे हैं। पानी सांझा होता है और जिस प्रांत को पानी की आवश्यकता अधिक होती उसे अधिक पानी लेने का अधिकार बनता है। पंजाब के खेतों में सेम आई हुई है, क्योंकि वहां की भूमि का जलस्तर ऊंचा है और हरयाणा की अधिकतर भूमि में पानी बहुत नीचे चला गया है। इस कारण हरयाणा को पानी अधिक मिलना चाहिए। अत: पानी के बंटवारे के लिए पंजाब की धमकियों से नहीं डरना चाहिए। यदि उग्रवादी नहर की खुदाई में रुकावटें डालेंगे तो हरयाणा के नवयुवक छात्र के आगे आवें। हरयाणा का पक्ष सत्य और न्याय पर आधारित है। मुझे प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय के छात्र हरयाणा के हितों की रक्षा के लिये मैदान में आगये हैं। सत्य और न्याय की रक्षा नवयुवक ही अपनी वीरता के सहारे कर सकते हैं। हरयाणा के नवयुवक पंजाब के उग्रवादियों के दांत खट्टे कर सकते हैं। उग्रवादियों को पाकिस्तान से सहायता मिलती है। इसी कारण वे चण्डीगढ़ के स्थान पर अमृतसर को राजधानी बनाना चाहते हैं।

इस विचारगोष्ठी में सर्वश्री हीरानन्द आर्य, रिजकराम, वीरेन्द्रसिंह नारनौंद, वीरेन्द्रसिंह, शमशेरसिंह सुरजेवाला मन्त्री हरयाणा, मेहरसिंह राठी, रघुवीरसिंह हुड्डा, दौलतराम चौधरी, प्रदीप जैन, सम्पूर्णसिंह आदि नेताओं ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये और छात्र संघ ने एक प्रस्ताव करके निश्चय किया कि हरयाणा छात्र हरयाणा के अधिकारों की रक्षा के लिये संघर्ष करेंगे।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों के प्रयत्न से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के विद्यालय भवन में नये सिरे से बिजली की फिटिंग करवादी है और भवनों की मरम्मत का कार्य चालू करवा दिया है। प्रत्येक कक्ष में पंखे लगवाये जारहे हैं। पानी की व्यवस्था भी सन्तोषजनक करदी गई है। गुरुकुल के नलकूप में नई मोटर लगवादी है।

गुरुकुल में कक्षा ४ से ९वीं तक प्रवेश आरम्भ हो चुका है। इस वर्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम लागू किया जारहा है जो कि केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड के समकक्ष है और अन्य विषयों के साथ संस्कृत तथा धार्मिक शिक्षा अनिवार्य है। गुरुकुल में आचार्य पद पर नवयुवक श्री सोहनपालसिंह एम०ए०, बी० एड० को नियुक्त किया गया है। शेष अध्यापक भी नवयुवक तथा प्रशिक्षण प्राप्त तथा अनुभवी हैं। गुरुकुल में छात्रावास की व्यवस्था है। अत: छात्रों को विद्यालय के अतिरिक्त समय में भी अध्यापकों के निरीक्षण में रखा जाता है। गुरुकुल में शिक्षा हेतु कोई शुल्क नहीं लिया जाता। केवल छात्रों के अभिभावकों से भोजन शुल्क ही लिया जाता है। श्री धर्मचन्द जी मुख्याधिष्ठाता के निर्देशन में श्री हुकमचन्द राठी ने आदरी रूप में अधिष्ठाता का कार्यभार सम्भाल लिया है। वे दिन-रात गुरुकुल में निवास करके गुरुकुल को उन्नत करने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।

अत: जो माता-पिता अपने बच्चों को चरित्रवान् तथा उनका भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हैं वे यथाशीघ्र अपने बच्चों को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में दाखिल करवाने के लिये गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ निकट सराय ख्वाजा (दिल्ली हरयाणा बदरपुर सीमा) जि० फरीदाबाद से सम्पर्क करके लाभ उठावें। पत्र-व्यवहार के लिए आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डाकघर नई दिल्ली-४४ के पते पर अथवा टैलीफोन . ८-२७५३९८ से सम्पर्क करें।

—केदारसिंह आर्य

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह की तैयारी जोरों पर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तर्गत ऋषि दयानन्द जी के अग्रणी शिष्य तथा विद्वान् पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का शताब्दी समारोह जो कि १५ से १७ मई को चरखी दादरी जिला भिवानी में अन्तर्राष्ट्रीय रूप में स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता में मनाया जावेगा, समारोह की तैयारी जोर-शोर से प्रारम्भ होगई है। समारोह के संरक्षक श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, संयोजक श्री स्वामी सुमेधानन्द जी, सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी सभा के अन्य अधिकारियों के साथ समारोह को सफल करने के कार्य में दिन-रात जुटे हुए हैं। समारोह के सहसंयोजक पं० सत्यनारायण आर्य भी चरखी दादरी आर्यसमाज के अधिकारियों तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं के साथ शताब्दी का प्रचार तथा धनसंग्रह हेतु प्रयत्नशील हैं। शताब्दी प्रचार तथा धनसंग्रह हेतु हरयाणा के प्रत्येक जिले में उपसमितियों का गठन कर श्री विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त भी हरयाणाभर का भ्रमण करके आर्यजनता से सम्पर्क कर रहे हैं। आचार्य सुदर्शनदेव जी, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, डा० योमानन्द जी, श्री वेदव्रत शास्त्री आदि विद्वान् इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के सम्पादन में योगदान दे रहे हैं। यजुर्वेद पारायण यज्ञ एक सप्ताह पूर्व आरम्भ हो जावेगा।

सभा के सभी उपदेशक तथा भजनोपदेशक हरयाणाभर में आर्यसमाजों में प्रचार तथा धनसंग्रह का कार्य कर रहे हैं। इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए राष्ट्रीय-सत्र के नेताओं तथा वैदिक विद्वानों की स्वीकृति सभा कार्यालय में प्राप्त हो रही है।

—सोमवीर सभा उपमन्त्री

वेदप्रचार

दिनांक १५-१६-१७ मार्च, ९२ को ग्राम क्योड़क (कैथल) में आर्यसमाज की ओर से वेदप्रचार का आयोजन किया गया। जिसमें सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी द्वारा चौपाल में हवन किया गया। नवयुवकों से शराब न पीने की अपील की। प० खेमसिंह आर्य क्रांतिकारी की मण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुए। महाशय जी ने पद्मिनी महाभारत तथा शराबी का इतिहास रखा। बृजभाषा में होली भी गाई गई, जिसका लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। प्रचार में १५-१६-१७ मई को दादरी (भिवानी) में प० गुरुदत्त विद्यार्थी की शताब्दी में आने बारे निमन्त्रण दिया गया।

—सतावसिंह आर्य मन्त्री

आर्यसमाज रादौर जिला यमुनानगर का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री विद्याभूषण आर्य, उपप्रधान—श्रीमती विद्यावती आर्या, मन्त्री-राजकुमार आर्य, उपमन्त्री-सुरेशकुमार आर्य, उपमन्त्री-अनूपकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—श्रीमती विमला बंसल, सहायक कोषाध्यक्ष—आशा नय्यर, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती सरला आर्या, प्रचारमन्त्री—रामकिशन आर्य, निरीक्षक—डा० हरिसिंह शास्त्री।

दादरी चलिए—लोहारू चलिए

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन अबोहर-१५२११६

मैं बहुत समय के पश्चात् सर्वहितकारी के लिए कुछ लिख रहा हूं। गतदिनों एक लेख भेजा था। सम्भवतः पहुंचा ही नहीं, इसलिए न छपा। १४ मार्च का हरयाणा सभा ने अपनी चरखी दादरी की बैठक में मुझे भी बुलाया था, परन्तु मैं १२ मार्च को केरल की लम्बी यात्रा से घर पहुंचा था। अतः मैं दादरी न पहुंच पाया। सभा ने वैदिक यतिमण्डल के साथ मिलकर चरखी दादरी में महान् मनीषी प० गुरुदत्त विद्यार्थी की निर्वाण शताब्दी मनाने का प्रशंसनीय निर्णय लिया है। मैं स्वयं इस समय इसी शताब्दी के प्रचार में लग चुका हूं। आर्यमात्र को इसे सफल बनाने के लिए तन से, मन से और धन से अपना पूरा सहयोग करना चाहिए। सभा ने यतिमण्डल के साथ मिलकर मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी पर मेरे द्वारा लिखित ३६ पृष्ठ की पुस्तिका बीस हजार की संख्या में छापी है।

आर्यसमाज में प्रथम बार ही ऐसा उद्योग हुआ है कि एक महापुरुष की जीवनी बीस हजार की संख्या में छपी है। मुझ अभी-अभी हिण्डौन राजस्थान से पत्र मिला है कि वे दो सौ प्रतियां तो मंगवा चुके हैं, पांच सौ और मंगवायेंगे। ऐसा उत्तम व इतना सस्ता साहित्य इस युग में कहां मिलता है ? आर्यसमाज पुरुषार्थ करे तो शताब्दी से पहले-पहले इसकी एक लाख प्रति खप सकती हैं। इस पुस्तिका में मैंने ऐसी अनेक घटनायें दी हैं जो प्रथम बार ही प्रकाश में आई हैं।

केरल से आर्यसमाज के तपस्वी विद्वान् आचार्य नरेन्द्रभूषण भी दादरी आना चाहते थे। मैंने किसी कारण से उन्हें रोका। उनके सुपुत्र ब्र० वेदप्रकाश को यदि हरयाणा सभा ने या यतिमण्डल ने बुलवाया तो वह अवश्य आवेगा।

अबोहर के ग्रामीण क्षेत्र में शताब्दी का प्रचार हम कर रहे हैं। गिदड़बाहा डबवाली क्षेत्र से भी प्रो० अशोक आर्य, श्री मदनलाल आर्य व डा० धर्मपाल जी आदि के साथ बहुत लोग आयेंगे। मैं भटिण्डा भी इसी कार्य के लिए जा रहा हूं। दूसरे प्रांतों में भी निजी पत्र लिख रहा हूं। शताब्दी आर्यसमाज को जगाने व झकझोड़ने का एक अच्छा साधन बननी चाहिये। यह एक लीडर सम्मेलन व तमाशा ही न बन जावे, इसका अधिकारियों को ध्यान रखना चाहिए। शताब्दी पर पूज्यों का ही पूजन हो। अपूज्यों का सर्वत्र स्तुतिगान करने के कारण आर्यसमाज अपना प्रतिष्ठा खो रहा है। आर्यसमाज एक धार्मिक सभा है। यह एक तेजस्वी संगठन रहा है। अपनी गौरवमयी परम्पराओं के व अपने सत्य सिद्धांतों के अनुरूप ही आर्यों का आचरण होना चाहिये। प० लेखराम का समाज भाटों का समाज नहीं। यह सत्य पर मर-मिटनेवाले प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द व स्वामी स्वतन्त्रानन्द के लहू से सींचा हुआ समाज है। बस इतना ही संकेत पर्याप्त है।

मैंने वैदिक यतिमण्डल व हरयाणा सभा को लिखा था कि लोहारू के रक्तिम कांड की अर्द्ध शताब्दी भी साथ के साथ मनानी चाहिए। देश की दूषित परिस्थितियों के कारण मैं यह प्रस्ताव पतक्ष न रख सका। अब स्थिति बदल गई है। हर्ष का विषय है कि सभा ने मेरी यह विनती भी स्वीकार करली है।

मेरा सुझाव है कि एक ही समय पर दादरी व लोहारू में पारायण यज्ञ प्रारम्भ हो। लोहारू में दो-चार दिन पूर्व भी यज्ञ प्रारम्भ किया जा सकता है। सब ओर से पदयात्रा करते हुए आर्यवीर दल, यतिमण्डल के साधु, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी लोहारू व दादरी पहुंचें। यात्रा में केवल नारे ही न लगावें। प० गुरुदत्त जी पर सुन्दर गीत भजन गाये जावें। लोहारू के खूनी कांड, दीनबन्धु महात्मा फूलसिंह, चौ० नौनन्दसिंह (स्वामी नित्यानन्द जी) व लौहपुरुष महाबलि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जीवन व बलिदान पर जोशीले प्रेरणाप्रद भजनों से खूब प्रचार किया जावे।

धनवान् समाज, गुरुकुल भैंसवाल, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के भक्त व सभा मिलकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के, महात्मा फूलसिंह के व स्वामी नित्यानन्द जी के सुन्दर चित्र भी छपवायें तो अच्छा है। आर्यो ! धन स्कूलों पर मत फूको, वेदप्रचार मुख्य है, यही परमधर्म है। स्कूलों कालेजों ने आज तक आर्यसमाज को एक भी शहीद नहीं दिया। पं० गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, महाशय राजपाल, वीर तुलसीराम, इनमें से एक भी आर्य स्कूल से नहीं पढ़ा था। ये विभूतियां सत्संग व स्वाध्याय से प्राप्त हुई थीं। इसलिये अपना धन परमधर्म के लिये दान में दो। नये-नये शहीद मिलेंगे तो संगठन प्राणवान् बनेगा। शहीद तभी पैदा होंगे जो प्रचार तन, मन व धन दोगे तो।

मैंने इसी अवसर के लिए एक पुस्तिका श्री स्वामी ओमानन्द जी को प्रकाशनार्थ भेजी है। लोहारू के आंदोलन पर नई खोज करके नई पुस्तिका लिखी है—'धरती होगई लहूलुहान'।

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने लिखा है कि यह भी करणीय कार्य था सो अवश्य छपेगी। समाज इसके लिये भी सभा को अविलम्ब धन पहुंचा दे। लोहारू में नीम के वृक्ष के नीचे फील्डमार्शल बालब्रह्मचारी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज पर कुल्हाड़े का वार हुआ था। श्री महाराज पर लाठियों की भीषण वर्षा हुई थी। आर्यसमाज के कई दुलारे व प्यारे मक्की के भुट्टों की तरह कूटे गये। अस्त होता हुआ सूर्य साक्षी है, आकाश के उदित हुए तारे साक्षी हैं, अपने-अपने घोंसलों को जाते हुए पक्षी साक्षी हैं कि जब एक ईश्वर को मानने वाले सहस्रों भोले-भाले ग्रामीण आर्य खड़े-खड़े संध्या कर रहे थे तो नवाब की फौज, पुलिस व गुण्डे तथा नमाजी मोमिन उन पर टूट पड़े—

धरती हो गई लहूलुहान।
जाने घटना सकल जहान॥

इसी स्थान पर जहां प्यासी धरती की मुनि महान् ने लहू की धार देकर प्यास बुझाई थी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द कीर्ति स्तम्भ बनना चाहिए। लोहारू का यह विजयस्तम्भ बनना ही चाहिए। आज श्रद्धानन्द बलिदान भवन कहां है ? हमारे किसी भी शहीद का कोई पवित्र स्मारक है कहीं ? हरयाणावासियो ! यह कलंक आपको धोना है। सारा आर्यजगत् इसके लिए सहयोग करे। हरयाणा में बहुत साधु वानप्रस्थी हैं। इनमें कुछ ऐसे भी होंगे जिनसे समाज को कोई लाभ नहीं पहुंच रहा, परन्तु ऐसे भी साधुओं, वानप्रस्थियों की इस प्रदेश में कमी नहीं जो दिन-रात प्रचार में लगे रहते हैं।

इसी शताब्दी के संयोजक स्वामी सुमेधानन्द जी ने राजस्थान को जगा दिया। राजस्थान में कभी आर्यवीर दल की ५-६ शाखायें लगती थीं और आज इस प्रदेश में साठ के लगभग आर्यवीर दल की शाखायें चल रही हैं। एक के बाद दूसरा शिविर लग रहा है। स्वामी वेदरक्षानन्द जी के रूप में हरयाणा ने एक और विद्वान् साधु समाज को दिया है। स्वामी गोरक्षानन्द जी जैसे निर्भीक संन्यासी हरयाणा के पास हैं।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द कीर्ति स्तम्भ के नींव पत्थर के दिन से वहां दो-तीन साधु डेरा लगाकर बैठ जावें। उस क्षेत्र में यह प्रचार का एक सुदृढ केन्द्र बन जाना चाहिये। हमारी श्रद्धा का एक केन्द्र हो, दोनों समय यज्ञ हो, कथायें हों, समय-समय पर योग शिविर लगें, आर्यवीरों के शिविर लगें, अतिथियों को भोजन मिले क्या यह सम्भव नहीं ?

यह सब कुछ सम्भव है। ऐसे साधु निकलें जो महान् गुरु स्वतन्त्रानन्द के बलिदान का मूल्य समझते हों। आर्यसमाज को तो मकड़ी के जाले ने समाप्त कर दिया। मकड़ी अपने जाले को बुनकर उसी में फंस जाती है। ये स्कूल कालेज मकड़ी का जाला हैं। इसी जाले ने आर्यसमाज को खाया है। यह इतिहास का कटु सत्य है। भूल का सुधार करना होगा। शहीदों की पुकार है—चलिए दादरी······चलिए लोहारू। तन से, मन से, धन से सहयोग करो।

अम्बाला छावनी में आर्यसमाज स्थापना दिवस

वैदिक प्रचार मण्डल-२९ रामनगर के तत्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया। श्री नरेन्द्र शास्त्री जी ने विशेष यज्ञ कराया। मण्डल के मन्त्री ने सपत्नीक यजमान के आसन को ग्रहण कर बड़ी श्रद्धा से आहुति दी। इस अवसर पर श्री रवीन्द्र शास्त्री तथा डा० प्रतिमा पुरंधि ने आर्यसमाज के उज्ज्वल पक्ष को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया तथा अपने को आज के दिन टटोलने का आह्वान किया।

इस कड़ी में आर्यसमाज कच्चा बाजार की लगनशील प्रधाना श्रीमती शांति देवी के प्रयास से यह पर्व मनाया गया।

आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग में भी यह पर्व उत्साह से मनाया। इस अवसर पर प्रो० जयदेव जी के ओजपूर्ण विचारों की सराहना हुई।

—वेदप्रकाश आर्य प्रधान

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नरवाना का वार्षिकोत्सव ३-४-५ अप्रैल, ९२ को धूमधाम से मनाया गया। आर्यसमाज के प्रधान नरेश तथा मन्त्री राधाकृष्ण आर्य के नेतृत्व में ३ अप्रैल को नगर में विशाल शोभायात्रा निकाली गई। ट्रैक्टरों पर विराजमान संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक तथा यज्ञ करती नारियों के दृश्य ने समस्त नगरवासियों को मन्त्र मुग्ध कर दिया। आर्य वरिष्ठ विद्यालय, आर्य कन्या विद्यालय, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने हजारों की संख्या में भाग लिया। यह भव्य दृश्य मनमोहक था। महर्षि दयानन्द की जय से आकाश गुंजायमान हो रहा था। आर्यवीर दल के ध्वज के साथ नवयुवकों का समूह स्थान-स्थान पर अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा था।

ध्वजारोहण स्वामी रत्नदेव जी कुलपति कन्या गुरुकुल खरल के करकमलों से हुआ। उत्सव पर पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रो० रणधीरसिंह शास्त्री, कर्मवीर शास्त्री, चन्द्रपाल शास्त्री के सारगर्भित उपदेश हुए।

—राधाकृष्ण आर्य
मन्त्री आर्यसमाज नरवाना

शोक समाचार

१—महाशय अमीचन्द आर्य भजनोपदेशक ग्राम नसीबपुर जिला महेन्द्रगढ़ की माता जी का दिनांक १६-३-९२ को ७० वर्ष की आयु में निधन होगया। परमात्मा दिवगत आत्मा को शांति तथा परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे। —म० जयमालसिंह बेधड़क
सिलारपुर (महेन्द्रगढ़)

२—श्री जसवन्तसिंह प्रधान आर्यसमाज बदरपुर जिला करनाल का दिनाक २-४-९२ को निधन होगया। परमात्मा दिवगत आत्मा को शांति तथा परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

—पूर्णचन्द मन्त्री आर्यसमाज बदरपुर, करनाल

(पृष्ठ १ का शेष)

स्वराज्य मिलने के पूर्व गोवध निषेध की मांग ने ही अंग्रेजों के विरुद्ध १९४२ में "भारत छोड़ो" आंदोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में शुरु किया।

भारत स्वतन्त्र हुआ। कांग्रेस ने शासन सम्भाला। भारतीय जनता ने फिर आवाज उठाई भारत में पूर्णतया गोहत्या बन्द हो। भारत की कांग्रेस सरकार ने इस पर एक केटिल प्रिजरवेशन एण्ड डवलपमैंट कमेटी बनाई। उस कमेटी ने १९४९ में स्पष्ट रूप से रिपोर्ट दी कि भारत में सम्पूर्ण गोवध बन्द हो, तभी शांति होगी। 'अधिक अन्न उपजाओ' योजन भी तभी सफल होगी। किंतु प्रधानमन्त्री नेहरू जी ने इस परामर्शदात्री समिति की बात को ठुकरा दिया। २ अप्रैल, १९५५ को इस सम्बन्ध में संसद में बोलते हुए नेहरू जी ने धमकी देते हुए कहा था "मेरा परामर्श राज्य सरकारों को यही होगा कि वह गोरक्षा विधेयक उपस्थित या पास न कर, मैं इससे सहमत नहीं हूं। इसके लिए मैं प्रधानमन्त्री पद से भी त्यागपत्र देने को तैयार हूं। परन्तु इस प्रकार झुकने के लिए तैयार नहीं।"

फिर भारत में गोहत्या के लिए पचवर्षीय योजना बनी। कुछ वर्षों से पूर्व मांस उत्पादन की सरकारी योजना का एक विवरण छपा था, सो भी सुन लीजिये—

(१९६१ से १९६६ तक)

१. गोमास का उत्पादन मनो के हिसाब से—एक करोड़ अठारह लाख ७५ हजार मन।

२. अन्य सभी प्रकार के पशुओं का मास—दो करोड़ १५ लाख ३७ हजार ५०० सौ मन।

३. मांस का कुल उत्पादन जोड़—तीन करोड़ ३४ लाख १२ हजार ५०० मन मास।

(१९६७ से १९७१ तक)

१. गोमांस का उत्पादन—तीन करोड़ ९३ लाख ७५ हजार मन

२. दूसरे पशुओं का—दो करोड़ ५६ लाख ७५ हजार मन।

३. मांस का कुल जोड़—छः करोड़ ५० लाख ५० हजार मन।

(१९७२ से १९७६ तक)

१. गोमांस का उत्पादन—छः करोड़ ९५ ६२ हजार ५०० मन।

२. अन्य पशुओं का—तीन करोड़ २४ लाख ६२ हजार ५०० मन।

३. मांस का कुल जोड़—दस करोड़ २० लाख २५ हजार मन।

(१९७७ से १९८१ तक)

१. गोमांस का उत्पादन—सात करोड १२ लाख ५० हजार मन।

२. अन्य पशुओं का—चार करोड़ ४२ लाख ७५ हजार मन।

३. मांस का कुल जोड—ग्यारह करोड ५५ लाख २५ हजार मन।

इन आंकडों पर ध्यान देने से यह स्पष्ट है कि १५ वर्षों में अन्य पशुओं का मांस केवल दुगुना होगा, वहां गोमांस सात गुणा हो जायेगा। ऐसी स्थिति में इतना अधिक गोमांस उत्पादन करने का एक ही परिणाम होगा कि भारत में गोवंश का सर्वथा उन्मूलन हो जायेगा।

इसके साथ ही शासकों का यह झूठा प्रचार है कि मुस्लिम-वर्ग धार्मिक आधार पर गोहत्या चाहते हैं। यदि मुसलमान गोहत्या को अपना धार्मिक कार्य समझते हैं तो पाकिस्तान, इरान, तुर्की जैसे मुस्लिम देशों में गोहत्या पर प्रतिबन्ध क्यों है?

इस प्रकार सरकार शराब का प्रचार करके मांस, अण्डे खाने के लिए रेडियो, टेलिविजन के द्वारा मांस का खूब प्रचार कर रही है।

अत: आर्यसमाज अपना कर्त्तव्य पूर्ण करके गोहत्या के कलंक को मिटाये।

वेदकथा

दिनांक २१ अप्रैल से २८ अप्रैल तक आर्यसमाज झज्जर रोड, रोहतक वेदकथा का आयोजन कर रहा है। आर्यजगत् के विद्वान् श्री आचार्य अर्जुनदेव जी द्वारा वेदोपदेश होगा तथा आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक भी पधार रहे हैं।

—मन्त्री आर्यसमाज झज्जर रोड, रोहतक

वैदिक आश्रम स्थल पर नवशस्येष्टि यज्ञ

पानीपत : आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत द्वारा २ से ८ अप्रैल तक प्रातः ६-३० से ८-३० बजे तक व सायं ३-३० से ५-३० बजे तक चलनेवाले यज्ञ का शुभारम्भ वैदिक आश्रम स्थल, आर्य स्कूल के ग्राऊण्ड जो सर्कस ग्राऊण्ड के नाम से भी जाना जाता है, में यज्ञ के प्रथम दिवस मुख्य यजमान श्री चन्द्रप्रकाश जी एस०डी०एम० पानीपत ने सपत्नीक पधार कर किया। इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद के अधिष्ठाता व यज्ञ के सफल प्रयोगकर्त्ता आचार्य वेदभूषण जी की अध्यक्षता में सर्वश्री पं० प्रियदत्त जी, शिवकुमार जी आर्य, राजकुमार जी शास्त्री व श्रीमती प्रो० जया तनेजा जी सस्वर वेदपाठ कर रहे थे। एस० डी० एम० महोदय ने बडी ही श्रद्धा तथा पवित्र भावना से यज्ञ का अनुष्ठान किया।

आर्यसमाज पानीपत के मन्त्री श्री राममोहनराय ने ब्रह्मा तथा विद्वज्जनों को आमन्त्रित किया। इस अवसर पर नगर के भारी संख्या में स्त्री-पुरुष उपस्थित थे।

कविता

दयानन्द तेरा उपकार, कैसे भूलेगा संसार।

नारी :—तेरे आने से पहले, थी चौमुखी व्यथायें।
कहीं अबलायें रोती थीं, कहीं जलती थीं विधवायें॥
कहीं कन्यायें मरती थीं, कहीं थी दुःखी बालायें।
संसार हो दुखी था वे क्या कहूं कथायें॥
तूने पुनः नारी को, सम, पूर्णतम दिया अधिकार॥१

शूद्र :—शूद्र की दुर्दशा पर, रोने को आता रोना।
निशुल्क कर-कर सेवा, बहाता था वह पसीना॥
कर्मकार को कहते थे, यहां पर कर्महीना।
सुवसन, अवास, समवास नहीं न था शुद्ध खाना-पीना॥
तूने सामाजिक समता दे, शूद्र को पुनः किया इकरार॥२

गाय :—पशुओं की व्यथा पर आंसू बहाया तूने।
इसको भी माता जैसा ही, पद दिलाया तूने॥
गोवध बन्द होवे, ये नारा लाया तूने।
प्रथम रिवाड़ी में गोशाला खुलवाई तूने॥
मानव पशु पक्षी ही क्यों? जीवमात्र से तेरा।
दयानन्द तेरा उपकार कैसे भूलेगा संसार॥३

देश :—पराधीनता के दुःख से, हमको मुक्त कराया गया।
ब्राह्मण ही क्यों? सबको पढ़ना सीखा गया॥
निकृष्ट स्व-शासन को, उत्तम जिता गया।
स्वयं सत्तरह बार विष पी, जग को अमृत पिला गया॥
शत-शत बार सुमन श्रद्धा से, करे नमन ये संजयकुमार॥४
दयानन्द तेरा उपकार, कैसे भूलेगा संसार॥

—संजयकुमार आर्य, सुधाकर जुई

प्रवेश प्रारम्भ

आर्य बाल संरक्षण गृह पुलबंगश में ग्यारह वर्ष से ऊपर आयु के असहाय एवं निर्धन बच्चों का प्रवेश प्रारम्भ है।

जिस बच्चे की माता अथवा पिता न हो तो मृत्यु प्रमाण-पत्र, जो निर्धन हो तो किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के प्रमाणित पत्र सहित। एक अप्रैल से ३० अप्रैल तक अभिभावक बच्चे को लेकर निम्न पते पर सम्पर्क करें—

अखिलेश भारती
प्रबन्धक आर्य बाल संरक्षण गृह
आर्यसमाज पुलबंगश नया मौहल्ला, दिल्ली-६
दूरभाष : ५१६५२१ पी०पी०
नजदीक आजाद मार्किट, लालबत्ती चौक

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

गतांक से आगे—

५—पं० गुरुदत्त ने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रणीत वेदांगप्रकाश की सहायता से ही संस्कृत भाषा का ऐसा प्राधिकारिक ज्ञान प्राप्त कर लिया था कि १८८६ में अपनी आरम्भ की गई उपदेशक कक्षाओं में अनेक प्रौढ़ एवं वृद्ध लोगों को अष्टाध्यायी एवं आर्ष ग्रन्थ पढ़ाया करते थे। तत्कालीन पंजाब के एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर लाला नारायणदास एम० ए० तीन महीने का अवकाश लेकर पं० गुरुदत्त से अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य पढ़ने आये। भारत धर्म महामण्डल की ओर से वेद विरोधी प्रचार के विरोध में आप आर्यसमाज मन्दिर में धाराप्रवाह संस्कृत में भाषण करते थे।

६—पं० गुरुदत्त की सामाजिक व्यस्ततायें उत्तरोत्तर बढ़ती गई। लोग उनके पास शंकासमाधान के लिए विचार-विमर्श तथा अध्ययन के लिए आते और भरपूर सन्तुष्टि प्राप्त करते थे। न केवल इतना ही अपितु पण्डित जी संस्कृत, अरबी, भौतिक विज्ञान, रसायन, भूगर्भशास्त्र, शरीरविज्ञान, ज्योतिष, दर्शन तथा भाषाविज्ञान जैसी नाना विद्याओं पर समान अधिकार रखते थे जिस कारण श्रोताओं का आश्चर्यचकित रह जाना स्वाभाविक था। पं० गुरुदत्त की तलस्पर्शी विद्वत्ता का ही प्रभाव था कि विद्वान् सन्यासी भी उनके पास अपनी शंकाओं के निवारणार्थ घण्टों शास्त्रीय चर्चा में निमग्न रहते थे। स्वामी अच्युतानन्द, जो अद्वैतवादी तथा सन्यासियों के मण्डलेश्वर थे आपसे दार्शनिकविवेचना कर महर्षि दयानन्दप्रतिपादित त्रैतवादी सिद्धांत को मानने लगे और आर्यसमाज के प्रसिद्ध प्रचारक बने।

७—जुलाई १८८९ में "वैदिक मैगजीन" नाम से एक मासिक पत्रिका का सम्पादन आरम्भ किया। इसमें पण्डित जी वैदिक सिद्धांतों पर खोजपूर्ण लेख लिखा करते थे। लेखों की सारगर्भिता ने देश विदेश में इसे चलता फिरता आर्यसमाज बना दिया, किन्तु इस अहर्निश व्यस्तता तथा जीवन की अपेक्षाओं के प्रति उपेक्षाभाव ने स्वास्थ्य जर्जरित कर दिया और उन्हें क्षयरोग ने आ घेरा। फलस्वरूप १९ मार्च, १८९० को महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, वेद के वैज्ञानिक व्याख्याता ने २६ वर्ष की अल्पायु में ही इहलीला का संवरण कर लिया।

८—वैदिक संज्ञा विज्ञान (The Terminology of the Vedas तथा The Terminology of the Vedas and The European Scholars. इन दोनों रचनाओं ने लेखक को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का प्रतिष्ठित व्यक्ति बना दिया। वैदिक संज्ञा विज्ञान तो ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के संस्कृत पाठ्यक्रम में भी निर्धारित की गई थी। द्वितीय रचना में यास्क मुनि के निरुक्त में वर्णित वेदविषयक दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए प्रो० मेक्समूलर तथा प्रो० मोनियर विलियम्स की मान्यताओं की समीक्षा की है। इन दोनों रचनाओं का प्रकाशन १८८८ में हुआ था। अनेक उपनिषदों की टीकाओं के अतिरिक्त वैदिक निबन्धों एवं व्याख्याओं ने विद्वत्समाज में हलचल पैदा करदी। Vedic Text No. 2. The Composition of water शीर्षक से यह लेख १८८८ में प्रकाशित हुआ था। इसमें 'मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीं साधन्ता। ऋग्वेद १।२।७' की वैज्ञानिक व्याख्या की गई है। पं० गुरुदत्त मानते थे कि इस मन्त्र में वर्णित मित्र और वरुण उद्जन और ओषजन के प्रतीक हैं, इनके एक विशिष्ट मात्रा (H_2O) में मिलने से जल की उत्पत्ति होती है। इस अर्थ ने एक विवाद को उत्पन्न कर दिया जो अनेक उत्तर प्रत्युत्तरों के बाद उपसंहार को प्राप्त हुआ।

९—पं० गुरुदत्त वेदमन्त्रों की वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक व्याख्या के साथ-साथ महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों की पुष्टि भी वेदमन्त्रों के आधार पर करते थे। महर्षि दयानन्द अंग्रेजी भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण पाश्चात्य विद्वानों के सम्पर्क में पूर्णतः न आ सके थे। पं० गुरुदत्त ने यह काम पूरा करके वेदों की सर्वश्रेष्ठता का सिक्का पश्चिम के लोगों पर जमाया। उनके थोड़े से वर्षों के काम से अनुमान लगाया जा सकता है कि वे संसार के प्राच्य विद्याओं के पण्डितों (Orientalists) में अप्रतिम थे।

तपोवन का ग्रीष्मोत्सव

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का ग्रीष्मोत्सव तथा योग-साधना शिविर २० अप्रैल से प्रारम्भ होकर २६ अप्रैल को सम्पन्न होगा। इस अवसर पर श्री स्वामी सत्यपति जी महाराज, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, डा० महेश विद्यालंकार तथा महात्मा चयनमुनि वानप्रस्थी भी पधारेंगे।

—देवदत्त बाली
मन्त्री वैदिक साधन आश्रम सोसायटी, तपोवन

वैदिक यतिमण्डल की प्रेरणा और सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक
के तत्त्वावधान में

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह
एवं
पूर्ण नशाबन्दी अभियान

चरखी दादरी (जिला भिवानी) में १५, १६ व १७ मई, ९२

उपकार्यालय : आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी (जि० भिवानी, हर.)

मान्यवर !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिये समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द महाराज की अध्यक्षता में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिनांक १५, १६, १७ मई को चरखी दादरी जिला भिवानी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, विद्वान् वक्ता तथा गायक पधारेंगे और पं० गुरुदत्त के जीवन एवं व्यक्तित्व को उजागर करनेवाले अनेक कार्यक्रम रखे जायेंगे। इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार-गोष्ठियां, कवि सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन, भाषण-प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायंगी। अतः आपसे निवेदन है कि—

१) आप अपने आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्था से सम्बद्ध सभी महानुभावों को इस अपूर्व समारोह में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें तथा दिवंगत पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये चरखी दादरी (जिला भिवानी) में पधारें।

२) इस विशाल एवं भव्य आयोजन को सफल करने में तन, मन एवं धन से योगदान करें, विशेषतः स्वयं भी आर्थिक सहायता दें तथा अन्यों से दिलावें।

३) अपना सहयोग एवं सुझाव कार्यालय तक अवश्य पहुंचावें तथा यहां से प्रकाशित होनेवाली सूचनाओं और विज्ञप्तियों को जन-जन तक प्रचारित करें।

४) इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के लिए अपना विद्वत्तापूर्ण लेख तथा अपने व्यावसायिक संस्थान का विज्ञापन अवश्य भेजें।

निवेदक :

स्वामी ओमानन्द सरस्वती — संरक्षक
सुमेधानन्द सरस्वती — संयोजक
प्रो. शेरसिंह — प्रधान

सूबेसिंह
मन्त्री
पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सत्यनारायण
प्रधान आर्यसमाज चरखी दादरी

अठगामा पंचायत

दिनांक ११-४-९२ को अठगामा खाप (आठ ग्राम) की एक वृहद पंचायत प्रधान रणसिंह एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

सर्वप्रथम इस पंचायत में ग्रामों में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति को देखकर चिन्ता प्रकट करते हुए अनेक पंचों एवं सरपंचों ने विशेषकर शराब से होनेवाली अनेक बुराइयों का वर्णन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री ने अपने वक्तव्य में इतिहास के अनेक उदाहरण देते हुए बताया कि इस शराबरूपी नागन ने अनेक वंशों को ही नहीं बल्कि अनेक राजाओं के राज्य को भी डस लिया है। श्री शास्त्री ने एक दृष्टांत के माध्यम से उपस्थित जनसमूह को बताया कि शराब सभी पापों की जड़ है तथा हमारे हिन्दू (वैदिक) धर्मग्रन्थों में कहीं पर भी शराब पीने का विधान नहीं है। अन्त में सर्वसम्मति से इस पंचायत में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये गये—

१—भविष्य में आठों गांवों की कोई भी पंचायत शराब का ठेका खोलने के लिए प्रस्ताव पास नहीं करेगी।

२—जो व्यक्ति शराब पीकर गांव की गलियों में घूमता मिलेगा, ग्राम पंचायत उस पर ५०० रुपये जुर्माना करेगी।

३—वर्तमान में जिन-जिन ग्रामों में ठेके खुले हुए हैं, ग्राम पंचायत उनको बन्द करवाने हेतु प्रस्ताव पास करेगी तथा अनाज की कटाई व कढ़ाई के बाद बन्द करने के अन्य उपायों धरने आदि पर विचार करेगी।

पुरुषत्व के लिए घातक है तम्बाकू का ज्यादा सेवन

कानपुर, १३ अप्रैल (वार्ता)। तम्बाकू व सिगरेट के अत्यधिक सेवन तथा कुछ संक्रमणों के दुष्प्रभाव से देश में पुरुषों में बांझपन का खतरा बढ़ा है।

अनेक चिकित्सा विशेषज्ञों का कहना है कि इन्हीं कारणों से देश में लगभग चार करोड़ पुरुषों के बांझ होने का अनुमान है।

विशेषज्ञों के अनुसार देश में लगभग ग्यारह करोड़ दम्पती संतान सुख से वंचित हैं और इनमें से चालीस प्रतिशत मामलों में पुरुष साथी की कमियों के कारण बच्चा नहीं हुआ।

फेडरेशन आफ आब स्टेटरिक्स एण्ड गाइनाकोलोजिकल सोसायटी आफ इण्डिया के सदस्य इन दिनों उत्तर भारत के विभिन्न महानगरों का दौरा करते हुए बांझपन पर संगोष्ठियां आयोजित कर रहे हैं। इसी शृंखला में इन विशेषज्ञों ने यहां एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में देश के प्रमुख बांझपन चिकित्सा विशेषज्ञों ने बताया कि न केवल सिगरेट एवं तम्बाकू के सेवन बल्कि जननेन्द्रिय को गर्म कर देनेवाले वातावरण में काम करने से भी पुरुष बांझ हो सकते हैं। यही कारण है कि जिन कारखानों में भट्ठियों से जहरीले रसायन तथा एक्सरे जैसी किरणों का प्रयोग होता है वहां के श्रमिकों के बांझ होने के आसार ज्यादा रहते हैं। डा० बी० जी० पाउलकर का कहना था कि नायलोन का जांघिया पहनने से भी पुरुष बांझ हो सकते हैं।

साभार : जनसन्देश

धूम्रपान से १० लाख महिलायें मरती हैं

जेनेवा, २ अप्रैल (एपी) : धूम्रपान के कारण होनेवाली बीमारियों से प्रतिवर्ष विश्व में दस लाख से अधिक महिलाओं की मृत्यु होती है और सन २०२० तक इनकी संख्या बढ़कर दुगनी हो जायेगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कल अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न.   फोन नं० ७८३२२   मुद्रितपत्र   १,०८३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९   अंक २५   २१ मई, १९९२   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

यह दिल का मामला है

पिछले कुछ दिनों से भारत के विभिन्न नगरों में हृदय रोगों के सम्बन्ध में सेमीनारों के आयोजन हो रहे हैं। इन सेमीनारों में देश के हृदयरोगविशेषज्ञ भी भाग ले रहे हैं और विदेशों के विशेषज्ञ भी शामिल हो रहे हैं। जो लोग इन समारोहों में भाग लेते हैं उन्हें तो इनका लाभ होता ही है, जो लोग अखबारों में इनकी कारवाई को पढ़ते हैं, वे भी स्वाभाविक रूप से लाभान्वित होते हैं। हम समझते हैं कि जितनी कवरेज इस किस्म के सेमीनारों को मिलनी चाहिए, उतनी कवरेज यदि मिल जाए तो और भी अधिक लाभ इनका आमजनता को हो सकता है।

पाठकों की जानकारी के लिए यहां यह लिखना असंगत नहीं होगा कि १९९२ के साल को विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से हृदय रोगों से मुक्ति के वर्ष के रूप में मनाया जारहा है। इसीलिए ये सेमीनार भारत और अन्य देशों में आयोजित किये जारहे हैं।

कुछ लोग तो वृद्धावस्था के कारण इन रोगों का शिकार हो जाते हैं, लेकिन इन सेमीनारों में एक निष्कर्ष डाक्टरों ने यह निकाला है कि अगर युवावस्था में ही खान-पान के मामले में संयम बरता जाये तो बुढ़ापे में इस रोग से बचा जा सकता है—वास्तविकता यह है कि इस रोग की जड़ें तो तरुणावस्था और युवावस्था में ही शरीर में घर कर देना शुरु कर देती है, मगर उनके परिणाम तब सामने आते हैं जब शरीर क्षीण होने लगता है और उसकी प्रतिरोधक शक्ति कम होने लगती है। इसका सीधा-सा मतलब यह है कि यदि आरम्भ से ही लोग सावधानी बरतें तो आगे चलकर इस रोग का सामना करने से वे बच सकते हैं।

कार्डियोलोजीकल सोसायटी आफ बंगलौर के प्रधान डा० पी० मोहनराव का कहना है कि कौलेस्ट्रोल विहीन खुराक का सेवन शुरु कर देने के साथ-साथ आदमी धूम्रपान और मदिरापान बन्द करदे और नियमित रूप से व्यायाम करना शुरु करदे तो हृदय रोगों से बचने में काफी सहायता मिल सकती है—बरतानिया, अमरीका, उत्तरी कोरिया और थाईलेंड में जो परीक्षण इस आधार पर हुए हैं उनसे इस रोग पर काबू पाने में भी सफलता मिली है और मौतों की संख्या भी काफी कम हुई है। इस मामले में सबसे अधिक दुखदायी बात यह रही है कि दुनियां में हृदय रोगियों की संख्या सबसे ज्यादा भारत में है।

डा० राव का कहना है कि अगर भारतवासियों को इस बीमारी से बचना है तो समाज को इस रोग के प्रति जागरूक करना होगा और स्वास्थ्य शिविरों, भाषणों के आयोजनों और रोकथाम के अन्य उपायों से इसकी जानकारी लोगों को देनी होगी।

पाठक यह जानकर हैरान होंगे कि अब हर साल ६०००० बच्चे इस रोग के शिकार हो जाते हैं। विशेषज्ञों की राय इस मामले में यह है कि यह रोग मनुष्य को स्वयं तो धूम्रपान करने से लगता ही है, मगर इसके विपरीत उन बच्चों को भी लग जाता है जिनकी मातायें गर्भावस्था के दौरान धूम्रपान करती हैं या मदिरापान करती हैं—शायद यही कारण है कि दूरदर्शन पर इसीलिए यह प्रचारित किया जाता है कि गर्भ के दौरान मातायें धूम्रपान और मदिरापान से संकोच करें।

अफ्रीकी डाक्टरों का कहना है कि मांसाहार की तुलना में शाकाहार के अन्दर इस रोग को रोकने की शक्ति अधिक है—जो लोग मांसाहारी हैं उन्हें कैंसर, हृदयरोग, गुर्दे और जिगर की बीमारी हो जाती है और कब्ज भी मांसाहारियों को प्रायः रहता है जिससे अनेक बीमारियां स्वतः ही जन्म ले लेती हैं।

पिछले दिनों बरतानिया में भी आहार सम्बन्धी अध्ययन के लिए एक आयोग की नियुक्ति की गई और यह आयोग इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि अण्डा और मांस दोनों ही अनेक बीमारियों की जड़ हैं और इन बीमारियों में दिल की बीमारियां भी शामिल हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों की एक सीधी-सी राय यह है कि मनुष्य वैसा ही होता है जैसा वह खाता है। इसलिए खाने के मामले में उसे बहुत सतर्क और सावधान रहना चाहिए और इस बात का ध्यान हर हालत में रखा जाना चाहिए कि कहीं खाने की चीज के साथ कोई ऐसी चीज तो पेट में नहीं जारही जो हानिकारक हो, प्राणहारी हो।

बरतानिया के डा० एम० राक ने तो एक सर्वेक्षण के बाद बहुत ही स्पष्ट शब्दों में यह चेतावनी दी है कि 'शाकाहारियों में संक्रामक और घातक बीमारियां अपेक्षाकृत कम पाई जाती हैं और वे मांसाहारियों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ, छरहरे बदनवाले, शांत स्वभाव और चिंतनशील होते हैं।

इतना ही नहीं, बी० बी० सी० लन्दन से प्रसारित होनेवाले एक साप्ताहिक कार्यक्रम में यह चेतावनी रह-रह कर दी जाती रही है कि मांसाहार से बचिये अन्यथा हृदय रोगों समेत कई प्राणहारी बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

अमरीकी विशेषज्ञ डा० विलियम सी० राबर्ट्स का भी यही मत है कि अमरीका में मांसाहारी लोगों में दिल के मरीज ज्यादा हैं, जबकि उनके मुकाबले में शाकाहारी लोगों में दिल के मरीज कम होते हैं।

एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार एक कीड़ा जिसे अंग्रेजी में ब्रेनबग (BRAIN BUG) कहते है, ऐसा होता है जिसके काटने से पशु पागल हो जाता है, किंतु पागलपन का यह रोग विकसित होने में दस साल तक का समय लग जाता है। इसी बीच यदि कोई व्यक्ति उस कीड़े के काटे हुए पशु का मांस खा लेता है तो उस पशु में पलनेवाला वह रोग मांस खानेवाले के शरीर में प्रवेश कर जाता है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

दांतों की सुरक्षा कैसे करें ?

—देवराज आर्य वैद्य विशारद आर्यसमाज बल्लभगढ़, फरीदाबाद

दांत अनमोल मोती हैं। चेहरे की सुन्दरता में दांतों का बहुत बड़ा योग है। दांतों की उपेक्षा न करें। यदि इनसे जीवनभर काम लेना है तो इनकी रक्षा करें। परमपिता ने भोजन को अच्छी तरह चबा-चबा कर खाने के लिये दांत दिये हैं। जो भोजन को जल्दी-जल्दी बिना चबाये सटक जाते हैं वे आंतों के साथ अन्याय करते हैं। दांतों का काम आंतों को करना पड़ता है अर्थात् भोजन पचाने में आंतों को कष्ट होता है और भोजन देर में पचने के कारण गैस बनकर पीड़ा देता है।

दांतों का निर्माण उस तत्व या धातु से होता है जिससे हमारे शरीर में अस्थि (हड्डी) बनती है। इसे चूना (कैलशियम) कहते हैं। यदि हमारे शरीर में इस तत्त्व की कमी होगी तो दांतों की जड़ कमजोर हो जाती हैं, दांत हिलने लगते हैं और दांतों में खोखलापन होने लगता है। डाक्टरों का भी यही कहना है कि विटामिन डी की कमी के कारण दांतों में अनेक रोग हो जाते हैं। दांतों की सुरक्षा के लिये निम्नलिखित क्रियाय, पथ्य, अपथ्यों का ध्यान रखें।

१. दांतों को प्रतिदिन प्रातः उठते ही शौच आदि से निवृत्त होकर कुछ खाने-पीने से पूर्व अच्छी तरह साफ करें। दांतों को साफ करने के लिये ब्रुश, दातुन या मंजन का प्रायः प्रयोग किया जाता है। यदि आप ब्रुश का प्रयोग करते हो तो वह अच्छी क्वालिटी का नर्म बालों का होना चाहिये और उचित ढंग से दांतों पर फेरना चाहिये। हमने देखा बहुत से लोग ब्रुश को दांतों पर गलत ढंग से मारते हैं, जिससे मसूड़े छिल जाते हैं और दांतो की जड़े कमजोर होने लगती हैं। यदि आप दातुन करते हो तो उसे भी पहले चबा-चबाकर नर्म कूची-सी बनालो और दांतों पर जोर से न रगड़ें, बल्कि धीरे-धीरे फेरें। दांतों को साफ करने के लिये एक स्थान पर किसी बर्तन में पानी लेकर बैठें। दो-तीन मिनट में दांत साफ हो जाते हैं, जबकि हमने देखा बहुत से लोग दांतों पर ब्रुश या दातुन को आध-आध घण्टे तक कस-कसकर रगड़ते रहते हैं और चलते-फिरते इधर-उधर थूक-थूककर गन्दगी फैलाते हैं। ऐसा करना शोभा नहीं देता। यदि आप मंजन का प्रयोग करते हैं तो वह बहुत बारीक कूटकर कपड़े में से छना हुआ हो। मोटा मंजन मसलने से मसूड़ों को हानि होती है।

२. दांतों की जडों को मजबूत रखने के लिए ऐसी चीजों का सेवन करें जिनमें कैलशियम की मात्रा अधिक है जैसे पालक, बथुआ, दूध, दही इत्यादि।

३ मांस खाने से, शराब पीने से और बार-बार अधिक चाय पीने से दांतों की जड़े कमजोर हो जाती हैं।

४. बहुत खट्टे एसिड (तेजाब) वाले पदार्थ खाने से दांतों को नुकसान पहुंचता है।

५. हर समय कुछ न कुछ खाते रहने की आदत दांतों के लिये हानिकारक है। दांतों के डाक्टर का कहना है कि भोजन के बाद दांतों को ब्रुश से साफ करो।

६. गर्म-गर्म भोजन करते समय प्यास लगने पर बर्फ का ठण्डा पानी पीने से दांतों को नुकसान पहुंचाता है।

७. अधिक मीठा खाने से दांत खराब हो जाते हैं।

८. उड़द की दाल, गोभी, कढी इत्यादि वायु पैदा करनेवाले पदार्थ लगातार खाते रहने से मसूड़े फूल जाते हैं। उस समय काली मिर्च, सौंठ, पीपल का चूर्ण बनाकर सेवन करें। फटकरी के पानी से कुल्ले करें।

९. कोई चीज खाने के बाद दांतों में फंसे हुए अंश को निकालने के लिए सख्त पिन से बार-बार कुरेदना हानिकारक है।

१०. दांत केवल खाने और चबाने के लिये हैं। किसी ठोस चीज को काटने या चीरने के लिये नहीं हैं। हमने देखा बहुत से लोग दांतों से कैंची, चाकू का काम लेते हैं। आपके दांत चाहे कितने हो मजबूत हैं, परन्तु इनका दुरुपयोग न करें। जैसे दांतों से नाखून काटना, तार काटना, बादाम तोड़ना आदि, बल्कि सख्त चने को छीलने से भी दांतों की जड़ों को नुकसान पहुंचता है।

११. दांतों का दारमदार मसूड़ों पर है, जिनमें दांतों की जड़ें पोषण प्राप्त करती हैं। जब तक मसूड़े दृढ़ हैं तब तक दांत भी मजबूत हैं। मसूड़े रक्त पर निर्भर हैं। यदि शरीर में शुद्ध लाल रक्त प्रवाहित करता है तो मसूड़े निरोग रहते हैं। रक्त दूषित होने पर मसूड़े नीले पड़ जाते हैं। शराब पीने से, तम्बाकू खाने से और अधिक चाय पीने से खून काला हो जाता है।

१२. अधिक मैथुन तमाम कमजोरी का कारण है।

१३. लगा हुआ तम्बाकूवाला पान खाते रहने से दांतों का एनामल (चमक) खत्म हो जाती है और दांत भद्दे हो जाते हैं।

दांतों को नित करो सफाई। इसमें है दांतों की भलाई।
चने चबाओ, रेवड़ी खाओ, यह दांतों का काम है भाई।
चाकू, कैंची और जम्बूर का, दांतों से लो काम न भाई।

डा० प्रशांत वेदालंकार तथा सुश्री मीरांयति को इस वर्ष का गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार

इस वर्ष गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव में सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डा० प्रशांत वेदालंकार तथा आर्यजगत् की ख्याति प्राप्त संन्यासिनी सुश्री मीरांयति को 'गोवर्धन शास्त्री' पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। गुरुकुल कांगडी के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने भव्य समारोह में अभिनन्दन पत्र पढकर दोनों विद्वानों का परिचय दिया तथा गुरुकुल कांगडी के कुलाधिपति तथा भूतपूर्व केन्द्रीय राज्यरक्षा व कृषिमन्त्री प्रो० शेरसिंह ने डा० शांत वेदालंकार को और सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने सुश्री मीरांयति को शाल उढ़ाकर सम्मानित किया तथा दोनों को २१०० रु० के चक प्रदान किये।

'गोवर्धन शास्त्री' पुरस्कार प्रतिवर्ष उस विद्वान् को दिया जाता है जो साहित्य साधना के द्वारा जनसामान्य में वैदिक मूल्यों के प्रचार में महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।

यह सम्मान आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार (१९८१), डा० भवानीलाल भारतीय (१९८२), श्री विश्वनाथ विद्यालंकार (१९८३), पं० सत्यकाम विद्यालंकार (१९८४), पं० भगवद्दत्त वेदालंकार (१९८५), आचार्य प्रियव्रत तथा ला० सन्तराम बी०ए० (१९८६), पं० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, आचार्य दत्तात्रेय बावले, स्व. ला० चेतनदास (१९८७), डा० सत्यकेतु विद्यालंकार एवं डा० लक्ष्मीनारायण दुबे (१९८८), डा० वेदव्यास व ला० काशीराम (१९८९), पं० क्षितीश वेदालंकार (१९९०), डा० रामनाथ वेदालंकार व डा० कपिलदेव (१९९१) को मिल चुका है।

—डा० जयदेव वेदालंकार
कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

आर्यसमाज सालवन जि० करनाल का चुनाव

प्रधान—ओमप्रकाश आर्य, उपप्रधान—वरिन्द्रकुमार आर्य, मन्त्री—राजवीरसिंह आर्य, उपमन्त्री—ओमप्रकाश जांगड़ा, कोषाध्यक्ष—वेदव्रत आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—राजवीरसिंह आर्य।

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

रुपये

पिछले अंक से आगे—

श्री विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त द्वारा

१ श्री ला० गौरीशंकर मालिक हरियाणा फ्लोर मिल्स जींद ११०००
२ ,, नेमकुमार जैन कुरुक्षेत्र २५५०
३ ,, धर्मपाल, विश्वपाल कुरुक्षेत्र २५५०
४ ,, मैसर्ज शक्ति राइस मिल्स कुरुक्षेत्र ११००
५ ,, ,, ज्ञान ,, ,, ,, ११००
६ ,, ,, अजमेरसिंह सुन्दरसिंह ,, ११००
७ ,, ,, देशराज मुकन्दलाल ,, ११००
८ ,, रामपाल गोयल ,, ११००
९ ,, सुरेश गाबा ,, ११००
१० ,, मैसर्ज देशराज ईश्वरचन्द ,, ११००
११ ,, ,, रामकरनदास अशोककुमार कुरुक्षेत्र ११००
१२ ,, ,, वर्धमान राइस मिल्स सांवला ,, ११००

१३ **श्री हरिसिंह सैनी पूर्वमन्त्री हरयाणा सरकार एवं प्रधान आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार द्वारा** ५६०००

इसमें श्री सीताराम आर्य तथा श्री सत्यवीर मलिक प्रिंसिपल जाट कालेज हिसार ने अपना सक्रिय सहयोग दिया एवं निम्न खाद्य सामग्री दी—

आटा १५ बोरी, आलू ६ बोरी, प्याज ५ कट्टे, पेठा ५ क्विटल

१४ श्री विजयकुमार द्वारा चावल २५ क्विटल
१५ ,, चौ० आजादसिंह हुड्डा एडवोकेट २०३ आर० माडल टाउन रोहतक १०१
१६ ,, रमेशचन्द्र आर्य प्रापर्टी डीलर सामने पुलिस लाइन रोहतक १००
१७ ,, रिसलदार पृथ्वीसिंह ग्राम व पो० खेड़ीसाध जि. रोहतक १०१
१८ ,, मन्त्री आर्यसमाज बादली जि० रोहतक ५०१
१९ ,, सुखदेव शास्त्री ग्राम आसन जि० रोहतक १०१
२० ,, चौ० मेहरसिंह मेहर गैस एजसी गोहाना रोड रोहतक १०१
२१ ,, वैद्य भरतसिंह आर्य गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी गोहाना रोड रोहतक १०१
२२ ,, मा० वेदप्रकाश आर्य दयानन्दमठ रोहतक १०१
२३ ,, चौ० धर्मचन्द मैनेजर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ म०नं० २०/८११ डी०एल०एफ० कालोनी रोहतक १०१
२४ ,, कर्णसिंह दहिया डी०एल०एफ कालोनी रोहतक १०१
२५ ,, आर० के० मल्होत्रा ,, ,, ,, १०१
२६ ,, म० दयाकिशन दयानन्दमठ ,, १०५
२७ ,, मा० घनश्यामदास आर्य प्रधान आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक १०१
२८ ,, धर्मवीर छिक्कारा म०नं० ४०२ सरकुलर रोड शिवाजी कालोनी रोहतक १०१
२९ ,, गुरुदत्त आर्य हरयाणा कोच बाडी बिल्डर्ज गोहाना रोड रोहतक ५००
३० ,, सत्यवीर शास्त्री सु० चौ० मांगेराम (मोखरा वाले) माडल टाउन रोहतक ५०१
३१ ,, धर्मचन्द शास्त्री ६१ एल० माडल टाउन रोहतक १०१
३२ ,, प्रो० ओम्प्रकाश सु० भगवानसिंह हुड्डा म.न. २०७ एल. माडल टाउन रोहतक १०१
३३ श्री चौ० सुखमल ठेकेदार म०नं० १५३ एल० माडल टाउन रोहतक २०१
३४ ,, चौ. स्वरूपसिंह रिटायर्ड एस.डी.ई.ओ. म.नं. ६४ एल. माडल टाउन रोहतक १०१
३५ ,, प्रेमचन्द नेहरा एडवोकेट म.नं. ६८ एल. माडल टाउन रोहतक १०१
३६ ,, राजवीरसिंह सांगी ग्राम व पो० मदीना जि. रोहतक १०१
३७ ,, राजधानी मशीन टूल्ज गु. इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र फरीदाबाद १०१
३८ श्रीमती प्रेमवती आचार्या पाल भारतीय हाई स्कूल गोहाना रोड रोहतक २५२
३९ श्री कर्णसिंह आर्य ग्राम फिरोजपुर बागर जि. सोनीपत १००
४० ,, आर्यसमाज गढ़ी कुण्डल श्री बलराज ,, १२१
४१ ,, ईश्वरसिंह शास्त्री ग्राम व पो० कलावड़ जि. रोहतक १००
४२ ,, प्रतापसिंह आर्य ग्राम व पो० रिटौली ,, १०१
४३ ,, उमरावसिंह निर्दोष सांपला मण्डी ,, १०१
४४ ,, पं० अर्जुनदेव आर्य उपदेशक आर्य प्र. स. ह. द. रोहतक १०१
४५ ,, मन्त्री आर्यसमाज क्योड़क गेट कैथल ११००
४६ ,, ओम्प्रकाश तहलान राजेन्द्र पार्क नांगलोई दिल्ली ५०१
४७ ,, रमेश आर्य प्रापर्टी डीलर माडल टाउन रोहतक १००
४८ ,, महावीरसिंह आर्य सरपंच ग्राम बराणी जि० रोहतक ११००
४९ ,, स्वामी वेदमुनि ओम्नी टटेसर नई दिल्ली-८१ १०१
५० ,, विजयसिंह पूर्व सरपंच ग्राम चुहड़पुर जि जींद ११००
५१ ,, धर्मसिंह तहसीलदार रिटायर प्रेमनगर रोहतक १०१
५२ ,, नत्थूमल एण्ड सन्ज कपड़ा बाजार निवाज हाउस जोधपुर (राज०) १५१
५३ ,, मन्त्री आर्यसमाज कालका जि. अम्बाला ५०१
५४ ,, रिसलदार इन्द्रसिंह आर्य ग्राम घोड़ जि. रोहतक २०१
५५ ,, काशीराम आर्य ग्राम नीमली जि. भिवानी १०१
५६ ,, आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत १००
५७ ,, ,, कारौली जि. रेवाड़ी १००
५८ ,, ,, नारायणगढ़ जि. अम्बाला १०००
५९ ,, बृजलाल चौधरी स्वतन्त्रता सेनानी कैथल ११००
६० ,, आर्यसमाज कुण्डली जि. सोनीपत १००
६१ ,, सत्यवीर शास्त्री ग्राम डालावास जि. भिवानी १०१
६२ ,, आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल पानीपत ५०००
६३ ,, आदर्श वूलन इण्डस्ट्रीज ,, ५००
६४ ,, ओम्प्रकाश सिंगला ,, ५००
६५ ,, आर्य कालेज ,, ११००
६६ ,, बाबूराम मित्तल चैरीटेबल ट्रस्ट ,, ५०१
६७ ,, ठाकुरदास बतरा ,, ५००
६८ ,, रामानन्द सिंगला सभा कोषाध्यक्ष पानीपत ५००
६९ ,, योगेश्वरचन्द आर्य ,, ५००
७० ,, राजकुमार आर्य लोहेवाले ,, २५१
७१ श्रीमती मन्जु गुप्ता पुत्रवधू दलीपसिंह ,, ५००
७२ श्री मेघराज आर्य ,, २५१
७३ आर्यसमाज ऊण जि भिवानी १०१
७४ ,, अमीन जि. कुरुक्षेत्र १००
७५ चौ. रणवीरसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज अमीन जि. कुरुक्षेत्र १००
७६ आर्यसमाज खटोटीकलां जि. महेन्द्रगढ़ १०१
७७ श्रीमती सन्तोष अम्बा मन्त्राणी स्त्री आर्यसमाज गुरदासपुर (पंजाब) १०१
७८ श्री मन्त्री आर्यसमाज विष्णुनगर जगाधरी वर्कशाप यमुनानगर १०१
७९ आर्यसमाज माडल टाउन यमुनानगर ५०१

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न

(हरिराम आर्य एवं केदारसिंह आर्य द्वारा)

ऋषि दयानन्द के प्रमुख युवा विद्वान् शिष्य पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दिनांक १५ से १७ मई, १९९२ तक चरखी दादरी जि० भिवानी में आर्यसमाज के सर्वमान्य वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती (दीनानगर पंजाब) की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में तथा वैदिक यतिमण्डल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज चरखी दादरी के उत्साही अधिकारियों तथा क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने समारोह को सफल करने के लिए दिन-रात परिश्रम किया। त्यागी तपस्वी विश्वविख्यात संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में तथा प्रधान प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में सभा के अधिकारियों, उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों ने हरयाणा प्रदेश के आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं का भ्रमण करके शताब्दी समारोह में अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होने का निर्देश दिया एवं धनसंग्रह किया। समारोह के संयोजक वीर संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने बड़ी कुशलता तथा लग्न से भारत भर की आर्यजनता का इस समारोह में तन, मन तथा धन से सहयोग प्राप्त करने में सफलता करके सिद्ध कर दिया कि वे भविष्य में आर्यसमाज का नेतृत्व कर सकते हैं।

पूर्व उपायुक्त श्री विजयकुमार जी ने अपना अमूल्य समय निकाल कर लाडवा, कुरुक्षेत्र, हिसार तथा सिरसा का भ्रमण करके समारोह के लिए धन के साथ अन्न (चावल) संग्रह करके महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आर्य कृषक दानवीर श्री सुमेरसिंह आर्य स्वरूपगढ़ भिवानी ने ऋषिलंगर हेतु अपने ट्रैक्टर में ११० मन गेहूं चरखी दादरी पहुंचाकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। इसी प्रकार अनेक अन्नदाताओं ने भी उदारतापूर्वक दान दिया।

शताब्दी समारोह के सह-संयोजक प० सत्यनारायण आर्य ने भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं में उलझते हुए भी अपने सहयोगियों के साथ अपनी दुकान का कारोबार छोड़कर समारोह को सफल करने के लिए दिन-रात परिश्रम किया। आर्यसमाज हिसार के प्रधान श्री हरिसिंह पूर्वमन्त्री ने शताब्दी समारोह के अधिकारियों की अपील पर ७० हजार के लगभग धन तथा ऋषिलंगर हेतु सब्जी आदि का दान दिलवाकर अनेक समस्याओं का समाधान कर दिया। समारोह को सफल करने के लिए आर्यदानियों एवं आर्यसमाज और आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों ने अपने-अपने नगरों से धनसंग्रह करके सभा कार्यालय रोहतक तथा उपकार्यालय चरखी दादरी भेजकर प्रबन्धकों को पूर्व ही निश्चिन्त कर दिया। दानदाताओं की सूची सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी में क्रमशः प्रकाशित की जा रही है।

समारोह पर सुरक्षा एवं ऋषिलंगर व शोभायात्रा की व्यवस्था करने में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक ब्र० देवव्रत, आर्यवीर दल हरयाणा के संचालक श्री उमेदसिंह तथा मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य ने अपने स्वयंसेवकों के साथ ११ से १७ मई तक चरखी दादरी में डेरा डालकर भयंकर गर्मी की परवाह किये बिना अपने कर्त्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन किया। श्री महावीर आजाद शास्त्री संचालक आर्य स्टेशनर ने भी पानी की सन्तोषजनक व्यवस्था करके सभी के मुख से कहलवा दिया कि समारोह पर ठण्डे पानी की मौज रही।

सभा की अपील पर हरयाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश आदि से १०-१५ हजार की संख्या में आर्य नरनारियों ने दादरी आने-जाने की असुविधाओं का सामना करते हुए आर्यसमाज के विशाल एवं सुदृढ संगठन का परिचय दिया।

सभा के उपदेशकों विशेषकर पं० अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने जिला हिसार, भिवानी तथा महेन्द्रगढ़ क्षेत्र से धनसंग्रह तथा समारोह में उपस्थिति बढ़ाने एवं शराबबन्दी प्रचार करने में उत्साह का परिचय दिया। इसी प्रकार सभा भजनोपदेशक सर्वश्री जयपालसिंह बेधड़क, रतनसिंह आर्य, शेरसिंह आर्य, मुरारीलाल बेचैन, स्वामी देवानन्द, पं० चिरंजीलाल आर्य, पं० रामकुमार आर्य, पं० ईश्वरसिंह तूफान ने समारोह का प्रचार तथा धनसंग्रह में विशेष उल्लेखनीय कार्य किया है।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती संयोजक द्वारा गठित जिलावार उपसमितियों में जि० फरीदाबाद से श्री लक्ष्मणदास आर्य, जिला हिसार से श्री हरिसिंह, जिला भिवानी से श्री सत्यनारायण आर्य, जिला जींद से श्री जयकिशन, प्रो० इन्द्रदेव, जिला सोनीपत से श्री भद्रसेन शास्त्री, जिला कुरुक्षेत्र से सेठ जगतप्रकाश आर्य, जिला कैथल से डा० मनोहरलाल आर्य, श्री वृजलाल आर्य, जिला रोहतक से डा० सोमवीर, जिला रेवाड़ी से श्री रामचन्द्र आर्य, पं० हरिराम आर्य, जिला सिरसा से डा. रणधीरसिंह सांगवान, जिला पानीपत से श्री रामानन्द सिंहल, प्रि० लाभसिंह, जिला अम्बाला से डा० बेनीप्रसाद आर्य, जिला करनाल से आर्यसमाज सालवन एवं आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव के अधिकारियों तथा जिला महेन्द्रगढ़ में डा० ब्रह्मदेव तथा अन्य आर्यसमाज के अधिकारियों ने अपने-अपने जिलों से धनसंग्रह में सभा को भरपूर सहयोग दिया है।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने गुरुकुलों तथा आर्य विद्यालयों की स्थापना करने की प्रेरणा की थी। अतः चरखी दादरी में हरयाणा के गुरुकुलों तथा आर्य विद्यालयों के छात्रों ने भारी संख्या में पहुंचकर शोभा को बढाया। इनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकेगा।

शताब्दी समारोह के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका के सम्पादन में डा० सुदर्शनदेव आचार्य, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, श्री वेदव्रत शास्त्री, डा. योगानन्द, डा. शिवकुमार शास्त्री तथा विज्ञापन आदि देने में श्री लक्ष्मणदास आर्य, श्री कन्हैयालाल मेहता गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरद्वार, डा. योगानन्द, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र में महालक्ष्मी कम्पनी, प्लासर कम्पनी ने विशेष योगदान किया है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा. सूर्यदेव, मन्त्री डा. धर्मपाल जी ने भी विज्ञापन देने तथा समारोह के अवसर पर आर्यसमाज के लिए समर्पित महानुभावों को सम्मानित करने के लिए शाल आदि भेंट करने में दिल खोलकर आर्थिक योगदान दिया है। इसी प्रकार आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा वैदिक यतिमण्डल के अधिकारियों ने भी समारोह को सफल करने में विशेष भूमिका निभाई है।

समारोह को सफल करने में चरखी दादरी की जनता भी किसी से पीछे नहीं रही। दादरी शिक्षा संस्थान के प्रधान डा. रामकिशन गुप्त ने जहां अपनी शिक्षण संस्थाओं में समारोह स्थान तथा आवास की सुविधा प्रदान की, वहां ११ हजार रु० की आर्थिक सहायता भी देकर उदारता दिखाई।

(क्रमशः)

नोट :—१. प० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह का समाचार आकाशवाणी रोहतक के केन्द्र से २२ मई को रात्रि ८ बजे हरयाणा दर्शन में प्रसारित किया जायेगा।

२. समारोह के विस्तृत समाचार सर्वहितकारी में क्रमशः प्रसारित किये जायेंगे।

ऐ मेरे देश के वीरो

(तर्ज—ऐ मेरे वतन के लोगों)

ऐ मेरे देश के वीरो, तुम बन जाओ सेनानी।
पथ भूल गये क्यों अपना, होती है यह हैरानी॥

इतिहास बताता सब कुछ, उसको पढ़ करके देखो।
यह देश है शूरवीरों का, क्यों खून होगया पानी॥१
ऐ मेरे .....

जरा याद करो वीरों को, कैसे थे वो बलिदानी।
स्वदेश की रक्षा हेतु, निकले बनकर तूफानी॥२
ऐ मेरे .....

अब देशधर्म की नैय्या, खतरे में पड़ी है भैया।
यदि नहीं बचाया इसको, मिट जायेगी सभी निशानी॥३
ऐ मेरे ...

लंगर लंगोट अब कसलो, मत देर लगाओ जवानो।
आओ तोड़ के बन्धन सारे, देशहित में लगादो जवानी॥४
ऐ मेरे ...

मुश्किल से मिली आजादी, वो खतरे में पड़ी है साथी।
मत लड़ो परस्पर भाई, बन जाये न अजब कहानी।
ऐ मेरे...

—देवराज आर्य 'मित्र'
आर्यसमाज बल्लबगढ़, फरीदाबाद

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश आरम्भ

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा अरावली पर्वत की श्रृंखला में स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा जिला फरीदाबाद में कक्षा चौथी से नौवीं तक प्रवेश आरम्भ है। यहां पर सी० बी० एस० ई० का पाठ्यक्रम (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा मान्यता प्राप्त) पढ़ाया जाता है।

गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला तथा संग्रहालय आदि की व्यवस्था है। यहां छात्रों के रहन-सहन, आचार व्यवहार, स्वास्थ्य तथा चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है तथा धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास पर बल दिया जाता है। शिक्षा निःशुल्क है। आठवीं का परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत रहा।

अतः अपने बालकों को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल में प्रवेश करवाकर उनका उज्ज्वल भविष्य बनाएं। तुरन्त सम्पर्क करें।

आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद)
डाकघर नई दिल्ली-४४ फोन: ८-२७५३१६८

❀ शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि वह पाप और अनाचार की जननी है। —भगवान् बुद्ध

❀ शराब से शरीर व आत्मा दोनों का नाश होता है। —महात्मा गांधी

दान सूची

(पृष्ठ ३ का शेष)

क्रम	नाम	राशि
८०	श्री मदनलाल वासुदेवा प्रधान आर्यसमाज माडल टाउन यमुनानगर	१०१
८१	,, केन्द्रीय आर्य सभा यमुनानगर	५००
८२	,, आर्यसमाज माडल कालोनी यमुनानगर	५०१
८३	,, स्वामी सदानन्द फतेहपुर ,,	१००
८४	,, आर्यसमाज नरवाना जि. जींद	५०१
८५	,, नरेशचन्द आर्य ,,	५०१
८६	,, इन्द्रजीत आर्य ,,	२०१
८७	,, रणवीर सांगवान सिरसा	१०१
८८	,, रवि गिफ्ट सैन्टर सदर बाजार सिरसा	१००
८९	,, दीवानचन्द ,,	१००
९०	,, एम. सी. एस. ,,	१०१
९१	,, होशियारीलाल शर्मा ,,	१००
९२	,, मोहनलाल शर्मा ,,	१००
९३	,, गुप्त दान ,,	१००
९४	,, सैनी टैंट हाउस ,,	१०१
९५	,, अग्रवाल टिम्बर स्टोर ,,	१०१
९६	,, इन्द्रमोहन ,,	१०१
९७	,, रामगोपाल मुरलीधर ,,	१०१
९८	,, जे. पी. हाउस ,,	१०१
९९	,, अजय मोगा एडवोकेट ,,	१०१
१००	,, कालुराम वर्मा ,,	१००
१०१	,, अध्यापकवर्ग एवं छात्रवर्ग आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा	२१२७
१०२	,, सेठ भगवतीदेवी चेरीटेबल ट्रस्ट सिरसा	२१००
१०३	,, डा. आर. एस. सांगवान ,,	११००
१०४	,, कुलवन्तराय एडवोकेट ,,	१०१
१०५	,, हंसराज फुटेल नई मण्डी	११००
१०६	,, रमेश गोयल एडवोकेट करसलाहकार आर. एस. डी. कालोनी सिरसा	१०१
१०७	,, कुलदीपसिंह सिरसा	१०१
१०८	,, जयमलसिंह एडवोकेट सिरसा	१०१
१०९	,, ओम्प्रकाश सेठी प्रधान नगरपालिका सिरसा	१००
११०	,, महावीर रातुसरिया ,,	१०१
१११	,, प्रि. दलीपसिंह आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा	५००
११२	,, प्राथमिक विद्यालय अध्यापकवर्ग व छात्रवर्ग आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा	४२६
११३	,, रामरंग मधु प्रधान आर्यसमाज पलवल शहर जि. फरीदाबाद	५०१
११४	,, देवसीराम आर्य ग्राम मुन्नावाली जि. सिरसा	१०१
११५	,, बनवारीलाल सरपंच ,, ,,	१०१
११६	,, हनुमत बीकारा जि. भिवानी	१०१
११७	,, कुलदीपसिंह सु. मा. दीपचन्द आर्य पाल भारती स्कूल रोहतक	१०१
११८	,, मन्त्री आर्यसमाज भटगांव जि. सोनीपत	११००
११९	,, स्वामी रामानन्द संस्कृत विद्यालय सुलाना जोहड़ झुंझनू (राज०)	५१०
१२०	,, मन्त्री आर्यसमाज भीसा जि फरीदाबाद	१०१
१२१	,, राजतिलक सी/३ जनकपुरी नई दिल्ली	२५१
१२२	,, धर्मसिंह आर्य मेम्बर पंचायत जुआं जि. सोनीपत	१००
१२३	,, आर्यसमाज महम जि. रोहतक	५०१

(क्रमशः)

सभा कोषाध्यक्ष

महर्षि के उपकार

ये देश बिगड़ जाता, अगर दयानन्द नहीं आते।

भारत की उच्चकोटि को, इस जनेऊ और चोटी को,
अंग्रेज रगड़ जाता, अगर दयानन्द नहीं आते।

सत्यार्थप्रकाश बनाया, जग से पाखण्ड हटाया,
देश गढ़े में पड़ जाता, अगर दयानन्द नहीं आते।

वेदों का नाद बजाया, गुरुदत्त को आस्तिक बनाया,
ये तो बाइबिल पढ़ जाता, अगर दयानन्द नहीं आते।

कैसे हो ताकत की रक्षा, कौन दे ब्रह्मचर्य की शिक्षा,
सब व्यभिचार में सड़ जाता, अगर दयानन्द नहीं आते।

नारी की लाज बचाई, विधवा की आह मिटाई,
ये पोप अकड़ जाता, अगर दयानन्द नहीं आते।

आजादी का पाठ पढ़ाया, अछूतों को गले लगाया,
भाई-भाई से लड़ जाता, अगर दयानन्द नहीं आते।

प्रेषिका—कुमारी गीता शिवराम

(पृष्ठ १ का शेष)

इतना ही नहीं बहुत से अण्डे पशु-पक्षी और मछलियां भी कैंसर, ट्यूमर और कई अन्य प्रकार के रोगों से ग्रस्त होती हैं और उनके मांस के सेवन से वे रोग खानेवाले के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

अमरीका और इंगलैंड के कई डाक्टरों ने तो अपने नवीनतम शोध के आधार पर यहां तक कहा है कि 'अण्डा आदमी के लिए जहर है।'

मांसाहार से शरीर में यूरिक एसिड भरता है जिससे हृदय रोगों को बढ़ावा मिलता है।

बहरहाल जो लोग हृदय रोगों से बचना चाहते हैं या उनको बढ़ने से रोककर लम्बे जीवन की कामना करते हैं उनके लिए हृदय विशेषज्ञों की राय यह है कि—

❀ धूम्रपान करना आज से ही बन्द कर दीजिए और शराब की बोतल को हाथ तक न लगाने की सौगन्ध खा लीजिए। यह दोनों चीजें दिल के लिए बेहद खतरनाक हैं।

❀ कालिस्ट्रोल से युक्त भोजाहार का परित्याग कर दीजिए। चर्बीवाली और तली हुई चीजों के सेवन से पूरी तरह संकोच कीजिए।

❀ मसालों, चटनी, अचार और पापड़ तथा ज्यादा नमकवाली चीजों को अलविदा कह दीजिये।

❀ जिन लोगों को हाई ब्लडप्रेशर और शुगर है उन्हें नियमित रूप से दोनों चीजों को चैक कराते रहना चाहिये।

❀ डाक्टर के परामर्श से थोड़ा-थोड़ा व्यायाम अवश्य करिये।

❀ जो व्यायाम आपने कभी नहीं किये हैं, मत कीजिये, ज्यादा बोझ मत उठाइये, तेजी से मत चलिये, तनाव से बचिये।

❀ सेक्स के मामले में सीमित रहना जरूरी है।

इन डाक्टरों का कहना है कि मनुष्य के दांतों की रचना क्योंकि मांसाहारी जीवों के दांतों जैसी नहीं इसीलिए भी मांसाहार से उन्हें बचना चाहिये। इस सन्दर्भ में एक विशेष बात यह रही है कि इन सेमीनारों में भाग लेनेवाले अनेक डाक्टरों ने स्वयं भी मांसाहार का परित्याग कर दिया है।

हम समझते हैं कि जो मूल्यवान सुझाव दुनियाभर के चिकित्सा विशेषज्ञों ने हृदय रोगों से बचने के लिए दिये हैं उनके महत्त्व को जितनी जल्दी हमारे पाठक समझलें और उन पर अमल करने का निश्चय करलें, उतना ही अच्छा है। बुजुर्गों का कहना है—

'आदमी जब जाग जाये तभी सवेरा'

(पंजाब केसरी से साभार)

देव दयानन्द चलते-चलते भी आस्तिक बना गए

ले०—लालचन्द 'विद्यावाचस्पति' खेड़की जि० महेन्द्रगढ़

२६ अप्रैल, १८६४ ई० में मुलतान (पंजाब) में ला० रामकृष्ण जी के घर बहुत दिनों बाद एक पुत्र प्राप्त हुआ। लाला जी ने इसे गुरु की कृपा समझकर बालक का नाम रखा—गुरुदत्त। संस्कृत में एक उक्ति है—भव्यानाम् भविष्यानाम् प्रथमं स्यात् शुभावहम् अर्थात् 'होनहार बिरवान के होत हैं चीकने पात।' इन्होंने बचपन से ही अपनी बुद्धि कौशलता का परिचय देना आरम्भ कर दिया। दसवीं कक्षा की परीक्षा में ये राज्यभर में पंचम स्थान पर आये। अपने कठिन परिश्रम और सतत स्वाध्याय से ये अनेक भाषाओं के प्रकांड विद्वान् बन गये। इतिहास, गणित और विज्ञान में इनकी गहन रुचि थी। इन्होंने एम० ए० की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में पास की।

भारत में उनदिनों नास्तिकता का घोर प्रचार किया जारहा था। परिणामतः मुनिवर गुरुदत्त जी भी नास्तिक बन गये। इसी दौरान युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती भी पंजाब में जगह-जगह अपने विचारों की पीयूष वर्षा करते हुए वैदिकधर्म का प्रचार कर रहे थे। महर्षि जी के विचार सुनकर गुरुदत्त जी बहुत प्रभावित हुए। ये देव दयानन्द जी पर अपार श्रद्धा रखने लगे तथा निरन्तर उनकी सेवा में लग गये, किंतु इनके विचार नास्तिक ही रहे। ईश्वर के अस्तित्व पर ये महर्षि जी जी से तर्क करते रहते। ये महर्षि जी के सच्चे भक्त तो बन गये, किंतु विचार नास्तिक ही रहे।

यह सर्वविदित है कि कालांतर में महर्षि जी को विष दे दिया गया और अपने अन्तिम दिनों में भयंकर रुग्णावस्था में वे अजमेर में थे। २९ अक्तूबर, १८८३ को पं० गुरुदत्त जी विद्यार्थी और ला० जीवनदास जी लाहौर से अजमेर पहुंचकर महर्षि जी की सेवा में लग गये। महर्षि जी को इतनी कष्टप्रद पीड़ा थी, किंतु उनके मुख से कोई हाय अथवा आय! आदि दुःख का शब्द नहीं निकल रहा था। वे बहुत ही शांत और प्रसन्नचित्त थे। अगले दिन शाम के समय स्वामी जी महाराज ने सभी दरवाजे और खिड़कियां खुलवाई। तिथि, वार, पक्ष, समय इत्यादि ज्ञात किया। चारों तरफ एक दृष्टि डालकर वेदमन्त्रों का उच्चारण किया, संस्कृत में उपासना की, हिंदी में प्रभु के गुणों का गायन किया और गायत्री जाप करते हुए कुछ क्षण समाधिस्थ होकर आंखें खोली और कहा—"हे दयामय सर्वशक्तिमान् प्रभो! तेरी यही इच्छा है! तेरी यही इच्छा है!! तेरी इच्छा पूर्ण हो!!! तेरी लीला अद्भुत है।"

यह सारा दृश्य पं० गुरुदत्त जी खड़े हुए लगातार टक-टकी लगाये हुए देख रहे थे। यही वह दृश्य था जिसमें देव दयानन्द जी महाराज ने चलते-चलते भी नास्तिक को आस्तिक बना दिया। इसी क्षण प० गुरुदत्त जी अपने नास्तिक विचारों का पूर्णतः परित्याग कर आस्तिक बन गये। पं० गुरुदत्त जी ने सोचा, जिस देवपुरुष के शरीर में इतनी भयंकर पीड़ा हो और वह प्रभु-पुत्र शांत भाव से उसके गुणों का वर्णन करे, उपासना करे, इससे सिद्ध होता है कि वह सर्वशक्तिमान् विद्यमान है। केवल विद्यमान ही नहीं, अपितु ब्रह्मांड के कण-कण में विद्यमान है। इसके बाद इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही प्रभु और प्रभु-पुत्र देव दयानन्द जी को अर्पित कर दिया। वैदिकधर्म और आर्यसमाज के प्रति इनकी आस्था को आज कौन नहीं जानता है? इन्होंने चौदह बार अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का गहन स्वाध्याय किया और प्रत्येक बार इसमें नये रत्न और नये मोती खोज निकाले। इन्होंने यह भी कहा—"यदि सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति का मूल्य १००० रु० होता तो भी मैं उसे सारी सम्पत्ति बेचकर अवश्य खरीदता।"

डी०ए०वी० स्कूल व कालेज खुलवाने में इस युवा-मनीषी ने जो सहयोग दिया, उससे कौन अपरिचित है? अन्ततः लगातार कठोर परिश्रम करने के कारण इनका स्वास्थ्य खराब होता गया और १८९० में यह भारत मां का अमर सपूत, वैदिकधर्म ध्वजधारी, धीरवीर गम्भीर मुनिवर इस ससार से सदा के लिए विदा होगया।

नमन तुम्हें है, हे युग मानव

ऋषिवर दयानन्द के कट्टर तुम थे दृढ़ अनुयायी।
अपने त्याग-तपों से तुमने नूतन ज्योति जलाई।
मृत्यु देखकर सुन्दर ऋषि की जीवन का पथ बदला अभिनव।
नमन तुम्हें है, हे युग मानव॥
वेदों का पावन प्रचार कर जाग्रत अलख जगाया।
ऋषि के पावन सन्देशों को धरती पर फैलाया॥
प्रबल प्रमाद भगा भारत से निकली किरणें ज्योतिर्मय नव।
नमन तुम्हें है, हे युग मानव॥
दृढ़-प्रतिज्ञ थे, वेदपथिक थे, पूज्यवर गुरुदत्त विद्यार्थी।
अल्प तुम्हारा था यह जीवन, बने रहे आजन्म सत्यार्थी॥
तेजस्विता देख तुम्हारी हिले तिमिर के सारे दानव।
नमन तुम्हें है, हे युग मानव॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ०प्र०)

शहतूत खाइये : लू गर्मी से बचिये

ले०—नृसिंहदेव अरोड़ा, चौक सौदागर मोहल्ला, अजमेर

फलों में जीवनशक्ति बढाने की अनुपम तथा अद्वितीय शक्ति है। ऋषि-मुनि-योगी तो फलाहार के बल पर सैंकड़ों वर्षों तक स्वस्थ जीवन जीते थे एवं शारीरिक व मानसिक उन्नति के साथ ही आत्मिक विकास करते थे।

आजकल बाजार में शहतूत खूब आरहे हैं। शहतूत बहुत ही ठंडा, रसीला, मीठा व सस्ता फल है लेकिन है अत्यन्त गुणकारी। पका शहतूत शीतल, रक्तशोधक एवं पित्त को शांत करता है। इसमें फल शर्करा होती है जो आंतों व गले की जलन आदि में स्वास्थ्यप्रद रहती है। शहतूत का शर्बत बनाकर दिन में तीन बार चाटने से टॉंसिल में लाभकारी सिद्ध हुआ है। अनुभूत प्रयोग है। शहतूत में ग्लूकोज व प्रोटीन काफी मात्रा में होने से यह अपने आप में एक पूर्ण हल्का भोजन है। इसके गुणों के बारे में कहा जाता है कि "गागर में सागर" भरी हुई है। यह स्वास्थ्यवर्द्धक होने के साथ ही कितने ही रोगों में लाभकारी रहता है।

जो शहतूत का नियमित प्रयोग करते हैं उन्हें लू और गर्मी नहीं सताती है। स्वादिष्ट होने के कारण इसे बच्चे भी बहुत पसन्द करते हैं। बच्चों को आईसक्रीम, कुल्फी, बर्फ के स्थान पर स्वास्थ्यवर्द्धक शहतूत खिलाना या उसका जूस निकालकर शर्बत पिलाना अधिक गुणकारी रहता है। आप शहतूत के जूस में नीबू, अदरक, नाममात्र काला नमक व काली मिर्च डालकर स्वादिष्ट पेय का आनन्द लीजिए तथा गर्मी और लू से बचे रहिये। शहतूत के अन्य बहुत से लाभ हैं। इसके नियमित प्रयोग से शरीर की सुन्दरता में निखार आता है तथा गुर्दे, पेशाब एवं पेट की जलन दूर होती है।

महिलाओं के लिए, विशेषकर गर्भवती माताओं के लिए शहतूत अत्यन्त स्वास्थ्यप्रद फल है। उनके दूध में भी इसके नियमित सेवन से वृद्धि होती है। कुछ भी हो ग्रीष्म ऋतु में तो शहतूत गरीबों के लिए, अंगूर से भी बढ़कर उपयोगी फल माना गया है। स्त्री-पुरुष, बालवृद्ध सभी के लिए शहतूत प्रकृति का वरदान है।

२०२५ तक भारत की आबादी १४४ करोड़ होगी

नई दिल्ली, १३ मई (वार्ता)। सन् दो हजार पच्चीस (२०२५) तक भारत की आबादी एक अरब ४४ करोड़ २४ लाख हो जायेगी।

स्वास्थ्य राज्यमन्त्री डी० के० तारादेवी सिद्धार्थ ने आज राज्य-सभा में प्रश्नोत्तरकाल के दौरान एक लिखित उत्तर में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संयुक्तराष्ट्र जनसंख्या कोष की ताजा रिपोर्ट के अनुसार चीन की आबादी तब तक एक अरब ५१ करोड़ २६ लाख हो जायेगी।

उन्होंने कहा कि देश में जनसंख्या वृद्धि की उच्चदर से सरकार बहुत चिंतित है। उन्होंने बताया कि जन्मदर को कम करने के उद्देश्य से स्वास्थ्य मन्त्रालय ने एक कार्ययोजना तैयार की है जिसे जल्द ही लागू किया जायेगा।

कविता

प्यार न मिले कोई गम नहीं, कभी नफरत हम न करेंगे।
अमृत चाहे न मिला करे, कोई नशा हम न करेंगे।
कुसंगत लाख चमक दिखाये, राह भटका हम न करेंगे।
असत्य की ये सफलता है भ्रामक, सत्य छोड़ा हम न करेंगे।
वे नादान दिल लाख तोड़ें, कभी घृणा हम न करेंगे।

—अनिलकुमार मंगला (पिंकी), बम्बई

ओलम्पिक मशाल जलेगी एक तीर से!

बार्सिलोना, १४ मई (रायटर)। स्पेन के एक समाचारपत्र ने बार्सिलोना में होनेवाले ओलम्पिक खेलों का अब तक का सबसे बड़ा रहस्योद्घाटन किया है। पत्र ने इन खेलों के उद्घाटन समारोह में ओलम्पिक मशाल जलानेवाले व्यक्ति का नाम प्रकाशित किया है।

'अल पेरिडिको' समाचारपत्र ने कहा है कि स्पेन का विकलांग तीरंदाज अंटोनियो रिबोलो ओलम्पिक स्टेडियम से एक जलते हुए तीर से निशाना साधकर ३० मीटर ऊंचे मचान पर स्थित ओलम्पिक मशाल को प्रज्ज्वलित करेगा। इस मशाल को एक गैस बर्नर से ईंधन मिलेगा।

हालांकि ओलम्पिक आयोजकों ने इस सनसनीखेज तीरंदाजी के लिए उसके चुनाव की पुष्टि करने से इन्कार कर दिया है। इस घटना को दुनियाभर में ३.५ अरब लोग अपने टेलीविजनों पर देखेंगे।

लेकिन रिबेलो का कहना है कि वह इस काम के लिए कड़े परीक्षणों से गुजर चुका है। इस मशाल को जलाने से उसे बहुत सन्तोष मिलेगा, जो २५ जुलाई से ९ अगस्त के बीच बार्सिलोना खेलों का नेतृत्व करेगी।

३० व्यक्तियों द्वारा जुआ, शराब छोड़ने की शपथ

सिरसा, १४ मई (दिवाकर)। भारतीय वाल्मीकि धर्मसमाज के तत्वावधान में स्थानीय वाल्मीकि मन्दिर मोहल्ला लक्खी तालाब में एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता भा० वा०ध०स० के जिला प्रधान वीर शांतिस्वरूप ने की। इस अवसर पर उपस्थिति को सम्बोधित करते हुए वीर शांतिस्वरूप ने शराब जैसी बुराई को समाज से दूर रखने की अपील की। उनके विचारों से प्रभावित होकर ३० व्यक्तियों ने जुआ व शराब छोड़ने की शपथ ली।

सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री सरदारीलाल वर्मा दिवंगत

बड़े खेद के साथ सूचित किया जारहा है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा, प्रधान आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का देहावसान प्रातः १०.४५ पर डा० राममनोहर लोहिया हस्पताल के नर्सिंग होम में होगया। वे ७६ वर्ष के थे। वह अपने पीछे पत्नी, ५ पुत्र तथा एक पुत्री छोड़ गये हैं। वे पिछले दो महीने से श्वास के रोग से पीड़ित थे। उन्होंने आयुभर आर्यसमाज की सेवा की। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय तथा आर्यसमाज की अनेक शिक्षण संस्थाओं से जुड़े रहे। उनका दाह-संस्कार निगम बोधघाट पर १४-५-९२ को सायं ५ बजे किया गया।

प्रवेश सूचना

आर्ष गुरुकुल, आचार्यकुल ऋतस्थली दतियाना में प्रवेश प्रारम्भ होगया है। कक्षा ५ उत्तीर्ण पूर्ण स्वस्थ, मेधावी जिनकी आयु १० वर्ष से कम न हो, आवेदन कर सकते हैं। प्रवेश से पूर्व लिखित व मौखिक परीक्षा ली जायेगी। पूर्ण जानकारी के लिए शीघ्र सम्पर्क करें। स्थान सीमित हैं।

आचार्य
आचार्यकुल ऋतस्थली
पत्रालय—दतियाना (मुजफ्फरनगर) उ०प्र०

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३२०/७३ रजि नं० P RTK-२१ फोन

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक ६ ८ मई १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह के मुख्य समाचार

(हरिराम आर्य तथा केदारसिंह आर्य द्वारा)

गताक से आगे—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान मे प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ महर्षि दयानन्द नगर चरखी दादरी (भिवानी) के स्टेडियम में ११ मई प्रात से प्रारम्भ हुआ। इस यज्ञ के ब्रह्मा सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य सुदर्शनदेव जी तथा सयोजक सभा के आदरी महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री थे। उनकी सहायता के लिए दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के प्राध्यापक आचार्य दयानन्द जी एम० ए० एव गुरुकुल झज्जर तथा एटा के ब्रह्मचारी थे। यज्ञ में प्रतिदिन सैंकडो आर्य नर-नारियो ने भाग लिया तथा वेदामृत का पान किया। सारा वातावरण वेदमन्त्रो से गूंज उठा।

१५ मई को प्रात यज्ञ के पश्चात् स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के करकमलो द्वारा ध्वजारोहण किया गया और राष्ट्रीय गीत गाया गया। आर्यवीर दल के स्वयसेवको ने सारा प्रबन्ध बहुत ही उत्साह से किया। इसके पश्चात् पाडाल में प. गुरुदत्त विद्यार्थी को श्रद्धाजलिया अनेक वक्ताओ ने दी और इन्हें महर्षि दयानन्द का सच्चा अनुयायी और वेदप्रचारक बताया उनकी स्मृति बनाये रखने के लिए सुझाव दिया गया कि प० गुरुदत्त विद्यार्थी भवन का निर्माण किया जाये और उन द्वारा लिखित पुस्तकों का प्रकाशन किया जाये।

१५ मई का ही वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें भारतभर के प्रमुख विद्वानों के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा उडीसा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी ने की और प० सुदर्शनदेव आचार्य, प० राजवीर शास्त्री सम्पादक दयानन्द सन्देश एव डा० महावीर मीमांसक आदि ने वेदों के महत्त्व पर प्रकाश डाला और सभी आर्यों से प्रेरणा की गई कि व नित्यप्रति वेद का स्वाध्याय करें और उन पर आचरण भी करें।

१५ मई की रात्रि को गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता कन्या गुरुकुल खरल, गुरुकुल कुम्भाखेडा आदि के सचालक स्वामी रतनदेव ने की। इस सम्मेलन के सयोजक डा० योगानन्द जी थे। इसमें गुरुकुल शिक्षा के महत्त्व पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, श्री सुभाष विद्यालंकार कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, श्री कपिलदेव शास्त्री पूर्व सासद, आचार्य हरिदेव जी गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली तथा श्री वेदव्रत जी शास्त्री सम्पादक सर्वहितकारी ने प्रभावशाली व्याख्यान दिये और सिद्ध किया कि वैदिक संस्कृति तथा राष्ट्र की वर्तमान समस्याओं का समाधान गुरुकुल शिक्षा प्रणाली चालू करने से ही हो सकता है। स्कूल कालेजो में पढ़ रहे विद्यार्थी विदेशी सभ्यता से प्रभावित होगये हैं। अत अपनी सन्तान को गुरुकुलों में ही शिक्षा दिलवाकर वेदरक्षा करनी चाहिए।

१६ मई को प्रात यज्ञ के पश्चात् एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमे हरयाणाभर के आर्यसमाजो आर्य सस्थाओ, गुरुकुलो के कार्यकर्ताओ के अतिरिक्त दिल्ली, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, हिमाचल प्रदेश तथा पजाब के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। चरखी दादरी के इतिहास मे इतनी विशाल शोभायात्रा पहली बार निकाली गई। इससे पूर्व प्रजामण्डल की ओर से जो जलूस निकाला गया था उसकी याद ताजा होगई। सारा नगर स्वामी दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द प० गुरुदत्त विद्यार्थी, प० जगदेव सिद्धान्ती, प० रघुवीरसिंह शास्त्री, प० लेखराम आदि आर्य नेताओ के बने स्वागत द्वारो से सजा हुआ था और जलूस में चल रहे कार्यकर्ता आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द की जय-जयकार कर रहे थे। इस शोभायात्रा में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी आनन्दबोध जी, स्वामी सुमेधानन्द जी सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह आदि आर्यनेता आगे-आगे चल रहे थे। इस शोभायात्रा को देखकर आर्यसमाज के विशाल सगठन का परिचय दृष्टिगोचर हो रहा था। दादरी की जनता ने उनके स्वागत में फूल बरसाये तथा मीठा ठण्डा पानी आदि पिलाकर स्वागत किया।

१६ मई को नशाबन्दी सम्मेलन स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में तथा हीरानन्द जी पूर्वमन्त्री के सयोजन मे सम्पन्न हुआ। इसमें भारत की पूर्वमन्त्री श्रीमती सुशीला नय्यर, श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त, सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह आदि नेताओं ने भारत तथा हरयाणा सरकार को सचेत किया कि यदि शराब आदि नशों पर प्रतिबन्ध न लगाया गया तो जहा जनता का नैतिक पतन होगा, वहां आर्थिक ढाचा भी बिगड जायेगा। सभी राजनैतिक दल शराब की बिक्री की आमदनी के लालच में विकास के स्थान पर जनता का विनाश कर रहे हैं। आर्यसमाज की ओर से सरकार की इस अकल्याणकारी नीति के विरुद्ध बडे से बडा बलिदान देकर आज से सघर्ष करने की तैयारी आरम्भ की जारही है। उच्चतम न्यायालय में हरयाणा सरकार की शराब नीति के विरुद्ध एक याचिका भी डाली गई है।

१६ मई की रात्रि को राष्ट्ररक्षा सम्मेलन मे राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिह शेखावत, वनमन्त्री श्री लालचन्द डूडी हरयाणा की मन्त्री श्रीमती शकुन्तला भगवाडिया मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

दहिया खाप की पंचायत में शराब सेवन पर प्रतिबन्ध

सोनीपत, २३ मई (त्यागी)। गांव रोहणा में गतदिनों हुई दहिया खाप की पंचायत में खाप के दो गांवों सिसाना तथा सिलाना में शराब के सेवन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया गया है तथा इन गांवों के लिए उप-समितियां बनादी हैं जो पचायत के आदेशों को लागू करने की दिशा में आवश्यक कारवाई करेगी।

पचायत में हुए फंसले के अनुसार जो भी व्यक्ति पंचायत के नियमों को उल्लघना करेगा उस पर ११०० रु० जुर्माना किया जायेगा तथा जो व्यक्ति शराब पिलाता पाया जायेगा उस पर ११२५ रु० का जुर्माना होगा और इसके बाद भी सम्बन्धित व्यक्ति नही मानता तो उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा।

दहिया खाप के प्रधान एवं गाव सिसाना के सरपंच रामफल तथा सिलाना के सरपंच हसराज का कहना है कि उक्त दोनों गांवों में पंचायत के आदेश सख्ती से लागू कर दिये गये हैं। इसी मध्य नशा विरोधी समिति के जिला प्रधान ओमप्रकाश सरोहा ने बताया कि दहिया खाप में ४० गाव आते हैं जिनमें उक्त दोनों गांव भी शामिल हैं, इनमें से ३८ गांवो में निकट भविष्य में उप-समितियां बनादी जायगी और पचायत के आदेशो को लागू कर दिया जायेगा।

श्री सरोहा ने यह भी बताया कि सरोहा खाप तथा अन्तिम चौबीसी के सभी गावो में दो मास पहले शराब के सेवन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है इसके सुखद परिणाम निकले हैं। उन्होने कहा कि मलिक खाप के गावों में भी शराब के सेवन पर प्रतिबन्ध लगाया जायेगा।

(साभार. दैनिक जनसन्देश)

ग्राम करेवड़ी में शराब का ठेका बन्द कराने के लिए संघर्ष

ग्राम करेवड़ा जिला सोनीपत मे हरयाणा सरकार द्वारा देशी शराब के ठेके का ग्रामीण नर-नारियों ने कडा विरोध किया है। आर्यसमाज के नेता श्री खजानसिंह आर्य के अनुसार ग्राम के नरनारी सेकड़ों की संख्या में इस ठेके को बन्द करवाने के लिए जिला उपायुक्त श्री रामपालचन्द्र के कार्यालय में उपस्थित हुए और उनसे ठेका तुरन्त बन्द करने की मांग करते हुए चेतावनी दी कि यदि सरकार ने इस ठेके को बन्द नही किया तो ग्रामीण जनता की ओर से संघर्ष आरम्भ किया जायेगा। जिला उपायुक्त को बताया कि इस शराब के ठेके के कारण शराब पीनेवाले असामाजिक तत्त्व उत्पात मचा रहे हैं। बहन-बेटियों की इज्जत सुरक्षित नहीं है। युवावर्ग पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

श्री खजानसिंह आर्य ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से भी अनुरोध किया है कि ग्राम करेवड़ी से शराब के ठेके को बन्द करवाने के कल्याणकारी कार्य में ग्रामीण जनता का मार्ग दर्शन करे। सभा की ओर से प्रचारक पं० रतनसिंह आर्य को प्रचारार्थ तथा संघर्ष की तैयारी करने के लिए करेवडी भेज दिया है। नशाबन्दी आंदोलन के नेता श्री ओमप्रकाश सरोहा ने ठेके को बन्द करवाने के लिए सरकार को चेतावनी दी है कि सरकार ने कोई कार्यवाही न की तो ठेके पर धरणा देकर शराब की बिक्री बन्द करवादी जावेगी।

—केदारसिंह आर्य

पंचम वेदप्रचार समारोह

वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम अशोक नगर रेलवे वर्कशाप रोड, यमुनानगर हरयाणा में केन्द्रीय आर्य सभा यमुनानगर के तत्त्वावधान में १६ से १८ ज्येष्ठ २०४९ (२९ से ३१ मई, ९२) तक धूमधाम से पंचम वेदप्रचार समारोह मनाया जारहा है।

—अध्यक्ष स्वामी सच्चिदानन्द

२५ करोड़ लोग धूम्रपान से मौत के मुंह में चले जायेंगे

लन्दन, २२ मई (ए०पी०)। औद्योगिक देशों में २० प्रतिशत (कम से कम २५ करोड़) लोग सिगरेट की भेट चढ जायेंगे। यह संख्या अमरीका की कुल जनसंख्या से भी अधिक है।

धूम्रपान पर अमरीका में किये गये अध्ययन और उसके आधार पर विश्व व्यापी विश्लेषण से पता चला है कि धूम्रपान करनेवालों में एक तिहाई और सम्भव है कि ५० प्रतिशत लोगों की मौत का कारण यही शौक हो।

अब तक यह समझा जाता था कि धूम्रपान करनेवालों में लगभग एक चौथाई लोग धूम्रपान से पैदा रोगों से मरते हैं।

न्यूयार्क स्थित रोजवेल पार्क कैंसर संस्थान के महामारी विज्ञान अनुसधान के प्रमुख डा० कार्टिस मेटालीन के अनुसार इस अध्ययन में धूम्रपान को बहुत बड़ी महामारी के रूप में देखा गया है। अध्ययनकर्त्ताओं ने समस्या का बढ़ा-चढ़ाकर बयान करने से बचते हुए सबूतों के आधार पर ही ऐसी घोषणा की है। यह अध्ययन रिपोर्ट ब्रिटेन की चिकित्सा सम्बन्धी पत्रिका 'लेन्सेट' में प्रकाशित हुई है।

निःशुल्क योग चिकित्सा शिविर

प्रतिदिन प्रात ७ से ८-३० बजे तक दिनांक ७ जून से १६ जून, ९२ तक सरल योग क्रियाओं द्वारा मानसिक एव शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के लिए स्वय पधारें तथा अपने समस्त पारिवारिकजनों को इसकी सूचना देकर लाभान्वित करें।

इस निःशुल्क योग चिकित्सा शिविर का संचालन श्री ओमशंकर शर्मा डायरेक्टर योग सेंटर, बिडला पिलानी इस्टीटयूट राजस्थान करेंगे।

—आर्यसमाज मन्दिर सांताक्रुज
विट्ठलभाई पटेल मार्ग, बम्बई-५४

अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक दिनांक ३१ मई, ९२ रविवार प्रातः १० बजे सभा कार्यालय सिद्धांती भवन दयानन्दमठ रोहतक में होनी निश्चित हुई है। अन्तरंग सदस्यों से अनुरोध है कि यथासमय पधारकर कृतार्थ करें।

—सूबेसिंह सभामन्त्री

शोक समाचार

१—आर्यसमाज सत्य-सदन पुन्हाना (गुड़गांव) के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं समाजसेवी श्री रामलाल जी बजाज का दिनांक १२-५-९२ को अचानक हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास होगया। १५-५-९२ को शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को वैदिक-पथ पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।

२—आर्यसमाज सत्य-सदन के प्रचारमन्त्री श्री मनोहरलाल जी आर्य के पिता श्री गेलाराम जी का दिनांक १७-५-९२ को लम्बी बीमारी के बाद निधन होगया। आपकी धार्मिक कार्यों में बहुत रुचि थी। भगवान् से प्रार्थना है कि उनके शोक संतप्त परिवार को इस महान् दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे तथा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—सुरेन्द्रकुमार आर्य मन्त्री

आर्यसमाज रेवाड़ी का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री ओम्प्रकाश ग्रोवर, उपप्रधान—म० रामचन्द्र आर्य, मातुराम शर्मा, मन्त्री—रामकुमार शर्मा, सहमन्त्री—गजानन्द आर्य, उपमन्त्री—अमरसिंह सैनी, कोषाध्यक्ष—सुखराम आर्य।

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह
दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

क्रम	नाम	रुपये
१	श्री चौ० प्रियव्रत ठेकेदार ग्राम खेड़ीआसरा जि. रोहतक	११००
२	,, चौ० सुरेन्द्रसिंह छिकारा ,, ,,	१०००
३	,, चौ० राजेन्द्रसिंह छिकारा ,, ,,	१०००
४	श्रीमती राजबाला ,, ,, ,,	१०००
५	,, चन्द्रावती ,, ,, ,,	१०००
६	श्री चौ० पृथ्वीपालसिंह ग्राम जुई जि. भिवानी	१०१
७	,, चौ० सत्यवीरसिंह नम्बरदार ग्राम बलम जि. रोहतक	१०१
८	,, विनोद म०नं० १५०३ हाउसिंग बोर्ड कालोनी रोहतक	१०१
९	,, महेश्वरसिंह शास्त्री भरत कालोनी रोहतक	१०१
१०	,, प्रो० धर्मपाल देशवाल एल १८३ माडल टाउन रोहतक	१०१
११	,, चौ० चांदराम मलिक ३४ आर० ,, ,, ,,	१०१
१२	,, प्रो० राममेहर राठी २१५ आर० ,, ,, ,,	५०१
१३	,, प्रो० यशपाल चावला १०९ एल० ,, ,, ,,	१०१
१४	श्रीमती सावित्री देवी धर्मपत्नी श्री सत्यवीर शास्त्री ग्राम गढ़ीबोहर रोहतक	१०१
१५	मन्त्री आर्यसमाज माडल टाउन रोहतक	२५१
१६	आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक (१०१ पहले)	१५०
१७	,, नरवाना जि. जींद	५०१
१८	श्री नरेशचन्द आर्य नरवाना जि० जींद	२०१
१९	,, इन्द्रजीत आर्य ,, ,,	२०१
२०	,, मा. दीपचन्द आर्य	१०१
२१	,, गणपतसिंह आर्य ग्राम नौरंगाबास जाट जि० भिवानी	१०१
२२	केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ़	११००
२३	आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी	५००
२४	श्री धर्मवीरसिंह मलिक ६१ हाउसिंग कालोनी सोनीपत	१०१
२५	,, प्रभुदयाल ग्राम लूखी जि० रेवाड़ी	१०१
२६	मन्त्री आर्यसमाज गोहाना मण्डी जि० सोनीपत	५०५
२७	श्री दयाकिशन आर्य एवं प्रीतमसिंह आर्य कापड़ो जि० हिसार (ऋषियों की बुद्धिमत्ता नामक पुस्तक हेतु)	१०४
२८	,, नसीब साहू रिटायर्ड प्रिंसिपल पब्लिक स्कूल दादरी (नशाबन्दी हेतु)	१०१
२९	,, बलदेवसिंह सु० श्री हरकिशन ढराणा जि० रोहतक	१०१
३०	,, राजतिलक ३ जनकपुर नई दिल्ली (ऋषिलंगर हेतु)	१०१
३१	आर्यसमाज खरखड़ा जि० रोहतक	१०१
३२	श्री बाबू मामनसिंह आर्य रोहतक	१०१
३३	,, जयनारायणसिंह ग्राम मुरादपुर टेकना जि० रोहतक	११०
३४	,, लछीराम आर्य ग्राम खिड़वाली जि० रोहतक	१००
३५	,, चौ० राममेहर एडवोकेट सोनीपत रोड रोहतक	१००
३६	आर्य हाई स्कूल बाबरा मोहल्ला रोहतक	३५०
३७	,, आर्यसमाज ,, ,, ,,	३५०
३८	सुश्री सुदर्शना शास्त्री आचार्या महिला आयुर्वेदिक कालेज खानपुर	१२५
३९	छात्राएं महिला आयुर्वेदिक कालेज खानपुर	१७५
४०	बहिन सुभाषिणी कन्या गुरुकुल ,,	१०१
४१	छात्राएं प्रशिक्षण महा० वि० गुरुकुल खानपुर	६८०
४२	,, वरिष्ठ मा० वि० ,, ,,	५४७
४३	श्री रतनप्रकाश आर्य महम	१०१
४४	,, जमींदार टिम्बर स्टोर काठमण्डी जींद	१०१
४५	श्री धर्मवीरसिंह सु० चौ० ओम्प्रकाश पालिका बाजार जींद	१०१
४६	,, देवेन्द्रसिंह मलिक पुराना कचहरी रोड ,,	१०१
४७	,, हवासिंह कटारिया सु० चौ० अर्जुनसिंह काठमण्डी ,,	१००
४८	,, निहालसिंह अजीतसिंह टिम्बर मर्चेण्ट ,, ,,	१०१
४९	,, बसल आयल स्टोर ,, ,,	१०१
५०	,, जींद टिम्बर स्टोर ,, ,,	१०१
५१	,, मैं० साहबराम टेकराम अनाजमण्डी ,,	१०१
५२	,, कर्णसिंह सराफ मेन बाजार ,,	१०१
५३	,, सूरजमल ज्वैलज ,, ,,	१०१
५४	,, अर्जुनसिंह सु० चौ० भलेराम ज्वैलर्ज मैन बाजार ,,	१०५
५५	,, प्रह्लादसिंह ओम्प्रकाश सर्राफ ,, ,,	१०१
५६	,, रमेश सु० चौ० पृथ्वीसिंह ,, ,,	१०१
५७	,, वैद्य रामचन्द्र आर्य स्वास्थ्य रक्षक औषधालय ,,	१०१
५८	श्रीमती दुर्गा देवी धर्मपत्नी वैद्य रामचन्द्र आर्य स्वास्थ्य रक्षक औषधालय जींद	१०१
५९	श्रीमती राममूर्ति धर्मपत्नी श्री प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री एम.ए. दिल्ली	५००
६०	श्री नरसिंह सहरावत अधीक्षक रा. ग्रा. वरि. मा. बा. वि. बवाना	१००
६१	,, यज्ञवीर शास्त्री	१०१
६२	,, दाऊलाल सोनी जोधपुर (राज०)	१५१
६३	,, अनिलकुमार आर्य सु० श्री धर्मपाल आर्य, आर्यसमाज नरवाना जि० जींद	२०१
६४	,, राजकुमार आर्य आर्यसमाज नरवाना जि० जींद	२०१
६५	,, हुकमचन्द राठी अधिष्ठाता गु० इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद	१००
६६	,, राजसिंह जून ४६/१० ,,	१०१
६७	,, सतीश कौशिक ८८/१० ,,	१००
६८	,, राधाकृष्ण बत्रा आर्यसमाज से० ७ ,,	१००
६९	,, जगदीश बधवा ४८८/१० ,,	१००
७०	श्रीमती सरोज सहगल १०६७ सेक्टर ९ ,,	१००
७१	,, स्वर्ण कोछड़ २८८१ ,, ७ ,,	१००
७२	श्री वेदप्रकाश बहल १६०१ ,, ७ ,,	१००
७३	,, निष्ठाकर आर्य उपप्रधान आर्यसमाज स० ७ ,,	१००
७४	,, रामलाल आर्य साबुन कालोनी बल्लबगढ़	१००
७५	,, अनिता इण्डस्ट्रीज ,,	१०१
७६	,, प्रकाश आयल एण्ड फ्लोर मिल्स ,,	१०१
७७	,, किशनलाल मेवाराम ,,	१०१
७८	,, राजपाल शरण रस्तौगी ए ४/३०५ पश्चिमी विहार नई दिल्ली	१०१
७९	आर्यसमाज नाहरी जि० सोनीपत	१०१
८०	श्री इन्द्रसिंह तहसीलदार ग्राम नीमड़ी जि० भिवानी	१०१
८१	,, म० बलवन्तसिंह आर्य मकड़ौली कला जि. रोहतक	५०१
८२	चौ० शमशेरसिंह सरपंच ग्राम व पो० डाबड़ा जि. हिसार	५१००
८३	इण्डस्ट्रीयल केबल्स इण्डिया लि दिल्ली	५०००
८४	श्री कन्हैयालाल महता ई-४१ नेहरू ग्राउंड फरीदाबाद (५०० रु० पहले दिये)	४५००
८५	,, इन्द्रनारायण हाथी दांतवाले ए-१६ ग्रीन पार्क नई दिल्ली (शराबबन्दी हेतु)	११००
८६	,, जयसिंह ग्राम व पो. बाघपुर जि. रोहतक	५००
८७	,, मा. तेजसिंह फतेहपुरा दिल्ली	३०५
८८	,, एम. डी. शर्मा ४७ आर. पी. एस. फ्लेटस शेखसराय फेज-I नई दिल्ली	१००
८९	आर्यसमाज जंगपुरा एक्सटेंशन नई दिल्ली	१००
९०	,, साकेत नई दिल्ली-१७	२५०

(क्रमशः)

सभा कोषाध्यक्ष

गुरुकुल कुरुक्षेत्र को समर्पित एक महान् व्यक्तित्व

ले०—स्वामी महाचैतन्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के निर्माण में नींव के पत्थर के रूप में परिणित होनेवाले अत्यन्त विशिष्ट एवं शीर्षस्थ विभूतियों की पावन शृंखला में स्वर्गीय श्री श्रद्धाराम का नाम भी आता है। वे अवैदिक मतमतांतरों, धार्मिक अन्धविश्वासों और समाजघातकों की रूढियों के विरुद्ध सिंह गर्जना करनेवाले युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अप्रतिम शिष्य अमरशहीद हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के अनन्य अनुयायी थे। वे पद, प्रतिष्ठा और नाम यश की ऐहिक ऐषणा से परे रहकर गुरुकुल कुरुक्षेत्र की चहुंमुखी उन्नति प्रगति के लिए अपने तन, मन और धन से सर्वतोभावेन समर्पित रहे। उन्होंने इस गुरुकुल के भवन निर्माण के समय अन्य मजदूरों के समान स्वयं अपने सिर पर चूना सीमेंट के तसले ढोने का काम किया। वे इस संस्था में सन् १९१९ से लेकर सन् १९६१ तक एक विनम्र सेवक की भांति मुख्य लेखाधिकारी (कोषाध्यक्ष) के रूप में कार्यरत रहे। इससे पूर्व वे गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना के समय से ही वहां इसी पद पर सेवारत रहे थे। गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना के समय उन्हें यहां भेजा गया था। यहां से उनका पैतृक गांव बागला (कैथल जनपद अन्तर्गत) निकट ही पड़ता है, किंतु धुन के धनी समाजसेवा के दृढव्रती इस अनन्य साधक ने कभी अपने गांव की ओर मुंह मोड़कर भी न देखा।

इस प्रकार उन्होंने अपने जीवन का सर्वोत्तमकाल गुरुकुल कुरुक्षेत्र में निष्ठापूर्वक सेवा करते हुए ही व्यतीत किया। गुरुकुल के दक्षिणी सिरे पर निर्मित भवन लगातार उनके परिवार का आवास रहा। उनके चार पुत्र और चार पुत्रियों का जन्म, पालनपोषण, शिक्षा-दीक्षा और वैवाहिक संस्कार आदि सभी इसी भवन में सम्पन्न हुए। वे बहुत ही सात्विक और उच्च विचारों के व्यक्ति थे। सन् १९६१ के अन्त में तत्कालीन अधिकारियों से कुछ सैद्धांतिक मतभेद हो जाने के कारण अपनी जीविका की भी परवाह न करते हुए वे स्वयं ही त्याग-पत्र देकर थानेसर शहर में रहने के लिए चले गये थे। उनका अनुपम त्याग, आदर्श, धैर्य और अनुकरणीय कृतित्व भविष्यकालीन अगणित पीढ़ियों के लिए एक अविचल दीपस्तम्भ के समान उत्प्रेरक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

वर्तमान में उनकी छः सुयोग्य विद्वान् सन्तान (दो पुत्र, चार पुत्रियां) उनके द्वारा दिये गये आदर्शों और संस्कारों का सम्यक् रूपेण निर्वाह करते हुए समाजसेवा के विभिन्न क्षेत्रों में सन्नद्ध हैं। उनके कनिष्ठ सुपुत्र रवीन्द्र ने उनके जीवनकाल में ही पाकिस्तानी विस्थापित (सन् १९४७) रोगी अपाहिजों के प्राणरक्षार्थ क्षमता से अधिक रक्तदान कर अपने प्रिय प्राणों का उत्सर्ग कर दिया था। ९ फरवरी १९९२ को उनकी ज्येष्ठ सुपुत्री श्रीमती कमलावती जब गुरुकुल कुरुक्षेत्र पधारी तो संस्था के वर्तमान कर्मठ, ईमानदार प्रधान चौ० सत्यदेवसिंह पूर्व आई०पी०एस० एव कर्मठ आचार्य श्री देवव्रत जी की कुशल देख-रेख में अपनी कुलभूमि की अभूतपूर्व प्रगति देखकर गद्गद् हो उठीं। उन्होंने अपने महान् पिताश्री के साथ इस भवन में दीर्घकालीन समय तक निवास किया था। उसके पुनर्निर्माण के लिए उन्होंने आचार्य श्री को दस हजार रुपये की अनुदान राशि समर्पित की।

प्रवेश सूचना

आर्य शिक्षाप्रेमी सज्जनों के ८ वर्ष या उससे अधिक आयु और सातवीं कक्षा तक के बालकों के लिये खेवड़ा ग्राम की पवित्र भूमि पर एक "आर्य संस्कार बाल आश्रम" की स्थापना की गई है। जो भी अभिभावक अपने बालक को इसमें प्रवेश कराना चाहते हैं, वे पत्र व्यवहार से या प्रत्यक्ष मिलकर संस्था से प्राप्त आवेदन-पत्र भरकर इस पते पर भेज सकते हैं।

आश्रम के लिये एक शिक्षित, सेवाभावी, त्यागी आर्यसमाजी गृहपति की भी आवश्यकता है। जो सज्जन अवैतनिक रूप में इस सेवा-कार्य को करना चाहता है, वे पत्र लिखें।

जगदीशचन्द्र आर्य
व्यवस्थापक आर्य संस्कार बाल आश्रम
खेवड़ा, सोनीपत (हर०)

ग्राम करेवड़ी के नरनारियों ने शराब का ठेका बन्द करवाया

ग्राम करेवड़ी जिला सोनीपत के सरपंच ने ग्राम में शराब का ठेका खुलवा दिया था, परन्तु शराबबन्दी समर्थक ग्राम के सैकड़ों नर-नारियों ने इसका विरोध करने के लिए सोनीपत में जिला उपायुक्त कार्यालय के सामने ३-४ दिन तक प्रदर्शन किया तथा ठेके को तुरन्त बन्द करने की मांग की। उधर ग्राम के सरपंच ने अपने शराबी साथियों के सहयोग से ठेका चालू रखने का प्रयास किया तथा ग्रामवासियों को शराब की बिक्री की आय से विकास कार्य करने का लालच दिया, परन्तु ग्रामवासी उसके जाल में न फसे और निरन्तर विरोध करते रहे। सरपंच तथा शराब के ठेकेदार के विरुद्ध ग्राम में शराबरूपी जहर बेचने के अपराध के लिए कठोर पग उठाने की चेतावनी दी।

अन्ततः जिला उपायुक्त ने शराबबन्दी नरनारियों की मांग मानते हुए शराब का ठेका बन्द करने का आदेश दे दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ग्राम में शराबबन्दी सम्मेलन आयोजित करने का कार्यक्रम बनाया है।

—रतनसिंह आर्य उपदेशक

ग्राम पिरथी में शराब का ठेका बन्द करवाने की मांग

ग्राम पिरथी जि० यमुनानगर की पंचायत गतवर्ष से अपने ग्राम में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए प्रस्ताव करके सरकार को भेज रही है, परन्तु प्रस्ताव की अवहेलना करके इस वर्ष भी ठेका खोल दिया है। शराबबन्दी ग्राम के नरनारी भारी संख्या में १३ मई से ठेके के सामने धरने पर बैठे हैं। स्वामी सत्यानन्द जी के नेतृत्व में एक शिष्ट मण्डल जिला उपायुक्त यमुनानगर से मिला तथा ठेका बन्द करने की मांग की। सन्तोषजनक उत्तर न मिलने पर ग्रामीण महिलाओं ने पुनः २२ व २३ मई को जलूस के रूप में उपायुक्त कार्यालय पर प्रदर्शन किया। शराब का ठेकेदार धन तथा उच्च अधिकारियों की सहायता से ठेका बन्द नहीं कर रहा। ग्रामीण नरनारी ठेका बन्द करवाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से पत्र लिखकर हरयाणा सरकार से ठेका तुरन्त बन्द कराने की मांग की है तथा शराबबन्दी प्रचार कार्यक्रम बनाया है।

—केदारसिंह आर्य

शराब हटाओ, देश बचाओ

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

२	,,	लूखी जि० महेन्द्रगढ	३० से ३१ मई
३	,,	कतलूपुर जि० सोनीपत	३१ मई से १ जून
४	,,	आहूलाना ,,	,, ,,
५	आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव के तत्वावधान में वेदप्रचार		
	गांव धनवापुर जि० गुडगांव		२९-३० मई
	,, धर्मपुर ,,		३१ मई से १ जून
१	आर्यसमाज अमीन जि० कुरुक्षेत्र		२ से ४ ,,
	,, दौलताबाद ,,		२ से ३ जून
	,, काशीपुर ,,		४ से ५ जून
	झाड़सा ,,		६ से ७ ,,
५	आर्यसमाज बेगा जि० सोनीपत		५ से ७ ,,
६	,,	कनीना जि० महेन्द्रगढ	६ से ७ ,,
७	,,	धनोन्दा ,,	८ से ९ ,,
८	,,	सांघी जि० रोहतक	८ से १० ,,
९	,,	पटौदी जि० गुडगांव	१२ से १४ ,,
१०	,,	रोहणा जि० सोनीपत	१३-१४ ,,
११	,,	बलियावास जि० रेवाड़ी	२०-२१ ,,
१२	संस्कृत प्रशिक्षण शिविर आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ		१९ से २८ ,,
१३	सदाचार शिक्षण शिविर जूवा जि० सोनीपत		२६ से ५ जुलाई

—डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वेदप्रचाराधिष्ठाता

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश आरम्भ

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा अरावली पर्वत की शृंखला में स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा जिला फरीदाबाद में कक्षा चौथी से नौवीं तक प्रवेश आरम्भ है। यहां पर सी० बी० एस० ई० का पाठ्यक्रम (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा मान्यता प्राप्त) पढ़ाया जाता है।

गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला तथा संग्रहालय आदि की व्यवस्था है। यहां छात्रों के रहन-सहन, आचार व्यवहार, स्वास्थ्य तथा चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है तथा धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास पर बल दिया जाता है। शिक्षा निःशुल्क है। आठवी का परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत रहा।

अतः अपने बालकों को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल में प्रवेश करवाकर उनका उज्ज्वल भविष्य बनावें। तुरन्त सम्पर्क करें।

आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद)
डाकघर नई दिल्ली-४४ फोन : ८-२७५३६८

आर्यसमाज ने क्या किया ?

—डा० सत्यवीर विद्यालंकार प्रिंसिपल, हिसार

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने विश्व के प्राणिमात्र के कल्याण हेतु ७ अप्रेल, १८७५ ई० को महानगर बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज की स्थापना करके उनका किसी नये मतवाद को चलाने का उद्देश्य कदापि न था। उनको तो सत्य सनातन वैदिकधर्म की मान्यताओं एवं सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करना अभीष्ट था। उस समय वैदिकधर्म की उज्ज्वल ज्योति को नाना मतमतांतर अपनी कलुषित राख से ढकने का प्रयास कर रहे थे। स्वामी जी की विचार-धारा किसी विशेष देश या विशिष्ट व्यक्तियों के लिए सीमित न होकर सार्वभौम थी। उनको सच्चे वैदिकज्ञान को संसार में फैलाने तथा वेदानुकूल जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देनी थी। आर्यसमाज के दस नियमों को पढ़ने से उनकी आंतरिक अभिलाषा का भली प्रकार पता चल जाता है। स्वामी जी के द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। यहां संक्षेप में केवल तीन कार्यों का उल्लेख किया जारहा है।

१. वेद ही आधार

स्वामी दयानन्द ने अपने स्वय के गढ़े हुए किन्ही लुभावने नियमों अथवा सिद्धांतों का प्रचार नही किया, अपितु महर्षि ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषि-मुनियों द्वारा प्रतिपालित वैदिक सिद्धांतों का प्रचार किया। उन्होंने विश्व के सामाजिक रोग को निदान करने के लिये मूल को पकड़ा। यह मूल था चारों वेद। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण निर्भ्रान्ति हैं तथा सत्य विद्याओं का आधार हैं। आर्यसमाज ने धर्म को केवल प्रदर्शन की वस्तु न मानकर उसे मानवीय बुद्धि तथा आचरण का विषय घोषित किया। धर्म का नाम लेकर कपोल कल्पित बातों को भी आंखे बन्द करके मान लेने की कुप्रथा को बन्द किया तथा तर्क, प्रमाण, बुद्धि, सृष्टि नियम तथा आप्त व्यवहार के द्वारा सत्य प्रमाणित तत्त्वों को ग्रहण करने का सन्देश दिया। बुद्धिजीवियों को खुले दिमाग से विचार करने तथा उन्हें वैदिक मान्यताओं को जांचने परखने व विभिन्न मतवादियों द्वारा फैलायी गई झूठी अन्धपरम्पराओं को तिलांजलि देने का पूरा अवसर दिया। वेद, वैदिकधर्म और वैदिक जीवन ही भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का मूल आधार रहे हैं। इसको स्वामी जी ने तथा आर्यसमाज ने पुनरुज्जीवित किया। परिणाम यह हुआ कि वेद भानु के सामने विभिन्न अवैदिक धर्मों या मतमतांतरों का घना अंधेरा छटता चला गया।

२. एक ईश्वर की पूजा

स्वामी दयानन्द ने वेदों के आधार पर यह सिद्ध किया कि ईश्वर एक है। वह निराकार है तथा उसकी कोई मूर्ति नहीं हो सकती। स्वाध्याय, सत्संग और योगाभ्यास ही ईश्वर प्राप्ति का साधन है। कोई भी पीर, पैगम्बर या अवतार ईश्वर के प्रतिनिधि नही हैं। जड़ पदार्थों की पूजा तथा ढोंग से ईश्वर की प्राप्ति असम्भव है। किसी मूर्ति के आगे हाथ जोड़ने या क्षमा-प्रार्थना करने से किया गया पाप भी क्षमा नही हो सकता। किसी विशेष पुस्तक के पाठ करने या किसी देवी-देवता अथवा महापुरुष के नाम लिखने या उच्चारण करने से भी किया हुआ पाप माफ नहीं होता, उसका फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। ईश्वर सत्, चित् आनन्दस्वरूप, दयालु तथा न्यायकारी है। सर्वव्यापक होने से संसार की पल-पल की खबर उसके पास है। वह सर्वज्ञ है और मुक्तिप्रदाता है, इसलिये केवल उसी की उपासना करनी चाहिये अन्य किसी की नहीं।

जाति और रंगभेद का विरोध

वैदिक मान्यता के अनुसार मनुष्य समाज में जाति-पाति तथा रंग नस्ल का भेद व्यर्थ है। समाज को व्यवस्थित रूप से सचालन करने के [illegible] तथा आश्रम [illegible] का विधान है और किसी भी [illegible] बुद्धिवादी न होकर बुद्धिमान है। मनुष्यों की केवल मानव-जाति है अन्य नहीं। रंगभेद तथा नसलभेद केवल प्राकृतिक कारणों से है, अतः मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव कैसा ? चाहे कोई कहीं का रहनेवाला, किसी रंग का किसी नसल अथवा मुखाकृति का हो—जो शुभकर्म तथा भद्र आचरण करता है वह देव या आर्य है और जो अशुभ कर्म तथा अभद्र आचरण करता है वह दस्यु या अनार्य है।

वेदों में संकुचित भावना या साम्प्रदायिकता कहीं पर भी नहीं है। वेदज्ञान पक्षपात रहित तथा सर्वहितकारी है। स्वार्थी लोगों ने विभिन्न जातियों अथवा रंग का भेदभाव फैलाकर मानवजाति को रसातल में पहुंचा दिया है। आर्यसमाज इसका खुला विरोध करता है और इस भेदभाव की समाप्ति के लिये पूरा जोर लगाता है। आर्य-समाज का दृष्टिकोण मानवतावादी तथा उदार है। जन्मना कोई जाति नहीं, जन्म के आधार पर कोई छोटा-बड़ा नहीं, कोई ऊंच-नीच नहीं, अपितु सब बराबर हैं। व्यवसाय के आधार पर भेदभाव का आर्य-समाज विरोध करता है। उसके अनुसार घृणाजनक व्यवहार किसी से भी नहीं करना चाहिये। स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज ने पक्षपात रहित, बिना भेदभाव के सब मनुष्यों को समानता, भ्रातृभाव, सहृदयता, परस्पर प्रेम, अहिंसा तथा शांति का सन्देश देकर सारे संसार को एक परिवार की भांति समझने का अवसर दिया। नारी को पुरुषों से भी अधिक आदर तथा श्रद्धा का स्थान देना आर्यसमाज की बड़ी उपलब्धि है।

ऋषिलंगर के लिए अन्न दान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में चरखी दादरी जि० भिवानी में आयोजित पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह के शुभावसर पर निम्न प्रकार अन्न सामग्री ऋषिलंगर हेतु प्राप्त हुई—

चौ० सुमेरसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज स्वरूपगढ़ जिला भिवानी द्वारा

ग्राम इमलोटा जि० भिवानी	२८ मन गेहूं
„ सांतोड़ „	२३ „ „
„ कन्हेटी „	१८ „ „
„ स्वरूपगढ़ „	१६ „ „
चौ० सुमेरसिंह स्वरूपगढ़ जि० भिवानी	२५ „ चने
गुरुकुल कुरुक्षेत्र से आचार्य देवव्रत जी द्वारा	३ क्विंटल चावल

सभा की ओर से सभी अन्नदाताओं का धन्यवाद।

—सोमवीरसिंह
सभा उपमन्त्री

श्री शरद पवार रक्षामन्त्री भारत सरकार के नाम पत्र

एक देशभक्त की नेक सलाह

फौजी कांटीनों में भूतपूर्व सैनिकों के लिए शराब सप्लाई की जाती है, उसे तुरन्त बन्द करें। इससे भ्रष्टाचार बढ़ता है तथा चरित्र गिरता है। देशभक्तों के लिए कलंक है, कोई नेक काम करें। गांधी का नाम लेते हैं तथा शराब बेचते हैं, शर्म की बात है।

—तारीफसिंह झज्जर (रोहतक)

शराब का ठेका हटवाने के लिए संघर्ष जारी

गुड़गांव, २४ मई (निस)। गांव धर्मपुर से शराब का ठेका हटाने के लिए शराबबन्दी संघर्ष समिति का गठन किया गया है। समिति ने आंदोलन तेज करने का फैसला किया है। जिला मजिस्ट्रेट के निवास के बाहर ठेका हटाने की मांग कर लोगों का धरना जारी है। समिति ने ठेके के सामने भी धरना शुरू कर दिया है। (दैनिक ट्रिब्यून)

धूम्रपान करनेवाले सावधान !

लन्दन, १ मई (प०स०)। अमरीकी डाक्टरों का कहना है कि धूम्रपान करनेवालों की हड्डी अगर टूट जाये तो उसे जुड़ने में अधिक समय लगता है। ब्रिटेन की नई विज्ञान पत्रिका में यह जानकारी दी गई है।

इमोरी विश्वविद्यालय जार्जिया के डाक्टरों को सन्देह है कि धूम्रपान से शरीर में पहुंचनेवाले निकोटिन और कार्बनडाइआक्साइड हड्डी जुड़ने की प्रक्रिया को धीमा कर देते हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि निकोटिन से रक्तकण कम बनते हैं और नई हड्डी तक खून का बहाव कम हो जाता है। तम्बाकू से कार्बन-डाइआक्साइड शरीर में आक्सीजन का प्रवेश कम करती है।

गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार पौड़ी गढ़वाल में

विशाल युवक निर्माण शिविर व योग साधना शिविर

युवाशक्ति को महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ओतप्रोत करने तथा शारीरिक व बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने के उद्देश्य से परिषद् ने ग्रीष्मकालीन अवकाश में नौ दिवसीय 'विशाल आर्ययुवक प्रशिक्षण शिविर' लगाने का निश्चय किया है। जहां उच्चकोटि के व्यायामाचार्य योगासन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, जुडो-कराटे, बाक्सिग व फ्री स्टाईल कुश्ती आदि का व्यायाम व आत्मरक्षा सम्बन्धी शिक्षण प्रदान करेंगे। वहां वैदिक विद्वानों द्वारा सध्या, यज्ञ, आर्य सस्कृति व वैदिक सिद्धांतों पर बौद्धिक शिक्षण भी प्रदान किया जायेगा, साथ ही आचार्य सत्यानन्द ओजस्वी विचार प्रदान करेंगे। अपने जीवन में एक परिवर्तन के इच्छुक नवयुवक साथियों को इसमें अवश्य भाग लेना चाहिए, ऐसी हमारी हार्दिक इच्छा है। शुल्क जमा कराने की अन्तिम तिथि ७ जून १९९२ तक है। —विश्वपाल जयन्त

आर्य बनें

बनेंगे न जब तक, आर्य हम।
बनायेंगे कैसे, विश्वमार्यम् ॥

जीवित पिता-माता को, सेवा कर,
मरने के बाद उनका, भोजन न घर,
खाने नहीं वो आते, ढोंग करे हम। बनेंगे न ·····

दूध से नहलाकर, कपड़े पहनाते,
मेवा-मिष्ठान्न फल, पत्थर पर चढ़ाते,
भोजन बिन अनाथ घूमें, निकल रहा दम। बनेंगे न···

मुर्गे मछली खाते हैं, तामसिक आहार,
शुद्ध-सात्विक छोड़ा, धर्म से न प्यार,
बुद्धि मलीन हुई, चचल है मन। बनेंगे न ·····

क्षत्री, वैश्य, ब्राह्मण, जन्म से नहीं,
करेगा जो कर्म जैसा, बनेगा वही,
पोप पुजारियों के, जाल में हैं हम। बनेंगे न···

ज्ञान-विज्ञान का, वेद खजाना,
'महेश' सत्य विद्या सबसे पुराना,
पढ़ना-पढ़ाना, सुनना,सुनाना धर्म। बनेंगे न···—

—ब्र० महेशार्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

आर्यसमाज धौलेड़ा जि० महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री अमीलाल आर्य, उपप्रधान—रामनिवास आर्य, खजांची—जवाहरसिंह आर्य, मन्त्री—रामनिवास वैद्य, उपमन्त्री—रामप्रताप आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—रामपत आर्य।

(पृष्ठ १ का शेष)

श्री शेखावत ने महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए कहा कि अजमेर विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय [illegible] जायेगा तथा उदयपुर में जहां नोलखा महल में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश की रचना की थी, उसे आर्यसमाज को सौंपा जायेगा।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के अवसर पर जिन आर्य महानुभावों ने आर्यसमाज की सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दिया, उनका सार्वजनिक अभिनन्दन एक शाल तथा प्रमाण-पत्र भेंट करके किया।

१७ मई को आर्य महिला सम्मेलन कुमारी शैलजा सांसद की अध्यक्षता में हुआ। इसमें श्रीमती निर्मला देशपांडे पूर्व सासद, कुमारी सुशीला आर्या आदि अनेक विदुषी बहनों ने महिलाओं के उत्थान के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये।

१७ मई को दोपहर बाद सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक आचार्य देवव्रत की अध्यक्षता तथा प्रा० प्रकाशवीर विद्यालंकार के संयोजन में सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्यवक्ता श्री सामपाल सदस्य राज्यसभा ने सभा कार्यालय रोहतक में निर्माणाधीन प० रघुवीरसिंह शास्त्री यज्ञशाला को पूरा करने के लिए १० हजार रु० अपनी ओर से तथा ४० हजार अन्य दानियों से संग्रह करके भेजने की घोषणा की। इसी प्रकार हरयाणा के कृषि राज्यमन्त्री श्री बच्चनसिंह जी आर्य ने अपने ऐच्छिक कोष से २१ हजार रु० यज्ञशाला हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेजने की घोषणा की। वक्ताओं ने आर्यवीरों को प्रोत्साहित करने के सुझाव भी दिये। प्रत्येक आर्यसमाज में आर्यकुमार सभा तथा आर्यवीर दल की स्थापना करने पर बल दिया।

इस अवसर पर श्री राममेहर एडवोकेट ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति श्री ओमप्रकाश चौधरी के सन्देश के आधार पर आर्यजनता को बताया कि सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधानों के परामर्श से दयानन्द पीठ के अध्यक्ष को मनोनीत किया जावेगा और विश्वविद्यालय छात्रावास का नाम प० गुरुदत्त विद्यार्थी छात्रावास रखा जावेगा। उन्होंने यह भी बताया कि विश्वविद्यालय में भविष्य में हिंदी के ही [illegible] की भर्ती की जावेगी। उन्होंने [illegible] घोषणा की कि विश्वविद्यालय में हरयाणा अकादमी की स्थापना करके प० बस्तीराम, प० तेजसिंह, प० ईश्वरसिंह, स्वामी नित्यानन्द, कु० जोहरीसिंह, श्री पृथ्वीसिंह बेधड़क आदि कवियों के साहित्य का [illegible] किया जायेगा और वैदिक साहित्य पर शोध किया जायेगा।

१७ मई रात्रि को आर्य कवि सम्मेलन का आयोजन सुप्रसिद्ध आर्य कवि श्री सारस्वत मोहन के संयोजन में किया गया। कवि महानुभावों ने प० गुरुदत्त विद्यार्थी तथा आर्यसमाज की महत्ता पर प्रभावशाली कवितायें सुनाकर जनता को आनन्दित किया।

(क्रमशः)

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी अल्पावधि के अद्भुत क्रांतिकारी

अत्यन्त सकोच का अनुभव हो रहा है कि विज्ञान के क्षेत्र की छात्रा होते हुए साहित्यिक शैली को दृष्टि से उच्चकोटि के विद्वान् व लेखकों के बीच मेरा यह लेखन का प्रयास पाठकों के लिए कुछ सन्तोष देनवाला होगा कि नहीं—फिर भी मूलरूप में विज्ञान के ही छात्र प० गुरुदत्त विद्यार्थी ने अपने जीवन के छब्बीस सालों के छोटे से अन्तराल के बीच देश-विदेशों में अपनी अमिट और स्थायी छाप छोड़ते आर्य समाज और वैदिक सिद्धांतों के अनुरूप काम किया, वह मुझे बार-बार अपनी लेखनी से सम्पर्क करने के लिए प्रेरित कर रहा है। मुझे पाठकों की उदारता व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार भी कुछ शब्द लिखने के लिए प्रेरित कर रहा है।

वीरभूमि पंजाब ने—जिसे हरयाणा प्रांत का ही भाग कहा जा सकता है—अंग्रेजी शासन और मुगल शासन के दौरान विश्वविख्यात साहित्यिक, धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक व राजनैतिक नेताओं को जन्म दिया है। उनमें पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का नाम स्वतः ही हमारे सामने सर्वोपरि नामों की पंक्ति से उभर कर आता है। उन्होंने अपनी जाति की रीति के अनुरूप धर्म की वेदी पर अपने जीवन का बलिदान कर दिया। इनके पूर्वजों ने भी मुगलकाल में धर्म की रक्षा के लिए अपना सिर दे दिया था और इसी कारण उनका नाम सरदाना पड़ गया जो अब भी सदाना के नाम से प्रसिद्ध है। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का अपने माता-पिता की आयु की दृष्टि से जिस अवस्था में जन्म हुआ था, उसको देखते हुए उनका प्रखर बुद्धिवाला होना स्वाभाविक ही था। छोटी-सी आयु में उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में पूर्ण गति प्राप्त कर लेना उनकी अनुपम उपलब्धि थी। अष्टाध्यायी को पढ़ने और समझने में लोग साल लगा देते हैं, लेकिन पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने उसे मात्र नौ मास में ही पूर्ण पढ व समझ लिया। उनके जीवन से पता चलता है कि वे दो-तीन बातों में विशेष रूप से सावधान दिखाई देते हैं और वे हैं—मदिरा का कभी भी प्रयोग न करना, मांसाहार से सर्वदा दूर रहना और क्रम से परोसे गये साग सब्जी को व अन्य पदार्थों को प्रेमपूर्वक खा लेना। एक बार तो वे दो मास तक केवल दूध और बिस्कुटों पर अपना गुजारा करते रहे। उनकी पोशाक भी साधारण सूती कपड़ों की होती थी। उन्होंने अपने विद्यार्थीकाल में जो मानवता की सेवा का निश्चय किया था उसकी पूर्णता के लिये उन्होंने वेदों की पवित्र और प्रेरणादायी शिक्षा को ही मूल आधार बनाया। जैसा कि मैंने पहले भी उल्लेख किया है कि वे स्वयं विज्ञान के छात्र थे, फिर भी वैदिक व संस्कृत साहित्य में उनकी गहन रुचि थी।

—डा० मोनू भाटिया प्राध्यापिका रसायनशास्त्र
दयानन्द महिला महाविद्यालय, फरीदाबाद

आर्यसमाज औरंगाबाद मीतरौल जि. फरीदाबाद का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री बहालसिंह भारद्वाज, उपप्रधान—लेखराम आर्य, मन्त्री—डालचन्द आर्य प्रभाकर, उपमन्त्री—बन्सीलाल आर्य, कोषाध्यक्ष—मा० नत्थीराम, आडिटर—दयाराम आर्य, प्रचारमन्त्री—सोहनलाल आर्य।

आर्यसमाज मन्दिर निर्माण हेतु अपील

गांव सांघी जि० रोहतक में आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण किया जारहा है, जिसमे एक विशाल हाल, यज्ञशाला, वैदिक पुस्तकालय, प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, युवा निर्माण केन्द्र और यहां १२ गांवों का प्रचार केन्द्र होगा। अतः दानी महानुभावों से अपील है कि इस शुभ काम में आर्थिक सहयोग देकर यश के भागी बने। —मन्त्री

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में यज्ञ आरम्भ

८ मई, १९९२ से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में साप्ताहिक यज्ञ आरम्भ कर दिया गया है। यज्ञ प्रति शुक्रवार को सायं ६ से ७ बजे तक सम्पन्न होगा। आर्यसमाज सैनीपुरा रोहतक ने यज्ञ का उत्तरदायित्व लिया है। पुरोहित श्री म० पूर्णसिंह जी आर्य रहेंगे। प्रचारमन्त्री एवं उपमन्त्री श्री सुरेशकुमार आर्य तथा महावीर शास्त्री नियुक्त किये गये हैं। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वैद्य भरतसिंह जी करेंगे।

८ मई के साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ के बाद श्री वैद्य भरतसिंह तथा श्री राममेहर एडवोकेट ने भावी योजना के सम्बन्ध में बताया कि यज्ञ पर छात्रों, अध्यापकों, कर्मचारियों व अन्य नागरिकों को जोड़ा जायेगा। इस प्रकार यह कार्यक्रम धीरे-धीरे विशाल रूप ले लेगा।

— सुरेशकुमार आर्य प्रचारमन्त्री

आर्यवीर दल रोहतक नगर का

वार्षिक उत्सव एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीर दल, आर्यकुमार सभा रोहतक नगर का ३९वां वार्षिक उत्सव १ जून से ७ जून तक वैदिक भक्ति साधन आश्रम में आयोजित किया जारहा है। इस उत्सव में आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पं० जगतराम, बस्तीराम जी की भजन मण्डली, पं० जयदेव जतोईवाले, मा० प्रेमप्रकाश, स्वामी संजीवनी आनन्द, बहन उषा शास्त्री आदि पधार रहे हैं।

व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर १ जून से ७ जून तक धन्वन्तरी आर्य कन्या पाठशाला आर्यनगर में होगा, जिसमें १५ वर्ष की आयु से ऊपर के विद्यार्थी भाग ले सकेंगे। शिविर में आसन, प्राणायाम, लाठी, जूडो, कराटे, जमनास्टिक, तलवार, भाला इत्यादि का प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

❀ शिविर में भाग लेनेवाले प्रत्येक सैनिक को २० रु० प्रवेश शुल्क तथा अपने साथ खाकी निकर, सफेद कमीज, दो सैंडो बनियान, दो काले कच्छे, नोट बुक, खाने-पीने के बर्तन, बिस्तर तथा कान के माप की लाठी लानी अनिवार्य होगी।

❀ शिविर का उद्घाटन समारोह ३१ मई को सायं ३ बजे से ६ बजे तक होगा। शिविर में भाग लेनेवाले २ बजे तक समान सहित अवश्य पहुंच जायें।

❀ शिविर में प्रवेश हेतु ब्र० बलदीप आर्य (शिक्षक आर्यवीर दल) दयानन्दमठ रोहतक से सम्पर्क करें।

निवेदक :
आर्यवीर दल रोहतक नगर

आर्यसमाज कालांवाली सिरसा का वार्षिक चुनाव

संरक्षक—सर्वश्री मदनमनोहरलाल आर्य, प्रधान—धनराज मोंगा, उपप्रधान—त्रिलोकचन्द सचदेवा, मन्त्री—ओमप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष—मदनमनोहरलाल गर्ग, वेदप्रचाराधिष्ठाता—नारायणदास नारंग।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ फोन नं० ७८५२२२ पृष्ठभवन १,६२ ७५, ७३ ०६३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक २७ ७ जून, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह में वेद सम्मेलन की धूम

(निज संवाददाता द्वारा)

गतांक से आगे—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आयोजित पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह में १५, १६, १७ मई को चरखी दादरी जि० भिवानी में जहां शराबबन्दी सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन, आर्य युवा सम्मेलन आदि अत्यन्त सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए वहां वेद महासम्मेलन की विशेष धूम रही। यह सम्मेलन आर्यों का और केवल आर्यसमाज का ही होता है, क्योंकि आर्यों की यह पवित्र मान्यता है कि "वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है" अतः आर्य वेद सम्मेलन अवश्य करते हैं।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्वीकार की आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा के प्रधान, युवा संन्यासी श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने। जो स्वयं वेदों के प्रकांड पण्डित हैं और इस सम्मेलन के संयोजक रहे आचार्य दयानन्द शास्त्री एम०ए० (स्नातक गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर) प्राध्यापक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार। आप भी वेदों के सुलझे हुए कर्मकांडी विद्वान् हैं। इस महासम्मेलन का उद्घाटन हुआ सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य सुदर्शनदेव के सारगर्भित भाषण से और श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का भी इस सम्मेलन को आशीर्वाद प्राप्त रहा। अन्य वक्ताओं में पं० राजवीर शास्त्री सम्पादक दयानन्द सन्देश दिल्ली, डा० महावीर मीमांसक, पं० वेदव्रत शास्त्री व पं० सुखदेव शास्त्री प्रमुख रहे। सभी वक्ताओं ने सप्रमाण यह सिद्ध किया कि ऋषिवर दयानन्द के आने से पूर्व वेद गडरियों के गीत समझे जाने लगे थे और एक वर्ग विशेष की मनमानी चल रही थी। पांच हजार वर्षों के बाद उन्होंने आर्ष वेदभाष्य कर हमें मन्त्रों का सही अर्थ समझाया। पं० सुखदेव शास्त्री के इस प्रस्ताव पर भी पूर्ण सहमति पाई गई कि वेदपाठ में प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ में 'ओ३म्' का उच्चारण होना चाहिये और यज्ञों में तो प्रत्येक मन्त्र के अन्त में भी 'टि' को प्लुत उदात्त कर 'ओ३म् स्वाहा' का पाठ करना चाहिये। इसमें एक प्रमाण तो मुनिवर पाणिनि का रहा कि 'ओमभ्यादाने' तथा 'प्रणवष्टे'। यह प्रमाण उपरोक्त सहमति की पुष्टि कर रहे हैं। दूसरे मनु जी के 'वेद- स्मृतिः सदाचारः—इस हेतु से ऋषि दयानन्द सरस्वती भी ऐसा ही मानते थे, क्योंकि उन्हीं की शिष्य परम्परा में स्वामी शुद्धबोधतीर्थ, उनके शिष्य स्वामी सच्चिदानन्द योगी और उनके शिष्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती हैं जो ऐसा ही करते चले आरहे हैं।

अन्त में इस महासम्मेलन के संयोजक आचार्य दयानन्द शास्त्री ने ऋग्वेद के १०।९०।१५ के मन्त्र सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः ... का उदाहरण देते हुए बतलाया कि महात्माबुद्ध के आगमन समय किस प्रकार इस और ऐसे मन्त्रों का अनर्थ कर यज्ञों में पशुबलि दी जाने लगी थी। जिसका खण्डन ऋषिवर ने सही अर्थ कर किया। इस तरह ऋषि दयानन्द के हम पर अमूल्य उपकार हैं जिसे यह सम्मेलन हृदय से स्वीकार करता है। इस प्रकार यह सम्मेलन पूर्ण-पूर्ण सफल रहा।

(क्रमशः)

शताब्दी समारोह की सफलता पर बधाई

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह चरखी दादरी में आयोजित की गई। उसमें मुझे भी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां के सारे कार्यक्रम को अच्छी तरह देखा एवं समझा। मुझे ऐसा लगा कि आर्य लोगों का एक समुद्र उमड़ आया है। सभा अधिकारियों ने वहां प्रत्येक कार्य को सुन्दर एवं गरिमापूर्ण निभाया। चाहे वह भोजनालय की बात हो, चाहे यज्ञशाला की, वेदवाणी की बात हो, चाहे भाषण मंच की बात हो। अर्थात् सभी दृष्टि से सभा द्वारा जो भी कार्य किया जारहा था वह अति प्रशंसनीय था। उस सबको देखकर मनमें खुशी से आर्य होने का गौरव अनुभव हो रहा था। जब मंच से श्री भैरोंसिंह शेखावत मुख्यमन्त्री राजस्थान द्वारा यह घोषणा की गई कि मैं आर्यजगत् को जगद्गुरु स्वामी दयानन्द जी की स्मृति में नौलखा महल भेंट कर रहा हूं। उस समय प्रसन्नता से दिल नाच उठा। खुशी के आंसू आने आरम्भ होगये। मैं उसका वर्णन आपसे क्या करूं? यह सब आर्य कार्यकर्त्ताओं के अनथक परिश्रम का फल है। आर्यसमाज के इतिहास में यह महल लेकर एक नया अध्याय जोड़ दिया है। जिसके लिये सभा अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं को बार-बार हार्दिक बधाई (शुभ कामनायें) भेज रहा हूं। भविष्य में आर्यसमाज की शक्ति को उजागर करने में प्रयासरत होंगे, ऐसी मेरी भगवान् से प्रार्थना है।

—डा० गेन्दाराम आर्य
मन्त्री आर्यसमाज माडल कालोनी
यमुनानगर

महामति चाणक्य की नीति और उनका अर्थशास्त्र

—डा० भवानीलाल भारतीय ८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

आजकल दूरदर्शन पर धारावाही चाणक्य की धूम है। स्वदेश और स्वधर्म की ऊर्जा और तेजस्विता को संवर्धित करनेवाले आचार्य विष्णु गुप्त को शिखायुक्त भव्य मुखाकृति तथा ओज एवं दीप्ति समन्वित उनकी प्रभावशाली वाणी दर्शकों को मन्त्रमुग्ध किये हुए है। आचार्य चाणक्य ने जिस अर्थशास्त्र का प्रणयन किया था वह आज की Political Economy का महान् ग्रन्थ है। मैंने पं० उदयवीर शास्त्री लिखित अर्थशास्त्र की टीका का अध्ययन किया था। विदित होता है कि चाणक्य के पूर्व भी अनेक आचार्यों ने अर्थशास्त्र विषयक ग्रन्थ लिखे थे। इनमें से कुछ प्रमुख थे—'औशसन' 'कात्यायन', 'कौणपदन्त' (भीष्म), 'घोरमुख', 'जामदग्न्य', 'पिशुन' (नारद), 'पिशुनपुत्र' 'बार्हस्पत्य', 'बाहुदन्ती', 'बृहस्पति', 'मनु', 'वातव्याधि' (उद्धव), 'विशालाक्ष' तथा 'शुक्र'। बृहस्पति के राजधर्म सूत्रों की एक संक्षिप्त हिंदी और अंग्रेजी व्याख्या मेरठ के पं० शिवदयालु ने लिखी थी। इसे दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया था।

चाणक्य के लेखन से कहीं अधिक उसका व्यक्तित्व आकर्षक है। चाणक्य प्रबल बुद्धिवादी तथा तर्ककुशल था। जो लोग बात-बात में ज्योतिषियों से अपना भविष्य पूछते हैं, लक्षणों के शुभाशुभ होने की बातें करते हैं तथा जिस किसी के आगे अपनी हथेली फैलाकर होनी अनहोनी को जानना चाहते हैं उन नक्षत्रवादियों का उपहास करते हुए आचार्य ने लिखा है—

> नक्षत्रमतिपृच्छन्त बालमर्थोऽतिवर्तते।
> अर्थो ह्यर्थस्य नक्षत्र किं करिष्यन्ति तारकाः॥ ६।१४२।४

ज्योतिषी से अपने नक्षत्रों की बात पूछनेवाला व्यक्ति अभी बालक ही है। वह अभीष्ट को प्राप्त नहीं कर सकता। वस्तुतः मनुष्य का धन और उसके साधन ही सच्चे नक्षत्र हैं। आकाश के तारे भला उसका क्या कल्याण अथवा अकल्याण करेंगे।

'चाणक्य नीति शतक' 'चाणक्य नीति दर्पण' तथा 'चाणक्य नीति' के नाम से अनेक ग्रन्थ मिलते हैं। सरल अनुष्टुप् श्लोकों में लिखा गया यह लघुग्रन्थ नाना व्यवहारमूलक शिक्षाओं तथा नीति एवं सदाचार के उपदेशों का अपूर्व संग्रह है।

आर्यसमाज की पुरानी पीढ़ी के अंग्रेजी लेखक पं० दुर्गाप्रसाद ने चाणक्य नीति की एक अंग्रेजी टीका Chanakya's Niti-Darpana or A Compendium of Morals शीर्षक से लिखी थी। इसका प्रकाशन १८८३ में हुआ था। 'चाणक्य-नीति संग्रह' नामक १०५ श्लोकात्मक ग्रन्थ का हिंदी अनुवाद मेरठ के प० छुट्टनलाल स्वामी ने किया था। इसके प्रास्ताविक श्लोकों से पता चलता है कि विभिन्न शास्त्रों से राजनीति विषयक शिक्षाओं को लेकर सर्वशास्त्रों के बीजरूप इस 'चाणक्यसार संग्रह' की रचना हुई है। संग्रहकार का दावा है कि

इस ग्रन्थ के ज्ञान से मूर्ख भी पण्डित हो जाता है। पं० प्रेमशरण प्रणत, प० शेरसिंह शास्त्री तथा पं. बिहारीलाल शास्त्री ने भी चाणक्य नीति की उत्तम टीकायें लिखी हैं। इधर १९८३ में स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने चाणक्यनीतिदर्पण का एक शोधपूर्ण प्रामाणिक अनुवाद प्रकाशित किया है।

अर्थशास्त्र के अतिरिक्त चाणक्य द्वारा रचित निम्न ग्रन्थों का पता चलता है—१. वृद्ध चाणक्य (आठ अध्याय—१२४ श्लोक), २. चाणक्यनीति शास्त्र (१०८ श्लोक), ३. चाणक्यसार संग्रह (तीन शतक और ३०० श्लोक), ४ लघुचाणक्य (आठ अध्याय और ६१ श्लोक), ५. चाणक्य राजनीतिशास्त्रम् (आठ अध्याय और ५१२ श्लोक) विदेशी विद्वानों में लुडविग ने चाणक्यनीति पर प्रशंसनीय परिश्रम किया।

पञ्चतन्त्रकार ने अपने ग्रन्थ के आरम्भ में नीतिशास्त्र के रचयिताओं को प्रणाम करते हुए जिन्हें स्मरण किया है उनमें मनु प्रथम तथा चाणक्य अन्तिम हैं।

विदेशी आक्रांता अलक्षेन्द्र (सिकन्दर) के आक्रमण को अपनी कूटनीति से विफल कर भारत राष्ट्र को सुदृढ़ बनानेवाले, आर्य प्रज्ञा के धनी, महामेधावी आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य के आदर्श को विस्मृत कर देने से ही आज हम राष्ट्रीय संकट की घड़ी में अपने को असहाय और असमर्थ अनुभव कर रहे हैं। जिस महान् व्यक्ति ने विभिन्न गण-तन्त्रों में विभक्त दुर्बल भारत को एक सार्वभौम, अखण्ड चक्रवर्ती राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करने का संकल्प कर देशवासियों की राष्ट्रीय अस्मिता को जागृत किया, उस प्रज्ञाशील राजनीतिज्ञ के प्रति सामान्य लोगों की धारणा कितनी भ्रमपूर्ण है। वे अभी तक यही समझते रहे कि यह व्यक्ति धूर्त, कुटिल तथा मत्सर-ग्रस्त था।

जिस ऋषिकल्प महापुरुष ने अर्थशास्त्र के रूप में राजनीति का आकर ग्रन्थ लिखा, जिसका नीतिशास्त्र आज लोक-व्यवहार और सामाजिक आचरण की आदर्श संहिता समझा जाता है तथा जिसके द्वारा प्रणीत सूत्र मानव के लिए व्यावहारिक और उदात्त जीवनदर्शन उपस्थित करते हैं वह व्यक्ति स्वयं कितना उदार तथा उच्चाशयवाला रहा होगा, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। चाणक्य के व्यक्तिगत जीवन के बारे में हमारा ज्ञान नितांत अल्प ही है। उसका नाम विष्णुगुप्त था, किंतु लोक में वह चाणक्य तथा कौटल्य के नाम से विख्यात रहा। स्वरचित सूत्रात्मक अर्थशास्त्र पर उन्होंने स्वयं भाष्य लिखा और उसमें अपने नाम 'विष्णुगुप्त' की घोषणा करते हुए वे लिखते हैं—दृष्ट्वा विप्रतिपत्तिं बहुधा शास्त्रेषु भाष्यकाराणां स्वयमेव विष्णुगुप्तश्चकार सूत्रं च भाष्यं च। अर्थात् प्रायः यह देखा गया है कि शास्त्रों पर लिखे गये विभिन्न भाष्यकारों के भाष्यों में विसंवादी स्वर सुनाई पड़ते हैं। अतः आचार्य विष्णुगुप्त ने स्वयं ही अपने सूत्रों पर भाष्य की रचना की है। चणक ऋषि के वंशज होने के कारण वे लोक में चाणक्य के नाम से जाने गये। एक अन्य नाम कौटल्य भी उल्लिखित हुआ है। कौटल्येन नरेन्द्रार्थं शासनस्य विधिः कृतः। आचार्य कौटल्य ने सम्राट् चन्द्रगुप्त के लिये अर्थशास्त्र के रूप में शासन की विधि का निर्माण किया।

बौद्ध जैन परम्परा ने ब्राह्मण चाणक्य के प्रति किंचित् असहिष्णुता दिखाते हुए उनमें कुटिल वृत्ति के दर्शन किये, फलतः उन्हें यत्र-यत्र कौटिल्य के नाम से अभिहित किया गया। वस्तुतः उनका गोत्र था कुटल। उनके कौटल्य नाम की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है—कूटो घटः। तं धान्यपूर्णं लान्ति संगृह्णन्ति इति कुटलाः। कुम्भीधान्याः त्यागपरा ब्राह्मणा श्रेष्ठाः। तेषां गोत्रापत्ये कौटल्यो विष्णुगुप्तो नाम। अर्थात् कूट नाम है घट (घड़ा) का। जो लोग एक घड़े से अधिक धान्य का सग्रह नहीं करते वे कुम्भी-धान्य अत्यन्त त्यागवृत्तिवाले श्रेष्ठ ब्राह्मण कहलाते हैं। ऐसे ही त्यागी ब्राह्मणों के कुटल नामक गोत्र में उत्पन्न विष्णुगुप्त को कौटल्य कहा गया था।

नीतिशास्त्र में कहा गया है—ये विष्णुगुप्त यज्ञाग्नि के तुल्य जाज्वल्यमान् तथा वेदज्ञों में अग्रगण्य थे। चारों वेदों पर इनका समान अधिकार था। उन्होंने अपूर्व राजनीति तथा पूर्ण चातुर्य से प्रदीप्त वज्र के तुल्य पर्वत की भांति सुदृढ़ नन्दवंश को नष्ट कर दिया तथा अपनी अप्रतिम बुद्धि और विचारशक्ति से चन्द्रगुप्त को ससागरा धरती का स्वामी बनाया। इन पंक्तियों में प्रयुक्त 'अभिचार वज्रेण' से सम्भवतः यह भ्रांति हो सकती है कि चाणक्य ने किसी तांत्रिक अभिचार शक्ति द्वारा नन्दवंश का मूलोच्छेद किया होगा, किंतु यह कल्पना निराधार है। चाणक्य की अपूर्व मेधा, उसकी विश्वविजयिनी कूटनीति ही वह अभिचार वज्र था जिसने नन्दवंश का पराभव किया। अपनी इसी बुद्धि के बारे में चाणक्य स्वयं कहते हैं—"जो लोग कुछ सोचकर पहले चले गये हैं, जो अब यहां हैं वे भी यदि जाना चाहें तो चले जावें। समस्त कार्यों को सिद्ध करनेवाली, सैकड़ों सेनाओं से भी अधिक शक्ति सम्पन्न तथा नन्दोन्मूलन में जिसके बल की महिमा देखी जा चुकी है, वह मेरी बुद्धि ही मेरा त्याग न करे।"

(क्रमशः)

स्वास्थ्य का महान् शत्रु--अण्डा

—डा० मनोहरलाल आर्य, कैथल (हर०)

आजकल के वातावरण में प्रातः घर से निकलते हैं तो जगह-जगह अण्डे ही बिकते दिखाई देते हैं। कोई चाय पानी दुकान, छोटे किरयाने वाले की दुकान या सब्जीवाले की दुकान हो, बिक्री के लिये अण्डे भी रखे मिलेंगे। ऐसा लगता है जैसे कि यह अण्डा भी आजकल आम आदमी की खुराक का एक अंग ही बनता जारहा है और बाजार में कई रेड़ीवाले तो केवल अण्डे और उसकी भोजी आदि बनाकर बेचते हैं। शाम को आपको खासकर किसी चौक में कई रेड़ीवाले आमलेट आदि बनाकर बेचते दिखाई देंगे और अण्डों के जलने की दुर्गन्ध से पास से गुजरा भी नही जायेगा और अब तो अण्डे का प्रयोग अन्धाधुन्ध बढ़ता ही जारहा है। कोई सोचता ही नही कि यह अण्डा कितना हानिकारक है। लोग करें भी क्या? आज हर जगह अण्डे खाने का प्रचार हो रहा है। स्कूलों की पाठ्यक्रम की पुस्तकों मे भी अण्डे की प्रशंसा है। टी०वी० आदि पर भी प्रचार होता है। डाक्टर भी अपने बीमारों को बिना सोचे-समझे अण्डे का ही प्रयोग बताते हैं। उनका कहना है कि इसमें दूसरी सब खाद्य वस्तुओं से कहीं अधिक विटामिन और प्रोटीन आदि होते हैं। देखा जाये तो अण्डों को बहुप्रयोग कराने में अपनी सरकार भी दोषी है। पोल्ट्री फार्म के लिये करोड़ों रुपये का ऋण हर वर्ष दिया जाता है। इतना अण्डों का उत्पादन होगा तो लोगों की खुराक ही बनेगा और कहां जायेगा।

फिर साथ ही यह भी प्रचार होता है कि आजकल जो अण्डा पैदा किया जाता है इसमें जीव नही है, इसलिये इसके खाने से पाप भी नही लगता और शरीर में अधिक खुराक पहुंचती है और यह पौष्टिक भी अधिक है, कितनी गलत धारणा है। कहा यह जाता है कि मुर्गी पालन में जो खुराक मुर्गी को दी जाती है केवल इसी से ही मुर्गी अण्डा देती है। मुर्गी बिना मुर्गे के साथ मैथुन किये ही स्वयं देती है और उनमें बच्चा नहीं होता, वे निर्जीव होते हैं। यदि केवल Chemical Food ही से अण्डा बन जाता है तो मुर्गी पालने और इतने खर्च करने की क्या आवश्यकता है। यही Chemicals जमीन में बोकर अण्डे क्यों नही उगाये जासकते, पर अण्डा तो मुर्गी के पेट से ही पैदा होता है जिसमें मुर्गी के शरीर के अंश अवश्य होता है जो बिना जीव के नही हो सकता। कई जीव ऐसे भी पैदा होते हैं जो कि हवा लगने से मर जाते हैं। जैसे कि जानवरों के पेट के जीव, जो कि बाहर आकर मर जाते हैं और इन अण्डों से बच्चे न पैदा होने का कारण भी यही है। पर मुर्गी के पेट से पैदा होनेवाला अण्डा अवश्य जीव ही है।

किसी प्राणी के शरीर मे चार प्रकार के पदार्थ बनते हैं। पहले वे जो उसके शरीर के वास्तविक अंग हैं और शरीर को शक्ति पहुंचाते हैं। दूसरे वे जो मल के रूप में बनते हैं और जो भिन्न-भिन्न मार्गों से मल-मूत्र आदि के रूप में निकलते रहते हैं। तीसरे वे जो शरीर में रोग के रूप में उत्पन्न होते हैं। चौथे वे जो माता के शरीर में सन्तति का शरीर बनाते हैं। जैसे गर्भ या अण्डा। अब बताइये आपका बताया हुआ अण्डा किस में आता है। पहली कोटि में आ नहीं सकता, क्योंकि वह मुर्गी के शरीर का अंग नही है। चौथी कोटि में भी नहीं आसकता, क्योंकि वह निर्जीव होने तथा बाप से उत्पन्न न होने के कारण सन्तति का शरीर नही है। अब दो कोटिया रह गई या तो वह मुर्गी के शरीर का मल है या रोग का अंश है। दोनों दशाओ मे उसका खाना हितकर न होगा, केवल यह समझा जायेगा कि अण्डे खाने का चसका जिनको लग गया है वे उचित-अनुचित का विचार न करके नये-नये बहाने निकालते रहते हैं।

आइये इन डाक्टरों की उल-जलूल बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें। भक्ष्याभक्ष्य दो प्रकार का होता है—एक धर्मशास्त्रोक्त और दूसरा वैद्यकशास्त्रोक्त। हम केवल वैद्यकशास्त्रोक्त ही लेते हैं।

"बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारि तदुच्यते। शार्ङ्गधर ३१०×२२ श्लोक। अर्थात् जो-जो बुद्धि का नाश करनेवाले, शारीरिक और मानसिक हानि पहुंचानेवाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करे। इस दृष्टिकोण से विचार किया जाये तो अण्डा मनुष्य का भोजन नहीं।

इस विचार को दिल से निकाल देना चाहिये कि निरामिष भोजन मनुष्य को शारीरिक अथवा मानसिक रूप में निर्बल बनाता है। इस विषय में महात्मा गांधी जी ने ठीक ही लिखा है "सबसे महान् हिन्दू सुधारक अपने युग में अधिक चुस्त हुए हैं और वे सभी शाकाहारी थे। शंकर अथवा स्वामी दयानन्द से बढ़कर अपने समय में किस ने अधिक प्रगतिशीलता और चुस्ती दिखाई।

अण्डों में A B C D आदि विटामिन होने की दुहाई दी जाती है। आमतौर पर जो मुर्गी इधर-उधर घूमकर खुराक खाती है, वह सिवाय गन्दी गली-सड़ी चीजों के और कुछ नही होता। उसमें विटामिन कहां से आजाती है। इसी प्रकार Chemical Food में A इतनी Vitamins नही होती। इसी प्रकार कुछ लोग अण्डों में प्रोटीन ज्यादा होने की बात कहकर अण्डे खाने पर बल देते हैं। ऐसे लोगों की सेवा में निवेदन है कि आवश्यकता से अधिक प्रोटीन का सेवन करने से जोड़ों का दर्द, कमर, आमाशय के जख्म (Gastriculcer) आदि अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अण्डे कफ उत्पन्न करनेवाले पदार्थ हैं। अण्डा अत्यधिक (Acidicdiet=तेजाबी) अम्ल पैदा करनेवाला भोजन है जबकि हमारे शरीर के लिये क्षार गुणयुक्त भोजन की आवश्यकता है। अतः अण्डों के सेवन से शरीर में विटामिन्स की कमी हो जाती है। अण्डे में जो प्रोटीन होते हैं वे ऐसे मिश्रित होते हैं कि उनको पचाना बड़ा कठिन होता है। अण्डों का सेवन शरीर के रसस्राव प्रबन्ध को सुस्त कर देता है। फलतः जठराग्नि मन्द हो जाती है। पाचन संस्थान निर्बल हो जाता है और भोजन का परिपाक ठीक रूप से नहीं होता। इस प्रकार अण्डे लाभदायक नहीं, अपितु हानिकारक हैं। लोगों में ऐसी धारणा है कि अण्डे खाने से वीरता आती है और अण्डे बल और शक्ति का स्रोत हैं। परन्तु यह धारणा सर्वथा मिथ्या एवं निर्मूल है। अण्डे और वीरता का परस्पर कोई सम्बन्ध नही है। बल, शक्ति और वीरता तो शाकाहार में ही है। हाथी शाकाहारी है परन्तु शेर भी उस पर सहसा आक्रमण करते हुए डरता है। अतः सम्मुख न होकर पीछे से आक्रमण करता है। बन्दर और लंगूर दोनों ही शाकाहारी हैं। क्या लंगूर जैसी लम्बी छलांग लगाने की शक्ति किसी मांसाहारी प्राणी में पाई जाती है।

अगर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो अण्डा शरीर में अधिक बलगम यानि कफ पैदा करनेवाले पदार्थों में से है और मानव शरीर में कोलेस्टरोल की मात्रा बढ़ाकर और कई रोगों का कारण बनता है। जैसा कि डा० कैथराइन निम्मो D. C. R. N OCEAND, Celefornia (U. S A) लिखते हैं—'Even if we had the best of eggs, We would be better off wittout them as they ane too higli in cholesterol One important cause of Arteries, Heart, Brain, Kidney diseases and gall stones. Fruits and Vegitables and Vegetabe oils have none or handly any CHOLESTEROL.

(अंग्रेजी से अनुवाद) Dr. J. Amaa, Wlkins, England (How healthy one eggs).

तुम कह सकते हो कि "अण्डों से मेरे स्वास्थ्य को कोई हानि नहीं होती" परन्तु अण्डों का रसायनिक विश्लेषण तुम्हारी धारणा के विरुद्ध निर्णय देता है। अण्डे की जर्दी में कोलेस्टरोल नामक तत्व पाया जाता है जो एक चिकना अल्कोहल (शराब) होना है। यह जिगर में एकत्र होता है और फिर रक्तवाहिनी शिराओं में जख्म और कड़ापन उत्पन्न करता है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक ३१ मई ९२ रविवार को प्रातः १० बजे सभा कार्यालय सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के अतिरिक्त हरयाणाभर के प्रमुख आर्यनेता उपस्थित थे। इस अवसर पर निम्नलिखित निश्चय किये गये—

१. शताब्दी समारोह के लिए आर्थिक योगदान करने पर धन्यवाद

सभा के तत्त्वावधान में १५ से १७ मई को आयोजित प० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह को सफल करनेवाले उन दानी महानुभावों को धन्यवाद दिया है जिन्होंने सभा की अपील पर उदारतापूर्वक आर्थिक योगदान दिया है। इन्ही के कारण समारोह पर आर्यविद्वानों तथा नेताओं के प्रभावशाली व्याख्यान तथा भजनोपदेशकों के मनोहर संगीत जनता को सुनाने का अवसर मिला। समारोह में सम्मिलित होनेवाले नरनारियों के लिए आवास तथा भोजनादि की भी व्यवस्था सन्तोषजनक रही और आर्यसमाज के संगठन की छाप साधारण जनता पर पड़ी।

२. प० गुरुदत्त विद्यार्थी स्मारक निधि की स्थापना की जावेगी

महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्य मुनिवर प० गुरुदत्त विद्यार्थी ने अपने अल्प जीवनकाल में हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा में महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की थी जो आज बाजार में प्राप्तव्य नहीं हैं। अतः सभा ने उन द्वारा लिखित Wisedom of Rishis आदि पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद करवाकर प्रकाशित करने की योजना बनाई है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सभा ने ५१ हजार रुपये की एक निधि स्थापित करने का निश्चय किया है। सभा ने दानी महानुभावों से भी अपील करते हुए कहा है कि वे इस निधि में उदारतापूर्वक दान भेजकर यश के भागी बनें।

३. वेदप्रचार विभाग को उन्नत तथा प्रभावशाली बनाया जावेगा

सभा का मुख्य कार्य वेद का प्रचार तथा प्रसार करना है। अतः सभा ने निश्चय किया है कि सभा के वेदप्रचार विभाग के अधिष्ठाता पं० सुदर्शनदेव जी के निर्देशन में सभा के उपदेशकों द्वारा सारे हरयाणा प्रदेश में वेदप्रचार की व्यवस्था की जावेगी। सभा द्वारा गठित जिला वेदप्रचारमण्डलों से एक-एक उपदेशक तथा भजनमण्डलियों का प्रचारार्थ कार्यक्रम बनाया जायेगा। वेदों का स्वाध्याय करने के लिए संस्कृत-भाषा का ज्ञान आवश्यक है। अतः संस्कृत विषय में विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करनेवालों को छात्रवृत्तियां दी जावेगी। इस उद्देश्य के लिए आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत की ओर से २५ रुपये तथा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की ओर से २५०० रुपये मासिक अनुदान देने की घोषणा की गई।

४. शराबबन्दी अभियान को गतिशील बनाया जायेगा

पूर्व उपायुक्त श्री विजयकुमार जी के प्रस्ताव पर निश्चय किया गया है कि हरयाणा के जिन ग्रामों में अंग्रेजी तथा देशी शराब के ठेके हैं, वहां शराबबन्दी प्रचार तथा सम्मेलनों का आयोजन करके पंचायतों को आगामी वर्ष से शराबबन्दी करने की प्रेरणा की जावेगी और प्रस्ताव पारित करवाकर हरयाणा सरकार को भिजवाये जायेंगे। शराबबन्दी के प्रस्तावों का प्रारूप सर्वहितकारी में प्रकाशित किया गया है। सभा द्वारा प्रकाशित शराबबन्दी के दीवारों पर चिपकाने वाले पोस्टर तथा ट्रैक्ट मुफ्त वितरित किये जायेंगे। इस कार्यक्रम को सफल करने के लिये सभा के उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों को आवश्यक निर्देश दिये गये हैं। सभा के अधिकारी भी आर्यसमाजों का भ्रमण करके उनसे सम्पर्क स्थापित करेंगे। पूर्व सांसद श्री कपिलदेव शास्त्री ने गोहाना जिला सोनीपत में शराबबन्दी सम्मेलन की व्यवस्था करने का दायित्व सहर्ष स्वीकार किया है।

सभा की ओर से निम्नलिखित ग्रामों में शराब के ठेके सघर्ष करके बन्द करवाने हेतु वहां के नरनारियों को धन्यवाद दिया है—

१ ग्राम धर्मपुर जि० गुड़गांव, २. ग्राम कमोदा जि० कुरुक्षेत्र, ३. ग्राम पृथीपुर जि० यमुनानगर, ४. ग्राम करेवड़ी जि० सोनीपत, ५ ग्राम बादली जि. रोहतक, ६. ग्राम फतहपुर बलोच जि. फरीदाबाद, ७. ग्राम गढी छाजू जि० पानीपत, ८. धनाना जि० भिवानी, ९. ग्राम बामला जि० भिवानी, १०. ग्राम इमलोटा जि० भिवानी।

हरयाणा के पूर्वमन्त्री श्री हीरानन्द आर्य के पुरुषार्थ से एक शराबबन्दी शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें १०० से अधिक शराब छोड़नेवाले व्यक्तियों को प्रविष्ट करके उनकी शराब छुड़वाई जायेगी। इस प्रकार के रोगियों के लिए आवास, भोजन तथा औषधियों की व्यवस्था सभा की ओर से की जायेगी। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से अपील की गई है कि जो व्यक्ति शराब छोड़ने के इच्छुक हैं, उनके नाम तथा पते सभा कार्यालय रोहतक भेजने का कष्ट करें।

सभा की ओर से उच्चतम न्यायालय में एक याचिका प्रस्तुत की गई है, जिसमें हरयाणा सरकार की आबकारी नीति को चुनौती दी गई है। इस कार्य हेतु योग्यतम वकीलों की सेवायें प्राप्त की गई हैं।

—केदारसिंह आर्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

Dr. Roert Gross, England लिखते हैं—"The eggs white (अण्डे की सफेदी) अण्डे का सबसे अधिक खतरनाक भाग है। जिन पशुओं को अण्डे की सफेदी खिलाई गई, उनकी चमड़ी सूज गई और उन्हें लकवा मार गया। अण्डे की सफेदी में एवीडिन नामक तत्त्व होता है जो एग्जिमा का कारण बनता है।

Dr. E V.Mc. Collum (A Great Medical Authority) और डा० गोविन्दराज का कथन है कि अण्डों में केलशियम=चूने की मात्रा बहुत कम होती है तथा कार्बोहाइड्रेटस सर्वथा नहीं होते हैं। अतः बड़ी आतों में जाकर जठराग्नि को प्रदीप्त करने की बजाय वहां दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं।

अण्डों में Nitrogen, Phosphossies तेजाब और चर्बी की अधिक मात्रा होती है। अतः यह शरीर में तेजाबी द्रव्य उत्पन्न करते और मनुष्य को रोगी बना देते हैं।

ऐसे कई उदाहरण और बड़े-बड़े डाक्टरों के कथन दिये जा सकते हैं जिन्होने अपने-अपने तौर अण्डों को शरीर के लिये हानिकारक लिखा है। अमरीका और इंगलैंड के कई डाक्टरों ने तो अपनी तजातर्बो समर्थ के आधार पर यहां तक कहा है "कि अण्डा मनुष्य के लिए जहर है।"

अन्त में यही कहा जासकता है कि अण्डों के सेवन से शारीरिक मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक हर प्रकार की हानि होती है। अण्डे मनुष्य का भोजन नहीं है। जैसे मनुष्य अन्न, फल और कन्दमूल खाकर निर्वाह कर सकता है। वैसे केवल अण्डे खाकर ही जीवित नहीं रह सकता। तात्पर्य यह है कि यदि निर्जीव अण्डा खाने का स्वभाव बन गया तो फिर सजीव अण्डा भी खाने लग जायेंगे। अतः किसी प्रकार भी अण्डा नहीं खाना चाहिये।

गांव बरहाणा में शिविर एवं महोत्सव सम्पन्न

दिनांक २१-५-९२ से ३१-५-९२ तक आर्यसमाज मन्दिर बरहाणा में सदाचार एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें १०८ नवयुवकों ने भाग लिया। प्रबुद्ध एवं होनहार ५० बच्चों को यज्ञोपवीत दिये गये। समारोह की अध्यक्षता आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने की एवं मुख्य अतिथि श्री ओम्प्रकाश बेरी एम०एल०ए० ने शिविर के ३० होनहार नवयुवकों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये। नवयुवकों ने आसन, दण्ड बैठक एवं स्तूपों के प्रदर्शन किये।

स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बरहाणा आर्यसमाज के सिद्धांती पुस्तकालय को ११०० रु० की पुस्तके दान में देने की घोषणा की तथा समारोह के मुख्य अतिथि श्री ओम्प्रकाश बेरी ने २३,००० रु० आर्यसमाज बरहाणा को अनुदान दिलाने की घोषणा की। ब्र० नन्दकिशोर एवं ब्र० हरपाल जी ने बच्चों को प्रशिक्षण दिया। प० चिरजीलाल जी को भजनमण्डली का तीन दिन तक ओजस्वी प्रचार कार्यक्रम चला। लोगों में भारी उत्साह रहा। शिविर का संचालन प्रो० राजपाल ने किया।

—मन्त्री आर्यसमाज बरहाणा

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश आरम्भ

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा अरावली पर्वत की श्रृंखला में स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा जिला फरीदाबाद में कक्षा चौथी से नौवीं तक प्रवेश आरम्भ है। यहां पर सी० बी० एस० ई० का पाठ्यक्रम (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा मान्यता प्राप्त) पढ़ाया जाता है।

गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला तथा संग्रहालय आदि की व्यवस्था है। यहां छात्रों के रहन-सहन, आचार व्यवहार, स्वास्थ्य तथा चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है तथा धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास पर बल दिया जाता है। शिक्षा नि:शुल्क है। आठवी का परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत रहा।

अत अपने बालकों को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल में प्रवेश करवाकर उनका उज्ज्वल भविष्य बनावें। तुरन्त सम्पर्क करें।

आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद)
डाकघर नई दिल्ली-४४ फोन . ८-२७५३९८

आर्यसमाज शाहपुर जिला पानीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री देईचन्द, उपप्रधान-ईश्वरसिंह, मन्त्री-कर्णसिंह, उपमन्त्री—प. रतनसिंह, कोषाध्यक्ष—सतवीरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—मा. जयप्रकाश, प्रचारमन्त्री—सुरेशकुमार।

हरयाणा की पंचायतों से अपील

हरयाणा की पचायतों से अपील है कि वे हरयाणा से शराब जैसी भयकर बुराई को समाप्त करने के लिए ३० सितम्बर ९२ तक निम्नलिखित प्रारूप जैसा प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजें। सरकार के नियम के अनुसार जिनके प्रस्ताव ३१ अक्तूबर ९२ तक पहुंच जावेंगे, वहां शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं।

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने के प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में
माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ

हमारे ग्राम ············ जिला ············ पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक ·········· में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र मे चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक ············

प्रतिलिपि सेवा में

१. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
२. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि० ·········
३. जिलाधीश ·········
४. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

दिनांक ········ सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं तथापि वहां गैर-कानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें

सेवा में
माननीय मुख्यमन्त्री महोदय
हरयाणा चण्डीगढ

हमारे ग्राम ·········· जिला ·········· में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेण्ट गैर-कानूनी ढग से खुल्लम-खुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीनेवाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बेकार हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अत हमारे गांव की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाये और गैरकानूनी ढग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लंघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर नाजायज शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

प्रतिलिपि सेवा में

१ आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ
२. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला········
३. जिलाधीश·········
४. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

दिनांक ········ ह० सरपच तथा पच ग्राम पचायत

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज धनोन्दा महेन्द्रगढ	८ से ९ जून
२	„ सांघी जि० रोहतक	८ से १० „
३	„ पटौदी जि० गुडगांव	१२ से १४ „
४	„ रोहणा जि० सोनीपत	··-०४ „
५	„ जलियावास जि० रेवाड़ी	२०-२१ „
६	संस्कृत प्रशिक्षण शिविर आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़	१९ से २८ „
७	सदाचार शिक्षण शिविर करेवड़ी जि० सोनीपत	१५ से २१ „
८	सदाचार शिक्षण शिविर जुवां जि० सोनीपत	२२ से २८ „

—डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वेदप्रचाराधिष्ठाता

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुडी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट नं० १, एन०आई०टी०, फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुड़गांव।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अथवा आर्यसमाज के नाम पर स्थापित व्यक्तिगत मठ, ट्रस्ट अथवा आश्रमों का प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा सार्वदेशिक सभा के साथ

सम्बद्धीकरण आवश्यक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक १५ मार्च १९९२ में डा. शिवकुमार शास्त्री ने एक प्रस्ताव सदन में रखते हुए मांग की थी कि आर्यसमाज अथवा महर्षि दयानन्द के नाम पर पनप रहे व्यक्तिगत मठों, ट्रस्टों, आश्रमों की गति को रोकने के लिए यह आवश्यक है, उन पर सार्वदेशिक सभा अथवा प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के नियन्त्रण की व्यवस्था की जावे। क्योंकि इन संस्थाओं के लिए इनके संस्थापकों को महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रचार-कार्य के नाम पर ही दानी तथा धार्मिक महानुभावों द्वारा धन मिलता है। इसलिए सार्वदेशिक सभा का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह आर्यसमाज अथवा दयानन्द के नाम पर चल रही व्यक्तिगत संस्थाओं की सम्पत्ति को सदैव आर्यसमाज के लिए सुरक्षित रखने की व्यवस्था करे।

इस प्रस्ताव पर सदन में गम्भीरता से विचार हुआ। अन्त में सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ—

"आर्यसमाज अथवा महर्षि दयानन्द के नाम पर जो व्यक्तिगत ट्रस्ट, मठ अथवा आश्रम इस समय देश के विभिन्न भागों में चल रहे हैं, वह सब सम्बद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध होने चाहिये, ताकि उस संस्था के अवसान के समय उसकी सम्पत्ति का हस्तांतरण प्रतिनिधि सभा अथवा सार्वदेशिक सभा को हो सके।

यह भी निश्चय हुआ कि सभी प्रांतीय सभाओं के प्रधानों को भी लिखा जावे कि वे इस प्रकार की संस्थाओं, मठों व आश्रमों के अधिकारियों से सम्पर्क करें और इस निर्णय से अवगत करावें। यदि कोई निर्णय को न माने तो आर्यजनता तथा धनी-मानी लोगों से अपील की जावे कि इन संस्थाओं को दान न दें।"

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२

आर्यसमाज सतनाली बास जि० महेन्द्रगढ़ का चुनाव

सचालक—सर्वश्री—मा० शिवराम, प्रधान—मातूराम, मन्त्री—सतीशकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—सुधीरकुमार, कोषाध्यक्ष—शेरसिंह

धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए, हानिकारक है।

हरयाणावासी १६ करोड़ लीटर शराब पी गए

(नभाटा समाचार)

बहादुरगढ, २७ मई। हरयाणा में पिछले वर्ष १७ करोड़ लीटर शराब की बिक्री हुई है जबकि पहले इसकी खपत १३ लाख लीटर थी। उस समय पूरे हरयाणा में शराब बनाने का एक कारखाना था, अब २५ कारखानों में शराब बनती है। ये आंकड़े भूतपूर्व विधायक स्वामी आदित्यवेष ने नभाटा को एक भेंट में दिये। उन्होंने कहा कि हरयाणा ने शराब बनाने के क्षेत्र में पूरे देश के अन्दर प्रथम स्थान प्राप्त कर रखा है और अगर हरयाणा की बागडोर ऐसे नेताओं के हाथ में ही रही तो हरयाणा से हरियाणवी नसल ही समाप्त हो जायेगी।

उन्होंने कहा कि यह तो ठीक है कि शराब की बिक्री पर सरकार ने २०० करोड़ रुपये की वार्षिक आय अर्जित करली है, लेकिन शराब से प्रदेश के लोगों का जो चरित्रहनन हो रहा है, उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं है। उन्होंने बताया कि शराब के कारण अपराध बढे हैं और नई-नई बीमारियों ने जन्म लिया है। सरकार को अपराधों और बीमारियों की रोकथाम और न्यायालय पर १२०० करोड रुपये खर्च करने पड रहे हैं जो २०० करोड रुपये की राशि से कहीं अधिक है।

उन्होंने कहा कि इस समय पूरे प्रदेश में पीने के पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है और बड़ी मुश्किल से एक घण्टा प्रतिदिन पानी की सप्लाई होती है जबकि शराब की सप्लाई २४ घण्टे रहती है। प्रत्येक गाव में शराब के ठेके खुले हुए हैं। हालत यह है कि गोवा की तरह यहां भी खोखे और परचून की दुकानों पर आलू की तरह शराब की बिक्री हो रही है। शराब के कारण प्रदेश बर्बादी के कगार पर पहुंच गया है और हरयाणावासियों ने हरयाणवी होने का गौरव छिनता जारहा है। दूध-दही के इस प्रदेश में अब मेहमानवाजी दारू की दावत के रूप में होने लगी है। उन्होंने कहा कि प्रदेश का शासक वर्ग शराब की खुली छूट देकर लोगों के दिलोदिमाग को कमजोर करके उन्हें अपने हाथों की कठपुतली बनाकर रखे हुए हैं।

साभार : नवभारत टाइम्स

धूम्रपान करनेवालों के लिए

नयी दिल्ली, २९ मई (भाषा)। प्रतिदिन पचास करोड सिगरेटे फूककर वातावरण को विषाक्त बनानेवाले लोग हाल में उजागर हुए इस तथ्य से कदाचित् अनभिज्ञ हैं कि सिगरेट पीने से उनकी अपनी यौन क्षमता प्रभावित होती है और वे नपुसक तक बन सकते हैं।

हार्ट केयर फाउडेशन आफ इण्डिया से सम्बद्ध स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने बोस्टन मेडिकल स्कूल में किये गये अनुसंधान के हवाले से बताया कि धूम्रपान से यौन अगों की रक्त नलिकायें सिकुड जाने से रक्तप्रवाह मन्द पड़ जाता है और यौन अंग सामान्य नहीं रह जाते।

हार्ट केयर फाउडेशन के उपाध्यक्ष के० के० अग्रवाल ने बताया कि अध्ययन से पता चला है कि सामान्य धूम्रपान करनेवालों से लगभग दुगुनी सिगरेट पीनेवालो में नपुसकता अधिक दिखाई पड़ती है।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

आर्यसमाज गढ़ी सिकन्दरपुर जिला पानीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रमेशकुमार शर्मा, उपप्रधान—जयपाल राठी, मन्त्री—सुरेशकुमार शर्मा, उपमन्त्री—महावीर यादव, कोषाध्यक्ष—राममेहर, पुस्तकाध्यक्ष—धरमल यादव।

बादली में शराब का ठेका बन्द

ग्राम बादली जि० रोहतक की पंचायत ने हरयाणा सरकार को प्रस्ताव करके ग्राम से शराब का ठेका बन्द करने की मांग की थी, परन्तु आबकारी विभाग ने प्रस्ताव की अवहेलना करके अंग्रेजी व देशी दोनों प्रकार के ठेके खोल दिये थे। ग्राम पंचायत ने इसे पंजाब हरयाणा उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। उच्च न्यायालय ने ग्राम में दोनों प्रकार के शराब के ठेके बन्द करने का निर्णय २८-४-९२ को दे दिया। ग्रामीण जनता ने ठेकों की नीलामी के अवसर पर भी विरोध प्रदर्शन किया था। इस प्रकार आर्यसमाज तथा ग्राम पंचायत की विजय हुई।

—धीरपाल आर्य बादली, जि० रोहतक

ग्राम कलोठकलां (झुंझनू) में शराबबन्दी का सराहनीय कार्य

कलोठकलां (राजस्थान) का गांव हरयाणा की सीमा पर स्थित है। वहां से अवैध एवं कच्ची शराब खूब बिकती थी। हरयाणा में भी सप्लाई होती थी। उसी गांव के कालेज में पढनेवाले छात्रों के आग्रह पर आर्यसमाज लोहारू के प्रधान श्री रामअवतार आर्य अपने साथियों सहित पहुंचे। लोगों को शराबबन्दी बारे समझाया तथा अगले दिन टीबों में अवैध तरीके से शराब डालनेवाली जीप को पकड़ा, जिसमें ३६० बोतल थी। उससे लिखित में लिया कि इस बार मुझे बक्स दो, भविष्य मे कभी इस गांव में नही आऊंगा। जिला झुंझनू में डी० एस० पी०, एस० पी०, डी० सी० साहब से भी मिले। गांव में नवयुवक मण्डल का गठन किया। मार्च से आज तक गांव में जीप नहीं आई है, न कोई शराब निकालता है। गांव में पूर्ण शराबबन्दी है। हरयाणा के नवयुवकों ने गांव के सहयोग से बहुत ही सराहनीय कार्य किया है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

अमर रहे आर्यसमाज हमारा

करे सत्य प्रचार इसीलिए सबको लगता प्यारा।
अमर रहे आर्यसमाज····॥

दीनदु:खी और असहायों का है यही एक सहारा।
अमर रहे आर्यसमाज····॥

वेद-विरोधी सम्प्रदायों को देता जवाब करारा।
अमर रहे आर्यसमाज······॥

सभी बुराई छुडवाता और करे समाज-सुधार।
अमर रहे आर्यसमाज······॥

ब्रह्मचर्य का पालन कराता जिससे बढ़े शक्ति भण्डारा।
अमर रहे आर्यसमाज·····॥

सच्चे ईश्वर की भक्ति सिखाता जिससे हो जीवन निस्तारा।
अमर रहे आर्यसमाज ···॥

सत्य सनातन वेदधर्म का करता यह प्रचार।
अमर रहे आर्यसमाज ··॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का इसका सुन्दर नारा।
अमर रहे आर्यसमाज·····॥

प्रभाकर सब बनो आर्य हो कल्याण तुम्हारा।
अमर रहे आर्यसमाज ··॥

रचयिता—मातुराम शर्मा, सिवाड़ी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२० ७३ रजि० नं० P RTK-८६

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार

वर्ष १६ अंक २८ १८ जून १९८९ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह के अवसर पर
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मूल आदर्श

लेखक—सुभाष विद्यालंकार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

गतांक से आगे—

भारत की गुरुकुल शिक्षा पद्धति संसार की न केवल सबसे पुरानी और सफल पद्धति है, अपितु गुरुकुल शिक्षा पद्धति वर्तमान युग की आवश्यकताएं पूर्ण करने में भी समर्थ है। आज नई पीढ़ी को नगरों के दूषित वातावरण में रखकर पढ़ाया जा रहा है। नगरों का वातावरण केवल जल और वायु की दृष्टि से ही विषाक्त नहीं हो गया है बल्कि पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण के दुष्परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी के चरित्र और मानसिक स्वास्थ्य का भी निरन्तर ह्रास होता जा रहा है।

आज विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में छात्रों की भीड़ है, इसके कारण गुरु और शिष्य के बीच सीधा सम्पर्क नहीं हो पाता। छात्रों को चाहे बड़े हों या छोटे शिक्षास्थलों तक जाने आने के लिए सफर में प्रतिदिन कई घण्टे नष्ट करने पड़ते हैं। हर रोज लम्बा सफर तय करने के कारण हारे-थके छात्र विद्यालय पहुंचकर पढाई में मन नहीं लगा पाते और घर लौटने के लिए फिर लम्बी यात्रा करने के कारण वे घर आकर भी पढाई नहीं कर पाते। इन सब कारणों से शिक्षा का स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है, विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता बढती जा रही है और पाश्चात्य सभ्यता के अभिशापस्वरूप नवयुवक छात्रों में नशीले पदार्थ इस्तेमाल करने की लत पड़ती जा रही है। शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान असन्तोषजनक स्थिति देश को स्वाधीनता के बाद उत्पन्न हुई है। भारत के आजाद होने से पहले देश की शिक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में यही कहा जाता था कि यह व्यवस्था अंग्रेजों ने क्लर्क बनाने के लिए और देश का शासन चलाने के लिए अपनाई थी। देश की उन्नति से इस शिक्षा नीति का दूर का भी नाता नहीं है। इस पाश्चात्य शिक्षा नीति की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को क्रियान्वित करने के लिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार करने का व्रत लिया था। अपनी इस भीष्म प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए उन्होंने किसी संस्था या किसी धनाढ्य व्यक्ति का सहारा न लेकर अपने ही बलबूते पर आज से ९० वर्ष पूर्व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।

उन्होंने कहा था—

"उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां, धियो विप्रो अजायत"

के अनुसार शहरों के दूषित वातावरण से दूर गंगा नदी के तट पर हिमालय के सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में गुरुकुल की स्थापना की। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के प्रति अपनी दृढ़ आस्था प्रकट करने के लिए उन्होंने इस प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रति लोगों आकृष्ट करने के लिए उन्होंने अपने दोनों पुत्रों को गुरुकुल में प्रविष्ट किया। गुरुकुल शिक्षा पद्धति का मुख्य उद्देश्य गुरु और शिष्य के बीच निरन्तर घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करना ताकि गुरु अपने ज्ञान और चरित्र बल से शिष्य का बौद्धिक, नैतिक, आत्मिक और चारित्रिक विकास कर सके।

गुरुकुल में निवास करने वाले गुरु और शिष्य सब गुरुकुल को माता के रूप में अपने हृदयों में प्रतिष्ठित करते हैं, उसे एक देवी के रूप में उपास्य समझते हैं तो इस भावना के साथ एक 'अधिष्ठातृ देवता' उपस्थित हो जाता है। गुरुकुल की एक वैयक्तिक आत्मा की उपस्थिति हो जाती है जो हमारा पथ प्रदर्शन करती है, हमें संकटों से बचाती है और ऊंचा उठाती है। कुल की भावना गुरुकुल की एक मौलिक विशेषता है। यह गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का बहुत आवश्यक अंग है।

अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य में सूत्र जैसे ब्रह्मचारी का वर्णन किया गया है वह वस्तुतः बहुत उदात्त व्यक्तित्व से सम्पन्न है। इसलिए अपने को ब्रह्मचारी मानना और कहना हमें ऊंचा उठाता है। गुरुकुल के विशाल परिवार में गुरुकुल के आचार्य और शिष्य के बीच पिता पुत्र का संबंध होता है जबकि साधारण विद्यालयों में छात्र और अध्यापक के बीच सतही सम्बन्ध होता है। गुरुकुल का आचार्य अपने ज्ञान, आचरण और चरित्र से ब्रह्मचारी के जीवन का सर्वांगीण विकास करता है किन्तु विद्यालय का अध्यापक अपने हुक्म द्वारा विद्यार्थी से अनुशासन का पालन कराने की अपेक्षा करता है चाहे अध्यापक स्वयं असंयमी क्यों न हो।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को कुछ निश्चित धारणाएं और मान्यताएं हैं। हमारा प्रयास यही रहा है कि स्वामी दयानन्द द्वारा निर्धारित शिक्षा के सिद्धांतों और आदर्शों को ही गुरुकुल में मूर्तिमान रूप दिया जाये। अतः गुरुकुल कांगड़ी में निम्नलिखित नियमों का दृढता से पालन किया जाता था।

गुरु शिष्य सम्बन्ध पिता पुत्र के पावन आदर्श से अनुप्राणित होने चाहिएं। उसी का परिणाम था कि वर्षों तक अपने जन्मदाता माता पिताओं से पृथक् निर्जन वनों तथा हिंस्र जन्तुओं से व्याप्त जंगलों में रह कर भी गुरुकुल के छात्र अपने परिजनों का कभी स्मरण नहीं करते थे। गुरुकुल के आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का पितृतुल्य स्नेह उन्हें सदा मिलता रहता था। यदि कोई छात्र रोगग्रस्त हो जाता तो स्वयं आचार्य जी मातृवत् वात्सल्य से उसकी सेवा और देखभाल करते थे।

गुरुकुल का शिक्षाक्रम एक आदर्श व्यवस्था है जिसमें छात्रों के बौद्धिक, शारीरिक मानसिक तथा आत्मिक विकास पर सर्वोपरि ध्यान दिया जाता है। नियमित सन्ध्योपासना तथा आध्यात्मिक प्रवचनों के द्वारा उनमें आस्तिकता तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रति श्रद्धा के भावों का बीजारोपण किया जाता है। वेद वेदांग, उपनिषद, दर्शन, रामायण, महाभारत, आदि भारतीय प्राचीन शास्त्रों का विधिवत् प्रशिक्षण देकर उन्हें आर्षविद्याओं में पारगत बनाया जाता है। किन्तु केवल प्राच्य विद्याएं पढाना ही गुरुकुल का लक्ष्य नहीं है। भौतिकी, रसायन, गणित,

(शेष पृष्ठ पेज ६ पर)

महामति चाणक्य की नीति और उनका अर्थशास्त्र

—डा० भवानीलाल भारतीय ८/४२३, नन्दनवन जोधपुर

गतांक से आगे—

इसी बुद्धि का जयगान करते हुए अर्थशास्त्र के मंगल श्लोक का भाव है— 'सर्वार्थ-साधन में सक्षम उस अकेली बुद्धि की ही जय हो, जिसके बल से ब्राह्मण चाणक्य ने क्या-क्या नहीं कर दिखाया।" निश्चय ही चाणक्य का बुद्धि चमत्कार ही था जिसने भारत के मानचित्र पर आर्य गौरव का विस्तार किया।

इसी परिप्रेक्ष्य में हमे चाणक्य की प्रवृत्तियों और उपलब्धियों की आलोचना करनी चाहिए। जिस समय यवन देश के अप्रतिरथ विजेता सिकन्दर का भारत पर आक्रमण हुआ उस समय आचार्य चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में उपाध्याय के पद पर अभिषिक्त थे। राजकुमार चन्द्रगुप्त उनका अन्तेवासी (शिष्य) था। इतिहासकारों की नवीन खोजों से चन्द्रगुप्त का अभिजात कुलोत्पन्न होना सिद्ध हो चुका है। वह मुरा नामक शूद्रा दासी से उत्पन्न नन्द का जारज पुत्र था इस प्रकार की भ्रममूलक धारणाओं को श्री जयशंकर प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटक चन्द्रगुप्त की शोध-पूर्ण भूमिका में पूर्णतया निरस्त कर दिया है। इसी राजकुमार चन्द्रगुप्त को स्व० कौशल से पाटलिपुत्र के सिंहासन पर आरूढ कर चाणक्य ने अपना चिरकालिक स्वप्न पूर्ण किया।

चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में एक सशक्त और एकीकृत राष्ट्र की कल्पना को साकार करने के पश्चात् चाणक्य मगध के अमात्य पद पर रहने के लिये तनिक भी इच्छुक नहीं थे। उसने अब अपने राजनैतिक चातुर्य से मन्त्री राक्षस को मगध का अमात्य पद स्वीकार करने के लिये मना लिया और स्वयं तृतीयाश्रम की मर्यादा का पालन करने के लिये अरण्यासी बन गये। इतना उच्च त्याग और राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा से निवृत्ति भारत के निरीह ब्राह्मणों में ही मिलती है। विशाखदत्त ने स्वरचित मुद्राराक्षस में इस प्रसंग में चाणक्य के मुख से कहलवाया है— अब मैं मौर्य को सम्राट् बना कर तुझे (राक्षस को) मन्त्रित्व का भार सौंप कर अपनी ब्राह्मी तपस्या के लिये तपोवन जा रहा हूं। मेरा आशीर्वाद है कि सम्राट् चन्द्रगुप्त बृहस्पति के समान तुम जैसे कुशल मन्त्री के रहते इन्द्र के तुल्य पृथ्वी का पालन करे।"

चाणक्य का यह सत्ता-त्याग अपूर्व था। आज के सत्तालोलुप शासकों के सन्दर्भ में इसे देखें जब कि स्वार्थान्ध राजनीतिज्ञ मृत्युपर्यन्त अपने अधिकार, पद और सत्ता से चिपके रहने में ही जीवन की सफलता समझते है। इसके विपरीत महान् आर्यावर्त को एकता के सूत्र में पिरोने वाले आर्य चाणक्य ने न केवल लक्ष्यपूर्ति के तुरन्त पश्चात् अपने अधिकार का ही त्याग कर दिया अपितु सर्वसंग परित्यागी परिव्राजक का जीवन अंगीकार कर पुरातन आदर्श की स्थापना भी की। इसी तपस्वी की निभृत कुटिया का वर्णन विशाखदत्त ने इस प्रकार किया है—"राजाधिराज चन्द्रगुप्त के मन्त्री चाणक्य के घर की विभूति में स्वर्ण रत्न और विलास की वस्तुये नहीं हैं। वहां एक ओर तो यज्ञ की समिधाओं को तोडने के लिये पत्थर का टुकडा पड़ा है, दूसरी ओर आचार्य से शिक्षा ग्रहण करने के लिये आने वाले ब्रह्मचारियों से लाई गई कुशाये पड़ी हैं। इस जीर्णशीर्ण भीतों वाली झोंपड़ी के छप्पर पर यज्ञाग्नि प्रदीप्त करने हेतु एकत्रित समिधायें सूख रही हैं।"

अनासक्त तथा गीता के शब्दों में जल में कमलपत्र की भांति निर्लेप रहने वाले ब्राह्मणों का यही जीवनादर्श है जिसे चाणक्य ने साकार किया था। ऐसे ही त्याग, तप और स्थितप्रज्ञता के धनी महापुरुष इतिहास के पृष्ठों पर अपनी पद-छाप छोड़ जाते हैं। उनके लिये राष्ट्र की अर्चना और स्वराज्य स्थापना ही जीवन का एक मात्र मंत्र होता है। भारतीय इतिहास के ऐसे ही कतिपय महापुरुषों के प्रति अपने श्रद्धाप्रसून अर्पित करते हुये गुजराती के प्रख्यात लेखक कन्हैयालाल, माणेकलाल मुन्शी ने लिखा था—"इतिहास की रंगभूमि पर ऐसे व्यक्ति जब आते है तब दूसरे तत्व पुरुषार्थ विहीन हो जाते है। समय शक्तियों का भान भूल कर दर्शकों का मन उसके आस-पास लिपट जाता है। नायक के मोह में नाटक का अर्थ विस्मरण हो जाता है। भूतकाल की रंगभूमि पर ऐसे अनेक व्यक्ति हुए हैं। परशुराम, मधुसूदन भगवान् कृष्ण और समस्त जगत् राजनीतिज्ञशिरोमणि भगवान् विष्णुगुप्त चाणक्य।

क्या थी तड़फ प्रचार की

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

श्री सरदारी लाल वर्मा जी का जीवन कितना सुन्दर था।
अनवरत कार्यरत लग्नशील का औदार्य हृदय मन्दिर था॥
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में कितने महा सम्मेलन कराये।
दयानन्द के दीवाने ने चहुदिश को आर्य नगर बसाये॥

शोभा अजब बहार की।
क्या थी तड़फ प्रचार की॥

भोला नाथ नगर शाहदरा आर्य महा सम्मेलन मनाया।
घोड़े, हाथी प्रचार वाहनों का सारा प्रबन्ध कराया॥
निकला जलूस यह धूम-धाम उत्साह उमंग नारी नर में।
ढोलक, चिमटा, संगीत कला पहुंचे भोलानाथ नगर में॥

उस भीड़ बेशुमार की।
क्या थी तड़फ प्रचार की॥

दक्षिण दिल्ली महा सम्मेलन किदवई नगर चौराहे पर।
सुन्दर स्थान शोभायमान था जन-जन के मन चाहे पर॥
निकला जलूस घोड़े-हाथी वाहन चल रहे कतारों से।
गूंज उठी दक्षिण दिल्ली ऋषि के जय-जय कारों से॥

ये खूबियां अधिकार की।
क्या थी तड़फ प्रचार की॥

स्वर्गीय वर्मा जी वैदिक धर्मी दुनियां में यश कमा गये।
अपनाकर वैदिक धर्म पूर्ण जन-जन के मन में समा गये॥
तेरह मई बानवे को तन त्याग परलोक सिधार गये।
इस अगम संसार सागर से जीवन नैया कर पार गये॥

रह गई निशानी प्यार की।
क्या थी तड़फ प्रचार की॥

मद्य-निषेध और हरयाणा सरकार

डॉ० रमेश मेहता वरिष्ठ प्राध्यापक जाकिर हुसैन कालिज नई दिल्ली

'हरयाणा जन-अधिकार समिति' ने अपने संयोजक श्री विजय कुमार, आई. ए. एस. (सेवानिवृत्त) के माध्यम से पजाब एवं हरयाणा उच्च न्यायालय, चण्डीगढ़ द्वारा नागरिक रिट याचिका के सन्दर्भ में २४ मार्च, १९९२ को दिए गए निर्णय के विरुद्ध अपील हेतु सर्वोच्च न्यायालय मे विशेष अनुमति याचिका दायर की है। माननीय उच्च न्यायालय ने उपर्युक्त रिट याचिका को केवल एक वाक्य के आदेश से निरस्त करते हुए कहा "हस्तक्षेप करने का कोई आधार नही।"

उपर्युक्त रिट याचिका 'जनहित के वाद' के रूप मे भारत के संविधान के अनुच्छेद-२२६ के अधीन दायर की गई। इस याचिका मे माननीय सर्वोच्च न्यायालय से प्रार्थना की गई है कि हरयाणा सरकार को आबकारी नीति-१९९२-९३ के विवादास्पद उपखण्डों को लागू करने से रोकने अथवा उसे वापस ले लेने के लिए समुचित रिट, आदेश या निर्देश जारी करे क्योकि यह भारत के सविधान के अनुच्छेद-४७ और १४ के अभिप्राय एवं भावना के सर्वथा विरुद्ध है।

वस्तुत. इस विवाद को जन्म दिया हरयाणा सरकार के एक विज्ञापन ने २० जो फरवरी, १९९२ को हरयाणा के मुख्यमन्त्री ने "हरयाणा सरकार की आबकारी नीति-१९९२-९३" शीर्षक से बड़े आकार में चण्डीगढ से प्रकाशित होने वाले सभी समाचार-पत्रों में घोषणा निकलवाई। अगले दिन अर्थात् २१ फरवरी, १९९२ को इस विज्ञापन का सार 'दैनिक ट्रिब्यून' मे प्रकाशित हुआ। यहा यह बात ध्यातव्य है कि याचिकादाता को प्रतिवादी ने विवादास्पद नीति की एक प्रति देने से यह कहकर आश्चर्यजनक रूप से इनकार कर दिया कि यह एक बडा ही गुप्त दस्तावेज है ! अस्तु।

प्रस्तुत याचिका जन-महत्त्व के कानून से सम्बन्धित निम्नलिखित तात्त्विक प्रश्नों को सामने लाती है—

१. क्या बिक्री की प्रमात्रा के आधार पर राजस्व-प्राप्ति के बटवारे के घृणित प्रलोभन के माध्यम से स्थानीय निकायों के साथ सहयोग करना संविधान के अनुच्छेद १४ और २१ का उल्लघन नहीं करते हैं ?

३ क्या वार्षिक आधार पर उच्चतर लक्ष्यों का निर्धारण तथा इसके साथ ही ऐसे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समूचे सरकारी तन्त्र को सम्मिलित करना मद्यनिषेध को प्रोत्साहन देने मे सहायक या प्रेरक है—जैसाकि सविधानिक बाध्यता है ?

४. क्या मुख्य बिक्री-केन्द्र द्वारा उप-बिक्री-केन्द्रो की संख्या मे वृद्धि करके इसे सरलतापूर्वक उपलब्ध कराना 'उपभोग को प्रोत्साहन न देने' के बराबर है—जिसे कि संविधानिक आदेश द्वारा निषिद्ध ठहराया गया है ?

५ क्या ग्राम-समुदाय की प्रमुख प्रवक्ता 'पचायतों' के प्रस्तावो की किसी न किसी बहाने वह भी बिलकुल धूर्ततापूर्वक अस्वीकृतिया "पंजाब ग्राम पचायत अधिनियम की धारा-२६ में अन्तर्हित वैधानिक उद्देश्य के विरुद्ध नही है ?

६ क्या प्रतिवादी का कृत्य दुर्भावना से उद्भूत होने के कारण माननीय न्यायालय के द्वारा निषेधाज्ञा की मांग नही करता ?

७. संविधान के अनुच्छेद-३७ के अधिकार से, नीति-निर्देशक सिद्धान्त देश के संचालन-कार्य में आधारभूत सिद्धान्त हैं। हालाकि ये कानूनी रूप से कठोरतापूर्वक लागू नही किये जा सकते। क्या सविधान के अनुच्छेद-४७ के प्रावधानों को मूलभूत प्रकृति का होने के कारण प्रवर्तित किया जा सकता है ?

८. क्या कानून बनाते समय नीति-निर्देशक सिद्धान्तो का क्रियान्वयन करने के लिए अनुच्छेद-३७ राज्य पर कर्त्तव्य-भार डालता है ? उच्च न्यायालय का निर्णय अपनी जगह ठीक था कि ऐसे मामले में हस्तक्षेप करने का कोई आधार नही है, जबकि वास्तव में, याचिका संविधान के अनुच्छेद ४७ के प्रावधानों के प्रवर्त्तन के लिए दायर की गई थी। जैसाकि प्रस्तुत मामले में, हरयाणा सरकार की विवादास्पद नीति सविधान के अनुच्छेद-४७ के अभिप्राय और भावना के सीधे विरोध में है। चूंकि इस कथित नीति के अन्तर्गत मद्य की बिक्री बढाने के लिए प्रोत्साहन की व्यवस्था की गई है।

९ क्या उच्च न्यायालय "मिनर्वामिल" नामक मामले में निर्धारित किये गए कानून के महत्त्व को समझाने मे विफल रहा है, जिसमे इसी माननीय न्यायालय ने निर्णय दिया था कि—

१) नीति-निर्देशक सिद्धान्त न्यायालय के विचार-क्षेत्र से पृथक् नही है।

२) चूंकि नीति-निर्देशक सिद्धान्त किन्ही ऐसे अधिकारों को उत्पन्न नही करते, जो न्यायालय में प्रवर्तनीय हो, केवल इसलिए इसका यह तात्पर्य नही लेना चाहिए कि वे राज्य पर किसी प्रकार की बाध्यता भी उत्पन्न नही करते,

३) अनुच्छेद ३७ मे कानून बनाते समय इन सिद्धान्तो को लागू करने के लिए राज्य को एक सकारात्मक आदेश निहित हैं।

नि सन्देह, देश में मद्यनिषेध सम्बन्धी कानूनो का इतिहास बहुत ही रोचक है। प्राय सभी राज्यों ने स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मादक द्रव्यों एवं औषधियों के सेवन को निषिद्ध करने वाले विधानों को पारित किया हुआ है, फिर भी, मद्यपान की बुराई दूर नही हुई। इसके विपरीत, यह निरन्तर बढोतरी पर हो है। यहां तक कि यह एक प्रमुख राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है। किन्तु विधानसभाए तथा ससद दोनों छद्मपूर्ण तर्क का आधार लेकर इस विषय पर सर्वथा मौन है। सामान्यत उनके तर्क कुछ इस प्रकार के होते हैं

—कि राजस्व विभाग को राजस्व की हानि झेलनी पडेगी.

—कि लोग अवैध शराब की शरण मे चले जाएगे आदि।

विचार करने पर यह सम्भावना निराधार सिद्ध होती है। उदाहरण के लिए, गुजरात एक ऐसा राज्य है, जहा पूर्ण मद्यनिषेध लागू है। यह राज्य बताता है कि मद्यनिषेध लागू किये जाने के बाद बिक्री कर से प्राप्त राजस्व मे कई गुना वृद्धि हुई है। इससे एक ओर तो राजस्व की हानि की क्षतिपूर्ति हुई है। दूसरी ओर स्पष्टत. उत्पादकता भी बढी है। क्या यह अकेला उदाहरण उपर्युक्त छद्मपूर्ण तर्कों को निरस्त करने के लिए पर्याप्त नही है ?

गुजरात ने यह सिद्ध कर दिया है कि मद्यनिषेध के कारण राजस्व की हानि का बहाना केवल एक मनगढन्त बात है। गुजरात के भूतपूर्व राज्यपाल श्री के के. विश्वनाथन ने स्पष्टत घोषित किया। वास्तव में, मद्यनिषेध लागू करने के बाद गुजरात आर्थिक रूप से कही अधिक सक्षम बन चुका है।"

मद्यपान बनाम मद्यनिषेध के सन्दर्भ मे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के विचारों को याचिका में बडी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। उनके अनुसार—

"तुम ऐसे छद्मपूर्ण तर्कों द्वारा छले न जाओ कि भारत को बाध्यता द्वारा मर्यादित बनाया ही नही जा सकता और कि मद्यपान करना चाहते हैं, उन्हे सुविधाएं देनी ही चाहिए।——हम चोरों को चोरी करने की प्रवृति में संलिप्त होने के लिए सुविधाएं नहीं देते। मैं मानता हूं कि मद्यपान चोरी करने और शायद वेश्या-वृत्ति से भी कही अधिक निन्द्य है। क्या यह प्राय: दोनों का जनक नही है ?"

८ जून १९२१ को 'यग इण्डिया' मे गांधी जी ने कहा— "मद्यपान एक बुराई की अपेक्षा एक बीमारी है।"

उन्होने श्रमिकों की मद्यपान की प्रवृत्ति के मूल कारण की ओर संकेत करते हुए कहा (१२ जनवरी १९२८) —

"मैं जानता हू कि यदि मदिरा श्रमिकों की आसान पहुंच के भीतर न हो तो, वे कभी उसे छुएगे भी नही।"

(क्रमश.)

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह
दान दाताओं की सूची

गतांक से आगे —

	रुपये
१. श्री प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान १४ एम साकेत नई दिल्ली १७	२१००
२ प्रबन्ध समिति आर०डी० कन्या उच्चविद्यालय करनाल	२१००
३ श्री प्रदीपकुमार फरीदाबाद	१००
४. ,, मल्होत्रा जे० ई० बिजली बोर्ड हरयाणा फरीदाबाद	१००
५. ,, एम एल मिगलानी जे० ई० ,, ,,	१००
६ ,, आर. एन लाम्बा जे० ई० ,, ,,	१००
७ ,, बी एल जैन ,, ,	१००
८. ,, मन्त्री आर्य समाज बुवाना लाखू जि पानीपत	१०१
९ ,, च० दयासिंह सरपंच खलीला ,,	१००
१० ,, आर्यसमाज रोहणा जि. रोहतक	३२५
११. ,, आर्यसमाज बरोदा जि. सोनीपत	३००
१२. ,, चौ० जोगेन्द्रपाल सु० चौ० धर्मसिंह राठी जि. पानीपत	१००
१३. ,, चन्दगीराम यादव ग्राम मुरावड़ा, जि. रेवाड़ी	३००
१४. ,, चिरजोलाल आर्य भजनोपदेशक ग्रा. खलीला जि. पानीपत	१००
१५. ,, बलवीरसिंह आर्य सरपंच ग्राम दातौली जि. भिवानी	१०१
१६. ,, स्वरूपसिंह आर्य ,, ,,	१०१
१७. ,, मा० इन्दरसिंह आर्य ,, ,,	१०१
१८ ,, गुलजारीलाल आर्य ,, ,,	१०१
१९. ,, चेतराम आर्य ,, ,,	१०१
२० ,, शेरसिंह आर्य ग्राम नीमड़ीवाली ,,	५११
२१ ,, महावीरप्रसाद प्रभाकर ग्राम बवानीखेड़ा जि. हिसार	२०१
२२. ,, जगदीश राम आर्य दिल्ली	१०१
२३. ,, सूरजभान फौजी ग्राम बालावास जि. हिसार	१०१
२४ श्रीमती कृष्णादेवी आर्या धर्मपत्नी सुमेश कुमार सिंगला जि हिसार	१०१
२५. श्री बाबूलाल जी ग्राम जुई कला जि भिवानी	१०१
२६ ,, ज्ञानवीर जी दुकानदार ग्राम बाढडा	१४५
२७ ,, आर्यसमाज मौल्दा जि रोहतक	१११
२८ ,, आर्यसमाज सैक्टर १४ सोनीपत	५०१
२९ ,, आर्यसमाज नगर सोनीपत	२५०
३० ,, आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत	५०१
३१. ,, आर्यसमाज माडल टाऊन सोनीपत	५०१
३२. आर्यसमाज पंजाबी बाग	१०१
३३. ,, ,, मातनहेल जि रोहतक	११००
३४. ,, मा० स्वरूपसिंह ग्राम छावला दिल्ली	१०१
३५. ,, चन्द्रपाल शास्त्री आर. जैड ६३ सीतापुरी दिल्ली	१०१
३६. श्री राव कृष्णकुमार सराय ख्वाजा जि. फरीदाबाद	२५१
३७ ,, आतमाराम पांचाल ठेकेदार–मोलड़बन्द विस्तार नई दिल्ली–४४	१०१
३८. ,, आर्यसमाज गोविन्दपुरी नई दिल्ली	२७३
३९ ,, आर्यसमाज मन्दिर बादशाहपुर जि. गुडगांवा	१५१
४० ,, रवीन्द्रकुमार 2930. पटपड़गंज मेन बाजार दिल्ली	१०१
४१. ,, सज्जनकुमार प्रधान आर्यसमाज खरावड़ जि. रोहतक	१००
४२. ,, करणसिंह आर्य ग्राम फिरोजपुर बांगर जि. सोनीपत	१००
४३. ,, आर्य समाज गढी कुण्डल जि. सोनीपत	१२१
४४. ,, ईश्वरसिंह शास्त्री ग्राम कल्हावड़ जि. रोहतक	१००
४५. ,, प्रतापसिंह आर्य ग्राम टिटोली ,,	१०१
४६ ,, उमरावसिंह निर्दोश सापला मण्डी रोहतक	१०१
४७. ,, अर्जुनदेव आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	१०१
४८. ,, टेकराम जी आर्य स्वतन्त्रता सेनानी अटायल जि. रोहतक	१०१
४९. श्रीमती वरफीदेवी धर्मपत्नी श्री सुखवीरसिंह ,,	१०१
५०. आर्यसमाज नारायणगढ जि. अम्बाला	१००
५१. श्री जयप्रकाश अध्यापक थम्बड़वाले	१०१
५२. ,, आर्यसमाज मुस्तफाबाद यमुनानगर	२५०
५३. ,, चौ० सत्यपाल आर्य बूबका जि. यमुनानगर	१००
५४ ,, चौ० बाबूराम जी आर्य ,, ,,	१००
५५. ,, आर्यसमाज मन्हार	१०१
५६ ,, सुशीलकुमार गर्ग आढती अनाज मण्डी लाड़वा जि. कुरुक्षेत्र	५००
५७. ,, श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय शादीपुर जि. यमुनानगर	२१००
५८ ,, महासिंह सुपुत्र इन्द्रसिंह ठेकेदार महमूदपुर जि. सोनीपत	१०१
५९ , डा० जयसिंह आर्य भू० पू० सरपंच छतैहरा ,,	१०१
६०. , रामसिंह आर्य सु० श्री निहालसिंह आर्य ,,	१०१
६१ ,, प्रभाराम सु० बलजोरा छतैहरा ,,	१०१
६२. ,, रूपचन्द प्रधान आर्यसमाज फफडाना जि. करनाल	१०१
६३ ,, मन्त्री आर्यसमाज गोली जिला करनाल	१०१-००
६४ ,, प्रतापसिंह आर्य सु० श्री बनवारीलाल मोरमाजरा जि० करनाल	१०१-००
६५ ,, प्रधान बिजेसिंह सु० बाह राम मोर माजरा जि० करनाल	१०१-००
६६ ,, लखमीचन्द सु० छोटूराम मोर माजरा जि० करनाल	१०१-००
६७ ,, मन्त्री आर्य समाज सालवन करनाल	१०१-००
६८ ,, चौ० सूरतसिंह नम्बरदार ग्राम साकौती बाजीदपुर जि० सोनीपत	१०१-००
६९ ,, म० रलदेव आर्य ग्रा०पो० कुण्डली	१०१-००
७० ,, आर्यसमाज झज्जर मार्ग बहादुरगढ जि० रोहतक	५०१-००
७१ ,, मन्त्री आर्यसमाज सैक्टर ४ फरीदाबाद	१०१-००
७२ ,, आर्यसमाज सिवानी मण्डी जि० भिवानी	१०१-००
७३ ,, आर्यसमाज कालावाली जिला सिरसा	२०१-००
७४ ,, कृष्णकुमार आर्य ११३६/१६ फरीदाबाद	१००-००
७५ ,, सत्यपाल आर्य बी-II ४०४ जनकपुरी दिल्ली-५८	१०१-००
७६ ,, मन्त्री आर्यसमाज भुगारका जिला महेन्द्रगढ	१०१-००
७७ ,, प० मातुराम शर्मा म०न० ३३२७, ए/१८ आजाद नगर रेवाड़ी	१०१-००
७८ ,, रतीराम आर्य ग्राम खरमाण जिला रोहतक	१०१
७९ ,, शेरसिंह आर्य भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक	१०१-००
८० ,, रामकुमार आर्य भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक	१०१-००
८१ ,, स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक	१०१-००
८२ ,, मुरारीलाल बेचैन भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक	१०१-००
८३ ,, आर्यसमाज कैलाश-ग्रेटर-कैलाश I नई दिल्ली-११००४८	२५०-००
८४ , सूबेदार प्रभु सिंह व मा० रूपराम आर्य ग्राम सेहलंग जिला महेन्द्रगढ़	१०१-००
८५ ,, डा० विद्यानन्द जी आर्य-ग्राम पोता जिला महेन्द्रगढ़	१५१-००
८६ ,, कवंरसिंह आर्य ग्राम काकोड़िया जिला रेवाड़ी	३००-००
८७ ,, मा० अमरसिंह आर्य ग्रा० बालधन कलां	१०१-००
८८ ,, वीरकुमार आर्य वकील ग्राम नठेड़ा रेवाड़ी	१०१-००
८९ ,, म० भगवानसिंह आर्य ग्राम नठेड़ा रेवाड़ी	१०१-००
९० ,, होशियारसिंह आर्य सुरहैली रेवाड़ी	१०१-००
९१ ,, प्रधान आर्यसमाज मिर्जापुर जि० महेन्द्रगढ़	१०१-००
९२ ,, आर्यसमाज धौलेड़ा जि० महेन्द्रगढ	२०२-००
९३ ,, मेहरसिंह आर्य आर्यसमाज काहनड़वास जि० रेवाड़ी	१०१-००

क्रमशः

देहाती क्षेत्रों में यज्ञ, वैदिक प्रचार का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न

गुड़गांव ८ जून वैदिक धर्म के प्रचार और महर्षि दयानन्द के सन्देशों को जन-जन तक पहुचाने का कार्य आर्यसमाजों की प्रतिनिधि संस्था आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाव के तत्वावधान में २३ मई से ७ जून तक गांव गाडोली खुर्द, धनकोट, धर्मपुर, दौलताबाद, कादीपुर तथा झाडसा आदि गांवों मे ईश्वर कृपा एवं आर्यजनों के सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम में महर्षि दयानन्द के सन्देशो के साथ-साथ लोगों को शराब, मास, दहेज, नशा आदि बुराइयों के प्रति जागरूक किया तथा उन्हें इनका त्याग करने की प्रेरणा दी। परिणामस्वरूप कुछ भद्र पुरुषों ने शराब, धूम्रपान नशा आदि बुराइयों को छोड़ने का संकल्प किया। इन कार्यक्रमों में स्वतन्त्र रूप से आए भजनोपदेशक श्री रणजीत सिंह; श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेश श्री ईश्वरसिंह तूफान मण्डली तथा उपदेशक कवि श्री भजनलाल आर्य सहित अनेक विद्वानों के भजन व प्रवचन हुए। इस पुनीत कार्य मे जिनका सहयोग प्राप्त हुआ उनमें गांव गाडौली ने चौ० रघुनाथसिंह सरपच, धनकोट से ग्राम प्रधान श्री रमेशचन्द जैन, चौ० दीवानचन्द धर्मपुर से पूर्व प्रधान श्री मामचन्द दौलताबाद से ग्रामप्रधान श्री ओमप्रकाश कादीपुर से ग्राम प्रधान श्री मुन्शीराम यादव, झाडसा से चौ० खजानसिंह।

इसके अतिरिक्त गुडगावां आर्यसमाजो, स्त्री आर्यसमाजों तथा केन्द्रीय सभा के अधिकारी वर्ग प्रधान श्री ओमप्रकाश, उपप्रधान म० चन्दनसिंह, कोषाध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर मन्त्री जगदीश ने कार्यक्रम की व्यवस्था में सहयोग दिया।

ओमप्रकाश चुटान "महामन्त्री"

आर्यसमाज कतलूपुर जिला सोनीपत का चुनाव

प्रधान —श्री राजसिंह जी आर्य
उपप्रधान —श्री सुमेरसिंह जी आर्य
मन्त्री —श्री रणबीर जी आर्य
उपमन्त्री —श्री राजेन्द्रसिंह जी आर्य
कोषाध्यक्ष —श्री मागेराम जी नम्बरदार
पुस्तकाध्यक्ष —श्री राजबीरसिंह जी आर्य
प्रचारमन्त्री —श्री बीरसिंह जी आर्य

हरयाणा में आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज धनोन्दा जिला महेन्द्रगढ	८, ९ जून
„ रोहणा जिला सोनीपत	९, १० „
„ पाटौदी जिला गुड़गाव	१३, १४ „
सदाचार शिक्षण शिविर करेवडी जिला सोनीपत	१५ से २१ „
आर्यसमाज बालधन कला जिला रेवाडी	२०, २१ „
„ नांगल (बहल) जिला भिवानी	२० से २२ „
„ जलिवास जिला रेवाडी	१९ से २१ „
सदाचार शिक्षण शिविर जूआ जिला सोनीपत	२२ से २८ „

सुदर्शनदेव आचार्य
वेदप्रचाराधिष्ठाता

(पृष्ठ १ का शेष)

(पृष्ठ १ का शेष)

जीवविज्ञान, इतिहास, प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति, सूक्ष्म जीव विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, कम्प्यूटर आदि आधुनिक ज्ञान, विज्ञानों की उच्चस्तरीय शिक्षा की व्यवस्था भी गुरुकुल में है।

जहां तक शारीरिक विकास का सम्बन्ध है, गुरुकुल में नियमित व्यायाम खेल-कूद आदि की व्यवस्था है वहां फुटबाल, हॉकी, क्रिकेट, बास्केट बाल, वालीवाल, बैडमिन्टन, टेबल टेनिस खो-खो, कबड्डी प्राणायाम, योगासन, तैराकी आदि का नियमित अभ्यास कराया जाता है। समय-समय पर समीपवर्ती वनों, पर्वतों तथा अन्य क्रीड़ा स्थलों के भ्रमण की योजनाएं बनाई जाती हैं। जिससे छात्रों में साहस, स्फूर्ति तथा आत्मविश्वास का विकास होता है। गुरुकुल के छात्र एक सीमित परिसर में रहकर भी संसार की गतिविधियों से अपरिचित न रहें, इसके लिए पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था तो है ही, समय-समय पर गोष्ठियों, प्रतियोगिताओं तथा सरस्वती सम्मेलनों के आयोजनों के द्वारा उनके मानसिक क्षितिज के विस्तार हेतु प्रयत्न किया जाता है।

गुरुकुल में निवास करनेवाले छात्रों का खानपान, रहन-सहन आहार-विहार एक जैसा और समान है। अतः यहां रहकर उन्हें यह आभास नहीं होता कि वे धनी पिता के पुत्र हैं या दरिद्र कुल के हैं। इसी प्रकार जाति, वर्ण और समाज के प्रचलित ऊँच-नीच के विचारों से भी गुरुकुल के ब्रह्मचारी सर्वथा मुक्त होते हैं। यही कारण है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'यत्र विश्व भवत्येक नीडम्' जैसे आदर्शों को लेकर विद्याध्ययन करनेवाले छात्र परस्पर आत्मीयता और स्नेह के अटूट बन्धन में जुड़ जाते हैं और जब वे स्नातक बनकर जीवन की कर्मभूमि में अवतीर्ण होते हैं तो जाति, मत, सम्प्रदाय और नस्ल को विभाजक रेखाओं के घेरे में बंधना कभी पसन्द नहीं करते।

गुरुकुल में मातृभूमि से प्रेम, राष्ट्रभक्ति तथा स्वदेश गौरव का पाठ पढ़ाया जाता है। स्वदेशाभिमान और राष्ट्रीय अस्मिता पर गर्व करने वाले गुरुकुल के स्नातकों ने स्वाधीनता आन्दोलन में देश और समाज के लिए जो कुर्बानी दी, वह हमारे देश की स्वाधीनता के इतिहास में अमर बन चुकी है।

गुरुकुल की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाती है। यों तो गुरुकुल में प्रवेश पाने वाले ब्रह्मचारी भारत के विभिन्न प्रान्तों से आते थे, अतः उनके घर परिवार में भिन्न-भिन्न भाषायें बोली जाती हैं, किन्तु यहां गुरुकुल में आर्यभाषा हिन्दी को ही मातृभाषा तुल्य आदर दिया जाता था। आज से ८०-९० वर्ष पूर्व स्नातक स्तर तक की विज्ञान और मानविकी के विभिन्न विषयों की पाठ्य पुस्तकें तैयार करवाना तथा हिन्दी माध्यम से जैविकी, रसायन, भौतिकी, गणित आदि विज्ञानों की शिक्षा देना वास्तव में किसी चमत्कार से कम नहीं था।

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नी, उरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥

अथर्ववेद की इस ऋचा के अनुसार किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिये देशवासियों के जीवन में सत्याचरण, दृढ़संकल्प, कष्ट सहन, स्वार्थ-रहित परोपकार की वृत्ति, ज्ञान, व्रतों का निर्वाह जैसे चारित्रिक गुणों का समावेश अवश्य होना चाहिए। किसी राष्ट्र के नागरिकों के चरित्र निर्माण का सबसे अधिक उपयुक्त अवसर शिक्षा की अवधि होता है किन्तु आज की भोगप्रधान संस्कृति और समाज में चरित्र की सबसे अधिक ह्रास हुआ है। हमें प्रयत्न करना होगा कि शिक्षा में भोगवाद की इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जाये क्योंकि भारतीय मनीषियों ने स्पष्ट घोषणा की थी कि—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥

देश और समाज के लिए उपयोगी तथा कल्याणकारी शिक्षा नीति में जिन आधारभूत बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उनकी मैं संक्षेप में चर्चा करना चाहूँगा —

१. देश की शिक्षापद्धति में शिक्षक बहुत सच्चरित्र और योग्य होने चाहियें।
२. बालक को गुणकर्मानुसार शिक्षा दी जानी चाहिए।
३. प्रत्येक शिष्य पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाना चाहिये। एक शिक्षक के पास बीस से अधिक छात्र नहीं होने चाहिये।
४. शिक्षक और विद्यार्थी यथासम्भव अधिक समय तक साथ रहें अतः छात्रों को छात्रावास में रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।
५. विद्यालयों में भय, आतंक और हुकूमत के वायुमण्डल के स्थान पर प्रेम, सहानुभूति तथा सहयोग का वातावरण होना चाहिए। शारीरिक दण्ड का स्थान कम से कम होना चाहिये।
६. छात्रों के चरित्रनिर्माण में शिक्षक का अधिक से अधिक सम्पर्क सहायक होता है।
७. विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न की जानी चाहिए ताकि वे राष्ट्र को अपना घर समझने लगें और स्वयं को राष्ट्र का पुत्र।
८. वैदिक ऋषियों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सत्य और ज्ञान की प्राप्ति है जो ब्रह्मचर्य और तपोमय जीवन के बिना नहीं मिल सकता। विद्याध्ययन काल में संयम और और चरित्र निर्माण का आधार ब्रह्मचर्य है। भारतीय संस्कृति का लक्ष्य ब्रह्म की प्राप्ति है और इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया जाता है। अतः भारतीय संस्कृति में सादे रहन-सहन का महत्त्व है।
९. भारतीय संस्कृति का उद्गम संस्कृत भाषा से हुआ है इसलिए यदि हम शिक्षा के द्वारा भारत की आत्मा को नष्ट नहीं करना चाहते तो हमें अपनी शिक्षा में निम्न लिखित बातों का समावेश अवश्य करना होगा।

१ सब विद्यार्थी और शिक्षक प्रतिदिन सम्मिलित ईश्वर प्रार्थना अवश्य करें। उनमें आस्तिकता और परमेश्वर पर निर्भर रहने की भावना विकसित की जाये।

२ छात्रों और शिक्षकों का जीवन और रहन-सहन पाश्चात्य सभ्यता की जटिलता से मुक्त, सादा और सरल होना चाहिए। 'सादा जीवन उच्च विचार' हमारी सभ्यता का मूलमन्त्र है। इसका कारण यही है कि भारती संस्कृति परमेश्वर के प्रति आस्थावान् है। हमारे रहन-सहन और सम्पूर्ण जीवन का चरम उद्देश्य परमेश्वर प्राप्ति ही है।

३ हमारी शिक्षा में प्रत्येक छात्र के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन आवश्यक होना चाहिए।

संस्कृत भाषा का ज्ञान न होने का अभिप्राय है कि अपने को भारतीय संस्कृति के उत्तराधिकार से वंचित रखना।

संक्षेप में हम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मूल आदर्शों को इन शब्दों में कह सकते हैं—

समानता, सरलता, सामीप्य गुरुशिष्ययोः ।
स्वाध्यायः संयमश्चैव सकाराः पंच मोक्षदा ॥

यमुनानगर में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, शादीपुर, यमुनानगर में दिनांक २२ जून, ९२ से ५ जुलाई, ९२ तक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर निःशुल्क होगा। 'संस्कार विधि', 'सत्यार्थ प्रकाश', 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' व 'पञ्चमहायज्ञ विधि' आदि पुस्तकों व अपने ओढ़ने-पहनने के वस्त्रों सहित प्रशिक्षण के इच्छुक आर्यजन अपने आर्यसमाज के मन्त्री/प्रधान द्वारा प्रदत्त परिचयपत्र लेकर २१ जून, ९२ की सायं तक पहुंच जाएं। उक्त विद्यालय जगाधरी रेलवे स्टेशन से ३ कि०मी० की दूरी पर शादीपुर गांव गुमथला की ओर जानेवाली सड़क पर स्थित है। यमुनानगर के बस अड्डे से गुमथला की ओर जाने वाली बसें भी शादीपुर में रुकती हैं। प्रशिक्षणार्थी अपने साथ लेखनी व तीन कोरी कापियां भी लेकर आएं। —इन्द्रजित देव, उपमन्त्री

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल में इस वर्ष एक जुलाई से प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं।

अत एव भारतीय संस्कृति के अनुयायी महानुभावों से अपील की जाती है कि आप अपने बच्चों को उत्तम शिक्षा दिलाने हेतु अविलम्ब सम्पर्क करें तथा इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठावें;

आचार्य इन्द्रपाल, प्रधानाचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल, मुजफ्फरनगर

हरयाणा की पंचायतों से अपील

हरयाणा की पंचायतों से अपील है कि वे हरयाणा से शराब जैसी भयंकर बुराई को समाप्त करने के लिए ३० सितम्बर ९२ तक निम्नलिखित प्रारूप जैसा प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजें। सरकार के नियम के अनुसार जिनके प्रस्ताव ३१ अक्तूबर ९२ तक पहुंच जावेंगे, वहां शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं।

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने के प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला .... पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक .... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक ......

प्रतिलिपि सेवा में

१. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
२. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि
३. जिलाधीश
४. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

दिनांक ... सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं तथापि वहां गैर-कानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय
हरयाणा चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला .... में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेन्ट गैर-कानूनी ढंग से खुल्लम-खुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीनेवाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बेकार हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अतः हमारे गांव की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाये और गैरकानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लंघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर नाजायज शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

प्रतिलिपि सेवा में

१. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
२. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला ....
३. जिलाधीश ....
४. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

दिनांक .... ह० सरपंच तथा पंच ग्राम पंचायत

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश आरम्भ

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा अरावली पर्वत की शृंखला में स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा जिला फरीदाबाद में कक्षा चौथी से नौवीं तक प्रवेश चालू है। यहां पर सी० बी० एस० ई० का पाठ्यक्रम (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा मान्यता प्राप्त) पढ़ाया जाता है।

गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला तथा संग्रहालय आदि की व्यवस्था है। यहां छात्रों के रहन-सहन, आचार व्यवहार, स्वास्थ्य तथा चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है तथा धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास पर बल दिया जाता है। शिक्षा निःशुल्क है। आठवीं का परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत रहा।

अतः अपने बालकों को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल में प्रवेश करवाकर उनका उज्ज्वल भविष्य बनावें। तुरन्त सम्पर्क करें।

आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद)
डाकघर नई दिल्ली-४४ फोन : ८-२७५४३९८

वानप्रस्थ दीक्षा समारोह

१९ मई, ९२ को दयानन्दमठ रोहतक में श्री वेदप्रकाश साधक जी ने श्रद्धेय स्वामी सर्वानन्द जी से वानप्रस्थ की दीक्षा ली। वानप्रस्थ की दीक्षा देते हुए स्वामी जी ने कहा कि अब साधक जी अध्यापन कार्य से सेवानिवृत्त हो चुके हैं तथा वर्णाश्रम के अनुसार आज वानप्रस्थ की दीक्षा ले रहे हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रत्येक आर्य के अपनी अवस्थानुसार वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर वेदप्रचार का कार्य करे तथा वानप्रस्थ की गरिमा को बनाये रखना हम सबका परम कर्त्तव्य है। साधक जी ने भी प्रतिज्ञा की कि मैं वेदप्रचारार्थ अपना जीवन समर्पित करता हूं। इस अवसर पर साधक जी ने यज्ञमण्डली दयानन्दमठ, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को १००-१०० रु० दान में दिये तथा २०१ रु० की राशि स्वामी जी को दक्षिणा रूप में भेंट की।

—मेघराज आर्य
कोषाध्यक्ष यज्ञमण्डली दयानन्दमठ, रोहतक

टिटोली में शराब का ठेका हटाने के लिए संघर्ष

जिला रोहतक के ग्राम टिटोली के सरपंच श्री छतरसिंह ने अपने लड़के के नाम से शराब के ठेके की शाखा खुलवादी है। ग्राम के अधिकांश नरनारी इसका विरोध कर रहे हैं। जिलाधीश को एक ज्ञापन देकर इस शाखा को तुरन्त बन्द करने की मांग की है और चेतावनी दी है कि किसी भी अवस्था में ठेका नहीं चलने देंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ग्राम में शराबबन्दी प्रचार करवाया जारहा है।

—केदारसिंह आर्य

गृह-निर्माण आधार-शिला यज्ञ

डा० बलवीर आचार्य व श्रीमती कृष्णा आचार्या ने डा. सुदर्शनदेव आचार्य द्वारा यज्ञ करवाया। इस अवसर पर प्रो० प्रकाशवीर मन्त्री आर्य विद्या सभा ने आशीर्वाद दिया। डा० बलवीर ने ५१ रु० सभा को दान दिये। अन्य उपस्थित श्री रामसिंह यादव Add. SP, डा. यज्ञवीर, डा० सुधीकांत, डा. ईश्वरसिंह व डा. सुरेन्द्रकुमार आदि उपस्थित थे।

कंवारी गांव में वेदप्रचार

कंवारी जि० हिसार गांव के सरपंच श्री महावीरसिंह आर्य ने स्व० पं० तालेराम की पुण्य तिथि पर २८-२९ मई को सभा के भजनोपदेशक श्री गजराजसिंह को बुलाकर वेदप्रचार करवाया। इस अवसर पर पंडित जी को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिसमें गांव के स्त्री-पुरुषों ने बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया।

—सीताराम आर्य

पूर्ण मद्यनिषेध की जरूरत

भारतीय संविधान में उल्लिखित नीति निर्देशक सिद्धांतों के अनुसार शासन को कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो जनता के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता हो। आज भारत सरकार एवं प्रांतीय सरकारें इस दृष्टि से भारत के संविधान का खुला उल्लंघन करके मानव स्वास्थ्य ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवजीवन को सर्वनाश की ओर ले जानेवाली शराब की दुकाने खोलकर अपना राजस्व बढ़ा रही है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने शराब की बिक्री के विरोध में कहा था कि यदि मैं भारत का तानाशाह बना दिया गया तो भारत मे शराब की समस्त दुकाने बन्द करवादूं। विश्व के समस्त महापुरुषों ने शराब का एक स्वर में प्रबल विरोध किया है। शराब पीने से मनुष्य का मन एव मस्तिष्क प्रदूषित होता है। स्वास्थ्य भी बिगड जाता है। व्यक्ति विभिन्न प्रकार के सामाजिक अपराधों मे लिप्त हो जाता है। शराब पीने से आत्मा व शरीर का सर्वनाश होता है। इसीलिये महात्मा बुद्ध ने कहा था कि तुम सिंह से, अग्नि से, पहाडों के गिर जाने पर भी भयभीत मत होना किन्तु शराब से डर जाना क्योंकि यह पाप या अनाचार की जननी है।

मनुष्य के व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक व चारित्रिक जीवन को अधोगति की ओर ले जाने वाली शराब को बेच कर आज हमारी सरकारें रामराज्य का नाम लेते हुए शर्मिन्दा नही होती। राजस्व के नाम पर शराब बेचकर आम नागरिकों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। भारतीय सस्कृति को मटियामेट किया जा रहा है। भारतीय मनीषी व भारतीय चिन्तन मे सदैव मद्यपान का खुला विरोध किया गया है। समग्र राष्ट्र में तीव्रगति से बढ रही अराजकता, अपराधीकरण, चारित्रिक पतन का मूल कारण शराब ही है। आज तो सरकार द्वारा गांव-गाव में शराब की दुकाने खोलकर, गांवों के सुरम्य एव शांत वातावरण को विषाक्त बनाया जा रहा है।

क्या हमारी सरकारें सम्पूर्ण भारत में एक साथ सम्पूर्ण मद्य निषेध का सकल्प जनहित व राष्ट्र हित में नही ले सकती ?

—राधेश्याम शर्मा एडवोकेट
मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ. प्र.)

आर्यसमाज नरवाना जि० जीन्द का चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आचार्य सुदर्शनदेव जी तथा श्री रणवीर जी शास्त्री की देख रेख मे आर्य समाज नरवाना जिला जीन्द का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से दिनांक ७ जून को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ – प्रधान- बा इन्द्रजीत, उपप्रधान- श्री अनिल कुमार आर्य, मन्त्री- श्री रामकुमार लोहे वाले, उपमन्त्री- श्री धर्मपाल गुप्त, कोषाध्यक्ष- श्री जयदेव, पुस्तकाध्यक्ष- श्री राधेश्याम।

सम्पादक के नाम पत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे तथा यतिमण्डल के सहयोग से पं. गुरुदत्त विद्यार्थी निर्माण शताब्दी १५ से १७ मई-९२ तक चरखी दादरी (भिवानी) में सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गई है। इस शताब्दी ने आर्य जनता पर एक अमिट छाप छोड़ी है। इस प्रकार के आयोजन समय-समय पर होने चाहिएं ताकि आर्यसमाज के कार्य में शिथिलता न आने पाए। शताब्दी की सफलता के लिए सभा के समस्त पदाधिकारी एवं आर्यसमाज चरखी दादरी के सभी कार्यकता बधाई के पात्र हैं।

रामकुमार आर्य
वाटर सप्लाई वर्क्स जोशी चौहान
वाया बहालगढ़ (सोनीपत) हरि.

शराब सेवन पर रोक

इस जिला के गांव सिसाना की ग्राम सभा के लोगों ने शराब सेवन पर लगे प्रतिबंध को सख्ती से लागू कर दिया है। एक सूचना के अनुसार गांव के सरपंच एवं दहिया खाप के प्रधान श्री रामफल ने गांव सिसाना में शराब ठेका की उपशाखा को बंद करवा दिया।

पंजाब के आर्य नेता श्री यश का निधन

आर्य प्रादेशिक पंजाब के पूर्व प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्व प्रधान दैनिक मिलाप के सम्पादक श्री यश जी संसद सदस्य जालन्धर का दिनांक ३ जून ९२ को ७३ वर्ष की आयु में हृदय गति बन्द होने पर निधन हो गया। आप महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपुत्र थे। आप पंजाब में शिक्षा मन्त्री पद पर रहे तथा अपने काल में डी. ए. वी. तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं को सहायता दी थी। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके परिवार जनों आदि को इस वियोग को सहन करने की शक्ति देवे।

डा. सोमवीरसिंह, सभा उपमन्त्री

—: प्रवेश-सूचना :—

महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा में १ जुलाई ९२ से नए सत्र हेतु प्रवेश होगा। एतदर्थ विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश पत्र हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें।

इस विद्यालय मे चार वर्ष के पाठ्यक्रम में वेद, संस्कृत-व्याकरण, संस्कृत साहित्य, दर्शन शास्त्र एव उपनिषद् और स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है। अध्ययन काल में छात्र को अपनी ओर से किसी प्रकार का व्यय नहीं करना पड़ता। भोजन-आवास-वस्त्र-दवाई-पुस्तके एवं लेखन सामग्री इत्यादि की सारी व्यवस्था विद्यालय की की ओर से निःशुल्क हैं। विद्यार्थी का लक्ष्य आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करना होना चाहिए।

प्राचार्य म० द० अन्तर्राष्ट्रीय
उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

आर्यसमाज कैथ जिला पानीपत का चुनाव

प्रधान :—श्री दयानन्द जी आर्य
उप प्रधान :—श्री दलीसिंह
समाज मन्त्री :—श्री रघुबीरसिंह जी
उप मन्त्री :—श्री पूर्णसिंह जी
कोषाध्यक्ष :—श्री प्रतापसिंह जी
पुस्तकाध्यक्ष :—श्री जयपाल जी
प्रचारमन्त्री :—श्री पं० धज्जाराम जी आर्य

शोक प्रस्ताव

दिनांक १७-५-९२ को आर्यसमाज में एक शोक सभा हुई, जिस में श्री तुलसीराम जी के सुपुत्र श्री ब्रह्मदत्त के जघन्य हत्याकाण्ड पर शोक प्रकट किया गया। दिवंगत श्री ब्रह्मदत्त भारतीय वायु सेना के पूर्णिया सेन्टर पर सेवारत थे। वे अपनी छुटियां बिताने अपने पैतृक स्थान होडल आये हुए थे। दिवगंत आत्मा अपने पीछे नौ सदस्यीय परिवार छोड गये हैं, जिसमें बूढ़े माता पिता एवं पत्नी व बच्चों के एक मात्र सहारे थे। उनके अभाव में सारे परिवार की दशा बड़ी शोचनीय हो गई है और उनका बिलखता परिवार देखा नहीं जा रहा है। यह सभा हरयाणा सरकार से मांग करती है कि हत्या काण्ड की जांच कराई जाये और दोषी हत्यारों को उचित सजा दिलाई जाये। सभा दिवगंत आत्मा की शान्ति के लिए एवं परिवार को इस कष्ट को सहन करने की परमात्मा से प्रार्थना करती है।

आर्यसमाज होडल

आर्य प्रतिनिध सभा हरियाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२९७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७३ रजि० न० P/RTK-४६

ओ३म्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक - सूबेसिंह सभामन्त्री | सम्पादक — वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १६ अंक २८ २१ जून, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ५४ पैसे

आर्यसमाज जिला सोनीपत में शराबबन्दी सम्मेलन में आर्य नेताओं का जनता को आह्वान

केदारसिंह आर्य

हरयाणा प्रदेश की प्रसिद्ध ग्रामीण आर्यसमाज रोहणा जिला सोनीपत का वार्षिक उत्सव १३, १४ जून ९२ को सफलता पूर्व सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर त्यागी तपस्वी आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल झज्जर ने १३ जून को उत्सव पर पधार कर ग्रामीण नर-नारियों को प्रति वर्ष आर्यसमाज का उत्सव करने तथा शानदार आर्यसमाज का मन्दिर बनाने के लिए बधाई दी और समस्त आर्यसमाज कार्यकर्ताओं को प्रेरणा करते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द के ऋण से उऋण होने के लिए तन, मन और धन से आर्यसमाज की सेवा करें और हरयाणा प्रदेश से शराब जैसे कलंक को मिटाकर दम लेवें। १४ जून को शराबबन्दी सम्मेलन में सभा प्रधान प्रो. शेरसिंह जी, सभा मन्त्री श्री सूबेसिंह जी, उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री तथा शराबबन्दी अभियान के संयोजक पूर्व उपायुक्त श्री विजय कुमार जी रोहणा पधारे। आर्यसमाज के अधिकारियो ने अपने आर्य नेताओं का ग्राम में पधारने के लिए हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर उत्तरी भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क, जिला पानीपत वेद प्रचार मण्डल के भजनोपदेशक श्री [illegible]कुमार आर्य एवं सभा के पुरोहित पं. अर्जुनदेव आर्य ने भी अपने प्रभावशाली व्याख्यान दिये।

शराबबन्दी सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सभा उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री ने अपने व्याख्यान में बताया कि प्राचीन समय से ही भारतवर्ष सारे संसार को मार्ग दिखाता रहा है। परन्तु अब हमारे नवयुवक पश्चिमी सभ्यता के रंग में रगे जा रहे हैं, वे अपनी महान् संस्कृति को भूल रहे हैं। अपने भारतवर्ष के प्राचीन राजा अश्वपति का उदाहरण देते हुए बताया कि उनके राज्य में कोई भी नागरिक शराब, मास, भ्रष्टाचार आदि बुराइयों से दूर रहते थे परन्तु आज के शासक स्वयं इन बुराइयों में फंसे हुए हैं। उनके कारण आज हमारा पवित्र हरयाणा प्रदेश शराब, मास तथा भ्रष्टाचार में दिन प्रतिदिन वृद्धि होने पर संसार में बदनाम हो रहा है। अतः हमें मिलकर प्राचीन संस्कृति तथा सभ्यता की रक्षा करनी चाहिए। सभामन्त्री श्री सूबेसिंह ने सभा की ओर से आर्य ग्राम रोहणा की सराहना करते हुए कहा कि इस ग्राम का नाम ग्रामीण आर्यसमाजों की सूचि में प्रथम रखता है। यहां के आर्य नर-नारियों ने आर्यसमाज के सभी आन्दोलनों में बढ़चढ़कर भाग लिया है।

यहां के आर्य कार्यकर्ताओं ने गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की रक्षा करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। महाशय दरयावसिंह तथा इनके अन्य साथियों ने दहिया खाप की पंचायत तथा संघटन को सुदृढ़ करके शराब आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहने के नियम बनवाये हैं। आपने सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी अभियान को सफल करने की अपील करते हुए ग्रामीण महिलाओं को परामर्श दिया कि वे तमिलनाडू की बहनों की भांति अपने प्रदेश के मुख्यमन्त्री पर दबाव डाले कि जयललिता के मार्ग का अनुकरण करते हुए हरयाणा मे शराबबन्दी लागू करे। आपने अपने व्याख्यान के अन्त में रोहणा वासियों का आर्यसमाज के कार्यों में सदा अग्रणी रहने पर धन्यवाद किया।

शराबबन्दी अभियान के सयोजक श्री विजयकुमार जी ने ग्रामवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि रोहणा ग्राम की भांति अन्य ग्रामों में भी आर्यसमाज मन्दिरों का निर्माण करना चाहिए जिसमें सभी आर्य भाई बहन मिल बैठकर आर्यसमाज के प्रमुख कार्य शराब जैसी बुराइयों को दूर करने पर विचार कर सकें। और सत्सग आदि की व्यवस्था भी कर सकें। शराब जैसे कलंक को आर्यसमाज ही मिटा सकता है। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को ग्रामों में जाकर खापकर पंचायतों का आयोजन करवाकर शराबबन्दी के नियमो को लागू करवाने चाहिए और ग्राम की पंचायत को शराब की बुराइयो को समझाकर ३० सितम्बर ९२ तक शराबबन्दी के प्रस्ताव पास करवाकर हरयाणा सरकार को भिजवाने का प्रयत्न करना चाहिए। आपने जिला भिवानी, सोनीपत, रोहतक, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, हिसार, गुडगावा तथा सोनीपत के उन ग्रामीण भाई बहनो का धन्यवाद किया जिन्होने इस वर्ष शराब के ठेके बन्द करवाकर अन्य जिलों को प्रेरणा दी है। आपने हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल की आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने हरयाणा की जनता के कल्याण की अनदेखी करके स्वार्थवश अपने दामाद को हिसार में शराब के कारखाना खुलवा दिया इसी शराब के कारखाने से हरयाणा तथा पडोसी राज्यो को शराब सप्लाई की जाती है। यही कारण है कि अनेक बार उन्हें हरयाणा मे शराबबन्दी करने की माग की गई परन्तु वे जनता की कल्याणकारी माग को ठुकरा देते है।

हरयाणा सरकार के एक मन्त्री नेता गत दिनों एक शराब पिलाने के होटल (बार) का उद्घाटन करके सिद्ध कर दिया है कि हरयाणा सरकार शराब के प्रचार तथा विस्तार को बढावा दे रही है। प्रायः सभी राजनैतिक दल ऋषि दयानन्द तथा महात्मा गान्धी को मानते हैं परन्तु ऋषि दयानन्द तथा महात्मा गान्धी की नही मानते। आपने आर्यजनता को आह्वान किया कि वे संगठित होकर शराबबन्दी अभियान को सफल करने के महान् कार्य में जुट जावे।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्यसमाज के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले महाशय दरयावसिंह आर्य को प्रशस्ति पत्र तथा एक शाल भेंट किया परन्तु मा० दरयावसिंह ने यह सम्मान कहकर अपने आर्यसमाज के प्रधान श्री इन्द्रसिंह आर्य को सौप दिया कि यह सम्मान आर्यसमाज रोहणा के लिए है। प्रो० शेरसिंह ने आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज का जन्म मानव कल्याण के लिए ही हुआ था। हम प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमें अच्छी बुद्धि देवें तथा बुराइयों से बचावे। आज भारत वर्ष में शराब सबसे अधिक बुराई किसान तथा मजदूरों को बर्बाद कर रही

(शेष पृष्ठ 2 पर)

पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह

दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे :—

	रुपये
९४ श्री जगदेव सिंह आर्य ग्रा. बड़ी बहु अकबरपुर जि. रोहतक	१०१
९५ ,, धर्मपाल आर्य ग्रा. जगमल हेड़ी त. तिजारा जि. अलवर (राज.)	४००
९६ ,, मा आनन्द देव आर्य, आर्य नगर झज्जर जि. रोहतक	१०१
९७ ,, लखीराम कटारिया द्वारा आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली-१७	५०१
९८ श्रमति सुरक्षा देवी आर्या, गोहाना मार्ग रोहतक	१०१
९९ श्री एस. एस. प्रापर्टीज ई-२/१६ मालवीय नगर, नई दिल्ली	१२००
१०० फ्रैण्ड्स टूल डोरोडो ई-३१ हौज खास, नई दिल्ली	१२००
१०१ सावन पेन्टस एण्ड इलैक्ट्रिकल स्टोर जी/१० खास नई दिल्ली	१२००
१०२ बिस्ट्रो १२ हौज खास ग्राम नई दिल्ली	१२००
१०३ श्री ईश्वर सिह आर्य भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	१०१
१०४ श्री गोपाल आर्य मन्त्री आर्य समाज किंग्ज कैम्प, हाडसन लाईन दिल्ली ११०००९	२००
१०५ श्री आनन्द स्वरुप नम्बरदार सु. नथोजी ग्रा. मतरोल जिला फरीदाबाद	१०१
१०६ श्री आर्य समाज होडल जि. फरीदाबाद	१५१
१०७ ,, आर्य समाज लीखी ,, ,,	१०१
१०८ ,, आर्य समाज हसनपुर ,, ,,	१०१
११० ,, आर्य समाज सैक्टर २२ चण्डीगढ़	१०१

गांव दूबलधन (रोहतक) के सदस्यों का निम्नप्रकार योगदान जयपालसिह आर्य सभा भजनोपदेशक द्वारा

१ श्री भरतसिंह प्रधान आर्यसमाज दूबलधन		१०१
२ ,, अमीरसिंह	,,	५०
३ ,, रणसिह	,,	१००
४ ,, रामफल	,,	२०
५ ,, वेद प्रकार	,,	१०३
६ ,, वैद्य सन्तराम	,,	१००
७ ,, मुखत्यारसिंह	,,	१००
८ ,, रामसिंह	,,	१००
९ ,, ब्रह्मानन्द	,,	५१
१० ,, फूलसिंह	,,	१००
११ ,, रामस्वरुप	,,	५१
१२ ,, वेदपाल	,,	५०
१३ ,, प्रेमसिह	,,	५१
१४ ,, दलेलसिंह	,,	५१
१५ ,, सेठ ताराचन्द	,,	५०
१६ ,, चरणसिंह	,,	५१
१७ ,, सेठ प्रेमचंद	,,	१००
१८ ,, ,, मागेराम	,,	१००
१९ , रतीराम	,,	१००
२० ,, जयप्रकाश	,,	१००
२१ ,, जिलेसिह	,,	५१

गांव बिगोवा जिला भिवानी के सदस्यों का योगदान

१ ओमप्रकाश	२०२
२ जगमालसिह	२०२
३ सूरतसिह सराव	१०१
४ रामेश्वरदयाल आर्य	५१
५ मा० मुख्त्यारसिह	२१
६ धूपसिह	२१
७ चन्द्रसिंह	२१
८ मा० सूबेसिंह	२१
९ पहलादसिंह	५१
१० मोहरसिंह	१०१
११ राजपाल	२१
१२ ईश्वरसिंह	१०१
१३ कश्मीरसिंह	१०१
१४ हरदेयराम	१०१
१५ प्रदीपसिह	१०१
१६ कर्णसिंह	२१
१७ जिलेसिंह	२१
२८ राजबीर	२१
१९ श्रीचन्द	१०१
२० प्रभुराम	११
२१ धर्मसिंह	११
२२ भोधल	२१
२३ चान्द	२१
२४ महताबसिह	५१
२५ सूरतसिह	५१
२६ फूलसिह	१०१
२७ मांगेराम	२१
२८ समेरसिह	५१
२९ हुकमसिह	१०२
३० पं० मांगेराम	१०१
३१ हवासिह आर्य	२१
३२ किताबसिह	१०१
३३ लहरीसिह	१०१
३४ गूगनसिह	२१
३५ ईश्वरसहि	२१
३६ जगदीश	१०१
३७ आर्यसमाज बिगोवा	३५७

नरवाना आर्यसमाज का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न

दैनिक राष्ट्रीय सहारा दिनांक १७ जून ९२ के पृष्ठ ३ पर नरवाना आर्यसमाज के चुनाव में पुलिस बुलाई गयी" पढ़कर दुख हुआ।

आर्यसमाज नरवाना के पूर्वमन्त्री श्री राधाकृष्ण ने निराधार तथा तथ्यों के विपरीत समाचार छपवाया है। वस्तुस्थिति यह है कि आर्य समाज नरवाना के ९० वर्ष के इतिहास में चुनाव आदि के अवसर पर कभी भी विवाद उत्पन्न नहीं हुआ है।

सभी चुनाव सर्वसम्मति अथवा बहुमत से शान्ति के वातावरण में सम्पन्न हुए हैं। आर्यसमाज आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में लड़के तथा लड़कियों विद्यालयों की सम्पत्ति एक करोड़ रु० से अधिक है। दुकानों आदि की आय भी कई हजार रु० मासिक से अधिक है। इसी कारण श्री राधाकृष्ण पूर्व मन्त्री ने आर्यसमाज पर अधिकार बनाये रखने के उद्देश्य से ७ जून के वार्षिक चुनाव के अवसर पर सभा को स्वयं शान्ति भंग होने की सम्भावना होने की सूचना देकर पुलीस बुलवाई पर्यवेक्षकों की देखरेख में सर्वसम्मति एवं शांतिपूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें श्री इन्द्रजीत प्रधान श्री रामकुमार आर्य मन्त्री तथा श्री जयदेव कोषाध्यक्ष चुने गये। सभा के पर्यवेक्षकों ने इस चुनाव की रिपोर्ट सभा को प्रस्तुत कर दी और सभा ने चुनाव की स्वीकृति दे दी। इस प्रकार श्री राधाकृष्ण का यह कथन गलत है कि आर्यसमाज का चुनाव पर्यक्षको ने स्थगित कर दिया था और ४/७/९२ को चुनाव पुनः होगा।

(पृष्ठ 1 का शेष)

है। शराब भ्रष्टाचार की जननी है। अत. सभा इस बुराई को समाप्त करने के लिए पूरी शक्ति लगा रही है। इसमे सभी राजनैतिक सामाजिक तथा धार्मिक कार्यकर्त्ताओं को सहयोग देना चाहिए। यदि यह बुराई समाप्त नही हो सकी तो भारतीय सस्कृति नष्ट हो जावेगी। ग्रामों मे पीने के लिए पानी की कमी है परन्तु शराब आसानी से मिल जाती है। सभा की ओर से उच्चतम न्यायालय में एक याचिका दायर करके हरयाणा सरकार की वर्तमान शराब नीति को चुनौती दी गई है।

मद्य-निषेध और हरयाणा सरकार

डॉ० रमेश मेहता वरिष्ठ प्राध्यापक जाकिर हुसैन कालिज नई दिल्ली

गताक से आगे—

मद्यपान की व्यापक बुराई के दुष्परिणामों से उद्वेलित होते हुए आज से लगभग साठ साल पहले २५ जून, १९३१ को वे ऐसा कहने के लिए विवश हुए—

"यदि मुझे पूरे भारत के लिए घण्टे-भर का तानाशाह नियुक्त कर दिया जाए तो मैं जो काम सबसे पहले करूगा, वह होगा बिना किसी क्षतिपूर्ति के मद्य की दुकानो को बन्द करना तथा कारखाना-मालिकों को इस बात के लिए मजबूर करना कि वे अपने कामगारो के लिए मानवीय स्थितिया उत्पन्न करें और वे ऐसे जलपान एवं मनोरंजन गृह खोलें जहाँ वे कामगार हानिरहित पेय पदार्थो एव इसी तरह के निर्दोष मनोविनोद को प्राप्त कर सके।"

फिर आगे चलकर उन्होंने ३ जून, १९३९ को कहा—

"मद्यपान की आदत व्यक्ति को आत्मा को नष्ट कर देती है तथा उसे ऐसा जंगली जानवर बनने की ओर उन्मुख करती है, जो पत्नी, माता और बहिन के बीच अन्तर करने में असमर्थ होता है। मैंने ऐसे व्यक्ति देखे हैं, जो मद्य के प्रभाव के चलते इस अन्तर को भूल बैठे।"

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जैसे महापुरुष द्वारा व्यक्त किये गए चेतावनीपूर्ण विचारों के बावजूद यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत के संविधान के अनुच्छेद ४७ की भावना को गौण स्थान दे दिया गया है। बल्कि मद्य की बिक्री पहले से कही अधिक बढ गई। जिस पर, हरयाणा सरकार का यह 'गुप्त दस्तावेज' आग में घी का काम करना चाहता है।

यह भी एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि जहाँ अनुच्छेद ४७ मद्यनिषेध की संभावना को बल प्रदान करता है, वही यह भी एक कटु सत्य है कि मद्यनिषेध सम्बन्धी कानूनों को चुनौती भारत के संविधान के अनुच्छेद १४,१९ तथा ३०१ के आधार पर ही दी गईं। किन्तु, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अनेक मामलों में दृढतापूर्वक यह निर्णय दे दिया है कि 'मदिरा का व्यापार करना कोई मूलभूत अधिकार नही है।'

जनहित सम्बन्धी प्रस्तुत याचिका में माननीय उच्चन्यायालय एव माननीय सर्वोच्च न्यायालय के कई पूर्व-निर्णयों को उद्धृत किया गया है। यथा—

- रूरल लिटिगेशन एण्ड इन्टाइटलमेंट केन्द्र, देहरादून 'बनाम' उत्तरप्रदेश राज्य और अन्य (१९८५)

  इस मुकदमे में संविधान के अनुच्छेद ४८ए के अधीन चूना-पत्थर की खदानों को बन्द करने का निर्देश दिया गया क्योंकि इन खदानों के चालू रहने से परिस्थितियों में असन्तुलन और स्वास्थ्य को खतरा उत्पन्न होने लगा था।

- टी० दामोदर राव 'बनाम' एस.डी. म्युनिसिपल कॉरपोरेशन(१९८७)

  इस मुकदमे में न्यायालय ने निर्णय दिया कि प्राकृतिक उपहार का परिरक्षण और संरक्षण भारत के संविधान के अनुच्छेद २१ के अधीन अधिकार का ही एक भाग है। तदनुसार 'न्यायालय ने सविधान के अनुच्छेद ४८ए' को लागू करने का आदेश दिया।

  कनासी देवी 'बनाम' हिमाचल प्रदेश राज्य (१९८८) के मामले में भी न्यायालय ने इसी प्रकार का फैसला दिया।

- हनीफ कुरैशी 'बनाम' राज्य (१९६८)

  इस मुकदमे में सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद ४८ के आधार पर यह निर्णय दिया कि ऐसा कानून बैध होगा, जो गाय एव अन्य दुधारू पशुओं तथा कार्य करने में सक्षम भारवाही पशुओं को हत्या करने का निषेध करता है।

- सच्चिदानन्द पाण्डेय 'बनाम' पश्चिम बंगाल (१९८७)

  इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद ४८ए और ५१ए (८) के अन्तर्गत क्रमशः नीति-निर्देशक सिद्धान्तो तथा मूल-भूत कर्त्तव्यों के सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से कहा है कि ऐसे मामलों में न्यायालय अपने कन्धे नही झाड सकता और न ही यह कह सकता है कि "प्राथमिकता एक नीतिगत विषय है।"

उपर्युक्त निर्णयों से दो बाते स्पष्ट होती है। पहली सविधान के मूल अभिप्राय और भावना के प्रति सर्वोच्च न्यायालय की सजगता और प्रतिबद्धता स्पष्ट झलकती है। दूसरी, न्यायालय जनहित सम्बन्धी याचिकाओं के बारे में व्यापक कल्याणकारी दृष्टिकोण रखता है।

इसी सन्दर्भ मे यह उल्लेखनीय है कि ये विवाद सतही तौर पर मूलभूत अधिकारो और नीतिनिर्देशक सिद्धान्तो के बीच घटित होना दिखाई देता है। वस्तुत ऐसा है नही। प्रस्तुत याचिका में इस सम्बन्ध मे किसी प्रकार की दुविधा या शका को कोई स्थान प्राप्त नही है।

सन् १९७३ मे माननीय न्यायमूर्ति श्री मैथ्यू ने मूलभूत अधिकारों पर नीति-निर्देशक सिद्धान्तों की प्राथमिकता के सिद्धान्त को अनुमोदन पूर्वक स्वीकार किया। उनका कहना था—"एक खरी समाज व्यवस्था के निर्माण मे, यह कभी-कभी अत्यावश्यक हो जाता है कि मूलभूत अधिकारो को नीतिनिर्देशक सिद्धान्तों की अपेक्षा गौण स्थान दे दिया जाए। आर्थिक लक्ष्य आदर्शमूलक लक्ष्यों पर प्राथमिकता का निर्विवाद दावा रखते हैं। वह इस आधार पर कि केवल अस्तित्व के बाद ही श्रेष्ठता का महत्त्व होता है। यदि मानव का अस्तित्व है तभी मूलभूत अधिकार भी अपना महत्त्व रख सकते हैं।"

सर्वोच्च न्यायालय ने तो मद्य निषेध की गभीरता को समझा है, किन्तु यह आश्चर्य और खेद का विषय है कि द्वितीय पचवर्षीय योजना के समय से ही 'योजना आयोग' ने मद्यनिषेध के सम्बन्ध मे जो सिफारिशें की थी, उनको आज तक अनदेखी और उपेक्षा की गई है। उसने पहले कदम के रूप में जो सुझाव दिया था वह आज भी मूल्यवान् और प्रासगिक है। उसका सुझाव था—मद्यपान से सम्बन्धित विज्ञापन एवं जन-प्रलोभनो को विच्छिन्न कर देना चाहिए तथा होटलों, होस्टलों, रेस्टोरेन्टों, क्लबों और सार्वजनिक स्वागत-समारोहों जैसे जन-स्थानों में मद्यपान को रोक दिया जाना चाहिए। इस प्रकार, उसने इस दिशा में अन्य अनेक कदम उठाने की भी सिफारिशे की। क्या उन सिफारिशों का यह परिणाम होना था कि आज हरयाणा सरकार मद्यनिषेध की लोककल्याणकारी नीति की धज्जिया उडाने में आत्मविभोर हो गई है!

यह कितने खेद का विषय है कि गुजरात राज्य के सिवाय प्रायः सभी अन्य राज्यों ने मद्यनिषेध की नीति को 'विदाई' कह दी है और वे अपनी ही जनता विशेषकर निर्धनों के प्रति अमानवीय दृष्टिकोण ग्रहण कर रहे हैं। वह भी सघ सरकार द्वारा दिये गए इस वचन के बावजूद कि राजस्व-हानि, यदि कोई होती है, तो उसका आधा उसके द्वारा ही पूरा किया जाएगा। एक-एक करके राज्य सरकारों ने अधिक से अधिक राजस्व अर्जित करने के चक्कर में मद्यनिषेध-नीति का कचरा बना दिया है! वे यह पूरी तरह भूल चुके है कि संसार-भर के सन्त-महात्माओं ने इस सम्बन्ध में क्या उपदेश दिया है, वे यह भी भूल गए हैं कि गाधीजी और पं० नेहरु ने क्या कहा था, वे इस रमणीय भूमि के पसीना बहानेवाले मेहनती लोगों द्वारा कठिनाई से अर्जित-धन को लूटने की 'पागल दौड' में सम्मिलित हो गए है।

गांधीजी ने इसे एक 'बडा पाप' माना और यहाँ तक कहा कि अगर जरूरी हो तो रक्षा और शिक्षा पर होनेवाले खर्च को कम करना कही अधिक अच्छा होगा।

पं० जवाहरलाल नेहरु ने कहा: "मद्यनिषेध पर विचार करते समय, आर्थिक पहलू महत्त्वपूर्ण नही है, एक अच्छी चीज किसी भी कीमत पर की जानी चाहिए।"

श्री मोरारजी देसाई ने पूर्ण मद्यनिषेध लागू करने के लिए राष्ट्र को वचन दिया था।

चौधरी चरणसिह मदिरा को अनेक बीमारियो और बुराइयों की जड़ मानते थे।

यह कहना पूरी तरह न्यायसगत होगा कि जो लोग केवल राजस्व बटोरने के फेर मे गरीबो और नवजवानो को भ्रष्ट करने में सलग्न है, वे, वास्तव मे, "महात्मा" की नैतिक रूप से हत्या करते है! नि सन्देह, मद्य के प्रचार-प्रसार से अधिक शोषणकारी, अमानवीय तथा समाज-विरोधी कृत्य और क्या हो सकता है? क्रमशः

भयंकर मुस्लिम सांप्रदायिकता एवं मानसिकता की लपेट में
"कश्मीर समस्या व समाधान"

सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

काश्मीर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में—

भारत का उत्तरी सीमावर्ती राज्य काश्मीर भारत माता के मस्तक पर सुहाग की बिन्दी है। यहा की कुंकुम क्यारिया, यहां की झील, यहां के झरने एव वनस्पतियां एक से एक सुन्दरता लिये होती है। मानो प्रकृति का सारा सौन्दर्य यही बिखर पडा हो।

इसके सौन्दर्य एव इसे स्वर्ग समान बताते हुए प्रसिद्ध मुस्लिम बादशाह जहांगीर की काश्मीर में बनी कब्र पर आज भी फारसी में लिखी वे पक्तिया इसकी प्रशसा में हमे इस बात का परिचय देती हैं कि—

"गर फिरादोस बर्रुए जमीनस्त।
हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त॥

अर्थात् यदि संसार मे भूमि पर कही स्वर्ग है तो वह यहो है, यही है, यही है।

महर्षि दधीचि की तपोभूमि, धरती का स्वर्ग और भारत का नन्दन कानन, काश्मीर हमेशा से ही भारतीय वैदिक संस्कृति एवं वैदिक जीवन दर्शन का प्रमुख केन्द्र एव प्रेरणास्रोत रहा है। आज भी वहा का वारामूला नाम प्रसिद्ध स्थान हमें इस सनातन और प्राचीन राष्ट्र के कथित दशावतारो मे भगवान् वराह का स्मरण कराता है, क्यो कि उसका वास्तविक नाम वराहमूल है। किसी समय मे काश्मीरी ब्राह्मणों का पाण्डित्य भारत के लिए गौरव का विषय रहा है। व्याकरण के आदिप्रवर्तक महामुनि पाणिनि, योगदर्शन के रचयिता महर्षि पतञ्जलि और राजतरंगिणी के कवि कल्हण की जन्मदायिनी भूमि भी काश्मीर ही है।

एक किंवदन्ती के अनुसार काश्मीर की वर्तमान घाटी के स्थान पर पहले एक विशाल झील थी। कालान्तर में महर्षि कश्यप ने इस झील के जल को निकालने का एक मार्ग बना दिया, जिससे झील का पानी निकल जाने के बाद उसका तल एक सुन्दर घाटी में परिवर्तित हो गया। उस घाटी को महर्षि कश्यप की स्मृति मे 'कश्यप मर्ग" कहा जाने लगा। आज का काश्मीर कश्यप मर्ग का ही बदला हुआ रूप है।

काश्मीर के प्रसिद्ध साहित्यकार कल्हण ने अपने संस्कृत काव्य ग्रन्थ राजतरंगिणी में लिखा है कि महाभारत से भी पहले आर्य राजा गोनन्द (प्रथम) ने काश्मीर पर राज्य किया। गोनन्द की तीन पीढिया गुजरने पर पाडव वंशी नरेशों के काश्मीर पर शासन किया।

इसके पश्चात् २५० ईसा पूर्व यह राज्य अशोक के अधिकार में रहा, उसी समय अशोक ने श्रीनगर बसाया। आठवी शताब्दी मे काश्मीर शंकराचार्य की दिग्विजय का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा। इसी शताब्दी में काश्मीर के हिन्दु राजा ललितादित्य मुक्तापीड ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। उसका बनवाया सूर्य मन्दिर आज भी काश्मीर मे स्थित है।

सन् १३०१ में काश्मीर का राज्य सहदेव नामक शासक ने सम्भाला सहदेव अधिक दिन राज्य नही कर सका। उसके बाद उसके भाई उदयन देव ने राज्य सम्भाला। किन्तु वह भी थोड़े ही समय तक जीवित रहा।

इसी तेहरवी शताब्दी के आरम्भ में विदेशी क्रूर तातारों ने यहां आक्रमण किया। राजा के सेनापति ने स्वात-चित्राल के शाहमीर एवं तिब्बत के राय चन्द्रशाह को सहायतार्थ बुलाया। कलान्तर मे राय चन्द्र शाह ने सेनापति की हत्या करके दुर्बल राजा को कैद करके काश्मीर का राज्य छीन लिया। सहदेव की विधवा कोटारानी से विवाह कर लिया। स्वात के शाहमीर को अपना मित्र बनाकर स्वयं भी मुसलमान बनकर अपना नाम सदरुद्दीन रक्खा (कल्हण लिखित राजतरंगिणी से)। शाहमीर राजा सहदेव के दरबार में खुरासानी मुसलमान दरबारी था। इसने विश्वासघात किया। सदरुद्दीन मुस्लिम शासक ने मौलाना "अनीस उलहक" के परामर्श से काश्मीर मे इस्लाम के प्रसार के लिए भारी अत्याचार किए। भारी क्रूर आतक से धर्मान्तरण करके मुस्लिम जनसंख्या बढाई। जिन्होंने इस्लाम को नहीं स्वीकार किया और न काश्मीर छोडा, उनको कितनी संख्या में मारा गया, इसका उल्लेख "लारेन्स' ने अपने ग्रन्थ मे किया है, मारे जानेवालों की संख्या एक, दो, तीन से करना सम्भव नही था। मारने के बाद उनके जनेऊ एकत्र किये गए। उनकी पोटली बान्धी गई। प्रत्येक पोटली का बोझ सात मन हुआ था। इस प्रकार उसके सहार से प्रतिदिन १२-१३ पोटली बनती थी, उसने यह धर्म परिवर्तन का अत्याचार लगातार १९ दिनों तक नित्य छः घन्टे करा कर किया। ब्राह्मणों को टाट के व चाम के बोरों में भरकर डलझील में डूबोकर मारा। हिन्दुओं ने अपनी कन्याओं को बलात्कार से बचाने के लिए उनके कान काटने शुरु करके उन्हें कुरूप बनाकर उनके मुह पर कालिख पोतकर रखा जाने लगा। यह सब कुछ उन्होंने अपनी लाज बचाने के लिए करना पड़ा। इस प्रकार हुआ काश्मीर का ९९ प्रतिशत मुस्लिमीकरण।

१४वी शताब्दी के अन्त में सिकन्दर नामक मुसलमान आक्रमणकारी ने काश्मीर घाटी और आसपास के भाग पर अधिकार करने के बाद सुप्रसिद्ध सूर्य मन्दिर को एवं हजारों मंदिरों व बौद्ध विहारों को नष्ट किया।

१६वी शताब्दी मे मुगलों ने काश्मीर पर अपना राज्य स्थापित कर लिया। लेकिन जब १८वी शताब्दी के अन्त मे मुगल राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा तो अफगानिस्तान ने इसे अपने कब्जे में कर लिया।

१८२० मे महाराजा रणजीतसिंह के सुप्रसिद्ध सेनापति हरिसिंह नलवा ने सम्पूर्ण काश्मीर अफगानिस्थानी पठानों से छीनकर महाराजा रणजीतसिंह के राज्य में मिला दिया। किन्तु पजाबकेसरी महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु के बाद काश्मीर उनका न रहा। १८४६ में जम्मू के डोगरा शासक महाराजा गुलाबसिंह ने काश्मीर पर कब्जा कर लिया।

महाराजा गुलाबसिंह के उत्तराधिकारी शासक हुए महाराजा रणवीरसिंह। महाराजा रणवीरसिंह की मृत्यु के बाद महाराज प्रताप सिंह ने तथा इनके बाद सन् १९४७ तक महाराजा हरिसिंह ने जम्मू काश्मीर राज्य का शासन सम्भाला। इन महाराजाओं के काल में अंग्रेजों से सदैव टकराव रहा। अत अंग्रेजों ने जम्मू-काश्मीर में "फूट डालो और राज्य करो" का षड्यन्त्र रचना आरम्भ कर दिया था और इस षड्यन्त्र में उनके सहायक बने थे शेख अब्दुल्ला।

अंग्रेजों ने महाराजा हरिसिंह की सत्ता को कमजोर करने के लिए शेख अब्दुल्ला को अपना माध्यम बना लिया। सन् १९३१ के आस-पास शेख अब्दुल्ला ब्रिटिश एजेन्ट की भूमिका निभाने लगा। सन् १९३१ में ही शेख के उकसाने पर ही मुसलमानों ने काश्मीर में भीषण दंगा किया। लगभग पूरा राज्य दगे की चपेट में आ गया।

अंग्रेजों की प्रेरणा तथा काश्मीर का बादशाह बनने की अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए शेख अब्दुल्ला ने काश्मीर राज्य में १६ अक्टूबर १९३२ को मुस्लिम कांफ्रेन्स की स्थापना की। उसका उद्देश्य डोगरा राजाओं का हिन्दु राज्य समाप्त कर मुस्लिम राज्य स्थापित करना रखा। अपनी पार्टी का सम्बन्ध १९०६ में स्थापित "मुस्लिम लीग' से भी रखा गया तथा मुस्लिम लीग के दो राष्ट्र के सिद्धान्त को अपना समर्थन दिया। भारत विभाजन में भी शेख का हाथ रहा। (क्रमशः)

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का चुनाव

प्रधान : श्री राममूर्ति केला, उपप्रधान : श्री रतनलाल सहदेव, श्री हंसराज चोपड़ा, श्रीमती आशा वर्मा, श्री डा० अमरजीवन, मन्त्री : श्री वेदव्रत शर्मा, कोषाध्यक्ष : श्री भोलानाथ आर्य, पुस्तकाध्यक्ष : श्री खैरायतीलाल भाटिया, अधिष्ठाता आर्य वीरदल : श्री वीरेशकुमार बुग्गा।

श्याम कलां से चरखी दादरी भव्य पद-यात्रा

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह चरखी दादरी जिला भिवानी के उपलक्ष्य में श्री अजीतसिंह आर्य शास्त्री एम.ए,एम. फिल् संस्कृत ग्राम काकडोली हुक्मी जिला भिवानी, जो कि राजकीय उच्च विद्यालय द्वारका (भिवानी) में संस्कृताध्यापक के रूप में कार्यरत हैं, के नेतृत्व में श्यामकलां (भिवानी) से दिनांक १५-५-९२ को बाद दोपहर ३ बजे पद-यात्रा आरम्भ हुई। श्यामकलां चरखी दादरी से ५१ किलो मीटर की दूरी पर है। भीषण गर्मी व लम्बी दूरी के बावजूद इस पद-यात्रा में श्यामकलां, डांडमा, सिरसली, द्वारका, लाडावास, भारीवास, उमरवास, काकडोली सरदारा, काकड़ोली हट्टी तथा काकड़ोली हुक्मी आदि गांवों से सैकड़ों विद्यार्थियों ने भाग लिया। हाथों में ओ३म् के झण्डे लिये हुए १४-५-९२ को रातों-रात गांव-गांव में महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एवं शराबबन्दी के नारे लगाते हुए १५-५-९२ को सवेरे साढे आठ बजे चरखी दादरी समारोह स्थल पर उपस्थित हुए। मार्ग में कन्या गुरुकुल पंचगाव में इन विद्यार्थीयो ने जलपान किया एवं भोजन किया। कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने मधुर भजन सुनाए, श्री माहलेराम जी वानप्रस्थी एवं स्वामी रामानन्द जी ने भी पद-यात्री विद्यार्थियों को सम्बोधित किया दिनांक १६-५-९२ को चरखी दादरी नगर शोभा यात्रा में भी इन्होने भाग लिया एवं आर्यसमाज सम्बन्धित नारे लगाये। इस प्रकार यह पद-यात्रा पूर्ण सफल रही।

पुस्तक परिचय

यह पुस्तक प्राचीन विशाल हरयाणा की तीन सौ खापों के वीर मल्ल योद्धाओं को छप्पन वीर गाथाओ सहित चार सौ सोलह पृष्ठो को २३×३६/८ साइज मे बढिया मेपलितो कागज पर छपी है इसके प्रेरक पूज्य आर्य नेता प० जगदेवसिह सिद्धान्ती, चौ० कबूल सिंह मन्त्री सौरभ तथा स्वामी ओमानन्द जी गुरुकुल झज्जर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान श्री प्रो० शेरसिह जी को और स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तकालय, महर्षि दयानन्द मठ को एक-एक प्रति सादर भेट की जा चुकी है।

कई पुस्तको के मूल्य की आपेक्षा इसका मूल्य बहुत कम केवल साठ रु० रखा है पुस्तक विक्रेताओ को एक साथ एक सौ या अधिक पुस्तक लेने पर २५ प्रतिशत की छूट दी जाएगी। पाठक गण शीघ्र लेकर लाभान्वित हों। यह पुस्तक सभी आर्यसमाजों में जानी चाहिए।

पता—१. प्रकाशक आर्य मण्डल बी. ११ ओ३म् भवन यादव पार्क नांगलोई दिल्ली ४१

२ शिव मेडिकल एजेंसी, ४१-निरंकारी मार्किट रोहतक।

३. श्री केदारसिंह आर्य महर्षि दयानन्द मठ रोहतक।

शाकाहार की वैज्ञानिकता

(ले० रघुबीरसिंह यादव अध्यापक प्रधान आर्यसमाज छत्तरपुर, नई दिल्ली-३०)

वायु और जल के बाद आहार ऐसी वस्तु है जो जीवन और देह अनुरक्षण के लिए नितान्त अनिवार्य है। प्रथम दो वस्तुएं तो प्रकृति प्रदत्त है और प्रचुर मात्रा मे सुगमता से सर्वत्र प्राप्त है, फिर भी उनकी स्वच्छता व शुद्धता का ध्यान रखना परम आवश्यक है। धूभलरी वायु और मैला जल कभी भी ग्राह्य नही है। ये वस्तुए या तत्त्व प्रदूषणरहित होने पर ही लाभकारी होते है, अब बारी है आहार या भोजन की। इसके अन्तर्गत अनेक द्रव, ठोस और नाना प्रकार की वनस्पतिया आदि आते है। स्थूलरूप में भोजन को दो प्रमुख श्रेणियों मे बाटा जा सकता है (१) शाकाहार (2) मासाहार। प्रकृति मे कुछ जीव शुद्ध शाकाहारी है, कुछ शुद्ध मासाहारी है और कुछ ऐसे है जो सभी कुछ खा जाते हैं अर्थात् सर्वाहारी। शाकाहार में दूध, दही, घी, अन्न, फल, वनस्पति और मेवों का खाना सम्मिलित है। इसके विपरीत मासाहार में मांस मछली, अडे और कीट-पतंगों तथा छोटे-मोटे जीव जन्तुओ का भक्षण करना आता है।

शाकाहार की प्रशंसा आर्यो के सभी ग्रंथ आदिकाल से करते आरहे हैं। इसी भावना के अनुरूप ९० प्रतिशत हिन्दू (आर्य) मांस को त्याज्य और अभक्ष्य मानते हैं। १० प्रतिशत भूले भटके लोग जो मासाहार कर भी लेते है वे भी पर्वो व शुभ अवसरो पर अपनी रसोई मे मास नही पकाते हैं। जबकि वैदिक धर्म या इसकी शाखाओं और प्रशाखाओ को छोडकर अन्य मतावलम्बी मांसाहार को एक अधिकार व प्रतिष्ठा की बात समझते हैं। प्रस्तुत लेख मे मैं शाकाहार की श्रेष्ठता व उपादेयता को ऐसे सरल वैज्ञानिक तथ्यो के आधार पर सिद्ध करना चाहता हू जिन्हे आम आदमी बिना परीक्षण के समझ सकता है। ऐसा मुझे यों करना पड रहा है क्योंकि आजकल जनता जनार्दन को मानसिकता 'वैज्ञानिक' बन गई है, जो विज्ञान की कसौटी पर पूरा उतरे वही सही, शेष सब गलत माना जाता है।

आइये, तो परीक्षण पहले शरीर-रचना विज्ञान से आरम्भ करें। प्रकृति ने प्रत्येक जीव-जन्तु के शरीर की रचना उसकी आवश्यकता और जीवनयापन की क्रियाओं को सक्षम रखकर की है। शाकाहारी जीवों के अंग प्रत्यग इस प्रकार के बनाये है जिनसे वे फल, मेवे और तरकारी को ही काट सकें, चबा सके और उनके उदर उस भोजन को अच्छी प्रकार पचा सके। इस नियम के अनुसार मनुष्य के दात चपटे, जबडे अर्धवृत्ताकार और आते लम्बी होनी है ताकि वह शाकाहार का भक्षण व चर्वण सुगमता मे कर सके। उसको आँते लम्बी व कोमल होती हैं। ताकि भक्ष्य पदार्थो का पाचन स्वाभाविक गति व रीति से हो सके। उसके हाथ व पैर होते है, पजे नही। मनुष्य के नखों की बनावट भी नोकदार नही बल्कि अर्धचन्द्राकार होती है। इसके विरुद्ध मासाहारी जीवों के दात, पजे और आंते क्रमश नोकदार, लम्बे और लघु होते हैं जो उनके आहार के लिए आखेट पकडने, नोचने और पचाने के लिए सर्वथा अनुकूल होते है। अत शरीर रचना के विचार से मनुष्य पूरी तरह शाकाहारी जीव सिद्ध होता है। मनुष्य की आकृति डरावनी नही जबकि मॉसाहरी जीव भयानक दिखाई पडते है। उनकी दृष्टि व घ्राण शक्ति अति तीव्र होती हैं।

हमारा प्रत्यक्ष अनुभव है कि कुत्ते, बिल्ली तथा इसीप्रकार के जीवों के नवजात शिशुओं के जन्म के समय आखे बन्द होती है और कई दिन तक बन्द ही रहती हैं। मनुष्य और गाय, भैंस आदि पशु जो शाकाहारी हैं उनके बच्चे पैदा होते हो आँखे खोलकर देखने लगते हैं। मानो प्रकृति यह सकेत दे रही हो कि शाकाहरी संसार मे आखे खोलकर चलते है और मासाहरी आखे बन्द करके दूसरे जीवो पर आश्रित रहते है और उनके जीवन का हनन करते हैं। जन्म से आखे खोलकर जीने वाला दूसरो की हत्या नहीं करता, जिसकी आखे बन्द होती हैं, वही दूसरो का अहित कर सकता है।

शाकाहारी जीव पानी या अन्य द्रव पदार्थों को चुस्की से पीते है। इसके विपरीत मासाहारी जीव अपनी जीभ मे गड्ढ बनाकर लप-लप पानी पीते है। आपने कुत्ते और बिल्ली को अपने घरो मे पानी पीते अवश्य देखा होगा। गाय और घोड़े आदि को पानी पिलाने का अनुभव आप को होगा ही। इन दोनों प्रकार के जीवों की पीने की प्रक्रिया और शैली का अन्तर स्वतः स्पष्ट है। मनुष्य चुस्की रीति से पानी पीता है। अत प्रकृति ने उस शाकाहार ही के लिए उत्पन्न किया है।

ग्रीष्म काल मे अथवा अधिक थक जाने की अवस्था मे शाकाहारी जीव नाक या मुह से सास लेकर हाफते है जबकि मांसाहारी मुँह से जीभ बाहर निकालकर हाफते हैं। भेंसा शुद्ध शाकाहारी जीव है गरमी के दिनों में जब हाफता है तो उसकी जीभ मुँह से बाहर निकली हुई नही होती है जबकि कुत्ता या शेर मुह खोलकर और अपनी जीभ बाहर निकालकर हाफता है। मनुष्य ऐसा नही करता अत जन्मना वह शाकाहारी है।

सृष्टि का क्रम प्रजनन क्रिया से चलता है। प्रजनन में गर्भाधान के लिए नर और मादा का मिलन आवश्यक है जिसे 'मैथुन क्रिया' कहते हैं। मांसाहारी जीवों में मैथुन क्रिया स्वान की मैथुन क्रिया के समान होतो है अर्थात् नर व मादा मैथुन के समय काफी देर तक परस्पर नत्थो रहते है। 'मैथुन' की यह अनोखी शैली शाकाहारियों को मांसाहारियों मे भिन्न सिद्ध करती है और उन्हे उस वर्ग से पृथक् ठहराती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति पुकार-पुकार कर यह कह रही हो कि मासाहारियो! तुम काम और संसार में लिप्त हो, इससे छूटना नही चाहते चिपके रहना चाहते हो। शाकाहारी निर्लिप्त है उनके कर्म त्याग से भोग करने की ओर इंगित कर रहे है। कुत्ता, बिल्ली, भेड़िया और शेर, चीता आदि सभी मांसाहारी जीवों में मैथुन इसी प्रकार से होता है चाहे उसे कोई देखे या न देखे। इस प्रसग में भी मनुष्य शाकाहारी ही ठहरता है।

यहां तक तो शरीर रचना विज्ञान के आधार पर विवेचन हुआ। अब अन्य प्रसगों में भी दोनों प्रकार के आहारों की तुलना करते हैं। हमारे आस-पास यदि किसी जीव का शरीर (मास) सड़ जाये तो वह सडान्ध या दुर्गन्ध बडी असह्य और तीव्र होती है। कभी-कभी तो उससे वमन तक हो जाने की नौबत आ जाती है। इसके विपरीत यदि कहीं पर कोई निरामिष (मांस रहित) वस्तु सड़ जाये तो उससे जो गन्ध उत्पन्न होती है, वह तीक्ष्ण और असह्य नही होती। 'हड़वए' (जहाँ मरे हुए जानवर फेंके जाते हैं) और 'हाने' (जहा मांस के लिए पशुओं का वध किया जाता है) के पास से गुजरते समय नाक बन्द करने की जरूरत पडती है जबकि वर्षा में खलिहान के निकट से हम निर्बाध गुजर जाते हैं। मांस जो बाहर सडकर इतना विकार उत्पन्न करता है, वह पेट में जाकर कोई कसर छोड़ देगा।

प्रकृति ने मानव जीवन में सरसता लाने के लिए विभिन्न ऋतुओं का सृजन किया है। हर मौसम में अलग-अलग प्रकार के फल, फूल मेवे और अन्न आदि पैदा किये हैं। यह सभी वस्तुएं सम्बन्धित ऋतु में हितकारी और जीवों के लिए अनुकूल होती हैं। जाड़े के मौसम में गाजर, मूली और गोभी सरीखी तरकारियाँ, मक्का, ज्वार और बाजरा आदि अन्न लाभकारी व स्वादिष्ट लगते हैं। ग्रीष्म ऋतु में शहतूत, आलूबुखारा, लीची आदि फल गेहूं, जौ और चना आदि अन्न तथा पोदीना, व लौकी आदि तृप्तिकारक व शामक चीजें पैदा होती है इनके अतिरिक्त कुछ चीजें ऐसी भी हैं जो वर्ष भर मिलती रहती हैं जैसे आलू आदि। शाकाहारी अदल बदल कर सभी का स्वाद चखता है तथा मौसम के अनुकूल शरीर का पालन-पोषण करता है। मांसाहारी सोचे कि मास मे यह गुण विद्यमान है क्या? जिन जीवो का मांस खाया जाता है, वे भी शाकाहारी है बिना वनस्पति के उनको भोजन नहीं मिल सकता। अत. मासल जीव का मास भी वनस्पति ही से बनता है। वनस्पति मूलभूत भोजन है और शक्ति का आदि स्रोत है।

क्रमशः

शोक समाचार

फरीदाबाद क्षेत्र के २२ आर्यसमाजों के संगठन आर्य केन्द्रीय सभा के संरक्षक व आर्यसमाज सैक्टर—७ के प्रधान श्री जगन्नाथ जी सोई का १७ मई रविवार रात्रि साढ़े तीन बजे देहान्त होगया। वे ८७ वर्ष के थे। उनका महान् व्यक्तित्व सत्य, निष्ठा, मितभाषण एवं निरभिमान के परिचायक थे। हम फरीदाबाद के सभी आर्यजन उनके जीवन से सदा प्रेरणा लेते रहेंगे। वे एक महान् समाजसेवक थे। आयु पर्यन्त वे समाज सेवा में संलग्न रहे।

आर्यसमाज सैक्टर—७ में १९ मई मंगलवार को सायं ७ बजे एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इस सभा में सैकड़ों आर्यजनों व महिलाओं ने भाग लिया। सभी ने श्री जगन्नाथ जी सोई को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की एवं दिवंगत आत्मा के लिए शांति की कामना की।

मन्त्री आर्य समाज सैक्टर—७
फरीदाबाद

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुड़ी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट नं० १, एन०आई०टी०, फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुड़गांव।

सावधान : शादी सदमा न बन जाये

प्रिय सज्जनो ! अनेक उदाहरण देखने को मिले हैं जो शादी के बाद कष्ट भोग रहे हैं या वैवाहिक सम्बन्ध तोड़ रहे हैं, मार रहे हैं, जला रहे हैं। इसका कारण है शादी से पूर्व सही जांच पड़ताल न करना। एक दूसरे से असलियत (वास्तविकता) को छुपाना और झूठा प्रदर्शन करके धोखा देना।

इन दुष्परिणामों से बचने के लिए माता-पिता एवं संरक्षक को अपनी-अपनी संतान के बारे में ठीक-ठीक जानकारी देनी चाहिए ताकि भविष्य में वास्तविकता का पता चलने पर एक दूसरे को किसी प्रकार का दुःख न हो। यदि लड़के या लड़की में गुप्त रोग है या अवश्य नुक्स है तो उसे छुपाना नहीं चाहिए अपितु स्पष्ट बता देना चाहिए।

लडका या लड़की देखते समय दहेज नही अच्छा योग्य जीवन साथी देखना चाहिए। जैसे लड़का स्वस्थ, सदाचारी तथा अपने पांव पर खड़ा (कार्यरत) होना चाहिए। ऐसे ही लडकी भी स्वस्थ, सुन्दर, सभ्य, सुशील होनी चाहिए और घर के काम-काज में दक्ष (निपुण) हो दोनों ही व्यवहारकुशल हों।

ध्यान रहे अनमेल विवाह दुःख का कारण बनता है। आयु-अन्तर की सीमा की दृष्टि में रखते हुए दोनों के परस्पर गुण, कर्म, स्वभाव मिलने चाहिए इसके लिए दोनो को एक दूसरे को देखने और बात करने का समय देना चाहिए। लड़का लड़की एक दूसरे को पसन्द करते हैं या नही, यह बहुत आवश्यक है।

दहेज के भूखे लालची लोगों से वैवाहिक सम्बन्ध मत करो। उनसे दूर रहो। चरित्र ही सबसे बड़ी दौलत (धन) है। चरित्रवान् को ही अपनाओ, जीवन को सुखी बनाओ।

स्वामी दयानन्द जी ने एक बात इसी सम्बन्ध में बहुत बढ़िया बताई है कि सम्बन्ध निकट न करके दूर स्थानों में करना चाहिए। समीप होने पर प्रेम समाप्त हो जाता है। देवराज आर्यमित्र

जिला—फरीदाबाद आर्य समाज बल्लभगढ

विवाह संस्कार

श्री वेदव्रत शास्त्री (आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक) के सुपुत्र श्री विजयकुमार का विवाह संस्कार श्री ओमप्रकाश, ककाना (सोनीपत) की सुपुत्री प्रतिभा के साथ वैदिक रीति से श्री पं० राजकुमार शास्त्री द्वारा १४ जून १९९२ के दिन सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर नीचे लिखे अनुसार दान दिया गया —

१०१ रु० कन्या गुरुकुल खानपुर, सोनीपत।
१०१ रु० गुरुकुल झज्जर रोहतक।
१०१ रु० आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा।
१०१ रु० दयानन्दमठ रोहतक। —केदारसिंह आर्य

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय संस्था है। म० कक्षा से लेकर विद्यालंकार बी० ए० तक शिक्षा देने का प्रबन्ध है।

उच्च प्रशिक्षण शिक्षित वर्ग- पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्र-कला, साईंस, संगीत, गृह विज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि सस्था को आधारभूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान, आधुनिक सुविधाओं सहित बडे छात्रावास, तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ, निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एवं इन्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम तथा तृतीय वर्ष में दाखिल हो सकती है। शिक्षा नि:शुल्क दी जाती है। ८ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव १०/- भेजकर नियमावली मंगा सकते है।

आचार्या
—दमयन्ती कपूर

महर्षि दयानन्द, मूर्तियां एवं आर्य नेता

"हैं इकतिदार की कुर्सी पर जो लोग
न जाने क्यों इन्हे ऊंचा सुनाई देता है।"

स्वामी जी के जीवन का अधिक समय मूर्तिपूजा के खण्डन में व्यतीत हुआ और फिर वह दृश्य भी सामने आया जब लोगों ने एक-एक करके अपने पूजनीय देवी देवताओं की मूर्तियों को नदियों में बहा दिया। आर्यसमाज भी कहीं एक सम्प्रदाय का रूप प्राप्त न कर ले और उनके अनुयायी उन्हे गुरु मानकर पूजा न करने लगे, इस विषय में स्वामी जी बहुत सावधान थे। बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना हो जाने पर श्री हरीशचन्द्र चिन्तामणि ने उनकी फोटो लेनी चाही। फोटो की अनुमति तो स्वामी जी ने दे दी, पर उन्होंने विशेष रूप से यह आदेश दे दिया कि आर्यसमाज मन्दिर में उनकी फोटो न रखी जाये। ऐसा आदेश देने का आशय बिल्कुल स्पष्ट है। स्वामी जी को ऐसा अन्देशा था कि कहीं आर्यसमाजी भी उनकी मूर्तियों एव चित्रों की पूजा आरम्भ कर दें। आज आर्यसमाज का दुर्भाग्य है कि उसके नेता स्वार्थवश इस मूर्ति लगाने के कार्यक्रम की ओर अग्रसर हुए हैं। वे अपने जीवन में ऐसे कुछ बुत सार्वजनिक पार्कों में, चौको में स्थापित करके फिर अपने बुत शिक्षण संस्थाओ, सभा कार्यालयों और अ त मे आर्यसमाजों में स्थापित करने की प्रेरणा देगे। जब स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम आदि के बुतों पर कोई सिन्दूर का टीका लगायेगा, कोई इनके गले में क्या-क्या डालेगा, कोई इन बुतों के पास दीप जलायेगा, कोई प्रसाद चढाएगा और फिर कोई पुजारी बाबा बनकर इनके पास बैठकर लोगों को मन्नते पूर्ण होने की आशा बंधायेगा, तो फिर केवल ऋषि भक्तो को असीम कष्ट होगा जिस का वर्णन शायद शब्द न कर सके। ये नेता लोग तो अपनी नेतागिरी चमका कर अपना और अपने प्रियजनों का बुत लगवाकर अमर हो जाएंगे इन्होंने वैदिक संस्कृति, महर्षि के मन्तव्यों और आर्यसमाज से क्या लेना। समस्त आर्यजगत् को इनसे निवेदन करना चाहिए कि ये नेता महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द के बुतों की आड न ले, केवल अपना और अपने प्रियजनो का ही बुत लगाकर आर्यसमाज को कृतार्थ करे। युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द, अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द तो मनुष्य जाति पर किए गए उपकारो और बलिदानो से ही अमर है, उनको प्रसिद्धि पाने के लिए बुतो की नही लगनशील, त्यागी तपस्वी आर्यो की आवश्यकता है। किसी शायर ने खूब कहा है

'बशर जिस वक्त ताकत के नशे मे चूर होता है,
खुदा तो एक तरफ, खुद से भी कोसो दूर होता है।

देशबन्धु चोपड़ा एम ए आर्य सदन
न्यू माडल टाऊन फगवाडा

विवाह में शराब का सेवन व बारात मे नाचना बंद करने का फैसला

सोनीपत, १० जून (सपरा) गत दिवस यहाँ तहसील कोट अई बिरादरी की एक विशेष बैठक डा० देव रतन मदान की अध्यक्षता में हुई जिसमें समाज सुधार सम्बन्धी कुछ प्रस्ताव पास किए गए जिनका विवरण इस प्रकार है : इस बिरादरी के सभी सदस्य अपने घरों मे होने वाले विवाह-शादी, मांगलिक कार्यो पर शराब नही पियेंगे और न ही पिलायेंगे। विवाह-शादियो में बहू-बेटियों का सडकों पर नाचना इत्यादि भद्दे प्रदर्शन का पूर्ण रूप से बहिष्कार करेंगे। बिरादरी के किसी सदस्य की बहू यदि ससुराल छोड़कर मायके चली गई है या बिरादरी की बेटी ससुराल वालो से तंग आकर मायके आ गई है, दोनो परिस्थितियों में बिरादरी समझौता करा कर उसे पुनः बसाने के लिए भरसक प्रयत्न करेगी। इस बैठक मे यह भी फैसला किया गया कि बिरादरी के सभी सदस्य इन निर्णयों का पूरी तरह पालन करेंगे और सभी समुदायों की अन्य बिरादरिया भी इस बारे में सहयोग देगी ताकि समाज में फैलती जा रही इन कुरीतियो के फलस्वरूप होने वाले दुष्परिणाम से बचा जा सके। पंजाब केसरी

पानीपत में नशामुक्ति अस्पताल खोला जाएगा

संवाद सहयोगी

पानीपत, १२ जून। मानव कल्याण कार्यक्रम के अंतर्गत जिले में नशे के कारण बढ़ती हुई बीमारियों की रोकथाम करके लोगों को नशे से छुटकारा दिलाने के लिए जिला रेडक्रास सोसोयटी, द्वारा शीघ्र ही नशामुक्ति अस्पताल खोला जाएगा।

यहां स्थानीय रेडक्रास सोसायटी के प्रांगण में ८ जून को उपायुक्त एवं जिला रेडक्रास सोसायटी के अध्यक्ष कंवर आर. पी. सिंह ने विश्व रेडक्रास दिवस के अवसर पर रेडक्रास सोसायटी द्वारा आयोजित समारोह में जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि इस अस्पताल में नशा से पीडित रोगियों का मुफ्त उपचार किया जाएगा, जिस पर सोसायटी चालू वर्ष में लगभग ११ लाख रुपये व्यय करेगी। श्री सिंह ने आगे कहा कि रेडक्रास सोसायटी बाढ, अकाल, सूखा, भूकम्प आदि दैवी आपदाओं के समय से पीडित व्यक्तियों की सहायता के अतिरिक्त घायलों व रोगियों की उचित देखभाल, निर्धन असहाय व विकलांगों को सहायता प्रदान करना और ब्लडबैंक व प्राकृतिक चिकित्सा आदि जन कल्याण कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाती है।

दहिया खाप द्वारा शराब के सेवन पर प्रतिबन्ध लगाने का फैसला

सोनीपत, १० जून (त्यागी) जिला सोनीपत की दहिया खाप ने शराब के सेवन एवं शादियों में नाच-गाने पर प्रतिबन्ध लगाने का फैसला किया है। इस संदर्भ में गत दिवस गांव किढ़ोली-पहलादपुर में खाप की एक आवश्यक बैठक खाप के प्रधान रामफल सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस मौके पर हरयाणा समाज कल्याण राज्य मंत्री हुकमसिंह भी मौजूद थे। बैठक में खाप के प्रमुख लोग भी शामिल हुए।

पंचायत में गाव बरोना तथा गोपालपुर के नागरिकों में चले आ रहे झगड़े का आपसी समझौता भी कराया गया तथा गाव बरोना का सामाजिक बहिष्कार रद्द किया गया। ज्ञातव्य है कि बरोना के लोग पिछले दिनों दहिया खाप की पंचायत में शामिल नही हुए थे, जिसके परिणामतः पचायत ने गांव बरोना का सामाजिक बहिष्कार कर दिया था।

पंचायत मे हुए फैसले के अनुसार उक्त दोनों गांव के लोग-अपने फौजदारी के केस वापस लेने पर सहमत हो गए हैं। ग्राम पंचायत गोपालपुर से ग्राम पचायत बरोना से आग्रह किया कि वह झगडे में दोषी व्यक्तियो का पता लगाएं और अपने स्तर पर कार्रवाई के संदर्भ में निर्णय करे।

इसी बीच नशा विरोधी समिति के जिला अध्यक्ष ओमप्रकाश सरोहा ने बताया कि जो भी व्यक्ति पंचायत के आदेशों की उल्लंघना करेगा उसके विरुद्ध विशेष कार्रवाई की जाएगी, जिसमें ११०० रुपए जुर्माने का प्रावधान है और सम्बन्धित व्यक्ति फिर भी नहीं मानता तो उसका सामाजिक बहिष्कार किया जा सकता है।

पंजाब केसरी

अर्द्ध शताब्दी महा सम्मेलन

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जि० रेवाड़ी

दिनांक ११, १२, १३ सितम्बर १९९२

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर अपना ५० वां वार्षिकोत्सव अर्द्ध शताब्दी महा सम्मेलन के रूप में मनाने जा रही हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री
सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

आर्यसमाज की वेद–विषयक चाहना

वेद आर्यसमाज का मूलाधार है। आर्यसमाज की स्थापना ही वेद की नींव पर की गई है। उसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य ही भूली-बिसरी वेद-विद्या का विश्व में प्रचार-प्रसार करना है। बम्बई में जिस समय आर्यसमाज की स्थापना की गई थी, उस समय पंजीकर्त्ता रजिस्ट्रार को जो घोषणा-पत्र दिया गया था, उसमें आर्यसमाज का उद्देश्य अखिल विश्व में वेद-विद्या का प्रचार-प्रसार करना ही घोषित किया गया था। स्पष्ट है कि वेद को आधार मानकर स्थापित किये जाने वाले आर्यसमाज की यह चाहना है कि विश्व में सर्वत्र वेद का प्रचार हो जावे। आर्यसमाज चाहता है कि मनुष्य-मात्र वेद का अनुयायी बन जावे, वेद के यथार्थ स्वरूप को समझे, उसके सही अर्थों को जाने और तदनुसार आचरण करे। आर्यसमाज संसार को वेद के झण्डे तले लाने के लिए प्रयत्नशील भी है। इसके लिए उसने चारों वेदों का आर्य-भाषा हिन्दी में भाष्य करा प्रचारित किया है, ताकि संस्कृत से अनभिज्ञ व्यक्ति भी वेद को समझ सकें।

प्रश्न उठ सकता है कि आर्यसमाज वेद का प्रचार क्यों चाहता है? इसलिए कि आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है। आर्यसमाज यह मानता है कि वेदानुसार जीवनयापन से मानव का कल्याण हो सकता है। मानव-मात्र का कल्याण हो, इसके लिए मानव मात्र का वेदानुयायी होना आवश्यक है। यही कारण है कि आर्यसमाज वेद का प्रचार चाहता है। आर्यसमाज की मान्यता है कि केवल वेद ही निर्भ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान है। वही समस्त ज्ञान-विज्ञान और भाषा का आदि मूल है। वेद ही धर्म का मूल है। वेद में मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि हेतु समस्त ज्ञान-विज्ञान एवं कर्तव्य कर्मों का विशद निरूपण है। वेद की अपनी यह विशेषता है कि वह मानव के लोक और परलोक दोनों की सिद्धि की योजना प्रस्तुत करता है। परलोक के लिए लोक की अवहेलना वेद को स्वीकार्य नहीं। साथ ही लोक-सिद्धि में ही लिप्त रहने की बात भी वेद को मान्य नहीं। वह लोक और परलोक दोनों के सुधरने की बात कहता है।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को मनुष्य के लिए परम पुरुषार्थ कहा गया है। इन चारों को अपने पुरुषार्थ के द्वारा सिद्धि करना ही मानव का लक्ष्य है। वेद इस लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग सुझाता है। वेद के बताये पथ पर चलकर कोई भी व्यक्ति इस पुरुषार्थ-चतुष्टय को प्राप्त करने में सफल हो सकता है। वेद हमें जीने का सही ढंग बताता है, वह हमें सही अर्थों में मानव अथवा मनुष्य बनने की प्रेरणा देता है। वेद संसार से भागने की बात नहीं कहता अपितु त्यागपूर्वक भोग की बात कहता है। यही कुछेक वे कारण हैं जिनसे प्रेरित होकर आर्यसमाज वेद के प्रचार-प्रसार में लगा है और चाहता है कि संसार वेद का अनुयायी हो जावे।

आर्यसमाज वेद का प्रचार इसलिए भी चाहता है कि इससे मत-मतान्तरों के परस्पर रगड़े-झगड़े समाप्त हो सकते हैं। आर्यसमाज की मान्यता है कि जैसे सूर्य के उदय हो जाने पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेकों दीपकों को कोई आवश्यकता नहीं रहती, वैसे ही वेद–सूर्य के उदय हो जाने पर मतमतान्तर रूपी दीपकों की भी कोई आवश्यकता शेष नहीं रह जाती। अतः जब वेद का प्रचार होगा तो मतमतान्तरों के रगड़े-झगड़े स्वतः ही मिट जायेंगे जैसे सूर्य के उदय होने से तारे तिरोहित हो जाते हैं। और जब मतमतान्तर के रगड़े-झगड़े मिट जावेंगे तो संसार में सुख-शान्ति का साम्राज्य हो जावेगा। आर्यसमाज की मान्यता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और सत्य विद्या के बिना मनुष्य अन्धे के समान ही होता है। इसलिए वेद को सनातन ज्ञान का चक्षु कहा गया है। महर्षि दयानन्द ने वेद के आधार पर ही एकता स्थापित करने के विभिन्न प्रयत्न किये थे। यह और बात है कि लोगों ने महर्षि की बात नहीं मानी और वेदों को स्वीकार नहीं किया। हमारा विश्वास है कि लोग यदि महर्षि की बात मान लेते तो मजहब के नाम पर होने वाले झगड़े कब से मिट गये होते।

भ्रामक विचारों का निराकरण—

आर्यसमाज केवल वेद–विद्या का प्रचार-प्रसार करना ही नहीं चाहता, अपितु वेद विषयक सभी भ्रामक विचारों एवं धारणाओं का निराकरण भी करना चाहता है। आर्यसमाज की स्थापना के पूर्व वेद गडरियों के गीत एवं अनर्गल प्रलापों की पुस्तक तथा धूर्त्त, भाण्ड एवं निशाचरों की कृति आदि तक कह डालने का दुस्साहस कर डाला था। आज भी वेद के सम्बन्ध में मिथ्या एवं भ्रामक विचारों का प्रसार तीव्रता से हो रहा है। आज भी वेद के सम्बन्ध में मिथ्या धारणायें बद्धमूल हैं कुछ लोग वेद को अपौरुषेय न मानकर ऋषियों की रचना मानते हैं। कुछेक वेद को सृष्टि के प्रारम्भ का न मानकर कुछ लाख वर्ष पूर्व की रचना बताते हैं। आर्यसमाज का कथन है कि वेद ऋषियों की रचना न होकर ईश्वर कृत अर्थात् अपौरुषेय हैं। आर्यसमाज यह मानता है कि वेद का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में ही दिया जाता है। वेद ज्ञान स्वयं में परिपूर्ण होता है अतः बीच में किसी पूरक ज्ञान की भी कोई आवश्यकता नहीं होती। अतः यह मानना कि समय-समय पर ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होता रहता है, सर्वथा भ्रान्त धारणा है। आर्य समाज ऐसी धारणाओं का बहिष्कार करना चाहता है।

आर्यसमाज वेदाध्ययन का अधिकार मानवमात्र को देता है। वह चाहता है कि मानवमात्र बिना किसी भेद-भाव के विधिवत् वेदाध्ययन करे। आर्यसमाज चाहता है कि वेदाध्ययन के मार्ग में जाति भेद अथवा लिंग-भेद की भद्दी भावनायें बाधक न बनें। आर्यसमाज का तर्क है कि जब ईश्वर सर्वथा पक्षपात–रहित है और पूर्ण न्यायकारी हैं तो फिर वह स्त्री और शूद्र का भला नहीं चाहता क्या? जो उन्हें अपने पावन एवं लोक-कल्याणकारी ज्ञान से वंचित रखता है। आर्य-समाज के यशस्वी संस्थापक का तो यहां तक कहना है कि—"जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्र आदि को पढाने-सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, चन्द्र, सूर्य और अन्न आदि पदार्थ सबके लिये बनाये हैं, वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किए हैं।" (सत्यार्थ प्रकाश,)

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रेरणा का परिणाम

प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री, एम. ए. (संस्कृत हिन्दी) छोटूराम किसान कालिज जीन्द

ईश्वरीय संरचित योनियों में मानव-योनि श्रेष्ठ है। मानव को ईश्वर ने बुद्धि प्रदान की है। बुद्धि-बल से वह असम्भव को सम्भव कर लेता है। जैसे दीप से दीप प्रज्वलित होता है वैसे मानव-दीप से मानव-दीप प्रकाशित होता है। यह क्रम प्रेरणा कहा जाता है। प्रेरणा मनुष्य को देव बनाती है और दानव भी। सत् प्रेरणा से मानव ऋषि व देव कोटि को प्राप्त करता है। शिशु जन्म लेकर माता से प्रेरणा लेता है। उससे बोलना, चलना-फिरना, खाना-पीना आदि सीखता है। माता में जो गुण होते हैं वह उनको धीरे धीरे ग्रहण करता है। शिक्षित माता बच्चे को शिक्षा के लिए प्रेरित करती है। किशोरावस्था मे पिता से प्रेरणा मिलती है पिता बालक को किसी न किसी लक्ष्य की प्राप्ति की ओर बढने के लिये प्रेरित करता है। वातावरण भी बालक के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रेरणा का सिलसिला जीवन का ताना-बाना है। गुरु वशिष्ठ की प्रेरणा से दशरथ-पुत्र राम मर्यादा पुरुषोत्तम राम विश्रुत हुए। शुद्धोधन के सुपुत्र सिद्धार्थ शवयात्रा व वृद्ध को देखकर महात्मा बुद्ध बने। माता जीजाबाई से प्रेरणा लेकर शिवा जी महाराष्ट्र केसरी देशभक्त विख्यात हुए। शिव रात्रि के दिन शिव का उपवास रखनेवाला बालक मूलशंकर अन्धेरी रात्रि में शिवपिण्डी पर कूदते चूहों को मल-मूत्र त्यागते तथा भोग्यपदार्थों को जूठा करते देखकर सोचने लगा, जो (शकर) इन छोटे-छोटे चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता, वह सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् परमात्मा कैसे हो सकता है। इस घटना से प्रेरणा लेकर वह सच्चे शिव की खोज में ससार के सुखों को त्यागकर घर से निकल पड़ा और अन्त मे गुरु विरजानन्द दण्डी से सच्चे शिव की शिक्षा प्राप्त कर स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से संसार से अज्ञान, अन्याय तथा अभाव को मिटाने का संकल्प लेकर कार्य-क्षेत्र में उतरे। उन्होने एक जयघोष लगाया—हे भारत माता के लोगो! यदि तुम कल्याण चाहते हो तो वेदों की ओर लौटो। यह सत्य है, जिस पर चलकर तुम अपना कल्याण कर सकते हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेदोपदेश सुनकर नास्तिक मुन्शीराम आस्तिक स्वामी श्रद्धानन्द कहलाए। स्वामी श्रद्धानन्द के उपदेशों को सुनकर फूलसिंह अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह नाम से प्रसिद्ध हुए। स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रेरणा लेकर भक्त फूलसिंह जी ने भैंसवाल (कला) के वीरान जगल में बालको के लिये गुरुकुल तथा खानपुर कला के जगल मे कन्याओ का गुरुकुल खोला। भक्त फूलसिंह जी के जीवन से क्षेत्र के अनेकों व्यक्तियों ने प्रेरणा लेकर अपने जीवन का निर्माण किया। श्री महेश जी शास्त्री (स्नातक गुरुकुल भैंसवाल) के पिता श्री केहर सिंह जी सीख निवासी भक्त जी के विशेष अनुयायी थे। श्री केहर सिंह ने अनेक लोगों को अपने बच्चों को गुरुकुल में प्रवेश कराने की प्रेरणा दी। जिला जीद के अन्तर्गत शाहपुर गांव के चौ. जुगलाल जी सीख में विवाहित थे। श्री केहरसिंह ने चौ० जुगलाल जी को विशेष आग्रहपूर्वक कहा कि तुम अपने दोनों बालकों को गुरुकुल में भेज दो, पढ़-लिखकर विद्वान् बन जायेंगे, जीवन अमर हो जायेगा। प्रेरित होकर चौ जुगल जी ने अपने पुत्र मुसद्दी को गुरुकुल भैंसवाल में में पढने के लिये दाखिल करवा दिया। गुरुकुल में यज्ञोपवीत संस्कार करके आचार्य युधिष्ठिर (स्वामी व्रतानद) जी ने इसका महामुनि नाम रक्खा। बड़े पुत्र चन्दू लाल को घर पर ही काम के लिये रख लिया।

गुरुजनों के पावन चरणों में बैठकर महामुनि जी ने अपनी पूर्ण शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल भैंसवाल में पाई। पठन काल से ही ये दूसरे ब्रह्मचारियों से भिन्न प्रकृति के थे। शान्त स्वभाव, गम्भीर चिन्तन तथा गुरु-शुश्रूषा इनकी निजी विशेषता थे। सत्य, अस्तेय, शौच, साधना और संयम आदि गुणो को अपने जीवन में ढालने का ध्येय बनाया। सेवा-भाव में विशेष अभिरुचि अपनाई। गुरुकुल के उत्सव पर संन्यासी-महात्माओं की सेवा का कार्य महामुनि ब्रह्मचारी को सौपा जाता था। ये उनकी सेवा में तनिक भी न्यूनता नही आने देते थे। महात्मा भक्त फूलसिंह जी की इच्छा थी कि मेरे गुरुकुल मे महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे बाल ब्रहमचारी बने। वे विद्वान् बलवान् और चरित्रवान् हों। गाव-गांव जाकर लोगों के जीवनों को वैदिक धर्म से ओत-प्रोत करें। चरित्रवान् युवक तैयार करें। देश-देशान्तर में घूम-घूमकर वैदिक धर्म का प्रचार करें। भक्त जी की हार्दिक भावना को महामुनि जी ने अच्छी प्रकार समझा। उन्होंने सम्वत् १९९० में गुरुकुल के दूसरे स्नातक के रूप में दीक्षा पाई। उसी वर्ष गुरुकुल के उत्सव पर हजारों लोगों की उपस्थिति में इन्होंने प्रतिज्ञा की कि मैं आजीवन ब्रहमचारी रहूगा और गुरुकुल की निष्काम भाव से सेवा करूंगा। भक्त फूलसिंह जी अपने ब्रहमचारी महामुनि की इस भीष्म प्रतिज्ञा को सुनकर अवाक् रह गए। उनको इस पर पुनर्विचार के लिए कहा। लेकिन दृढ़निश्चयी ब्रहमचारी महामुनि अपनी कही हुई बात पर अडिग रहे। भक्त जी का हृदय हर्षोल्लास से गद्-गद् हो गया। उन्होंने ब्रहमचारी जी को अपने गले से लगा लिया। भक्त जी ने उनके इस त्याग को देखकर जीवन की सफलता का अनुभव किया।

महामुनि जी के गुरुकुल भैंसवाल के लिये समर्पित जीवन को देखकर उनके सहपाठी श्री विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड व श्री धर्मभानु जी ने भी अपनी सेवाये गुरुकुल को सौंप दी। आचार्य विष्णुमित्र जी गुरुकुल में शिक्षक तथा मुख्याधिष्ठाता पदों पर रहे। जीवन के अन्तिम समय में वे गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर के उपकुलपति पद पर रहे। आचार्य जी उच्चकोटि के कथावाचक तथा कुशल वक्ता थे। मधुर स्वभाव तथा मिलनसार थे। क्रोध को वशीभूत किये थे। इसी श्रृंखला से प्रेरित हुई भक्त फूलसिंह जी की बड़ी सुपुत्री आदरणीया सुभाषिणी ने अपना अपना समस्त जीवन कन्या गुरुकुल खानपुर की सेवा करने का निश्चय किया बहिन सुभाषिणी जी पुरुषार्थ का ही परिणाम है कि आज कन्या गुरुकुल खानपुर मे भक्त फूलसिंह डिग्री कालिज व ट्रेनिंग कालिज, बहुतकनिकी शिक्षा संस्थान तथा चौ० माडूसिंह आयुर्वेद कालिज आदि सस्थाएं चल रही हैं। इनमें अनेक प्रान्तों की हजारों लड़कियां शिक्षा लेकर अपने जीवन का निर्माण कर रही हैं। सुभाषिणी जी आज भी इन सभी संस्थाओं की आचार्या हैं, प्रबन्धक हैं। शिक्षा जगत् में इनके महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय उपलब्धियों एवं कार्यों के कारण भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण से अलंकृत किया। इनके पूज्य पिता भक्त फूलसिंह जी ने कन्या गुरुकुल के रूप में जो छोटा सा पौधा लगाया था आज वह बहिन सुभाषिणी जी के पुरुषार्थ से हरा-भरा लहराता विशाल वट-वृक्ष है। हरयाणा प्रान्त ही नही बल्कि सम्पूर्ण भारत बहिन सुभाषिणी आचार्या के इन महान् कार्यों का ऋणी है। यह स्त्री जाति की महान् सेवा कार्य है। भगवान् इन्हे दीर्घायु प्रदान करें।

भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त सन् १९४७-४८ में श्री महामुनी जी को गुरुकुल की प्रबन्ध समिति ने अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह जी की इच्छा के अनुकूल गुरुकुल भैंसवाल के आचार्य पद पर सुशोभित किया। वे इस पद पर आजिवन रहे। कभी आचार्य-पद से चिपके नहीं। बल्कि आचार्य-पद को जिम्मेदार सेवक के रूप मे आजीवन निभाते रहे। पद पाकर कदापि अहं नही किया। दिन-रात ब्रह्मचारियों को देख-भाल व पालन-पोषण मे लगे रहे। दूसरे शिक्षक सहयोगियों के साथ स्वयं भी पूरे समय ब्रह्मचारियों की कक्षाएं पढाते थे। बल्कि अन्यों की अपेक्षा अधिक विषय पढ़ाते थे। उनका खान-पान बहुत ही सामान्य था। वेश-भूषा मोटी खादी की थी। प्रतिदिन खेत मे काम करते थे। गुरुकुल में जहां कहीं गन्दगी देखते उसे स्वयं झाड़ू से साफ करते थे। छोटे-छोटे बालकों के वस्त्र स्वयं धोते थे। ब्रह्मचारी व अन्य सभी कर्मचारी उनका आदर-सम्मान करते थे। रिक्त समय में ब्रह्मचारियों के साथ खेलते थे, उनको हसाते भी थे। उनसे शिक्षित असंख्य युवक आज सरकारी तथा अर्धसरकारी सेवा में कार्य-रत हैं। कुछ तो सेवा-कार्य से मुक्त भी हो गये हैं। प्रो. डा अभिमन्यु (कासण्डा), डा. भीमसिंह (सुताना-पानीपत) पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के सस्कृत विभाग में हैं। डा. रणवीर सिंह व डा अरविन्द कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में हैं। प्रो. प्रकाशवीर दलाल (माण्डौठी), डा. ईश्वरदत्त (शाहपुर-जीन्द), प्रो. दयासागर (कण्डेला), प्रो. जयपाल रेढू (शाहपुर),

(शेष पृष्ठ ७ पर)

मद्य-निषेध और हरयाणा सरकार

डॉ० रमेश मेहता वरिष्ठ प्राध्यापक जाकिर हुसैन कालिज, नई दिल्ली

गतांक से आगे—

जनता के जीवन की गुणवत्ता सुधारने के लम्बे-चौड़े दावों के बावजूद, मद्य के व्यापक प्रसार और सहज-सुलभता के कारण पंचवर्षीय योजनाओं का अभीष्ट लाभ आम जनता को कहाँ मिल सकता था ? इसका परिणाम यह हुआ कि भारत के निर्दोष जन-समूह को और अधिक बीमार तथा और अधिक दिवालिया बना दिया गया है।

स्थिति की एक विडम्बना तो यह है कि झोंपडपट्टियो गन्दी बस्तियों सूखाग्रस्त गावों की एक बहुत संख्या ऐसी है जिसे पेयजल की सुविधा भी उपलब्ध नही है, किन्तु उन्ही अभावग्रस्त लोगों के बीच मदिरा सब कही पाँव-पाँव पहुंच गई है ;

दूसरी विडम्बना यह है कि हालाकि सभी धर्म मद्य-सेवन की कठोरतम शब्दो मे निन्दा करने में बढ-चढकर भाग लेते हैं, तथा इनके तथाकथित धार्मिक नेता लाखों उत्पादशील लोगो को विभाजित करने और उन्हे एक-दूसरे को मारने के लिए उकसाने का कोई-न-कोई मुद्दा पैदा करते रहते हैं, किन्तु वे लोगों को सुधारने तथा इस प्रकार के निकृष्ट शोषण से बचाने के लिए शायद ही कभी सोचते है।

इन सारी स्थितियों को देखते हुए, हरयाणा राज्य ने तो सारी सीमाए ही तोड़ दी हैं। उसने मद्य की दुकानों के ठेकेदारों को खुली छूट दे दी है कि वे अन्य गांवों मे भी अपनी शाखाएं खोले, एक बार मे प्रत्येक व्यक्ति को बारह बोतलों की आपूर्ति करे, उन्हे यह भी अनुमति दी गई है कि वे खुली चौड़ी सड़कों पर स्थित अपनी मद्य की दुकानो के सामने बाड़े लगा ले ताकि वहां इन सड़कों पर आने जाने वाले स्त्री पुरुषों की सुविधा और प्रतिष्ठा की कीमत पर मद्यपान करनेवाले बैठ सकें, मद्य पी सकें और आनन्द उठा सके।

हरयाणा सरकार ने ग्राम-पंचायतों को प्रत्येक बेची गई बोतल पर एक रुपया पंचायत फण्ड मे देने के प्रलोभन की बात भी कही है। इसी प्रकार नगर निकायों को प्रत्येक बोतल पर ढाई रुपये देने का प्रस्ताव रखा है। मद्यपान की बुराई के लिए प्रोत्साहन एक कल्याण-राज्य का दावा करने वाली सरकार के लिए कैसे उचित कहा जा सकता है।

जहा तक अवैध शराब के प्रचलन का प्रश्न है। यह जाना-माना तथ्य है कि जहा मद्य उक्त से बेचा जाता है ऐसे क्षेत्र की अपेक्षा मद्य-वर्जित क्षेत्र मे अवैध शराब का मिलना और उसका सेवन करना कही अधिक कठिन होता है। किन्तु हरयाणा सरकार इस सच्चाई को कैसे मान सकती है।

हरयाणा सरकार द्वारा उठाए गए इन सभी कदमों का कुल जमा यह प्रभाव है कि अब मदिरा सभी गावो और सभी घरों में पहुंच गई है। फिर चाहे वहाँ पहले से ही कोई नियमित शराब की दुकान रही हो या नही—इसका तो प्रश्न ही समाप्त हो गया। यहा तक कि हेरोईन, स्मैक ब्राउन शुगर, गाजा जैसे घातक एव मादक पदार्थ भी हरियाणा के गांवों मे प्रवेश कर गए हैं। कुछ भूतपूर्व सैनिक भी इस व्यापार में सलग्न हैं। वे यहा वायु सैनिक मण्डलों, मल्लाहों तथा सैनिकों की कैन्टीनों से घटी हुई कीमत की शराब लेकर बेचते हैं।

एक बात तो साफ है आज हरयाणा में जो कुछ घटा, वह कुछ समय बाद अन्य सभी राज्यों में भी होगा। इसलिए, हरयाणा सरकार की नई आबकारी नीति का जोरदार विरोध होना चाहिए।

मद्य के सामाजिक प्रभाव को आधार बनाकर भारत में निजी संगठनों तथा विशेषकर 'अखिल भारतीय मद्यनिषेध परिषद्' ने जो उद्घाटित किया है वह सर्वथा चौकाने वाला तथ्य है निम्नलिखित आंकड़ों पर दृष्टि डालिए —

१	यौन अपराधों के	६०% मामलों में
२	चोरी के	६५% मामलों मे
३	मोटर वाहनों की चोरी के	६८% मामलों में
४	बलात्कार के अपराध के	६९% मामलो में
५	सेंधमारी के	७०% मामलों मे
६	डकैत के	७४% मामलों मे
७	प्रहार के	८०% मामलों में
८	अग्नेयास्त्रों से गोली चलाने के	८५ प्रतिशत मामलों में

९ तेजधार वाले अस्त्रों से प्रहार के ९० प्रतिशत मामलों में लिप्त अपराधी मद्य के प्रभाव में पाए गए। ८० प्रतिशत मामलों में सडक दुर्घटनाओ के पीछे सबसे प्रमुख कारण भी मद्यपान रहा है। इन आकडों से मद्यपान और उसके भयकर परिणामो का एक लोमहर्षक परिदृश्य उपस्थित होता है। आखिर कहा खडी है हरयाणा सरकार।

गांधी ने इसे आर्थिक दृष्टि विश्लेषित करते हुए कहा था—"मद्य-निषेध को केवल नैतिक या सामाजिक सुधार के रूप मे नही देखा जाना चाहिए। हमारी मुख्य चिन्ता गरीबी रेखा के नीचे के जन-समूह के आर्थिक सुधार की ही होनी चाहिए।" भारत सरकार के अपने आकडों के अनुसार भारत की जनसंख्या का कम से कम ६० प्रतिशत गरीबी रेखा के नीचे जीता है। गैर-सरकारी आकडे बताते हैं कि जनसख्या का ७५ प्रतिशत मे भी अधिक गरीबो रेखा के नीचे जीना है। क्या हरयाणा सरकार इस गरीबी रेखा के नीचे लाखो-करोडो को और आश्रय देना चाहती है।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सन् १९७५ में अपने एक निर्णय मे विश्लेषित किया था—

"ऐसा निर्णय करने के तीन मुख्य कारण हैं कि मदिरा का व्यवसाय करना या व्यापार चलाना नागरिको का कोई मूलभूत अधिकार नही हैं। पहली बात, हानिकर अथवा खतरनाक वस्तुओ का व्यापार निषिद्ध करते हुए सार्वजनिक नैतिकता का प्रवर्तन करने की राज्य के पास पुलिस-शक्ति है। दूसरी बात, मादक द्रव्यो की बिक्री अथवा निर्माण का सम्पूर्ण निषेध लागू करने की शक्ति राज्य के पास है। अनुच्छेद ४७ स्पष्ट करता है कि राज्य, केवल चिकित्सा-उद्देश्य के अतिरिक्त, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक औषधियों एव मादक पेयो के सेवन को निषिद्ध करने का प्रयास करेगा।"

यह ज्ञातव्य है कि अनुच्छेद ४७ राज्य को केवल मद्यनिषेध लागू करने का ही आदेश नही देता, बल्कि जनस्वास्थ्य, जीवन-स्तर और पोषण के स्तर को ऊचा उठाने के लिए भी आदेश देता है। यह कहना आवश्यक है कि मद्यनिषेध इस उद्देश्य को प्राप्त करने का एक प्रभावशाली साधन है।

जिस समय संसार के अन्य देश मदिरा की बुराई और खतरे को समझकर उससे पिण्ड छुड़ाने के नाना उपायों में संलग्न है, यह जानना अपने-आप में कितना दर्दनाक है कि उसी समय भारत न तो अपनी गौरवपूर्ण सस्कृति का आदर करना चाहता है और न ही ससार के अन्य देशों के अनुभव से कुछ सीखने के लिए तैयार है।

याचिका मे अनुरोध किया गया है कि यह 'पागल दौड़' निश्चय ही रुक जानी चाहिए तथा पूर्ण मद्यनिषेध लागू करने के लिए कुछ चरणबद्ध कार्यक्रम तुरन्त प्रारम्भ किये जाने चाहिए।

हरयाणा सरकार और अन्य सरकारों ने ऐसे निन्दनीय उपायों को ग्रहण कर लिया है, जो सविधान के अनुच्छेद २१ का सरासर उल्लंघन करते हैं तथा इस तरीके से वे लोगों के जीवन और जीविका के लिए आवश्यक न्यूनतम पोषण, कपड़ा, आश्रम, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि के अधिकार के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

याचिका में चार बातों पर विशेष बल दिया गया है :

क) राजस्व-हानि के आधे की भरपाई करने के केन्द्र सरकार के वचन को बार-बार दोहराया और उसे प्रकाशित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही मद्यनिषेध-नीति को क्रियान्वित कराने के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों को निर्देश दिए जाने चाहिए।

ख) समय आगया है कि अब पचायतों तथा नगर निकायों को मद्य-निषेध और मद्य-त्याग के कार्यक्रमों में सम्मिलित हो जाना चाहिए तथा लाखों उत्पादशील लोगो के जीवन की गुणवत्ता सुधारने के

(शेष पृष्ठ ५ पर)

भयंकर मुस्लिम सांप्रदायिकता एवं मानसिकता की लपेट में "कश्मीर समस्या व समाधान

सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

गतांक से आगे दूसरी किस्त—

कश्मीर समस्या के समाधान तथा इसके समझने के लिए शेख अब्दुल्ला की गतिविधियों की भी जानकारी आवश्यक है, ये भी कश्मीर समस्या के खलनायक सूत्रधार की भूमिका निभाते रहे हैं। कश्मीर की वर्तमान स्थिति को जानने के लिए शेख अब्दुल्ला व उसके परिवार का सक्षिप्त विश्लेषण आवश्यक है।

यह तो आपने पिछली पंक्तियों में पढ ही लिया था कि महाराजा हरिसिंह को दुर्बल करने एवं उसे अपदस्थ करने के लिए अंग्रेजों ने षड्यन्त्र शुरू कर दिया था और शेख अब्दुल्ला को इसके लिए तैयार कर लिया था। १९३१ में शेख ने कश्मीर मे साम्प्रदायिक दगे भडकाए थे। अंग्रेजो की ही सम्मति से उसने १६ अक्टूबर १९३२ को मुस्लिम कांफ्रेस की भी स्थापना कर ली थी।

पाकिस्तान आन्दोलन के गढ अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पैदा शेख अब्दुल्ला एक कट्टरपन्थी साम्प्रदायिक मुसलमान था तथा कश्मीर का बादशाह बनना उसके जीवन की सबसे बडी इच्छा थी। उसके लिए वह कुछ भी कर सकने को तैयार था अलीगढ मुस्लिम विद्यालय ने अनेक कट्टर साम्प्रदायिक मुसलमान पैदा किए जिन्होंने भारत विभाजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिनमे शेख अब्दुल्ला, मीर उस्मान अली हैदराबाद के नबाब, सर जफरुल्ला खा आदि थे।

जब शुरू-शुरू मे शेख अब्दुल्ला जम्मू कश्मीर राज्य के एक विद्यालय में विज्ञान शिक्षक के रूप मे कार्य कर रहा था तो एक घोर अनैतिक आचरण के कारण उसे सरकारी सेवा से निकाल दिया गया था। इस घटना से उसके मन में महाराजा हरिसिंह के विरुद्ध द्वेषाग्नि भडक उठी थी, तभी से वह महाराजा के विरुद्ध अंग्रेजो की प्रेरणा व सहायता से कार्य मे जुट गया था।

सन् १९३१ में लन्दन मे गोलमेज सम्मेलन हुआ, जिसमे भारत के सब राजनीतिक दलों के नेताओं और म० गाधी के साथ भारतीय राजाओं के प्रतिनिधि के रूप में नरेन्द्र मण्डल (चैम्बर आफ प्रिंसेज) के प्रधान महाराजा हरिसिंह ने भी भाग लिया था तथा उन्होने अंग्रेजों की अपेक्षा के विपरीत भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता के विषय में म० गाधी का प्रबल समर्थन कर अपनी देश भक्ति का उद्घोष किया था। यही नही, रूस, चीन और अफगानिस्तान की सीमा से लगा हुआ 'गिलगित क्षेत्र" जोकि भारत की ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा के लिए अत्यधिक महत्त्व का था, का प्रशासन भी महाराजा ने अपने हाथ में ले रखा था। महाराजा के पूर्वजों ने भी उस सामरिक क्षेत्र पर अंग्रेजों को हाथ नही धरने दिया था, इस कारण अंग्रेज भी महाराजा को अपदस्थ करना चाहते थे। अब्दुल्ला और अंग्रेजों ने मिलकर षड्यन्त्र रचने शुरू किए थे।

१९३५-३७ के दौरान शेख अब्दुल्ला का अंग्रेज सरकार के तत्कालीन गुप्तचर सेवा के प्रमुख सर बी. जे. ग्लैनसी, उच्च गुप्तचर अधिकारी और तत्कालीन श्रीनगर स्थित ब्रिटिश रेजीडेन्ट कर्नल ली. ई. लॉग और जम्मू कश्मीर के तत्कालीन प्रधानमंत्री कर्नल सी. डब्ल्यू. काल्वीन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध तथा पत्र व्यवहार रहा। जिससे कि वह (शेख अब्दुल्ला) ब्रिटिश एजेन्ट या मुखबिर का काम योजनापूर्वक कर सके। इसके साथ ही शेख अब्दुल्ला बहुत ही चालाक व्यक्ति था, उसने पं० जवाहरलाल नेहरु तथा खान अब्दुल गफ्फार से भी घनिष्ठ सम्बन्ध बना रखे थे। इन दोनों नेताओं ने उसे सुझाया कि राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्व प्राप्त करने के लिए उसको अपनी पार्टी का नाम बदल लेना चाहिए। उनकी सम्मति से १९३९ में उसने अपनी मुस्लिम कांफ्रेस को "नेशनल कांफ्रेस" नाम दिया। आज भी यही पार्टी उसी नाम से कार्य कर रही है तथा इसका नेतृत्व कर रहे हैं शेख के पुत्र डा० फारुख अब्दुल्ला।

जब १९४१ में रियासत के स्कूलों में हिन्दी की पढाई आरम्भ की गई तो नेशनल कांफ्रेंस ने इसका प्रबल विरोध किया।

२४ जुलाई १९४४ में शेख अब्दुल्ला ने पाकिस्तान को माग पर अड़े हुए मि० जिन्ना का जोरदार स्वागत और समर्थन किया।

सन् १९४६ में शेख अब्दुल्ला ने महाराजा के विरुद्ध "कश्मीर छोड़ो" आन्दोलन शुरू कर दिया। महाराजा ने उसे बन्दी बना लिया। शेख अब्दुल्ला के समर्थन में पं० नेहरु ने आन्दोलन में भाग लिया, परिणामस्वरूप महाराजा ने प० नेहरु को कोहाला में बन्दी बनाकर दिल्ली भेज दिया। इस घटना के कारण नेहरु जी और महाराजा के बीच एक ऐसी खाई बन गई जो अन्त तक भरी न जा सकी और जम्मू कश्मीर के भारत में स्वाभाविक रूप से विलय होने में बहुत बड़ी बाधा सिद्ध हुई। प० नेहरु हमेशा ही शेख अब्दुल्ला का ही समर्थन करते रहे प० नेहरु को पाकर उनके समर्थन से शेख नेता बनता चला गया।

देश का विभाजन एव पाकिस्तानी षड्यन्त्र—

इस देश को बांटने वाले मुख्य रूप से उत्तरदायी थे, लार्ड माउन्ट-बेटन, प० जवाहरलाल नेहरु तथा मोहम्मद अली जिन्ना। जिन्ना किसी भी उपाय से जम्मू कश्मीर राज्य को हथियाने के लिये प्रयत्नशील था। जबकि प० नेहरु कश्मीर के भारत में विलय की अपेक्षा महाराजा द्वारा शेख अब्दुल्ला को सत्ता सौपने के लिए अधिक आग्रह कर रहे थे। क्योकि शेख पं० नेहरु का परम मित्र जो था? इस प्रकार शुरू में ही जम्मू कश्मीर दोहरे षड्यन्त्र मे फंस गया।

महाराजा हरिसिंह पर राज्य का विलय पाकिस्तान में करने के लिए जिन्ना माउन्टबेटन तथा पाकिस्तान के महत्त्वपूर्ण सचिव मेजर-शाह का भारी दबाव पडने लगा। इन दबावों में राज्य की आर्थिक नाकेबन्दी करके जनता को भूखे मारना, सरकार ठप्प करना और राज्य को पाकिस्तान के आगे समर्पण करने को अवस्था तक पहुंचा देना शामिल था। २१ अक्टूबर १९४७ को हुए पाकिस्तानी हमले के दौरान भारतीय सेना की ११ ओवर-आल-कमान शेख अब्दुल्ला के हाथ में सौपना सैनिक एव राजनीतिक दृष्टि से प० नेहरु जी की भयकर भूल थी। ७ नवम्बर १९४७ तक कश्मीर घाटी पाकिस्तानी दरिन्दों से खाली हो जाने पर भी शेख अब्दुल्ला द्वारा भारतीय सैनिको को गिलगित, मीरपुर, मुजफ्फराबाद आदि इलाको की मुक्ति के लिए आगे न बढने देना आत्मघाती सिद्ध हुआ। अन्यथा पूरा कश्मीर उसी समय हमलावरों से खाली हो जाता और कश्मीर नामक कोई समस्या शेष न रह जाती।

इस प्रकार पाकिस्तान कश्मीर के पाकिस्तान में मिलाने के लिए जी-जान से लग गया था। २३ अक्तूबर को पाकिस्तानी कबायली फिर कश्मीर पर चढ़ आए। उनका नेतृत्व पाकिस्तानी सेना का जनरल अकबर खान कर रहा था। ब्रिटिश गुप्तचर विभाग तथा वरिष्ठ ब्रिटिश राजनयिकों का पूर्ण सहयोग था। कबायली आक्रमण के समय गिलगित स्काउट्स के ब्रिटिश सेनापति मेजर ब्राउन ने कश्मीर सरकार से विद्रोह करके गिलगित पाकिस्तान को सौंप दिया।

यही तक नहीं, भारत के ब्रिटिश प्रधान सेनापति जनरल बाव-लाकहार्ट ने भारत सरकार को हमले का पता ही न लगने दिया। मुजफ्फराबाद में तैनात सभी राज्य की बटालियन के मुस्लिम सिपाही विश्वासघात करके पाकिस्तानी सेना में शामिल हो गए। उन्होंने अग्रिम दस्ते का काम किया। २४ अक्टूबर को आक्रान्ताओं ने श्रीनगर के माहुरा बिजली घर पर कब्जा कर लिया। सारा श्रीनगर अन्धेरे में डूब गया। आक्रमणकारियों ने घोषणा की कि वे अपनी ईद श्रीनगर में २७ अक्टूबर को मनाएंगे। भयकर मारकाट, लूटपाट, बलात्कार व आगजनी हुई। स्वर्ग समान सुन्दर घाटी श्मशान बना दी गई।

क्रमशः

यकृत रोगों का इलाज

हमारे शरीर में यकृत बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थि है। इसे उर्दू में जिगर और अंग्रेजी में लीवर कहते हैं। यह ग्रन्थि शरीर में दाहिनी ओर पसली के नीचे स्थित है। इसका काम है जो कुछ हम खाते हैं उसको पचाने के लिये गैसट्रिक जूस (पाचक रस) प्रदान करती है। जब यह ग्रन्थि ठप हो जाती है अर्थात् जिगर पाचक रस छोडना बन्द कर देता है तो शरीर में भारीपन सा महसूस होता है और शिथिलता आ जाती है। खाया पीया हजम नही होता है। यदि लापरवाही से कई दिनों तक यह ठप पड़ा रहे तो शरीर में नया खून बनना बन्द हो जाता है और कमजोरी आने लगती है। पीलिया जैसा भयंकर सूखा रोग हो जाता है।

२. इसके ठप होने के कई कारण हैं जैसे अधिक गरिष्ठ भोजन करना, तले हुये पदार्थ अधिक मात्रा में खाना, बर्फ और चाय का अधिक सेवन करना, धूम्रपान और मद्यपान इसके पाचक रस को शुष्क (खुश्क) कर देते हैं। अधिक मैथुन से लिवर निर्बल होकर बन्द हो जाता है।

३. चिकित्सा- दवाई से पहले परहेज करना परम आवश्यक है। गरिष्ठ भोजन और तले हुये पदार्थ बन्द करो। धूम्रपान व मद्यपान करते हो तो इसे भी छोडो। ब्रह्मचर्य का पालन करो। प्रात सूर्य उदय से पूर्व उठकर भ्रमण करने जाओ। पपीता, सन्तरा, मौसमी, अनार, नीबू और गन्ने का रस सेवन करने से जिगर काम करना चालू कर देता है। आम के रस में थोडी काली मिर्च, सौंठ, चीनी और सेन्धा नमक मिला कर सेवन करने से भी जिगर ठीक हो जाता है।

४ जिनको जिगर की दायमी (पुरानी) बीमारी है उन्हें उत्तम प्रकार से बनाया गया गुआर पाठा (घृतकुमारी) का आसव भोजन के बाद प्रयोग करना चाहिये। भोजन में मूंग की दाल का पानी, तौरी का रेसा ही पिये। एक घरेलू टानिक है इसे बनालो। नीबू के रस मे बढ़िया अदरक की पतली-पतली फाँक बनाकर डालो। इसमें थोडा सा सेंधा नमक मिलाकर हिलाकर ढककर रख दो। दो तीन घण्टे बाद इसमें से चमचा भर कर पीओ। नन्हे-मुन्ने बच्चों को तीन चार बूंद करके पिला सकते हो जिनका जिगर खराब हो।

५ जिगर को ठीक करने की अनेक औषधियाँ हैं परन्तु मैं नही चाहता कि घर में महगी-महगी दवाइयों की शीशिया जमा होती रहें। यकृत् के सम्बन्ध में आजमाये हुये प्रयोग ही बताये हैं, यदि परहेज करोगे तो अवश्य लाभ होगा।

देवराज आर्य वैद्यविशारद
आर्यसमाज बल्लभगढ़ (१२१००४)

(पृष्ठ ३ का शेष)

लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

ग) जवानों को घटी हुई दरों पर मदिरा की दो बोतलें देने की परम्परा के बजाय, उन्हें अपने-अपने अभीष्ट कार्यों के लिए ब्याज की घटी हुई दरों पर ऋण दिया जाना चाहिए—फिर चाहे वे ग्राम-उद्योगो के लिए ऋण ले अथवा कृषि के लिए।

घ) अन्तिम और महत्त्वपूर्ण बात, याचिकादाता का कहना है कि भारत एक प्रभुसत्ता सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक गणराज्य है। संविधान अपने नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय की सुरक्षा करने की माग करता है। विश्वास है कि उपर्युक्त सवैधानिक माग की रक्षा के लिए सर्वोच्च न्यायालय सर्वथा उपयुक्त निर्णय लेगा और अपने पूर्व-निर्णयों के गौरव मे शतगुणित वृद्धि करेगा।

शाकाहार की वैज्ञानिकता

(ले० रघुवीर सिंह यादव अध्यापक प्रधान आर्य समाज छत्तरपुर, नई दिल्ली-३०)

गतांक से आगे—

मास के लिए पशुओं को काटते समय उनके स्वास्थ्य की परीक्षा आम तौर पर नही की जाती है। बहुत से पशुओं में ऐसी घातक बीमारियो के कीटाणु होते है जो मास को पकाने के बाद भी नष्ट नही होते। वे मासाहारी के पेट में पहुंच जाते हैं और नाना प्रकार के असाध्य रोगो का कारण बनते है। चिकित्सकों की रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि चर्म रोग, कैंसर और हृदयरोग आदि शाकाहारियो की अपेक्षा मासाहारियो मे अधिक पाये जाते हैं। मांसाहार का अर्थ एक प्रकार रोगो को न्योता देना है। मासाहारी का पेट एक प्रकार से जीवों का चलता फिरता कब्रिस्तान समझो।

यह दैनिक अनुभव की बात है कि मलावरोध (कब्ज) और आम्लिकता की शिकायते मासाहारियो को अधिक होती है। उसका कारण यह है कि मास गरिष्ठ भोजन है जो देर में पचता है तथा उसमें अम्ल पैदा करने की क्षमता अधिक होती है। मनुष्य की आंते लम्बी होने के कारण मास अधिक समय तक 'पाचन नाल' मे रहता है और मलबद्ध का कारण बनता है। चना, मूग आदि छिल्केदार अन्न पाचन में सहायक तथा मल त्याग मे सक्रियता लाते हैं भुने हुए छिल्केदार चने चबाने से पेट साफ हो जाता है। मास इसके विरुद्ध क्रिया करता है। ऐसा वैद्यक (चिकित्सा विज्ञान) का मत है।

आम तौर पर देखा गया है कि शाकाहारी जीव अधिक बलिष्ट और सहिष्णु होते हैं। हाथी और गेंडा शुद्ध शाकाहारी पशु हैं। बल और शक्ति में उनका सामना अन्य कोई पशु नही कर सकता। गेंडे की खाल की ढाल प्राचीन काल से ही बनती आ रही है। आदमियों में शाकाहारी पहलवान मासाहारी पहलवान की तुलना में उत्तम पाये गये हैं। हरयाणा प्रदेश जहाँ के पहलवान विदेशो में भी प्रसिद्ध है और देश के लिए पदक जीत कर लाये हैं, शाकाहारी बहुत हैं। जाट, गूजर, अहीर और अन्य शाकाहारी जातियां हरयाणा की अनुपम सम्पत्ति है, देहयष्टि मे शाकाहार की ऋणी है। एक गीत है जिसका मुखडा निम्नलिखित है—देसा में देस हरयाना।

जहां दूध दही का खाना॥

शाकाहार की श्रेष्ठता का अनुकरणीय सूत्र है।

हमारे मासाहारी भाइयो ने कभी वध के समय उस पशु को नही देखा होगा जिसका मांस वे बडे चाव से खाते है। उस समय उसकी आखो मे एक विचित्र करुणा होती है। कटने के बाद उसकी लोथ का तडपना बडा वीभत्स दृश्य उत्पन्न कर देता है। मुझसे तो कटा हुआ मास भी नही देखा जाता। मास ढोने वाली गाडी के पास गुजरने पर भी ठहरना दूभर हो जाता है। ऐसी स्थिति मे मासाहार एक अनैतिक कार्य सिद्ध हो जाता है। जिसे हम जीवनदान नही दे सकते उसे अपने स्वाद के लिए मारे क्यों ? जीवन को नष्ट करना सरासर अहिंसा और दयाधर्म के विरुद्ध है। भगवान् ने आप को मानव किसलिए बनाया है,

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया, इन्सान को।
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे करों बया॥

(अर्थात् ईश्वर ने मानव को दया के लिए जन्म दिया है, उसकी प्रार्थना व स्तुति के लिए देव, किन्नर व गन्धर्व आदि बहुतेरे पहले ही विद्यमान थे। मानवेतर योनियां मौजूद थीं।)

बहुधा मांसाहार के पक्ष में कुछ लोग यह दलील (तर्क) दिया करते हैं कि वह पौष्टिक तथा स्वादिष्ट होता है। मैं हजार रु० उस व्यक्ति को इनाम देने के लिए तैयार हू जो बिना शाकाहारी घटकों के मास को खाने योग्य बनाकर दिखा दे। मांस में घी या तेल उसे छौंकने या बघारने के लिए प्रयोग मे लाया जाता है, स्वाद बनाने के लिए मिर्च व अनेक मसाले इस्तेमाल किये जाते हैं। वे सभी वनस्पति जगत के उत्पाद तथा शाकाहार के द्रव्य हैं अत: मास कोई अपने स्वतंत्र स्वाद वस्तु नही हैं। कोई भी मांसाहारी अकेला मांस (केवल मांस) खाकर दिखाये तो सही। मैं घी या लौंग और अन्य मसाले अलग-अलग खाकर दिखा सकता हूं और इनका स्वाद भी बता सकता हूं। तो स्वाद मांस का नहीं उसमें प्रयुक्त किये गये घटकों का होता है। मांसाहारी भ्रम में है कि मांस स्वादिष्ट होता है।

रही पौष्टिकता की बात वह भी भ्रम मात्र है। अण्डाभक्षी मांसाहारी कहते है कि अण्डा शक्ति देनेवाला है। अंडा खानेवाले भी चिकनाई और मसालो का सहारा लेते हैं। कच्चा अण्डा खाने वाले उसे दूध अथवा चाय मे घोलकर पीते हैं। वह शक्ति दूध या चाय की होती है या केवल अण्डे की। दूध या घी तथा अन्य पदार्थ जो मांसाहार के साथ प्रयुक्त किये जाते हैं, उनकी कीमत का सामूहिक जोड़ ज्ञात किया जाये तो मासाहार महंगा ही पडता है, सस्ता नही। शाकाहार मे भी वे सभी तत्व मौजूद हैं जो जीवन के लिए आवश्यक है और लम्बी आयु प्रदान करने वाले हैं। बादाम का तेल, मुक्तावलेह (खमीरा मरवारीट) और आँवला आदि शाकाहारी वस्तुए सस्ती और हानिरहित पदार्थ हैं जो मासाहार के स्थानापन्न पदार्थों के रूप मे काम में लाये जा सकते हैं। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के अनुसार मासाहार हृदय रोगों की पृष्ठभूमि तैयार करता है। शाकाहार हृदय रोगों का निराकरण करता है।

यूरोप के लोग भी अब शाकाहार को ठीक मानने लगे है और शाकाहार की ओर प्रवृत्त होने लगे हैं। पिछले दिनों भारत में जो हृदय रोग विशेषज्ञों की एक सभा व गोष्ठी हुई उसमें शाकाहार को श्रेष्ठता को सभी ने एक मत से सराहा था। उसके निष्कर्ष आप समाचार पत्रों में पढ सकते हैं। इस आधार पर शाकाहार विज्ञान सम्मत तथ्य प्रमाणित होता था।

अन्त में धार्मिक पहलू पर विचार कर लें। उन सभी धर्मों में की आज्ञा देते हैं। योग या साधना करने वाले व्यक्ति मांस बिलकुल नही खाते हैं। इस्लाम मे सूफी (योगी या सन्त) मास, प्याज और गर्म वस्तुए नही खाते। ईसाई सन्त इन सभी वस्तुओं से परहेज करते हैं। सिख धर्म के सन्त महत्मा भी निरामिष भोजी होते हैं। सनातन वैदिक धर्म तो सदा से ही शाकाहार को श्रेष्ठता की दुन्दुभि बजाता आ रहा है। भगवान् श्री कृष्ण ने सात्विक आहार का सदुपदेश दिया है और कहा है कि जैसा अन्न वैसा मन। मन को चचलता मिटाने, ध्यान को एकाग्र करने और योग साधना के लिए शाकाहार और सात्विक आहार आधारशिला है। शाकाहारी अधिक धीर, गम्भीर और विचारशील होते है। उन्हे क्रोध आदि आवेग कम सताते हैं। वे मांसाहारियों की अपेक्षा हिंसक भी कम होते हैं। यह स्वय सिद्ध तथ्य है, कोई बनावट नहीं।

हिन्दी भाषी प्रदेशो में 'देसां में देस हरयाणा' इस गीत को बहुत सी स्त्रियां गाती हैं क्या मेरे हरयाणा प्रदेश के भाई बहिन यह चाहेंगे कि यह गीत बन्द हो जाये क्योंकि आज कल वहाँ मांस और मदिरा का चलन बढ़ने लगा है। आर्यसमाज के सामने समस्या खड़ी हो रही है, उसकी शक्ति इधर अधिक व्यय हो रही है। 'हरयाणा' जो हरि का अयन अर्थात् योगेश्वर श्री कृष्ण जी का वास रहा है जहां वह तीर्थ है जहां श्रीकृष्ण ने अमर गीता का उपदेश मृतप्राय: अर्जुन को देकर साहस का पुतला बना दिया था। जहां धर्म की स्थापना के लिए कुरुक्षेत्र में युद्ध हुआ था अपने प्राचीन गौरव की रक्षार्थ श्वेत क्रान्ति द्वारा फिर दूध दही की नदियां बहायेंगे और पुन: दूध दही का खाना वाली शक्ति को चरितार्थ करेंगे।

कहा बातिल को बातिल सच को सच साबित किया हम ने।
जो इस पर नही समझे, उसे परमात्मा समझे॥

इति। ओ३म् शम्।

कैप्टन आर्य आर्यसमाज के प्रधान निर्वाचित

आर्यसमाज की ४८वीं वार्षिक साधारण सभा दिनांक ७-६-९२ को सम्पन्न हुई। जिसमें कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान एवं श्री नरेन्द्रकुमार पटेल महामन्त्री निर्वाचित किए गए। श्री चन्द्रभान मल्होत्रा एवं श्री कस्तूरीलाल मदान उपप्रधान एवं श्री लालचन्द तथा श्री संदीप दत्त आर्य उपमन्त्री एवं श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

नव निर्वाचित प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने सभा को धन्यवाद देते हुए घोषणा की कि वर्ष १९९४ में इस समाज को स्थापित हुए ५० वर्ष पूर्ण होरहे हैं। अतएव इस स्वर्ण जयन्ती की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु इस समाज द्वारा एक ऐसे गुरुकुल की स्थापना की जाएगी जिसमें आर्यभाषा के अतिरिक्त अन्य वैदेशिक भाषाओं में भी वैदिक वाङ्मय के प्रचारक तैयार किये जायेंगे। सम्पूर्ण विश्व में इस गुरुकुल से शिक्षित विद्वानों द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया जाएगा। इस प्रस्ताव का सभा ने सहर्ष स्वागत किया।

पं० ब्रह्मानन्द आजाद
आर्यसमाज शान्ता कुंज, बम्बई

(पृष्ठ २ का शेष)

प्रो राम कुमार (भैंसवाल), प्रो. मधुकर (धनौरी) आदि सरकारी कालेजों में संस्कृत पढाते हैं। प्रो. इन्द्रदेव रेढू (शाहपुर), डा. मगलदेव लाम्बा (हरिगढ खेड़ी), आदि अर्ध सरकारी कालिजों में हैं। इसी प्रकार बहुत वडी सख्या में पढे-लिखे शास्त्री स्कूलों में शिक्षक हैं। श्री बीरबल (खानपुर), श्री रामचन्द्र मलिक (सरगथल), श्री ओमप्रकाश (माजरा), श्री रामभगत (रायचन्द वाला) आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय शास्त्री अध्यापक हैं। इन सबने आचार्य महामुनि जी के चरण-कमलों में बैठकर शिक्षा-दीक्षा पाई। और उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन-लक्ष्य को चरितार्थ किया। आचार्य जी के परम शिष्य भीमदेव आजकल आस्ट्रेलिया में योग-शिक्षक है।

आचार्य महामुनि जी का जीवन सेवा-भावनाओं से ओत प्रोत था। वे जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रहे। आत्मिक उन्नति व शान्ति के लिये अपने कर्तव्य को पूर्ण निष्ठा से निभाया। अहंकार तथा दर्प उनमें लेशमात्र भी नही था। वे सार्वजनिक जीवन के लिये समर्पित त्याग, बलिदान और सेवा की साक्षात् प्रतिमा थे। वे त्रस्त एव पीढितों की सहायता के लिये व्याकुल रहते थे। किसी को कदापि अभाव का अनुभव नही होने देते थे। सबके साथ समान भाव, समान व्यवहार व समान आचरण उनके जीवन के अग थे। वे (आयार्य महानुनि जी) गुरुकुल भैंसवाल व दूसरे गुरुकुलों तथा हरयाणा प्रान्त के समस्त आर्य जनों के प्रेरणा-स्रोत थे, मार्ग दर्शक थे, वे कर्मयोगी थे। महामानव थे। १९ दिस्मबर १९९१ बृहस्पति को दिन के १०.३० बजे अपनी यह लीला पूर्ण कर ब्रह्म में विलीन हो गये। परम पिता परमात्मा ऐसे दिव्य-पुरुषों को बार-बार मानव योनि में जन्म दे, जिससे जन-कल्याण हो। समस्त प्राणिमात्र को सुख व शान्ति मिले। उस महान् आत्मा को मेरा शत-शत-शत प्रणाम।

आर्यसमाज, चित्रगुप्तगंज, लश्कर ग्वालियर

१. श्री गोकुलप्रसाद शास्त्री–पुरोहित
२. श्री मनीराम गुप्त–प्रधान
३. श्री बाबूराम गुप्त–उप प्रधान
४. श्री डा० सुरेन्द्र भटनागर–मंत्री
५. श्री जगदीश प्रभाकर गोस्वामी-उप मंत्री
६. श्री नरेन्द्र गुप्त-कोषाध्यक्ष
७. श्रीमती सुधा अग्रवाल–पुस्तकाध्यक्ष

भूल सुधार

सर्वहितकारी अक १४ जून दान दाता सूची में क्रमश: ६७ मन्त्री आर्य समाज सालवन जिला करनाल का दान गलती से १०१ रुपया छप गया है इसको ५०५ रुपये पढ़ा जाये।

—सम्पादक

ज़िंदगी

'नाज़' सोनीपती

बे-बसी पर मौत की जो मुस्कराए ज़िंदगी।
बे-सबब अमवात पर आंसू बहाए ज़िंदगी॥
ज़िंदगी मेरे लिए है, मैं बराए ज़िंदगी।
उम्र-भर तक क्यों न मुझको रास आए ज़िंदगी॥

मौत को अपने गले से खुद लगाए ज़िंदगी।
फिर नया जीवन मिले और चैन पाए ज़िंदगी॥
ज़िंदगी का रोना रोने वालो! इंसानो सुनो।
दर हकीकत मौत क्या है, इक बिनाए ज़िंदगी॥

मौत से आखें मिलाई बेझिजक उसने सदा।
हो गया इक बार जो भी आशनाए ज़िंदगी॥
ज़िंदगी की इब्तदा होती है, मर जाने के बाद।
मौत को कहते हैं, लेकिन, इन्तहाए ज़िंदगी॥

हो नही सकते बयां, इन्सान से हरगिज़ कभी।
ज़िंदगी मे जिसकदर तूफाँ उठाए ज़िंदगी॥
जो है, ज़िंदा दिल, वे खुश है ज़िंदगी पाकर नई।
मुर्दा-दिल के वास्ते है, इक बलाए ज़िंदगी॥

ज़िंदगी भर 'नाज़' जीने के लिए मरते हैं लोग।
और अपना मौत से दामन बचाए ज़िंदगी॥

महर्षि दयानन्द वचनामृत

"जो मद्य पीता है, वह विद्यादि शुभ गुणों से रहित होकर उन दोषों में फंसकर अपने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष फलों को छोड पशुवत् आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि कर्मों मे प्रवृत्त होकर अपने मनुष्य-जन्म को व्यर्थ कर देता है। इसलिए नशा अर्थात् मदकारक द्रव्यों का सेवन भी न करना चाहिये।" —गोकरुणानिधि

(पृष्ठ १ का शेष)

तृतीय समुल्लास) तर्क भी यही कहता है कि जब संसार के सब पदार्थ सभी के लिये हैं तो फिर वेद भी सभी के लिये ही होना चाहिए। महर्षि दयानन्द द्वारा वेदाध्ययन का अधिकार मानवमात्र को दिये जाने का निष्पक्ष विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से स्वागत किया है। फ्रेंच लेखक रोम्यां रोला इस सम्बन्ध में ठीक ही लिखते हैं कि—"वस्तुत: भारत के लिये वह दिन एक युग प्रवर्तक दिन था कि जब एक ब्राह्मण ने न केवल यह स्वीकार किया कि वेदज्ञान पर मानवमात्र का अधिकार है, जिनका कि पठन–पाठन उनसे पूर्व के कट्टरपंथी ब्राह्मणों ने निषिद्ध कर रखा था, अपितु इस बात पर भी बल दिया दिया कि वेदों का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है।"

अन्त में हम यही कहेंगे कि आर्यसमाज की वेद विषयक यही मुख्य चाहना है कि अखिल विश्व वेद के झण्डे तले आ जाय और वेद की शिक्षाओं को अपनाकर लोक और परलोक सवारे। इत्योम् शम्

जीन्द में तीसरा आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीर दल जीन्द ने स्थानीय जाट उच्च विद्यालय में ३१ मई १९९२ से ७ जून १९९२ तक अपने तीसरे आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। शिविर का भव्य उद्घाटन रविवार ३१ मई को डा० रामभगत लांग्यान H.C.S S.D.M. जीन्द के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ और उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सेठ लक्ष्मी नारायण बंसल ने की। शिविर में लगभग २० अलग-अलग गावों और कस्बों से शिविरार्थी आये और ७ दिन तक बड़ा अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविरार्थियो की संख्या ८० रही। स्थानीय तीनों समाजों ने, स्त्री आर्यसमाज ने वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द ने तथा युवा संगठन गाव घोगडिया ने इस शिविर मे भरपूर सहयोग दिया। दानदाताओं ने बड़ी उदारता पूर्वक दान देकर शिविर को सफल बनाने में पूरी सहायता की। इस संदर्भ में श्री लक्ष्मी नारायण बंसल, मा० बद्रीप्रसाद आर्य, श्री अभयसिह आर्य, श्री सुरेन्द्रसिह पूनिया, पं० हरिश्चन्द्र तथा श्रीमती द्रोपदी देवी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। सभी शिक्षकों व्यवस्थापकों तथा शिविराध्यक्ष श्री कृष्णदेव शास्त्री ने पूरा-पूरा समय देकर शिविर के सफल आयोजन में योगदान दिया। शिविर का विधिवत् समापन ७ जून १९९२ को सुबह ७-३० से १२ बजे तक प्रीतिभोज के साथ सम्पन्न हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि नगर के युवा वकील तथा आर्य परिवार से सम्बन्धित श्री सुरेन्द्रसिह पूनिया थे और अध्यक्षता जाने माने आर्यनेता श्री अभयसिह आर्य भू०पू० अध्यक्ष न०पा० जीन्द ने की। आर्य वीर दल हरयाणा के प्रांतीय अधिष्ठाता स्वामी रत्नदेव सरस्वती ने भी आर्यवीरों को अपना आशीर्वाद दिया।

इस शिविर से आर्य वीरों को बहुत उत्साह मिला तथा उन्होंने आर्यसमाज और आर्यवीर दल के दिये काम करने का इरादा बनाया। आर्य वीर दल जीन्द अपने प्रांतीय अधिकारियों को विश्वास दिलाता है कि हम अपने अधिकारियों के निर्देशानुसार इस प्रकार के युवा-निर्माण के कार्यक्रमों को सदैव तत्परता से आयोजित करते रहेंगे और न राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निष्ठाभाव से अदा करते रहेंगे।

सुभाष चन्द्र आर्य
संयोजक शिविर

जीवन यज्ञ का प्रभाव

श्री जयलाल सपुत्र श्री नन्दराम ने २० अक्तूबर १९९१ को अपने पैतृक गाव फरमाणा मे जीवन यज्ञ सम्पन्न किया था।

इस अवसर पर सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने शराबबन्दी के लिये लोगों को ललकारा था। इस अवसर पर १२४ गांवों की पंचायत ने यह सकलप लिया था कि हम अपने अपने गांव में शराब के ठेके बन्द करवायेंगे।

अब इस संकल्प का परिणाम सामने आ रहा है। इस जीवन यज्ञ के जन्मदाता मास्टर तेजसिंह रिटायर्ड फोजी ने इस अवसर पर अपने पिता जी के नाम से ११०० रु० गऊशाला खिड़वाली जिला रोहतक ११०० रु० गऊशाला सिसाना तथा ११०० रु० गऊशाला भटगांव को भेजा था ये दोनों गऊशालाये जिला सोनीपत में पड़ती हैं। इसके अतिरिक्त मास्टर तेजसिंह ने अपने पिता श्री जयलाल के नाम से ११०० रु० का चन्दा गुरुकुल भैंसवाल को भी भेजा था। श्री जयलाल इस शुभ अवसर पर आर्यसमाज में दीक्षित हुए तथा १२४ गांवों को पंचायतों ने उन्हें पगडी और सम्मान दिया था। अब श्री तेजसिंह आर्यसमाज की कार्यवाहियों से जुडे रहते हैं।

उन्होंने पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह में ३०५ रु० का चन्दा भेजा है।

ग्राम सोलधा (रोहतक) में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

गांव सोलधा त० ब० गढ जिला रोहतक में श्री जागेराम सहरावत के घर सपरिवार सहित बडी श्रद्धा से २९-५-९२ से १-६-९२ चार दिन तक प्रातः सायम् यजुर्वेद पारायण यज्ञ मान्यवर श्री स्वामी धर्म मुनि आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ द्वारा सम्पन्न हुआ जिसकी पूर्ण आहुति १-६-९२ को दी गई। पश्चात् समस्त गांव को प्रीतिभोज कराया गया।

प्रत्येक रात्रि को १२ बजे तक श्री स्वामी सोमानन्द आत्म शुद्धि आश्रम द्वारा सत्संग भी होता था। जिसमें स्वामी जी प्रवचनों और भजनों द्वारा ईश्वर भक्ति, धर्म चर्चा और सदाचार की शिक्षा बड़ी सरल भाषा में यज्ञ प्रेमियों को समझाते थे।

यज्ञ के समय ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया यजुर्वेद का पाठ हृदय को गदगद कर देता था और ओ३म् स्वाहा शब्द पर आकाश गुंजायमान हो जाता था। बीच-बीच में श्री स्वामी धर्ममुनि वेदमन्त्रों की व्याख्या तर्क बुद्धि और वैज्ञानिक ढंग से श्रोताओं को समझाते जिन को सुनकर सभी आनन्द विभोर हो उठते थे।

१-६-९२ को पूर्ण आहुति के अवसर पर अनेक नौजवानों और स्त्रियों ने भी अपनी बुरी आदतों को त्यागने का व्रत लिया। यज्ञोपवीत भी दिये गये।

मास्टर भीमसिंह आर्य

गांवों से शराब के ठेके हटवाने के लिए संघर्ष तेज

भूना, २० जून (गोयल) शराबबंदी संघर्ष समिति ने शराब के ठेकों को हटाए जाने की मुहिम को और तेज कर दिया है। इस मुहिम में स्त्री, पुरुष, वृद्ध तथा विद्यार्थी शामिल है, जो हरयाणा सरकार से मांग कर रहे हैं कि शराब के ठेके गांवों में बंद किए जाए।

आर्यसमाज, परशुराम सेवा दल तथा डैमोक्रेटिक यूथ फैडरेशन आदि संगठनों ने जनता से अपील की है कि शराब के ठेकों को बंद करवाने के लिए शराबबंदी आंदोलनों में भाग लें, क्योंकि आज राज्य में शराब के ठेके प्रत्येक गांव में खुल गए हैं जिसके फलस्वरूप ग्राम व्यक्ति का जीवन बर्बाद हो रहा है। साभार पंजाब केसरी

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज अमीन, जिला कुरुक्षेत्र का उत्सव दिनांक २-३-४ जून को समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमें सभा के भजनोपदेशक श्री पं० चिरंजीलाल जी व जगरामसिंह जी के प्रभावशाली भजन हुए।

पं० चिरंजीलाल जी के खण्डन मण्डनात्मक भजनों का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। श्री पं० चन्द्रपाल जी शास्त्री की अध्यक्षता में यज्ञ हुआ। अनेक यज्ञोपवीत दिए गए। स्वामी धर्मानन्द जी ने अपने प्रवचनों में शराबबन्दी लागू करने पर जोर दिया। दो दिनों तक श्री सुखदेव शास्त्री का समसामयिक धारावाही व्याख्यानों का बड़ा प्रभाव रहा। उन्होंने वेदों का सन्देश, कश्मीर समस्या, शराब निषेध व गोहत्या की हानियों की विस्तृत चर्चा की। सभा को आर्थिक सहायता दी गई। उत्सव बड़ा सफल रहा।

राजपाल शास्त्री
ग्राम—अमीन कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज बेगा का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बेगा जि० सोनीपत का उत्सव ५-६-७ जून को मनाया गया जिसमें पं० लक्ष्मनसिंह बेमोल पं० चिरन्जीलाल स्वामी जीवनानन्द जी स्वामी प्रेम भिक्षु जी मास्टर ओमप्रकाश जी सभी के भजन व्याख्यान हुये लेकिन दुःख के साथ लिखाना पड़ता है अन्तिम दिन श्री कंवलनयन जी मंत्री आर्यसमाज बेगा के साले का बेटा उत्सव में आया था वह यमुना नहाने गया मगर यमुना में डूब गया सारे जलसे में मातम छा गया हम सभी सभा की ओर से गहरा दुःख प्रकट करते हैं भगवान् उस परिवार को दुःख वहन करने के समता प्रदान करे।

पं० चिरंजीलाल भजनोपदेशक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२० ७३   रजि० नं० PRIK

प्रधान सम्पादक—सबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १६   अंक ३१   ७ जुलाई १९९२   वार्षिक शुल्क ३०   (आजीवन शुल्क ३०१)

अग्निहोत्र द्वारा अद्भुत फलों की प्राप्ति

अग्निहोत्र विद्या विश्व की सर्वाधिक चमत्कारपूर्ण विद्या है और प्राचीन महर्षियों द्वारा वेदों के आधार पर किया गया श्रेष्ठतम आविष्कार है। इससे बडा या उपयोगी चमत्कारपूर्ण आविष्कार विश्व में न कभी हुआ है, न हो सकता है। इसीलिए शतपथकार लिखते हैं कि 'यज्ञो वे श्रेष्ठतमं कर्म'।

अज्ञानी लोग शतपथ ब्राह्मण के इस सारपूर्ण वचन के अर्थ को न जानकर अनर्थ करते हैं। जैसे हर श्रेष्ठकर्म यज्ञ है। वैसे यज्ञ का विस्तार अनन्त है। किन्तु इस वचन में स्पष्टतः अग्निहोत्र को श्रेष्ठतम कर्म कहा है। वहां कर्म एकवचन में प्रयुक्त है। फिर उस कर्म को सर्वश्रेष्ठ दर्शाया जारहा है। 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग ही साक्षीभूत है कि—यह एक सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

साधारण बुद्धिवाले सज्जन सोचते हैं कि—थोड़ी-सी अग्नि उसमें थोड़ा-सा घी जला देना कौन-सा ऐसा श्रेष्ठतम कर्म हो जाता है?

बुद्धिमान् लोग जानते हैं कि परमात्मा की रची इस सृष्टि में अग्नितत्त्व ही सर्वश्रेष्ठ व अद्भुत पदार्थ है। रसों में सर्वश्रेष्ठ रस गाय का घृत है। पशुओं में सर्वश्रेष्ठ पशु गाय है। ज्ञानविज्ञान में सर्वश्रेष्ठ वेद है। समिधाओं में सर्वश्रेष्ठ समिधा चन्दन की होती है। वेद शब्द के सार भूत हैं। शुद्ध वायु स्पर्श का सार है। अग्नि रूप का सार है। घृत रस का सर्वश्रेष्ठ सार है। चन्दन गन्ध का सर्वश्रेष्ठ सार है। ये पंचभूत ही महापंचभूत कहाते हैं। इन भूतों के उपरोक्त पंच द्रव्य श्रेष्ठ सार हैं। इनका युक्तिपूर्वक प्रयोग ही यज्ञ कहाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि अग्निहोत्र सर्वश्रेष्ठ कर्म है। अग्नि पदार्थ को सूक्ष्म बना देती है। जो पदार्थ जितना अधिक सूक्ष्म हो जाता है वह उतना ही अधिक शक्तिमान हो जाता है।

गाय का घृत सर्वश्रेष्ठ क्यों?

'गौ' शब्द का अर्थ है सूर्य की किरण। इस गौ नाम के पशु में सौर ऊर्जा को ग्रहण करने का सर्वाधिक सामर्थ्य है। यह पशु अपने सींगों से भरपूर सौर ऊर्जा का भक्षण करता है। इसीलिए प्राचीनकाल में गाय के सींगों पर सोना मढ़ा जाता था। जिससे गाय के दूध में गुण और अधिक बढ़ जाते हैं। अणुधर्मिता को रोकने का सामर्थ्य गाय गोबर में सर्वाधिक सामर्थ्य है। गाय इसीलिए पूज्य है। गाय को माता कहा जाता है।

आज का वैज्ञानिक अभी गाय के महत्त्व को जान नही पाया है। उसे गाय के घी एवं भैंस के घी में कोई अन्तर दृष्टिगोचर नही होता। सीधा स्पष्ट प्रमाण है कि इस प्रगतिशील वैज्ञानिक ने घोड़े और गधे के भेद को भी नहीं जाना है।

संसार के हर प्रकार के विष को नष्ट करने का अद्भुत सामर्थ्य गाय के घी में है। भारतीय गाय में सौर ऊर्जा को भक्षण करने का सामर्थ्य सर्वाधिक है। अतः भारतीय नस्ल को गाय सर्वश्रेष्ठ गाय है। हमारी देशी नसल की गाय को [illegible]तः नष्ट कर जर्सी जैसी नकली गाय का प्रचार एक षड्यन्त्र है।

जर्सी गाय का निर्माण खच्चर के समान किया गया है। घोड़े और गधे के मेल से जैसे खच्चर जन्म लेती है। सूअर के और गाय के मिश्रण से अमेरिका के जर्सी ग्राम में इस नसल को विकसित किया गया है।

बहुत से लोग इसका प्रमाण मांगते हैं। जैसे कोई कहे कि भारतीय लोग राम और कृष्ण की नसल के हैं। क्या इसका कोई प्रमाण दे सकता है? क्योंकि सूअर के बीज को कृत्रिम पद्धति से गाय में विकसित कर इस नकली नसल का निर्माण किया गया है। प्रमाण प्रत्यक्ष यह है कि सूअर की आकृति, शब्द या ध्वनि शारीरिक संरचना, डीलडोल या ढांचा और गुण कर्म का मेल सूअर में और जर्सी गाय मे प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। सूअर गर्मी से घबराता है, सदा कीचड में बैठता है। यह गर्मी से घबराती है। ठण्डक पसन्द करती है। सूअर मादा को दूध बहुत होता है। यह भी दूध बहुत अधिक देती है। हमें जर्सी का दूध पिलाकर सूअर की सन्तान बनाया जारहा है। अस्तु—

उपरोक्त विवेचन से बात स्पष्ट हो चुकी है कि यज्ञ मे प्रयुक्त होने वाले द्रव्य पंचभूतों के सर्वश्रेष्ठ निर्माण हैं। जितनी-जितनी सूक्ष्मता से यज्ञ को कसौटी पर रखा जाएगा उतना ही यज्ञ के महत्त्व को समझा जा सकेगा।

यज्ञ अथवा अग्निहोत्र में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिन मन्त्रों का विनियोजन शास्त्रों के आधार पर किया है वह भी अद्भुत है। किंतु हमें उन विद्वानों की विद्वत्ता पर आश्चर्य होता है जो अग्निहोत्र में विनियुक्त मन्त्रों का यज्ञ के प्रसंग मे आध्यात्मिक अर्थ करते हैं। विद्वानों का कर्त्तव्य है कि—वे जब अग्निहोत्र के मन्त्रों का यज्ञ के प्रसंग में अर्थ करे तब उन्हें मन्त्रों के आधिभौतिक और आधिदैविक अर्थ करने चाहियें।

महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास मे ऐसे व्यक्ति को मूर्ख कहा है जो प्रकरण सैन्धव शब्द के दो अर्थ बतलाकर एक भृत्य का उदाहरण देकर स्पष्ट किया है कि—शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थों को प्रसंगानुसार जानना अथवा जनाना चाहिए। इसी अज्ञानता के कारण यज्ञविज्ञान के महत्त्व को हम जान नही पाये हैं। न जानने के कारण ही विधि भेद या अशुद्ध क्रियायें चल रही हैं।

जल सिंचन विधि में कुण्ड के चारों ओर एक नाली बना देना भी इसी अज्ञान का परिणाम है। फिर नालियां कही नीचे, कही मध्य में और कही कुण्ड की ऊपरवाली मेखला अर्थात् सिर पर द्युलोक मे बताई जाने लगी है। (क्रमशः)

स्वास्थ्य चर्चा—

आंख की लाली खतरनाक

क्या आपके घर में किसी की आंख लाल है ? कभी लापरवाही न करें। आंख में लाली का कारण पता लगाये और उपचार करायें। आंख में लाली विभिन्न प्रकार के वायरस संक्रमण से हो सकती है। ज्वर से हो सकती है। बुखार से हो सकती है। यदि केवल एक आंख लाल हो तो कारण कुछ अलग तरह का हो सकता है। सम्भव है कि उसमें कोई बाहरी चीज पड़ गई हो। यदि आप निकाल न सके तो डाक्टर के पास ले जायें। डाक्टरों के पास भिन्न प्रकार के कणों के निकालने के भिन्न तरीके होते हैं। वह एक सलाई पर ऊपरी पलक को लपेट कर उस कण को देखेगा और निकाल देगा। धातु के कण को चुम्बक से निकाला जा सकता है। संभव है कि आंख में केवल मामूली पीड़ा हो, वह लाली भी न हो और आप लापरवाही कर जायें। ऐसा न करें। इलाज तुरन्त करायें, वरना बाद में चलकर इस मामूली पीड़ा से संक्रमण हो सकता है और आप गम्भीर परेशानी में पड सकते हैं।

यदि अच्छे-भले सोये और जागने पर आंख में लाली पाये और पीड़ा भी हो तो अधिक सम्भावना संक्रमण की है। यदि एक आंख में तकलीफ हो तो उसे हाथ से खुजलायें मत ! हाथ से संक्रमण दूसरी आंख में पहुंच जायेगा। आंख में कैसी भी तकलीफ हो, लापरवाही न करें। याद रखे, मामूली तकलीफ से शुरु हुई बीमारी आपको अन्धत्व तक पहुंचा सकती है।

अगर आपको आइने में अपनी काया सुन्दर न दिखती हो तो निराश होने की बात नही है। अब शरीर को अपने प्रयत्न से सुन्दर बना लेना सम्भव है और वह भी जल्दी और इसके लिए आपको केवल दो सूत्रीय कार्यक्रम अपनाने की जरूरत होगी। पहला यह कि अपना वजन घटाइये और दूसरा यह कि अपने शरीर को चुस्त बनाइये।

अधिक चर्बी आकर्षक दिखने और शरीर के बेहतर आकार में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए इन्हे कम करना आपका पहला काम है। लेकिन एक विरोधाभास यह है कि अगर आप केवल महीनेभर में परिणाम चाहते हैं तो वजन घटाने का सबसे तेज तरीका उसमें धीरे-धीरे कटौती करना है। एक सप्ताह में एक या दो पौंड वजन घटाना ही उचित एव स्वास्थ्य कर है।

वजन घटाने के दो सर्वोत्तम तरीके हैं उचित भोजन और व्यायाम। कुछ लोग जो वजन घटाना चाहते हैं, बहुत कम कैलोरीवाला भोजन लेना शुरु कर देते हैं। इससे निश्चित रूप से उनका कुछ वजन तेजी से घटता है, लेकिन बाद में वे कठिनाई में पड़ जाते हैं। बाद में वे चाहे कितने हो भूखे रहे उनका वजन घटना रुक जाता है। कुछ डाक्टरों की राय में इसका कारण यह है कि जब आप अचानक काफी मात्रा में भोजन में कटौती कर देते हैं तो आपकी चयापचय प्रक्रिया या तो काम करना बन्द कर देती है या अत्यन्त धीमे काम करने लगती है। नतीजा यह होता है कि जो अल्प कैलोरी आप खाते हैं, उसका उपयोग भी रुक जाता है। परिणामस्वरूप आपका वजन घटना रुक जाता है।

इससे भी बुरी बात यह है कि जो वजन घटता है वह चरबी कम होने से नही बल्कि मासपेशी के क्षय के कारण घटता है। लेकिन एक बार आहार कम कर वजन घटने के बाद अगर आपका दोबारा वजन बढता है तो क्या आप उन मांसपेशियों को पुनः प्राप्त कर सकते हैं ? नही उस स्थिति में आपका वजन बढेगा तो केवल चर्बी से। इससे तो स्थिति पहले से भी बुरी हो जाएगी। इसलिए वजन घटाने के लिए ऐसा उचित आहार निश्चित कीजिए जिस पर केवल महीनेभर नही बल्कि पूरी जिंदगी आप रह सके।

चरबी मे कटौती कीजिए। चरबी में सर्वाधिक कैलोरी होती है। चरबी में प्रोटीन या कार्बोहाइड्रेट की तुलना में दो गुना से भी ज्यादा कैलोरी होती है। आप अपने कुल भोजन से जितनी कैलोरी प्राप्त करते हैं, चरबी से केवल उसका २० प्रतिशत हिस्सा प्राप्त करे। मांस, मिठाई, मक्खन या घी से बने पदार्थ और पेस्ट्री आदि खाना कम कीजिए।

व्यायाम

व्यायाम वजन घटाने का सर्वोत्तम उपाय है। व्यायाम वजन घटाने की प्रक्रिया को कैसे तेज करता है, यह जानने की बात है। पहली बात यह कि व्यायाम चयापचय प्रक्रिया को तेज कर देता है। यह चयापचय दर को ४० कैलोरी प्रति घण्टा कर सकता है। अगर आप केवल आधा घण्टा व्यायाम करले तो पूरे दिन आपकी कैलोरी जलने की दर तीव्रतर रहेगी। यही दर रात में भी जारी रहेगी। वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि वातापेक्षी व्यायाम २४ घण्टे के लिए चयापचय दर को तेज कर देते हैं। व्यायाम से व्यक्ति उन मांसपेशियों को फिर प्राप्त करने लगता है, जिन का अक्सर वजन घटने के साथ क्षय होने लगता है।

अब प्रश्न है कि किस प्रकार का व्यायाम सर्वोत्तम है ? इसका जवाब है वातापेक्षी व्यायाम। और यह केवल टहल कर भी किया जा सकता है। यह भी आवश्यक नहीं है कि आप खूब तेज रफ्तार से टहले। आप औसतगति टहल कर भी अपनी चयापचय दर में वृद्धि कर सकते हैं। वयस्क व्यक्तियों के लिये तेज रफ्तार से ३० मिनट तक हफ्ते में तीन दिन टहलना एक उचित कार्यक्रम है। तेज रफ्तार से हमारा मतलब साढे तीन या साढ़े चार मील प्रति घण्टा के रफ्तार से टहलना है। लेकिन टहलना आप धीमीगति से शुरु कीजिए और फिर रफ्तार धीरे-धीरे बढ़ाइये।

टहलने के अलावा आपके लिए तैरने और साइकिलिंग जैसे अन्य लाभदायक वातापेक्षी व्यायाम भी है।

अगर आप अपनी कमजोर पड़ती मांसपेशियों को मजबूत एवं सख्त बनाना चाहते हैं तो निम्नलिखित व्यायाम भी आजमाइए।

व्यायाम एक

एक कुर्सी के किनारे पर इस तरह बैठिये कि पाव फर्श से कुछ इंच ऊपर रहे। घुटनों को ललाट से सटाने की कोशिश में उन्हे छाती की ओर खींचिये। पेट की मांसपेशियों को मजबूती के लिये यह एक अच्छा व्यायाम है। शुरु में इसे छह से आठ बार दोहराइए और धीरे-धीरे बीस बार तक करने की क्षमता विकसित कीजिये।

व्यायाम दो

फर्श पर पीठ के बल लेट जाइये। इसके बाद आप जितनी तेजी से खड़े हो सकते हो, खड़े होइए। शुरु में इसे तीन बार कीजिये और फिर १५ से २० बार तक करने की क्षमता बनाइए। आरम्भ में खड़े होने में हाथों का सहारा लीजिए, पर बाद में बिना सहारे के खड़े होने की चेष्टा कीजिये। यह एक आदर्श व्यायाम है, जिसमे शरीर की हर मांसपेशी को लाभ होता है।

व्यायाम तीन

एक कुर्सी के किनारे पर बैठ जाइए और दोनों पांवों को अपने सामने फैला लीजिये। हाथों को कुर्सी के हत्थों पर या बगल में रख लीजिए और अपने को उसके सहारे कुर्सी से उठाइए। फिर कोहनियों को शरीर के करीब रखते हुए अपने को वापस नीचे लाइये। इसे १५ से २० बार दोहराने की क्षमता बनाइये। यह व्यायाम छाती और बाहों को मजबूत करता है।

विशेषज्ञों की सलाह है कि इन व्यायामों को करने से पहले पांच से दस मिनट तक 'वार्म अप' कीजिये। ऐसा आप हल्की दौड़ से कर सकते हैं और व्यायाम पूरा हो जाने के बाद अपने को 'कूल डाउन' कीजिए, विश्राम करते हुए।

साभार—दैनिक जागरण

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा शराबबन्दी प्रचार तथा प्रस्ताव करवाकर ठेकों को बन्द करावेगी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने शराबबन्दी अभियान को सफल करने के लिए ठोस कार्यक्रम बनाया है। दिनांक १ जुलाई ९२ को सभा के मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ सिद्धांती भवन रोहतक मे सभामन्त्री श्री सूबेसिह जी की अध्यक्षता मे सभा के सभी उपदेशक तथा भजनोपदेशकों की बैठक सम्पन्न हुई। हरयाणा शराबबन्दी अभियान समिति के संयोजक श्री विजयकुमार जी इस बैठक में विशेष रूप से सम्मिलित हुए।

बैठक मे निश्चय किया गया कि हरयाणा के जिन-जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, वहा सभा को ओर से शराबबन्दी प्रचार कराने तथा पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव पास करवाकर सितम्बर मास तक हरयाणा सरकार को भिजवाये जायेगे। इस कार्य हेतु जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर मास मे सभा ने अपने सभी उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों के जिलेवार प्रचार कार्यक्रम बना दिये हैं जिसमे शराब के ठेकों वाले ग्रामों में शराब आदि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध प्रचार करवाया जा सके और सरपंच तथा पंचों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव पास करवाकर नियमानुसार हरयाणा सरकार को भिजवाकर पूर्ण शराबबन्दी लागू करने पर बल दिया जासके। जिलेवार शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन करके शराब आदि नशो से दूर रहने के लिए निःशुल्क साहित्य तथा पोस्टर बाटे जायेंगे।

खापवार पचायतों का आयोजन करके पचायती नियम लागू करवाने के लिए प्रेरित किया जायेगा कि शराब बेचने तथा पीनेवालों पर जुर्माना आदि से दंडित करें। उस राशि से ग्राम के विकास कार्यो को किया जासके।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दिल्ली तथा राजस्थान की ओर से सुप्रीमकोर्ट में याचिका दायर करके भारतीय संविधान की धारा ४७ के अनुसार सरकार द्वारा शराब तथा अन्य मादक पदार्थो के उत्पादन तथा खपत पर पाबन्दी लगवाने के लिए मांग की गई है।

रोहतक में नशामुक्ति दिवस सम्पन्न

२६ जून को अन्तर्राष्ट्रीय रूप में नशामुक्ति दिवस मनाया गया। इसी उपलक्ष्य में जिला प्रशासन रोहतक की ओर से भी नशामुक्ति दिवस का आयोजन किया गया। प्रातःकाल शूगर मिल्ज तथा I. T. I. से एक जलूस निकाला गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से पं० जयपाल तथा पं० हरध्यानसिंह की मण्डली एव आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने शराब आदि नशों के विरुद्ध नारे लगाये। जिला परिषद् के प्रागण में समारोह का आयोजन जिला पंचायत एव विकास अधिकारी श्री होशियारसिंह की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री राममेहर एडवोकेट, सत्यवीर शास्त्री सभा उपमन्त्री, सुखदेव शास्त्री, पूर्णचन्द आजाद, श्रीमती तारा भारती तथा श्री सूबेसिह सभा मन्त्री आदि ने नशों से मुक्ति पाने पर बल दिया।

—जयनारायण गहलोत
सचिव रैडक्रास रोहतक

शोक समाचार

आर्यसमाज फरीदपुर जि० फरीदाबाद के मन्त्री श्री धर्मपाल खटाना के पिता श्री महाशय वामदेव आर्य का दिनाक २७-५-९२ को हृदयगति रुकने से देहांत होगया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शाति तथा परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

—मुरारीलाल बेचैन सभा भजनोपदेशक

आर्यसमाज खेड़की जि० महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री हीरालाल आर्य, उपप्रधान—भजाराम आर्य, मन्त्री—बलवीरसिह आर्य, उपमन्त्री—माधोप्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष—सूबेसिह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—प्रकाशवीर आर्य।

करेवड़ी तथा जूआं में आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न

बालक तथा बालिकाओं को सदाचार की शिक्षा देने तथा उन्हें वैदिकधर्म की ओर आकर्षित करने के लिए आर्यवीर दल के शिक्षण शिविर ग्राम करेवडी मे १५ से २१ जून तथा ग्राम जूआ जिला सोनीपत में २२ से २८ जून, ९२ तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। करेवडी मे आर्यवीर दल के शिक्षक श्री राजेश आर्य, शिक्षिका ब्र० पुष्पा आर्या एवं स्वामी मेधानन्द, श्री भीष्मप्रताप शास्त्री ने व्यायाम, योगासन, सध्या हवन तथा वैदिकधर्म का शिक्षण दिया। सभा की पं० जयपाल आर्य तथा पं० गजरामसिह की भजनमण्डली ने मनोहर भजनो द्वारा शराबबन्दी, दहेजबन्दी तथा अन्य सामाजिक बुराइयों का जमकर खण्डन किया। स्कूल के मुख्याध्यापक श्री राममेहर जी शिविर की व्यवस्था करने मे दिन-रात जुटे रहे।

दिनाक २१ जून को दोपहर पश्चात् शिविर के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त तथा सभा उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री करेवडी पधारे। उनका ग्रामवासियो तथा शिविर के प्रबन्धकों ने स्वागत किया। श्री सत्यवीर शास्त्री ने इस अवसर पर शिविर मे सम्मिलित छात्र तथा छात्राओं को अपने जीवन मे वैदिकधर्म की शिक्षा ग्रहण करने तथा शराब आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का परामर्श दिया और सभा की ओर से ५०० रु० शिविर को आर्थिक सहायता प्रदान की। श्री विजयकुमार जी ने अध्यक्षीय भाषण मे सम्बोधित करते हुए कहा कि जो भी बालक तथा बालिका शिविर की शिक्षाओ को अपने जीवन मे धारण करेगा, वह अनेक बुराइयो से बच सकता है। केवल आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो सभी के परोपकार की चिंता करता है। वर्तमान राजनैतिक दल शराब आदि का सहारा लेकर सत्ता में रहना चाहते है। वे शराब की आमदनी से विकास करने का नारा लगाते हैं, परन्तु मानव निर्माण करने की चिंता नही है। यदि शराब के बढते हुए प्रसार से मानवता समाप्त हो जावेगी तो विकास कार्य किस के लिए होंगे। आपने ग्राम के सरपच श्री ऋषिप्रकाश को प्रेरणा देते हुए कहा कि ग्राम की भलाई को दृष्टि में रखते हुए अपने ग्राम में शराब के ठेके की शाखा को बन्द करवा देवें। आपने भी निजी रूप से शिविर के प्रबन्धक तथा शिक्षकों को १००-१०० रु० प्रदान किये तथा सभी बालक तथा बालिकाओ को वैदिक साहित्य वितरित किया।

इसी प्रकार २२ से २८ जून को राजकीय विद्यालय के प्रागण में आर्यवीर दल का शिक्षण शिविर लगाया गया। स्वामी मेधानन्द जी, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अध्यापक श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी तथा आर्यवीर दल के शिक्षक श्री समरपाल आर्य एव शिक्षिका ब्र० पुष्पा देवी आर्या ने सप्ताहभर बहुत ही लगन से शिक्षण कार्य किया। ग्राम मे प्रभातफेरी द्वारा आर्यसमाज का जयघोष तथा शराब व दहेजबन्दी का प्रचार किया। सभा की ओर से प० चिरंजीलाल तथा वेदप्रचार पानीपत के प्रचारमन्त्री श्री ओमप्रकाश जी के रात्रि को प्रभावशाली भजन हुए।

२८ फरवरी को समापन समारोह के अवसर पर सभा के उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री तथा श्री राममेहर एडवोकेट ने बालक तथा बालिकाओं को सम्बोधित किया तथा परामर्श दिया कि वे मा० धमपाल आर्य, भक्त फूलसिह, सरदार भक्तसिह, स उधमसिह, चन्द्रशेखर आजाद, मेजर होशियारसिह जो कि आर्यसमाज की शिक्षाओं से प्रभावित थे, उनके पदचिन्हों पर चलें। श्री समेरचन्द शर्मा ने शिविर के आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि मै आर्यसमाज के कार्यो मे सहयोग देता रहूगा। सभा की ओर से शिविर मे ५०० रु का वैदिक साहित्य वितरित किया गया। अन्त मे श्री राममेहर मुख्याध्यापक ने ग्रामवासियो की ओर से सभी का धन्यवाद किया। इस प्रकार मा० खजानसिह आर्य का परिश्रम सफल रहा।

—केदारसिह आर्य

भयंकर मुस्लिम सांप्रदायिकता एवं मानसिकता की लपेट में

कश्मीर समस्या व समाधान

सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

गतांक से आगे—

इस कठिन समस्या के समाधान के लिए सुझाव देने से पहले आपके परिचय के लिए कुछ ठोस तथ्य प्रस्तुत हैं—

१—राज्य में तीन क्षेत्र हैं—जम्मू, कश्मीर और लद्दाख।

२—राज्य का कुल क्षेत्रफल—२,२२२३६ वर्ग किलोमीटर है जिसमें—

(क) ७८११४ वर्ग कि.मी. पर पाकिस्तान का अवैध कब्जा है।

(ख) ५१८० वर्ग कि.मी. का सामरिक महत्त्व का गिलगित इलाके का भाग पाकिस्तान ने चीन को दे दिया है तथा—

(ग) चीन ने १९६२ में लद्दाख के ३७५५५ वर्ग कि.मी. भूभाग पर जबरदस्ती कब्जा कर रखा है। यह सब कुछ हुआ शेख अब्दुल्ला के कारण।

३—क्योंकि कश्मीर राज्य में अक्तूबर १९४७ से ९ अगस्त, १९५३ से और २५ फरवरी १९७५ से ८ सितम्बर, १९८२ तक शेख अब्दुल्ला प्रधानमन्त्री रहे। बीच में ९ अगस्त १९५३, मई १९५८, ९ अगस्त १९५३ मे उन्हें राष्ट्रद्रोह के अपराध में बन्दी बनाया गया था। इस समय में शेख के पाकिस्तान से भारत के प्रति षड्यन्त्र व साठगांठ करने के पुष्ट प्रमाण केन्द्र सरकार को प्राप्त होगये थे। फिर भी ऐसे देशद्रोही को १९६४ मे बिना शर्त के रिहा कर दिया गया। इस केस में सरकार के लगभग पन्द्रह करोड़ रुपये खर्च हुए। २५ फरवरी १९७५ को श्रीमती इन्दिरा गांधी ने उन्हें फिर से कश्मीर का 'ताज' सौंप दिया।

४- शेख की मृत्यु के बाद १९८२ मे इन्दिरा जी ने तथा ७ नवम्बर १९८६ मे राजीव गांधी ने शेख के पुत्र फारुख अब्दुल्ला को राज्य की गद्दी पर बैठाया जो कुख्यात तथाकथित जम्मू-कश्मीर मुक्ति के संस्थापकों में से एक और उसके कुख्यात नेता मकबूल बट्ट का घनिष्ठ साथी रहा था। फारुख के शासनकाल में उसका छोटा भाई तारीक अब्दुल्ला मन्त्री पद पर बना रहा, जो एक समय पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में संयुक्त राष्ट्रसंघ मे भारत के विरुद्ध फरियाद करने अमेरिका पहुंचा था। फारुख के शासनकाल मे १९८२ से १९८९ के अन्त तक ५९५ बम धमाके हुए। इसी वर्ष ३३८ कुख्यात आतंकवादी जेल से रिहा किये। जिनमें अधिकतर पाक प्रशिक्षित थे। ७० कट्टर आतंकवादियों की नजरबन्दी की पुष्टि जम्मू-कश्मीर का उच्च न्यायालय भी कर चुका था। सैकड़ों मन्दिर तोड़े गये। राज्य से ७० हजार हिंदू परिवार या तीन लाख व्यक्ति कश्मीर छोड़ने पर बाध्य हुए। आज शेख फारुख की कृपा से ही—

१—कश्मीर में लगभग १५० छोटे-बड़े आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं।

२—इस समय लगभग १० हजार पाक प्रशिक्षित आतंकवादी राज्य में फैले हुए हैं। जिनके पास १५ हजार ए. के. ४७ राइफलें, ११ हजार ए के ५५ राइफलें, ए. के. ७४ और कालाश्निको राइफलें, पांच हजार राकेट लांचर्स, ११ हजार राकेट, ५०० हल्की मशीनगनें, बड़ी संख्या मे ट्रांसमीटर, टैंक भेदी माइन्स और बहुत अधिक मात्रा में विध्वंसक, विस्फोटक पदार्थ मौजूद हैं। यह सब कुछ हुआ शेख फारुख अब्दुल्ला की कृपा से। बाप से बेटा सवाया निकला।

३—जमायते इस्लामी और उसके कई सहायक संगठनों ने राज्य मे ११००० उर्दू और अरबी भाषा के मदरसे कायम करके उनमें पढ़नेवाले एक लाख छात्रों को राष्ट्रद्रोही बना दिया है। तीन हजार से अधिक मौलवी इस काम मे लगे हुए है। ये आंखें खोलनेवाले तथ्य आपके सामने प्रस्तुत हैं—

१—१९४७ मे कश्मीर घाटी मे हिंदू आबादी १० प्रतिशत, १९९१ में ०,१ प्रतिशत।

२—१९४७ मे कश्मीर घाटी मे मन्दिरों की संख्या १५०० थी और १९९१ में ११००।

३—१९४७ में कश्मीर घाटी में मस्जिदें २५०० थी, १९९१ में १५००० हैं।

४—लूटे गये हिंदू घरों की संख्या १५००० है।

५—शहर और गांवों की संख्या जिनके हिंदू नाम बदलकर सरकारी तौर पर मुस्लिम नाम दिये गये ६६० हैं।

शेख फारुख अब्दुल्ला ने ऐसी परिस्थितियां पैदा करदी, जिनसे पाकिस्तान को बहुत बड़ा लाभ पहुंचा। ऐसे अवसर पैदा कर दिये जिनसे पाकिस्तान ने भारत के प्रति अघोषित युद्ध आरम्भ कर रखा है और इस प्रकार प० नेहरू, शेख अब्दुल्ला, श्रीमती इन्दिरा गांधी, शेख फारुख अब्दुल्ला, राजीव गांधी के कारण पाकिस्तान अपने ६ में से ५ उद्देश्य प्राप्त करके अन्तिम छठे उद्देश्य को प्राप्त करने की पूरी तैयारी कर चुका है। उसने ये पांच लक्ष्य तो प्राप्त कर लिए हैं जैसे—

१—घाटी में रहनेवाले मुसलमानों को आतंकवादियों का समर्थन करना।

२—हिंदुओं को घाटी से बाहर निकालने के लिये विवश करना।

३—सरकार को अन्धेरे में रखने के लिये सभी गुप्तचर माध्यमों को बन्द करना।

४—प्रशासन को सचिवालय तक सीमित कर देना, उसमे घुसपैठ को बढ़ावा देना।

५—प्रशासन को आतंकवादियों पर निर्भर कर देना।

और अब छठा उद्देश्य है—

१—अब तक प्राप्त सफलता को दोहराना।

२—और अब वह जम्मू में भी अस्थिरता पैदा करने लगा है ताकि सेना का ध्यान घाटी पर केन्द्रित न रहे और शरणार्थी वापस लौटने की आशायें छोड़ दें तथा घाटी से और भी दूर चले जायें।

३—वह अब कश्मीर के मुद्दे को अन्तर्राष्ट्रीय रूप देने में लगा है।

यह तीसरी किस्त पूरी हुई।

चौथी किस्त अगले अंक में समाप्त होगी।

मृत्युञ्जय महामन्त्र

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

मृत्युञ्जय महामन्त्र यह स्पष्ट हमे बतलाता है।
उपमा देकर खरबूजे की ऋग्वेद यह समझाता है॥
जैसे पकने पर खरबूजा स्वतः लता से छुट जाता।
मोहमाया का बन्धन तज प्राणी ही मोक्ष पदवी पाता॥

मोहमाया मे जुड़े रहेगा आ सकता कुछ हाथ नहीं।
गाल फुलाना हसना दोनों हो सकते एक साथ नहीं॥
जब तक खरबूजा कच्चा है होता है बेला से पृथक् नहीं।
मोहमाया मे जुड़े रहे होता प्रभु से सम्पर्क नहीं॥

विमल वेदवाणी कल्याणी करिये हृदय में धारण।
हृदय कली खिल उठती है होते सारे कष्ट निवारण।
खरबूजा लता छोड़ने से अमृत समान बन जाता है।
तप त्याग तपस्वी ही जग में मोक्षादि पदवी पाता है॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

गायत्री मन्त्र लिखावट बारे विश्व रिकार्ड स्थापित किया जसवन्तसिंह गुप्ता ने

यहां के आर्यसमाजी विचारक श्री जसवन्तसिंह गुप्ता ने पिछले १८ सालों से लगातार गायत्री मन्त्र को लिखित अपने हाथ से पाच लाख मन्त्र लिखकर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। एक कापी मे उन्होंने पांच हजार मन्त्र लिखे हैं। एक सौ कापियों में लिखे मन्त्र को उन्होने एक पूरी अलमारी में संजोय कर रखा है। ३६ साल की आयु में ही उन्होंने देश के प्रमुख ट्रांसपोर्ट कंपनी के संस्थापक व आर्यसमाज के प्रमुख स्व० लालमन जी आर्य के सुपुत्र स्व० विरजानन्द आर्य की प्रेरणा से ही इस गायत्री मन्त्र के लिखने व इसके संग्रह की शुरुआत की थी। पता चला है कि विश्व रिकार्ड कायम 'ग्रीनीज बुक' में उक्त संग्रह का नाम शीघ्र दर्ज हो जाये। श्री गुप्ता जी द्वारा लिखित यह गायत्री मन्त्र का विशाल लेखन एक सुनहरी दस्तावेज ही नही, बल्कि आज के युग में समाज के सामने एक बहुत बडा उदाहरण है। इस लेखन कार्य की पूरे देश के विभिन्न भागों में गुप्ता जी की प्रशसा की जारही है।

सर्वहितकारी के आजीवन सदस्य

पं० मुरारीलाल बेचैन सभा भजनोपदेशक ने गत मई-जून मास में सर्वहितकारी के निम्नलिखित आजीवन सदस्य बनाये है —

१—जसवन्तसिह गुप्ता चरखी दादरी जि० भिवानी
२—मुसद्दीलाल आर्य ग्राम बनार जि० जयपुर (राज०)

कहां चले हैं अपने रहबर

जो रहता हो घर मे अक्सर। कुये का ही मेंढक बनकर॥
उसकी दुनियां अपना घर है। क्यों देखे ? दुनियां के मन्ज़र॥
दूर के ढोल सुहाने लगते। घर की मुर्गी दाल बराबर॥
हम न बदले, तुम न बदले। बदले हैं दुनिया ने तेवर॥
हम पहचान नही पाये हैं। खुद को अब तक, बन्दा-परवर॥
बात हमारी कौन सुनेगा ? कौन तुम्हारा होगा हमसर॥
अगर आपकी रहमत हो तो। बन सकता है कतरा, गौहर॥
अश्क नही ये मोती होते। रुक जाते गर आंख में पलभर॥
अपनी किस्मत आप बनाते। मेहनतकश, मजदूर, हुनरवर॥
मुण्डलाते हैं, ग़म के बादल। अब तक मज़लूमों के सर पर॥
राहो भी हैरान हैं सारे। कहा चले हैं ? अपने रहबर॥
सच्चाई पर लैक्चर झाड़े। खुद बकता है, झूठ सरासर॥
'नाज़' नज़ाकत खत्म है तेरी।
मोम नही, अब तुम हो पत्थर॥

—नाज़ सोनीपती

आर्यकुमार सभा किंग्जवे दिल्ली का वार्षिक चुनाव

प्रधान–धीरज मलिक, सचिव–प्रवीण ग्रोवर, आचार्य ओम सपरा, कोषाध्यक्ष—सत्यप्रकाश, पुस्तकाध्यक्ष—सौरभ भाटिया।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

क्रम	नाम	रुपये
१	श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक	१०१
२	,, फतहसिंह भण्डारी गुरुकुल झज्जर जि. रोहतक	१०१
३	,, वेदप्रकाश सरपच ,, ,, ,,	१०१
४	,, आचार्य विजयपाल ,, ,, ,,	१५१
५	,, आनन्दमित्र शास्त्री ,, ,, ,,	५१
६	ब्र० महावीर सु महेन्द्रसिंह ,, ,, ,,	२५
७	श्री आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक गुरुकुल कंवरपुरा पो. गोरधनपुरा जि कोटपुतली (राज.)	१५१
८	,, विजयकुमार शास्त्री ग्राम रूपपुरावास, कुलोठखुर्द जि. झुन्झुनू (राज.)	१०१
९	,, कुश्ती नर्सरी के छात्र पहलवान गुरुकुल झज्जर जि रोहतक	२४००
१०	,, दिनेशकुमार गुरुकुल झज्जर जि. रोहतक	२५
११	,, वेदपाल शास्त्री ग्राम कंवाली जि. सोनीपत	१०१
१२	,, सुरेशचन्द्र शास्त्री गुरुकुल झज्जर जि रोहतक	५१
१३	,, ज्ञानवीर गुरुकुल झज्जर जि. रोहतक	५१
१४	,, अजयकुमार शास्त्री ग्राम डूगर जि. मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)	२०१
१५	ब्र० विजेन्द्रकुमार (माहरा) गुरुकुल झज्जर जि. रोहतक	५५
१६	श्री विरजानन्द दैवकरणि ,, ,,	१०१
१७	,, सत्यपाल ,, ,,	५१
१८	,, रामगोपाल ,, ,,	१०१
१९	,, सुखवीर ग्राम आसौधा ,,	११
२०	,, शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्र ,, ,,	१५१
२१	,, ,, द्वितीय ,, ,, ,, ,, ,,	३१६
२२	,, ,, प्रथम ,, ,, ,, ,, ,,	३१२
२३	,, भवेन्द्रकुमार ,, ,,	१००
२४	,, नारायण मुखर्जी ,, ,,	१०१
२५	,, अनिलकुमार ,, ,,	१०१
२६	,, मा० जिलेसिंह ग्राम खरक जाटान ,,	१०१
२७	उत्तर मध्यमा द्वितीय खंड के छात्र गुरुकुल झज्जर रोहतक	१०१
२८	,, ,, प्रथम ,, ,, ,, ,,	४८९
२९	पूर्व मध्यमा द्वितीय खण्ड के छात्र ,, ,,	६५३
३०	,, ,, प्रथम ,, ,, ,, ,,	१५११
३१	अष्टमी के छात्र ,, ,,	७५५
३२	सप्तमी कक्षा के छात्र ,, ,,	४३५
३३	छठी ,, ,, ,,	४९८
३४	श्री जीवानन्द नैष्ठिक वेदाचार्य ,, ,,	१५१
३५	,, विश्वमित्र शास्त्री ,, ,,	१०१
३६	,, राजपाल शास्त्री ,, ,,	१०१
३७	,, धर्मवीर शास्त्री ,, ,,	१०१
३८	,, वा० अनुपदेव ,, ,,	२१
३९	,, डा० देवव्रत आचार्य प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल	५१
४०	,, सन्तोषकुमार शास्त्री गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक	१०१
४१	,, मेधाव्रत शास्त्री ,, ,,	५१
४२	ब्र० सुभाषचन्द्र शास्त्री प्रथम वर्ष गुरुकुल झज्जर जि. रोहतक	७२०
४३	श्रीमती कृष्णा आनन्द जालन्धर (पंजाब)	३००
४४	,, कौशल्या देवी ,, ,,	२५०
४५	,, विमला कोहली ,, ,,	२५०
४६	श्रीमती विद्यावती ,, ,,	२५०
४७	श्री विजयकुमार ,, ,,	२००
४८	,, सोहनलाल गुप्ता ,, ,,	३००
४९	,, रोशनलाल ,, ,,	२५०
५०	,, वैजनाथ ,, ,,	२५०
५१	,, रामपाल ग्राम कम्बोद पो० मिसरी जि० भिवानी	१०१
५२	,, कमलसिंह सु० चौ० मनसाराम ग्राम रुदड़ौल जि. भिवानी	५०१
५३	,, प्रतापसिंह सु० सुभाचन्द ,, ,,	१०१
५४	,, वेदपाल सु० पूर्णराम ग्राम रामबास ,,	२१
५५	,, सुमेरसिंह सु० सरदारा ग्राम रुदड़ौल ,,	१०१
५६	,, जयलाल सु० रामधन ,, ,,	११
५७	,, अजयसिंह सु० जगमालसिंह ,, ,,	२१
५८	,, मंगतराम सु० रामसिंह ,, ,,	५१
५९	,, मै० रामा जनरल स्टोर चरखी दादरी ,,	२१
६०	,, रामकिशन मास्टर ग्राम रुदड़ौल ,,	११
६१	,, सुखीचन्द पुत्र दीपराम ग्राम मांडीकलां ,,	११
६२	,, सत्यवीरसिंह सु० बसन्तसिंह ग्राम रुदड़ौल ,,	११
६३	,, बलराज सहगल जालन्धर (पंजाब)	३००
६४	,, ओमप्रकाश ,, ,,	२५०
६५	,, दयासागर ,, ,,	२००
६६	,, कृपाराम ,, ,,	२५०
६७	,, मुन्नालाल ,, ,,	२७५
६८	,, प्रभातकुमार ,, ,,	१२५
६९	,, रामअवतार ,, ,,	२००
७०	,, तिलकराज ,, ,,	२५०
७१	,, मोहनलाल ,, ,,	२५०
७२	,, सोहनलाल ,, ,,	२२५
७३	,, प्रकाशचन्द ,, ,,	२५०
७४	,, नन्दलाल ,, ,,	२२५
७५	,, मदनगोपाल ,, ,,	२००
७६	,, ताराचन्द सु० जीवनराम ग्राम अगवाना खुर्द डा० खास जि० झुन्झुनू (राज०)	१०१
७७	,, कुलदीपसिंह सु० भोमसिंह ग्राम नूरनखेड़ा जि० सोनीपत	१००
७८	,, आर्य बीज भण्डार ग्राम बाढड़ा जि० भिवानी	१००
७९	,, प्रो० राजपाल ग्राम व पो० बहराणा जि० रोहतक	११००
८०	,, भरतसिंह, जीतराम, बिशनदास झज्जर ,,	२१००
८१	आर्यसमाज चिमनी ,,	१०१
८२	श्री प्रदीपकुमार आर्य ,,	५१
८३	,, रामसिंह रोहणा ,,	२५
८४	,, तहसीलदार बलवीरसिंह ग्राम रोहणा जि० सोनीपत	२५
८५	,, ओमप्रकाश ग्राम टिटौली जि० रोहतक	२१
८६	,, मेधाव्रत ग्राम शिमली जि० भिवानी	५१
८७	आर्यसमाज नरेला दिल्ली	११००
८८	श्री रणधीरसिंह ग्राम फसौला	१०१
८९	आर्यसमाज माजरा डबास दिल्ली-८१	११०१
९०	श्री मनफूलसिंह शास्त्री ग्राम झोझूकलां जि० भिवानी	५१
९१	,, कवलसिंह ग्राम सतनाली ,,	१००
९१	,, जगदेवसिंह मन्त्री आर्यसमाज मन्दिर बहु अकबरपुर जि० रोहतक	५१

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

भारत में कैसा शासन आया है ?

भारतवालो इस भारत में यह कैसा शासन आया है।
आतंकवाद हिंसा विघटन चहुं ओर देश में छाया है ॥

हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढ़ा बिन रिश्वत कार्य न होता है।
डाकू व लुटेरे जाग रहे पर पुलिस व शासन सोता है।
विघटनकारी तत्त्वों ने विघटन का जाल बिछाया है ॥ भारतवालो…

आये दिन बैंक लुटते हैं, अपहरण भयंकर होते हैं।
उग्रवादियों के हाथों निर्दोष प्राण नित खोते हैं।
बीस सहस्र ने काश्मीर पंजाब में प्राण गंवाया है ॥ भारतवालो…

पता नही राजीव को किस दल ने मरवाया है।
बोफोर्स तोप दलाली में किसने कमीशन खाया है।
बैंक शेयर घोटाले ने यह सब ही कांड भुलाया है ॥ भारतवालो…

अश्लील चित्र व बलात्कार के कांडों की भरमार हुई।
सत्य अहिंसा नैतिकता की इस भारत में हार हुई।
मार-धाड़ टी०वी० में दिखा अपराध बहुत बढ़ाया है ॥ भारतवालो…

चले गये अंग्रेज मगर है अंग्रेजी का राज यहां।
राष्ट्रभाषा हिन्दी की नही सुरक्षित लाज यहां।
राष्ट्रपति ने ही हिन्दी का भारी मान घटाया है ॥ भारतवालो…

खेद है कि इनके द्वारा इंगलिश ही बोली जाती है।
अधिकांश देश की यह जनता जिसे समझ न पाती है।
संसद सदस्यों ने भी अब इंगलिश को अपनाया है ॥ भारतवालो…

अंग्रेजी सभ्यता ने भेष, भाषा, विचार सब दिये बदल।
पितु-मात, चची-चाचा को कहें डेडी-मम्मी, अन्टी-अंकल।
श्रीमती को मेमसाब-डाली कहना सिखलाया है ॥ भारतवालो…

हस्बेंड-पति, पुत्री व पुत्र के बोबी, टिंकू नाम धरे।
बाय-बाय हो चिल्लाते प्रणाम-नमस्ते नही करे।
अभिनेता व अभिनेत्री बनने को भी मन ललचाया है ॥ भारतवालो…

अब तो दीवाले दिल्ली में राजनीति के निकल पड़े।
राजनेता मिले नहीं, अभिनेता ही कर दिये खड़े।
राजेश खन्ना, शत्रुघ्न चुनाव में लड़वाया है ॥ भारतवालो…

श्रीराम जन्मभूमि के लिए व गौ मां की रक्षा के लिये।
पिच्यासी प्रतिशत भारत के हिंदू ने बहुत बलिदान दिये।
बहुमत की मांग मानी न गई पर प्रजातन्त्र कहाया है ॥ भारतवालो…

कहती है सरकार कि न्यायालय के निर्णय को मानो।
अपने पक्ष में कोर्ट का निर्णय पा चुकी थी शाहबानो।
सुप्रीमकोर्ट का वह निर्णय सरकार ने ही ठुकराया है ॥ भारतवालो…

वैदिक सभ्यता त्याग विदेशी सभ्यता को अपनाई है।
इस्लाम और ईसा की सभ्यता भारत में मंडराई है।
विघटनकारी इन तत्त्वों ने भारत में पांव जमाया है ॥ भारतवालो…

तुले हुए हैं भारत में यह पाकिस्तान बनाने को।
भारत भक्तो अब शीघ्र उठो प्यारा स्वदेश बचाने को।
बड़े त्याग बलिदानों से जिसे स्वतन्त्र कराया है ॥ भारतवालो…

लाला लाजपतराय, गांधी, सुभाष और सावरकर ने।
भगतसिंह, बिस्मिल, चन्द्रशेखर आदि वीर बहादुर ने ॥
रानी झांसी, तांत्या टोपे आदि ने प्राण गंवाया है ॥ भारतवालो…

क्या ऐसी ही आजादी को, इन सब के बलिदान हुए।
क्या रामराज्य भारत में लाने के पूरे अरमान हुए।
सोचो 'भास्कर' देशवासियो क्या खोया क्या पाया है ॥ भारतवालो…

—भगवतीप्रसाद सिद्धांत भास्कर
प्रधान नगर आर्यसमाज,
१४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर

रतन फार्म में आर्यसमाज का प्रचार

तराई अंचल जिला नैनीताल के अन्तर्गत रुद्रपुर से ४०-४५ कि.मी. दूर गांव रतन फार्म (शक्ति फार्म) में पहली बार आर्यसमाज का प्रचार दिनांक ५-६-९२ को बडी धूमधाम से मनाया गया। हालांकि इस कार्य के लिए कुछ लोगों ने हमें गालियां तथा मारने-पीटने की धमकियां तक भी दी, परन्तु फिर भी हम निर्भय होकर सज्जन देवेनकुमार पोद्दार जी के घर में प्रभात जी के पौरोहित्य में विश्वजित, निखिल रंजन, श्याम-चन्द जी के सहयोग से तथा विजयकुमार शास्त्री जी के सचालकत्व में उक्त कार्यक्रम सुचारु रूप से सुसम्पन्न हुआ।

—निखिलेशार्य

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईदित्तामल, भिवानी स्टैंड रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४११/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुडी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५ मार्किट नं० १, एन०आई०टी० फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुड़गांव।

शराब के ठेके के मामले को लेकर धर्मपुर में तनाव

गुडगाव, २७ जून (निस)। गांव धर्मपुर में शराब का ठेका हटाने की मांग कर रहे आदोलनकारियों और प्रशासन के बीच टकराव के हालात पैदा होगये हैं। कल गाववालों, ठेकेदार और पुलिस में मुठभेड़ होने मे तनाव होगया है। गांववालों ने शराब के ठेके को ताला लगा दिया है और सैकडों युवक कल सुबह से सडक जाम किये बैठे हैं।

शराब के ठेके के खिलाफ आंदोलन २ मई से चल रहा है। प्रशासन ने ठेकेदार और गाववालों के बीच समझौता कराने की भी कोशिश की। गांववालो ने कई बार पचायते बुलाकर आंदोलन तेज करने को घोषणा की।

आरोप है कि संघष समिति के महामन्त्री और भाजपा नेता राजनिर्भीक ने पंचायत मे मौजूद आदमियों और औरतों को जबरन ठेका बन्द कराने के लिए भडकाया। उन्होंने कहा कि ठेका ऐसे बन्द नही होगा। इस पर औरतों ने शराब को दुकान पर ताला लगा दिया। नजदीक हो गांववाले धरने पर बैठ गये। पुलिस ने आदोलनकारियों को समझाने की काफी कोशिश की, पर वे अड़े रहे। पुलिस वहां पंचायत के दौरान मौजद थी। बाद में वहा और पुलिस बुलाई गई। गांववालों ने उन पर पथराव शुरु कर दिया। इससे पहले एस० डी० एम० पी० आर० बिश्नोई ने भी मौके पर जाकर लोगों को समझाने की कोशिश को। तहसीलदार धर्मवीर मित्तल और डी० एस० पी० गुरदयालसिह संधू भी वहा मौजूद थे।

ठेकेदार के आदमियों और गांववालों के बीच जमकर पथराव हुआ। पुलिस के बीच-बचाव करने पर उन पर भो पथराव किया गया। झगडे में कई लोगों को चोटे आयी जिनमें पुलिसवाले भी शामिल हैं। आंदोलनकारी अपने घायलों को नजफगढ़ ले गये। बाद में पुलिस ने हालात को काबू कर लिया।

अभी इस मामले में कोई गिरफ्तारी नही हुई है। पुलिस और प्रशासन हालात पर नजर रखे हुए हैं।

रोहणा गांव में शराब पर प्रतिबन्ध

सोनीपत, २७ जून (निस)। यहा के गाव रोहणा में हुई एक पंचायत में सर्वसम्मति से फैसला किया गया कि गाव का कोई भी व्यक्ति न तो शराब का सेवन करेगा और न हो विवाह के मौके पर नाच-गाना करेगा। जो पचायत के नियमों की उल्लंघना करेगा उस पर ५०१ रुपये जुर्माना किया जाएगा।

जिला की नशा विरोधी समिति के प्रधान ओमप्रकाश सरोहा ने इस आशय की जानकारी देते हुए आज यहा संवाददाताओं को बताया कि पचायत के निर्णय को लागू करने के लिए ग्राम रोहणा मे उप समितिया बनादी गई है जो उन लोगों पर निगरानी रखेगो जो कि शराब का सेवन करते हैं और विवाह के अवसर पर असभ्य तरीके से नाच-गाना करते है। श्री सरोहा ने बताया कि अन्तिल चौबीसी तथा सरोहा खाप पचायतों ने भी अपने क्षेत्र के सभी गावों मे शराब के सेवन तथा नाचने पर प्रतिबन्ध लगा रखा है और नियमों का उल्लघन करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करने के साथ-साथ जुर्माना किया जाता है।

उन्होंने बताया कि ग्राम रोहणा के एक व्यक्ति ज्ञानसिंह पर पचायत के नियमो का उल्लघन करने के सन्दर्भ मे ५०१ रु० जुर्माना किया गया है।

शराब हटाओ, देश बचाओ

शराब बनाम मृत्युलोक का द्वार

पानी महंगा है शराब सस्ती है, जीवन तो महंगा है मौत सस्ती है। आजाद देश भारत में बापू की प्रतिमा के नीचे शराब की दुकान सजती है। मेहनतकश युवा मजदूर ही नहीं नन्हें-मुन्ने बच्चे अपनी मां के साथ बैठकर शराब में ही अपने दुख-दर्द की दवा तलाश करने लगे हैं। उड़ीसा के कटक जिले के आसपास विषाक्त शराब कांड में ३०० से अधिक लोग मारे गये। सरकार के लिए यह महज एक आंकड़ा है। बम्बई हो या दिल्ली सभी जगह कड़ी कार्रवाई की है सरकार ने। यहां भी करेगी। मगर इस बात की क्या गारण्टी है कि जहरीली शराब का अवैध धंधा बन्द हो जाएगा या मंदा हो जाएगा? लगता तो अब ऐसा है शराब की बोतल के साथ मुफ्त में कफन भी मिलने लगेगा और देश की गरीबी भी कम हो जाएगी। गरीब जिंदा ही न बचेगा। अमीर तो महंगी अंग्रेजी विदेशी शराब खरीद कर पी सकता है, क्योंकि शराब आज देश का फैशन, शिष्टाचार और स्टेटस सिम्बल तो बन ही चुकी है बस सिर्फ इतनी कृपा करो शराब को तेज जहर मत बनाओ। धीमा कड़वा जहर तो शराब स्वयं में है ही, इसे इतनी मिलावटी, इतनी घटिया, इतनी विषैली मत बनाओ कि पीते ही आदमी अन्धा हो जाये या राम नाम सत्य हो जाए। शराब न बन्द हुई, न सही मगर इसे स्वार्थी लोगों द्वारा मृत्युलोक का द्वार बनाने से हमें रोकना होगा।

—धर्मेन्द्रराय रेंचन, जालन्धर शहर

पानी की सप्लाई एक घण्टा नहीं, शराब की सप्लाई चौबीस घण्टे

होडल, २७ जून (ह०सं०) हरयाणा आर्य युवा परिषद् के प्रधान शिवराम आर्य ने कहा है कि वर्ष १९६६ में प्रदेश में केवल शराब का एक कारखाना था, अब २५ कारखानों में शराब बनाई जारही है। जिनमें एक कारखाना मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल के दामाद का है। उन्होंने कहा कि सरकार की १७ करोड़ लीटर शराब बिक्री करने की योजना है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के ग्रामीणांचल में मुश्किल से एक घण्टा पीने के पानी की सप्लाई होती है, जबकि शराब की सप्लाई २४ घण्टे होती है।

शराब की बिक्री से हरयाणा सरकार को दो सौ करोड़ रुपये प्राप्त होते हैं, जबकि शराब की वजह से होनेवाले रोगों की रोकथाम, अपराधों एवं झगड़ों को निपटाने के लिए अदालतों पर १२५० करोड़ रुपये प्रति-वर्ष व्यय करने पड़ते हैं जोकि प्राप्त आय से कई गुना अधिक है। श्री आर्य ने कहा कि प्रदेश सरकार भारतीय संविधान की धारा ४७ का उल्लंघन कर रही है। संविधान में स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि नशीले पेय, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, राज्य सरकार उनके प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगायेगी। उन्होंने कहा कि मानव मस्तिष्क में शराब डालना ऐसा ही है जैसे इन्जन के मुख में रेत झोंक देना।

आकाशवाणी से हिन्दी वार्ता

प्रसिद्ध विद्वान् श्री आचार्य दयानन्द जी शास्त्री प्राध्यापक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार की एक हिंदी वार्ता आकाशवाणी रोहतक से देववाणी कार्यक्रम के अन्तर्गत "संस्कृत साहित्य में शरद् वर्णन" इस विषय पर ८ जुलाई को प्रातः ७.२५ बजे पर प्रसारित होगी।

विश्व में ३.३० अरब निर्धन

वाशिंगटन, २७ जून (प०स०)। विकासशील देशों के शहरी इलाकों में मुफलिसी में जी रहे लोगों की संख्या इस दशक में मौजूदा आकड़े ३ ३० अरब से अधिक हो जाएगी।

विश्व बैंक के शहरी विकास प्रभाग के प्रमुख माइकेल कोहेन ने यह जानकारी दी है। उनका कहना है कि तेजी से विकसित हो रहे शहरों की बिगड़ती आबोहवा और गरीबी की समस्या के निराकरण के लिए नये तरीके अपनाये जाने की जरूरत है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३ फोन नं० दसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक ३२ १४ जुलाई, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

अग्निहोत्र द्वारा अद्भुत फलों की प्राप्ति

—आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेदप्रतिष्ठान हैदराबाद-२७

गतांक से आगे—

महर्षि लिखते हैं कि—जलपात्र से सीधे हाथ में जल लेकर कुण्ड के चारों ओर व विशिष्ट निर्दिष्ट दिशाओं में जल छिड़काये। किन्तु आजकल तो जल बहाया जाने लगा है।

जल छिड़काने की प्रक्रिया का स्पष्ट सम्बन्ध वृष्टिविज्ञान से है। क्योंकि वर्षा का एवं अग्निहोत्र का सम्बन्ध धोती दामन का सा है।

इस रहस्य को हम जलसिंचन मन्त्रों से ही प्रस्तुत करना चाहते हैं।

'ओ३म् अदितेनुमन्यस्व' इस मन्त्र को पढ़कर यज्ञकुण्ड से पूर्व दिशा में जल छिड़काने का विधान है। जैसा कि प्राची दिगग्निरधिपति० इस मन्त्र से भी स्पष्ट है कि आदित्य इषव.। यह जल अदिति के लिए स्वीकार करने योग्य है। पूर्व अर्थात् प्रथम, पहले सूर्य रश्मियां इन जल को वाष्प के रूप में ग्रहण करती हैं। फिर पश्चिम देवता इसे अपने आंचल में थाम लेते हैं। वृष्टिविज्ञान में पहली भूमिका सूर्य की है। अदिति का सम्बन्ध पूर्व से है। प्रतीची दिग्वरुणोधिपतिः—पश्चिम अर्थात् बाद में पीछे सूर्य द्वारा उठाई गई वाष्प को वरुण स्वीकार कर लेते हैं। थाम लेते हैं। फिर वरुण से इन सूक्ष्म वाष्पकणों को उत्तर के देवता सोम ग्रहण कर इन्हें सरस बना देते है, मेघों मे बदल देते हैं, पर्वतीय आंचल मेघों की छावनियों के समान हैं।

दक्षिण से उठकर अर्थात् दक्षिणी ध्रुव से उठी वायु उन्हें उत्तर की ओर धकेलती रहती है। पर्वत शिखरों पर और समुद्रीय आंचल में वरुण और सोम इन बादलों को थाम लेते हैं और फिर वहां से धरती के चारों ओर अर्थात् सभी दिशाओं में ये बादल फैलकर जल छिड़काते हैं अर्थात् बरसते रहते है।

इस अग्निहोत्र में धधकती अग्नि ही वह सविता देव है जो यज्ञ के रूप में वर्षा का प्रसव करती है अर्थात् वृष्टि को उत्पन्न करती है। याज्ञिक जल छिड़क कर इसका अभिनय कर रहा है कि—यह अग्निहोत्र विज्ञान जल का प्रसव करता है। 'यज्ञं प्रसुव' यज्ञ को प्रसवित कर, वर्षा यज्ञ का प्रसव है। उधर अग्निप्रधान पुरुष आदित्य ब्रह्मचारी वीर्यरूपी रस का नारी मे आरोपण करता है। नारी पश्चिम में वरुण रूप में गर्भाशय में उसे ग्रहण करती है। उत्तर मे स्थित हृदय सोम उसे विकसित करता है और फिर वह यज्ञपति का प्रसव करती है। 'प्रसुव यज्ञपतिं' प्रजया इध्यस्व यह यज्ञ का दूसरा फल है। यज्ञ का प्रथम श्रेष्ठ फल वृष्टि है। अन्न उसका परिपाक है। अन्न का भक्षण शरीर करता है। पुरुष इसी से बीज प्राप्त करता है और फिर वृष्टि कर दूसरे सन्तान रूपी भग ऐश्वर्य को प्राप्त करता है। उत्तम फसल, उत्तम सन्तान ये यज्ञ के दो श्रेष्ठ फल हैं। ये दोनों ही ऐश्वर्य के मूल हैं। यज्ञ का तीसरा फल वर्षा और सन्तान से उपजनेवाला ऐश्वर्य है। चौथा फल 'दिव्यो गन्धर्वः' चारों ओर के पर्यावरण को अद्भुत सुगन्ध से सुरभित कर देना। यह यज्ञ का चौथा फल है। यज्ञ का पांचवा फल है 'केतपूः' सूर्य की किरणों को पवित्र करना और सूर्य का पवित्र की हुई किरण 'केत नः पुनातु' हमें भी पवित्र बना देती हैं। अर्थात् यज्ञ से पिण्ड व ब्रह्माण्ड दोनों की शुद्धि हो जाती है। 'वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु' वह विज्ञान का वेत्ता वाचस्पति ब्रह्मा एक ओर वृष्टि करवाकर धरती पर नाना प्रकार के उत्तम रसों को उत्पन्न कर देता है और उक्त रसों से सत्वशुद्धि द्वारा मेधावी रस धारा का संचार कर देती है। दोनों प्रकार के रसों से वाणी आस्वादित हो उठती है इमं वाच प्रपद्ये।

यह जल सिंचन का रहस्य है जिसे महर्षियों ने विधि के साथ मन्त्रों से बांध रखा है। आशा है कि विचारशीलजन और अधिक अनुशीलन कर यज्ञ विज्ञान को समस्त विश्व में फैलाकर विश्व कल्याण मे प्रवृत्त होंगे।

जिला हिसार में वेदप्रचार

दिनांक ९-१० जून, ९२ को ग्राम भिराय (हिसार) में वेदप्रचार का आयोजन किया गया। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है तथा इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। पंचायत प्रस्ताव पास कर गांव से शराब का ठेका बन्द करवाने का आग्रह किया। पं० गजराज जी की मण्डली द्वारा फुटकड़ भजनों के अतिरिक्त एक शराबी का इतिहास तथा महाभारत की कथा भी रखी गई। पं० श्रीकृष्ण की बैठक में हवन किया गया।

ग्राम खोखा, गुंजार, धमाना में आकस्मिक मौत होने पर प्रचार नहीं हो सका। दिनांक ११-६-९२ को रात्रि मे खेतों की ढ़ाणी (आर्य निवास नलवा) में वेदप्रचार हुआ। प्रात. आर्यसमाज मन्दिर नलवा में हवन तथा रात्रि में वेदप्रचार हुआ।

—भलेराम आर्य, नलवा

केन्द्रीय आर्य सभा, यमुनानगर का चुनाव

प्रधान—श्री शूरवीर सेठ, उपप्रधान वरिष्ठ—चमनलाल सेठ, उपप्रधान—डा० सतीश बंसल, हरिराम आर्य, महामन्त्री—डा० नेदाराम आर्य, मन्त्री ..केशवदास आर्य, कोषाध्यक्ष—मनोहरलाल दिवान, प्रचार मन्त्री—विजयसिंह शास्त्री, इन्द्रजितदेव, लेखानिरीक्षक—ओमप्रकाश नरुला।

—डा० नेन्दाराम आर्य महामन्त्री

सुख का मार्ग

ससार में कौन-सा ऐसा प्राणी है जो सुख नही चाहता। चाहे कोई पशु-पक्षी है, चीटो है, हाथी है या मनुष्य है, सभी सुख की ओर भागते हैं। इनमे मनुष्य अधिक चतुर होने के कारण रात-दिन सुख की सामग्री जुटाने में लगा हुआ है।

२—मुख कई प्रकार के होते हैं। पूर्वजों का कथन है कि सबसे पहला मुख है निरोगो काया। दूसरा मुख है घर में हो माया इत्यादि। ये सभी भौतिक सुख हैं जो क्षणभंगुर हैं। इन सबसे ऊंचा एक और सुख है जो आत्मा से सम्बन्ध रखता है, जिसे आध्यात्मिक अथवा शाश्वत सुख कहते है अर्थात् जो सदैव बना रहता है। इसके प्राप्त होने पर अन्य सुख सुलभ हो जाते हैं।

३—आप यह जानना चाहते हैं कि यह शाश्वत सुख कैसे मिलेगा? इसको प्राप्त करना आसान भी है और कठिन भी है। आसान तो इसलिये है कि इसे प्राप्त करने के लिये कहा भाग-दौड़ नही करनी पडती, कोई पैसा खर्च नही करना पडना, कोई विशेष परिश्रम भी नही करना पडता। कठिन इसलिये है कि मन और इन्द्रियों को सयम मे रखकर नियन्त्रण करना पडता है।

४—यह मन बडा चंचल है। सम्भालते-सम्भालते फिसल जाता है, क्षण में ही बेइमान हो जाता है। इन्द्रियो को भड़काता है। जीभ से कहता है गुलाब जामुन खायेगो, दहीभल्ले बहुत स्वादिष्ट हैं। इसी प्रकार आख, कान, नाक आदि को विषय वासना मे फसाने के लिए उकसाता रहता है। मनुष्य मन के वशीभूत होकर इतने खोटे कर्म कर देता है जिन्हे बताने मे भी लज्जा आती है। आप समाचारपत्रों में बलात्कार के केस पढते रहते हैं। मनुष्य अपने आचरण से इतना गिर गया है कि पशु भी ऐसा नही करता है। इसका कारण है तामसिक भोजन। मनुष्य अपना भोजन छोडकर मोट, मछली, अण्डे इत्यादि पाशविक भोजन खाता है। जैसा भोजन खायेगा, वैसे ही मनमे विचार उत्पन्न होगे और मनुष्य जैसा सोचता है वेसा ही करता है। विचार ही मनुष्य को उठाते और गिराते हैं।

५—दूषित भोजन के कारण मानवता समाप्त होती जारही है। चारों ओर दानवता वढती जारही है। हेराफेरी, छलकपट में धनसंग्रह किया जारहा है। दिन-दहाडे सरेआम अन्याय और अत्याचार हो रहे हैं। यही कारण है समय पर वर्षा नही होती। जब होती है तो विनाश करती है और अनेक प्राकृतिक विपदायें सताती हैं।

६—सत्यार्थप्रकाश में स्वामी दयानन्द जी ने बताया है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, परन्तु फल भोगने मे परतन्त्र है अर्थात् ईश्वराधीन है। परमपिता परमात्मा का न्यायचक्र चल रहा है। जैसे-जैसे कोई कर्म करेगा उसके अनुसार फल भोगना पडेगा, यह अटल नियम है।

७—वेद का सन्देश है 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बन। यदि सुख से रहना चाहते हो, श्रेष्ठ कर्म करो। किसी से ईर्ष्याद्वेष मत करो, छलकपट छोड दो। आपको सुख मिलेगा, जब आप दूसरों को भी सुखी देखना पसन्द करोगे। जितना आपसे हो सके दूसरो के कष्ट दूर करने में सहायता करो।

८—विद्वानों का कथन है 'मनुष्य पुरुषार्थ से शिव बन जाता है और प्रमाद से शव हो जाता है'। प्रातःकाल सूर्य उदय होने से पूर्व उठ जाओ। ईश्वर को याद करो। जो प्रातःकाल सूर्य उदय होने से पूर्व उठ जाता है, वह सुख प्राप्त करता है। यदि किसी कारण आपके मनमे अशाति है तो यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय के मन्त्रो का भावार्थ पढो, समझो आपको शांति मिलेगी, यही सुख का मार्ग है। मेरा अनुभव है आपकी सभी समस्याए हल होती चली जायगी और जीवन मे आनन्द आने लगेगा। इस मार्ग पर एक वर्ष चलकर तो देखो।

—देवराज आर्य मित्र
आर्यसमाज बल्लभगढ जि० फरीदाबाद

शुभविवाह पर दान

सूबेदार यज्ञपाल शास्त्री पंचगांव (भिवानी) की सु० सौभाग्यवती गीतारानी का शुभविवाह संस्कार दिनाक ११ जून, ९२ को बास सतनाली (महेन्द्रगढ) के चौ० प्रतापसिंह धनखड़ (२५४ विकास नगर भिवानी) के सुपुत्र चिरंजीव भरपूरसिंह के साथ सम्पन्न हुआ। पाणिग्रहण सस्कार श्री मनुदेव जी शास्त्री (चरखी दादरी) द्वारा वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित संस्थाओं को दान दिया गया—

(कन्या पक्ष)	रुपये
कन्या गुरुकुल पंचगांव	१०१
गुरुकुल झज्जर, रोहतक	१०१
आर्य महाविद्यालय चरखी दादरी	५१
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	५१
(वर पक्ष)	
कन्या गुरुकुल पचगांव	५१
,, ,, ,, (भातो कलोठकलां राजस्थान)	११

प्रो० ओमकुमार आर्य नैरोबी में

प्रो० ओमकुमार (किसान कालेज जीद) १४-६-९२ को नैरोबी आर्यसमाज के अधिकारियो के निमन्त्रण पर वेदप्रचार हेतु विदेश पहुंच गये हैं। अब तक उनके चार-पाच व्याख्यान हुए हैं। वहा ज्यादा अंग्रेजी चलती है। प्रोफेसर हिंदी व अंग्रेजी मे मिलाजुला बोलते हैं। अब तक व्याख्यानो का अच्छा प्रभाव रहा है। प्रो० साहब कई महीनों तक वहां रहेंगे। पत्र-व्यवहार करनेवाले नीचे लिखे पते पर अंग्रेजी में ही करे।

Om Kumar Arya
C/o Hon General Secretary
Arya Smaj P O. Box 40243
Nairobi (Kenya)

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का चुनाव

सभा कार्यालय मे प्राप्त सूचना के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का ७ जून, ९२ को जो जालन्धर में चुनाव सम्पन्न हुआ है, उसमें सभा दोफाड होगई है। जालन्धर की एक आर्यसमाज के प्रतिनिधियों को चुनाव में सम्मिलित करने तथा गुप्त मतदान द्वारा चुनाव कराने के सार्वदेशिक न्याय के आदेश की अवहेलना करने के कारण एक पक्ष ने निम्न प्रकार सभा के चुनाव का समाचार सर्वहितकारी में प्रकाशनार्थ भेजा है। दूसरे पक्ष का प्रकाशन हेतु समाचार हमे अभी तक प्राप्त नहीं हो सका।

—सम्पादक

प्रधान—सर्वश्री चौ० ऋषिपालसिंह एडवोकेट, उपप्रधान—अशोक आर्य, वैद्य ओमप्रकाश इन्दु, श्रीमती माता सुमनायति, वैद्य तीर्थराज, महामन्त्री—योगेन्द्रपाल सेठ, मन्त्री—मुलखराज आर्य, देशबन्धु चौपडा, प्रीयतमदेव, शादीलाल महेन्द्र, कोषाध्यक्ष—राजपाल मित्तल एडवोकेट, अधिष्ठाता वेदप्रचार—डा० कुन्दनलाल पाल, अधिष्ठाता साहित्य विभाग—सोहनलाल सेठ, अधिष्ठाता आर्यवीर दल एव आर्ययुवक सभा—रोशनलाल शर्मा, प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद्—प्रिंसीपल अमृतलाल खन्ना।

शोक समाचार

सूबेदार धीरजसिंह जो का स्वर्गवास दिनाक १०-६-९२ को हो गया। उनकी दिवंगत आत्मा की शांति हेतु हवन एव दिनाक २६-६-९२ को प्रातः ८ बजे १३, सूरजनगर (आजादपुर) दिल्ली-३३ में सम्पन्न हुआ। उन्होने अनेक वर्षो तक कन्या गुरुकुल नरेला में बहुत ही लगन तथा परिश्रम से सेवा की थी।

हरयाणा में शराबबन्दी अभियान की गतिविधियां

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी अभियान का प्रचार तथा प्रसार दिन-प्रतिदिन प्रगति की ओर बढ रहा है। इसकी लहर हरयाणा के कोने-कोने में फैल रही है। दैनिक समाचारपत्रों में प्रतिदिन शराब के ठेकों को उठवाने के लिए संघर्ष के समाचार प्रकाशित हो रहे हैं। सभा के कार्यालय में भी अनेक ग्रामों से पत्र प्राप्त हो रहे हैं कि ग्राम में शराब आदि नशों के विरुद्ध प्रचार करने के लिए उपदेशक भेजे जावे। इस बढती हुई शराबबन्दी प्रचार की मांग को पूरा करने तथा जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, वहा की पंचायतों को प्रेरणा करके आगामी वर्ष ठेकों की उन ग्रामों में नीलामी न की जावे, प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सरकार को भिजवाये जावे। सभा के मन्त्री श्री सूबेसिह तथा सयोजक शराबबन्दी अभियान समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जो के निर्देशन में उपदेशकों तथा भजनमण्डलियों के जिलेवार प्रचार कार्यक्रम बनाये गये हैं—

१—सभा के उपदेशक पं० रतनसिंह आर्य ने जिला सोनीपत के ग्रामों की पंचायतों से सम्पर्क करके सूचित किया है कि ग्राम करेवड़ी मे जो ठेका बन्द करवा दिया गया था, सरपंच के सहयोग से किसी दूसरे स्थान पर ठेका पुन. चालू होगया है, परन्तु शराबबन्दी समर्थक कार्यकर्त्ताओं ने इसका विरोध करने के लिए जिला उपायुक्त श्री दलीपसिंह से भेंट करके बन्द करने का अनुरोध किया है। उपायुक्त महोदय ने खण्ड विकास अधिकारी को इस सम्बन्ध में रिपोर्ट भेजने का निर्देश दिया है।

२—इसी प्रकार ग्राम सलीमसर माजरा तथा महीपुर की संयुक्त पंचायत ने शराब का ठेका खोलने का प्रस्ताव कर दिया था, परन्तु अब महीपुर की पचायत पृथक् बन जाने पर वहा के सरपंच ने अपने ग्राम में ठेका बन्द करने का प्रस्ताव करके सरकार को भेज दिया है और जिला उपायुक्त से प्रस्ताव के अनुसार ठेका बन्द करने का अनुरोध किया है।

३—ग्राम बलम्भा (महम) जिला रोहतक के श्री मेहरसिंह ने सभा से शराबबन्दी प्रचार करने की मांग की है। तदनुसार सभा की ओर से श्री हरध्यानसिंह की मण्डली को प्रचारार्थ भेजा गया है।

४—ग्राम ऐचराकला जि० जीद से श्री रामफलसिह नम्बरदार ने अपने ग्राम में शराबबन्दो प्रचार तथा सम्मेलन करने की मांग की है। जिला वेदप्रचार मण्डल जीद की ओर से श्री चन्द्रभानु तथा जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत की ओर से श्री रामकुमार आर्य का उनकी इच्छानुसार प्रचार कार्यक्रम बना दिया है।

५—ग्राम आसन जि० रोहतक के आर्यसमाज के युवा कार्यकर्त्ताओं ने सभा के अधिकारियो से अपने ग्राम में शराब के ठेके को बन्द करवाने की सहायता की माग की है। अत. सभा के आदरो महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री तथा प० जयपाल भजनोपदेशक ठेके पर धरना देने की तैयारी का कायक्रम बना रहे हैं। ग्राम के ५-६ पचों ने भी ठेका बन्द करवाने में समर्थन देना मान लिया है। ग्राम के अन्य शराबबन्दी कार्यकर्त्ता सहयोग दे रहे हैं।

६—ग्राम भनमौरी जिला हिसार के युवा संगठन ने सरकार से मांग की है कि ग्राम में पूर्ण शराबबन्दी की जावे। कप्तान बलवीरसिंह के अनुसार शराब पीनेवालों के कारण बहन-बेटियों का घर से बाहर निकलना कठिन हो रहा है। स्कूलों में पढ़नेवाले अनेक छात्र भी शराब पीने के दुर्व्यसन मे फंसने लगे हैं।

पैंतावासकलां जिला भिवानी में शराबबन्दी सम्मेलन

७—जिला भिवानी के ग्राम पैंतावासकलां में ग्राम पंचायत के सरपंच श्री सत्येन्द्रसिंह के नेतृत्व मे ग्रामवासियों ने एकजुट होकर अपने ग्राम से शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए २३ जून तथा २ जुलाई को सैकड़ों की संख्या में जिला उपायुक्त भिवानी से मिले तथा अपने ग्राम से शराब का उपठेका बन्द कराने की मांग करते हुए चेतावनी दी कि यदि ग्रामवासियों की इच्छा के विरुद्ध शराब का ठेका बन्द नहीं किया तो उसे सहन नही किया जावेगा और ठेका बन्द कराने के लिए बड़े से बडा बलिदान दिया जावेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से सभा उपदेशक पं० अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी तथा पं० जयपाल एवं स्वामी देवानन्द की भजनमण्डली ने दो दिन ग्राम मे शराब की बुराइयों से जनता को सावधान किया। इस प्रकार ग्रामवासियो के सघर्ष से प्रभावित होकर जिला प्रशासन ने शराब का ठेका बन्द करवा दिया। ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना करदी गई है और १९ जुलाई को एक विशाल शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा, जिसमे सभा के प्रधान प्रो. शेरसिंह मन्त्री श्री सूबेसिंह, हरयाणा शराबबन्दी अभियान के संयोजक श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त, श्री हीरानन्द आय एवं श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक आदि आर्यनेता इस सम्मेलन में पधारेंगे।

सिसाना जिला सोनीपत में शराब के ठेके पर धरना

८—दहिया खाप के प्रमुख ग्राम सिसाना जिला सोनीपत में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए ग्राम के शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं ने दिनांक ९ जुलाई से धरना आरम्भ कर दिया है। गतवर्ष ग्राम पचायत के प्रस्ताव की अवहेलना करते हुए बस अड्डे तथा स्कूल के समीप शराब का ठेका खोल दिया था। ग्रामवासियों की माग पर कुछ समय के लिए ठेका बन्द करवा दिया था। परन्तु शराब के ठेकेदार ने पुन: ठेका खोल दिया। ग्राम के सरपंच तथा दहिया खाप के प्रमुख नेता श्री रामफल तथा ग्राम रोहणा के आर्य कार्यकर्त्ता भी धरने को सफल करने मे सहयोग कर रहे है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों ने भी ग्रामवासियों को इस सघर्ष मे पूर्ण सहयोग तथा समर्थन करने का आश्वासन दिया है।

गुड़गांव में ग्राम धर्मपुर में शराब का ठेका बन्द

९—गुडगांव आर्य केन्द्रीय सभा तथा शराबबन्दी संघर्ष समिति गुडगाव की ओर से धर्मपुर (गुडगांव) में शराब का ठेका बन्द कराने तथा निर्दोष महिलाओं पर पुलिस अत्याचार के विरोध मे ६ जुलाई को गुडगांव में विशाल महिला प्रदर्शन किया एवं उपायुक्त महोदय को ज्ञापन दिया गया। शक्ति प्रदर्शन से प्रभावित होकर धर्मपुर मे शराब का ठेका बन्द कर दिया गया। पिछले दो मास से ठेके पर ग्रामवासियों का धरना चल रहा था। इस महत्त्वपूर्ण कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से शराबबन्दी प्रचार करवाया गया था।

टिटौली जि० रोहतक का ठेका बन्द

१०—आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं तथा ग्राम के पंचों के सघर्ष के कारण ग्राम टिटौली जि० रोहतक में शराब का उपठेका भी बन्द होगया है। यहां भी सभा को ओर से शराबबन्दो प्रचार किया गया था।

—केदारसिंह आर्य

चौ० माडूसिंह के छोटे लड़के का निधन

स्व० चौ० माडूसिह पूर्व शिक्षामन्त्री के छोटे लड़के श्री ओंकारसिंह मलिक का दिनाक १० जुलाई को जीद बस अडडे पर एक बस द्वारा टक्कर मारे जाने पर निधन होगया। वे ४८ वर्ष के थे। शाति यज्ञ तथा शोक सभा २२ जुलाई को ८ बजे रोहतक में होगी।

भयंकर मुस्लिम सांप्रदायिकता एवं मानसिकता की लपेट में

कश्मीर समस्या व समाधान

सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

गतांक से आगे—

फारुख अब्दुल्ला के दो कार्यकालों के बीच में उसके बहनोई गुलाम मोहम्मदशाह का शासनकाल भी आतंकवादियों एवं पाक समर्थक तत्त्वों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। पाकिस्तान के प्रति उसकी सहानुभूति तो पहले से ही थी। उस समय राज्य में इतनी तोड़फोड़ बढ़ गई कि उसके शासन के प्रारम्भिक ९० दिनों में ७२ दिन तक श्रीनगर में कर्फ्यू रहा। उसने अपनी मतान्धता के कारण श्रीनगर सचिवालय के परिसर में मस्जिद बनवाकर अपनी मुस्लिम धर्मान्धता का खुला परिचय दे दिया था। ये मस्जिदें पाक परस्त सरकारी कर्मचारियों की राष्ट्रघातक गतिविधियों का केन्द्र बन गई। पाकिस्तान समर्थक राज्य पर हावी होगये।

इस प्रकार स्वतन्त्रता के ४५ वर्षों में तीन दशक से भी अधिक वर्ष जम्मू कश्मीर राज्य पर शेख अब्दुल्ला, फारुख अब्दुल्ला, दामाद गुलाम मुहम्मद शाह जैसे लोग मुख्यमन्त्री रहे। अर्थात् ऐसे परिवार का शासन रहा, जिसे भारत के साथ भावनात्मक लगाव दिखाने मात्र का ही था। उनकी राजनीति का केन्द्र बिन्दु भारतीय कश्मीर नहीं रहा। वे आजाद कश्मीर या पाकिस्तानी कश्मीर के सपने लेते रहे। इसी कारण से कश्मीर में भारत को प्रभुसत्ता अपनी जड़ें न जमा सकी। इसी का परिणाम था कि तत्कालीन राज्यपाल जगमोहन ने राजीव सरकार को गोपनीय रिपोर्ट भेजकर अवगत करा दिया था, किंतु सरकार की ओर से कोई कार्यवाही न की गई। कश्मीर के सम्बन्ध मे प० नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गाधी व राजीव गाधी ही नीति निर्धारित करते थे। इन तीनों की ही नीतियों के कारण ही आज कश्मीर भयकर परिस्थितियों मे फस गया है।

इतिहास की पृष्ठभूमि मे देखे तो कश्मीर की आज की विस्फोटक स्थिति के सबसे ज्यादा जिम्मेदार पं० नेहरू ही दिखाई देते हैं। जम्मू कश्मीर राज्य का २६ अक्तूबर, १९४७ में महाराजा हरिसिंह द्वारा विलय करने के बाद नेहरू जी ने कश्मीर को भारत मे विलय होनेवाली अन्य देशी रियासतो से अलग माना। उन्होंने कश्मीर के महाराजा हरिसिंह को अन्य राजाओं से अलग माना। तभी तो उन्होने शेख अब्दुल्ला की इच्छापूर्ति के लिए महाराजा हरिसिंह को कश्मीर छोड़ने पर विवश किया। दूसरी ओर हैदराबाद के नवाब को भारत से युद्ध करने के बाद भी राज प्रमुख बनाकर रखा गया। कैसा दोहरा मापदण्ड था? कैसी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति थी?

फिर वही नेहरू जी ही थे जिन्होंने ३७० धारा लागू करवाई। वे नेहरू जी ही थे जिन्होंने कश्मीर की आतरिक समस्या को सयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाकर उसको अन्तर्राष्ट्रीय रूप देने की भयंकर भूल की। वे नेहरू जी ही थे जिन्होंने १९४८ में पाकिस्तान के साथ युद्धविराम स्वीकार कर पाकिस्तानियों को कश्मीर से बाहर खदेड़ने का स्वर्णिम अवसर हाथ से खो दिया। जिसके कारण मीरपुर, भिम्बर, कोटली, मुजफ्फराबाद, पुछ, गिलगित आदि के क्षेत्र पाकिस्तान में ही रह गये। फलस्वरूप कश्मीर का ७८,११४ वर्ग कि०मी० क्षेत्र पाक कब्जे में होगया। वे नेहरू जी ही थे जो माउन्ट बेटन के षड्यन्त्र में फंसकर कश्मीर के मामले को सुरक्षा परिषद् में ले जाकर जनमत संग्रह की बात मान बैठे। नेहरू की कश्मीर नीति का एक ही आधार रहा—शेख से उनकी मित्रता। इसी से देशहित का बार-बार बलिदान किया गया। शेख के विचार, कार्यशैली, कश्मीर को स्वतन्त्र राज्य बनाने का सपना, सब कुछ ही नेहरू जी अनदेखा करते रहे। एक देश में देखते-देखते दूसरे देश की नीव पड गई। वास्तव में कश्मीर में अलगाववाद और विद्रोह के बीज नेहरू जी ने कश्मीर के भारत मे विलय होने के साथ ही बो दिये थे।

धारा ३७० के दुष्परिणाम

यह धारा पृथक्वादी विष की बेल है। इसी के कारण आज कश्मीर में आतंकवादी संगठित होकर कश्मीर को भारत से पृथक् करने में जी-जान से जुटे हुए हैं। पाकिस्तान के साथ ही कश्मीर को लेने के लिए सारे संसार में प्रचार में संलग्न हैं। इस धारा के जनक भी पं० नेहरू जी ही थे।

जब तत्कालीन प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय संविधान के प्रधान शिल्पी डा० अम्बेडकर से इसकी चर्चा की थी तो उन्होंने इसका विरोध करते हुए कहा था कि—यह धारा देश के लिए घातक सिद्ध होगी, क्योंकि उसके कारण जम्मू कश्मीर राज्य भारत के साथ एकरस होने के स्थान पर अलगाव का मार्ग पकड़ेगा और दूसरे राज्यों को भी गलत प्रेरणा देगा। पं० नेहरू ने ही शेख अब्दुल्ला को डा० अम्बेडकर के पास इस धारा की आवश्यकता पर चर्चा करने के लिए भेजा था। डा० अम्बेडकर ने शेख की सब बातें सुनने के पश्चात् उसको यह कहकर वापस कर दिया था कि "तुम चाहते हो कि भारत पर कश्मीर की रक्षा इत्यादि की सारी जिम्मेवारी तो रहे, पर भारतीय ससद का उस पर कोई अधिकार न हो। मैं भारत का विधिमन्त्री हूं, मुझे भारत के हितों की रक्षा करनी है, इसलिए तुम्हारे प्रस्ताव को स्वीकार नही कर सकता"।

इसके पश्चात् पं० नेहरू ने धारा ३७० का प्रस्ताव रियासतों के राज्यमन्त्री गोपाल स्वामी आयंगर द्वारा सविधान सभा में रखवाया था। सभा में भी इसका बड़ा विरोध हुआ। विरोध करनेवालों में एक मुस्लिम सदस्य श्री हसरत मोहानी का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है। उनको आपत्ति थी कि इस धारा के द्वारा जम्मू कश्मीर के साथ पक्षपात क्यों किया जारहा है? इसके बाद पं० नेहरू ने निजी हस्तक्षेप और आयंगर के यह आश्वासन देने के पश्चात् कि यह धारा अस्थायी है और शीघ्र ही समाप्त करदी जायेगी तथा भारतीय संविधान व संसद का निर्णय शेष भारत के समान जम्मू कश्मीर पर भी लागू करेगा। संविधान ने उसे बड़े सकोच व झिझक के साथ स्वीकार किया था।

क्या है ३७० धारा

१—भारतीय सविधान की धारा १ और ३७० के अतिरिक्त कोई भी धारा जम्मू कश्मीर राज्य पर सीधे लागू नही होती। शेष धाराओं को तथा ससद द्वारा पारित कानूनों को वहा लागू करने के लिए भारत के राष्ट्रपति की विशेष अनुज्ञा तो चाहिये ही, यहां की सविधान सभा की विशेष अनुमति भी चाहिए।

२—कश्मीर राज्य का अपना अलग संविधान है, जबकि भारत के अन्य किसी भी राज्य का अपना अलग सविधान नही है। इसी कारण राज्य के लोगों को दो प्रकार की नागरिकतायें प्राप्त हैं। राज्य का अपना अलग झण्डा और अपना निशान है। जिस कारण सरकारी भवनों पर दो प्रकार के झण्डे साथ-साथ लहराते हैं। राष्ट्रध्वज तिरंगे झण्डे को जलाना और फाड़ना व अपमानित करना यहां दण्डनीय अपराध नहीं है। जैसा कि भारत के शेष राज्यों में है। स्मरण रहे, भारतीय मौलिक कर्त्तव्य भी कश्मीर पर लागू नहीं होते।

३—इस कारण घाटी की जनता (विशेषकर मुस्लिम) स्वयं को देश के शेष नागरिकों से अलग मानती है।

४—राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त राज्यपाल जम्मू कश्मीर संवैधानिक मुखिया होने के बाद भी राज्य की नागरिकता न रखने और मतदान के अधिकार से वचित रहने के कारण बाहरी व्यक्ति समझा जाता है।

५—भारत के नागरिक, जम्मू कश्मीर के नागरिक नहीं होते। उन्हें राज्य में बसने, सम्पत्ति खरीदने तथा राज्यविधान, स्थानीय निकायों, पंचायत के लिए चुनाव लड़ने व मतदान का अधिकार नही है।

(क्रमशः)

आर्यसमाज सांघी जि० रोहतक का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सांघी जिला रोहतक के मन्दिर निर्माण हेतु खिड़वाली मार्ग पर ग्राम की ओर से भूमि प्रदान की है। इस बार आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव गतमास ८ से १० जून को सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर का भी आयोजन १ से १० जून तक किया गया, जिसमें स्वामी योगानन्द जी ने बच्चों को वैदिकधर्म तथा योगासनों का प्रशिक्षण दिया। उत्सव पर हरयाणा के पूर्व वित्तमन्त्री श्री मूलचन्द जैन पधारे तथा उन्होंने अपनी ओर से आर्यसमाज मन्दिर निर्माण हेतु ११०० रु० दान दिया। डा० राममेहर आर्य तथा सभा के उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री एवं श्री धर्मवीर आर्य, श्री रतनसिंह आर्य व श्री गजरामसिंह आर्य की भजनमण्डली के व्याख्यान तथा भजन हुए। ग्रामीण जनता को शराब जैसी सामाजिक बुराइयों से बचने का उपदेश दिया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार किया गया—

प्रधान—सर्वश्री भगवानसिंह, उपप्रधान—ओमप्रकाश, मन्त्री—ओमप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष—मांगेराम।

आर्यकुमार सभा का चुनाव

प्रधान—ब्र० बलजोत, उपप्रधान—कुलवीर, मन्त्री—प्रवीणकुमार, कोषाध्यक्ष—जितेश, रामभज, प्रचारमन्त्री—जीतसिंह, उपप्रचारमन्त्री—देवेन्द्र।

शोक समाचार

१—नम्बरदार सुलतान जी भदानी का देहांत २५ मई, ९२ को होगया। उनकी आयु १०४ वर्ष की थी। चौ० हरफूलसिंह, चौ० प्रहलादसिंह और नम्बरदार सुलतानसिंह जी की जोड़ी थी। ये आर्यसमाज के सभी कार्यों में सोत्साह भाग लेते थे। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

—सम्पादक

२—श्री जगवीरसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज बाघपुर जि० रोहतक के पिता श्री सुलतानसिंह सेवा-निवृत्त थानेदार का ७५ वर्ष की आयु में दिनांक ३ जुलाई को स्वर्गवास होगया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुःखी परिवार एवं सम्बन्धियों को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सत्यवान आर्य

आर्यसमाज गन्नौर शहर (सोनीपत) का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री जयदेव जतोईवाला, उपप्रधान—लाजपत आर्य, डा० लछमनदास, मन्त्री—ओमप्रकाश वर्मा, उपमन्त्री—डा० महेन्द्र आहूजा, कोषाध्यक्ष—प्रताप भुटानी, उपकोषाध्यक्ष—उमेश भुटानी, पुस्तकाध्यक्ष—मा० बुद्धसिंह, लेखानिरीक्षक—संदीप मोंगिया।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

		रुपये
१	श्री सुरेश बुडेजा कार्यालय शिवालिक इन्टर नेशनल पानीपत	२५,०००
२	,, करतारसिंह आर्य व छत्रसिंह मिस्त्री गुरुकुल झज्जर जि. रोहतक	२०५
३	,, मा० कंवलसिंह ग्राम समसपुर जि० रोहतक	२०२
४	,, मा० ओमप्रकाश ग्राम खिलावड़ी जि. चुरु (राज.)	१००
५	,, चौ० मनफूलसिंह	१०१
६	,, चौ० हरलालसिंह सिरसा	१००
७	,, मेजर तोखराम पालम (दिल्ली)	११००
८	,, हरगोपाल जालन्धर (पंजाब)	२५०
९	,, लालचन्द ,, ,,	२५०
१०	,, बनारसीदास ,, ,,	२००
११	,, बनवारीलाल ,, ,,	३००
१२	,, स्वरूपसिंह ,, ,,	२००
१३	श्रीमती सावित्रीदेवी ,, ,,	२००
१४	,, नन्दरानी ,, ,,	३००
१५	श्री हरगोपाल ,, ,,	३००
१६	,, हरबंसलाल ,, ,,	३००
१७	श्रीमती राजकुमारी ,, ,,	३००
१८	श्री बनारसीदास ,, ,,	२५०
१९	,, अशोककुमार ,, ,,	२५०
२०	,, शंकरदास ,, ,,	२००
२१	,, वनायक ,, ,,	३००
२२	,, उजागरमल ,, ,,	२५०
२३	,, अयोध्यानाथ ,, ,,	२००
२४	श्रीमती सुदेशकुमारी ,, ,,	२७५
२५	,, राजरानी ,, ,,	२२५
२६	,, रूपरानी ,, ,,	२५०
२७	श्री जगदीशराय ,, ,,	१५०
२८	,, हरबसलाल ,, ,,	२५०
२९	,, वेदव्रत ,, ,,	३००
३०	,, कृष्णगोपाल ,, ,,	२५०
३१	,, अशोककुमार ,, ,,	२५०
३२	आर्यसमाज जगाधरी जि० यमुनानगर	१०१
३३	,, रामगढ जि० अलवर (राज.)	५१
३४	,, श्रद्धानन्द नगर पलवल जि० फरीदाबाद	५१
३५	श्री प्रभुदयाल ,, ,, ,,	११
३६	,, हरिश्चन्द्र शास्त्री ६१५, कृष्णा कालोनी पलवल फरीदाबाद	१००

श्री प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री जींद द्वारा

		रुपये
३७	श्री अमित टैक्स टाइल जींद	५१
३८	,, मुनीष क्लाथ हाउस ,,	५१
३९	,, हरयाणा फ्लोर मिल जींद	१००
४०	,, विकास सैल कार्पोरेशन ,,	१००
४१	,, बसल ठेकेदार ,,	५०
४२	,, ओमप्रकाश गुप्त बजाज मैन बाजार जींद	५१
४३	,, प्रेम प्रापर्टी डीलर ,,	५०
४४	,, वेदप्रकाश ,,	५०
४५	,, रोशनलाल सु० ला० रोनकराम ,,	३१
४६	,, डा० रणजीतसिंह आर्य रेलवे रोड पटियाला चौक जींद	२१
४७	,, रामचन्द्र शास्त्री एम०ए० ग्राम सरगथल जि० सोनीपत	२५
४८	श्री ओमप्रकाश शास्त्री ग्राम सलीमपुर माजरा जि० सोनीपत	२५
४९	,, कृष्णकुमार आर्य अनाज मण्डी जींद	२५
५०	,, भागमल भारद्वाज ज्वलर्ज ,,	२१
५१	,, श्रीचन्द जैन एम०सी० ,,	५०
५२	,, डा० हरिचन्द मीठा, मीठा अस्पताल जींद	५१
५३	श्रीमती डा० मोहिनी सूद, सूद नर्सिंग होम ,,	५१
५४	श्री ला० वृन्दावन श्रीकृष्ण कालोनी ,,	१०१
५५	श्रीमती सरला पुरुषोत्तम आर्यसमाज जींद शहर	५०
५६	श्री प्रो० डा० मदनलाल लाम्बा विद्यालंकार गर्व० पोस्ट ग्रेजुएट कालिज जींद	१०१
५७	,, धर्मपाल शास्त्री ग्राम व डा. छनेहरा (गोहाना) जि० सोनीपत	२५
५८	,, रामकिशन शास्त्री श्रीटलखेड़ा जि. जींद	२५
५९	,, रणधीरसिंह मैनेजर ग्राम गंगाना जि. सोनीपत	२५
६०	श्रीमती लेडी डा० शारदा जींद	२५
६१	वैद्य डा० ताराचन्द गोयल ,,	५
६२	श्रीमती कौशल्या धर्मपत्नी मा० आनन्ददेव आर्यनगर झज्जर जि० रोहतक	५१
६३	श्री कृष्णकुमार आर्य, आर्यनगर झज्जर जि० रोहतक	५१
६४	,, प्रधान माहलाराम आर्य, आर्यसमाज रइया ,,	५१
६५	,, लक्ष्मणसिंह आर्य पुराना बस अड्डा झज्जर ,,	११
६६	,, राव गणपतसिंह आर्य ग्राम टूयना जि० रेवाड़ी	८१
६७	,, रामचन्द्र आर्य ग्राम न्योताना जि० महेन्द्रगढ	५१
६८	,, डा बख्तावरसिंह आर्य ग्राम दूधवा जि. भिवानी	५१
६९	,, ओमप्रकाश शास्त्री गणक आ. प्र. सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक	५१
७०	,, शेरसिंह आर्य सर्वहितकारी व्यवस्थापक आ. प्र. सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक	५१
७१	,, मनजीतसिंह आर्य सर्वहितकारी व्यवस्थापक आ. प्र. सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक	५१
७२	,, धर्मवीर आर्य पुरोहित आ. प्र. सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक	५१
७३	,, सतवीर आर्य सेवक आ प्र स ह दयानन्दमठ रोहतक	३१
७४	,, मुरलीधर आर्य पाचक ,, ,, ,, ,,	३१
७५	,, गजरामसिंह आर्य भजनोपदेशक आ. प्र. स. ह. दयानन्दमठ रोहतक	५१
७६	,, अशोककुमार आर्य भजनोपदेशक आ प्र. स. ह. दयानन्दमठ रोहतक	३१
७७	,, खेमसिंह आर्य भजनोपदेशक आ. प्र. स ह. दयानन्दमठ रोहतक	५१
७८	,, दीनदयाल सुधाकर प्रचारक आ. प्र. स ह दयानन्दमठ रोहतक	३१
७९	,, ओमप्रकाश वानप्रस्थी भटिंडा (पंजाब)	१०१
८०	सुश्री भावना कुमारी सु. मदनलाल महता ग्राम सिवानी जि. भिवानी	१०१
८१	दयानन्द पब्लिक स्कूल सैं. ३ फरीदाबाद	५१
८२	श्री जमराज बाबू ग्राम इमादपुर	२१
८३	,, टेकचन्द खटाना डी-४७ डबुआ कालोनी फरीदाबाद	२१
८४	,, अमीरसिंह सरपंच सु. मायाराम ठेकेदार ग्राम महमूदपुर जि. सोनीपत	५१
८५	,, रणसिंह आर्य सु० निहालसिंह आर्य ग्राम छतेहरा जि० सोनीपत	५१
८६	,, पोहकरसिंह आर्य सु० निहालसिंह आर्य ग्राम छतेहरा जि० सोनीपत	५१

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

हरयाणा की पंचायतों से अपील

हरयाणा की पंचायतों से अपील है कि वे हरयाणा से शराब जैसी भयंकर बुराई को समाप्त करने के लिए ३० सितम्बर तक निम्नलिखित प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजे। सरकार के नियम के अनुसार जिनके प्रस्ताव ३० सितम्बर तक पहुंच जावेंगे, वहा शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं।

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करने के प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा मे

माननीय आबकारी एवं कराधान आयुक्त,
हरयाणा चण्डीगढ़

आज दिनाक ··· ग्राम पंचायत ·
ब्लाक ··· जिला · · ने अपनी बैठक मे निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया —

प्रस्ताव संख्या —

यह ग्राम पचायत शराब की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जावन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगो के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशाति और अपराध फैलते है। धन का भो भारी विनाश होता है। ऐसो अवस्था मे यह पचायत मांग करता है कि हमारे क्षेत्र मे चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द का जावे और भविष्य मे कदापि यहा शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जावन को रक्षा हो सके।

आशा है आप पचायत को इस प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहा की शराब की दुकान बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेगे।

सरपच तथा पंचों के हस्ताक्षर

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं और वहां की ग्राम पंचायतें भविष्य में भी वहां शराब के ठेके नहीं चाहती, ऐसी ग्राम पंचायतें निम्न अनुसार दिनांक ३०-९-९२ तक प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजें।

सेवा में

माननीय आबकारी एव कराधान आयुक्त,
हरयाणा चण्डीगढ़

आज दिनांक ········ ग्राम पंचायत·········
ब्लाक ·········· जिला··················ने अपनी बैठक मे निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया .—

प्रस्ताव संख्या न०

यह ग्राम पंचायत शराब को बढती हुई प्रवृत्ति को ग्रामोण जावन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम मे अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भो भारी विनाश होता है। इस समय हमारे गाव में शराब को कोई दुकान नही है। शराब से हो रहे सर्वनाश के दृष्टिगत यह ग्राम पंचायत मांग करती है कि भविष्य में भी हमारे यहां सरकार की ओर से शराब की दुकान नहो खाली जाए। भारतोय सविधान की धारा ४७ में भी व्यवस्था की गई है कि सरकार द्वारा शराब तथा दूसरे मादक पदार्थों के उत्पादन तथा खपत पर पाबन्दो लगाई जायेगी। इस प्रकार ग्राम पंचायत का यह प्रस्ताव सर्वथा कानून के अनुसार है।

दिनाक : पच तथा सरपंचों के हस्ताक्षर

अकबर जयन्ती योजना वापस लेने को मांग

कानपुर, केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने भारत सरकार से माग की है कि मुगल बादशाह अकबर की ४५५वी जयन्ती पर कई करोड रुपये खर्च करने को जो योजना बनाई गई है वह वापस ले, क्योकि अकबर ने हमारे जनप्रिय राष्ट्रीय हीरो महाराणा प्रताप पर कई बार आक्रमण किये थे और जोवन पर्यन्त उन्हे सुख-चैन से बैठने नही दिया था।

श्री आर्य ने अपने वक्तव्य में कहा है कि अकबर को महान् बताना और उनकी सरकारी स्तर पर जयन्तो मनाना भारत सरकार का कट्टर-पन्थी मुसलमानो को प्रसन्न करने का न केवल मूर्खतापूर्ण कार्य है, अपितु धर्मनिरपेक्षता के भो विरुद्ध है।

श्री आर्य ने आगे कहा कि महाराणा प्रताप की शताब्दी समारोह के अवसर पर स्वर्गीय राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने स्पष्ट कहा था कि मुगल शहशाह अकबर एक हमलावर था और महाराणा प्रताप इस मातृभूमि के रक्षक थे।

—मन्त्री केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

मांसाहार

काटी गर्दन मास खा गया जरा दया नही आई।
अपने पापी पेट की तुमने देखो कबर बनाई॥

कुत्ते गधे अनाथ बच्चो का होटल मे वध हो जाता,
भेड और बकरी मुर्ग सूअर गाय भैस खा जाता,
पीकर शराब होटल मे जाते मीट की प्लेट मंगाई।
अपने पापी पेट की

मास खाने की आदत बन गई कोई जीव नही छोड़ा,
मछली, मेढक, मक्खी, मच्छर, कीडा और मकोडा,
उड़नेवालो में पतग छोडी चोपायों में चारपाई।
अपने पापी पेट की ···

दया छोडकर रे मानव तू राक्षस बना अनारी,
जिह्वा के चस्के हित तूने पाप किया अति भारी,
निर्दोष जीवो की तुमने देखो जान खपाई।
अपने पापी पेट की ··

अपने जैसा सुख-दुःख सबका शास्त्र हमे समझाये,
तुम या तेरे बच्चो को काट कोई खा जाये,
'प्रभाकर' तुम फिर समझोगे प्रभु की प्रभुताई।
अपने पापी पेट की तुमने देखो कबर बनाई।

रचयिता—कप्तान पं० मातूराम प्रभाकर
रिवाडी सभा उपदेशक

आर्यसमाज नलवा (हिसार) में नशाबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक २७-२८ जून ९२ को आर्यसमाज नलवा की ओर से वेदप्रचार एवं नशाबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रातःकाल आर्यसमाज मन्दिर में हवन हुआ। रात्रि को गांव के चौक में वेदप्रचार किया गया। इस अवसर पर सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने आर्यसमाज के इतिहास की जानकारी दी तथा नशाबन्दी अभियान में बढ-चढकर भाग लेने का आग्रह किया। प० जयपाल सिंह बेधड़क, पं० जबरसिंह खारी तथा प० गजराजसिंह जी के समाज सुधार के भजन हुए। २८ जून को प्रातः ८ बजे हवन किया गया तथा १० बजे आर्यसमाज मन्दिर के हाल में नशाबन्दी सम्मेलन आरम्भ हुआ। जिसकी अध्यक्षता वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास जी ने की। क्रांतिकारी जी ने कुशलतापूर्वक मंच का संचालन किया।

सर्वप्रथम उपरोक्त भजनोपदेशकों के शराबबन्दी पर भजन हुए। उसके बाद मुख्य अतिथि चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं प्रधान शराबबन्दी समिति हरयाणा का तथा भगत जी का ग्राम पंचायत नलवा की ओर से श्री महेन्द्रसिंह सरपंच तथा आर्यसमाज नलवा की ओर से श्री क्रांतिकारी जी ने पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत एवं अभिनन्दन किया। क्रांतिकारी जी ने २६ गांव नलवा, बालावास कंवारी, रतेरा, उमरा, बालसमन्द, आर्यनगर, खरकड़ी माखवान, जाखोदा, लाडवा खरड, खरकपूनिया, दडौली, बवानीखेडा, ढाणीपाल, डाबड़ा, घिराय, कुम्मा, थुराना, ज्योरा, बागनकला बन्दमन्दोरी, पाली, हासी, हिसार के प्रतिष्ठित लोगो का परिचय दिया। साथ मे नलवा का ठेका बन्द करवाने व सरपंच साहब की हिम्मत एवं ईमानदारी बारे बताया। १६-२-९२ को पंचायत ने प्रस्ताव पास किया। हिसार नीलामी पर भारी प्रदर्शन किया, ठेका बन्द हुआ। बाद में ठेकेदार सरपंच के पास कई बार ५०-५० तथा ७०-७० हजार रुपये का लालच देने आया कि आप पुनः प्रस्ताव दे दो। बहादुर सरपंच ने साफ शब्दों में कह दिया कि मैं शिक्षण संस्थाओं के मध्य गाव मे किसी भी कीमत पर ठेका नही खुलने दूंगा। ठेकेदार अपना-सा मुंह लेकर चला गया।

उसके बाद मुख्य रूप से सर्वश्री सग्रामसिंह आर्य, डा० बारुराम मलिक, पं० सत्यवीर शास्त्री, राजपाल आर्य, दिवानसिंह आर्य, चौ० देवीचन्द भयाण प्रधान जाट सभा हरयाणा, मांगेराम मलिक, महावीरप्रसाद प्रभाकर तथा चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त, भगत जी आदि ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। धूम्रपान हेरोइन, स्मैक, अफीम, मास, अण्डे आदि भयकर बुराइयो से सदा दूर रहने का आह्वान किया। पूर्व उपायुक्त महोदय ने कहा गाव-गाव एव ब्लाकस्तरतथा जिलास्तर पर शराबबन्दी समितिया गठित करके युद्धस्तर पर शराबबन्दी कार्य करना चाहिए। दबाओं के आगे झुककर ही हरयाणा सरकार शराब बन्द कर सकती है। मुख्यमन्त्री भजनलाल के दामाद की फैक्ट्री का हवाला देते हुए इसे मुख्य मन्त्री पर एक कलक बताया। सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की।

सभी वक्ताओं ने चुनाव मे अच्छे आदमियो को आगे आना चाहिए सुझाव दिये। विजयकुमार जी के आग्रह पर चौ० मनीराम आर्य (बन्द मन्सोरी), भगत रामेश्वरदास तथा श्री देवीचन्द भयाण ने एक-एक पंखा आर्यसमाज नलवा को दान देने का वचन दिया। सम्मेलन की कार्यवाही ५ घण्टे तक चली। जलपान एवं भोजन व्यवस्था का उत्तम प्रबन्ध था। लोगों ने दिल खोलकर आर्थिक सहयोग दिया। श्री प्रतापसिंह (उमरा), श्री सुमेश सिंगला (हिसार) ने भविष्य मे शराब न पीने का व्रत लिया। रात्रि को तीनों भजनमण्डलियों द्वारा आर्यनिवास ढाणी में वेदप्रचार किया गया। निकट की ढाणियो के नरनारियो ने भी भाग लिया। जगल में मगल हो उठा। उपरोक्त कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय एवं प्रेरणादायक रहा।

- भलेराम आर्य, नलवा

जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत के भजनोपदेशक पं० रामकुमार द्वारा वेदप्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित वेदप्रचार मण्डल पानीपत के संयोजक एव सभा के कोषाध्यक्ष ला० रामानन्द सिंगला के निर्देशन में प० रामकुमार आर्य भजनोपदेशक की भजनमण्डली ने दिनांक १-६-९२ से ३०-६-९२ तक निम्नलिखित ग्रामों में वेदप्रचार किया। शिथिल आर्यसमाजों में जागृति पैदा की। कुछ ग्रामों में यज्ञ-हवन करके नवयुवकों को यज्ञोपवीत दिये गये। दुर्व्यसनो से बचने का व्रत दिलाया गया। पाखण्ड, अन्धविश्वास, शराब, सुल्फा, दहेजप्रथा, फैशन परस्ती का खण्डन तथा नारी शिक्षा एवं चरित्रनिर्माण पर विशेष बल दिया गया।

१—श्री राजीव आर्य बहादुरगढ निवासी ने बड़ी श्रद्धा से सभा को धन्यवाद सहित १०२ रु० की धनराशि दी।

२—श्रीमान् मनशाराम आर्य ने अपनी माता जी की पुण्य स्मृति में तीन दिन तक वैदिक प्रचार करवाकर ग्राम कतलूपुर में आर्यसमाज की स्थापना की। सभा को कुल धनराशि ५६० रु० भेंट की गई।

३—ग्राम कोथकला जिला हिसार में एक गरीब बाल्मीक कन्या की शादी के उपलक्ष्य मे धनसंग्रह हेतु प्रचार किया। ग्रामवासियों ने बड़ी रुचि के साथ प्रचार सुना। हररोज हाजरी बढती रही। ग्राम पचायत कोथकला ने सभा को कुल धनराशि ९०० रु० भेट की। श्री रणधीरसिंह सरपंच, वेदपाल आर्य तथा श्री जिलेसिंह जी ने प्रचार को सफल बनाने में विशेष सहयोग दिया।

४—आर्यसमाज रोहणा जिला सोनीपत का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। वेदप्रचार सुनने के लिए पड़ोसी गावों से भी लोग आये।

५—ग्राम घड़ौली जिला जीद में वेदप्रचार हुआ। सभा को ५५० रु० की राशि भेंट की गई।

६—ग्राम हाडवा जिला जीद में वेदप्रचार मा० हरिसिंह तथा ईश्वरसिंह जी के सहयोग से सम्पन्न हुआ। सभा को १५७ रु० की राशि भेंट की गई।

७—ग्राम ग्विाहा जिला जीद में गरीब बाल्मीक कन्या के पीले हा कराने हेतु श्री महावीरसिंह सरपंच, डा० प्रतापसिंह तथा पं० शिव[illegible] ने [illegible] सहयोग दिया। सभा को कुल धनराशि ६५१ रु० भेंट की।

८—ग्राम गोदापुर जिला पानीपत में वैदिक प्रचार हुआ। श्री ब्रह्मदत्त सरपंच के सहयोग से प्रचार सफल हुआ। सभा को १०२ रु० की राशि भेंट की।

९—गाम नोहरा में वैदिक प्रचार हुआ। ग्रामवासियों ने प्रचार शांति के साथ सुना। बाबू भरतसिंह आर्य, भू०पू० सरपंच आशाराम, श्री राधेश्याम नम्बरदार ने विशेष सहयोग दिया। सभा को कुल धनराशि ३२६ रु० भेट की गई।

सभा को दान

२०० रुपये स्वतन्त्रता सेनानी पण्डित जयदेव जी जतोई वाले प्रधान आर्यसमाज गन्नौर शहर जिला सोनीपत ने आर्य प्रतिनिधि सभा को दान दिया। आप एक विख्यात आर्य भजनोपदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

—रतनसिंह आर्य

शोक समाचार

समाज-सेविका श्रीमती सीता रानी सैनी (पत्नी मा० सीताराम सैनी) पानीपत का निधन विगत २९ जून, ९२ को होगया। उनकी स्मृति में सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति तथा शोक सभा दिनांक ६ जुलाई, ९२ दिन सोमवार को किया गया।

—राममोहनराय एडवोकेट
४०३, पुरानी हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, पानीपत

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२ फोन नं० ७२८७४

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक ३३ २१ जुलाई, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेद में 'गौ' शब्द के अनेक अर्थ

—स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती गुरुकुल कालवा

'गौ' शब्द के अमरकोष मे तृतीय कांड के नानार्थ वर्ग में निम्नलिखित अर्थ लिखे हैं—

स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ।
लक्ष्यदृष्टया स्त्रियां पुंसि गौः ॥३०

लक्ष्य (वाच्य) के विचार से गौ शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग दोनों हैं। इसके अर्थ स्वर्ग, तीर, गौ, वाणी, वज्र, दिशा, आंख, सूर्य, पृथिवी और जल हैं।

केशव के कल्पद्रुमकोष में इस प्रकार लिखा है—

गौर्नादित्ये बलीवर्दे किरणक्रतुभेदयोः ।
स्त्री तु स्याद्दिशि भारत्या भूमौ च सुरभा.पि ॥
नृस्त्रियोः स्वर्गवज्राम्बुरश्मिदृग्बाणलोमसु ।

(पुल्लिग में) 'गौ शब्द के बैल, किरण और यज्ञ विशेष अर्थ हैं। स्त्रीलिङ्गी गौ के अर्थ दिशा, वाणी, भूमि और गौ हैं। दोनों लिङ्गोंवाले गौ शब्द के अर्थ स्वर्ग, वज्र, जल. किरण, नेत्र, वाण और रोम (शरीर के बाल) अर्थ हैं।

विक्रम की बीसवीं शतक के आरम्भ में संस्कृत के दो महाकोष बने। एक का नाम 'शब्द कल्पद्रुम' है और दूसरे का नाम 'वाचस्पत्याभिधान' है। उनमें भी 'गौ' शब्द के अनेक अर्थ माने गये हैं। पं० तारानाथ तर्कवाचस्पति के बनाये 'वाचस्पत्याभिधान' में निम्नलिखित अर्थ लिखे मिलते हैं—१. गाय, २. रश्मि, ३. वज्र, ४. हीरा, ५. स्वर्ग, ६. चन्द्र, ७. सूर्य, ८. गोमेध, ९. ऋषभक नामक औषध, १०. नेत्र, ११. बाण, १२. दिशा, १३. वाणी, १४. भूमि, १५. जल, १६. पशुमात्र, १७. माता, १८. लोम=रोम, १९. वृषनामक राशि, २०. नौ संख्या, २१. पुलस्त्य की स्त्री का नाम, २२. इन्द्रिय गोचर।

'वाचस्पत्याभिधान' के लेखक विद्वान् ने प्रत्येक अर्थ के साथ गति अर्थ की योग्यता को भो दिखाया है। शब्दकल्पद्रुमकार ने गति-अर्थ की प्रत्येक के साथ योग्यता दिखाकर भी लिख दिया—

"वस्तुतस्त्वय रूढ एव शब्दः। तदुक्तम्—
रूढा गवादयः प्रोक्ताः यौगिकाः पाचकादयः।
योगरूढाश्च विज्ञेयाः पंकजाद्या मनीषिभिः॥"

वस्तुत: यह शब्द रूढ है। जैसा कि कहा है—कि गौ आदि शब्द रूढ हैं, पाचक आदि शब्द यौगिक हैं और पंकज आदि शब्द योगरूढ हैं।

हमारी समझ मे नही आया कि यदि गौ शब्द रूढ है तो शब्दकल्पद्रुमकार ने इसकी व्युत्पत्ति क्यों दिखाई? और फिर इतने अर्थो में इसकी प्रवृत्ति कैसे होगई, यह भी बताने की कृपा नही की? कोई भी विद्वान् रूढ़ शब्द के अनेक अर्थों में प्रवृत्ति का निमित्त नहीं बतला सकता। उसे बलात् शब्दों के व्युत्पत्ति निमित्त का आश्रय लेना ही पडता है। अर्थात् शब्दो को यौगिक या योगरूढ माने विना निर्वाह नही चल सकता।

निरुक्तकार यास्काचार्य जी के मत मे 'गौ' शब्द के कम से कम निम्नलिखित अर्थ अवश्य है—१. पृथिवी, २. सूर्य की एक किरण, ३. किरण मात्र, ४. वाणी, ५ स्तोता, ६ सूर्य, ७ द्यौ, ८. [illegible]डा, ९. श्लेष्मा, १०. स्नायु, ११ धनुष की डोरी १२ तीर, १३ माध्यमिक वाणी, १४. गौ।

निरुक्तकार ने १२।७ मे प्रसग से 'गावो गमनात्' लिखा है। अर्थात् गौ का प्रवृत्ति निमित्त और व्युत्पत्ति निमित्त 'गमन' है। जिस-जिस पदार्थ को 'गौ' कहा गया है, गति का किसी न किसी रूप में अवश्य इस से सम्बन्ध है।

इस प्रसंग में ब्राह्मण ग्रन्थो के निम्नलिखित निर्देश भी विचारने योग्य हैं—

१ इमे वै लोका गौ (शतपथ ६।१।२।३४) ये लोक गौ हैं।
२. गावो वा आदित्या. (ऐतरेय ४।१७) आदित्य गौ हैं।
३. अन्नमु गौः (शत० ७।५।२।१९) अन्न ही गौ हैं।
४ यज्ञो वै गौः (तैत्तरेय० ३।९।८।३) यज्ञ ही गौ है।
५. यज्ञो ह्यवेयं गौः, नो ह्यृते गोर्यज्ञस्तायते (शत० २।२।४।१३) यज्ञ ही गौ है, क्योंकि गौ के बिना यज्ञ नही होता।
६ प्राणो हि गौः (शत० ४।३।४।२५) प्राण गौ है।
७ इन्द्रियं वै वीर्यं गावः (शत० ५।४।३।१०) इन्द्रिय तथा वीर्य गौ हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थों मे यास्काचार्य की अपेक्षा १. अन्न, २. यज्ञ, ३. प्राण, ४. इन्द्रिय और ५. वीर्य—इतने अर्थ अधिक दिये हुए हैं।

यद्यपि वेदार्थ में निरुक्त, निघण्टु एव ब्राह्मण ग्रन्थ ही उपयोगी हैं। अमरकोष आदि का कोई उपयोग नही, तथापि हमने यह दिखलाने के लिए कि लौकिक संस्कृत मे भी यह शब्द अनेकार्थक है, अमरकोष आदि के वचन यहां दिये हैं। इतने अर्थो की सत्ता मे यह स्वीकार करना पडता है कि सर्वत्र 'गौ' पद का 'गाय' अर्थ करना अनर्थ है। प्रकरण और विशेषण आदि के विचार से हो अर्थ करना चारु होगा। इसका विचार किये बिना अर्थ करने से अनर्थ होता है।

शोक समाचार

वानप्रस्थाश्रम गाजियाबाद के सचालक श्री स्वामी प्रेमानन्द जी सरस्वती का गतसप्ताह ८० वर्ष की आयु में स्वगवास होगया। आपने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार कार्यो मे व्यतीत कर दिया। अनेक वर्षों तक मेवात क्षेत्र मे अपना कार्यक्षेत्र बनाकर वहा गोरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

गावो विश्वस्य मातरः

गौ सारे विश्व की माता है। ऋषि-मुनियों ने भी धर्मशास्त्रों में गौ को माता की संज्ञा दी है। "माता निर्माता भवति" इसका अर्थ है कि माता अपने पुत्र का सब प्रकार से निर्माण करती है। गोमाता ने हमारा सभी क्षेत्रों में निर्माण किया है। बचपन से वृद्ध अवस्था तक दूध पिलाकर हमारा निर्माण किया। खेती आदि कार्य मे हल चलाकर अन्न वस्त्र से हमारा निर्माण किया। रथ मझोली, रेडु गाडी इनमें सवारी के जरिये भी हमारा निर्माण किया। इन निर्माणों के लिये वैज्ञानिकों ने ट्रैक्टर, मोटर, रेल बहुत निकाली और निर्माण भी किया। लेकिन एक निर्माण गोमाता का ऐसा है जिसमें कोई भी वैज्ञानिक अपनी सफलता नही दिखा सकता। वो कौन-सा निर्माण है जो यज्ञ हवन के द्वारा वायुमण्डल, अन्न औषधि, पृथ्वी आदि तक शुद्ध किया जाता है। इसके बारे मे हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा है—

आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः ॥
(छान्दो० उप० अ० ७ सं० २६)

अर्थ—आहार की शुद्धि से बुद्धि शुद्ध होती है और बुद्धि के शुद्ध होने से स्मृति का निश्चय होता है और शुद्ध स्मृति के ध्रुव होने से इसकी विद्या और योग मे प्रगति होती है। योग मे प्रगति होने से इसको मुक्ति मे सफलता मिलती है। मुक्ति किसको कहते हैं—

दुःखनिवृत्तेगौंण ॥ (सांख्य ५।६७)

दुःखो की निवृत्ति का ही नाम मुक्ति है। इसी कारण को मुख्य मानकर हमारे ऋषि-मुनियों के आश्रमों मे गोशालायें थी और इनमे गोमाता का पालन होता था। क्योंकि ब्रह्मचर्य से लेकर गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रमो मे गोमाता का पालन और इसका पूजन होता था। मानव के सारे कार्य को सिद्ध करने से गोमाता को गुणो की खान कहा है और गउवों के बारे मे ऋषि-मुनियों ने अपने भाव प्रकट किये हैं।

गावो मेऽग्रत सन्तु गाव. सन्तु मे पृष्ठतः।
गावो मे सर्वतः सन्तु गावा मध्ये वसाम्यहम् ॥

अर्थ—गाय मेरे आगे हों। गाय मेरे पीछे हों। गाय मेरे इर्द-गिर्द हों। गायों के बीच मे 'वसामि' बसता हू मैं। इस प्रकार से ऋषि-मुनियों ने गोमाता का सद्गुणों के कारण सम्मान किया, जिससे ये भारत देश सारे विश्व का गुरु था। विद्या पढने के लिये और योगी बनने के लिये जिज्ञासु इस देश मे आते थे। वेद की विद्या पढ़कर, योगी बनकर अपने भाग्य सराहते थे। इन्ही गुणों के कारण विदेशी इस देश मे जन्म लेने के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते थे। आज ये सारा काम उल्टा क्यों होगया? देश में गौ नही रही और गउवों के न रहने से गौ का दूध नही रहा और दूध के बगैर गोघृत नही रहा और गोघृत के बगैर आज हमारा यज्ञ नही रहा। यज्ञ के न होने से हमारा वायुमण्डल अशुद्ध हो गया और वायुमण्डल के अशुद्ध होने से अन्न औषधि अशुद्ध होगई। अन्न औषधि के शुद्ध न रहने से हमारा भोजन आदि का आहार बिगड़ गया। आहार के बिगडने से हमारे अन्तःकरण दूषित होगये। अन्तःकरणों के दूषित होने से हमारे विचार शुद्ध नहीं रहे। विचार के शुद्ध न रहने से हमारा सदाचार बिगड़ गया। सदाचार के बिगड़ने से हमारा लोक परलोक सकल संसार बिगड़ गया और हम दुःखों को प्राप्त हुए। इसका कारण हमारे घर में गौ नही रही। हमारे खेत में गौ नही रही। हमारे देश में गौ नही रही। यही इन सब दुःखों का मूलकारण है। सरकार तो गौ को मानती नहीं और अगर गौ बचानी है, दुःखों से बचना है तो किसान मजदूर के घर में एक-एक गौ का पालन होना चाहिये। इसका देश में जनजागरण करके यह नियम बनाना चाहिये। वैज्ञानिकों ने आविष्कार तो बहुत किये, लेकिन जल स्थल आकाश वायु को धुआ और गैस से दूषित किया और आहार के लिये सरकार ने शराब, अण्डा और मास को बढावा दिया।

इस दूषित आहार के जरिये से मानव के मस्तिष्क मे शुद्ध विद्या, शुद्ध विचार और योग मे सफलता नही रही, जिसके कारण विदेशी इस देश को गुरु मानना तो दूर रहा, घृणा की दृष्टि से देखने लगे और भारतवासी भी पढने के लिये अपने देश को छोडकर विदेशों में जाने लगे। जिससे देश का स्तर गिरा। अगर देश को ऊंचा उठाना है। फिर से हमने अपने जीवन में गउवों को पाना पड़ेगा और हमें बुद्धि का विकास करना है तो फिर गौ का मट्ठा और घी खाना पड़ेगा और अगर वायुमण्डल को शुद्ध बनाना है तो ऋषि-मुनियों के आदेशानुसार हमने फिर यज्ञ को रचाना पड़ेगा। उसके बाद मे हमारे सिर के ऊपर ईश कृपा होगी।

लेखक—स्वामी गोरक्षानन्द सरस्वती
श्री गोशाला बाबा फुल्लू साध
उचाना खुर्द, जि० जींद (हर०)

वर्षा की प्रार्थना

ओ३म्—शं नो वातः पवतां शं नस्तपतु सूर्य्यः।
शं न. कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु ॥

अर्थ—पवन बहे विमल वसुधा पर, भानु रश्मि चमकाये।
समय-समय पर बरसे बादल, कभी अकाल न आये ॥

ओ३म्—दया कर दान वर्षा का, हमे परमात्मा देना।
दया करना हमारे खेत को, पानी से भर देना ॥

प्रभु जी मेघों को लाओ, और वर्षा भी करवाओ।
इस भोले भारत को, पिता भरपूर अन्न देना।
दया कर दान वर्षा का, हमे परमात्मा देना।
दया करना हमारे बाग को, पानी से भर देना ॥१

बरसा दो वर्षा मूसलधार, घरों मे हो अन्न का भण्डार।
हमें आपस मे मिलजुल कर, प्रभु खाना सिखा देना।
दया कर दान वर्षा का, हमे परमात्मा देना।
दया करना हमारे जोहड को, पानी से भर देना ॥२

हमारा धर्म हो वैदिक, हमारा कर्म हो वैदिक।
हमारा लक्ष्य हो वैदिक, हमें दयानन्द बना देना।
दया कर दान वर्षा का, हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारे खेत को, पानी से भर देना ॥३

—महर्षि का वीर सैनिक
गुरुकुल झज्जर, रोहतक

यज्ञोपवीत के गुण

यज्ञोपवीत के तीन तार, देते हैं सन्देश अपार।
ईश्वर जीव और प्रकृति, आधारित इन पर संसार।
माता, पिता और गुरुजनों का, करते रहो आदर सत्कार।
मातृ पितृ और ऋषि ऋण, तीनों ऋणों की है भरमार।
कैसे यह ऋण चुका सकोगे इस पर करो जरा विचार।
सत, रज और तम गुणों का, सृष्टि में चलता व्यवहार।
वात, पित्त और कफ शरीर में, सम रहें ऐसा करो आहार।
छल कपट और झूठ को त्यागो, करो सच्चाई का व्यापार।
जीवन को शुद्ध सफल बनाओ, मनुर्भव का करो प्रचार।
भूर्भुवः स्वः के अर्थों का, जन-जन में होवे संचार।
द्यौ अन्तरिक्ष और पृथ्वी पर, वैदिकधर्म की हो जयकार।
प्रतिज्ञा और पवित्रता का, ध्यान रहे करो उपकार ॥

—देवराज आर्य मित्र
आर्यसमाज बल्लभगढ़, जि० फरीदाबाद

शोक समाचार

जालन्धर के प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति पं० हरवंशलाल शर्मा की माता जी का गतसप्ताह निधन होगया। वे आर्यसमाज की संस्थाओं में उदारतापूर्वक दान देती थीं। गतमास उन्होंने अपने परिवार की ओर से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को दस हजार रु० दान भिजवाया था।

—केदारसिंह आर्य

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

		रुपये
१	श्री मा० पृथीसिंह सु० रतिराम नम्बरदार ग्राम छतेरा जि० सोनीपत	५१
२	,, जयनारायण शास्त्री सु० पूर्णसिंह ग्राम छतेरा जि. सोनीपत	५१
३	,, सूबेसिंह सु० नेतराम ग्राम बागड़ूकला जि० जींद	५१
४	,, मोजीराम सु० जुगलाल ,, ,,	५१
५	,, राजेन्द्र आर्य सु० रामकुमार ,, ,,	५१
६	,, मा. मेहरसिंह आर्य सु. धर्मचंद ,, ,,	५१
७	,, सूबेसिंह सु० छोटूराम ग्राम मोरमाजरा जि० करनाल	५१
८	,, धनपतसिंह आर्य व महेन्द्रसिंह आर्य ग्राम शाहपुर जि० पानीपत	७८
९	,, सुरेशकुमार आर्य ग्राम शाहपुर जि० पानीपत	११
१०	,, मन्त्री आर्यसमाज कालका जि० अम्बाला	५०
११	,, शिवचरणदास आर्य बराड़ा मण्डी ,,	५१
१२	,, आर्य मैडिकल स्टोर सादौर जि० यमुनानगर	५०
१३	,, चौ० प्रेमपाल आर्य, आर्य इलैक्ट्रिक स्टोर सादौर जि० यमुनानगर	५०
१४	,, चौ० जगदीश आर्य बूबका जि० यमुनानगर	२०
१५	,, चौ० मामराज सरपंच ,, ,,	५०
१६	,, बनारसीलाल आर्य ,, ,,	५०
१७	,, हुकमसिंह आर्य ,, ,,	५१
१८	,, चौ० रणसिंह आर्य ,, ,,	२५
१९	,, चौ. सोमनाथ पूर्व सरपंच बूबका ,,	५०
२०	,, मानसिंह आर्य प्र. आ. मन्धार ,,	५१
२१	कन्या पाठशाला पाकस्मा जि० रोहतक	२१
२२	श्री वेदपाल दहिया आसन ,,	५१
२३	,, दीवानसिंह सुन्दरपुर ,,	२०
२४	,, पं० हरिराम ,, ,,	२१
२५	,, रामसिंह स्वतन्त्रता सेनानी सुन्दरपुर जि० रोहतक	२०
२६	,, रतनसिंह टिटौली ,,	२१
२७	,, मेहरसिंह आर्य, हिंदुस्तान फोण्ड्री सांपला ,,	२१
२८	,, राजसिंह आर्य कलावड़ ,,	२५
२९	,, भीमसिंह दफेदार ,, ,,	२५
३०	,, सतबीर आर्य ,, ,,	२५
३१	,, कृष्ण ,, ,,	२५
३२	,, श्यामसुन्दर अग्रवाल ओखला नई दिल्ली-४४	५१
३३	,, महेन्द्र व नरेन्द्रकुमार सुलतानपुर	२१
३४	,, श्रीचन्द आर्य मोल्डबन्द विस्तार नई दिल्ली-४४	२२
३५	,, डा० यादराम आर्य ,, ,,	२१
३६	,, ओमप्रकाश शर्मा म.नं. ४२ मोल्डबन्द विस्तार नई दिल्ली-४४	५१
३७	,, नेतराम आर्य मोल्डबन्द विस्तार नई दिल्ली-४४	३१
३८	,, फोरुसिंह फौजदार ,, ,,	२१
३९	,, गोवर्धन आर्य ,, ,,	५१
४०	,, मानकचन्द शर्मा ,, ,,	२१
४१	,, हेतराम आर्य ,, ,,	२१
४२	मन्त्री आर्यसमाज शकरपुर डी-११० दयानन्द ब्लाक दिल्ली	५१
४३	श्री बी० एम० सी० फरीदाबाद	१०१
४४	,, बलबीरसिंह बदरपुर दिल्ली-४४	२१
४५	,, एम० के० ,, ,,	५१
४६	श्री मोहन बाबा प्रापर्टी डीलर ताजपुर दिल्ली-४४	५१
४७	,, चौ० चरणसिंह ,, ,,	३१
४८	,, हरगोबिन्द मयाना एन-३० कालका ,,	५०
४९	,, चतरसिंह वर्मा मोल्डबन्द ,,	५१
५०	,, मानसिंह नया बास नोएडा जि० गाजियाबाद (उ०प्र०)	५१
५१	,, मलिक साहब लक्ष्मीनगर दिल्ली	४३
५२	,, अनिल बहल ,, ,,	२४
५३	आर्यसमाज सेक्टर-१४ सोनीपत	६६
५४	श्री विजयप्रकाश सीतापुरी दिल्ली	३१
५५	,, सत्यपाल मधुर आर्यसमाज पंजाबी बाग दिल्ली	२१
५६	,, के० आर० खन्ना ,, ,, ,,	२५
५७	,, रामअवतार प्रधान ग्राम फरटिया भीमा पो० लोहारू जि० भिवानी	७०
५८	,, सुरेन्द्रसिंह ग्राम फरटिया भीमा पो० लोहारू जि. भिवानी	३१
५९	,, योगेन्द्र ,, ,, ,,	४०
६०	,, रामावतार सु० दीपचन्द शर्मा ग्राम गिगनाऊ ,,	४०
६१	,, सुभाष अग्रवाल हिसार	५१
६२	,, डा० सुभाष आर्य ,,	२१
६३	,, प्रि० भगवानदास आर्य पटेलनगर हिसार	५१
६४	,, धर्मवीर डिपू होल्डर बवानीखेड़ा ,,	२१
६५	,, करतारसिंह आर्य ,, ,,	२२
६६	,, जगदीश पांचाल बालावास ,,	२५
६७	,, सत्यपाल पंजाबी नलवा ,,	२१
६८	,, विजेन्द्रसिंह आर्य ,,	५१
६९	,, ब्र० संजयदेव शास्त्री दातौली जि० भिवानी	५१
७०	,, दीपचन्द आर्य ,, ,,	२१
७१	,, जगराम आर्य ,, ,,	५१
७२	,, शिवलाल आर्य ,, ,,	५१
७३	,, महेन्द्रसिंह आर्य ,, ,,	५१
७४	,, मा० दिलबाग आर्य ,, ,,	५१
७५	,, बलवानसिंह ,, ,,	५१
७६	,, दयानन्द आर्य अध्यापक ,, ,,	५१
७७	,, सुरेशकुमार छिल्लर एस.डी.ओ. बिजली बोर्ड फरीदाबाद	५०
७८	,, देवेन्द्र ,, ,, ,,	२१
७९	,, जयदेव शास्त्री ग्राम खलीला जि० पानीपत	२५
८०	,, राजकुमार नम्बरदार ,, ,,	५०
८१	,, सत्यपाल ,, ,,	२५
८२	,, सत्यदेव भारद्वाज ,, ,,	२५
८३	,, चौ० छोटूराम प्रधान काबड़ी ,,	५१
८४	,, विशाखा ८/९ एम०बी० रोड साकेत नई दिल्ली	२१
८५	श्रीमती बहन शांतिकृष्णा ,,	२१
८६	श्री जी० एम० भाटिया जे-४७ साकेत नई दिल्ली-१७	५०
८७	,, एम० एम० आहूजा एम-११४ ,, ,,	५०
८८	,, आर.पी. गुप्ता ५ III ५९० आर.के. पुरम नई दिल्ली-२२	५०
८९	,, एच०एल० कोहली ३/८ सर्वप्रिय बिहार नई दिल्ली-१६	५०
९०	,, भूपसिंह गुप्ता डी/२५४ सर्वोदय इन्कलेव ,, ४५	५०
९१	,, विजय गुप्ता एफ १/३३५ मदनगीर ,, ६२	५०
९२	श्रीमती सुशीला त्यागी ९९ उदय पार्क ,,	५०
९३	श्री पं० धर्ममुनि कन्या गुरुकुल खानपुरकलां जि० सोनीपत	५१
९४	सुश्री जैविल, शिखा, अलंका, पूनम, अनुपमा खानपुराकला जि० सोनीपत	५०
९५	,, सुप्रभा, चेतना, राज, उर्मिला, सीमा खानपुरकलां जि० सोनीपत	५०

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

भयंकर मुस्लिम सांप्रदायिकता एवं मानसिकता की लपेट मे

कश्मीर समस्या व समाधान

सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

गताक से आगे—

६—धारा ३७० के कारण भडका पृथकतावाद केवल जम्मू कश्मीर को ही नही, अपितु पंजाब, तमिलनाडु असम व पूर्वोत्तर राज्यों को भी प्रभावित कर रहा है।

७—धारा ३७० के कारण भारत का राष्ट्रपति या केन्द्र सरकार जम्मू कश्मीर के अन्दर एक नई सैनिक छावनी भी अपनी योजनानुसार उस समय तक कायम नही कर सकती, जब तक कि वहां की राज्य सरकार उसके लिए अनुमति न दे दे। इसका अर्थ यह हुआ कि जम्मू कश्मीर की सुरक्षा तक के लिए भारत सरकार अन्य राज्यो की तरह वहां पर अपने आदेश से भूमि का अधिग्रहण नही कर सकती।

८—धारा ३७० के कारण ही केन्द्र के सम्पत्ति कर, शहरी भूमि हदबन्दी कानून, उपहार कर, पूंजीलाभ कर जैसे जनोपयोगी कानून जम्मू कश्मीर में आज तक भी लागू नही हो सके हैं। बिजली के अरबों रुपये के बिल कोई भी नहीं देता। बिजली चोरी के विषय मे विधान सभा मे चर्चा के दौरान मुख्यमन्त्री शेख फारुख ने कहा था कि मै तो चाहता हूं कि लोगों को बिजली की आपूर्ति मुफ्त की जाये। इसी से आप सोच सकते है कि आखिर वहा अन्य महकमों के भी परिणाम इसी प्रकार के होंगे? इसी के कारण कश्मीर में राज्य नेताओ और नौकरशाही के निहित स्वार्थी तत्त्वों का एक ऐसा प्रभावशाली वर्ग खड़ा हो गया है, जिसने १९४७ से लेकर अब तक राज्य को दी गई ८०,००० करोड रुपये की बडी धनराशि का उपयोग राज्य के विकास के लिए न करके उसके बहुत बड़े भाग को स्वय हडप कर लिया और जनता की बुरी आर्थिक स्थिति का दोषी भारत सरकार को ठहरा कर यह वर्ग कश्मीर घाटी की गरीब जनता को भारत के विरुद्ध लगातार भड़काता रहा है। शेख अब्दुल्ला के परिवारजनों के ही पास इस समय २० करोड रुपये की अचल सम्पत्ति अकेले कश्मीर घाटी मे है। भारत की गरीब जनता की गाढे खुन-पसीने की कमाई से एकत्र खजाने को वहा किस बेदर्दी से लुटाया जारहा है। इसका अन्दाजा इसी से लगा लीजिए कि कश्मीर मे कोई भी टैक्स नही देता। वहा महंगाई नही है। भारत से ही सब चीजे मुफ्त मे ही भेजी जाती हैं। इस ३७० धारा से बडे वर्ग के लोगों को ही बडा लाभ पहुंचा है। उन्हें आप भारत के महमान ही समझिये।

९-धारा ३७० के कारण भारतीय सविधान की धारा ३५२ अत्यन्त सीमित रूप मे ही जम्मू कश्मीर पर लागू होती है। धारा ३५६ के अन्तर्गत राज्य सरकार को कोई भी प्रशासनिक निर्देश देने का अधिकार राष्ट्रपति या केन्द्र सरकार को भी नही है।

१०—इस कुख्यात धारा के कारण ही वित्तीय सकट सम्बन्धी भारतीय सविधान की धारा ३६० जम्मू कश्मीर पर लागू ही नही होती। इसी तरह भारत का राष्ट्रपति राज्य के सविधान को भी स्थगित नही कर सकता। उसके लिए भी राज्य विधान सभा की स्वीकृति लेनी पड़ेगी। इसी के कारण ही आज भारत इतने बड़े राजनीतिक संकट में फंस गया है, जिसमे से निकलना कठिन होगया है। नेहरूवादी कांग्रेसी मानसिकता के लोग अब तक भी ३७० धारा को न हटाने तथा देश को धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढाने में ही अपना राजनीतिक स्वार्थ देख रहे हैं। हद होगई है मुस्लिम सन्तुष्टीकरण की।

महत्त्वपूर्ण परिचय

१—भारत के सविधान से धारा ३७० अविलम्ब हटाई जावे।

शुरु मे इसे अस्थायी कहकर लागू किया गया था तो अब इसे स्थायी रूप मे क्यों न हटाया जाता।

२—पाकिस्तान से लगी सीमा को पूरी तरह से सील कर दिया जावे।

३—राज्य विधान सभा में जम्मू क्षेत्र के लिए ४१ सीटें रखी जावे।

४—लद्दाख व जम्मू और कश्मीर के तीनों क्षेत्रों के लिए क्षेत्रीय विकास बोर्डों की स्थापना की जाये, ताकि असन्तुलन और भेदभाव की शिकायतों को दूर किया जावे।

५—इस धारा के कारण ही जम्मू व लद्दाख क्षेत्र के साथ पूरा भेदभाव किया गया। इन क्षेत्रों में कोई विकास कार्य न हो सका, क्योकि अब तक सात मुख्यमन्त्री कश्मीर क्षेत्र के ही रहे हैं। उन्होंने इन क्षेत्रों की तरफ कोई ध्यान न दिया, क्योंकि ये सभी कश्मीरी मुसलमान थे। १९४७ से लेकर अब तक ये ही मुख्यमन्त्री रहे हैं।

६—धारा ३७० का विशेष अधिकार समूचे कश्मीर घाटी, जम्मू, लद्दाख प्रदेश के लिए था। अत. राज्य के लिए केन्द्रिय सरकार से प्राप्त होनेवाली सभी आर्थिक सहायता तथा स्वय राज्य की आमदनी का इन सभी क्षेत्रो में समुचित वितरण होना चाहिए था, किन्तु ऐसा न हुआ। क्योंकि जम्मू और लद्दाख क्षेत्र हिंदू बाहुल्य है। कश्मीर घाटी का क्षेत्र पूरे राज्य का केवल १/८ भाग है। कैसी मुस्लिम साम्प्रदायिकता है?

इन क्षेत्रों के साथ भेदभाव देखिये? धारा ३७० के कारण

१—राज्यस्तर के सचिव, आयुक्त कुल ३५ में से जम्मू के मात्र २ हैं।

२—अन्यान्य स्तर के सरकारी अधिकारियो मे जम्मू मे कश्मीरियों का हिस्सा ४० प्रतिशत से अधिक है। जबकि कश्मीर में जम्मू का हिस्सा १ प्रतिशत ही है।

३—राज्य विधान सभा स्थान—कश्मीर घाटी में ४२, जम्मू में ३२ इस कारण हैं कि जम्मू को तुलना में कश्मीर घाटी के निर्वाचन क्षेत्रों को छोटा कर दिया गया है।

४—पर्यटको की सुविधाओं के लिए सरकारी खर्च प्रांतीय बजट का ९५ प्रतिशत कश्मीर के लिए, सिर्फ ५ प्रतिशत जम्मू के लिए। जबकि जम्मू आनेवाले यात्रियों की सख्या कश्मीर आनेवाला से पांच गुना अधिक है।

५—बिजली उत्पादन के लिए कश्मीर में कई इकाइयां हैं। कुल उत्पादन ३२९ मेगावाट, जम्मू में केवल एक है, जिसका उत्पादन सिर्फ २२ मेगावाट है।

६—प्रमुख औद्योगिक केन्द्र—सबके सब कश्मीर घाटी मे, जम्मू में एक भी नही। बड़े स्तर की सार्वजनिक औद्योगिक इकाइयां जैसे एच० एम० टी०, ए० टी० ए०, दूरदर्शन, सीमेंट आदि सभी कश्मीर में हैं।

७—राज्य सरकार के सभी ११ निगमों के प्रधान कार्यालय श्रीनगर में हैं।

८—केन्द्र द्वारा स्वीकृत जम्मू के लिए दन्त चिकित्सा केन्द्र, पशु चिकित्सा कालेज, कृत्रिम अंग केन्द्र कश्मीर घाटी में खोल दिये गये तथा जम्मू में चल रहा कृषि कालेज भी बन्द कर दिया गया है।

लद्दाख की स्थिति तो जम्मू से भी खराब है

१—लद्दाख में ८४ प्रतिशत बौद्ध हैं तो भी राज्य के २५० स्कूलों में सिर्फ ३२ बौद्ध शिक्षक हैं। सरकारी क्षेत्र के १८ हजार कर्मचारियों में लद्दाख का एक भी नही है। राज्य सरकार के एक लाख २० हजार कर्मचारियों में से २९०० लद्दाखी हैं। विकास योजनाओं मे से एक भी लद्दाख क्षेत्र के लिए काम नही कर रही। जो कुछ पैसा केन्द्रिय और कश्मीर की विकास योजनाओं के नाम पर लद्दाख पहुंचता है उससे आम लद्दाखियो को कोई लाभ नही, क्योंकि बड़े-बड़े कर्मचारी कश्मीरी हैं। अधिकतर ठेकेदार कश्मीरी हैं। पर्यटन उद्योगों में भी इन्ही का बोलबाला है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भारत के नौवे राष्ट्रपति

डा० शंकरदयाल शर्मा १६ जुलाई, ९२ को भारत के नौवे राष्ट्रपति चुने गये। राज्यसभा के महासचिव सुदर्शन अग्रवाल ने परिणामों की अधिकृत घोषणा की। निवर्तमान राष्ट्पति रामा स्वामी वेंकटरमन का कार्यकाल २५ जुलाई को पूरा हो रहा है। उसी दिन वे अवकाश ग्रहण करेंगे तथा श्री शंकरदयाल शर्मा को शपथ दिलाई जायेगा।

डा० शर्मा का जन्म १९ अगस्त, १९१८ को भोपाल मे हुआ। उन्होंने आगरा के सेंटजास कालिज से शिक्षा प्राप्त की। उन्होने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी, हिंदी और सस्कृत मे एम० ए० की। इसके पश्चात् इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की और लन्दन विश्वविद्यालय से लोक प्रशासन में डिप्लोमा हासिल किया। उन्होंने ब्रिटेन के लिंकस इन मे बार एट लॉ की डिग्री हासिल की। डा० शर्मा ने भोपाल रजवाडे को भारतीय सघ में विलय कराने के आंदोलन में बढ-चढकर हिस्सा लिया। इन्हें ८ महीने तक कारावास मे रहना पडा। ये १९५२ से १९५६ तक मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री रहे।

१९७१ में लोकसभा चुनाव जीतने पर डा० शर्मा १९७४ मे सचार मन्त्री वने। डा० शर्मा आध्रप्रदेश, पजाब तथा महाराष्ट्र के राज्यपाल रहे। ३ सितम्बर, १९८७ को ये भारत के उपराष्ट्रपति वने। ये दिल्ली पंजाब और पांडिचेरी विश्वविद्यालयो के कुलाधिपति भी हैं।

इन्होने पांच पुस्तकें लिखी हैं, जिनमे क्राति द्रष्टा, जवाहरलाल नेहरू, दा मेकर आफ माडन कामनवेल्थ, कांग्रेस एप्रोच टु इंटरनेशनल अफेयर्स प्रमुख हैं।

सत्यवान आर्य, रोहतक

कीर्तनमय प्रार्थना

हे पूर्ण परमात्मा, हम सब है तेरो आत्मा।
पापों का कर खात्मा, यह विश्व बने धर्मात्मा ॥१

हे प्यारे परमात्मा, हम सब हैं प्यारी आत्मा।
दु:खों का कर खात्मा, यह देश बने धर्मात्मा ॥२

हे परमपिता परमात्मा, हम सब हैं सच्ची आत्मा।
रोगों का कर खात्मा, यह प्रात बने धर्मात्मा ॥३

हे इन्द्र परमात्मा, अकाल का कर खात्मा।
वर्षा की हैं प्रार्थना, तू जल बरसा परमात्मा ॥४

आओ-आओ हे वर्षा रानी, भू-तल पर बरसा दो पानी।
तेरे भी नही मन लगता है, पशु-पक्षी भी यह कहता है ॥
आओ-आओ हे वर्षा रानी, भू-तल पर बरसा पानी ॥५

शोक समाचार

श्री सोमपाल सदस्य राज्यसभा की माता जो श्रीमती गंगा देवी धर्मपत्नी श्री पं० रघुवीरसिंह शास्त्री पूर्व लोकसभा सदस्य, मन्त्री सार्वदेशिक सभा, उपकुलपति गुरुकुल कांगडी का ८ जुलाई को ७० वर्ष की आयु में निधन होगया। वे धार्मिक कार्यो में सदा आगे रहती थी। उनकी स्मृति में १२ जुलाई को ग्राम ककोरकला जि० मेरठ में शाति यज्ञ का आयोजन किया गया।

समस्या व समाधान

(पृष्ठ ४ का शेष)

जब शेख अब्दुल्ला ने भारत के खिलाफ बगावत की आवाज उठाई तब भी भारत के प्रति लद्दाखियो का विश्वास नही डगमगाया। जब चीन ने लद्दाख के एक हिस्से में कब्जा किया, तब भी लद्दाखी बौद्ध भारत से दूर न हुए। लद्दाखियों ने शेख शासन के काल में ही आर्थिक विकास के अभाव की शिकायत करनी शुरु करदी थी और उन्हें अनुसूचित जनजातियों का दर्जा देने की मांग की थी। इस माग पर शेख ने आपत्ति करते हुए कहा था कि—यदि बौद्धों को जनजातियों का दर्जा दिया जाये तो करगिल के मुसलमान इस सुविधा से वंचित रह जायेंगे। शेख ने घाटी से लगे करगिल को लद्दाख से अलग जिला बनाने का फैसला कर लिया। इस विभाजन से लद्दाख को राजनीतिक रूप से कमजोर करने की एक चाल थी। जांसकार क्षेत्र बौद्ध होने के अतिरिक्त भी लद्दाख से काटकर करगिल में शामिल किया गया। नतीजा यह हुआ कि इस जिले में एकदम बौद्ध अल्पसंख्यक तो हो ही गये, लद्दाख जिले की आबादी भी इतनी घट गई कि राजनीतिक रूप से उसका महत्त्व ही घट गया। बौद्धों ने आंदोलन शुरु किया, अनेक लामा मारे गये।

लद्दाखी बौद्ध एसोसिएशन ने मांग की है कि लद्दाख को जम्मू कश्मीर से अलग करके केन्द्र शासित राज्य का दर्जा दिया जाये। लेकिन कश्मीर सरकार ने इसमें यह आपत्ति उठाई कि इससे धारा ३७० का उल्लंघन होगा। धारा ३७० क्योंकि भारत के गले में फंसी हुई एक ऐसी हड्डी है कि जिसे भारत सरकार न निगल सकती है और न उगल सकती है। आज नरसिम्हा राव सरकार के आने के बाद भी आदोलन फिर जोर पकड़ रहा है। सरकार भी बातचीत करना चाहती है। किंतु बातचीत का सार्थक परिणाम निकलने से पहले ही कश्मीर के दो नेताओं कांग्रेस अध्यक्ष गुलाम रसूलकार और नेशनल कांफ्रेस के पूर्व सांसद सैफुद्दीन सोज ने एक बयान देकर लद्दाख को स्वायत्तता देने का विरोध किया। उनका कहना था कि इससे ३७० धारा का उल्लंघन होता है और ऐसा करने से घाटी के लोगों पर बुरा असर पड़ेगा। यह बात बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि जम्मू कश्मीर राज्य के अन्तर्गत ही स्वायत्तता की मांग की जारही है। इसलिए ३७० धारा का इससे कोई लेना-देना नही। फिर भी हरेक मामले में धारा ३७० तलवार लेकर खड़ी करदी जाती है। इस प्रकार जम्मू व लद्दाख के मामले में धारा ३७० भेदभाव की दीवार खडी कर रही है, इसे गिरा देना चाहिए।

९—कश्मीर घाटी की आबादी को पूर्णतया हथियारों से रहित कर देना चाहिए।

१०—घाटी और पाक अधिकृत कश्मीर के बीच की 'उड़ीटियवाल' पट्टी को भारत सरकार अपने नियन्त्रण में रखे, जिससे पाकिस्तान की सीधी पहुँच घाटी में न हो।

११—सन् १९४७ से पाक क्षेत्र से जम्मू क्षेत्र में आये भारतीय हिंदुओं की नागरिकता के सभी अधिकार दिये जावे।

१२—पूर्व सैनिकों को जम्मू कश्मीर सीमा पर जमीन का आबंटन हो।

१३—पाकिस्तान स्थित आतंकवादी प्रशिक्षण केन्द्रों को समाप्त करने के आदेश सेना को दिये जावे।

१४—जम्मू कश्मीर राज्य में चल रहे अलगाववादियों के प्रशिक्षण केन्द्र नष्ट किये जावें।

१५—विस्थापित हिंदुओं को घाटी में पुनः बसाया जावे।

१६—राज्यों मे खुफिया तन्त्र का प्रभावी पुनर्गठन हो।

याद रखिये—पाकिस्तान शक्ति की भाषा ही समझता है। अब भी समय है सरदार पटेल की तरह दृढता का परिचय देकर पाकिस्तान के होश ठिकाने लगाने का सकल्प लेकर आगे बढना चाहिए। समस्या हल होते देर न लगेगी।

(ओ३म् शम)

शराब पीनेवालों पर जुर्माना

हिसार, १३ जुलाई (हृ० सं०)। समीपवर्ती गांव बुगाना में गांव के सरपंच रमेशकुमार की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। इस बैठक में गांव में नशाबन्दी लागू करने के लिए कुछ निर्णय लिए गये। इसके अनुसार गांव में शराब पीकर घूमने पर पूरी पाबन्दी होगी। जो इसका उल्लंघन करेगा उस पर जुर्माना किया जायेगा।

बैठक में किये गये अन्य निर्णय के अनुसार गांव में शराब बेचने वालों पर सौ रुपए जुर्माना होगा। शराब पीकर घूमनेवालों पर पचास रुपए जुर्माना होगा। यदि कोई शराब बेचनेवाले की सूचना देगा तो उसे २५ रुपए का इनाम दिया जाएगा।

साभार—दैनिक हिंदुस्तान

गुरुकुल होशंगाबाद में प्रवेश आरम्भ

आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म०प्र०) एक शिक्षण संस्था है। यहां पर मान्यता प्राप्त मध्यमा शास्त्री की परीक्षाये दिलाई जाती हैं। जो क्रमशः उच्चतर माध्यमिक एवं बी० ए० के समकक्ष है। इस वर्ष पांचवीं एवं छठी उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जारहा है। शिक्षण सर्वथा निःशुल्क है। प्रतिमाह भोजन व्यय २०० रुपए देना होता है। प्राकृतिक रमणीय वातावरण, सबके साथ समानता का व्यवहार एवं उत्तम शिक्षकों द्वारा अध्यापन यहां की विशेषतायें हैं। परीक्षायें आर्षविद्यापीठ गुरुकुल झज्जर एवं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरयाणा) से सम्बद्ध है। शीघ्र सम्पर्क करें।

—जगद्देव नैष्ठिक:
आचार्य आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद
(म०प्र०) ४६१००१

सप्तम आर्यसम्मेलन का संक्षिप्त विवरण

दिनांक २३-२४ मई को सम्पन्न आर्यसमाज भांडवा जि० भिवानी के जलसे में सर्वश्री ओमानन्द सरस्वती, भूतपूर्व शिक्षामन्त्री हीरानन्द आर्य, तहसीलदार इन्द्रसिह आर्य, अत्तरसिंह क्रांतिकारी, स्वामी परमानन्द सरस्वती, वानप्रस्थी ताराचन्द आर्य, पं० भरतसिंह शास्त्री, महाशय भरतसिंह आर्य, विश्वमित्र आर्य, होश्यारसिंह आर्य अध्यापक नेता, तेजसिंह आर्य एवं आजादसिंह आर्य आदि वक्ताओं ने समय-समय पर समाज सुधार, गोरक्षा, शराबबन्दी आदि विषयों पर क्रांतिकारी विचार रखे। राष्ट्र, धर्म, गौ व आर्यसमाज के दस रक्षकों, सेवकों व प्रचारकों का सम्मान किया गया। जिसमें यथायोग्य मानपत्र, चद्दर या पगड़ी आदि तथा धनराशि भेंट की गई। इस उत्सव में लगभग दो सौ श्रोता बाहर से पधारे, जिनके भोजन का उत्तम प्रबन्ध किया गया। प्रधान व मन्त्री सपत्नीक यजमान बने। इन्हीं की ओर से शुद्ध घी के मिष्ठान्न का प्रीतिभोज आर्यों को दिया गया। उत्सव को सफल बनाने में विशेष सहयोग दिया।

—धर्म शास्त्री मन्त्री

आर्यसमाज जूआं (गायत्री ट्रस्ट) जि० सोनीपत का चुनाव

संरक्षक—सर्वश्री डा० राजसिंह छिक्कारा, प्रधान—धर्मसिंह आर्य मैम्बर पंचायत, उपप्रधान—हुकमसिंह, प्रो० धर्मवीर, मन्त्री—मा० खजानसिंह आर्य, उपमन्त्री—वेदप्रकाश शास्त्री, मा० रणधीरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष-मा० पूर्णमल, कोषाध्यक्ष-वेदसिंह पूर्व पंच, लेखानिरीक्षक-प्रो० आनन्दसिंह, प्रचारमन्त्री—जितेन्द्र आर्य, अधिष्ठाता—आर्यवीर दल प्रतापसिंह कोच।

हरयाणा की पंचायतों से अपील

हरयाणा की पंचायतों से अपील है कि वे हरयाणा से शराब जैसी भयंकर बुराई को समाप्त करने के लिए ३० सितम्बर तक निम्नलिखित प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजें। सरकार के नियम के अनुसार जिनके प्रस्ताव ३० सितम्बर तक पहुंच जावेंगे, वहां शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं :

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करने के प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में

माननीय आबकारी एवं कराधान आयुक्त,
हरयाणा चण्डीगढ

आज दिनांक ....ग्राम पचायत.............

ब्लाक .... जिला ....ने अपनी बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया :—

प्रस्ताव संख्या :—

यह ग्राम पंचायत शराब की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता है। ग्राम मे अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था मे यह पचायत माग करती है कि हमारे क्षेत्र मे चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य मे कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पचायत की इस प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं और वहां की ग्राम पंचायतें भविष्य में भी वहां शराब के ठेके नहीं चाहती, ऐसी ग्राम पंचायतें निम्न अनुसार दिनांक ३०-९-९२ तक प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजें।

सेवा में

माननीय आबकारी एवं कराधान आयुक्त,
हरयाणा चण्डीगढ़

आज दिनांक .... ग्राम पंचायत..................

ब्लाक.................जिला.....................ने अपनी बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया :—

प्रस्ताव संख्या नं०

यह ग्राम पंचायत शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। इस समय हमारे गांव में शराब की कोई दुकान नहीं है। शराब से हो रहे सर्वनाश के दृष्टिगत यह ग्राम पंचायत मांग करती है कि भविष्य में भी हमारे यहां सरकार की ओर से शराब की दुकान नहीं खोली जाए। भारतीय संविधान की धारा ४७ में भी व्यवस्था की गई है कि सरकार द्वारा शराब तथा दूसरे मादक पदार्थों के उत्पादन तथा खपत पर पाबन्दी लगाई जायेगी। इस प्रकार ग्राम पंचायत का यह प्रस्ताव सर्वथा कानून के अनुसार है।

दिनांक : पंच तथा सरपंचों के हस्ताक्षर

वेदप्रचार सप्ताह के शुभ अवसर पर विशेष छूट का लाभ प्राप्त करें

वेदवागीश, व्याख्यानवाचस्पति पूज्यपाद श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजककृत वेदमन्त्रों की व्याख्याय, अन्य वैदिक साहित्य तथा राष्ट्रीय समस्याओं पर लिखी गई लघु पुस्तकें (ट्रैक्ट) मगाकर वितरण करने के लिए शीघ्र लिखिये। पुस्तक विक्रेता भी इस अवसर से लाभ उठायें।

कम से कम तीन सौ रुपये की पुस्तकों पर तीस प्रतिशत, पाच सौ रुपये की पुस्तकों पर चालीस प्रतिशत और कम से एक सहस्र रुपये की पुस्तकों पर पचास प्रतिशत छूट।

—मनोजकुमार
व्यवस्थापक वैदिक संस्थान, नजीबाबाद
उत्तर प्रदेश, पिन० २४६७६३

गुडगांव में आर्य युवक एवं युवती शिविर सम्पन्न

गुडगाव आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वाधान में २७ जून से ५ जुलाई, ९२ तक शारीरिक एवं बौद्धिक विकास प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्य पब्लिक स्कूल मे०-७ अरबन एस्टेट मे आयोजित किया गया। शिविर का भव्य उद्घाटन रविवार २८ जून को श्री सेवक रामदास पूर्व प्रधान अरबन एस्टेट के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता भक्त राजेन्द्रप्रसाद प्रधान आर्यसमाज रामनगर ने की। शिविर की सफलता हेतु शुभकामनाये व्यक्त करते हुए दोनो महानुभावों ने पांच-पाच सौ रुपये का दान दिया। शिविर में ५५ युवक युवतियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का मुख्य उद्देश्य आज के बदलते परिवेश में युवको और युवतियों को कराटे, योगासन, लाठी आदि तथा वेद की शिक्षा का प्रशिक्षण देना था।

समापन समारोह रविवार ५ जुलाई, ९२ को माननीय श्री वेदपाल जी आर्य कार्यकारी अभियन्ता हरयाणा बिजली बोर्ड की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। शिविर की सफलता के लिए आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव का धन्यवाद करते हुए उन्होंने श्रेष्ठ आयवीर वीरांगनाओ के श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए पुरस्कार वितरण में ६०० रुपये का योगदान दिया। आयवीर वीरागनाओं ने योग लाठी, नान छुरी, विशेष रूप से कराटे आदि का सराहनीय प्रदर्शन करके समस्त आर्यजनों को मुग्ध कर दिया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारी माननीया अरुणाप्रभा साहनी प्रधाना स्त्री समाज ने युवकों और युवतियों को अपना आशीर्वाद देते हुए उनके भोजन आदि के लिए अपनी ओर से तथा स्त्री आर्यसमाज नई कालोनी की ओर से १००० रुपये का दान दिया व स्त्री आर्यसमाज अरबन एस्टेट का भी विशेष योगदान रहा। शिविर की सफलता में अधिकारियो प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री श्री जगदीश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर आर्य ने भरपूर सहयोग दिया। दानी महानुभावों ने बड़ी उदारता से दान देकर शिविर को सफल बनाने में पूरी सहायता की।

—ओमप्रकाश चुटानी
महामन्त्री संयोजक शिविर

उ०प्र० में इन्टरमीडिएट तक संस्कृत अनिवार्य

वाराणसी (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में अगले शैक्षणिक सत्र से कक्षा छह से इन्टरमीडिएट तक संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाया जाएगा।

उत्तर प्रदेश में 'सस्कृत शिक्षा, दशा और दिशा' विषय पर यहां पिछले दिनो आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में राज्य के माध्यमिक शिक्षा मन्त्री राजनार्थसिह ने यह जानकारी दी। संगोष्ठी में देश के विभिन्न भागों से आये विद्वानो ने भाग लिया।

उन्होंने बताया कि हाई स्कूल और इन्टरमीडिएट में हिंदी का तृतीय प्रश्नपत्र अब संस्कृत का होगा। इसके अलावा वैदिक गणित की शिक्षा भी सस्कृत में दी जाएगी।

श्री सिह ने बताया कि सरकार संस्कृत शिक्षा निदेशालय स्थापित करने पर गम्भीरता से विचार कर रही है।

साभार : नवभारत टाइम्स

धूम्रपान त्यागने का संकल्प

ग्राम दौलताबाद जि० गुडगाव के पूर्व सरपच श्री धर्मवीर ने आर्य-समाज के वार्षिक उत्सव दिनाक ३ से ५ जून, ९२ के अवसर पर उपदेशकों के प्रचार से प्रभावित होकर यज्ञ पर यज्ञोपवीत धारण करके सकल्प किया है कि भविष्य मे कभी भी धूम्रपान नही करूंगा।

—सत्यवान आर्य

छठा अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर अत्यन्त सफल रहा

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद द्वारा विगत १५ मई से १४ जून, ९२ तक आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित शिविर तपोवन आश्रम देहरादून मे अत्यन्त सफल रहा। एक मास के इस शिविर में पुरोहितो के लिए सर्वाधिक प्रेरणाप्रद रहा आचार्य वेदभूषण का आत्मीयताभरा व्यवहार एवं उनके द्वारा दी जानेवाली सशक्त, शुद्ध प्रेरणा जो प्रशिक्षणार्थियो के हृदय में नवोन्मेष भर देती है।

इस शिविर मे छियानवे स्त्री और पुरुष सम्मिलित रहे। इनमे पन्द्रह महिलाये प्रशिक्षणार्थी थी।

अत्यन्त व्यस्त एवं तपस्यापूर्ण दिनचर्या से अनेक सज्जनों को अद्भुत स्वास्थ्य लाभ हुआ। शिविर मे भाग लेनेवाले प्रबुद्ध प्रशिक्षणार्थियों में एडवोकेट, डाक्टर, इन्जीनियर, प्रोफेसर, मुख्याध्यापक, उच्च शिक्षा प्राप्त अनेक एम०ए० उपाधिकारी भी सम्मिलित थे।

यज्ञ व संस्कारों की वैज्ञानिक विधि की व्याख्या एवं शंका समाधान दो अत्यन्त प्रमुख आकर्षण इस शिविर के थे जो आचार्य वेदभूषण द्वारा सम्पन्न होते थे।

सुविख्यात योगमनीषी स्वामी सत्यपति जी महाराज ने पन्द्रह दिनों तक प्रतिदिन ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के आधार पर उपासना योग पर भी प्रकाश डाला।

शिविर मे हालैण्ड और मोरीशस के भी प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। देश-विदेश से आये प्रशिक्षणार्थियों ने संस्कार-विधि के अनुरूप एकरूपता लाने का भी शुभ संकल्प लिया।

—सत्यानन्द आर्य

अपील

सरस्वती वैदिक संस्था की माता शांति सहगल ने उन अबोध व असहाय अनाथ कन्याओं के सरक्षण को पवित्र भावना के आधार पर आर्य कन्या सदन (आर्य कन्या अनाथालय) प्रारम्भ करने को प्रेरणा दी। जिससे प्रेरित होकर स्थानीय डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, सैक्टर १४, के प्राचार्य श्री आर्यवीर भल्ला ने आप सभी के सहयोग से १५ अगस्त १९९१ को इस अनाथालय को प्रारम्भ किया। इसमें सभी धनी-मानी महानुभावों ने अपने-अपने स्तर पर सहयोग किया। इसमें प्रारम्भ में तीन बच्चे थे। परन्तु धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते आज यह संख्या २० को भी पार कर चुकी है। आपके पवित्र दान द्वारा पता नही कितने बच्चों को योग्य पालन-पोषण की सुविधा मिल रही है। जिनको अन्तरात्मा से निकली दुआये आपको तन, मन और धन से परिपूर्ण कर देती हैं। यदि आपका इसी प्रकार अपूर्व प्यार व प्रेम सहित सहयोग रहा तो भविष्य में आपकी यह संस्था सर्वोच्चस्तर को संस्थाओं में अपना नाम स्थापित करेगी।

धन का दान तो सब करते हैं, परन्तु दान उन्हीं का सफल है जो ईश्वर के बच्चे-बच्चियों की सेवा में लगाते हैं। आप इस कार्य में अपना सहयोग धन द्वारा, वस्त्र द्वारा, भोजन व फल द्वारा, तेल, साबुन, अन्न द्वारा व बर्तन के दान द्वारा कर सकते हैं। ईश्वर आपको इस पवित्र कार्य के लिए प्रेरणा दे।

हम हैं आपके अधिकारी/सदस्यगण व सहयोगी
आर्य कन्या सदन
४६१ ए, सैक्टर १५, फरीदाबाद

आर्यसमाज माजरा (दूबलधन) जि० रोहतक का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री गुलजारीलाल पहलवान, उपप्रधान—शेरसिंह, मन्त्री—मा० मागेराम आर्य, कोषाध्यक्ष—पालसिह आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-४ सूची

ओ३म्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक ३४ २८ जुलाई, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

पैंतावासकलां जिला भिवानी में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक १८-७-९२ को रात्रि मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डलियों पं० जयपालसिंह बेधडक, पं० हरध्यानसिंह तथा पं० खेमसिंह जी क्रांतिकारी द्वारा समाज मे फैली बुराइयों के खिलाफ समाज सुधार के प्रेरणाप्रद भजन हुए। दिनाक १९-७-९२ को प्रातः गांव के चौक में हवन किया गया। १० बजे १०+२ स्कूल के प्रांगण में शराबबन्दी सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम उपरोक्त मण्डलियों के शराबबन्दी पर भजन हुए। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री हीरानन्द जी आर्य पूर्व शिक्षा-मन्त्री हरयाणा ने की। मंच का सचालन सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने किया। भजनों के उपरांत मुख्य अतिथि चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त तथा आर्य जी का पैंतावासकलां के सरपंच श्री सत्येन्द्रसिंह ने पुष्पमाला द्वारा स्वागत एवं अभिनन्दन किया। सम्मेलन में स्कूली बच्चों के अतिरिक्त गांव के नर नारी तथा निकट के गाव गुवांड के लोगों ने बढ-चढकर भाग लिया।

उसके बाद श्री अत्तरसिंह क्रांतिकारी जी ने बताया कि हम राम कृष्ण की सन्तान हैं। शराब बेचकर व पीकर चरित्र नष्ट मत करो। शराब सब पापों की जड है। श्री रामफल सरपंच (बीरहीकला) ने अपने गाव में शराबबन्दी लागू करने एवं विवाह शादी में बाजे पर नाचने पर पाबन्दी। शराब बेचनेवाले पर ११०० रु०, पीनेवाले पर १०० रु० दण्ड तथा ३० आदमियों की गाव में शराब छुड़वादी है की सूचना दी। साथ में कहा कि शराब पीनेवाले पंच सरपंचों के त्याग-पत्र ले लेने चाहिये। चौ० सूबेसिंह जी पूर्व एस०डी०एम० तथा सभा मन्त्री जी ने सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी जो अस्वस्थ होने के कारण न आ पाये उनका सन्देश दिया। मन्त्री जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा की शराबबन्दी की गतिविधियों की जानकारी दी तथा इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। चौ० बलवीरसिंह सरपंच फतेहगढ, चौ० दीवानसिंह पूर्व हैडमास्टर अटेला, डा० सत्यवीरसिंह कन्हेटी, कर्नल रिसालसिंह चरखी एवं प्रधान सांगवान खाप आदि ने भी सांगवान खाप से जो तीन ठेके हैं उन्हे बन्द करवाकर पवित्र खाप बनाने पर बल दिया।

श्री बलवीर ग्रेवाल पूर्व विधायक ने भी किसानों की लूट, शिक्षा में असमानता, शराबबन्दी तथा भ्रष्ट लुटेरे राजनीतिज्ञों का निरादर करने का सुझाव दिया। चौ० विजयकुमार जी संयोजक हरयाणा शराब-बन्दी समिति ने भी लोगों से जोर देकर शराब, धूम्रपान, अफीम, सुलफा, मास, अण्डे आदि बुराइयों से सदा दूर रहने पर बल दिया। भजनलाल सरकार की शराब बढ़ावा नीति तथा उसके जमाई की शराब की फैक्ट्री का हवाला देकर कटु आलोचना की तथा गाव में आर्यसमाज की स्थापना अभी कागजों में है। गांव मे आर्यसमाज मन्दिर बनाकर स्थायी रूप से आर्यसमाज का कार्य चलाओ। मन्दिर निर्माण हेतु १०० रु० दान दिये। ११०० रु० सभा की ओर से तथा १०० रु० अपनी ओर से मन्त्री सूबेसिंह जी ने मन्दिर निर्माण हेतु दिये। साथ में ५०१ रु० गाव की तरफ से सरपंच साहब ने दान दिये। वह पैसे मन्त्री जी ने सरपंच साहब को मन्दिर निर्माण हेतु वापिस दे दिये। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हीरानन्द आर्य ने कहा कि सभी सरकारें शराब बढावा नीति में समान हैं। जब तक आप लोग स्वय शराब छोडकर सगठित हो, आवाज बुलन्द नहीं करोगे तब तक सरकार राजस्व के लालच में शराब बन्द नही कर सकती। लोगों से शराब छोड़ने का आह्वान किया। जिस पर श्री रघुवीरसिंह ने शराब न पीने का व्रत लिया।

ज्ञातव्य है कि ग्राम पंचायत के संघर्ष के बाद गांव पैंतावासकलां में २ जून, ९२ से शराब का उपठेका बन्द हुआ है। गाव में पूर्ण शराब-बन्दी लागू है। पीनेवाले पर १०० रु० तथा बेचनेवाले पर ११०० रु० जुर्माना किया जाता है। पुनः हरकत करने पर सामाजिक बहिष्कार किया जाता है। सरपंच साहब की सभी वक्ताओं ने इस कार्य के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की। अन्त मे सरपच श्री सत्येन्द्रसिंह ने गाव में आर्यसमाज मन्दिर शीघ्र बनाने का आश्वासन दिया तथा सभी विद्वान् वक्ताओं का धन्यवाद किया। कार्यक्रम बहुत ही रोचक एवं प्रेरणादायक रहा।

—रणवीरसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज पैंतावास कला

हरयाणा में शराबबन्दी सम्मेलन तथा वेदप्रचार सप्ताह कार्यक्रम

१. दूबलधन जि० रोहतक २८-२९ जुलाई को शराबबन्दी सम्मेलन
२. प्रभुवाला जि० हिसार ३०-३१ ,, ,, ,,
३. कन्या गुरुकुल खानपुरकला जिला सोनीपत भक्त फूलसिंह बलिदान दिवस ३१ जुलाई
४. बामला जिला भिवानी २ अगस्त शराबबन्दी सम्मेलन
५. धनाना ,, ,, ३ ,, ,, ,,
६. बस्सी जिला गुडगांव ८-९ अगस्त वार्षिक उत्सव
७. थानेसर जिला कुरुक्षेत्र ७ से १३ अगस्त वेदप्रचार सप्ताह
८. नरवाना जिला जींद १३ से २१ ,, ,, ,,
९. मुआना ,, ,, १५ से २१ ,, ,, ,,
१०. फरटिया भीमका तह. लोहारू जि. भिवानी २२-२३ अगस्त शराबबन्दी सम्मेलन।
११. बीकानेर गंगायचा अहीर जि. रेवाडी ११ से १३ सितम्बर आर्यसमाज अर्ध स्थापना शताब्दी समारोह।

हरयाणा में शराबबन्दी अभियान की गतिविधियां

१—ग्राम दूबलधन जिला रोहतक के सरपंच श्री धारासिंह जी के अनुसार ग्राम में शराबबन्दी अभियान ग्राम पंचायत के प्रयत्न से जोर पकड़ रहा है। ग्रामवासियों के सहयोग से ग्राम में जो गतवर्ष शराब का ठेका था, उसे हटवाने की सफलता के बाद नशाबन्दी के कार्य में प्रगति हुई है। ग्राम की तीनों पंचायतों की सामूहिक पंचायत के निर्णय का पालन किया जाने लगा है। कुछ भटके हुए व्यक्तियों द्वारा अवैध रूप से शराब की बोतलें लाये जाने पर लोगों ने पकडकर उन पर ५०० रु० पंचायती दण्ड प्रत्येक व्यक्ति को दिया गया व उन्ही व्यक्तियों द्वारा शराब की बोतलें नाली मे फेंकवाई गई। पंचायत को विश्वास है कि शराब पीनेवालों को प्यार से समझाकर अथवा पचायती दण्ड देकर सन्मार्ग पर लाया जा सकेगा। शराब विरोधी सभा द्वारा प्रकाशित पोस्टर तथा साहित्य वितरित किया जारहा है।

२—जिला रोहतक के ही ग्राम लाहली में हरिजन बस्ती मे शराब का ठेका खोला जाने पर काफी रोष है। हरिजन भाई इस ठेके को अपने मोहल्ले से उठवाने के लिए सघर्ष कर रहे हैं। इसी उद्देश्य से ग्राम के पचों तथा नम्बरदारों ने एक शिष्टमण्डल के साथ जिला उपायुक्त रोहतक को ज्ञापन देकर ठेके को हटवाने की माग की है।

३—इसी प्रकार ग्राम आसन जिला रोहतक में ग्राम के उत्साही नवयुवकों ने शराब के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिए १६-१७ जुलाई को सभा की प० खेमसिंह की भजनमण्डली द्वारा शराबबन्दी प्रचार करवाया। ग्रामवासी अपने ग्राम से शराब का उपठेका उठवाने के लिए सघर्ष कर रहे हैं।

४—जिला हिसार के ग्राम बुगाना तहसील हांसी की ग्राम पंचायत ने सार्वजनिक पंचायत करके ग्राम मे पूर्ण नशाबन्दी लागू करने का निर्णय किया है। ग्राम के सरपंच श्री नरेशकुमार के अनुसार ग्राम में शराब की बिक्री तथा पीने पर पूर्ण प्रतिबन्ध है। ग्राम में शराब पीने पर १०० रु० तथा बाहर से पीकर ग्राम मे घुसनेवालों पर ५० रु० दण्ड दिया जाता है। इसकी सूचना देनेवाले व्यक्ति को २५ रु० पुरस्कार दिया जाता है। उपमण्डल हांसी के अन्य कुछ ग्रामों में सभा के उपदेशक प० अत्तरसिंह आर्य के प्रयत्नो से नवयुवको ने शराब के विरुद्ध जनजागरण करने एवं पंचायतों द्वारा शराबियो के विरुद्ध पुलिस मे केस दर्ज कराने का अभियान चला रखा है।

५—सभा के भजनोपदेशक पं. जयपाल आर्य ने शराबबन्दी प्रचार द्वारा निम्नलिखित ग्राम पचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव भेजे हैं—१. ग्राम पंचायत पैंतावास जिला भिवानी, २. ग्राम पचायत धिकाडा जिला भिवानी, ३. ग्राम पचायत फतहगढ जिला भिवानी, ४. ग्राम पचायत बिरही जिला भिवानी, ५ ग्राम पचायत मिर्च जिला भिवानी।

इसी प्रकार जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत के भजनोपदेशक पं. रामकुमार आर्य द्वारा निम्नलिखित ग्रामों में शराबबन्दी प्रचार द्वारा पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव करवाये हैं—१. ग्राम पंचायत बाधडूखुर्द जिला जींद, २ ग्राम पचायत ऐंचराखुर्द जिला जींद, ३. ग्राम पचायत ऐंचराकला जिला जींद, ४. ग्राम पचायत भागखेड़ा जिला जींद, ५ ग्राम पंचायत शादीपुर जुलाना जिला जींद, ६. ग्राम पचायत हरिगढ जिला जींद, ७ ग्राम पचायत भम्बेवा जिला जींद, ८. ग्राम पचायत बाधडूकलां जिला जींद, ९. ग्राम पंचायत गागोली जिला जींद, १०. ग्राम पचायत सिवानामाल जिला जींद, ११. ग्राम पंचायत हाट जिला जींद, १२. ग्राम पचायत रामनगर जिला जींद, १३. ग्राम पंचायत गगाना जिला सोनीपत।

सभा के उपदेशक पं मातूराम प्रभाकर एव पं ईश्वरसिंह तूफान जिला रेवाड़ी तथा महेन्द्रगढ में, प० मुरारीलाल बेचैन, स्वामी देवानन्द तथा प० हरिश्चन्द्र शास्त्री जिला फरीदाबाद तथा गुडगांव प० चिरजीलाल पं० रामकुमार जिला पानीपत व करनाल, पं० जयपाल, पं० हरध्यानसिंह व प० अतरसिंह आर्य जिला भिवानी तथा हिसार सिरसा पं० अर्जुनदेव आर्य एवं पं० धर्मवीर आर्य जिला रोहतक, प० दीनदयाल सुधाकर तहसील झज्जर, पं० शेरसिंह, पं० गजराम आर्य जिला यमुनानगर, अम्बाला तथा कुरुक्षेत्र, प० रतनसिंह आर्य जिला सोनीपत में शराबबन्दी प्रचार करके पंचायतों से प्रस्ताव कराने की प्रेरणा कर रहे हैं।

६—हरयाणा शराबबन्दी अभियान के संयोजक श्री विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त ने जिला रोहतक, सोनीपत, भिवानी, पानीपत, करनाल तथा कुरुक्षेत्र का तूफानी भ्रमण करके ग्राम पचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करने की प्रेरणा की है।

—केदारसिंह आर्य

कावड़-प्रथा अवैदिक है

—वेदप्रकाश साधक

भारतभर में इस अन्धपरम्परा का काफी प्रचलन है। शिवरात्रि के पर्व पर बहुत-सी जनता शिव की पूजा करती है। शिव नाम परमात्मा का है। निस्सन्देह परमात्मा की उपासना से दुःखों की निवृत्ति होती है, परन्तु परमात्मा के स्थान पर अन्य जड़ पदार्थों की उपासना करनेवाले की आत्मा की जड़बुद्धि हो जाती है। क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्तःकरण द्वारा आत्मा मे अवश्य जाता है। इसलिए मनुष्य को बड़ी हानि होती है। इससे अधिक मूर्खता यह है कि गंगा का जल कावड़ रूप में हरद्वार से लाकर शिवजी की मूर्ति पर चढाया जाता है। भोले लोगों को पथभ्रष्ट कर दिया गया है। जो स्वय जल का प्रदाता है, उस पर जल चढाना बुद्धिमत्ता नही है। धन का और समय का नाश होता है। कहा जाता है कि हम तप करते है। यह तमोगुणी तप है जो कि व्यर्थ है। तप का अर्थ है धर्मानुष्ठान के लिए गर्मी सर्दी, मान अपमान, हानि लाभ, सुख दुःख का सहन करना। परन्तु यह उद्देश्यहीन पुरुषार्थ है। कई लोगों का विचार है कि हम धर्म की कमाई करते हैं। परन्तु धर्म तो वह है जिसमें अभ्युदय और निश्रेयस की प्राप्ति हो। इसमें न ऐश्वर्य मिलता है, न मोक्ष। कामनाओं की सिद्धि भी कावड़ से मानी जाती है। सन्तान की और धन-दौलत की प्राप्ति का विचार भी एक भ्रम है।

कुछ अनजान और चालाक लोग कावड के भेष मे सुलफा, गाजा भी छुपाकर लाते हैं और रास्ते में नशा आदि करके गुलछर्रे उड़ाते हैं। अन्धविश्वासी नगरवासी इनकी सेवा करके धर्म मानते हैं। जो कि निषिद्ध कर्म होने के कारण अधर्म है और घोर पाप भी है। इसलिए मानवसमाज के लिए इस अन्धपरम्परा का कोई लाभ नही, बल्कि अवैदिक और आडम्बरयुक्त प्रथा है। सब देशवासियों को इसका विरोध करना चाहिए।

गायत्री मन्त्र से मानव का उत्थान

गायत्री के जाप से मानव तेरा उद्धार हो।
यही मानो मूलमन्त्र जाप से नैय्या पार हो॥
यम नियमों का पालन करें तो नष्ट पच क्लेश हों।
मल, विक्षेप, आवरण, त्रय दोषों का ना लेश हो।
एषणा मिट जाये तीनों, मनके श्रेष्ठ विचार हों॥१

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष मिलें चारों पदार्थ जाप से।
हृदय में जगे ज्ञान ज्योति मिटता स्वार्थ जाप से।
मुक्ति का माग यही, आनन्द का भण्डार हो॥२

सत्य पथ मिले जाप से, अन्त होवे पापों का।
हो विश्व शांति उदित, भय नही त्रिविध तापों का।
मन, वचन, कर्म से नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त व्यवहार हो॥३

कहे लालचन्द जो मुझे मिला, सब गायत्री की देन है।
जाप से हो इच्छा पूर्ण, मानो यह मेरा कहन है।
गायत्री मन्त्र अनमोल अनोखा, जन-जन का इससे प्यार हो॥४

—लालचन्द विद्यावाचस्पति

चरित्र निर्माण और युवक

—स्वामी ओमानन्द सरस्वती, गुरुकुल झज्जर

यदि उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य (गुरु) किसी बालक को मिल जाये तो उनकी शिक्षा से वह ज्ञानी विद्वान् और चरित्रवान् बनता है। शतपथ ब्राह्मण मे भी लिखा है—मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद:। इसकी व्याख्या महर्षि दयानन्द इस प्रकार करते हैं—वह कुल धन्य ! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् ! जिसके माता और पिता धार्मिक (चरित्रवान्) विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना अन्य किसी से नहीं। जैसे—माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता, इसलिये धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता चरित्र निर्माण का अपनी सन्तान को उपदेश करती है। अज्ञान के कारण मनुष्य की पापकर्म वा बुराइयों में प्रवृत्ति होती है। माता पिता गुरु पाप से बचा सकते हैं। ये तीन गुरु व शिक्षक ही अपनी सन्तान को पाप पुण्य, धर्म-अधर्म, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का यथार्थ ज्ञान करा सकते हैं। ज्ञान चक्षु खुलने से ही बालक युवा होने पर अपने चरित्र-निर्माण का विशेष ध्यान रखता है और वह सदाचारी पवित्र जीवनवाला बन जाता है। बाल्यावस्था में बालक अपने माता-पिता के पास रहता है। इसलिये माता-पिता के आचारों का चरित्र व्यवहारों और संस्कारों का बालक पर विशेष व प्रभूत प्रभाव पडता है। उठना, चलना, फिरना, बोलना अङ्ग सचालनादि समस्त क्रियाओं में माता-पिता की छाप पडती है। माता-पिता चाहें तो बालक को शुद्ध सस्कार डालकर अपने आचार व्यवहार से उसे दिव्यगुण सम्पन्न कर उसे उच्चकोटि का चरित्रवान् महात्मा बना सकते हैं। मनुष्य की भलाई बुराई का मूल साधारणतया माता-पिता ही हैं। इस आयु में पड़े सस्कार प्राय: अमिट से ही होते हैं।

माता का प्रभाव पिता तथा गुरुजनों से बढकर होता है। इसलिये कहा है "माता निर्मात्री भवति"। माता बालक का असली निर्माण करती है।

इसलिये कहा है—

माता के बनाये पूत धीर और शूर बने।
माता के बिगाडे पूत कायर और क्रूर हैं॥

उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितॄन् माता गौरवेणातिरिच्यते॥

दक्षिणा लेकर पढ़ानेवाले अध्यापकों (उपाध्यायों) से दश गुणा प्रभाव आचार्य की शिक्षा का होता है और आचार्य की शिक्षा से पिता की शिक्षा का शत (सौ) गुणा प्रभाव होता है और माता की शिक्षा का प्रभाव पिता की शिक्षा से सहस्र (हजार) गुणे से भी अधिक होता है।

इसलिये कहा है—

माता शत्रु: पिता वैरी येन बालो न पाठित.।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

वे माता-पिता अपनी सन्तान के पूर्ण वैरी हैं जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति नहीं करायी वे विद्वानों की सभा में वैसे तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं जैसे—हसो के बीच मे बगुला।

यही माता-पिता का कर्त्तव्य और परमधर्म है कि सन्तानों को तन, मन, धन लगाकर विद्या, धर्म, सभ्यता, सच्चरित्र की उत्तम शिक्षायुक्त करना माता-पिता के पश्चात् गुरु आचार्य का स्थान है। आचार्य का अर्थ है "आचारं ग्राहयति" जो आचार सिखलाये वा चरित्र की शिक्षा देकर मानव जीवन का निर्माण करे। यदि आचार्य योग्य हो तो वह कांया पलट देता है। माता-पिता के डाले कुसस्कार को उलट देता है।

शरीर की तीन अवस्थाये होती हैं बाल्य, यौवन और वृद्धावस्था। जो बाल्यावस्था मे सच्चरित्रयुक्त रहता है, उसी के लिये पूर्ण युवावस्था में अर्थात् ४८वें वर्ष में विवाह करने का विधान ऋषि लोगो ने किया है। यही सर्वोत्तम विवाह है। यह नियम गृहस्थी बननेवालों के लिये है। किन्तु जो विवाह करना ही न चाहें और मरणपर्यन्त ब्रह्मचारी रह सकते हों तो अवश्यमेव रहें, किन्तु यह अत्यन्त कठिन कार्य है। ब्रह्मचारी मरण पर्यन्त युवक ही रहता है। सदा जवान रहने का एकमात्र साधन ब्रह्मचर्य ही है और जो पुरुष वा स्त्री को विद्या धर्म वृद्धि और सब संसार का उपकार करना ही प्रयोजन हो, वे विवाह न करे। क्योंकि जो ब्रह्मचर्य से संन्यासी होकर जगत् को सत्य शिक्षा देकर सदाचारी उच्च चरित्र का निर्माण करके जितनी उन्नति कर सकता है उतनी गृहस्थ वा वानप्रस्थाश्रम करके सन्यासी नहीं कर सकता। इसीलिये सदाचारी ब्रह्मचारी यौवन में संन्यास लेकर चरित्र निर्माण का कार्य करे तो देश की काया पलट सकती है। ससार मे यह देखने को मिलता है जब कोई बालक या युवक कुसंग में फसकर दुर्दान्त होगया और पतन की चरम सीमा पर पहुंच गया। उसे किसी महात्मा का दिव्य उपदेश सुनने को मिल गया तो उस उपदेश से आश्चर्यजनक प्रभाव पडा और उसका जीवन ही पलट गया। इतना परिवर्तन हुआ कि जो कल पापपक में लथपथ था, आज उसका सब मल धुल गया और उसका जीवन उज्ज्वल विमल और पवित्र बन गया। जैसे शराबी-कबाबी मुन्शीराम युवक को स्वामी दयानन्द ने महात्मा मुन्शीराम और देशधर्म पर सर्वस्व न्यौछावर करनेवाला स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया। अत्यन्त पतित अमीचन्द तहसीलदार के लिए स्वामी दयानन्द के मुख से ये शब्द निकले कि अमीचन्द तू है तो हीरा, लेकिन कोचड मे पडा हुआ है। इन शब्दों को सुनते ही अमीचन्द के सब दुर्व्यसन छूट गये और अमीचन्द यथार्थ में हीरा ही बन गया।

महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पढकर रामप्रसाद बिस्मिल सब दुर्व्यसनों को तिलाजलि देकर सदाचारी देशभक्त बन गया। उसने ब्रह्मचर्यव्रत को धारण कर अपने शरीर को सुन्दर सुदृढ और स्वस्थ बना लिया। उसकी आत्मा इतनी पवित्र और बलवान् बन गई कि गोरखपुर की जेल में भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ गया। इसलिये महापुरुषो का सत्संग और उनके पवित्र ग्रन्थों का स्वाध्याय बालक और युवकों को चरित्रवान् बनाता है। वेद भगवान् में प्रार्थना की है कि "अवन्तु न: पितर: सुवाचस:" अच्छे पढानेवाले गुरुजन, माता-पिता, अध्यापक, उपदेशक, सन्यासी हमे अच्छी शिक्षा देकर सर्व प्रकार से हमारी रक्षा करे। हम युवकों को चरित्रवान् बनाय। राम ने लक्ष्मण की परीक्षार्थ पूछा—

पुष्पं दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा दृष्ट्वा च नवयौवनाम्।
एकान्ते काञ्चन दृष्ट्वा कस्य नो विचलेत् मन:॥

सुन्दर सुगन्धित पुष्पों को देखकर, स्वादिष्ट फलो को देखकर, नव यौवना को देखकर तथा एकांत मे पडे हुए काचन(सुवर्ण) को देखकर किसका मन विचलित नही होता। हम सबसे कोई यह प्रश्न करे तो यही उत्तर देगे कि सबका ही मन विचलित हो जाता है।

किन्तु यतिवर लक्ष्मण उत्तर देते हैं—

माता यस्य पतिव्रता पिता च यस्य धार्मिक।
एकान्ते काञ्चन दृष्ट्वा तस्य नो विचलेन्मन:॥

जिसकी माता पतिव्रता (उच्च चरित्रवाली) और पिता धार्मिक (सदाचारी) हैं उसका मन एकात मे पडे हुए सुवर्ण (सोने) को भी देखकर विचलित नही होता। इसीलिये सदाचारी माता-पिता और उच्च चरित्रवाले गुरु, आचार्य, सन्यासी, महात्मा, उपदेशक ही युवकों को पवित्र शिक्षा देकर चरित्र-निर्माण करते हैं। इसी प्रकार का उपदेश मर्यादा पुरुषोत्तम राम दण्डकारण्य मे अपने भ्राता भरत को देते है।

परस्त्री मातेव क्वचिदपि न लोभ. परधने।
न मर्यादाभंग: क्वचिदपि न नीचेष्वभिरुचि॥

परायी स्त्री को अपनी माता के समान मानना। पराये धन का लोभ न करना। धर्म की मर्यादाओ का कभी भग न करना और

(शेष पृष्ठ ४ पर)

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलसचिव का गुरुकुल झज्जर में शुभागमन

दिनांक १९-७-९२ को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री गजराजसिह (आई० ए० एस०) तथा श्री राममेहरसिंह एडवोकेट का गुरुकुल झज्जर मे शुभागमन हुआ। कुलसचिव महोदय की धर्मपत्नी उनके साथ थी।

कुलसचिव महोदय ने गुरुकुल के प्रत्येक विभाग का सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया। भोजनोपरात सभा हुई। उसमें सब अधिकारी एवं ब्रह्मचारियो द्वारा स्वागत किया गया। स्वामी ओमानन्द जी ने गुरुकुल की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कुलसचिव महोदय की बहुत ही प्रशंसा की और कहा कि भारतीय वेशभूषा कुर्त्ता और धोती मे कुलसचिव महोदय को देखकर मेरा हृदय गद्‌गद् होगया। प्रभु इनको सुन्दर स्वस्थ और दीर्घायु प्रदान करे। जीवानन्द कुलसचिव श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ ने सब आर्ष गुरुकुलों की ओर से आभार प्रकट करते हुए गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के लक्ष्य पर प्रकाश डाला और कुछ आवश्यक कार्य की पूर्ति हेतु माग-पत्र दिया। श्री विजयपाल आचार्य ने कुलसचिव महोदय का धन्यवाद मनाते हुए एक पुस्तको का सेट भेट किया। फार्मेसी के प्रबन्धक ने गुरुकुल की ओर से कुछ औषधिया भेट की।

कुलसचिव महोदय ने छात्रो को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जो इस समय किया जायेगा, वही जीवन मे काम आयेगा। अत खूब मन लगाकर ईमानदारी से पढना चाहिए। गुरुकुल की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए कहा कि मै इसके उज्ज्वल भविष्य को कामना करता हू और अपने अधिकार के अन्तर्गत सब प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन देता हूं।

—जीवानन्द

प्रवेश आरम्भ

जो वैदिकधर्मी आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर वैदिकधर्म का प्रचार करने के उत्सुक हो, उन्हे वेद, दर्शन, शास्त्र की विधिवत् शिक्षा सुयोग्य सन्यासी के मार्गदर्शन मे दिये जाने की व्यवस्था है। प्रार्थी की आयु २५ वर्ष से अधिक न हो तथा उसे स्थानीय आर्यसमाज/सस्था भेज रही हो। आवेदन-पत्र सादे कागज पर निम्नलिखित पते पर भेजने चाहिए।

व्यवस्थापक—महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालय
महर्षि दयानन्द आश्रम, (आर्यसमाज विद्यार्य सभा)
जसराणा जिला सोनीपत (हर०)

शतपथ ब्राह्मण लोकार्पण समारोह

स्थान—हिमाचल भवन, मण्डी हाउस, दिल्ली
१ अगस्त शनिवार अपराह्न ३ बजे

आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी समर्पण-शोध-सस्थान की ओर से शनिवार १ अगस्त, ९२ को श्री स्वामी समर्पणानन्द जी (पूर्व पं० बुद्धदेव जी विद्यालकार के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में उन्ही के द्वारा रचित शतपथ-ब्राह्मण (द्वितीय काड) का भाष्य सम्माननीय श्री चन्द्रशेखर भूतपूर्व प्रधानमन्त्री (भारत) के करकमलो द्वारा लोकार्पण किया जाएगा।

सभा की अध्यक्षता श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष समर्पण-शोध-सस्थान एव दयानन्दमठ, दीनानगर करेगे।

इच्छुक सज्जन समय पर पधारकर अपना स्थान ग्रहण करें।

—सभामन्त्री

आर्यसमाज हाट जिला जींद का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रिसालसिह, उपप्रधान-जिलेसिह, मन्त्री-इन्द्रसिंह उपमन्त्री—बलवानसिह, कोषाध्यक्ष-चैनसिंह, पुस्तकाध्यक्ष-मा. प्रेमसिंह प्रचारमन्त्री—श्रीकृष्ण।

वेद जयन्ती सप्ताह

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली वेद जयन्ती सप्ताह १३ अगस्त से २१ अगस्त, ९२ तक बडी धूमधाम से मना रहा है। आचार्य जैमिनि जी शास्त्री के वेद प्रवचन तथा संगीताचाय श्री विजयभूषण जी आर्य एव स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती के मधुर भजन होगे। समय प्रातः ७ से ८.३० बजे तथा रात्रि ७.३० से ९.०० बजे तक। यज्ञ तथा धर्मप्रेमियों से प्रार्थना है कि वे परिवार तथा इष्टमित्रों सहित समय पर पधार कर धर्म लाभ उठायें।

—वेदव्रत शर्मा मन्त्री

आर्यसमाज आदर्शनगर जयपुर का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रामलाल गुलाटी, उपप्रधान—बाबूलाल शर्मा, हरिबक्श जागिड, मन्त्री—सुनोल भादू, उपमन्त्री—नन्दकिशोर सोनी, चक्रकीर्ति सामवेदी, कोषाध्यक्ष—नाथूलाल शर्मा, पुस्तकालयाध्यक्षा—श्रीमती मृदुला सामवेदी, तेजप्रकाश कल्ला।

(पृष्ठ ३ का शेष)

भूलकर भी कभा नीचो को सगति न करना। श्रीराम के इन उपदेशों को मानकर राजकुमार भरत अमर होगया। ससार मे कोई भी व्यक्ति बुरा नीच नही बनना चाहता। किन्तु नीचो चरित्रहीनों के कुसंग से ही युवक बिगडकर दुराचारी हो जाते हैं।

महापुरुषों की सगति और चरित्र निर्माण करनेवाले ब्रह्मचर्य के धार्मिक साहित्य का स्वाध्याय ही युवकों को सदाचारी चरित्रवान् बनाता है। शुद्ध विचार, शुद्ध सात्विक आहार, व्यायाम, प्राणायाम आदि पवित्र जीवन निर्माण के मुख्य साधन हैं। युवकों में उत्साह जोश तो होता है। किन्तु कर्त्तव्य निर्णयार्थ बुद्धि और होश नही होता। "महाजनो येन गतः स पन्थाः" महापुरुष जिस मार्ग से चलते है वह सत्पथ वा सन्मार्ग होता है। इसका ज्ञान सत्सग पवित्र आर्षग्रन्थों के स्वाध्याय से होता है। इसीलिये मनु जी का आदेश है—

अभिवादनशीलस्य नित्य वृद्धोपसेविन ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥

जो बडों का अभिवादन नमस्ते सत्कार करता है और अपने से वृद्ध विद्वान् सदाचारियों का नित्य सत्सग करता है वह सच्चा युवक बनता है और सदाचारी से बडो आयु, विद्या, यश, कीर्त्ति और बल को प्राप्त करता है। जिसमें ये चारो गुण आजाते है, उस सदाचारी युवक का जीवन सुखी और सफल हो जाता है। उसके दोनों लोक बन जाते हैं। इसलिए सभी युवको को उपरोक्त साधन अपनाकर चरित्रवान् बनकर मानव जीवन को सफल बनाना चाहिए।

कविसम्राट् वीरेन्द्र वीर की युवको को चेतावनी—

जवानो जवानी में चलना सम्भल के।
आती नही है दोबारा निकल के॥

कठिन यह जवानी की मंजिल है यारो।
कभी लडखडा जाओ कुछ दूर चल के॥१
विषय रूपी रहजन अनेकों मिलेगे।
खबरदार कोई न ले जाए छल के॥२

सुधर जाये परलोक जिससे यतन कर।
जब आयेगी मृत्यु न जायेगी टल के॥३

'वीरेन्द्र' न दिल है लुटाने की वस्तु।
लुटाया यह जिसने रहा हाथ मल के॥४

धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए,
हानिकारक है।

विश्व को आर्य बनाने का रहस्य

छह प्रतिज्ञायें

१—मैं चार वर्णों के अतिरिक्त पांचवा कोई वर्ण नही मानता—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र (मुख, बाहु, उरु और पैर) इन सबको एक ही समान की बनावट के अंग समझता हूं। उनकी आश्रम विभाग पर अवलम्बित जानकर किसी से भी घृणा न करूंगा।

२—गुण, कर्म के अनुसार जिस वर्ण का अधिकारी हूं, प्रसन्नता पूर्वक उसी वर्ण के अधिकारों से सन्तुष्ट रहूंगा।

३—एक पत्नीव्रत निष्ठा से पालन करूंगा।

४—जो कर्त्तव्य और अधिकार वानप्रस्थ और सन्यासी के हैं, गृहस्थ आश्रम में ब्राह्मण बनकर भी उनके लिए हाथ पैर मारकर अनधिकार चेष्टा न करूंगा।

५—गृहस्थ आश्रम के लिए अर्थ संग्रह करने की आवश्यकता है। वह धर्मानुसार ही करूंगा। अधर्म की कमाई से एक पैसा भी गृहस्थ के अन्दर न आने दूंगा।

६—अपने वर्ण धर्म का पालन करने मे कितनी ही हानि हो, यहा तक कि प्राणान्त का भी भय हो तो भी इस धर्म से विचलित न हूंगा।

यदि आर्य पुरुष इस प्रकार की मानसिक प्रतिज्ञा करे और उस पर आचरण करने लग जायेगे तो फिर विश्व को आर्य बनाने की प्रतिज्ञा सर्वथा असम्भव न दिखाई देगी। —स्वामी श्रद्धानन्द

आर्यसमाज जसराणा द्वारा मन्दिर निर्माण आरम्भ

आर्यसमाज जसराणा जिला सोनीपत में कुंवर जौहरीसिह पूर्व आर्योपदेशक की वार्षिकी पर वेदप्रचार किया गया। आर्यसमाज ने अपने पुन:स्थापना दिवस (ऋषि निर्वाण दिवस १९८८) मे लेकर अब तक आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण कराकर आज और आगे कदम बढाया है। अब इस दयानन्द आश्रम मे चार कमरे, यज्ञशाला आर्य पुस्तकालय एवं आर्य व्यायामशाला का निर्माण भी हो रहा है। दो कमरे बन गये हैं। यहा वैदिक विद्वान् तैयार करके उन्हें योग व अन्य शास्त्रों की शिक्षा वैदिक विद्वान् संन्यासी द्वारा दी जाने की व्यवस्था शीघ्र की जारही है। इस कार्य के लिए दानी महानुभावो से दान की अपील की गई है। श्री कु० जौहरीसिह जी की वार्षिकी पर वेदप्रचार किया गया, जिसमे निम्नलिखित धन प्राप्त किया—

१	श्री श्यामलाल मलिक	एक कमरा
२	,, मा० मागेराम	१५००
३.	,, कुलदीपसिंह व बन्धु	११००
४	,, हरिसिंह प्रधान	११००
५	,, जिलेसिह एक्स बी. डी. ओ.	११००
६	,, मा० बलबीर मलिक	११००
७.	,, सूरजमल गार्ड	११००
८.	,, सूबेदार चन्द्रभान पंच	११००
९	,, राजेश आर्य सु० गोवर्धनसिंह जमालचा	११००
१०	,, हसा जी के पुत्र ग्राम जुलाना	११००
११	,, सूर्यदेव ग्राम सिसाना	२१००

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

पतांक से आगे—

		रुपये
१	सुश्री कविता, पारुल, ऋतु, सुनीता, तेजस्विनी खानपुरकलां जि० सोनीपत	५०
२	,, राजबाला, मीनू, त्रिशला, शिखा, राजकुमारी खानपुरकलां जि० सोनीपत	५०
३	,, ऋतु, सुमन, आशा, रीटा, नीलम खानपुराकला जि० सोनीपत	५०
४	,, अन्जु, लवीना, किरण, सुनीता, कमला खानपुरकलां जि० सोनीपत	५०
५	,, अनिल, राजबाला, राजेश, अनीता, अनिल खानपुरकलां जि० सोनीपत	५०
६	,, कमला, सुनीता, अनीता, सुदेश, रीटा खानपुरकलां जि० सोनीपत	५०
७	,, ऋतु, सुमन, आशा, अन्जु, लवीना खानपुरकलां जि० सोनीपत	५०
८	,, अनुपमा, सुप्रभा, चेतना, अलका, शिखा खानपुरकलां जि० सोनीपत	५०
९	,, राजबाला, सुनीता, कविता, सुदेश, उर्मिला खानपुरकला जि. सोनीपत	५०
१०	,, पूनम, त्रिशला, शिखा, राज कन्या गुरुकुल खानपुरकला जि० सोनीपत	५०
११	,, सीमा, मीनू, किरण, नीलम कन्या गु. खानपुरकलां जि० सोनीपत	४०
१२	,, चेतना, उर्मिला, सुप्रभा, अलका कन्या गु खानपुरकलां जि० सोनीपत	४०
१३	,, पिंकी, मीनाक्षी, विमला, सुमन कन्या गु खानपुरकलां जि० सोनीपत	४५
१४	कु० साहबकौर प्राचार्या कन्या गु. खानपुरकला जि. सोनीपत	५१
१५	,, ब्रह्मवती शास्त्री ,, ,, ,,	५१
१६	श्रीमती प्रकाशवती ग्राम मनेहरू जि० भिवानी	५१
१७	,, लक्ष्मी धर्मपत्नी लहरीसिंह नरेला, दिल्ली	५१
१८	श्री अजीतसिंह शास्त्री काकडोली हुकमी जि० भिवानी	५१
१९	,, वेदप्रकाश आर्य चावला कालोनी बल्लबगढ जि. फरीदाबाद	५१
२०	,, प्लाइवुड इम्पोरियम ,, ,, ,,	५१
२१	,, रामदित्तामल धमवीर ,, ,,	५१
२२	,, धमवीर बत्रा ,, ,,	५१
२३	,, पकज जुनेजा मु० ठाकुरदास इम्प्रेको प्रिंटिंग प्रेस बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	५१
२४	,, आर्य प्रोविजन स्टोर बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	५१
२५	,, आर्यसमाज सजय कालोनी से -२३ ,, ,,	५१
२६	,, गुप्ता मिष्टि टिफन होम ,, ,,	५१
२७	,, ओ३म् ट्रेवेल , ,,	५१
२८	,, डा प्रतापसिंह कवर ,, ,,	५१
२९	,, डा राजेन्द्रप्रकाश आर्य ,, ,,	५१
३०	,, देशराज हंस ,, ,,	५१
३१	,, अशोक सेठी ,, ,,	५१
३२	,, ब्रजकुमार मगला ,, ,,	५१
३३	,, जगदीशचन्द चिरंजीलाल ,, ,,	५१
३४	,, ओमप्रकाश ग्रोवर ,, ,,	५०
३५	,, लोटस टैक्सटाइल ,, ,,	५०
३६	,, मा० जगदीशचन्द्र विरमानी ,, ,,	५०
३७	,, सी० बी० जैन ,, ,,	२१
३८	श्री एस० पी० अरोड़ा ,, ,,	२१
३९	,, निहालसिंह ,, ,,	२१
४०	,, रणवीरसिंह सूद ,, ,,	२१
४१	,, राजपालसिंह कुम्भा हिसार	४०
४२	,, उदयसिंह बांकनेर दिल्ली-४०	३०
४३	,, रमेशकुमार आर्य ग्राम खाचरौली जि० रोहतक	५०
४४	,, जितेन्द्रकुमार पूनिया ग्राम सरूपगढ जि० भिवानी	५१
४५	,, होशियारसिंह साहू ग्राम मदनहेडी जि० हिसार	२१
४६	श्रीमती सुमित्रा देवी धर्मपत्नी चौ. रणवीरसिंह आर्य ग्राम अमीन जि० कुरुक्षेत्र	२५
४७	श्री खेमचन्द आर्य ग्राम गोकल जि० भिवानी	५१
४८	मन्त्री आर्यसमाज जलियावास पो० सुठाना जि० रेवाडी	५१
४९	श्री ब्रह्मप्रकाश गुप्ता मन्त्री आर्यसमाज जनता कालोनी जयपुर (राज०)	५१ ५१
५०	,, मनमोहनलाल एफ-३३ बी० सैक्टर-२७ नोएडा जि० गाजियाबाद (उ०प्र०)	५१
५१	,, तेजराम आर्य आर. जेड ए. ७९ धर्मपुरा कालोनी नजबगढ दिल्ली-४३	५१
५२	,, डा० विशम्बरनाथ रावल डेंटिस्ट भिवानी स्टेंड रोहतक	५१
५३	,, मा० कुलवन्तराय आर्य ग्राम नीमड़ी जि. भिवानी	५१
५४	,, वेदप्रकाश आर्य ६१/१६ फरीदाबाद	२१
५५	,, गुरुदत्त आर्य, आर्यसमाज सालवन जि० कुरुक्षेत्र	५०
५६	,, डा० धीरसिंह जौन्ती दिल्ली-८१	५१
५७	,, फकीरचन्द आर्य पाल हवेली गुलाब सागर जोधपुर	२१
५८	,, पर्वतसिंह आर्य म नं. २९ हनुमान कालोनी रोहतक	२०
५९	श्रीमती तारा देवी धर्मपत्नी नत्थूलाल आर्य म.नं. २५१ रामगंज जयपुर	५१
६०	श्री डा० बेनीप्रसाद आर्य प्रधान आर्यसमाज नारायणगढ़	२१
६१	,, डा० रामेहर मलिक संजीव हस्पताल बहादुरगढ	५१
६२	,, रामकृष्ण उचाना मण्डी	५१
६३	,, रामस्वरूप राणा पूठखुर्द दिल्ली	५१
६४	,, सूबेसिंह ,, ,,	५१
६५	,, चौ० भल्लाराम पूर्व एम.एल.ए. काठमण्डी जीद	५१
६६	,, चौ० होशियारसिंह राजमवाला ,,	५१
६७	,, डा० ब्रह्मराज मेन बाजार ,,	५१
६८	,, चौ० बनवारीलाल ,, ,,	५१
६९	,, धर्मवीर प्रधान ,, ,,	५१
७०	,, सुभाष सु० वैद्य रामचन्द्र शर्मा रेलवे रोड ,,	५१
७१	,, डा. विनोदराम बी.बी एस पटियाला चौक ,,	५१
७२	,, सरदार दर्शनसिंह पुस्तक विक्रेता मैन बाजार जीद	३१
७३	,, वैद्य खुशीराम आर्य गुप्ता कालोनी ,,	५१
७४	,, रामस्वरूप आर्य वर्मानी शिवाजी कालोनी ,,	५१
७५	,, ओमप्रकाश राणा प्रधानाचार्य रा० आ० मा० व० वि० बवाना दिल्ली	२१
७६	,, ओमप्रकाश दहिया रा० आ० मा० व० वि० बवाना दिल्ली	५१
७७	,, यशपाल वर्मा २४१ बवाना दिल्ली-३९	५१
७८	,, करतारसिंह पी० जी० टी० हिन्दी रा० आ० वरि० मा० वि० बवाना दिल्ली	२१
७९	,, सुरेन्द्रसिंह नागल ठाकरान	५१
८०	,, रामफल बवाना दिल्ली-३९	२१
८१	,, राजसिंह रा० मा० स्कूल बवाना दिल्ली	२१

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

नारी की गौरव गाथा

हे जगजननी नारी तूने, क्या गौरव गरिमा पाई है।
तेरे तो रूप अनेको हैं, इन सब में तू ही समाई है॥

पुत्री-पत्नी माता व बहन तू हर रिश्ते में आई है।
भारत माता, धरती माता, तू जगजननी कहलाई है।
तू लक्ष्मी, तू सरस्वती, भगवती व दुर्गामाई है॥
हे जगजननी ··· १

नौ मास गर्भ मे रख तूने जब इस मानव को जन्म दिया।
सर्वप्रथम माता उसने तेरा अमृत-सा दूध पिया।
उसका पालन-पोषण करने में विपदा क्या न उठाई है॥
हे जगजननी ·· २

युवा हुआ यह मानव तब पत्नी बन साथ निभाया है।
परिवार और पति सेवा मे सब ही सुख बिसराया है।
तेरे त्याग बलिदान की महिमा सारे जग में छाई है॥
हे जगजननी ··· ३

सीता के रूप मे राम के संग वन में अति कष्ट उठाये थे।
द्रोपदी बनकर भरी सभा में अपने वस्त्र खिचाये थे।
तू ही शिवा को वीर बनानेवाली जीजाबाई है॥
हे जगजननी ·· ४

पद्मनी बनकर स्त्रीत्व रक्षाहित अग्नि में कूद पड़ी।
झासी की रानी बन अंग्रेजी सेनाओं से खूब लड़ी।
अंग्रेजी राज्य हटाने को प्राणों की भेट चढ़ाई है॥
हे जगजननी····· ५

राणा प्रताप की पत्नी बन घनघोर जंगलों में डोली।
भूखा तडपता पुत्र देख मनमें रोई कुछ न बोली।
पुत्र निछावर करनेवाली तू ही पन्नाधाई है॥
हे जगजननी····६

तेरे त्याग बलिदान अनेको की गिनती नही हो सकती।
धिक्कार योग्य वे सन्ताने जिनसे दुःख पा माता रोती।
अपने स्वार्थहित पुरुषों ने नारी बहुत सताई है।
हे जगजननी·· · ७

नारी की ऐसी दुखद दशा प्राचीनकाल से है जारी।
ऐसी-वैसी की क्या चर्चा दुःख पाई सीता-सी नारी।
अग्नि परीक्षा होने पर भी उसको वन भिजवाई है॥
हे जगजननी ··· ८

सत्यवादी हरिश्चन्द्र ने बेची अपनी ही नारी।
धर्मराज युधिष्ठिर ने जूये में पत्नी को हारी।
इस भांति नारी की सत्ता को अपमानित कर ठुकराई है॥
हे जगजननी····· ९

पर दयानन्द ने नारी को पूजा के योग्य बताया है।
वेदपाठ व यज्ञादि सब अधिकार दिलाया है।
पर पौराणिक लोगों ने गरिमा नारी की घटाई है॥
हे जगजननी···१०

ढोल गंवार शूद्र नारी को पशु समान बताया है।
तुलसी-कृत रामायण ने यह मिथ्या पाठ पढ़ाया है।
इन ही विचारों ने नारी की यह दुर्दशा कराई है॥
हे जगजननी ·· ·११

ऐसे अनेक हैं, कन्या के होने पर शोक मनाते हैं।
कन्या के पैदा होते ही जो उसका गला दबाते हैं।
बिन दहेज ऐसों ने ही कन्या की होली जलाई है॥
हे जगजननी···१२

विधुर होकर पुरुषवर्ग तो दूजा ब्याह रचाते हैं।
विधवा नारी को सती बनाकर जीवित चित्ता जलाते हैं।
पर मरते दम तक बूढ़ों ने बालक कन्या को ब्याही है॥
हे जगजननी ··· १३

हे हत्यारों इस जननी को यदि इस ही भांति जलावोगे।
तो पाप की इस अग्नि में जलकर तुम भी नष्ट हो जावोगे।
घोर अधम अन्याय तुम्हारा सब भांति दुखदाई है॥
हे जगजननी····१४

जगजननी इस नारी के जीवन की अजब कहानी है।
आंचल में दूध भरा इसके और आखो मे पानी है।
इसके त्याग बलिदान की महिमा सारे जग ने गाई है॥
हे जगजननी ···· १५

है मानवता यदि कुछ भी तो न नारी का अपमान करो।
इस ममतामयी मा की रक्षाहित जीवन बलिदान करो।
सम्मान करो इस नारी का जो सब विधि ही सुखदाई है॥
हे जगजननी ·····१६

हे आर्यजनों बिन नारी के न वेदप्रचार बढ पावेगा।
नारी के वैदिक बने बिना यह तो असफल हो जावेगा।
संसार में इक पहियेवाली गाड़ी न कभी बढ पाई है॥
हे जगजननी ·· १७

हे जगजननी नारी तुम भी अपनी शक्ति को पहचानो।
यह दीन-हीनता बिसरावो, अब आगे बढने की ठानो।
तुम्हे उठाने हेतु 'भास्कर' ने भी बिगुल बजाई है॥
हे जगजननी··· १८

—भगवतीप्रसाद सिद्धात भास्कर
प्रधान नगर आर्यसमाज
१४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के लिए सूचना

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सन् १९३८-३९ के स्वतन्त्रता सेनानियों की पेंशन विषयक जो याचिका उच्चतम न्यायालय में विचाराधीन है। उसके तीसरे व चौथे केस की (श्री बेगराज राठी सहित) सुनवाई १७ अगस्त, ९२ को निश्चित हुई है।

—महासिंह वर्मा

आर्यसमाज बल्लबगढ़ का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री राधेश्याम गुप्ता, उपप्रधान—महेन्द्र बोहरा, मुरारीलाल गोयल, मन्त्री—सुभाष ग्रोवर, उपमन्त्री—राजकुमार, हरिश्चन्द, प्रचारमन्त्री—विशम्भरदयाल, पुस्तकालयाध्यक्ष-राजकिशोर, कोषाध्यक्ष—सुरेन्द्रकुमार, लेखानिरीक्षक—पवनकुमार।

आर्यसमाज अयोध्या में राम मन्दिर के निर्माण का पूर्ण समर्थक : आनन्दबोध

नई दिल्ली, २२ जुलाई (दि०श०)। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दूरदर्शन द्वारा प्रसारित स्वामी अग्निवेश के उस बयान पर कड़ी आपत्ति की है जो उन्होंने भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष के रूप मे दिया था तथा जिसमें उन्होंने कहा था कि सरकार अयोध्या में राम जन्मभूमि स्थल के पूरे परिसर को अपने कब्जे मे लेकर अस्पताल बनाले जिससे हिंदू-मुसलमान सभी को लाभ पहुंचेगा। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आर्यसमाज अयोध्या में राम मन्दिर में निर्माण का पूर्णरूप से समर्थन करता है, क्योकि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र आर्यजाति की आस्था और प्राचीन संस्कृति के प्रतीक हैं। हमारे प्राचीन इतिहास भी अयोध्या में ही उनका जन्म लेना सिद्ध करते है। इसलिए राम जन्मभूमि परिसर में मन्दिर का ही निर्माण होना चाहिए। उसके बदले में वहा किसी प्रकार का अस्पताल आदि का निर्माण करना देशवासियों की धार्मिक भावनाओं को आहत करना होगा।

स्वामी आनन्दबोध ने बताया कि स्वामी अग्निवेश को आर्यसमाज के नाम पर इस प्रकार के भ्रांतिपूर्ण वक्तव्य देने का कोई अधिकार नहीं है। समूचे आर्यसमाज के सगठन में भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा नाम का कोई संगठन नही है और न ही उसके गठन की सार्वदेशिक सभा ने कभी कोई अनुमति ही दी है। स्वामी अग्निवेश साम्यवादी विचारधारा के अस्थिर राजनीतिज्ञ हैं, जिसके कारण उन्हे १९७६ में आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से अनिश्चित काल तक के लिए निष्कासित किया हुआ है। अत देश की जनता स्वामी अग्निवेश के किसी भी वक्तव्य को आर्यसमाज की राय न माने।

स्वामी जी ने यह भी कहा यदि मन्दिर निर्माण में कोई रुकावट डाली तो आर्यसमाज पूरी ताकत से उसका प्रतिरोध करने के आदोलन मे शामिल होगा।

साभार . दैनिक पंजाब केसरी

गांवों में फिर से धूम मची वेदप्रचार की

आर्यसमाज गांव गोच्छी जिला फरीदाबाद में २१ से २८ जून रविवार तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एव वेदकथा तथा सम्मेलन विधिवत् रूप से सम्पन्न हुआ। जिसमे ब्रह्मा आचार्य हरिदेव जी वेद-कथा, आचार्य विद्यादेव जी और तीन भजनोपदेशक महाशय खेमसिंह, श्री चन्द्रदेव शास्त्री तथा श्री प्रियव्रत शास्त्री गुरुकुल गौतमनगर थे। इसी प्रकार एक सप्ताह लोगों ने श्रद्धा और प्रेम के साथ यज्ञ में अपनी अपनी आहुति दी तथा वेदप्रचार से लाभ उठाया। एक सप्ताह वातावरण आध्यात्मिक बना रहा। २८ जून को पूर्णाहुति एवं विशाल सम्मेलन हुआ, जिसमें फरीदाबाद की लगभग सभी समाजों ने भाग लिया। फरीदाबाद के अतिरिक्त दिल्ली के भी चार-पांच समाजों के सदस्यों ने भी भाग लिया। अन्त में विशाल ऋषिलंगर हुआ। सम्मेलन में आर्यसमाज के प्रधान श्री लोकूराम जी आर्य ने घोषणा की कि इस प्रकार के कार्यक्रमों का निरन्तर आयोजन किया जाएगा।

—आचार्य श्यामलाल आर्य
आर्यसमाज गोच्छी

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज कृष्णनगर भिवानी के लिए एक योग्य, अनुभवी एवं सभी प्रकार के वैदिक सस्कार कराने में निपुण पुरोहित की आवश्यकता है। आवेदन मन्त्री आर्यसमाज कृष्णनगर भिवानी को भेजे।

—मन्त्री आर्यसमाज कृष्णनगर, भिवानी

जाखल में वेदसप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज जाखल जिला हिसार में १३ से १८ जुलाई तक वेद-प्रचार सप्ताह मनाया गया। सभा के भजनोपदेशक पं चिरंजीलाल की मण्डली ने प्रातः यज्ञ तथा रात्रि में भजनों द्वारा वेदप्रचार किया तथा शराब व दहेज आदि की सामाजिक बुराइयो का खण्डन किया। इस शुभ कार्य में श्री प्रकाशचन्द गुप्त, श्री देवेन्द्र चावला, डा० सुभाषचन्द आदि ने सहयोग दिया। प्रचार के प्रभावस्वरूप आर्यसमाज मन्दिर में साप्ताहिक सत्संग आरम्भ होगया है।

—ओमप्रकाश आर्य मन्त्री

शांति-यज्ञ एवं शोकसभा का आयोजन

१—श्री जगवीरसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज बाघपुर जि. रोहतक के स्वर्गीय पिता श्री सुलतानसिंह सेवानिवृत्त थानेदार के निधन होने पर १४ जुलाई को उनके पैतृक ग्राम बावेपुर जिला रोहतक में शांति-यज्ञ एवं शोकसभा का आयोजन किया गया। गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने यज्ञ करवाया। इस अवसर पर पूर्व उपायुक्त श्री विजयकुमार जी ने श्री सुलतानसिंह के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उपस्थित नरनारियों को सभा द्वारा चलाये जारहे नशाबन्दी अभियान में शराब आदि छुड़वाने तथा पंचायतो से शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाने में सहयोग करने की अपील की। श्री सुलतानसिंह जी के परिवार की ओर से गुरुकुल झज्जर को ५१) तथा गोशाला को ५१) दान दिया गया।

—भूपेन्द्रसिंह आर्य, बावेपुर

२—आर्यनेता स्वर्गीय चौ० माड़सिंह जी मलिक के छोटे पुत्र श्री ओंकारसिंह मलिक के निधन पर दिनांक २२ जुलाई को वैदिकभक्ति आश्रम आर्यनगर रोहतक में पं० सत्यपाल शास्त्री आचार्य गुरुकुल भैंसवाल, पं० सुखदेव शास्त्री, वेदप्रकाश वानप्रस्थी आदि पुरोहितों ने शांतियज्ञ करवाया। पं० देवव्रत शास्त्री ने दिवंगत आत्मा को शांति तथा दुःखी परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर गुरुकुल भैंसवाल, कन्या गुरुकुल खानपुर के अधिकारी, रोहतक तथा खरावड़ आदि के ग्रामों के गणमान्य व्यक्ति, विभिन्न राजनैतिक दलों के नेता, सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता श्री धर्मचन्द तथा गुरुकुल कागडी की आर्यविद्या सभा के मन्त्री प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार आदि उपस्थित थे।

—केदारसिंह आर्य

सम्पादक के नाम पत्र

संग्रहणीय स्मारिका

प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका पढ़ने को मिली। निःसन्देह स्मारिका काफी सुन्दर एवं आकर्षक है। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक हैं। इसके साथ-साथ पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन तथा उनके कार्यों के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। अतः शताब्दी स्मारिका सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय है। स्मारिका की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
जलधर जोशी चौहान सोनीपत

प्रवेश सूचना

आर्य हिंदी महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी) में हिंदी की प्रभाकर एव संस्कृत की विशारद व शास्त्री कक्षाओं का प्रवेश १ जुलाई, ९२ से प्रारम्भ है।

—ऋषिपाल आचार्य
आर्य हिंदी महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२० '७३ रजि० नं० P.RTK-४६

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक ३५ ७ अगस्त, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड

वेदप्रचार विशेषांक

श्रावणी-पर्व पर विशेष—

वेदप्रचार आवश्यक क्यों है ?

ले०—यशपाल आर्यबन्धु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

परम पवित्र ईश्वरीय ज्ञान वेद आर्यसमाज का मूलाधार है। आर्यसमाज की यह विशेषता है कि उसने अपना मूलाधार ऐसा रखा है कि जो शाश्वत है। अतः शाश्वत आधार पर टिका आर्यसमाज शाश्वत जीवन की आशा भी कर सकता है। वस्तुतः आर्यसमाज की स्थापना ही वेद के प्रचार-प्रसार के लिए की गई थी। इस तथ्य की पुष्टि में हम उस घोषणा-पत्र को प्रस्तुत कर सकते हैं कि जो सन् १८७५ ई० में बम्बई मे प्रथम आर्यसमाज की स्थापना के अवसर पर पंजीकरण हेतु रजिस्ट्रार को दिया गया था। उसमें आर्यसमाज का उद्देश्य संसार में वेद का प्रचार करना बताया गया था। वैसे भी आर्यसमाज वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानता है और वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों के लिए परमधर्म घोषित करता है। उसके संस्थापक ने सुस्पष्ट घोषणा की थी कि—मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतांतर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है, किंतु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। वेद को वे सत्य विद्याओं का पुस्तक उद्घोषित कर ही चुके हैं। अतः वेद को ही मानना-मनवाना उनको अभीष्ट था। वैसे भी सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में वे लिखते हैं कि—"जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना कि हमारा वेद मत है। अर्थात् जो वेदों में कहा है हम उनको मानते हैं।" इतना ही नहीं मुरादाबाद में भक्तों द्वारा स्पष्ट पूछे जाने पर कि हम अपना मत क्या समझे। महर्षि का उत्तर था कि—"तुम सबका वेद मत है। यदि ऐसा कहोगे कि हम दयानन्द स्वामी के मत के हैं तो कोई तुम से प्रश्न करेगा कि दयानन्द स्वामी और उनके गुरु का क्या मत है तो तुम उत्तर नहीं दे सकोगे।" स्पष्ट यह है कि महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना वेद को आधार मानकर की है। अतः आर्यसमाज का यह दायित्व है कि वह संसार में वेद का प्रचार करे।

वेद का प्रचार इसलिए भी आवश्यक है कि यह केवल आर्यसमाज का ही काम है। यदि इसे प्रमुख कार्य कहें तो भी कोई अतिशयोक्ति नही होगी। सुधार के अन्य कार्य तो अन्य संस्थाये भी कर सकती हैं एव कुछ कर भी रही हैं, किंतु वेद का प्रचार आर्यसमाज के सिवाय और कौन कर रहा है ? यदि आर्यसमाज भी इस कार्य में ढील देने लगे तो फिर भला वेद का प्रचार किसने करना है ? फिर रजिस्ट्रार को दी हुई घोषणा का क्या बनेगा ? ऋषि की आशाओं और आकांक्षाओ का क्या बनेगा ? ऋषि ने तो कहा था कि—"मेरे शिष्य सभी आर्यसामाजिक हैं। उनके विश्वास और भरोसे पर मेरे मनोरथों की सिद्धि और कार्यों की पूर्ति अवलम्बित है।" अब आर्यसमाज एवं आर्यों को स्वयं विचारना चाहिये कि हम ऋषि की आकांक्षाओं पर खरे उतर भी रहे हैं कि नही ?

आर्यसमाज का स्थान मानवसमाज में वही है जो एक पुरोहित का अथवा ब्राह्मण का हुआ करता है और जो ब्राह्मण वेद को छोडकर अन्यत्र श्रम करता फिरता है, मनुस्मृति के अनुसार वे शूद्र भाव को प्राप्त हो जाता है। इसलिए भी आर्यसमाज का यह दायित्व है कि वह वेद में ही श्रम करे और उसी का ही प्रचार-प्रसार करे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वयं को वैदिकधर्म का ही प्रचारक एवं उपदेशक समझते थे। वेद के प्रचार के प्रति उनकी तड़प तो देखे कि वे प्रतिज्ञा करते हैं कि—"वैदिकधर्म के प्रचार का कार्य बहुत बड़ा है। हम जानते हैं कि इस सारे जीवन में पूरा न हो सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म-धारण करना पड़े, मैं इस महत् कार्य को अवश्य पूर्ण करूंगा।" इतना ही नही महर्षि की तो यह उत्कट अभिलाषा थी कि वैदिकधर्म के प्रचार के लिए बहुत से उपदेशक होने चाहिये, क्योंकि इतना बडा कार्य एक अकेला व्यक्ति नही कर सकता। फिर भी उनका यह दृढ निश्चय था कि—"अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार जो दीक्षा ली है, उसे चलाऊंगा।" हमें वेद का प्रचार इसलिए भी करना चाहिये कि यह हमारे ऋषि का कार्य है।

वेद समस्त ज्ञान-विज्ञान का आदि स्रोत ही नही धर्म का भी मूल है। वेद मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सम्पूर्ण योजना एवं विधि अपने गर्भ में समेटे है। अतः यदि हम चाहते हैं कि मानवमात्र ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करे, धर्म को जाने एवं अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि करे तो हमें विश्व मे वेद का प्रचार करना ही होगा। वेद के प्रचार से जहा हम ऋषि ऋण से अनृण होते हैं वहा मतों पन्थों के रगड़े झगड़े भी समाप्त होते है। वैसे ही जैसे सूर्य के उदय हो जाने से नाना दीपकों का टटा भी समाप्त हो जाता है, वैसे ही वेद सूर्य के उदय हो जाने से मतमतांतर रूपी दीपको के टटे भी समाप्त हो जाते है।

वेद मानव को मानवता का पाठ पढाता है अर्थात् सही अर्थों में मानव बनाता है। जबकि अन्य तथाकथित धार्मिक ग्रन्थ अपने-अपने मत का प्रचार करने से कोई हिंदू बनने की बात करता है तो कोई मुसलमान। कोई सिख बनने की बात करता है तो कोई ईसाई। कोई बौद्ध, कोई जैन, पर मानव बनने की बात कोई नहीं करता। यह वेद की

(शेष पृष्ठ २ पर)

वेदामृत

महिमण्डल में आज जग रही, ज्योति नवल जो ज्योतिष्मान।
ज्ञान प्रभा हो रही प्रभासित, बढता प्रतिदिन नव विज्ञान।

सबसे पहले इसी देश में, फूटी थी वह कांति महान्।
ज्ञान रश्मियां जिससे लेकर, हुआ प्रकाशित पूर्ण जहान।

प्रभु ने हमें दिया वेदामृत, निर्मित कर यह सृष्टि महान्।
जिसे पान कर रहे निखरते, मानवजीवन के प्रतिमान।

चतुर्वेद प्रहरी हैं जाग्रत, सत्य-धर्म की संस्कृति के।
रहस्य प्रकट करनेवाले हैं, ईश्वर-जीव-समस्त प्रकृति के।

विपुल राशि हैं दिव्य ज्ञान की, भानु सदृश हैं प्रभा-पुञ्ज।
हरे भरे रमणीक मनोहर, वे मानवता के निकुञ्ज।

गरिमामय है उनकी आभा, शांति-सफलता की दात्री।
गौरवमय है दिव्य पावनी, समरसता की गायत्री।

जहां मिली विज्ञान किरण है, इस जगती तल के नर को।
वही वही हैं वेद हमारे, देते ज्ञान जगतभर को।

जिसने है निर्दिष्ट किया पथ, जिस पर बढ़ता है मनुजत्व।
जिस पर चलकर पुरुषों का है बढता सदा रहा पुरुषत्व।

जिसकी मधुर ऋचाओ से है, प्रमुदित होता अमृत-पथ।
रहते जिसके यशोगान में, महामनुज हैं अविरल रत।

वही हमारे वेद सुपावन, दिव्यालोक महान् हैं।
मानवता की गरिमा के वे, गौरव है, अभिमान हैं।

वेदालोक भुवनभर में यदि, हमने ना बिखराया होता।
सतत अन्धेरा रहता भू पर, जगती तल भरमाया होता।

देखो आज खोलकर आंखें, भरत-भूमि क्यों तिमिराश्रित,
कहा गया वह विश्व गुरु पद, कहां गई वह प्रभा प्रभासित।

हाहाकार मचा क्यों जग मे, आती है क्यों करुण पुकार ?
दानवता के पदचिह्नों का, होता जग मे अधिक दुलार।

भुला दिया वेदो को हमने, इसका यही प्रमुख कारण।
इसीलिए हो रहा मनुज का, अपने हाथों आज प्रताडण।

हरना यदि हमको धरती से, छायी है जो घोर अशांति।
फैलाना है पुन: धरा पर, निर्मल-सी वह ज्योति:कान्ति।

तो फिर उठो! बढो निर्भय हो, वेदो का पथ अपनाओ।
भूले इस महिमण्डल को, वेदों के पथ पर ले आओ।

तभी हमें अमरत्व मिलेगा, शांति जनित पथ विमलीभूत।
सदा सफलता पद चूमेगी, मानवता से हो अभिभूत॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

अर्धशताब्दी आर्य महासम्मेलन

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जिला रेवाडी दिनांक ११-१२-१३ सितम्बर, ९२ को अपने ५०वें उत्सव की अर्धशताब्दी आर्य महासम्मेलन के रूप मे मना रहा है। इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् (वक्ता), उपदेशक एवं साधु संन्यासियों को आमन्त्रित किया गया है।

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों एवं संस्थाओं से निवेदन है कि वे इस शुभ अवसर पर सादर आमन्त्रित हैं।

—मा० दयाराम आर्य
मन्त्री आर्यसमाज बीकानेर
गंगायचा अहीर, रेवाड़ी (हर०)

रक्षा-बन्धन त्यौहार

श्रावणी का श्रेष्ठतम त्यौहार है।
त्यौहार है भाई बहिन का प्यार है॥

हरियाली से भू पर बिछौना बिछ रहा।
चल रही शीतल मलय बयार है॥१

रक्षा-बन्धन से कलई सज रही।
प्रसन्नमन आता सभी परिवार है॥२

हिंडौले बागों में झूला पड़ रहे।
गारही मिल करके गीत मल्हार है॥३

गगन में कारी घटायें छा रही।
पवन पुरवैया बड़ी मजेदार है॥४

मन्दिरों में यज्ञ प्रवचन हो रहे।
उपनयन हुआ वेद के अनुसार है॥५

श्रावणी श्रेष्ठतम त्यौहार है।
त्यौहार है भाई बहिन का प्यार है॥६

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

प्रांतीय आर्यवीर महासम्मेलन

आर्यवीर दल हरयाणा प्रांत की प्रांतीय बैठक २५ जुलाई को नरवाना में प्रधान सेनापति आचार्य डा० देवव्रत जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें यह निर्णय लिया गया कि आर्यवीर दल हरयाणा प्रात का १५वा प्रातीय आर्यवीर महासम्मेलन १९-२० सितम्बर, ९२ को आर्यसमाज नरवाना जिला जींद में होगा। इस समारोह में आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, संन्यासी, भजनोपदेशक, राजनैतिक नेतागण तथा आर्यनेतागण को भी आमन्त्रित किया जायेगा। अत: आपसे निवेदन है कि आप इस सम्मेलन में पहुंचकर आर्यवीरों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें तथा तन, मन, धन से सहयोग देवें।

—वेदप्रकाश आर्य प्रांतीय मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

ही विशेषता है कि वह 'मनुर्भव' का उद्घोष कर मानव बनने की बात कहता है। दु:ख है आज संसार में सभी कुछ बनने-बनाने की बात हो रही है, पर यदि कुछ नही हो रहा तो केवल मानव बनने-बनाने की बात नही हो रही। तभी किसी कवि ने ठीक ही कहा था कि—

सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने में।
मगर यह क्या गजब है, आदमी इन्सान नही होता॥

आज विश्व को श्रेष्ठ मानवों की आवश्यकता है और श्रेष्ठ मानव का निर्माण वेद के प्रचार से ही सम्भव है। जब तक ससार के समस्त मानव वेदपथ के पथिक नही बनते, वे श्रेष्ठ मानव नहीं बन सकते। इसलिए संसारभर के मानवों को वेद के झण्डे तले लाना परम आवश्यक है। वैसे भी वेद की शिक्षाये, किसी जाति या वर्ग विशेष के लिए नही, अपितु यह सर्वजनीन, सार्वभौम एवं सर्वकालिक हैं। अर्थात् वेद का ज्ञान देश, काल, जाति आदि की सीमाओं से परे है। फिर वेद का प्रचार आवश्यक क्यों नही ?

वेद के प्रचार में संसार का उपकार छिपा है और आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य ही संसार का उपकार करना है। गहन अज्ञान—अन्धकार में भटक रहे मानवों को वैदिकपथ पर लाने से बढ़कर संसार का कोई और उपकार हो सकता है, इसकी कल्पना भी नही की जा सकती। वेदप्रचार सप्ताह के अवसर पर एक बार फिर हमें यह सोचना होगा कि हम वेद के प्रचार के लिए क्या कुछ कर रहे हैं। यदि हम चाहते हैं कि ससार में वेदों का प्रचार हो जाये तो फिर हमें इसके लिए प्रयत्नशील होना पड़ेगा, क्योंकि उद्यम से ही कार्यों की सिद्धि होती है, केवल चाहने से नही। प्रभु करे हम आर्यों के अन्दर वेद के प्रचार की सच्ची तड़प हो और हम ऋषि ऋण चुकाने में सफल हो सकें। वेद का प्रचार परम पुनीत कार्य है। अत: अवश्यमेव करणीय है।

। इत्योम् शम्।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

क्र०	नाम	रुपये
१	श्री सत्यवीरसिंह दहिया राजकीय माध्यमिक स्कूल बवाना	५१
२	,, ताराचन्द कटेवड़ा ,, ,, ,, ,,	२१
३	,, जगवीरसिंह दहिया खांडा सोनीपत	२१
४	,, ऋषिपाल बवाना दिल्ली	२१
५	,, रमेशचन्द ,, ,,	५१
६	,, ज्ञानेन्द्रसिंह राणा भगेशपुर दिल्ली	२१
७	,, महावीरसिंह नेहरा विजयनगर बवाना दिल्ली	२१
८	,, राजवीरसिंह वर्मा बरवाला ,, ,,	२१
९	,, जयसिंह पूंठखुर्द स्कूल ,, ,,	२१
१०	,, डा० रिसालसिंह माजरा डबास ,, ,,	५१
११	,, किशोरलाल भाटिया पूठखुर्द स्कूल बवाना दिल्ली	५१
१२	,, दयाकिशन बरवाला ,, ,,	२१
१३	,, विजयकुमार चुग सिरसा	५०
१४	,, शेरसिंह ग्रोवर ,,	५१
१५	,, रणधीरकुमार ,,	५०
१६	,, रामकुमार ,,	५०
१७	,, देवराज शर्मा ,,	४३
१८	,, विजयकुमार ,,	५१
१९	,, संदीप आयरन स्टोर ,,	५१
२०	,, बाबूराम बजरंगदास ,,	५१
२१	,, गुप्त दान ,,	५१
२२	,, ओमप्रकाश शर्मा ,,	५०
२३	,, चौ. मनफूल एवं सरदार इम्पो. ,,	३२
२४	,, मदनलाल बंसल ,,	५१
२५	,, विक्रमजीतसिंह एडवोकेट ,,	५०
२६	,, मनोहरलाल दीवान कोषाध्यक्ष आर्यसमाज माडल टाउन यमुनानगर	५१
२७	,, चन्दगीराम ढाणीमाहूवाने दिनोद रोड भिवानी	२१
२८	,, डा० सूरजमल गाव चिलोड़कलां जि० रोहतक	५१
२९	,, धर्मवीर मलिक ६७, हाउसिंग कालोनी सोनीपत	५१
३०	,, हैडमास्टर जिलेसिंह मलिक गाव भैंसवालकला सोनीपत	५१
३१	,, ,, कृष्णचन्द मलिक ,, ,,	५१
३२	,, मा० किदारसिंह ,, ,, ,,	५१
३३	,, मा० हवासिंह ,, ,, ,,	२५
३४	,, राजेन्द्र मलिक सु० शिवदत्त शास्त्री ,, ,,	५१
३५	,, मा० हुकमचन्द मित्तल ,, ,,	५१
३६	,, मा० चांदराम सु० हरनाथ मलिक ,, ,,	५१
३७	,, चांदराम सरपंच ,, ,,	२१
३८	,, चौ० सुखवीरसिंह मन्त्री आर्यसमाज फरमाना ,,	५१
३९	,, मा० मुखत्यारसिंह गहलावत ,, ,,	५१
४०	,, वीरेन्द्रसिंह सु. चौ. अजीतसिंह गहलावत ,, ,,	५१
४१	,, जीवनसिंह नम्बरदार ,, ,,	२१
४२	,, तिलकराज दाना स्टोर गोहाना रोड रोहतक	११
४३	,, मेजर प्रतापसिंह अहलावत म.नं. ७२८ माडल टाउन दिल्ली रोड रोहतक	५१
४४	,, प्रो० जिलेसिंह म०न० १४६ आर० माडल टाउन दिल्ली रोड रोहतक	५१
४५	,, रामप्रकाश सु० जिलेसिंह म०न० २०७ एल माडल टाउन दिल्ली रोड रोहतक	५१
४६	,, डा० देवीसिंह खरखोदा रोड सांपला जि० रोहतक	५१
४७	,, विजय मुकेश प्रिंटिंग प्रेस गोहाना रोड ,,	२१
४८	श्री सरूपसिंह डी०एल०एफ० कालोनी रोहतक	२५
४९	,, रामधन चक्कीवाला गोहाना रोड दयानन्दमठ रोहतक	२१
५०	श्रीमती माता प्रो० लज्जा भण्डारी २५/५० सुभाषनगर ,,	२१
५१	श्री दुर्गा स्टोन गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र फरीदाबाद	५१
५२	,, राजबल ग्राम मन्डौली नई दिल्ली-९२	५१
५३	,, पं० श्यामदत्त ,, ,,	५१
५४	,, बनवारीलाल त्यागी ,, ,,	५१
५५	,, सजयकुमार ग्राम अफजलगढ गाजियाबाद (उ०प्र०)	५१
५६	,, गजराजसिंह गगनविहार ,,	२१
५७	,, अशोककुमार ,, ,,	५१
५८	,, दीपचन्द वकील ग्राम खेड़ीकला जि० फरीदाबाद	११
५९	,, जगदीश (इमादपुर) चित्रकूट (उ०प्र०)	२१
६०	,, सुरेश व करतार ,, ,,	२१
६१	,, मदनपाल ,, ,,	११
६२	,, करतारसिंह भड़ाना ग्राम अनगपुर जि० फरीदाबाद	५१
६३	,, धर्मपाल आर्य २९ आर्य भवन बदरपुर नई दिल्ली-४४	५१
६४	,, भागमल आर्य मोलडबन्द ,,	५०
६५	श्रीमती शकुन्तला देवी आर्या बदरपुर ,,	५१
६६	श्री महीपालसिंह ,, ,,	५१
६७	,, मांगेराम आर्य, आर्यनगर सराय ख्वाजा जि० फरीदाबाद	५१
६८	आर्यसमाज अरबन स्टेट गुडगावा	५१
६९	,, शिवाजी नगर गुडगावा	५०
७०	श्री सुरेशकुमार भडाना, मुकेश कालोनी बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	५०
७१	आर्यसमाज मुरादनगर शहर जि० गाजियाबाद (उ०प्र०)	५१
७२	मन्त्री आर्यसमाज जैकमपुर गुडगावा छावनी	५०
७३	हिमगिरी साइकिल इण्डस्ट्रीज फरीदाबाद	३१
७४	श्री राजेशकुमार शर्मा मगोल	५१
७५	,, रविदत्त मन्त्री आर्यसमाज खिचड़ीपुर दिल्ली-३९	२१
७६	,, तुलसीराम आर्य म०न० २०ए गली न० २१डी मोलडबन्द विस्तार नई दिल्ली-४४	५१
७७	,, शिवदत्त शर्मा म०न० २०ए गली न० २१डी मोलडबन्द विस्तार नई दिल्ली-४४	२१
७८	,, वीरेन्द्रसिंह १८४ बड़ी चौपाल बदरपुर नई दिल्ली-४४	२१
७९	,, गजराजसिंह नम्बरदार ग्राम लक्कड़पुर जि० फरीदाबाद	५१
८०	,, आर्य बुक सैन्टर रेवाड़ी	२१
८१	,, रमेशकुमार सैनी विकासनगर रेवाड़ी	२१
८२	,, मूलचन्द गार्ड ,,	२१
८३	आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल	५०
८४	,, रादौर जि० यमुनानगर	५१
८५	श्री प्रभासिंह सु० चौ० मातूराम ग्राम मुण्डलाना जि. सोनीपत	५१
८६	,, मा० प्रतापसिंह आर्य ,, ,,	५१
८७	,, हरदेवा प्रधान आर्यसमाज जाटल जि० पानीपत	२५
८८	,, रामदिया सु० धनपतसिंह ,, ,,	२५
८९	,, कंवलसिंह सु० जयलाल ग्राम गामड़ी जि० सोनीपत	५१
९०	,, उमेदसिंह सु० नत्थुराम ,, ,,	५१
९१	,, मा० प्रेमसिंह सु० जुगलाल ,, ,,	५१
९२	,, वेदसिंह सु० रामसिंह ,, ,,	२१
९३	,, सूरजमल आर्य सु० जुगलाल ,, ,,	२१
९४	,, मा० रतनसिंह सु० किदारसिंह ,, ,,	२१
९५	,, देवीसिंह सु० कन्हैयालाल ,, ,,	२१
९६	,, सूबेसिंह सु० हरनामसिंह ,, ,,	३१

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

क्या वेदों में जनकपुत्री सीता का उल्लेख है ?

—डा० भवानीलाल भारतीय

राजस्थान पत्रिका के १९ जुलाई, ९२ के अंक में डा० उर्मिला देवी शर्मा का एक लेख 'जगजननी सीता का स्वरूप' प्रकाशित हुआ है। विदुषी लेखिका ने यह दिखाने का असफल प्रयास किया है कि वेदों में रामायणकालीन जनकपुत्री सीता की चर्चा है। इस लेख का प्रथम वाक्य ही अत्यन्त भ्रामक है, जो इस प्रकार है—"यदि हमे जगज्जननी सीता के स्वरूप को सर्वांगीण रूप में समझना है तो वेदों के पृष्ठ पलटना अनिवार्य है।" हमारा निवेदन है कि सीता के बारे में जानने के लिये तो वाल्मीकीय रामायण के पृष्ठों को पलटना चाहिए, न कि वेदों के पृष्ठ। कोई भी प्राचीन या अर्वाचीन, पाश्चात्य अथवा पौरस्त्य, सनातनधर्मी या आर्यसमाजी वेदज्ञ यह नही मानता कि वेदों मे त्रेताकालीन राम, सीता आदि की चर्चा है। जिन वेदो को सभी शास्त्रकारों ने परमात्मा का अनादि ज्ञान कहा, जो ईश्वर के निश्वसित होने के कारण परम प्रमाण माने गये, मीमांसकों ने जिन्हे अपौरुषेय कहा तथा वेदांतियों ने ब्रह्म को जिनका कारण बताया, उन वेदों में अवरकालीन पात्रों की चर्चा होना कथमपि सम्भव नही है। जो ऐतिहासिक दृष्टि से वेदों तथा रामायण के रचनाकाल का विचार करते हैं, उनकी भी यही सम्मति है कि वेदों का रचनाकाल रामायण का पूर्ववर्ती है। स्वयं रामायण में राम को वेदशास्त्रों का ज्ञाता कहा गया है। पुन: यह कहने में क्या तुक है कि सीता का उल्लेख वेद संहिताओं मे मिलता है।

'रामायण महाकाव्य सर्ववेदेषु सम्मतम्' का अर्थ तो इतना ही है कि रामायण ग्रन्थ मे उल्लिखित शिक्षायें तथा उपदेश वेदसम्मत हैं तथा रामादि पात्रों के चरित्र और आदर्श भी वेदानुकूल हैं। इसीलिये लोक में प्रचलित है—रामादिवत् वर्तितव्यम् न रावणादिवत्। अर्थात् हमारा आचरण राम के तुल्य हो न कि रावण के समान। इस वाक्य का यह अर्थ लेना कि रामायण की कथा मूलवेद में है, घोड़े के आगे गाड़ी जोतने के समान है।

स्वय लेखिका ने ऋग्वेद के उस मन्त्र को उद्धृत किया है जिसमें 'सीता' शब्द का तो प्रयोग हुआ है किन्तु इस शब्द का राम की पत्नी से दूर का भी सम्बन्ध नही है। ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल का यह सत्तावनवा सूक्त है जिसमें कृषिकर्म की चर्चा है। यह कृषि विज्ञान का दिग्दर्शक सूक्त है। प्रथम मन्त्र मे क्षेत्रपति (खेत के स्वामी किसान) का वर्णन है। तृतीय मन्त्र में हल, बैल आदि का उल्लेख है। छठे मन्त्र में जिस सीता का वर्णन है वह हल की फाल का प्रतीक है। स्वय लेखिका ने माना है कि सारे ऋग्वेद मे इन दो मन्त्रों (मण्डल ४, सूक्त ५७ मन्त्र ६, ७) में ही 'सीता' शब्द आया है। वह यह भी स्वीकार करती है कि इन ऋचाओ का देवता (सब्जेक्ट मेटर) 'क्षेत्रपति' अर्थात् किसान है, अत. भाष्यकारो ने सीता का अर्थ एक ऐसी रेखा बताया है जो जमीन की जुताई करते समय हल की फाल के अन्दर धंसने से स्वत: बन जाती है।' इस सत्य अर्थ को स्वीकार करके भी लेखिका का पूर्वाग्रह उसे बराबर इस बात के लिये विवश करता है कि वह वेदों में रामपत्नी सीता की तलाश करे। इसलिये वह यह लिख बैठती है कि यहां सीता तथा जानकी (जनक की पुत्री) मे अभेद है। निवेदन है कि भाष्यकार सायण ने भी इस सूक्त को कृषि कर्म परक माना, किंतु माधवाचार्य तथा कालूराम आदि दुराग्रही पौराणिकों ने वेदों के उपर्युक्त तथा तत्सदृश अन्य मन्त्रो से राम, सोता, दशरथ, रावण आदि अर्वाक्कालीन पात्रो का अर्थ निकालने का दुराग्रह किया।

आगे के विवेचन मे लेखिका ने रामायण के उन श्लोकों को उद्धृत किया है जिनमे जनक के मुख से कहलाया गया है कि खेत जोतते समय मैंने सीता नाम की इस प्रशंसित पुत्री को प्राप्त किया। इसी कथा के आधार पर संस्कृत वाङ्मय में अन्यत्र सीता को भूमिजा, पृथिवीपुत्री जैसे नामो से सम्बोधित किया गया है। निवेदन है कि वर्तमान उपलब्ध रामायण में सीता को 'अयोनिजा' तथा 'भूमिजा' कहना या लिखना यही सिद्ध करता है कि इस ग्रन्थ में परवर्तीकाल में अनेक प्रक्षेप हुए हैं तथा नाना किंवदन्तियां प्रक्षिप्त करदी गई हैं। सत्य तो यह है कि वेद में 'सीता' शब्द का प्रयोग जिस कृषि कर्म प्रसंग मे हुआ है, उसे ही लक्ष्य में रखकर क्षेपककार ने जनक द्वारा हल जोतते समय सीता की प्राप्ति की कथा गढ डाली। यह प्रयास वैसा ही है जैसा कि वेद के विष्णुपरक मन्त्र—'इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्' (१-२२-१७) को देखकर पुराणकारों ने विष्णु का वामन अवतार तथा उसके द्वारा सम्पूर्ण ब्रह्मांड को तीन डगो में नाप लेने की कथा का उपबृंहन किया।

आगे लेखिका ने जो पद्म भविष्य तथा ब्रह्मपुराण वर्णित सीता विषयक कथाओं की चर्चा की है, वह सर्वथा अप्रासंगिक है। उनसे भी सीता का वेदोक्त होना सिद्ध नहीं होता। वस्तुत जब कोई लेखक किसी मन्तव्य विशेष का अत्यन्त आग्रही हो जाता है तो वह सत्य-असत्य, न्याय्य तथा उसके विपरीत, औचित्य-अनौचित्य में भेद नही करता। लेखिका की भी यही दशा है। उसने तो कालिदास के कुमार सम्भव की इस पंक्ति के साथ भी अन्याय किया है, जिसमें सोता और इन्द्र का अर्थ कृषि कर्म प्रसग में ही घटित होता है। यहां श्लेष की अनावश्यक कल्पना कर वह लिखती है कि इस पंक्ति में कालिदास का भी यही आशय था कि जैसे राक्षसों द्वारा सताई गई प्रतिबंधिता सीता को रावण के चगुल से राम ने छुडाया आदि। निवेदन है कि कवियों की मनोरम कल्पनायुक्त काव्य रचनाओं का हम लक्षणा आदि का सहारा लेकर इस प्रकार का कपोल-कल्पित अर्थ करने लगे तब तो बिहारी के शृंगार रस से चुहचुहाते दोहों का भी भक्ति और शातरसपरक अर्थ करने में क्या अनौचित्य है।

इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में (४, ५, ७, ६) आये सीता शब्द को भी त्रेताकालीन सोता के साथ जोडना क्लिष्ट कल्पना तथा वाग्विलास ही है। लेखिका ने स्वीकार किया है कि वेद में जानकी' शब्द नही है, किन्तु जनक शब्द है। यह तो एक सामान्य बात है कि 'जनक' का अर्थ पिता होता है। मिथिला देशीय राजाओं के लिये जनक शब्द का प्रयोग परवर्ती है। वेदों को संहिताओ में मिथिला के किसी राजा की कोई चर्चा नही है। ब्राह्मण तथा उपनिषदों में निश्चय ही ऐतिहासिक उपाख्यान है, अत. उनमें जनको ह वैदेहो बहुदक्षिणेन यज्ञेनेजे" आदि वाक्य विदेहराज जनक के लिए आये हैं। मिथिला के सभी राजा 'जनक' पदवाची थे। उसी प्रकार जिस प्रकार इंग्लैंड के शासक जार्ज, जेम्स, एडवर्ड आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। इनमे ही रामकालीन तथा सीता के पिता सीरध्वज जनक थे।

लेखिका का यह कथन तो और भी हास्यास्पद है, जब वह लिखती है कि कौशिक सूत्र में सीता-पूजन की जो विधि है और उसमें सीता (खेत मे खिची रेखा) के चारों ओर जो परिधि बनाई जाती है, वह लक्ष्मण द्वारा खीची रेखा ही है। कल्पसूत्रों के विधि विधान वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों के विधि वाक्यों पर आश्रित हैं, न कि रामायण जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थ पर। वेदोक्त इन्द्र को राम का वाचक तथा वेदोक्त वायु को हनुमान का प्रतीक कहना नितात हास्यास्पद ही नहीं, वेदों जैसे आर्य जाति के सर्वस्व तथा ईश्वर के अनादि निधन ज्ञान का मखौल करना है। दिवगत स्वामी गंगेश्वरानन्द जी ने भी वैदिक देवताओं के ऐसे ही पुराण प्रसिद्ध देवताओं के वाचक अर्थ किये थे और वेदमन्त्रों में राम, हनुमान, कृष्ण, राधा आदि का उल्लेख बताया था। इन्द्र अहिल्या के ब्राह्मण वर्णित कथानक का रहस्य स्वामी दयानन्द ने स्वरचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में बताया है। शतपथ ब्राह्मण में इन्द्र सूर्य का वाचक तथा अहिल्या रात्रि का प्रतीक है। अत: इस उपाख्यान के आधार पर परवर्ती पौराणिकों ने इन्द्र के अहल्या के साथ जार कर्म करने आदि के अश्लील प्रसंग जिस प्रकार कल्पित किये वे सर्वथा निन्दनीय ही कहे जायेंगे। अन्तत: लेखिका ने अथर्ववेद के अयोध्या का वर्णन करनेवाले जिस मन्त्र अष्टचक्रा नवद्वारा देवाना पूरयोध्या को उद्धृत किया, क्या वह यह बताने के लिये पर्याप्त नही है कि वेदों में जिस अयोध्या का

(शेष पृष्ठ ८ पर)

श्रावणी रक्षाबंधन पर्व

—पं० शिवकुमार आर्य, पानीपत

प्राचीनकाल से आर्यावर्त्त देश भारत धर्म और संस्कृति का उपासक रहा है। हम अपने अतीत को देखते हैं तो गद्‌गद् हो जाते हैं, हमें गौरव अनुभव होता है। हमारा अतीत स्वर्णयुग था, भारत सोने की चिडिया, ज्ञान का भण्डार, ज्योतिपुंज कहलाता था। विश्व मे ज्ञान का प्रकाश यहा से ही फैला। यह देश धनैश्वर्ययुक्त पूर्ण समृद्धशाली था। इसका क्या कारण है ? यह जानने के लिए मूलतत्त्वों को जानना परमावश्यक है। इसका मूलतत्त्व वैदिक सस्कृति (आर्य सस्कृति) है। आदिकाल मे बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, तपस्वी तपोवन में रहकर आध्यात्मिक चितन करते थे। नगर चारों ओर से जंगलों से घिरा होता था। राजा और प्रजा तपोवन जाकर ऋषियों से आध्यात्म ज्ञान प्राप्त करते थे, तदनुकूल आचरण कर सुखी व समृद्ध होते थे। यह धर्म और सस्कृति का प्रभाव था। धर्म जो धारण किया जाये, वेदानुकूल चलकर वे धर्म की रक्षा करते थे और स्वयं धर्म द्वारा रक्षित थे।

'धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।'

आज वो महान् भारत विकट परिस्थितियो से गुजर रहा है। अनेक समस्याओ से जूझ रहा है। सोने की चिडिया कहलानेवाला देश आर्थिक सकट मे है क्यों ? क्योंकि हम अपनी सस्कृति को भूल चुके हैं, उसके मूलतत्त्वों से मुंह मोड लिये हैं। हम केवल उनका गौरवगान गाकर इतिश्री कर देते हैं, कभी भी उस रास्ते पर चलने का प्रयास ही नही किया। आज हम चल पड़े हैं सभ्यता की ओर, वह भी पाश्चात्य सभ्यता के मार्ग पर। जो हमें रेल, मोटरकार, हवाई जहाज, धन, एसोआराम और चकाचौध की दुनिया प्रदान करता है। विकास के नाम पर ऊपरी दिखावा करता है। जिसमे बेईमानी, चोरी, हिसा, असयम, झूठ का वर्चस्व होता है। सभ्यता भौतिकवाद ही तो है, जो सुख की सभी भौतिक वस्तु उपलब्ध कराता है। इसमे विकास तो है पर सुख नही। अगर सुख है तो शांति नही, इससे पूर्ण समृद्धि नही मिल सकती। सभ्यता की ओर भागना रेत के टीले पर चढना है, जो एक आधी के झटके से ढह जायेगा।

सभ्यता बाह्य वस्तु है जो उचित या अनुचित, अच्छा या बुरा नही देखता, केवल भौतिक सुख अर्जित करवाता है। सभ्यता शरीर के समान है जो नश्वर है। जो देश सभ्यता के मार्ग पर चलता है उसका अस्तित्व नष्ट हो जाता है। सस्कृति आतरिक वस्तु है जो हमें सत्य, अहिसा, अस्तेय, ईमानदारी और सयम सिखलाती है जिससे आत्मिक शांति तथा आनन्द की प्राप्ति होती है। सस्कृति आत्मा के समान अनश्वर है। जिस देश को सस्कृति है उसी का अस्तित्व। सस्कृतिहीन राष्ट्र मिट जाता है। संस्कृति की रक्षा के लिए सभ्यता की बलि दी जा सकती है, किन्तु सभ्यता की रक्षा के लिए संस्कृति की नही।

हमारे युगद्रष्टा ऋषि महर्षियों ने मानव कल्याण के लिए तप और त्याग के द्वारा चितन किया और हमें संस्कृति और सभ्यता, त्याग और भोग की अद्‌भुत समन्वय युक्त वैदिक सस्कृति प्रदान की। साथ ही तप द्वारा मिला ज्ञान विस्मृत न हो, इस दृष्टि से हमें पर्वो से जोड़ा। भारत अनेक पर्वोंवाला देश है। पर्व का अर्थ गांठ और पूरक होता है। जिस प्रकार गन्ना गांठ द्वारा जुड़ा हुआ और रस से पूरित होता है उसी तरह हम भी पर्वों से जुड़कर अपनी सस्कृति और संकल्पों में दृढ़ रहें जिससे हमारा जीवन आनन्दरस से पूरित हो। श्रावण मास में पूर्णिमा को मनाये जाने के कारण श्रावणी-पर्व कहलाता है। हमें अपने व्रतों का बोध करानेवाला पर्व है। आज सभी वर्ण के लोग यज्ञोपवीत (जनेऊ) बदलते हैं। वेद, उपनिषद्, गीता आदि ग्रन्थों का पठन-पाठन आरम्भ करते हैं। कथा कीर्तन प्रारम्भ होता है। यज्ञोपवीत अर्थात् व्रतबन्ध धारण कर नियमों का पालन करना। कालातर मे बहनो अपनी रक्षार्थ भाइयों ने कलाई मे राखी बाधनी आरम्भ करदी, तब से यह रक्षाबन्धन के नाम से प्रसिद्ध होगया। रानिया युद्ध मे जाते हुए वीर राजाओं को राज्य एवं अपनी रक्षार्थ रक्षासूत्र बांधती थी, ब्राह्मण क्षत्रियों को बाधते थे, भगिनी भाइयों को और बेटियां अपने पिता को रक्षासूत्र बांधती थी। राजपूतकाल में अबलाये अपनी रक्षार्थ सबल वीरों को राखी बाधती थी। यह पर्व वात्सल्य प्रेम को दृढ करनेवाला है।

हम ऋषियो के प्रदर्शित मार्ग पर चलकर भारत को पुन महान् बना सकते है। ससार को शिक्षा देनेवाला भारत समृद्धिशाली हो। आज हम सकल्प ले, अपने भारत के धर्म और सस्कृति को अतीत के समान गौरवशाली बनायेंगे।

पर्वों की कडिया यह हमे बतला रही।
आदर्श उनको मानकर उच्च बन सकते सभी॥
कालरूपी रेत पर चिह्न जो बने हुए।
अनुकरण कर मार्ग उनका आगन्तुक ख्याति पायेंगे॥

धर्म ही मानवता

आहार, निद्रा, भय, मैथुन से मानव पशु है एक समान।
मनुष्य धर्म का पालन करता वह कहलाता है इन्सान॥

धैर्य धारण करता जो क्षमाभाव दिखलाता है।
दमन की मन चोरी छोडकर शौच नियम अपनाता है।
इन्द्रियो को वश मे करके बन जाता है वीर महान्।
मनुष्य धर्म का ''

निर्मल बुद्धि करके अपनी विद्या प्राप्त कर पाता है।
सत्यधर्म का पालन करके क्रोध को सदा दबाता है।
मानवधर्म का पालन करके हो जाता है महामहिमान॥
मनुष्य धर्म का ''

वेद, स्मृति, शास्त्रो का जो मानवपूर्ण ज्ञाता है।
सदाचार का पालन कर जो उच्चादर्श अपनाता है।
अपने जैसा दु ख सुख सबका जो जाने सोई विद्वान्॥
मनुष्य धर्म का

लोक और परलोक जो दोनो को सफल बनाता है।
आत्म दर्शन करके जो ब्रह्मानन्द को पाता है।
'प्रभाकर' वह पूर्ण मानव करता है जग का कल्याण॥
मनुष्य धर्म का

रचयिता—कप्तान प० मातूराम शर्मा
सभा उपदेशक

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के समाचार

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे कक्षा ४ से ८वी तक केन्द्रीय विद्यालय के पाठ्यक्रम (गुरुकुल कागडी द्वारा मान्य) से कक्षाओ की पढाई सुचारु रूप से चल रही है। श्री हरिसिंह जी बी० ए० बी० एड० सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक की सेवाये गुरुकुल को प्राप्त होगई हैं। शेष अध्यापक भी योग्य तथा ट्रेण्ड हैं। इस समय छात्रों की संख्या १०० के लगभग है। गुरुकुल के भवनों की मरम्मत का कार्य चालू है।

दिनांक २७ जुलाई को सभा के उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री ने गुरुकुल के छात्रों को ईश्वर की सत्ता विषय पर व्याख्यान दिया तथा छात्रों क यज्ञोपवीत संस्कार किया गया।

दिनाक २८ जुलाई को गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री धर्मचन्द के निमन्त्रण पर रोहतक के उद्योगपति श्री नोबतराय पाहवा गुरुकुल मे पधारे। गुरुकुलवासियों की ओर से उनका स्वागत किया गया। उन्होंने गुरुकुल कार्यों से सन्तुष्ट होकर गुरुकुल के लिए ११००) का दान दिया।

दिनाक १ अगस्त को गुरुकुल के छात्रों ने श्री स्वामी समर्पणानन्द के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में शतपथ ब्राह्मण के लोकार्पण समारोह नई दिल्ली में भाग लिया।

—केदारसिंह आर्य

वेद में आत्मोन्नति के चार सूत्र

—स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, गुरुकुल कालवा

आत्मोन्नति का साधन मार्ग अथर्ववेद ७।१।१ मे बतलाया है। यह मार्ग चतुर्विध है अथवा ऐसा समझो कि इस मार्ग को बतलानेवाले चार सूत्र हैं। वह मन्त्र इस प्रकार है—

धीती वा ये अनयन् वाचो अग्र मनसा वा येवदन्नृतानि।
तृतीयेन ब्रह्मणा वावृधानास्तुरीयेणामन्वत नाम धेनो ॥
(अथर्ववेद काड ७, सूक्त १, मन्त्र १)

अर्थ—(ये वा मनसा धीती) जो अपने मनसे ध्यान को (वाचः अग्र अनयन्) वाणी के मूल स्थान तक पहुंचाते है तथा (ये वा ऋतानि अवदन्) जो सत्य बोलते हैं, वे (तृतीयेन ब्रह्मणा वावृधानाः) तृतीय ज्ञान से बढते हुए (तुरीयेण) चतुर्थ भाग से (धेनो. नाम अमन्वत) कामधेनु के नाम का मनन करते हैं।

भावार्थ—१. मनसे ध्यान लगाकर वाणी की उत्पत्ति जहां से होती है, वह वाणी का मूल देखना, २ सदा सत्य वचन बोलना, ३. ज्ञान से सम्पन्न होना और ४. कामधेनु स्वरूप परमेश्वर के नाम का मनन करना ये चार आत्मोन्नति के साधन है।

वेदमन्त्र मे आत्मोन्नति के चार सूत्र—

१ ऋतानि अवदन्—सत्य बोलना। अर्थात् छलकपट का भाषण न करना और अन्य इन्द्रियो को भी असत्यमार्ग मे प्रवृत्त होने न देना। सदा सत्यनिष्ठ, सत्यव्रती और सत्यभाषी होना।

२. ब्रह्मणा वावृधान—ब्रह्म नाम बन्धन निवृत्ति के ज्ञान का है। मोक्षे धीर्ज्ञानिम्=ज्ञान का अर्थ ही बन्धन से छूटने के उपाय का ज्ञान है। इस ज्ञान से जो बढना है अर्थात् इस ज्ञान से जो परिपूर्ण होता है। जो आत्मज्ञान के साधन का उपाय करना चाहता है उसको यह ज्ञान अवश्य चाहिये।

३ धेनो. नाम अमन्वत—कामधेनु के नाम का मनन करते हैं। भक्त की मनोकामना की पूर्णता करनेवाली कामधेनु परमेश्वर शक्ति ही है, उसके गुणबोधक नाम अनन्त हैं। उन नामों का मनन करने से और उन गुणो को अपने अन्दर स्थिर करने से मनुष्य की उन्नति होती है।

४ मनसा धीती वाचः अग्र अनयन्—मनकी एकाग्रता से ध्यान द्वारा वाणी के मूल स्थान को पहुंचना। यह आत्मा के स्थान को प्राप्त होने का साधन है।

साराश से आत्मा की खोज करने का मार्ग इस वेदमन्त्र में बताया है। इसको भी यदि सक्षिप्त करना हो तो '१ सत्यनिष्ठा, २. सत्यज्ञान, ३. प्रभु गुणमनन और ४ वाङ्मूलान्वेषण' इन चार शब्दों से सूचित होनेवाला यह आत्मोन्नति का मार्ग है। मनुष्य इस मार्ग से जाकर आत्मा का पता लगा सकता है और सत्य के आश्रय से और ज्ञान के प्रकाश से यथेच्छ उन्नति प्राप्त कर सकता है। यहां ज्ञान का 'बन्धन से मुक्त होने का निश्चित ज्ञान' यह अर्थ विवक्षित है। अन्य पांचभौतिक ज्ञान के लिये संस्कृत में विज्ञान शब्द है। जो इस प्रकार के श्रेष्ठ ज्ञान से युक्त होता है वह मनुष्य—

स वेद पुत्र· पितरं स मातरं स सूनुर्भुवत् स भुवत् पुनर्मघः।
स द्यामौर्णोदन्तरिक्षं स्वः इदं विश्वमभवत् स आभवत् ॥
(अथर्ववेद ७।१।२)

अर्थ—(स· सूनु भुवत्) वही उत्पन्न हुआ है, (सः पुत्रः पितरं सः च मातरं वेद) वही अपने माता-पिता को जानता है, (स. पुनमघः भुवत्) वह बारम्बार दान देनेवाला होता है, (स द्यां अन्तरिक्षं स्वः औणोंत्) वह द्युलोक, अन्तरिक्ष को और आत्मप्रकाश को अपने अधीन करता है, (स इदं विश्व अभवत्) वह यह सब विश्व बनता है और (सः आभवत्) वह सर्वत्र होता है।

भावार्थ—जो यह चतुर्विध साधन करता है, उसी का जन्म सफल है, वह अपने माता-पिता स्वरूप परमात्मा को जानता है, वह आत्म-सर्वस्व का दान करता है, जिससे वह त्रिभुवन को अपनी शक्ति से घेरता है, मानो वह यह सब विश्वरूप बनता है और वह सर्वत्र होता है।

कई मनुष्य होते है उनकी आज्ञा पारिवारिक लोग भी सुनते नहीं, इतनी उनकी शक्ति अत्यल्प होती है, परन्तु कई महात्मा ऐसे होते हैं कि जिनकी आज्ञा होते ही लाखो और करोडों मनुष्य अपना बलिदान तक देने को तैयार होते है, यह आत्मशक्ति के विस्तार का उदाहरण है। इसी प्रकार आगे परम सीमा तक आत्मा की शक्ति का विकास होना सम्भव है। इसी शक्ति विकास के चार साधन प्रथम मन्त्र में कहे हैं। उन साधनों का अनुष्ठान जो करेगे, वे अपनी शक्ति विकसित होने का अनुभव अवश्य लेने में समर्थ होगे।

मनुष्य की शक्ति का वर्णन करते हुए वेद कहता है—

एकशतं लक्ष्म्यो३ मर्त्यस्य साकं तन्वाऽजनुषोऽधि जाताः।
तासां पापिष्ठा निरितः प्र हिण्मः शिवा अस्मभ्यं जातवेदो नियच्छ ॥
(अथर्ववेद ७।११५।३)

"एक सौ एक शक्तियां मनुष्य के शरीर के साथ उसके जन्मते ही उत्पन्न होती हैं। उनमें जो पापरूप शक्तियां हैं, उनको हम दूर करते हैं और हे सर्वज्ञ प्रभो! कल्याणकारिणी शक्तियों को हमे प्रदान कर।"

(पृष्ठ ४ का शेष)

वर्णन है वह न तो त्रेताकालीन राम की राजधानी है और न आज के फैजाबाद जिले का नगर। वह तो आठ चक्रोंवाले और नवद्वारोंवाले मानव शरीर का ही प्रतोक है।

रामायण पर कार्य करनेवाले जर्मन विद्वान् जैकोबो के मत को यदि स्वीकार करे तब तो हमारा सारा इतिहास ही रूपक (allegory) हो जायेगा। तब न राम रहेगा और न सीता। न पांडव बचेंगे और न कृष्ण। ये सभी ऐतिहासिक पात्र अलंकार या रूपक ही रह जायेंगे। क्या हम यूरोपीय विद्वानों के उच्छिष्टभोजी बनकर अपने ऐतिहासिक पुरुषों को कल्पनालोक में विलीन करदे। पाश्चात्यों के ऐसे ही दुस्साहसपूर्ण प्रयासो पर टिप्पणी करते हुए कृष्णचरित के महान् व्याख्याकार बंकिमचन्द्र चटर्जी ने लिखा था—"मैं यह जानता हू कि संस्कृत साहित्य या शास्त्रों में रूपक हों या नही, पर उन्हें रूपक बनाकर उड़ा देना बहुत लोग पसन्द करते हैं। राम के नाम में रम धातु और सीता के नाम में सि धातु है, इसलिये रामायण कृषि कार्य का रूपक है। जर्मनी के विद्वान् इसी तरह के दो-चार धातुओं का सहारा लेकर ऋग्वेद के सब सूक्तो को सूर्य और मेघों का रूपक मानते हैं।"

इस लेख के आगे का विवेचन मात्र वाणी विलास ही है, जहां कही पर लेखिका ए० बी० कीथ का प्रमाण देकर हनुमान को वृष्टिकारक वायु का देवता मानती है। पुराणों में तो हनुमान को वायुपुत्र कहा ही गया है। अन्यत्र वह वेद को इतिहास का पोषक कहती है और निरुक्त का वाक्य उद्धृत कर वेदों को आख्यान संयुक्त बताती है। किंतु विचारणीय यह है कि क्या वैदिक आख्यान अनित्य लौकिक इतिहास हैं या नित्य प्राकृतिक घटनाओं का वर्णन करने में प्रयुक्त नित्य इतिहास। आर्यसमाज के स्वामी ब्रह्ममुनि, वैद्यनाथ शास्त्री, चमूपति आदि विद्वानों ने इस विषय पर विस्तार से लिखा है। निष्कर्षतः हम डा० उर्मिला के इस कथन से अपनी असहमति व्यक्त करते हैं कि इतिहास की वैदिक स्रोतस्विता को मानना अनिवार्य है। इतिहास तो एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। हमारे प्रत्यक्ष देखें कल के गांधी और नेहरू आज इतिहास के पुरुष बन गये। यदि त्रेता के राम और सीता का स्रोत वेद हैं तो क्या गांधी और नेहरू का भी वैदिक उद्गम हम तलाशेंगे।

प्रेषक—सरदारपुरा आर्यसमाज, जोधपुर-३४२००३

हरयाणा में शराबबन्दी अभियान की गतिविधियां

शराबबन्दी सम्मेलनों का कार्यक्रम

१. ग्राम अटेलाखुर्द जि० भिवानी	८ ९ अगस्त
२. ग्राम धमतान जि० जीद	१०-११ ,,
३. ग्राम मित्रोल औरगाबाद जि० फरीदाबाद	१२ से १४ ,,
४ ग्राम बस्सई जि० गुड़गाव	१५-१६ ,,
५ गुरुकुल धीरणवास जि० हिसार	२१ ,,
६. ग्राम फटरियाभीमा जि० भिवानी	२२-२३ ,,

इन सम्मेलनों में सभा के अधिकारी तथा उपदेशक एव भजन-मण्डली पधारेंगी।

ग्राम नीमड़ीवाली जिला भिवानी में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

दिनाक २० से २२ जुलाई, ९२ को रात्रि मे प० जबरसिह खारी, प० जयपालसिंह तथा पं० हरध्यानसिंह के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। २२ जुलाई को प्रातः ९ बजे से ५ बजे तक वर्षा करवाने हेतु गाव की ओर से सामूहिक जोहड़ पर श्री शेरसिंह जी आर्य द्वारा हवन किया गया, जिसमें १२ किलो घी ४० किलो सामग्री लगी। रात्रि को सभा उपदेशक श्री अत्तरसिह आर्य क्रान्तिकारी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शराबबन्दी कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी। प० जयपालसिह के पाखण्ड खण्डन एव शराबबन्दी पर भजन हुए। गांव के नरनारियों ने प्रचार मे बढ़-चढकर भाग लिया। दिनाक २३-७-९२ को प्रातः महर्षि दयानन्द विद्यालय के प्रागण में क्रातिकारी द्वारा हवन किया गया। श्री इन्द्रसिंह तहसीलदार ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। हवलदार कर्णसिंह जी ने यज्ञोपवीत धारण किया। ठीक ९ बजे शराबबन्दी सम्मेलन भजनों के माध्यम से शुरु हुआ। जिसकी अध्यक्षता श्री हीरानन्द आर्य पूर्व शिक्षामन्त्री हरयाणा ने की। मंच का सचालन क्रांतिकारी जी ने किया।

मुख्य रूप से सर्वश्री चौ० दीवानसिंह जी पूर्व हैडमास्टर अटेला, कामरेड रामसिह वर्मा भिवानी, इन्द्रसिंह तहसीलदार, मानसिह पूर्व सरपंच, मागेराम सरपंच नीमडीवाली, चौ० बलबीरसिह ग्रेवाल पूर्व विधायक तथा हीरानन्द आर्य ने लोगों को शराब से होनेवाली हानियों से अवगत कराया। किसानों की लूट, भारत आजाद है पर हम गाववासी गुलाम हैं। अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए भ्रष्ट राजनेता लोगों को शराब पीलाकर बर्बाद कर रहे हैं। सभी वक्ताओं ने गिरते हुए चरित्र, शराबबन्दी, धूम्रपान, दहेज आदि सामाजिक एवं राजनीतिक पहलुओं पर विस्तार से विचार रखे। उपरोक्त बुराइयों को छोड़ने पर बल दिया। श्री मांगेराम सरपंच ने सभा में खड़े होकर भविष्य में शराब न पीने की घोषणा की। श्री राजसिंह सरपंच ने भी कहा कि हमारी सारी पंचायत शराब से दूर रहेगी। गांव में भी पूर्ण प्रतिबन्ध लगायेगी। अंत में श्री शेरसिंह आर्य ने गांव व आर्यसमाज की ओर से विद्वान् वक्ताओं का धन्यवाद किया। सम्मेलन की कार्यवाही ३॥ घण्टे तक चली।

तत्पश्चात् विद्यालय के हाल में सरपच की अध्यक्षता में सारे गाव की शराबबन्दी लागू करने पर मीटिंग हुई, जिसमे एक गांव में २१ सदस्यो की एक शराबबन्दी समिति गठित की गई। शराब बेचनेवाले पर ५०० रु० तथा शराब पीकर गलियों मे हुल्लड़बाजी करनेवाले पर १०० रु० दण्ड करने का निर्णय लागू किया गया। दोबारा गलती करने पर दोगुना दण्ड लिया जायेगा। दुग्धपान एव फलाहार की उत्तम व्यवस्था थी। कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय एवं उत्साहवर्धक रहा। ईश्वर कृपा से सायंकाल भारी वर्षा भी हुई।

—हवलदार कर्णसिह बोहरा, नोमडीवाली

आर्यसमाज चरखी दादरी में नशाबन्दी

आर्यसमाज चरखी दादरी के तत्वावधान मे क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रो मे समाज मे बढ रहे नशीले व्यसनों के विरुद्ध व्यापक अभियान चलाया जाएगा। इस सन्दर्भ मे जनजागरण के लिए स्थानीय आर्यसमाज विशेष पखवाड़ा मनायेगा।

यह जानकारी देते हुए यहा आर्यसमाज के एक प्रवक्ता ने बताया कि नशीले व्यसनों से विशेषकर देश का युवावर्ग अपने मार्ग से भटक रहा है तथा यदि यह क्रम इसी गति मे चलता रहा तो राष्ट्र व समाज को इसके भयकर परिणाम भुगतने पड सकते है।

शराबबन्दी पंचायत सम्पन्न

दिनांक १३-७-९२ को ग्राम लोहासडा जिला भिवानी मे श्री रामअवतार आर्य प्रधान आर्यसमाज लोहारू की अध्यक्षता मे कई गावों की पंचायत हुई, जिसमें नवयुवको की सख्या अधिक थी। पंचायत मे म० शिवलाल विमलवास श्री सुमेरसिंह आर्य फटरियाभीमा, श्री महेन्द्रसिंह नम्बरदार तथा सरपच साहब ने शराबबन्दी एव सामाजिक बुराइयो पर विस्तार मे विचार रखे। अध्यक्षीय भाषण मे प्रधान जी ने शराब मे होनेवाले नुकसान से लोगो को अवगत कराया तथा सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की। साथ मे नवयुवको को आह्वान किया कि अब समय आगया है अपने आपको तयार करके जिस तरह देश की आजादी में अनेक युवको ने कुर्बानी दी थी। इसी प्रकार इस भयकर नागिन शराब को बन्द करवाने हेतु कुर्बानी देनी होगी। युद्धस्तर पर संघर्ष करना होगा, वरना ये भ्रष्ट सरकारे बाज नही आयेगी। कितनी शर्म की बात है कि लोगों को पीने के लिए चाहे पानी कई-कई घण्टे न मिले और शराब की बिक्री २४ घण्टे जोरों पर चलती है। अत शराब हटाओ देश बचाओ।

—अत्तरसिह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

ग्राम दूबलधन जिला रोहतक में धुआंधार वेदप्रचार

सूबेदार श्री धारासिह सरपच के आग्रह व प्रयत्न से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दिनांक २७ से २९ जुलाई, ९२ तक तीन दिन गांव में वेदप्रचार एव शराबबन्दी प्रचार किया गया। इस अवसर पर सभा उपदेशक श्री अत्तरसिह आर्य क्रातिकारी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगो को अवगत कराया। शराब के साथ-साथ धूम्रपान तथा ताश खेलना आदि बुराइयों को छोड़ने पर बल दिया। लोगों का आह्वान किया कि अगर सुख से जीना चाहते हो तो आर्यसमाज के सम्पर्क मे आओ। प० खेमसिंह क्रातिकारी, पं० जयपालसिंह बेधड़क तथा महाशय हरध्यानसिंह जी के शराबबन्दी, पाखण्ड खण्डन तथा अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। लोगों ने श्रद्धा से बहुत संख्या मे इकट्ठे होकर प्रचार सुना तथा सभा को दिल खोलकर दान दिया। प्रधान महाशय भरतसिंह आर्य, श्री राजेन्द्रसिंह सरपच विध्यान, श्री बैद्यनाथ सरपच धिकयान का भी विशेष सहयोग रहा।

—मन्त्री आर्यसमाज दूबलधन

आर्यसमाज जवाहर चौक फतेहाबाद जि. हिसार का निर्वाचन

प्रधान—बृजचन्द, उपप्रधान सुखदयाल मन्त्री—सत्यपाल बसल, उपमन्त्री—कन्हैयालाल, कोषाध्यक्ष—रामलाल अरोडा, लेखाधिकारी—सत्यपाल टाक, प्रचारमन्त्री—नारायणदास।

प्रभुवाला जिला हिसार में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

नवगठित आर्यसमाज प्रभुवाला जिला हिसार की ओर से दिनांक ३०-३१ जुलाई, ९२ को वेदप्रचार एवं शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। रात्रि को गांव के चौक में वेदप्रचार हुआ, जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी गुरुकुल धीरणवास, स्वामी अग्निदेव जी भीष्म हिसार, सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी आदि ने आर्यसमाज का इतिहास, नारी शिक्षा, गोरक्षा तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डली पं० जयपालसिंह बेधड़क तथा महाशय हरच्यानसिंह के समाज में फैली हुई कुरीतियों के खिलाफ प्रेरणादायक भजन हुए। क्रांतिकारी जी की प्रेरणा एवं सुझाव पर प्रथम बार आर्यसमाज का गांव में प्रचार हुआ। नरनारियों ने बड़ी श्रद्धा से प्रचार में भाग लिया। प्रातःकाल धर्मशाला में गये। दोनों विद्वान् संन्यासियों ने आत्मा-परमात्मा, मनुष्य के कर्त्तव्य तथा कर्मफल पर प्रकाश डाला। इससे पहले प्रातः ५ से ६ बजे तक महाशय हीरानन्द आर्य जो १०२ वर्ष के हैं, आग्रह पर ब्रह्मलीन मन्दिर में सत्संग सभा में स्वामी सर्वदानन्द जी एवं क्रांतिकारी जी गये। स्वामी जी ने सूक्ष्म व स्थूल शरीर पर विचार प्रस्तुत किये।

तत्पश्चात् प्रातः ९ बजे राजकीय उच्च विद्यालय के प्रांगण में शराबबन्दी सम्मेलन प्रारम्भ हुआ, जिसमें स्कूली बच्चों, अध्यापकवर्ग, गांव के नरनारियों के अतिरिक्त नजदीक के गुवाडों के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रथम उपरोक्त भजनोपदेशकों के शराबबन्दी पर शिक्षाप्रद भजन हुए। सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती ने की। मंच सचालन प० अत्तरसिंह आर्य ने किया।

उसके बाद गांव के प्रतिष्ठित लोगों ने विद्वानों तथा मुख्य अतिथि चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त तथा सभामन्त्री चौ० सूबेसिंह पूर्व एस० डी० एम० का पुष्पमालाओं द्वारा अभिनन्दन एवं स्वागत किया। बाद में स्कूल की छात्राओं ने एक स्वागत गीत गाया। वक्ताओं में मुख्य रूप से सर्वश्री देशराज शास्त्री, ब्र० रामफल घिराय, राजपाल आर्य कुम्भा, मनोहरलाल शास्त्री भेरिया अकबरपुर, सग्रामसिंह आर्य दड़ौली, स्वामी अग्निदेव भीष्म, चौ० सूबेसिंह सभामन्त्री, बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, डी० आर० चौधरी सम्पादक पींग साप्ताहिक तथा चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा आदि ने शराबबन्दी पर इतिहास के उदाहरण देकर तथा देश-विदेश की घटनाओं के आंकड़े देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत करवाया। लोगों को शराब मांस, अण्डे, धूम्रपान, जुआ, ताश आदि बुराइयों को सदा के लिए छोड़कर दूर रहने पर बल दिया।

लोगों को आर्यनेताओं ने बताया कि सरकार चाहे किसी दल या पार्टी की हो, अपने स्वार्थों एवं राजस्व के लालच में शराब बन्द नहीं करेगी। जब तक देहात का मजदूर किसान स्वयं शराब पीना छोड़कर संगठित होकर सरकार को बाध्य नहीं करेगा। शराब से चारों ओर सर्वनाश हो रहा है, सरकार मूक बनी तमाशा देख रही है। विद्वानों ने सरकार की शराब बढावा नीति की घोर निंदा की। सभामन्त्री, डी० आर० चौधरी, ग्रेवाल साहब तथा उपायुक्त महोदय ने किसानों की लूट, असमानता गरीब अमीर की बढती हुई खाई, गिरता हुआ शिक्षा का स्तर, स्कूल कालेजों में बढती हुई नकल, छुआछात, सम्प्रदायवाद, बलात्कार, भ्रष्टाचार व्यवस्था बदला, भ्रष्ट राजनेताओं की उपेक्षा करना तथा चुनाव में स्वच्छ प्रकृति के लोगों को आगे लाना आदि पहलुओं पर भी प्रकाश डाला। अध्यक्षीय भाषण में स्वामी जी ने स्वच्छ समाज बनाने तथा एकजुट होकर सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध युद्धस्तर पर संघर्ष करने पर बल दिया। विद्वानों के सुझाव पर श्री काशीराम ने भविष्य में शराब न पीने का व्रत लिया। सभा की ओर से गांव में शराबबन्दी पोस्टर एवं साहित्य बांटा गया।

सम्मेलन को सफल बनाने एवं व्यवस्था में प्रधान काशीराम सेलवाल, का० बलवीरसिंह अजमेरा, मुख्याध्यापक धर्मवीर भण्डारी, प्रेमसिंह प्रधान एवं अन्य सदस्य डा० भीमराव अम्बेडकर सेवा सगठन प्रभुवाला तथा गांव की पंचायत का विशेष सहयोग रहा। भोजन व्यवस्था सामूहिक रूप से पंचायत की ओर से की गई। सम्मेलन में लोगों ने आर्थिक सहयोग भी दिया। कार्यक्रम बहुत ही उत्तम एवं सराहनीय रहा। अन्त में लोगों ने विद्वान् नेताओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

— सत्यपाल आर्य
मन्त्री आर्यसमाज प्रभुवाला

बामला जिला भिवानी में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक १-८-९२ को आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वेदप्रचार किया गया। रात्रि को प० जयपालसिंह बेधड़क एवं पं० गजराम आर्य के शराबबन्दी एवं अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ शिक्षाप्रद भजन पाना विद्यलायन की बडी चौपाल में हुए। दिनांक २-८-९२ को पाना भाकलान की चौपाल में २ बजे से ५॥ बजे तक शराबबन्दी सम्मेलन हुआ, जिसमें स्थानीय श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी तथा सभामन्त्री चौ० सूबेसिंह जी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। अन्य मादक द्रव्य धूम्रपान, अफीम, हेरोइन, स्मैक आदि से सदा दूर रहने का सुझाव दिया। साथ में नारी-शिक्षा एवं गोरक्षा पर भी बल दिया। सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की। ग्रेवाल ने किसानों की फसल के पूरे दाम न मिलने की बात भी विस्तार से बताई। चौ० सूबेसिंह जी ने फौजी भाइयों से पुरजोर अपील की कि अपने स्वाभिमान को पहचानो, सरकार के बहकावे में आकर बुढापे में कार्ड की दो बोतल मत लाओ। आपने देश की सेवा की है, यह आपको शोभा नहीं देता। साथ में लोगों का आह्वान किया कि जो भाई शराब छोडना चाहे, वह सरपच के साइन करवाकर आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय रोहतक में लिखित सूचना दे दे। भविष्य में शीघ्र वहां सभा की ओर से शराब छुडवाने का कैम्प लगेगा। सब खर्च दवाई, पानी, भोजन आदि का सभा की ओर से होगा।

सभी वक्ताओं ने संघर्ष करके गतदिनों शराब का ठेका बंद करवाने तथा गांव में तीन अखाड़े चला रखे हैं। उन सबके लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के अन्त में देर से चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त, डी० आर० चौधरी, का. रघुवीरसिंह हुड्डा, श्री हरिकिशन हुड्डा आदि पधारे। उन्होंने भी बाद में गांव के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से शराबबन्दी एवं बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर विस्तार से चर्चा की।

—चन्दनसिंह सरपंच बामला पाना भाकलान

ग्राम धनाना जिला भिवानी में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दिनांक २-८-९२ को रात्रि में बगले में वेदप्रचार हुआ, जिसमें सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने आर्यसमाज का इतिहास एवं शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को प्रभावशाली ढंग से बताया। सुखी रहने के लिए आर्यसमाज के नजदीक आने का लोगों को सुझाव दिया। पं० जयपालसिंह बेधड़क, म. हरच्यानसिंह तथा पं. गजराम आर्य की भजनमण्डलियों के पाखण्ड खण्डन तथा शराबबन्दी पर समाज सुधार के प्रेरणादायक भजन हुए। जिसका लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

दिनांक ३-८-९२ को मिलयान पाने की बड़ी चौपाल में प्रातः १० बजे शराबबन्दी सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री हीरानन्द आर्य पूर्व शिक्षामन्त्री ने की। मंच संचालन श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल ने किया। तत्पश्चात् सूबेदार राजमल धनाना, कप्तान साहब बामला, चौ. सूबेसिंह सभामन्त्री, डी० आर० चौधरी पींग सम्पादक, का० रघुवीरसिंह हुड्डा तथा मुख्य अतिथि चौ विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक हरयाणा शराबबन्दी समिति आदि ने अपने-अपने विचार रखे तथा शराबबन्दी दृढता से लागू करने पर सुझाव दिया। वेदप्रचार एवं सम्मेलन में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम बहुत ही रोचक एवं प्रेरणादायक रहा।

—अमृतलाल सरपच

लोग अच्छा बनना चाहते हैं

मैं ग्राम घुढाणा में गया। लोगो ने मुझे सत्संग मे बुलाया और मुझ से कुछ सुनना चाहा। मैंने महर्षि दयानन्द के जीवन का आधार लेकर कुछ बातें बताई और कविताबद्ध सुनाई। वहां के सरपंच जी ने कुछ शंका समाधान की। अन्त में श्री प० कैलाशचन्द्र सरपंच ग्राम घुढाना (जीवापुर) ने कहा कि मैने शराब तो छोडदो है और आज से धूम्रपान भी छोड़ता हूं। ऐसा कहते हुए बोडियों का बण्डल और माचिस मेरी झोली में डालदो। इस प्रकार अन्य सज्जनो ने भी ऐसा ही किया। यहा तक कि माताओं ने भी यह प्रतिज्ञा की कि हम भी किसी प्रकार का नशा नही करेगी और अपने घरों में शराब, मांस, अण्डे आदि दूषित पदार्थों का प्रयोग नही होने देगी। सरपंच जी ने अपने साथियो को कह दिया कि सत्संग में कोई धूम्रपान नही करेगा और मुझे आश्वासन दिया कि हम अपने गाव को सब प्रकार से अच्छा बनायेंगे और बुराइया दूर भगायेंगे। कुछ नौजवानों और बुजुर्गो ने मुझे ताश भी दे दी और कहा कि हम ताश नही खेलेंगे और पुस्तक पढकर लाभ उठा लेंगे। मैने सब महानुभावों का धन्यवाद मनाया और गांव के आस-पास अच्छे-अच्छे पेड लगाने के लिए बच्चो को समझाया। उन्होंने धन्यवाद करते हुए कहा कि आप आते रहेंगे तो हम सन्मार्ग अपनाते रहेंगे।

—जीवानन्द नैष्ठिक

आर्यवीरो जागो

अभी समय है यदि जागना चाहो जागो।
जाग गये तो बच जाओगे, शोर मचा है भागो ॥

आतंकवाद की आग फैल रही है तेजी से,
उग्रवाद भी फूक मार रहा है पीछे से,
इसको लपटों से बचने को नीद को त्यागो।
अभी समय है . १

बेईमानी व भ्रष्टाचार का है धूआं छाया,
दूषित वातावरण होगया दम घुट आया,
इसे मिटाने की सोचो, आलस्य को त्यागो।
अभी समय ... २

बलात्कारी, रिश्वतखोरी भी सीमा को लाघ चुकी है,
दानवता मानवता को मजबूती से पीस रहो है,
दुष्टों से टक्कर लेने को, हे आर्यवीरो जागो।
अभी समय है ३

पति पत्नी को, भाई-भाई को छलकपट से मार रहा है,
खत्म हुआ विश्वास परस्पर जड़ निरन्तर काट रहा है,
जीना चाहो यदि खुशी से, प्रेम बढाओ स्वार्थ को त्यागो।
अभी समय है ४

—देवराज आर्य मित्र
आर्यसमाज बल्लभगढ, जि० फरीदाबाद

स्वामी दयानन्द, वेदप्रचार और आर्यसमाज

ऋषिराज दयानन्द आये थे वैदिक सन्मार्ग बताने को।
अज्ञान अन्धेरे में भटकों को वैदिक ज्योति दिखाने को॥

शिवरात्रि को जाग ऋषि ने सारे जग को जगा दिया।
पोंगापंथी, पौराणिक गढ पोपो का जड़ से हिला दिया।
आर्यसमाज के द्वारा जग का उपकार कराने को॥
ऋषिराज...

पूज्य पिता की आज्ञा थी शिवरात्रि का व्रत धारा था।
अर्द्ध रात्रि जाग उसने जब यह अद्भुत दृश्य निहारा था।
चूहा शिव पिंडी पै चढकर फल-फूल लगा था खाने को॥
ऋषिराज...

तब दयानन्द ने सोचा क्या यह शिव पिंडी जगदीश्वर है।
चूहे को यह न हटा सका यह तो कोरा एक पत्थर है।
घरबार छोडकर चले तभी सच्चे ईश्वर को पाने को॥
ऋषिराज......

सद्भाव वेद व ईश्वर का गुरु विरजानन्द से पाया था।
उसी प्रकाश का सूर्य ऋषि ने सब जग मे चमकाया था।
जगभर के सब हो जन-जन को वैदिक सन्देश सुनाने को॥
ऋषिराज...

ईश्वर की वैदिक वाणी का सत्यार्थप्रकाश किया ऋषि ने।
मिथ्या मत व सम्प्रदायों के पाखण्ड का नाश किया ऋषि ने।
सत्यार्थप्रकाश रचा ऋषि ने अज्ञान असत्य मिटाने को॥
ऋषिराज...

स्वामी ने जग को बतलाया ईश्वरीय ज्ञान है वेदों मे।
संसार की सारी विद्या व सारा विधान है वेदों मे।
एक ईश्वरभक्त और वेदों का भक्त बनाने को॥
ऋषिराज...

सत्यार्थप्रकाश समान जगत् में कोई ग्रन्थ महान् नही।
जीव ईश्वर धर्म देश का इस जैसा कही ज्ञान नही।
इसमें ही मिलेगा सत्य ज्ञान सुख शांति मुक्ति पाने को॥
ऋषिराज...

वैदिकधर्म प्रचार बिना जग का कोई कल्याण नही।
इसका पालन किये बिना इस मानव का उत्थान नहीं।
वैदिक सस्कारों ही से श्रेष्ठ व सबको आर्य बनाने को॥
ऋषिराज...

वेदधर्म को तज करके जो लोग बने ईसाई यवन।
हिन्दूजन की भूलों के कारण बिछड गये जो लाखों जन।
देकर के वैदिक ज्ञान उन्हे कर शुद्ध पुनः अपनाने को॥
ऋषिराज......

ढोल गंवार शूद्र नारी को पशु समान बताया था।
तुलसीकृत रामायण ने यह मिथ्या पाठ पढाया था।
देश की शिक्षा-दीक्षा दे नारी सम्मान बढ़ाने को॥
ऋषिराज ..

सर्वप्रथम स्वराज्य की चर्चा स्वामी दयानन्द ने ही की।
इससे पहले यह कांग्रेस इस भारत में न जन्मी थी।
आर्यराष्ट्र बनाने को स्वदेश स्वतन्त्र कराने को॥
ऋषिराज ...

दयानन्द ने करके दया वेदामृत पान कराया था।
पर इसके बदले उनको दुष्टो ने जहर पिलाया था।
ऋषिराज वेद की वेदी पर आये थे प्राण चढ़ाने को॥
ऋषिराज ...

पर उपकारी दयानन्द ने जग हितकारी काम किये।
शेष कार्य करने को पूर्ण स्थापित आर्यसमाज किये।
हे आर्यजनो आगे बढ़िये ऋषिवर का बात निभाने को॥
ऋषिराज ...

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का हमने जो लगाया था नारा।
सोचो उसके अनुसार बने क्या स्वय और यह जग सारा।
क्या पुरुषार्थ किया हमने जग से पाखण्ड हटाने को?
ऋषिराज ..

अज्ञान अविद्या अन्धकार व पापाचार मिटाया क्या?
दुखिया पीड़ित जनता पर से अत्याचार मिटाया क्या?
कितना यत्न किया शुद्धि कर बिछुड़ों को अपनाने को॥
ऋषिराज ..

पंजाब, असम, कश्मीर आदि में नित्य हत्यायें होती हैं।
नित्य बाल-बूढ़े, मा-बहिने बिलख-बिलख कर रोती हैं।
लाखों हो हिंदू भाग चुके कश्मीर से जान बचाने को॥
ऋषिराज......

चहुं ओर देश मे फैल रहे हैं, हत्यारे विघटनकारी।
भारत को खण्डित करने की कर रहे हैं फिर से तैयारी।
राम कृष्ण ऋषियों का देश इस्लामी राज्य बनाने को॥
ऋषिराज ...

वोटों के लिये ऐसे तत्त्वों को राजनीति ने पनपाया।
रामजन्म भूमि विवाद वोटों के लिए ही उलझाया।
तुल पड़ा अयोध्या में शासन हिन्दू का खून बहाने को।
ऋषिराज...

हे आर्यजनो अब शीघ्र उठो स्वधर्म, स्वदेश बचाने को।
जो इन्हें मिटाना चाहते हैं उनके षड्यन्त्र मिटाने को।
इनकी रक्षा करने के लिए अपना सर्वस्व लुटाने को॥
ऋषिराज .....

बोध दिवस, निर्वाण दिवस ऋषिवर का यही सिखाता है।
देशधर्म की रक्षा का हम सबको पाठ पढ़ाता है।
सन्देश दयानन्द स्वामी का वैदिक घर-घर पहुंचाने को॥
ऋषिराज ...

इससे बढकर हे आर्यजनो कोई भी कार्य महान् नहीं।
इस हेतु समर्पित जीवन से कोई बड़ा बलिदान नही।
इससे बढ़कर न कोई 'भास्कर' जीवन भेंट चढ़ाने को॥
ऋषिराज ...

—भगवतीप्रसाद सिद्धांत भास्कर
प्रधान नगर आर्यसमाज
१४३०, पं० शिवदीन का रास्ता
कृष्णपोल, जयपुर (राज०)

अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन ७-८ नवम्बर को रोहतक में होगा

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के निर्णय के अनुसार इसका आगामी नशाबन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन ७-८ नवम्बर, ९२ को दयानन्दमठ रोहतक में आयोजित किया गया है। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह करेंगे।

—सभामन्त्री

आर्यवीर दल समिति हिमाचल प्रदेश का चुनाव

संरक्षक—सर्वश्री कृष्णचन्द्र आर्य, प्रमुख सचालक—आचार्य रामानन्द, प्रांतीय सचालक—सूर्यदेव शास्त्री, सहसंचालक—स्वणदास बटोहा, अधिष्ठाता—भगवानदेव चैतन्य, बौद्धिक अध्यक्ष-आचार्य शांति शर्मा, शारीरिक शिक्षा अध्यक्ष—मदनलाल आर्य, कोषाध्यक्ष—आचार्य हंस, सचिव—डा० कर्मसिंह आर्य, सहसचिव—अखिलेश भारतीय।

पं० क्षितीश वेदालंकार को जीवनपर्यन्त पैन्शन

नई दिल्ली, १५-७-९२। पं० क्षितीश वेदालंकार जो लगभग १२ वर्ष आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मुख्य साप्ताहिक पत्र 'आर्य जगत्' के सम्पादक रहे, पिछले एक वर्ष से अस्वस्थ चले आरहे हैं। इसलिये इन्होंने आर्यजगत् में कार्य करने को असमर्थता प्रकट की। सभा के अधिकारियों के जोर देने पर भी उनके डाक्टरों ने उन्हें अब कार्य करने के लिए इन्कार कर दिया। इस समय उनकी आयु ७७ वर्ष है।

दिनांक १४-७-९२ मंगलवार को सभाप्रधान श्री दरबारीलाल एवं सभामन्त्री श्री रामनाथ सहगल उनके निवास स्थान पर उनको मिले और उनसे प्रार्थना की कि सभा एव डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति चाहते तो यही थे कि "आपके कार्यमुक्त होने पर आपका सार्वजनिक विदाई समारोह किया जाता, परन्तु आपने स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण असमर्थता प्रकट की।" इस अवसर पर सभाप्रधान श्री दरबारीलाल जी ने उन्हे दोशाला और उनकी धर्मपत्नी को एक साडी भेंट की। इसके साथ ही जून मास की पेंशन भी उन्हे भेट की। प्रधान जी ने कहा कि आपने आर्यजगत् की जो सेवा की है, उसके प्रति हम कृतज्ञ हैं। हम आपको आपकी सेवाओं के प्रति हर मास की पहली तारीख को जीवनपर्यन्त आपके वेतन का ५० प्रतिशत भाग पेंशन के रूप में भिजवाते रहेंगे।

पं० क्षितीश वेदालंकार ने आभार प्रकट किया और उनके परिवार वालों ने प्रसन्नता प्रकट की। पं० क्षितीश जी ने विश्वास दिलाया कि वे आर्यजगत् का कार्य परामर्शदाता के रूप में करते रहेंगे और सप्ताह में एक बार कुछ न कुछ लिखकर अवश्य भेजेंगे।

वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

यमुनानगर. श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर की ओर से महाविद्यालय में वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर १५ दिनों तक चलने के बाद विगत दिवस सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। मुख्य प्रशिक्षक श्री आचार्य वागीश्वर शास्त्री एम० ए० के अतिरिक्त वैदिक विद्वान् श्री विजयसिंह शास्त्री व श्री आचार्य देवव्रत जी ने दूर-दूर से आये ७० प्रशिक्षणार्थियो को विभिन्न संस्कारो, पर्वों व रस्मों को सम्पन्न करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। मनुष्य जीवन मे यज्ञ का महत्त्व, समाज मे पुरोहित का मूल्य व महत्त्व, संस्कारों द्वारा कैसे मनुष्य जाति का उत्थान व विकास कैसे सम्भव है आदि विषयों पर चौदह दिनों तक बड़े सारगर्भित व विद्वत्तापूर्ण प्रवचन होते रहे।

अन्तिम दिवस गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार के उप-कुलपति एव आचार्य श्री रामप्रसाद वेदालकार की अध्यक्षता में दीक्षांत समारोह का आयोजन हुआ। प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र व पुस्तके प्रदान की गईं। इस अवसर पर प्रो० सत्यदेव वर्मा, आचार्य वागीश्वर, आचार्य देवव्रत, पं० ओम्प्रकाश वर्मा, केशरदास, महाशय हरलाल, विजयसिंह शास्त्री व इन्द्रजित्देव ने भी अपने विचार प्रकट किये। सभी शिक्षणार्थियों ने समर्पण भाव से सेवा करने का व्रत लिया।

—इन्द्रजित्देव उपमन्त्री

आवश्यकता है

गुरुकुल धीरणवास डा० रावलवास खुर्द जिला हिसार में इस समय एक विज्ञान के सुयोग्य अध्यापक की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव सूचना मिलते ही साक्षात्कार हेतु नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें। वेतन योग्यता एवं अनुभव के आधार पर दिया जावेगा।

—सर्वदानन्द
मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल धीरणवास (हिसार)
पो० रावलवास खुर्द, जिला हिसार

वैदिकरीति से तिलक . विवाह तिथि निश्चित

श्रीमती सुशीला देवी के निवास पर वैदिक यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् श्री सुशोला विद्यार्थी का तिलक वैदिक विधि से श्री छैलाराम जी चीफ इन्स्पैक्टर रेवाडी (हर०) ने किया। इस समय श्री प्रकाशवीर आर्य सुपुत्र श्री ओमप्रकाश सुमर की विवाह तिथि १६ अगस्त, ९२ श्री आनन्दमोहन वानप्रस्थी ग्राम पाडवाण, तह० चरखी दादरी, जिला भिवानी ने निश्चित की। इस अवसर पर श्री मंगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम खेडकी को ५०१) श्री छैलाराम चीफ साहब तथा ५०१) श्री आनन्दमोहन वानप्रस्थी ने सहर्ष दान दिये। ११) सर्वहितकारी को दान दिये। क्योंकि यह पत्र सभी का हित करने के लिए वैदिकधर्म का प्रचार-प्रसार करता है।

—लालचन्द विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता संग्राम का जरनैल-कर्मयोगी बालगंगाधर तिलक

जिन्होंने सबसे पहले भारतीयों को 'स्वतन्त्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' का महामन्त्र दिया

ले०—स्वतन्त्रता सेनानी डा० शांतिस्वरूप शर्मा पत्रकार

भारतीय संस्कृति के प्रतीक, स्वतन्त्रता संग्राम के क्रांतिकारी, विचारों के महान् नेता कर्मयोगी बालगंगाधर तिलक ने सबसे पहले "आजादी मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है" का महामन्त्र देशवासियों को दिया और अंग्रेजो को ललकारा कि वह भारत छोड़कर भाग जाये, वरना भारतवासी स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष छेड देंगे।

सन् १८८५ मे एक अंग्रेज ने कांग्रेस की बुनियाद रखी थी, जिसका अर्थ था कि अंग्रेजी सरकार को चाहनेवाले बड़े-बड़े लोग उसके सदस्य बनकर भारतीयों की आखों मे धूल झोंकते रहे कि यह कांग्रेस भारतीय जनता की प्रतिनिधि है। २० वर्षों में यह केवल प्रस्ताव पास करके भेजती रही। सन् १९०५ को कांग्रेस अधिवेशन मे महात्मा बालगंगाधर तिलक ने अपने भाषण में अंग्रेजी सरकार को ललकारा और कहा कि आजादी प्रत्येक भारतीय का जन्मसिद्ध अधिकार है। सन् १९०७ के अधिवेशन में कांग्रेस दो भागों में बंट गई। इसलिए सन् १९१५ तक कोई भी वार्षिक सम्मेलन न हुआ। उस समय अंग्रेजी तानाशाही यौवन पर थी।

उस समय तीन बड़े क्रांतिकारी थे जिनकी लाल, बाल, पाल के नाम से सारे देश में चर्चा थी। उत्तरी भारत के नेता लाला लाजपतराय को लाल कहा जाता था। महात्मा तिलक जो दक्षिण भारत के बड़े नेता थे, जिन्हे बाल कहा जाता था। तीसरा क्रांतिकारी पूर्वी भारत का विपिन चन्द्रपाल था जिन्हे पाल कहा जाता था। अंग्रेज इन तीनो क्रांतिकारियों से बहुत डरे हुए थे।

महात्मा तिलक ने केसरी हिंदी में और मरहटा अंग्रेजी में अखबार निकाला, जिनका एडिटोरियल तिलक महाराज लिखते थे। उनके भाषण में क्रांति की ज्वाला प्रचण्ड हो जाती थी। उनके लेखों में जादुई प्रभाव होता था।

अंग्रेजी सरकार उनसे बडी डरती थी। इसलिए उन्हें गिरफ्तार कर लिया। महात्मा तिलक भारत के प्रसिद्ध वकीलो में एक थे। उन्होंने अदालत मे स्वय काफी बहस की और जजो को हैरान कर दिया। उन्हे आठ वर्ष का कारावास दिया और काला पानी भेज दिया। वहा उन्हे गीता पर एक अद्भुत "गीता रहस्य" किताब लिखी। जेल में कोई लाइब्रेरी नही थी, परन्तु उन्हे इस ग्रन्थ मे वेदो, धर्मशास्त्रों, उपनिषदों के रिफरेंस दिये, यह थी उनकी स्मरण शक्ति। जब वह जेल से बाहर आये तो अंग्रेजी सरकार ने गीता रहस्य पुस्तक उनसे ले ली। सरकार का ख्याल था कि उसमे राजनीति की कोई बात न हो। थोड़े दिनो के पश्चात् अंग्रेजी सरकार ने वापिस करदी। यह ग्रन्थ आज संसार की लाइब्रेरियों मे है। कुछ विद्वानो का कहना है कि गीता रहस्य जैसा ग्रन्थ गीता पर नही लिखा गया है।

अमृतसर को सेना के सुपुर्द कर दिया गया। वहा पर जलियावाला बाग काड मे देशभक्तों को जो उस समय जलसा कर रहे थे, अंग्रेजी सेना के नायक जनरल डायर के आदेश पर गोलियो मे भून दिया गया और इन देशभक्तो के खून से अंग्रेजी सैनिकों ने होली खेली। महात्मा तिलक को इसका बहुत दु:ख हुआ और वह जलियां वाले बाग के काड के बाद अमृतसर पहुंचे।

उस महापुरुष को एक अगस्त, १९२० को मृत्यु ने हम से छीन लिया। उस समय पर महात्मा गांधी ने श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कहा था महात्मा बालगंगाधर तिलक की देशभक्ति कर्मयोग सदैव देशवासियों का पथप्रदर्शन करता रहेगा। ऐसे महापुरुषों की मृत्यु देशवासियों को जीवन देती है।

भारत के इस महान् सपूत का जन्म २३ जुलाई सन् १८५६ को एक ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। आपका नाम बलवन्तराय था जो बाद में बालगंगाधर तिलक के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपने सन् १८७९ में एल० एल० बी० की परीक्षा पास की। आपने मराठी मे केसरी और अंग्रेजी में मराठा अखबार निकाले, जिनके द्वारा उन्होंने आजादी का बिगुल बजाया। उनकी लेखनी आग उगलती थी। उन्होंने कई स्कूल और कालेज खोले, जहां देशभक्ति की शिक्षा दी जाती थी।

पहला महायुद्ध आरम्भ होगया था। उस समय वह लन्दन में गये हुए थे। अंग्रेजी सरकार ने उनको भारत आने नहीं दिया। इग्लेंड में रहते हुए आपने अपने भाषणों और लेखनी द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध काम किया। इस युद्ध मे महात्मा गांधी जो अफ्रीका से भारत लौटे थे अंग्रेजों ने वार्ता की कि यदि अंग्रेज जीत गया तो भारत को आजाद कर देगा। महात्मा गांधी ने उस लडाई में रुपया इकट्ठा करने और फौज की भरती करने का सहयोग दिया। महात्मा तिलक ने गांधी जी को किसी प्रकार का सहयोग न देने की प्रार्थना की कि अंग्रेज धोखेबाज है, इसके चक्कर मे न फसे, परन्तु वह न माने।

अंग्रेज युद्ध जीत गया और अंग्रेजों ने गांधी जी को कहा कि वह भारतवासियों को इस योग्य नही समझते कि भारतवासी राज संभालने के काबिल है।

महात्मा गांधी को इस धोखे का बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने दूसरे कांग्रेसी लीडरों से मिलकर आंदोलन करने की घोषणा करदी। सारे देश में आजादी के लिए हड़तालें जलूस निकाले गये। अंग्रेजों ने इस आंदोलन को दबाने के लिए सेना का प्रयोग भी किया।

यह वीर सपूत हम सब भारतवासियों को रोते बिलखाते छोड़ सदा के लिए इस संसार से विदा होगये। भारत माता के इस अमर सपूत पर हम सब भारतवासी उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनकी याद हमेशा हर भारतवासी के दिल मे ताजा रहेगी।

श्री धूड़मल आर्य साहित्यिक पुरस्कार पं० क्षितीशजी वेदालंकार को

हिण्डोन सिटी। स्थानीय आर्यसमाज द्वारा प्रतिवर्ष आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित साहित्य लेखन के लिए दिया जाने वाला श्री धूड़मल आर्य पुरस्कार इस वर्ष २१ अगस्त योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर सुविख्यात पत्रकार, सम्पादक पं० श्री क्षितीशजी वेदालंकार को चयनिका पुस्तक पर दिया जारहा है।

ज्ञातव्य है कि क्षितीशजी यह सम्मान दिये जाने के साथ ही इसकी एक दशाब्दी पूर्ण हो जायेगी। वैदिक मानवीय विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत विद्वानों के सम्मान तथा उन्हे सामाजिक आत्मीयता प्रदान करने हेतु प्रारम्भ किया गया यह पुरस्कार अब तक आर्यजगत् की नौ जानीमानी हस्तियों को दिया जा चुका है।

—प्रभाकरदेव आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३ गजि. न० P.RTK ८६ मूल्य-सवत् १९३ ... ...

प्रधान सम्पादक—सूबेसिह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—...

वर्ष १६ अंक ३६ १४ अगस्त, १६६२ वार्षिक शुल्क ३०) आजीवन शुल्क ३०१) विदेश मे ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन-पर्व पर—

ब्रह्मनीति, कर्मनीति और राजनीति के प्रवक्ता :

योगेश्वर कृष्ण

—स्व० स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती

बुद्धिमान् और मूर्ख में यही भेद है कि बुद्धिमान् रद्दी से रद्दी पदार्थ को अपने बुद्धि-कौशल से उपयोगी बना लेता है, दूसरी ओर मूर्ख मनुष्य अच्छे से अच्छे पदार्थ को अपने विपरीत बुद्धि-कौशल से पीडोत्पादक बना लेता है। बुद्धिमान् काजल को आंख में डालता है, मूर्ख मुह पर मल लेता है। बुद्धिमान् नमक को उचित मात्रा में दाल शाकादि व्यजनों में डालकर उत्तम स्वादु भोजन उत्पन्न करता है, मूर्ख उसे आख मे डालकर रड़क उत्पन्न करता है। बुद्धिमान् ने डेगची का ढकना उछलते देखा तो आग-पानी को उचित ढंग से मिलाकर रेल ईंजन बना लिया। मूर्खों ने इकट्ठा किया तो हुक्का बना लिया और गुडगुड़ाकर रह गये।

प्रभु-भक्ति से बढ़कर लोक-कल्याणकारी वस्तु ससार में और क्या हो सकती है। परन्तु इस देश के मूर्खों ने यदि अपनी सबसे अधिक हानि की है तो इस भक्ति द्वारा।

कृष्ण महाराज की गीता अथवा सच पूछिये तो द्वैपायन कृष्ण द्वारा वार्ष्णेय कृष्ण के गीता रूप में उपनिबद्ध विचार इस उल्टी भक्ति को समूलोच्छेद करने के लिए ही प्रकट किये गये थे। भक्ति का उद्देश्य है कि मनुष्य अपने आपको इस प्रकार समझे कि मानो वह एक मजदूर है और यदि उसने अपने काम में सुस्ती की तो वह अपने स्वामी से चोरी करके कही बचकर नही जा सकता। उसे विश्राम भी करना है, परन्तु वह विश्राम भी मजदूरी का अंग है। इधर स्वामी ऐसा है जो उसकी मजदूरी का समस्त फल उसे ही दे देता है, अपने पास कुछ नही रखता। दूसरे वह अन्तर्यामी भी हैं। ससार के स्वामी बाहर खड़ा होकर पहरा देते हैं, किन्तु वह प्रभु अन्दर-बाहर सब जगह खड़ा पहरा दे रहा है।

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च। सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्। (गीता १३।१५)

तदन्तरस्य सर्व्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः। (यजु० ४०।५)

वेद कहता है—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत्। (यजु० ४०।२)

इस (इस संसार में) कर्माणि (कर्म) कुर्वन् (करते हुए) एव (ही) जिजीविषेत् (जीने की इच्छा करे)।

अर्थात् विना पुरुषार्थ जीवन बिताने की इच्छा भी न करे। स्वामी कण-कण में बैठा है। "ईशा वास्यमिद सर्वम्" (यजु० ४०।१) बस इसकी ही व्याख्या गीता में की गई है। वह कर्म किस प्रकार का हो ?

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रता। (गीता १२।४)

जो अव्यक्त रूप से भगवान् की भक्ति करते हैं वह भी मुझ तक ही पहुंचते हैं, क्योंकि वे सर्वभूतहित मे पूर्ण परायणता से लगे हुए हैं, इसी मे रमण करते हैं अर्थात् पूर्ण रसास्वाद करते हैं। यह सर्वभूतहितकारी कर्म हमारे जीवन का अंग कैसे बने ?

हम ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व वैश्यत्व अर्थात् ज्ञान द्वारा अज्ञान का नाश (ब्राह्मणत्व) न्याय द्वारा अन्याय का नाश (क्षत्रियत्व), धन-दान द्वारा दारिद्रय का नाश (वैश्यत्व) इन तीन व्रतों मे से एक व्रत को अग्नि रूप में अपने आत्मा में धारण करले यही सच्चा भक्ति मार्ग है। यही संन्यास है, इससे विपरीत कुछ नही।

न निरग्नि. (गीता ६। १)

केवल प्रतीक रूप अग्नि अथवा लोक समक्ष दीक्षा मन्त्र का उच्चारण करना, नित्य अग्निहोत्र करना पर्याप्त नहीं।

न चाक्रियः (गीता ६।१)

उस व्रत के अनुकूल ही आचरण करना, क्रियाहीन अग्नि प्रतीक मात्र है और कुछ नही। शूद्र अग्नि के बिना भी किसी अग्निवाले की सेवा मे लगकर परमगति पा सकता है, परन्तु क्रियाहीन कुछ नही पा सकता। हर मनुष्य सबके सब व्रत एक साथ नही निभा सकता। इसलिए उसे अपने स्वभावानुकूल ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, वैश्यत्व मे से एक न एक कर्म चुन लेना चाहिए। वह उसका स्वय चुना हुआ कर्म है इसलिए स्वकर्म कहलाता है। बस यही स्वकर्म ईश्वर भक्ति का एकमात्र साधन है।

स्वकर्म्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानव.। (गीता १८।४६)

उस अपने स्वयं चुने हुए स्वकर्म द्वारा उस भगवान् की अभ्यर्चना करके मनुष्य मात्र सिद्धि प्राप्त करता है। वर्णो वृणोतेः (निरुक्त) (प्रथम काड २।१४) यही वरण करना ही वर्णत्व है।

अठारहवे अध्याय में ४१ से ४४व श्लोक तक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र तक के स्वभावों का निरूपण किया है। अब मनुष्य अपने स्वभाव को देखे, पहिचानें स्वय जानने की शक्ति न हो प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन, सेवया (विद्वानो के चरणो में प्रणाम करके, उनसे छानबीन करके, उनकी सेवा करके (गीता ४-३४) इस बात का ज्ञान प्राप्त करे और उसके पश्चात् स्वभावानुकूल कर्म का अभ्यास करे और स्ववर्णोचित गुण सम्पादन करे।

इसलिए कहा—

चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्म्मविभागश: ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्धयकर्त्तारमव्ययम् ।। (गीता)

हे अर्जुन ! इस युग में गुणकर्मानुसार चातुवर्ण्य नष्ट होगया था। मैंने उसकी इस युग में सृष्टि की है। परन्तु इस गुण-कर्मानुसारिणी स्वभाव वर्णाश्रित वर्ण-व्यवस्था का अव्यय अर्थात् अनादि अनन्त शाश्वतकर्त्ता तो भगवान् है। जिसने पुरुष सूक्त में इसका उपदेश किया है। इसलिए मुझे इसका शाश्वतकर्त्ता न समझ लेना (अहो सत्यपरायणता ! अहो विनम्रता !)

हे अर्जुन यह "स्वकर्म्मणा" सामने सेवक रूप में सदा उपस्थित रहकर प्रभु की पूजा (अभि+अर्चना) कोई क्षणसाध्य हंसी खेल नहीं। प्रथम तो आसुरी भावनाओं से अभिभूत लोग सर्वभूतहित में प्रवृत्त नहीं होते। (कहते हैं—मुझे क्या, मैंने कोई संसार की भलाई का ठेका लिया है।) कोई मननशील व्यक्ति ही इस ओर झुकते हैं। फिर वे भी मनन तक ही रह जाते हैं, यत्न कुछ नहीं करते।

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद् यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वत: ।।
(गीता ७।३)

मननशीलों में से भी सहस्रों में कोई सिद्धि के लिए यत्न करता है और यत्न करनेवाले सिद्धों में भी कोई पूर्णतया तत्त्व ज्ञान पाता है। यत्न किस प्रकार का ?

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ।। (गीता ६।३५)

स्वकर्म विपरीत आचरणों से निरन्तर विरक्ति तथा अनुकूल आचरणों का निरन्तर अभ्यास होने में सिद्धि मिलती है। अभ्यास की एक-आध दिन नहीं, तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्। जो निरन्तर रात-दिन अभ्यास में जुटे रहते हैं उनके योगक्षेम की चिंता मैं करता हूं। फिर सिद्धि भी तत्क्षण नहीं होती।

तत् स्वयं योगसंसिद्ध: कालेनात्मनि विन्दति ।। (गीता ४।३८)

सच्चे ज्ञान को योगसाधन करनेवाला समय पाकर अपने अन्दर ही पा लेता है। यह समय कितना ?

अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्। (गीता ६।४५)

जन्मजन्मांतर तक साधन करता हुआ पुरुष सिद्ध होकर परमगति को प्राप्त होता है। यह है मनुष्य की परम कल्याणकारी भक्ति।

इसके विपरीत

श्रीमद्भागवत के अजामिलोपाख्यान को देखिये वहां किसकी जन्म-जन्मांतर की साधना ? वहां तो पुत्र का नाम नारायण रख दिया। बस हो गया कल्याण। कोई सन्देह न रहे इसलिए स्पष्ट शब्दों में घोषणा की गई है।

सांकेत्यं परिहास्यं वा स्तोभं जल्पनमेव वा ।
मुरारिनामग्रहणं नि:शेषाघहरं विदु: ।।

संकेत में, उपहास में, तान पलटों में, प्रमत्त प्रलाप में, किसी प्रकार भी मुरारी का नाम मुख से निकल जाये बस वह सबके सब पापों का नाश करनेवाला है, ऐसा विद्वान् जानते हैं।

कहां वह कर्म्ममयी भक्ति ? कहां यह कर्मनाशा भक्ति ?

श्रीकृष्ण सच्चे कर्मयोगी और प्रभुभक्त थे। महाभारत में जहां भी उचित अवसर आया, वे सन्ध्योपासना में लीन होगए, कहीं नहीं चूके। एक दृष्टांत पर्याप्त होगा। कृष्ण शांतिदूत बनकर कौरव सभा में जारहे थे कि सन्ध्या का समय होते ही—

अवतीर्य रथात्तूर्णं कृत्वा शौचं यथाविधि ।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह ।। (५।८२।२१)

रथ से उतरकर, स्नानादि से शुद्ध होकर, घोड़े खोलने का आदेश देकर कृष्ण संध्या में बैठ गये। उन्हें किसी फल में आसक्ति नहीं थी। क्षत्रियोचित कार्य का चुनाव उन्होंने स्वयं किया। मिथ्याभिमानी उन्हें ग्वाला कहकर घृणा करते रहे। परन्तु भीष्म सरीखे विद्वान् ने राजसूय में अर्घ्यदान का अधिकारी श्रीकृष्ण को ही समझा।

यहां हमने एक शब्द मिथ्याकुलाभिमान का प्रयोग किया है। यहां इस पर थोड़ा विचार कर लेना अप्रासंगिक न होगा। कुलाभिमान स्वयं कुछ बुरी वस्तु नहीं। परन्तु मनुष्य को अभिमान करना तो आना चाहिए। अभिमान जब भूतकाल का रूप धारण करता है तो सर्वनाश का कारण होता। जब वह भविष्यकाल का अथवा लक्ष्य प्राप्ति का रूप धारण करता है तो वह परम हितकारक होता है। जैसे—

अहं ब्राह्मणानां कुले जात: तस्माद् ब्राह्मणो भविष्यामि। मया तपसा ब्रह्मचर्येण स्वाध्यायेन त्यागबलेन च ब्राह्मणत्वमुपार्जितव्यम्।

मैं ब्राह्मण के कुल में जन्मा हूं इसलिए ब्राह्मण बनूंगा। मुझे तप से, ब्रह्मचर्य से, स्वाध्याय से और त्याग के बल से ब्राह्मणत्व उपार्जन करना है। इनमें प्रथम अभिमान निरर्थक और दूसरा अभिमान कल्याण-कारक है।

श्रीकृष्ण क्षत्रिय कुल में जन्मे थे परन्तु उन्होंने राजाधिराज दुर्योधन का भोजन स्वीकार न करके उस युग में शूद्र कहलाने वाले विदुर के घर भोजन ग्रहण किया। उन्होंने स्वभावानुसार क्षत्रियत्व का मार्ग चुना। यह उनका वरण (चुनाव) था, स्व+कार्य था। यह थी 'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य' की व्याख्या। इसी के बल पर वे सच्चे भक्त थे।

जन्म जेलखाने में हुआ, परन्तु कभी नहीं रोये कि मुझे बचपन में सुख नहीं मिले।

शिक्षा अज्ञातवास में नन्दगोप के घर हुई, परन्तु आग छिपेगी कहां ?

कंस भारत में गोहत्या का आदि प्रवर्तक था। ससुराल में नरबलि होती थी। जरासन्ध ने १०० राजाओं का सिर काटकर शिवजी पर बलि चढाने का व्रत लिया था। ८६ राजा इकट्ठे भी कर लिये थे परन्तु उसे क्या पता था क्षत्रियशिरोमणि कृष्ण जरासन्ध को मारकर उनका उद्धार करेंगे।

बाल्यकाल में कंस की लीला देखी—

तस्मात् सर्व्वात्मना राजन् ब्राह्मणान् सत्यवादिन: ।
तपस्विनो यज्ञशीलान् गाश्च हन्मो हविर्दुघा: ।।

कंस के मन्त्री कहते हैं कि राजन् ! देव यज्ञों के सहारे जीते हैं और यज्ञ गौ-ब्राह्मण के सहारे। इसलिए आओ सब उपायों से सत्यवादी ब्राह्मण और गाय इन दोनों को मारें।

इस गोहत्या का सबसे अधिक प्रभाव निश्चित रूप से गोपालों पर पड़ा। इनमें एक गोपाल रायाण नाम का बड़ा बुद्धिमान् था। उसने विद्रोह का बीज बोया। राधा नाम की एक गुप्त मण्डली बनी, जो प्रत्यक्ष में तो नाच-गाकर प्रभु आराधना करती थी. परन्तु वास्तव में कंस के विरुद्ध विद्रोह की तैयारी करती थी। बालक कृष्ण भी इस मण्डली में आते जाते थे, क्योंकि यह रायाण कृष्ण का मामा होता था, माता यशोदा का रिश्ते में भाई था। यद्यपि कृष्ण की आयु छोटी थी, परन्तु इनकी विलक्षण प्रतिभा देखकर रायाण मरते समय इस मण्डली का नेतृत्व कृष्ण को सौंप गया। इस घटना की ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में जो दुर्दशा की गई है उसे पढ़कर सिर लज्जा से झुक जाता है, पता नहीं लगता कहां मुख छिपायें ?

इस मण्डली का कीर्तन सारे कंस राज्य में फैला, कंस के प्रति विद्रोही सब नरनारी इस मण्डली में सम्मिलित हुए। सब नरों का एक वेष, सब नारियों का एक वेष। नियत तिथि पर सब वृन्दावन की रेती पर इकट्ठे हुए। सैनिक नियमानुसार डंका बजते ही जो जिस अवस्था में था सब काम छोड़कर अपने स्थान पर पहुँच जाता था।

कंस को कुछ सन्देह हुआ। उसने अक्रूर को पता लगाने भेजा भी, परन्तु वहां तो सारा राष्ट्र विद्रोह के लिए तैयार बैठा था।

रास हुआ। रास किसे कहते हैं ? रास शब्द रस से बना है सो पहले रस क्या है यह समझ लें। यह शब्द 'रस शब्दे' इस भ्वादिगण की धातु से बना है। जब कोई मनोवेग इतना प्रबल हो उठे कि वह चुप न रह सके, वह चिल्ला उठे तब वह रस हो जाता है। जो उस रसवालों

का सम्मिलित गान है वह रास कहलाता है।

यह रस कौन-सा था ?

ऊपर तो शृंगारमय भक्ति रस था। नहीं तो कंस सोया कैसे रहता, परन्तु वास्तव में वीर रस था। सब एक रंग में रंगे थे। कंस कुश्तियों का शौकीन था। हर वर्ष उसके अखाड़े में कुश्तियां होती थीं। एक कोने में नाकेबन्दी थी। वृन्दावन में विशाल स्वयंसेवक सेना (राधा) तैयार खड़ी थी। परन्तु वाह रे संगठन ! जब तक अखाड़े में छलांग मारकर कृष्ण कंस की छाती पर सवार नहीं हो गये किसी को हवा तक नहीं लगी।

कंस का सिर काट लिया गया, परन्तु किसी ने अगुली तक नहीं हिलाई।

कंस मारा गया।

सारी प्रजा हाथ जोड़े खड़ी थी।

"आपने कंस के अत्याचारों से हमारी रक्षा की अब राज्य भी आप ही सम्भालिये।"

"कृष्ण बोले राज्य तो नाना जो सम्भालेंगे।"

"और आप ?"

"हम खोया हुआ राज्य लेने जारहे हैं।"

वेदज्ञ ऋषियों ने मर्यादा बनाई कि चक्रवर्ती राजा का बेटा क्यों न हो, घर के वैभव और विलास के वायुमण्डल में नहीं पलेगा। उसे वशिष्ठ की कुटिया में रहना होगा, जल भरना होगा, समिधा लानी होगी, गाय चरानी पड़ेगी। कठोर तप करके राजा बनने की योग्यता सम्पादन करनी होगी। अयोग्य होगा तो असमंजस को तरह न केवल राज्याधिकार से वंचित होगा, अपितु निर्वासन का दण्ड पायेगा।

राम और भरत इसी शिक्षा पद्धति में पले और बढ़े थे। इसलिये दोनों ने राजमुकुट को ठोकर मारी। किस गर्व से वशिष्ठ मुनि बोले—

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः॥

मैंने अपने शिष्य राम का चेहरा राजगद्दी के लिए निमन्त्रण पर भी देखा। बनवास का आदेश मिलने पर भी देखा, परन्तु दोनों समय विकार की एक रेखा भी माथे पर नहीं देखी। ऐश्वर्य बढ़ा, भोग-विलास बढ़ा, मर्यादा टूटी। क्षत्रियों ने गुरुकुल में जाना बन्द कर दिया। परिणाम ?

जुआरी धर्मराज कहलाए और राजगद्दी के लिए दुर्योधन ने कह दिया—'सूच्यग्रं नैव दास्यामि, विना युद्धेन केशव !' बिना युद्ध के हे कृष्ण ! सूई की नोंक बराबर भी भूमि नहीं दूंगा। हवा नहीं बदली, पानी नहीं बदला, गंगा नहीं बदली, हिमालय नहीं बदला, परन्तु ऐश्वर्य की बाढ़ से गुरुकुलवास की मर्यादा टूटकर बह गई। परन्तु एक ग्वाल-बाल मर्यादा पर अटल था। वह विद्या के सच्चे राज्य की खोज में निकल पड़ा। मथुरा का राज्यमुकुट प्रतीक्षा ही करता रह गया। कृष्ण ने मथुरा छोड़ी और वेद साम्राज्य की खोज में उज्जयिनी पहुंचकर आचार्य सांदीपनि की कुटिया में विश्राम लिया। क्षत्रिय को सच्चा गुरु मिल गया। यहां बैठकर कृष्ण ने कहा कि वेदव्यास जी तो चिल्ला रहे हैं।

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्म्मः किन्न सेव्यते॥

"मैं दोनों भुजा उठाकर चिल्लाकर कहता हूं धर्म से ही अर्थ और धर्म से ही काम प्राप्त होता है परन्तु मेरी सुनता कोई नहीं !"

कृष्ण ने निश्चय किया, मैं सुनूगा और सुनाऊंगा। उन्होंने क्षत्रियों का मार्ग चुना, सोचा महाभारत राज्य तो आज खण्ड-खण्ड हो चुका है। महाभारत तो एक ओर रहा, आज तो भारत भी नहीं रहा, भारत भी सैकड़ों छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया है—मैं खण्ड भारत को भारत और भारत को महाभारत फिर बनाकर रहूंगा। धरती पर धर्म का एकछत्र राज्य होगा। राजा धार्मिक होगा तो सारे विश्व की प्रजा भी धर्मात्मा होगी। 'यथा राजा तथा प्रजा' उस महापुरुष ने आचार्य सांदीपनि की कुटिया में जहां विद्या का राज्य प्राप्त किया, वहा साथ ही साथ चरित्र का राज्य भी प्राप्त किया।

ब्रह्मचर्य की समाप्ति पर वीरोचित मार्ग से रुक्मिणी का उद्धार करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया, उत्तम सन्तान की अभिलाषा थी। पति-पत्नी दोनों ने प्रथम रात्रि को वासक शय्या पर बैठक ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया। प्रात.काल ही उठकर हिमालय की ओर चल पड़े, जिस स्थान पर आज बद्रीनाथ धाम है वहा १२ वर्ष घोर ब्रह्मचर्य पालन किया १२वें वर्ष केवल बेर खाकर जीवन बिताया, इसलिए कृष्ण बदरीनाथ और वह स्थान बदरीनाथ धाम कहलाया।

फल

प्रद्युम्न जैसा पुत्र पाया, जिसने उनकी अनुपस्थिति में द्वारिका की रक्षा की। धुन एक थी--महाभारत राज्य की स्थापना करने की, स्वयं राज्य करना नहीं चाहते थे। भारत के राजवंश की ओर दृष्टि पडी, अन्धकार। फिर भी राजनीतिज्ञ जो-जो सामग्री मिले उसी से काम चलाता है। एक ओर भोगी-विलासी, ईर्ष्यालु, अन्यायी, जुआरी दुर्योधन था। दूसरी ओर सत्यवादी, न्यायप्रेमी, ईर्ष्यारहित चित्रसेन गन्धर्व की कैद से दुर्योधन को छुड़ानेवाला जुआरी युधिष्ठिर था। अन्धों मे काना राजा, जुआरी तो दोनों थे परन्तु युधिष्ठिर मे केवल एक यही दोष था। वेदज्ञ कृष्ण इसके घोर विरोधी थे। महाभारत के वनपर्व के १३वें अध्याय में स्पष्ट कहा है कि युधिष्ठिर जब तुम लोग जुआ खेल रहे थे, मैं एक युद्ध पर गया हुआ था। नहीं तो बिना बुलाये पहुंचकर धृतराष्ट्र को समझाता, यदि वह न मानता तो 'निगृह्णीया बलेन तम्' उससे बल-पूर्वक अपनी बात मनवाता, उसके सलाहकारों को प्राणदण्ड देता। पर वह समय तो हाथ से निकल गया। राजसूय के समय धरती पर जिस एकछत्र साम्राज्य की स्थापना हुई थी उसके सम्बन्ध में शिशुपाल जैसे अभिमानी को भी कहना पड़ा था—

वयन्तु न भयादस्य कौन्तेयस्य महात्मनः।
प्रयच्छामः करान् सर्वे न लोभान्न च सान्त्वनात्॥
अस्य धर्म्मे प्रवृत्तस्य पार्थिवत्वं चिकीर्षतः।
करानस्मै प्रयच्छाम. सोऽयमस्मान्न मन्यते॥
(महा० २।३४।१२।१३)

"हम इस महात्मा युधिष्ठिर को कर देते हैं सो न तो भय से, न लोभ से, न खुशामद से। पृथिवी पर एकछत्र राजा बनाने के लिए इसने अपनी प्रजा का पालन अति तत्परता से किया। इसे धार्मिक प्रवृत्ति में सर्वश्रेष्ठ समझकर हम सब इसे स्वेच्छा से कर देते हैं और अपना राजा मानते हैं।

परन्तु युधिष्ठिर की यह धर्मप्रवृत्ति जुये रूप अधर्म में प्रवृत्ति से ऐसी नष्ट हुई कि बना बनाया महाभारत राज्य एक दिन में नष्ट हो गया।

परन्तु कृष्ण तो सच्चे प्रभुभक्त थे और किसी ऐहिक कामना से नहीं केवल सर्वभूतहित कामना से प्रेरित थे। इसलिए युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अपने जीवन के लक्ष्य की पूर्ति को चरम सीमा पर पहुंचते देखकर भी उन्हें मद छू तक नहीं गया। उल्टा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उन्होंने ब्राह्मणों के चरण धुलाने का काम स्वयं अपने हाथों में लिया।

ऐसे होते हैं प्रभुभक्त !

भक्त लोग ऐसे प्रभुभक्तों के भक्त बनकर भी अपना कल्याण कर सकते हैं परन्तु यह भक्ति भी सीखनी पड़ती है। आज हमारे देश में सहस्रों नरनारी कृष्ण-कृष्ण, राधे-कृष्ण' आदि शब्दों से कृष्ण को याद करते है। कृष्ण अपने जीवनकाल में पूजे गये। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उन्हें अर्घ्यदान मिला और युधिष्ठिर की ओर से दुर्योधन के पास जब वे शांति सन्देश लेकर गये थे तब भी सारे रास्तेभर उनका स्वागत हुआ, परन्तु इस थोथी भक्ति से कुछ लाभ नहीं। कृष्ण स्वय बताते हैं कि यदि तुम मेरे भक्त बनना चाहते हो तो क्या करो ? वे कहते हैं कि–'मद्भक्त एतद् विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते।'

(शेष पृष्ठ ४ पर)

भारतीय संस्कृति नाचना-गाना नहीं अपितु ४ वर्ण तथा ४ आश्रम व्यवस्था है—स्वामी सर्वानन्द सरस्वती

प्रतिवर्ष की भांति आर्यजगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान् पं० बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती) की जयन्ती के अवसर पर १ अगस्त, ९२ को हिमाचल भवन नई दिल्ली में आर्यजगत् के सर्वमान्य नेता स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इसमे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रमुख अधिकारी तथा कार्यकर्त्ता एवं गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल झज्जर (हर०), गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली, गुरुकुल प्रभात आश्रम, स्वामी समर्पणानन्द शोध संस्थान साहिबाबाद, वैदिक आश्रम गाजियाबाद (उ०प्र०) के अधिकारी व छात्र भारी संख्या मे उपस्थित हुए।

इस अवसर पर प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार द्वारा वैदिक साहित्य के प्रसिद्ध ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण के हिन्दी भाष्य के दूसरे खण्ड का लोकार्पण भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने करते हुए अपने भाषण में कहा कि ईश्वर ने वेदों की रचना ससार के अज्ञान को दूर करने के लिए की है। ऋषि दयानन्द ने वेदों का हिन्दी मे भाष्य करके ससार का बडा उपकार किया है। हमे उन्होंने रूढियों से निकाला और सन्मार्ग दिखाया। उन्ही के पदचिन्हों पर चलते हुए उनके शिष्यो स्वामी समर्पणानन्द जी तथा स्वामी दीक्षानन्द जी आदि विद्वानों ने शतपथ ब्राह्मण जैसे ग्रथ को हिन्दी मे प्रकाशित करवाकर अनुकरणीय कार्य किया है।

प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इस अवसर पर बोलते हुए बताया कि शतपथ का अर्थ सौमार्ग है। इन मार्गों पर चलते हुए मानव को अपनी उपलब्धी तथा सम्भावना पूरी करने का यत्न करना चाहिए। पृथ्वी तथा मानव एक है। अतः वेद के उपदेश के अनुसार मानव को मानव से भेद नही करना चाहिए।

समारोह के अध्यक्ष श्री स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती ने उपस्थित नरनारियों को सन्देश देते हुए कहा कि हमें वेदादि आर्ष ग्रन्थों का दैनिक स्वाध्याय करना चाहिए। स्वाध्याय की परम्परा बन्द होने पर ही हमारा पतन आरम्भ हुआ है। आपने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि भारत सरकार नाचने तथा गाने को ही भारतीय सस्कृति मानती है, परन्तु वास्तव में भारत की सस्कृति ४ वर्ण तथा ४ आश्रम हैं। इनके अपनाने पर ही हमारी समस्त समस्याओं का समाधान हो सकता है। नाचने तथा अश्लील गानो से भारतीय संस्कृति बदनाम हुई है। आपने परामर्श दिया कि हम राष्ट्ररक्षा के लिए वैदिकधर्म ग्रन्थ पढ़ें तथा अपने राष्ट्र की बनी हुई वस्तुओ का ही उपयोग करना चाहिए। इस समारोह मे स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्री रामनाथ सहगल, श्री वीरपाल विद्यालंकार, श्री सोमपाल सासद, श्री सुभाष विद्यालंकार, आचार्या सावित्री आर्या आदि विद्वानों के भी भाषण हुए।

—केदारसिंह आर्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

यदि तुम मेरे भक्त बनना चाहते हो तो मेरे सदृश बन जाओ। जैसा मैं स्वकर्मणा अर्थात् अपने चुने हुए क्षात्रधर्म के मार्ग से अपने प्रभु की निष्काम भाव से अर्चना करता हूं। ऐसे ही तुम भी अपना-अपना मार्ग चुनकर चातुर्वर्ण्य के द्वारा पूर्ण कर्मयोगी बनकर प्रभु की स्वकर्मणा अभ्यर्चना करो। हम 'कृष्ण-कृष्ण, राधे-कृष्ण' आदि के व्यर्थ कंठपेषण में न पडकर क्या करें, यही गीता के १८वें अध्याय में बताया गया है। यह जीवन शयनक्षेत्र नहीं है, कुरुक्षेत्र है, इसलिए कर्म करो, क्या करो? गीता के अनासक्त कर्मयोगमय भक्ति को झोंपड़ी-झोंपडी तक पहुंचाओ।

आर्यसमाज मन्दिर से ओ३म्-ध्वज उतारने के अपराध में २२ वर्षीय मुस्लिम युवक को १ वर्ष ३ मास की सजा और १५०० रु० जुर्माना

मुधोल (कर्नाटक) २४ जून। कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सत्यव्रत ने एक पत्र के द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को यह सूचित किया है कि आर्यसमाज मुधोल के गुम्बद से एक २२ वर्षीय मुस्लिम युवक अहमद को ओ३म्-ध्वज उतारकर अपमान करने के जुर्म में भारतीय दण्ड सहिता २९५ तथा ५०६ के अन्तर्गत १ साल ३ माह की कैद तथा १५०० रु० जुर्माना अदा करने की सजा दी है। जुर्माना अदा न करने पर ४ माह की अतिरिक्त कैद का प्रावधान भी किया गया। इसके अतिरिक्त ध्वज को शिकायतकर्त्ता आर्यसमाज मुधोल के प्रधान जी को सादर वापिस करने के लिए कहा गया।

३१-१२-८९ को रात्रि लगभग ११ बजे आर्यसमाज कार्यालय से उक्त २२ वर्षीय मुस्लिम युवक अहमद पुत्र श्री हासिमसाब ने ओ३म्-ध्वज उतारने की कुचेष्टा की और कुछ चश्मदीद आर्यसमाजियो द्वारा आपत्ति किये जाने पर उस युवक ने चाकू निकाल लिया और उन्हे जान से मारने की धमकी दी और तेजी से ध्वज सहित घटनास्थल से भाग गया। इसकी सूचना आर्यसमाज मुधोल के प्रधान श्री वेंकटराव को दी गई, जिन्होने इस आशय की रिपोर्ट पुलिस स्टेशन मुधोल में दर्ज कराई। इस रिपोर्ट के आधार पर तथा सर्वश्री नरेश और वकट रेड्डी की गवाही के आधार पर पुलिस ने पूरी जाच की तथा मुस्लिम युवक को हैदराबाद मे गिरफ्तार किया गया।

मुकदमे का निर्णय देते हुए विद्वान् न्यायाधीश ने कहा कि मुल्जिम के इस कुकृत्य के कारण क्षेत्र में साम्प्रदायिक तनाव भडक सकता था, क्योंकि ओ३म् पताका आर्यसमाज का पवित्र ध्वज है जिसे सदैव आर्यसमाज मन्दिरों और कार्यालयों के ऊपर फहराया जाता है। अभियुक्त ने जान-बूझकर आर्यसमाज की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के उद्देश्य से आर्यसमाज मन्दिर से रात्रि ११ बजे यह ध्वज उतारा। विद्वान् न्यायाधीश ने अपने निर्णय दिनाक २४-६-९२ के अन्त में यह भी कहा कि समाज में धार्मिक सद्भाव बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार के घिनौने कुकृत्यों की पुनरावृत्ति हर हालत में रोकी जाये। इसलिए यह अभियुक्त किसी प्रकार की दया का पात्र नही है।

इस समस्त मुकदमे की पैरवी के लिए आर्यसमाज मुधोल के समस्त अधिकारीगण तथा कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आर्यमित्र और मन्त्री श्री सत्यव्रत धन्यवाद के पात्र हैं।

—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५, आसफअली रोड, नई दिल्ली-२

अन्तरंग सभा तथा विद्या परिषद् की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दयानन्दमठ रोहतक में दिनांक २३ अगस्त, ९२ रविवार को प्रातः ११ बजे होगी। इसमें हरयाणा प्रदेश में वेदप्रचार प्रसार तथा शराबबन्दी अभियान को और अधिक गतिशील बनाने का कार्यक्रम तैयार किया जावेगा। इस अवसर पर शराबबन्दी कार्य में रुचि रखनेवाले प्रमुख कार्यकर्त्ताओं को आमन्त्रित किया गया है।

इसी दिन दोपहर बाद आर्य विद्या परिषद् हरयाणा की कार्य समिति की भी बैठक होगी।

—सभामन्त्री

शराब के ठेके का विरोध

वर्जितक्षेत्र (थर्मल प्लांट पानीपत) में अनधिकृत शराब का ठेका खुलने से थर्मल कालोनी पानीपत के विशिष्ट निवासियों की आम सभा दिनांक १९-७-९२ को प्रातः १०॥ बजे आर्यसमाज मन्दिर थर्मल कालोनी पानीपत के सत्संग भवन में हुई। सभा में इसे हटाने हेतु गम्भीरता से विचार विमर्श हुआ और यह निर्णय लिया कि स्थानीय प्रशासन एवं सरकार से इसे हटाने हेतु प्रार्थना की जाये और यह पुनः एक कि०मी० की दूरी से चार दिवारा से पहले न स्थापित हो जाये। साथ मे यह निर्णय भी लिया कि यदि प्रशासन इस ओर कोई ध्यान नही देता है तो ठेके के सामने धरना दिया जायेगा। क्योकि कालोनी वासियो में बड़ा रोष है।

इसके यहा रहने से गुण्डागर्दी तो रही है। यह कालोनी व प्लांट के आम रास्ते पर है। दिन व रात्रि देर तक यहा से आना जाना रहता है। विशेषकर माताओं व बहिनों के आने-जाने में बड़ी कठिनाई हो रही है। शराबी हुल्लड़बाजी करते रहते हैं, जिससे किसी भी समय कोई अप्रिय घटना हो सकती है। यदि समय रहते प्रशासन ने इस ओर ध्यान नही दिया तो संघर्ष समिति को संघर्ष की राह अपनानी पडेगी।

—वेदपाल आर्य प्रधान

शराब हटाओ,
देश बचाओ

ऋषि दयानन्द का उपकार

दयानन्द ने आन जगाई हे—हम सोवें थी मेरी बहना। टेक

१—पाखण्डी लोग ठगें थे—
ठगों को लूट से बचाई हे—आज धोखे में कोई रहना।
२—पीर फकीर मढी पूजतो—
पूज्य सास और गौ बताई हे—वेदे फले धर्म का टहना।
३—हम अनपढ़ मूर्ख रहे थी—
पढ़ा करके विदेशी बनाई हे—पहनाया विद्या गहना।
४—हमे पैर की जूती कहे थे—
देवी की पदवी दिलाई हे—उन जैसा और कोई है ना।
५—ढोंगियों के झाडे लगे थे—
हमें गायत्री जपवाई हे—चाहिए ध्यान ईश्वर में रहना।
६—पति आज्ञा पालन करना—
यू कहे रतनसिंह भाई हे—सब मानो ऋषि का कहना।

—रतनसिंह आर्य

पुरोहित की आवश्यकता

प्रार्थी योग्य एवं अनुभवी हो तथा सभी प्रकार के वैदिक सस्कार करानें मे निपुण हो। आवेदन-पत्र मन्त्री, आर्यसमाज माडल टाउन, सोनीपत को १५ दिन के अन्दर भेजें।

—द्वारकाप्रसाद
मन्त्री आर्यसमाज माडल टाउन, सोनीपत

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

क्रम	नाम	रुपये
१	श्री मा० मोहरसिंह सु० टेकराम आर्य आदर्शनगर गोहाना जि सोनीपत	५१
२	,, मा० रतनसिंह आर्य सु० श्योचन्द वार्ड न० १५ गली न० १ गोहाना जि० पानीपत	५१
३	,, सत्यनारायण व ब्रजभूषण फर्म अनाज गोहाना जि० सोनोपत	५१
४	,, करतारसिंह सूबेदार सु० प्रभुराम आर्य बरोदा रोड गोहाना जि० सोनीपत	५१
५	,, ईश्वरदत्त कौशिक प्रबन्धक कृषि एवं विकास बैंक गोहाना जि० सोनीपत	२१
६	,, डा० धर्मवीर एम० बी० एस० गोहाना जि० सोनीपत	२१
७	,, डा० धर्मचन्द नरवाल जनता हस्पताल गोहाना ,,	२१
८	,, हवासिंह देशवाल सु. श्रीचन्द आदर्शनगर ,, ,,	२५
९	,, किशनसिंह सांगवान जीद रोड ,, ,,	२१
१०	,, सुमेरसिंह पुराना बस अड्डा ,, ,,	३७
११	,, जिलेसिंह आर्य सु० प्रीतसिंह ग्राम चिड़ाना ,,	५१
१२	,, सुनहरासिह सूबेदार ,, ,,	५१
१३	,, सूबेसिंह सु० लहरीसिंह ,, ,,	२१
१४	,, महावीरसिंह सरपंच ,, ,,	२१
१५	,, होशियारसिंह सूबेदार ,, ,,	२१
१६	,, जगदीशचन्द्र ,, ,,	२१
१७	,, फतेहसिंह ,, ,,	२६
१८	,, सुखवीरसिंह आय ग्राम पूठर जि० पानीपत	२१
१९	,, बलवानसिंह सु० चन्दगीराम ग्राम चमराड़ा जि० पानीपत	५१
२०	,, मा० आनन्दसिंह आर्य ग्राम बलीकुतुबपुर जि० सोनीपत	५१
२१	,, पं० जयनारायण सु० रामदिया ,, ,,	५१
२२	,, सुलतानसिंह सु० पालीराम ,, ,,	५१
२३	,, शोभाचन्द आर्य सु० जसराम ,, ,,	५२
२४	,, सुलतानसिंह सु० भलेराम ,, ,,	५१
२५	,, फतेहसिंह सु० श्योचन्द ,, ,,	५१
२६	,, जोगीराम सु० रामदिया ,, ,,	५१
२७	,, सूबेसिंह सु० रतनसिंह ,, ,,	५१
२८	,, रामकिशन सु० मांगेराम ,, ,,	५१
२९	,, मा० भोमसिंह सु० गूगनसिंह ,, ,,	५१
३०	,, राजसिंह सु० सहीराम ,, ,,	५१
३१	,, रणवीरसिंह सु० मा० रामचन्द्र ,, ,,	५१
३२	,, फकीरचन्द आर्य सु० नन्दराम ,, ,,	५१
३३	,, आजादसिंह सु० मांगेराम ,, ,,	५१
३४	,, हैडमास्टर रामस्वरूप ,, ,,	५१
३५	,, शीशराम सु० मुलाराम ,, ,,	५३
३६	,, प्रेमसिंह सरपंच ,, ,,	५१
३७	,, महेन्द्रसिंह प्रधान ,, ,,	५१
३८	,, रामसिंह भू०पू० सरपंच ,, ,,	५१
३९	,, किशनसिंह ग्राम नयाबास ,,	२१
४०	श्रीमती सावित्री देवी धर्मपत्नी मा० रामकिशन नयाबांस जि० मोनीपत	५१
४१	श्री मागेराम सु० मुण्डराम नयाबांस जि० सोनीपत	५१
४२	,, सत्यपाल सु० हरिराम ,, ,,	५१
४३	,, सुरजाराम प्रधान ,, ,,	५१
४४	,, बलवानसिंह ,, ,,	५१

क्रम	नाम	रुपये
४५	श्री धर्नसिंह नयाबांस जि० सोनीपत	५१
४६	,, धर्मसिंह ,, ,,	५१
४७	,, जिलेसिंह ,, ,,	५१
४८	,, झण्डूराम वर्मा ग्राम व पो० खुबड़ू ,,	५१
४९	,, धर्मवीर आर्य ,, ,,	५१
५०	,, रामकिशन ,, ,,	५१
५१	,, रघुनाथसिंह आर्य नजफगढ नई दिल्ली	२५
५२	,, खजानसिंह सरपंच एडवोकेट ग्राम झाडसा जि० गुडगांव	५१
५३	श्रीमती कैलाश पाहवा मैनेजर आर्य दीप एजुकेशनल सोसायटी तावड़ू गुडगाव	२५
५४	श्री प्यारेलाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज तावड़ू गुडगावा	५१
५५	,, धर्मवीर आर्य प्रधान ,, सोहना ,,	२१
५६	श्रीमती छोटी देवी धर्मपत्नी मुसद्दीलाल प्रधान आर्यसमाज बनार जि० जयपुर (राज०)	५१
५७	श्री अत्तरसिंह आर्य सु० मोतीराम आर्य नारनौल जि. महेन्द्रगढ़	२१
५८	मन्त्री आर्यसमाज कौराली त० बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	५१
५९	श्री सुखवीरसिंह सु० जयदयालसिंह आदर्शनगर गन्नौर जि० सोनीपत	५१ ५१
६०	,, मा० सतवीरसिंह सु० मोजीराम ग्राम भगवतीपुर जि० रोहतक	५१ ५१
६१	,, चौ० जागेराम सु० छोटूराम ग्राम गढ़ीराजलू जि. सोनीपत	५१
६२	,, इन्द्रसिंह शास्त्री सु० बारुराम ग्राम शादीपुर जुलाना जि० जींद	५१
६३	,, चौ० रणधीरसिंह सु० चौ० सुरतसिंह शादीपुर जुलाना जि० जींद	५१
६४	,, मा० जगदीशराम सु० चन्दनसिंह शादीपुर जुलाना जि० जींद	५१
६५	,, चौ० जगतसिंह सरपंच ग्राम भगवतीपुर जि० रोहतक	५१
६६	,, चौ० हरिसिंह नम्बरदार ,, ,,	५१
६७	,, रणवीरसिंह सरपंच ग्राम सरगथल जि० सोनीपत	५१
६८	', प्रीतमसिंह सु० मूलाराम ग्राम कासन्डा ,,	५७
६९	आर्यसमाज मन्दोला जि० भिवानी	६२
७०	आर्यसमाज डाढ़ीपाना ,,	६८
७१	श्री राजेन्द्र आर्य सु० प्रहलाद ग्राम एतमादपुर जि० फरीदाबाद	५१
७२	,, रिछपालसिंह यादव (भगत जी) सराय ख्वाजा ,,	५१
७३	आर्यसमाज नगीना जि० गुडगावां	५१
७४	,, मालव ,,	५१
७५	श्री चन्द्रकिरण त्यागी ग्राम ददसिया जि० फरीदाबाद	३१
७६	,, ईश्वरसिंह आर्य ग्राम मिर्जापुर ,,	५०
७७	,, तिलकराज ग्राम मेवला महाराजपुर ,,	२१
७८	,, थानसिंह बंसल आर्य लखीनगर ,,	२१
७९	,, राजेशकुमार आर्य ग्राम कौराली ,,	२५
८०	,, हरिदत्त आर्य सैक्ट्री पंचायत ,, ,,	२५
८१	,, रविकांत आर्य मोलड़बन्द नई दिल्ली-४४	२१
८२	,, सोवरणसिंह बंसला लखीनगर जि० फरीदाबाद	३१
८३	,, सादुलसिंह आर्य ,, ,,	२१
८४	,, विश्वबंधु धर्मल इन्जिनियरिंग सै. ३७ ,,	२१
८५	,, नरेन्द्रकुमार सूद सै० २८ ,,	१७
८६	,, रामपालसिंह हुड्डा ग्राम दयालपुर ,,	११
८७	,, ला० लोकूराम आर्य ग्राम गोंछी त० बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	११

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

नेता और समाज

दूर गरीबी करनी है तो पूछो बात गरीबों की।
लीडर लोगो जुट जाओ करने को हिमायत गरीबों की ॥टेक

कली—नाम गरीबों का लेकर के रुतबा हासिल कर लेना।
बता शराफत है कैसी उल्टा उन्ही को दु:ख देना।
अगर झूठ है तो बतलादो तुमने क्या देखी है ना।
भाई भतीजेवाद दु:ख पड़ता है निर्बल को सहना॥

तोड़—चौबीस घण्टे में एक घण्टा सुनो शिकायत गरीबों की।
कष्ट गरीबों के जानो तो बैठ गरीबों में आकर।
टूटी खाट और फटी गूदड़ी बैठ उसी को फैलाकर।
प्याज की गन्ठी सूकी रोटी चटनी से देखो खाकर।
मानेगी एहसान आपका सारी जमायत गरीबों की॥

कष्ट गरीबों के क्या जाने सेठजी बडे पेटवाला।
काम करे ना करोड़पति जिसके यहां धन्धा हो काला।
उसी के यहा जब नेता ठहरे पीवे जूसों का प्याला।
हवा के नीचे हवा करे दिन में बिजली का उजाला।
एयरकडीशन मत देखो, देखो टूटी छात गरीबों की॥

जहा गरीबों से नफरत हो वहा गरीबी हटती ना।
हटना तो रहा दूर सज्जनो मामूली भी घटती ना।
कथनी करनी मे जहा अन्तर वहा आपदा कटती ना।
इसीलिये तो भजनलाल की नेताओं से पटती ना।
नही गरीबी रहे खडी मिल जाये सब रियायत गरीबों की॥

कवित

तन पर होय वस्त्र और रहने को मकान होय,
उदर पूर्ति लिये घर मे होय आटा जी।
रोग के निवारनार्थ औषधि प्राप्त होय,
शिक्षा द्वारा निकले दिल से दानवता का काटा जी।
यथायोग रोजगार प्राप्त होय युवकों को,
शासकवर्ग समझे सबका नफा और घाटा जी।
कहे रतनसिंह देशवासियों को न्याय मिले,
फिर बनो बेशक कोई मोदी बिरला टाटा जी।

प्रस्तुतकर्त्ता—भजनलाल आर्य
उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
ग्राम मीतरौल, फरीदाबाद

यह हंगामा कैसा ?

हमने एक धार्मिक समाज मे हगामा देखा,
बडा आश्चर्य हुआ मनमे बार-बार सोचा,
एक श्रेष्ठ समाज मे यह हगामा कैसा ?
अनुभव बताता है कि झगडे कहा होते हैं ?
जहा पर स्त्री, धरती और होता हे पैसा ?
किसी गरीब समाज मे कभी ऐसा नही होता ॥१

पहरेदार सावधान करता है पर कोई नही सुनता है,
सह-शिक्षा को बन्द करो, महर्षि दयानन्द कहता है,
यह धरती श्रीराम कृष्ण और महात्माबुद्ध की है,
धम की रक्षा हेतु यहा कुर्बानी अनेक वीरों ने की है,
यहा छलकपट और अन्याय नही चलता है,
हेराफेरी करनेवाला पोडाये सह-सह कर मरता है ।२

धार्मिक समाज के नियम देखो क्या कहते हैं,
श्रद्धाहीन जन इनका पालन नहीं करते हैं,
इनकी दृष्टि तो केवल समाज के लाखों पर है,
लगाओ चूना, बनाओ घर को, वेदप्रचार मे क्या रखा है,
बुझ रही अग्नि, छारहा अन्धेरा, बल्ब फ्यूज कर दिये सारे,
बन्द रहे समाज तो अच्छा है, खुलने पर सिरदर्द है प्यारे ।३

—देवराज आर्य मित्र
आर्य आश्रम आदर्शनगर
डी ब्लाक मलेरना रोड बल्लभगढ़, फरीदाबाद

श्रीकृष्ण जी हमारे

तर्ज—रहा गर्दिशों मे हरदम मेरे ...

तुम थे महान् योगी श्रीकृष्ण जी हमारे।
हम कैसे भूल सकते तप त्याग को तुम्हारे॥

ग्वालों के साथ ऐसे लगते थे तुम अलग से।
जैसे हो चाद तुम और ग्वाल सब सितारे॥१

कितना कठोर व्रत था ब्रह्मचर्यव्रत को पाला था।
करके विवाह फिर भी थे बारह वर्ष गुजारे॥२

अर्जुन को देख कायर गीता का ज्ञान देकर।
अर्जुन की वीरता ने दिखा दिये नजारे॥३

वासुदेव देवकीसुत धन्य है तेरा 'जीवन'।
श्रद्धा से सिर झुकाते, हम चरणों मे तुम्हारे॥४

रचयिता—रामसुफल शास्त्री विद्यावाचस्पति
आर्यसमाज सगरूर (पजाब)

जोधपुर में डा० दीनबन्धु का स्वागत

अमेरिका में वैदिक प्रचार मिशन के संचालक और आप्रवासी भारतीय डा० दीनबन्धु चन्दोरा का उनके मूल निवास स्थान जोधपुर आगमन पर भव्य स्वागत किया गया। इस उपलक्ष्य में आर्यसमाज सरदारपुरा जोधपुर मे २२ जुलाई को साय प्रो० भवानीलाल भारतीय के सभापतित्व मे एक स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नगर की आर्यसमाजों की ओर से उनका अभिनन्दन किया। आपके प्रास्ताविक भाषण में डा० भारतीय ने विदेशों और विशेषत: अमेरिका महाद्वीप मे आर्यसमाज को बढती हुई गतिविधियो की चर्चा की तथा डा० दीनबन्धु के प्रचार कार्य की प्रशसा की। तत्पश्चात् आगन्तुक अतिथि ने अमेरिका में धर्मप्रचार में आनेवाली कठिनाइयो का विवरण दिया तथा भारत के आर्यो से निवेदन किया कि वे पाश्चात्य देशों में आर्यसमाज के सिद्धातों का प्रचार करने मे वहा के लोगो को सहयोग प्रदान करें। —मन्त्री

स्वतन्त्रता संग्राम के अमर शहीद मदनलाल धींगड़ा

जिन्हें इंग्लैंड में १७ अगस्त, १९०९ को फांसी पर लटका दिया था

ले०—डा० शांतिस्वरूप शर्मा पत्रकार कुरुक्षेत्र

पंजाब तो वैसे भी वीरता का गढ है। यहा के लोगों ने साईस व वीरता के अनोखे उदाहरण पेश किये हैं। फिर स्वतन्त्रता आंदोलन में यह प्रदेश पीछे कैसे रह सकता था। इसके वीर सपूत समय-समय पर देश की स्वतन्त्रता के लिये अपना बलिदान देते रहे तथा पुरानी परम्पराओं को जारी रखे रहे। एक ऐसे ही वीर क्रांतिकारी नवयुवक थे मदनलाल धींगडा।

मदनलाल धींगडा का जन्म पंजाब के एक समृद्ध परिवार में हुआ था। माता-पिता ने उच्च शिक्षा के लिये आपको इंग्लैंड भेजा। उन्हें पूरी उम्मीद थी कि उनका पुत्र इन्जिनियरिंग की डिग्री लेकर भारत लौटेगा व एक बडा इन्जिनियर बनेगा। परन्तु उन्हें कहां पता था कि उनका यह सपूत देश की आजादी के लिये अपना बलिदान देकर महान् क्रांतिकारी शहीदों की शृंखला में जा खडा होगा।

भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन कब से आरम्भ हो चुका था। देशभक्तों ने देश को आजाद करने की कसमें खाकर अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। कितने जेलों मे यातनायें सहते रहे। बस इसी आशा के साथ कि कभी तो उनकी माता को अंग्रेज भेडिये, राक्षसों से छुटकारा मिलेगा ही। कुछ क्रांतिकारी विदेशों मे भी चले गये थे और वहीं से स्वतन्त्रता आंदोलन में अपना अंशदान कर रहे थे।

इंग्लैंड में भी ऐसे वीर तरुण रह रहे थे जिन्होंने अंग्रेज सरकार की रातों की नींद हराम कर रखी थी। इंग्लैंड मे अध्ययन कर रहे मदनलाल धींगडा को भी वहा क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां 'भारत भवन' नाम की एक संस्था स्थापित हो चुकी थी। आप भी इस संस्था के सक्रिय सदस्य बन गये। वीर सावरकर इस संस्था के द्वारा कितने ही दृढ निश्चय वाले भारतीय तरुणों को देश सेवा की दीक्षा दे चुके थे। क्रांतिकारी नौजवान कन्हाई-लालदत्त, सत्येन्द्र वसु व खुदीराम बोस को फांसी दी जा चुकी थी। इसलिये इन नवयुवकों का गर्म खून खोलना स्वाभाविक ही था। वीर सावरकर के भाई को एक कविता लिखने के कारण ही काला पानी भेज दिया गया था। ऐसा घोर अन्याय उन विद्या व बलबुद्धि समृद्ध नव-युवकों को कहां सहनीय हो सकता था।

आपने भी जब अपनी सेवायें अर्पित का तो वीर सावरकर व आप में लम्बी बातचीत हुई। सावरकर ने एक कील मगवायी व आपके हाथ मे गाड दी। खून बह निकला, परन्तु वीर मदन ने उफ तक न की। सावरकर गद्गद् हो उठे। कील दूर फेंक उन्होने आपको सीने से लगा लिया। पहली परीक्षा में आप सफल होगये थे।

भारत भवन में आपने जाना बन्द कर दिया। आपने बहुत से अंग्रेज अधिकारियो से सम्बन्ध स्थापित कर लिये। लार्ड कर्जन वाइली जिसने भारत में निर्दयता, नीचता व वहशीपन की हद करदी थी, इंग्लैंड के भारत भवन में मुकाबले मे एक क्लब स्थापित करली थी। आप भी इसी क्लब के सदस्य बन गये। लार्ड कर्जन वाइली को पहला निशाना बनाने का आपने मन ही मन मे निश्चय कर लिया।

लार्ड वाइली के अत्याचारों का बीस वर्ष का लम्बा इतिहास था। वह बहुत ही हृदयहीन, दुष्ट, धूर्त व कुख्यात व्यक्ति था जिसने न जाने कितने भारतीय नौजवानों को फांसी के तख्ते पर लटकवाया था। ऐसा पिशाच अब इंग्लैंड में बडे मजे से रह रहा था। वह भारत सचिव का मुख्य सलाहकार था। वास्तव मे वह ही भारत सचिव का हर क्षेत्र में नीति सम्बन्धी कार्य करता था। सच तो यह था कि भारत सचिव व भारत सरकार को वह ही नियन्त्रण करे बैठा था। इंग्लैंड में अध्ययन या अन्य जितने भी विद्यार्थी आते थे वह उन पर पक्की निगरानी रखता था। उनसे गुप्तचर क्रांतिकारियों की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें हैरान परेशान किये रहते थे। वीर सावरकर के अग्रज गणेश सावरकर को उसी ने देश-निर्वासन की सजा दिलवाई थी। आपके पिता के भी उससे मधुर सम्बन्ध थे। इसलिये ऐसे दैत्य की हत्या का काम आपको ही सौंपा गया।

एक जुलाई सन् १९०९ की बात है। लार्ड कर्जन इम्पीरियल इंस्टीच्यूट जहांगीर हाल में एक सभा आयोजित की गई थी, जिसकी अध्यक्षता लार्ड कर्जन कर रहे थे। वहां उनके द्वारा किये गये जुल्मों की सराहना हो रही थी। जब लार्ड वाइली खड़े हुए तो आपने उस पर गोली चलादी। अंग्रेज के एक नीच पिट्ठू ने आपको पकडने का प्रयास भी किया तो आपने उसे भी गोली से छेद डाला। अंग्रेजों के अपने घर में ही उनके लिये सम्मानित एक अंग्रेज की हत्या ने सारे इंग्लैंड को हिला डाला। आपके पिता ने लार्ड मोरेल को एक तार द्वारा इस हत्या पर खेद प्रकट करते लिखा कि वे ऐसे कपूत को अपना पुत्र मानने को तैयार नहीं थे।

१० जुलाई को आपको वेस्टमिंस्टर की एक अदालत में पेश किया। उन्होंने सिंहनाद करते हुए कहा था कि उन्होंने हत्या की थी जो इस व्यक्ति के अमानवीय कुकृत्यों का बदला था। भारतभूमि पर जुल्म करने वाला व्यक्ति ईश्वर का अपमान करनेवाला था। यह उनकी अन्तरात्मा की आवाज थी, जिसका पालन करना उनका परम कर्त्तव्य था। जज ने फैसला दिया, सजा मिली मौत की। सजा सुनकर आप 'वन्देमातरम्' का उद्घोष कर खुशी के मारे उछल पड़े। इसी सजा की तो उन्होंने तमन्ना की थी।

१७ अगस्त आपकी शाहदत का दिवस था। आप प्रातः उठ तैयार होगये थे। वे तो उल्लास व आल्हाद से झूम उठे थे। आपने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि वे फिर उसी माता की कोख से पैदा होऊं व फिर उसी पावन उद्देश्य के लिये अपने आपको अर्पित कर सकूं। इसके बाद फांसी के फंदे को स्वयं गले में डालकर झूल गया।

शोक सभा

हमारी माता श्रीमती धनकौर पत्नी चौ० फतेसिंह मोर का देहावसान १९-६-९२ को होगया, जिनकी आयु ८० वर्ष की थी। जिनकी शोक सभा दिनांक ५-७-९२ को अपने निवास स्थान बरौदा में हुई। जिसमें पं. बदलूराम, सूबेदार करतारसिंह गोहाना समाज से आये तथा पं० चिरंजीलाल ने वेदप्रचार हवन यज्ञ करवाया। ग्रामवासियों को प्रीतिभोज करवाया गया। उनके पुत्र रामकिशन, राममेहर, बलवान्, रामकवार, रामधारी व उनकी पत्नी यजमान बनें। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को १५०), आर्यसमाज गोहाना को ५१), आर्यसमाज बरोदा को ५१) दान दिये।

—रामधारी मोर, ग्राम बरौदा जि० सोनीपत

आर्यसमाज पानीपत का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रामानन्द सिंगला, उपप्रधान—मेघराज आर्य, मन्त्री—कुलभूषण आर्य, प्रचारमन्त्री—ठाकरदास बत्रा, उपमन्त्री—शशी मंगला, पुस्तकालयाध्यक्ष—सुमेरसिंह।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२ ... फोन नं० ७८५७७

ओ३म्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक — सूबेसिंह सभामन्त्री ... सम्पादक — वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १६ अंक ३९ ... १९९२ ... वार्षिक शुल्क ३०) ... आजीवन शुल्क ३०१) ...

हरयाणा में शराबबन्दी अभियान की गतिविधियां

ग्राम लाहली (रोहतक) में गांव के सरपंच रमेश मल्होत्रा ने पंचायत का प्रस्ताव पास करके शराब का उपठेका खुलवा रखा है। यह ठेका रोहतक भिवानी रोड पर बाल्मीकों के मौहल्ले के एक मकान में है। वहा शराबी प्रतिदिन शराब पीकर हुडदंग मचाते है तथा गाली-गलोच करते हैं जिससे गरीबों की बस्ती नरक बनी हुई है। श्री सूरजभान बालमीकि, श्री गंगाराम हरिजन पंच तथा सरदार गजूसिंह आदि के नेतृत्व में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए संघर्ष छेड़ रखा है। रोहतक के उपायुक्त महोदय से भी मिल चुके हैं। गाव में भी सम्पर्क अभियान चला रखा है। दूसरी तरफ पंचायत का उपेक्षाकृत व्यवहार है।

ग्राम काहनौर (रोहतक) में भी बस अड्डे पर ठेका है। वहा भी शराबी प्रतिदिन शराब पीकर झगड़ा करते हैं। गाव में कई शराबी लोग अन्यत्र सस्ती शराब मिलती है लाते हैं। ठेकेदार उसको पकड़वा देता है, फिर छूटकर अपना धन्धा जारी रखते हैं। गांव में शराब खूब पी जाती है। शराबियों का आतंक छाया हुआ है। महिलाये एव साधारण लोग बेहद परेशान हैं। पंचायत मूक बनी हुई है। गत २९ जुलाई को रामेश्वर नाई जो दिल्ली परिवहन निगम में चालक पद पर है, शराब दिल्ली से साथ लाया और गांव में एक साथी के साथ बैठकर पीने लगा। ठेकेदार ने बाहर से शराब लाने पर उसकी पिटाई करदी। इस गांव में प्रतिदिन शराबी पीटते रहते हैं।

गांव पुट्ठीमंगलखा (हिसार) में जबरन शराब का उपठेका खोल रखा है। हांसी के ठेकेदार से रोज शराबियों द्वारा झगड़े होते हैं। छोटे-छोटे बच्चे भी शराब पीते हैं। पचायत ने गत जून मास से अवैध शराब की दुकान बन्द करवाने हेतु उपायुक्त हिसार को प्रस्ताव भी दिया हुआ है। ठेका पं० नारायण के मकान में है, जहा से गांव के सब नरनारी गुजरते हैं। जुलाई के प्रथम सप्ताह में दो हरिजनों का शराब पीकर झगडा हुआ, बाद में गांव इकट्ठा हुआ। ७-८ जुलाई को गांव के नरनारियों ने धरना दिया। पंचायत ने ठेके को ताला लगा दिया और थानाध्यक्ष तथा एस०डी०एम० हांसी मौके पर आये। गांववालों ने साफ कह दिया कि हम किसी भी मूल्य पर ठेका गाव में नहीं रहने देंगे। ठेकेदार ने ५ दिन तक ढाणी गुजरान की सीमा पर अस्थाई दुकान चलाई। बाद में गांव के ५-७ शराबियों को मुफ्त शराब पीलाकर गांव में फूट डालकर उसी पण्डित के मकान में ठेका पुनः खोलकर धड़ाले से चला रहा है। गाव के सरपंच श्री अमीलाल एव फतेसिंह आदि गांव के सहयोग के बिना चुप्पी साधे बैठे हैं। सरकार व ठेकेदार धन कमाने के लिए किस प्रकार गरीब किसान-मजदूर को बर्बाद करने के लिए शर्मनाक खेल खेल रहे हैं।

ग्राम दूबलधन (रोहतक) में नशामुक्ति सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक ८-८-९२ को ग्राम दूबलधन (रोहतक) में सरपच श्री सूबेदार धारासिंह जी के अथक प्रयत्न एवं प्रयास से जिला उपायुक्त महोदय रोहतक के निर्देशन में जिला रेडक्रास सोसायटी की ओर से नशामुक्ति शिविर का आयोजन किया गया। रोहतक से डाक्टरों की एक टीम पहुंची। लोगों को शराब से होनेवाली हानियो से अवगत कराया तथा नशाबन्दी पर एक शिक्षाप्रद फिल्म भी दिखाई गई। इसी अवसर पर चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एव सयोजक हरयाणा शराबबंदी अभियान तथा चौ० सूबेसिंह जी सभामन्त्री ने भी इतिहास के उदाहरण देकर शराब की हानियों पर प्रकाश डाला। लोगों से शराब, धूम्रपान आदि भयकर बुराइयों को छोड़ने पर बल दिया। विशेषकर फौजी भाइयों से अपील की गई कि आप कार्ड की शराब मत खरीदो। आपने देश की सेवा की है। गांव का वातावरण शराब बेचकर या पीकर मत बिगाड़ो, जिससे प्रभावित होकर सारे फौजियों ने भविष्य में कार्ड की बोतल न लाने की प्रतिज्ञा की और हम गाव में शराबबन्दी में पंचायत को पूर्ण सहयोग देंगे। शिविर का लोगों पर अच्छा प्रभाव पडा।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

गांव अटेला (भिवानी) में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

समाज सुधार एवं नशा निवारण समिति दादरी की ओर से गाव अटेलाखुर्द में दिनाक ८-९ अगस्त, ९२ को वेदप्रचार एव शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। रात्रि को गाव मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार किया गया। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब की हानियों पर व्याख्यान दिया और लोगों से सम्मेलन सफल बनाने का आग्रह किया। पं० ईश्वरसिंह तूफान के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रातःकाल सरपंच श्री सुभाषचन्द्र की बैठक मे हवन किया गया। क्रांतिकारी की प्रेरणा पर सूबेदार शीशराम हरनारायण सोनी, जुगलाल (बिलांवल), डा० प्रतापसिंह एवं गोरधन ने जनेऊ लिया तथा शराब भी भविष्य में न पीने का व्रत लिया। हवन के तुरन्त बाद वर्षा हुई। ठीक ११ बजे हाई स्कूल के बरामदे मे प्रि० बलवीरसिंह फतेगढ निवासी की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन आरम्भ हुआ। मच संचालन कुशलतापूर्वक क्रांतिकारी जी ने किया।

मुख्य रूप से सर्वश्री रामफल सरपच बिरहोकला, कर्नल सतलाल सरपंच झोझूकला, चौ० दीवानसिंह पूर्व हैडमास्टर नया अटेला, राजवीरसिंह तेरहाका प्रधान, कप्तान मानकराम झोझूकलां, बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, चौ० सूबेसिंह सभामन्त्री, चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एव सयोजक हरयाणा शराबबन्दी अभियान होरानन्द आर्य पूर्व शिक्षामन्त्री हरयाणा तथा मुख्य अतिथि सभाप्रधान प्रो०

(शेष पृष्ठ ५ पर)

महर्षि दयानन्द पर अशोक सिंहल का दूसरा आक्रमण

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उत्तरप्रदेश

विश्व हिंदू परिषद् के महामन्त्री श्री अशोक सिंहल ने २० फरवरी, १९९१ को मेरठ नगर की अपनी प्रेस कांफ्रेंस में पहला आक्रमण यह कहकर किया था कि "अगर कोई यह कि कुरान, बाइबिल और दयानन्द की पुस्तक के आधार पर सरकार चलाओ तो अब यह नही हो सकता।"

उस समय 'आर्यो सावधान' शीर्षक से आर्य पत्रों में मेरा लेख प्रकाशित हुआ था। सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने मेरे उस लेख को सार्वदेशिक सभा मे न छपवाकर सिंहल जी को अपने पत्र के साथ भेज दिया था। सिंहल जी ने जो उत्तर स्वामी जी महाराज को लिखा था, उसके साथ एक प्रेस वक्तव्य भी प्रकाशनार्थ भेजा था। स्वामी जी ने सिंहल जी को लिखा अपना पत्र, उनका उत्तर तथा प्रेस वक्तव्य आदि आर्यपत्रों में प्रकाशित करा दिया। उनका उत्तर और वक्तव्य चित्र प्रतिलिपि कराके स्वामी जी ने मेरे पास भी भेज दिया। क्योकि मेरा पता स्वामी जी द्वारा भेजे गये मेरे लेख के माध्यम से सिंहल जी के पास पहुंच चुका था। अतः उन्होंने भी स्वामी जी को भेजे अपने उत्तर और वक्तव्य की प्रतियां मेरे पास भेज दी थी।

उसके पश्चात् मैंने सिंहल जी को पत्र लिखा, जिसके उत्तर में उन्होंने उल्टा मुझे ही दोषी ठहराते हुए मेरे पत्र का उत्तर दिया। इसके पश्चात् मेरा दूसरा लेख 'मेरा पुनर्निवेदन—आर्यो सावधान' साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' नई दिल्ली में छपा था। आर्यसमाज के विषय में विश्व हिंदू परिषद् अपनी भ्रांति दूर करे' शीर्षक से मेरा एक लेख जनवरी मास के 'दयानन्द सन्देश' मे भी छपा था। सिंहल जी ने मुझे लिखे अपने उत्तर में यह भी लिखा था कि 'मैं अपने इस पत्र की एक प्रति अमर उजाला—मेरठ के सम्पादक को भेज रहा हूं कि वह अपने पत्र में इसको प्रकाशित करे।' उसके न छपने पर मैंने पुनः जो पत्र लिखा तो आज तक उनका उत्तर नही आया। कारण यह है कि उन्होंने यह समझ लिया है कि आर्यो की सर्व शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान को माध्यम बनाकर आर्यसमाजियों की प्रक्रिया को तो मैं शांत कर ही चुका हू, दैनिक अमर उजाला में वक्तव्य देकर अपने वास्तविक विचारों को झुठलाना और आर्यसमाज विरोधी अपने वर्ग और संगठन के लोगों को रुष्ट कर लेना उचित नही।

दूसरा आक्रमण

महर्षि दयानन्द सरस्वती पर अपने उस प्रथम आक्रमण की प्रतिक्रिया को शांत देखकर सिंहल जी ने समझ लिया कि यह तो मृतप्राय सस्था है, इसे सरलता से समाप्त किया जा सकता है और इसके समाप्त होने के पश्चात् सम्पूर्ण हिंदू समाज की नेतृत्व शक्ति अपने पास होगी अतएव अब उन्होंने नया पग उठाया तथा महर्षि दयानन्द पर दूसरा आक्रमण 'हिंदू विश्व' मासिक के जनवरी १९९२ के अंक में 'वेद विद्यापीठ की स्थापना' शीर्षक वक्तव्य में यह कहकर किया है कि 'ऋषि दयानन्द ने सोचा कि इन मन्दिरों का उद्धार नही कर सकते, इसलिए उन्होने मूर्तिपूजा का विरोध किया।' इस वक्तव्य के द्वारा सिंहल जी यह सिद्ध कर देना चाहते हैं कि महर्षि दयानन्द मूर्तिपूजक तो थे किंतु वह इतनी निकृष्ट कोटि का मनोवृत्तिवाले थे कि लाखों मन्दिरों के जीर्णोद्धार मे अपने को असमर्थ पाकर मूर्तिपूजा के विरोध पर ही उतर पड़े और उसका खण्डन करना प्रारम्भ कर दिया।

एक ओर तो स्पष्ट रूपेण निराकार के उपासक और जड़मूर्ति आदि मे चेतन की आस्था बनाकर उसकी उपासना के प्रबल विरोधी परम दार्शनिक महर्षि को मूर्तिपूजा का समर्थक बताना तथा दूसरी ओर उन्हें हीनवृत्ति का अपनी असमर्थता पर खीजा हुआ व्यक्ति बताना अतीव घृणित तथा निकृष्ट विचारो का धूर्ततापूर्ण प्रचार है। जबकि महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा को ऐसी खाई लिखा है जिसमें गिरकर निकलना सम्भव नही और आर्यजाति के पतन तथा आर्यावर्त्त की पराधीनता के प्रमुख कारणों में गिनाया है। आर्यसमाज के जो नेता आजकल विश्व हिंदू परिषद् के पदों पर बैठकर महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के विरोध को शक्ति प्रदान कर रहे हैं, क्या वह इस ओर ध्यान नहीं देंगे ?

बड़ोदा में श्री प्रो० धर्मेन्द्र जी घीगड़ा ने मुझे 'हिंदू विश्व' मासिक का उक्त कटिंग भेजा था। पूरा वक्तव्य पढने के लिए मैं गत कई मास से प्रयत्नशील था। अन्ततोगत्वा इस पत्र के प्रकाशन स्थल इलाहाबाद का पता प्राप्त कर इस अंक को वहीं से मंगवाया। अंक मेरी पत्रावली में सुरक्षित है। इस सन्दर्भ को आर्यपत्रों में प्रकाशित कराने का मेरा उद्देश्य जनता हो या नेता अथवा आर्यसमाज का बुद्धिजीवी वर्ग—सभी की प्रतिक्रिया जानना तथा जो विश्व हिंदू परिषद् के प्रबल समर्थक तथा अपने-अपने क्षेत्रों में उसके उत्तरदायी पदों पर आसीन है, उन आर्यजनों को चेताना और उनसे यह माग करना है कि वह सिंहल जी को ऋषि दयानन्द जी को मूर्तिपूजक सिद्ध करने और महर्षि दयानन्द की पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' की 'राजधर्मान् व्याख्यास्यामः' की सरकार चलाने में अनुपयोगिता, अक्षमता, निरर्थकता तथा उसे विदेशी धर्मग्रन्थों बाइबिल व कुरान की श्रेणी का तथा त्याज्य और तिरस्करणीय सिद्ध करने के लिए शास्त्रार्थ करने को तैयार करे।

शादी में कैसी बर्बादी

देखो शादी में कैसी बर्बादी हो रही है।
जमीन धरके बनवाई टूम दो चार हैं।
पेंडल, पोहुंची, गुलेबन्द, गले का हार है।
दहेज के लिए घर तक बेचने को तैयार है।
क्योंकि लडके को देनी नकदी बीस हजार है।
लालची कुत्तों की कैसी आजादी हो रही है ॥१

टी वी., फ्रीज, कूलर, अलमारी, देनी कार भी।
घड़ी, अंगूठी, सास-ससुर के जोड़े चार भी।
मिलनी के कम्बलों के साथ पांच हजार भी।
रिश्तेदारों के कपड़ों का ना पाता शुमार भी।
टेरोकाट की कहे क्या महंगी खादी हो रही है ॥२

खाने-पीने को क्या पूछो धन व्यर्थ लुटा रहे।
कुत्ते, गधे और सुअर भी पूरी कचोड़ी खा रहे।
लडके के मामा और पिता भी नाक चढ़ा रहे।
इतना करने पर भी जनाब बहुत कमी बता रहे।
दिया कुछ भी ना फिर भी ये मुनादी हो रही है ॥३

डेढ़ सौ बाराती चले जुल्फू बटोरे मलंगे।
नाचें कूदे, मटके गावें गीत गन्दे बेढंगे।
दो हजार की शराब पी गये मस्त मुस्टण्डे।
शराब पीकर लगे बजने फिर आपस में डण्डे।
लड़केवालों की फिर भी मा दादी हो रही है ॥४

झूअर भी परेशान और ऐंठ रहा नाई भी।
सामान पूरा ना हुआ अब तक नाराज हलवाई भी।
भंगन भी दुःखी बेचारी मिली ना पाई भी।
माग पूरी ना हुई यू कड़क रहा जवाई भी।
माता सुनके ये दु:ख में आधी हो रही है ॥५

मियां बीबी हैं राजी तो क्या करेगा काजी।
घर पर सासू और बाहर काम करे पिताजी।
जुल्फू के चल रहे अण्डे, सिगरेट, दारू, जुएबाजी।
बहू से मगवाये दहेज मारने की जालसाजी।
जलकर राख हाय शहजादी हो रही है ॥६

देश को बर्बाद करेगी कुरीति दहेज की।
बढ़ रही है ये घटती ना बिमारी प्लेग की।
लड़की, लडको जरूरत अब सख्त परहेज की।
कराओ वैदिक शादी अब बिन दहेज की।
बलवन्त शादी वही जो बिल्कुल सादी हो रही है ॥७

—बलवन्तसिंह आर्य, गांव ठसका, यमुनानगर

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

क्र.	नाम	रुपये
१	श्री ब्रह्मप्रकाश गुप्ता चरखी दादरी जि० भिवानी	११००
२	,, धर्मवीर शास्त्री ग्राम व पो० लोहारू ,,	११००
३	,, हुकमचन्द आर्य ,,	११००
४	,, राजेन्द्रकुमार दादरी ,,	११००
५	,, देशराज अध्यापक ,, ,,	११००
६	,, रामनारायण चावला चरखी दादरी ,,	१००
७	,, डा० सुशीला आर्या प्रवक्ता जनता कालेज दादरी जि० भिवानी	११००
८	,, आचार्य ऋषिपाल हिंदी-संस्कृत महाविद्यालय दादरी जि० भिवानी	११००
९	,, ओमप्रकाश ग्राम व पो० रणकोली दूधवा जि० भिवानी	१०१
१०	,, शामनाथ सहगल आर्यसमाज मन्दिर मार्ग दिल्ली	११००
११	,, अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट ३१ यू०डी० जवाहरनगर दिल्ली	२५०
१२	,, आचार्य हरिदेव गुरुकुल दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर नई दिल्ली	३१००
१३	,, जितेन्द्र गौतमनगर नई दिल्ली	१०१
१४	,, रामपाल ग्राम व पो० स्वरूपगढ जि० भिवानी	५१
१५	,, प्रो० डी० एस० तेवतिया दादरी ,,	१०२
१६	,, रामप्रताप ,, ,,	११००
१७	,, भीमसिंह अध्यापक ढाणी ,,	५०१
१८	,, अर्जुनदेव बजाज दादरी ,,	२५१
१९	,, विकास इलैक्ट्रोनिक्स चरखी दादरी ,,	१०१
२०	,, भारत टिम्बर कम्पनी दादरी ,,	११००
२१	,, गुप्त दान ,, ,,	१५१
२२	,, सुरेश फर्नीचर मार्ट ,, ,,	२५१
२३	,, मुन्शीराम रमेशकुमार काठमण्डी दादरी ,,	५०१
२४	,, पं० श्रीचन्द फूलवती ,, ,,	१५१
२५	,, भगवानदास मंगलीराम ,, ,,	११००
२६	,, रणवीर शास्त्री ग्राम व पो० गढी बोहर जि० रोहतक	६००
२७	,, हरिसिंह सूबेदार ,, चन्देनी जि० भिवानी	११००
२८	,, स्वामी ओमानन्द संचालक गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक	११००
२९	,, दलीपसिंह उपप्रधान जाटूखाप धनाना जि० भिवानी	१०१
३०	,, मा० चन्द्रभान ग्राम व पो० जहाजगढ जि० रोहतक	११००
३१	,, जनकराज पोस्ट मास्टर दादरी जि० भिवानी	१०१
३२	,, एस०वी० आर्या एस.डी.ओ. पी. डब्लयू डी.बी.एण्ड आर. दादरी जि० भिवानी	११००
३३	,, सुन्दरश्याम लैक्चरार रा उ.मा.वि. दादरी जि. भिवानी	११००
३४	,, मनुदेव शास्त्री रोहतक रोड ,, ,,	११००
३५	,, रामकुमार शर्मा ,,	२००
३६	,, नेवराज पुरोहित ,, ,,	२५१
३७	श्रीमती एवं जगदीश ग्रोवर ,, ,,	१५१
३८	श्री हरिश्चन्द्र गौड ,, ,,	१०१
३९	श्रीमती धनपती देवी रोहतक रोड ,, ,,	१५१
४०	श्री महाशय चन्दगीराम ,, ,,	५०१
४१	,, घीसाराम मातादीन काठमण्डी ,, ,,	१०१
४२	,, डा. सी.आर. डागर उपकार हस्पताल ,, ,,	५१००
४३	,, ज्ञानचन्द ,, ,,	११००
४४	,, भरतसिंह शास्त्री संचालक कन्या गु० पंचगांव ,,	१०५०
४५	आर्य केन्द्रीय सभा गुडगावां	५०१
४६	श्री खेमराज प्रेमाराम आर्य ग्राम व पो. नीन्दड जि. जयपुर (राज.)	२००
४७	श्री रामचरण चूडामणि आगरा (उ.प्र.)	५१
४८	श्रीमती सावित्री डुड्डा आर्यसमाज नोएडा जि० गाजियाबाद (उ.प्र.)	२५१
४९	श्री शीशराम जगदीश ग्राम व पो नन्दगाव जि. मथुरा (उ प्र)	७१
५०	,, मा. सज्जनसिंह	४९७
५१	,, कमलसिंह वकील छोटी झोझू जि० भिवानी	२५१
५२	,, ओमप्रकाश सु० दुलीचन्द ,, ,,	५१
५३	,, कमलसिंह वकील ,, ,,	७७
५४	,, रामनारायण सु. तेजाराम झोझूखुर्द ,,	१०१
५५	,, नौबतराम सु अमीलाल ,, ,,	५१
५६	,, भगतराम सु. किशनलाल ,, ,,	५१
५७	,, ज्ञानीराम ,, ,,	६४
५८	,, मेजर सन्तलाल सरपंच झोझूकला ,,	३०५
५९	,, सुखजीत सु० रघुवीरसिंह ग्राम चणानी जि० भिवानी	५१
६०	,, सूबेदार जयचन्द ग्राम रामलवास ,,	१८२
६१	,, रघुवीरसिंह सोनी ग्राम गुडाना ,,	५१
६२	,, कप्तान प्रतापसिंह गुडानाखुर्द ,,	६०
६३	,, लक्ष्मीनारायण ग्राम व पो० रामबास ,,	६९
६४	,, मा० गणपतसिंह आर्य ग्राम व पो० नौरंगबास ,,	५१
६५	,, अत्तरसिंह सरपंच ,, ,,	२४९
६६	,, मा० टेकराम ग्राम व पो० बादल ,,	१२५
६७	,, धारीराम नम्बरदार ग्राम व पो० तिवाला ,,	५२
६८	,, रामसिंह प्रधान ,, ,,	८१
६९	,, जयनारायण ग्राम व पो सिवाना ,,	५१
७०	,, सूबनसिंह ग्राम पांडवान ,,	५१
७१	,, धर्मपाल ग्राम हुई ,,	२६६
७२	,, जयनारायण ग्राम चनानी की ढाणी ,,	५०५
७३	,, छोटूराम हरिजन ग्राम व पो. चन्देनी ,,	५१
७४	,, दयानन्द हरिजन ,, ,,	५१
७५	,, म० सुलतानसिंह ग्राम बलाली ,,	५१
७६	,, कप्तान घनश्याम ,, ,,	५१
७७	,, हवासिंह सु० शिवलाल ,, ,	५१
७८	,, होशियारसिंह थानेदार ,, ,,	५१
७९	,, करतारसिंह सु. देशाराम ,, ,,	५१
८०	,, हुकमसिंह सरपच ग्राम व पो० आदमपुरा ,	५१
८१	,, रामफल सु० रामस्वरूप ,, ,,	६०
८२	,, गुगनराम ग्राम व पो. मन्दोली ,,	५१
८३	,, सूबेदार रिसालसिंह ,, ,,	५१
८४	,, रामस्वरूप व रतिराम पच ग्राम व पो मन्दोली ,	६५
८५	,, राजेराम सूबेदार ग्राम व पो० फसोला ,,	१०१
८६	,, मा० शमशेरसिंह ,, ,,	१०१
८७	,, सूबेदार सूबेसिंह ,, ,,	१०१
८८	,, हवलदार ज्ञानीराम ,, ,,	५१
८९	,, जगराम डागर ,, ,,	१३८
९०	आर्यसमाज भाडवा पो० बाढडा ,,	२०१
९१	श्री कप्तान लक्ष्मीनारायण ग्राम कुब्जा पो० पिचोपाकलां जि० भिवानी	५१
९२	,, इन्द्राज सु० सुखदेव ग्राम कुब्जा पो. पिचोपाकला जि. भिवानी	६८
९३	,, सूबेदार भूपसिंह ग्राम व पो० मूनसा जि० भिवानी	५१
९४	,, उमेदसिंह ,, ,,	५१

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

धमतान साहिब जिला जींद में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

नवगठित शराबबन्दी समिति धमतान (जीद) को ओर से दिनाक १०-११ अगस्त, ९२ को वेदप्रचार एव शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। रात्रि को विघा पटो थाई चौपाल मे वेदप्रचार हुआ, जिसमें सभा उपदेशक अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने आर्यसमाज का इतिहास तथा इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाली हानियों पर विस्तार से विचार रखे तथा वेदप्रचार मण्डल पानीपत की भजन मण्डलो पं० रामकुमार के समाज सुधार के प्रेरणादायक भजन हुए। गांव में आर्यसमाज का प्रचार ३० वर्ष बाद हुआ। हजारों की संख्या में लोगों ने प्रचार में भाग लिया। प्रात:काल चौपाल मे हवन किया गया। श्री वेदपाल, सरदाराराम, दलेल तथा दो स्कूली बच्चों ने यज्ञोपवीत धारण किये। उपस्थित लोगों को पंचमहायज्ञ एव यज्ञोपवीत के बारे में अच्छे ढंग से बताया गया।

दोपहर बाद २ बजे चौपाल में ही शराबबन्दी सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम शराबबन्दी बारे भजन हुए। तत्पश्चात् स्वामी रतनदेव जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्मेलन शुरु हुआ। वक्ताओं मे मुख्य रूप से सर्वश्री डा० प० रामेश्वरदत्त शर्मा प्रधान शराबबन्दी समिति धमतान, ईश्वरदत्त शर्मा सुलहेड़ा, सरदार कर्नलसिंह, मा० रघुभूषण नरवाना, चौ० सूबेसिंह सभामन्त्री, बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एव सयोजक हरयाणा शराबबन्दी अभियान, मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आदि ने शराबबन्दी पर देश-विदेश के आकड़े देकर विस्तार से विचार रखे। इसके अतिरिक्त नारी शिक्षा, गोरक्षा, चरित्र निर्माण, शिक्षा में असमानता, किसानो के साथ अन्याय, भ्रष्ट राजनेताओं के काले कारनामे तथा राजनीति में अच्छे ईमानदार लोगो को आगे लाने पर सुझाव दिया एवं मार्मिक शब्दो में प्रकाश डाला। सभामन्त्री जी ने लोगों को शराबबन्दी आदोलन में बढ-चढकर भाग लेने का आह्वान किया। पूर्व उपायुक्त महोदय ने हाथ खड़े करवाकर गाव से शराब का ठेका धरना आदि देकर शीघ्र उठाने का आग्रह किया। १५ अगस्त से निश्चित धरना देने का भी सुझाव दिया। शराबबन्दी समिति तथा पंचायत ने भी पूरा आश्वासन दिया कि १५ अगस्त से अवश्य धरना देंगे।

सुलहेड़ा गांव के २५ नवयुवक मोटो लेकर प्रधान नवयुवक सगठन श्री जगदीशचन्द्र के नेतृत्व में सम्मेलन में पधारे। उन्होंने भी शराब के ठेके पर धरने में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। स्वामी रतनदेव जी व आर्य प्रतिनिधि सभा को ओर से संघर्ष मे पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसके अलावा प्रो० शेरसिंह जी ने हरयाणा प्रात अलग बनाने की जानकारी दी तथा पंजाब व हरयाणा के मुख्य मन्त्रियो के महापंजाब बनाने की कटु आलोचना की। इस नारे को बेहुदा आलाप बताया। सबसिडी मे असमानता, उग्रवाद तथा शराबबदी नीति गुजरात व तमिलनाडु प्रांत के उदाहरण देकर हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का सुझाव दिया। सभी वक्ताओ ने सरकार की शराब बढावा नोति की घोर निदा की तथा मुख्यमन्त्री के जमाई की शराब की फेक्ट्री जो हिसार के निकट सातरोड गाव में है को उनके माथे पर एक कलंक बताया।

अध्यक्षीय भाषण में स्वामी रतनदेव जी ने लोगों का आह्वान किया कि अब समय आगया है, सघर्ष के लिए खड़े हो जाओ और आर्य सेना मे भर्ती हो जाओ। हमारे ऊपर महर्षि दयानन्द जी का ऋण है उसे चुकाना है और हरयाणा प्रात से शराब का कलंक मिटाना है। साथ मे नारी शिक्षा पर भी बल दिया। श्री वेदपाल आर्य ने अन्त में विद्वानों एवं आर्यनेताओ का धन्यवाद किया।

ज्ञातव्य है कि गत दो मास से धमतान में एक शराबबन्दी समिति गठित है। गांव में शराब पर पूरा प्रतिबन्ध है। शराब पीकर गलियों में घूमने पर ६२५ रु० दण्ड, शराब पिलानेवाले पर १००० रु०, अगर जो कमेटी का आदमी शराब पीएगा तो १२५० रु० दण्ड, सूचना देनेवाले को १२५ रु० ईनाम तथा झूठ बोलनेवाले पर २५० रु० दण्ड लिया जायेगा। अब तक १२ हजार रु० जुर्माना रूप में इकट्ठे हुए हैं। उन पैसों से कन्या पाठशाला में एक कमरा बनवा दिया है। गांव में सर्वसम्मति से पंचायत बनी। सरपंच सदाराराम ने इस खुशी में ११०० रु० कन्या पाठशाला, ११०० रु० मन्दिर में, ११०० रु० अखाड़े में, ५०० रु. गुरुद्वारा में स्वेच्छा से दान दिये। इस शराबबन्दी अभियान का निकट के गांव में भी प्रभाव है। कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय रहा। जलपान की उत्तम व्यवस्था थी।

—मा० कपूरसिंह वर्मा
सचिव शराबबन्दी समिति धमतान

जिला जींद में वेदप्रचार एवं आर्यसमाजों की स्थापना का कार्य जोरों पर

वेदप्रचार मण्डल जीद के संयोजक स्वामी रतनदेव जो के नेतृत्व में वेदप्रचार का कार्यक्रम जोरों पर चल रहा है। पं० चन्द्रभान जी की भजनमण्डली द्वारा अनेक गांवों में वेदप्रचार एव शराबबन्दी प्रचार किया गया। गत १६ जुलाई, ९२ से स्वामी जी ने घूमकर अनेक गावों में आर्यसमाज की विधिवत् स्थापना कर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्ध जोड़ा। प्रतिदिन रात्रि को वेदप्रचार, प्रातः हवन तथा आर्य-समाज की स्थापना की गई। जिन गावों में स्थापना की गई वे निम्न हैं

बधाना, शाहपुर, कन्डेला, अहीरका, ईकस, रामराय, गुरुकुल कुम्भाखेड़ा, कन्या गुरुकुल खरल, निडाना, ललितखेड़ा, भिडताना, चुडपुर, डोला, रामकली, अनदाना, गलाडी, तारखा, किनाना, गेन्दा-खेड़ा, लोचब, उचाना मण्डी, घरोंडा (विशनपुरा) आदि में कार्य किया गया। पूज्य स्वामी जी का लक्ष्य इस वर्ष जिला जींद मे १०० आर्यसमाज बनाने का है। १६ अगस्त से पुनः इस शुभ कार्य में भजनमण्डली को साथ लेकर जुटेंगे। गतवर्ष की भाति वेदप्रचार मण्डल जीद का द्वितीय आर्य महासम्मेलन उचाना मण्डी में ९ से ११ अक्तूबर, ९२ को धूमधाम से मनाया जायेगा। सभी आर्य सज्जनों से अनुरोध है कि सम्मेलन में बढ-चढकर भाग लें तथा तन, मन, धन से सहयोग करें। सम्मेलन आप सबके सहयोग से ऐतिहासिक होगा।

—मा० रायसिंह आर्य
सहसयोजक वेदप्रचार मण्डल जीद

भ्रांति निवारण

७ जुलाई, १९९२ ई० के "सर्वहितकारी" के प्रथम पृष्ठ पर "अग्निहोत्र द्वारा अद्भुत फलों की प्राप्ति" लेख में आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेदप्रतिष्ठान हैदराबाद-२७ ने जर्सी गाय के निर्माण को खच्चर के समान सूअर और गाय के मिश्रण से अमेरिका के जर्सी ग्राम में विकसित नसल लिखा है।

आचार्य वेदभूषण जैसे प्रतिष्ठित विद्वान् ने बिना ही प्रमाण अथवा अनुसन्धान के यह मिथ्या धारणा फैलाकर अनेक गोभक्तों को कष्ट पहुंचाया है। एतदर्थ सर्वहितकारी पत्र के सम्पादक के नाते मैं उन सभी गोप्रेमियों से क्षमा-प्रार्थी हूं जिनको हमारे पत्र में यह लेख पढकर आघात पहुंचा है।

जैसे हरयाणा, हिसार, राठी, साहीवाल आदि गायों की नसलें हैं इसी प्रकार जर्सी, होलोस्टन फ्रोजन (H F.) आदि गाय की ही प्रजातियां हैं। मेरे पास भी अनेक वर्षों से जर्सी गाय है। इसके घी दूध आदि हरयाणा नसल की गायों जैसे ही हैं। गाय के स्वभाव, स्नेह, रहन-सहन आदि में भी कोई अन्तर नहो है। हरयाणा नसल की गाय से भी जर्सी, H. F आदि गाये तैयार की हे और प्रतिदिन अन्यत्र भी ऐसा ही देखने में आरहा है। अत: गाय ओर सूअर के मिश्रणवाली बात सर्वथा मिथ्या है और पशु-प्रजनन सिद्धांत के भी विरुद्ध है। इस सम्बन्ध में पशुओं के विशेषज्ञ डाक्टर अथवा वैज्ञानिक अधिक प्रामाणिक लेख भेजेंगे तो उनका भी स्वागत होगा।

—वेदव्रत शास्त्री

आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

श्री ब्रजपालसिंह आर्य महोपदेशक आदर्श जनता इण्टर कालिज जसराना जनपद फिरोजाबाद, श्री विद्याभिक्षु जी वानप्रस्थी सिरसागज, श्री नेमसिंह चिरावली के अथक प्रयासों एव कठोर परिश्रम द्वारा जून मास सन् १९९२ में जनपद फिरोजाबाद के ११ स्थानो पर आर्य महासम्मेलन समायोजित किये गये।

—ब्रजपालसिंह आर्य प्रचारमन्त्री

नामकरण संस्कार पर वेदप्रचार

श्री रामस्वरूप वैद्य मन्त्री आर्यसमाज धौलेड़ा जिला महेन्द्रगढ के पौत्र के नामकरण संस्कार महाशय जगमालसिंह बेधड़क आदि ने भजनों द्वारा वेदप्रचार किया। इस अवसर पर ग्राम के नरनारी भारी संख्या में उपस्थित थे।

आर्यसमाज छतेहरा त० गोहाना जि० सोनीपत का चुनाव

प्रधान–सर्वश्री डा० जयसिंह आर्य पूर्व सरपंच, उपप्रधान–रणवीरसिंह आर्य, मन्त्री–ओम्प्रकाश आर्य, उपमन्त्री–सूरतसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष प्रतापसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—प्रेमसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—रामपत आर्य, सुभाष आर्य।

(पृष्ठ १ का शेष)

शेरसिंह जी आदि ने शराबबन्दी पर आर्थिक, नैतिक, सामाजिक पहलुओं पर अनेक उदाहरण देकर प्रकाश डाला। लोगो से शराब न पीने की जोरदार अपील की। साथ में ३० सितम्बर से एवं जहा ठेके हैं वहा की पंचायत प्रस्ताव पास करके भेजे। गाव, ब्लाक, जिला स्तर पर शराबबन्दी समितिया बनाकर युद्धस्तर पर कार्य करके देश बचाना है वरना बर्बाद हो जाओगे। आपस का विश्वास खत्म, शिक्षा का स्तर गिर रहा है। जो अध्यापक शराब पीते हैं उनका काला मुह करो, राजनीति में अच्छे आदमियों को आगे लाओ। बिजली के बिल बढ़े हैं उसके खिलाफ एकजुट होकर आंदोलन करो। प्रो० साहब ने कहा कि ९ अगस्त, ४२ को भारत छोड़ो का नारा दिया था, उसी कारण हम अब राजनैतिकतौर पर आजाद हैं, परन्तु आर्थिक एव सामाजिकतौर पर गुलाम हैं। अब नये सिरे से शराब छोडो आदोलन आरम्भ करना होगा, तभी हमारा कल्याण होगा वरना किसान मजदूर शराब से लूट जायेगा। अन्त मे कहा लोकशक्ति को जगाना हमारा उद्देश्य है। सभा अध्यक्ष प्रि० साहब ने आश्वासन दिया कि अगले वर्ष सागवान खाप के ४० गावो मे शराब के ठेके नही खुलने देंगे। अगला सम्मेलन २४ अगस्त को चरखी मे करने का निर्णय लिया गया है। कार्यक्रम बहुत ही रोचक रहा। सम्मेलन में कई गांव के लोगों ने भाग लिया। ग्राम पचायत ने निर्णय किया है कि जो व्यक्ति ग्राम में शराब पीता पकड़ा जायेगा उस पर पचायती दण्ड किया जायेगा।

—रामपाल पंच अटेलाखुर्द

गउवों की अवैध निकासी एवं तस्करी रुकवाने हेतु आवेदन-पत्र

सेवा में,

उपायुक्त महोदय

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एस.एस.पी. महोदय

जिला रोहतक हरयाणा राज्य।

आदरणी महोदय,

हम गाय रोको आदोलन के अन्तर्गत गोरक्षक सत्याग्राही आपसे नम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं कि हरयाणा सरकार के अधिनियम ३१४ AB Cow Sloughter Act १९५५ अथवा नं० ५०७५ AB ५-८८/२३६४० दिनांक १९-८-८८ के अनुसार प्रदेश से गोवश के निकास पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है। केवल एक हजार रुपयो से ऊपर मूल्य का बछड़ा और दो हजार रुपये मूल्य से ऊपर की दूध देनेवाली गाय-बैल ही पशुपालन विभाग के उपनिदेशक महोदय की लिखित अनुमति (परमट) से प्रदेश से बाहर ले जाये जा सकते हैं। साथ ही ले जानेवाले को अपना हलफिया बयान भी लिखकर देना पड़ता है। किन्तु यह आश्चर्यजनक खेद का गम्भीर विषय है। बहुत वर्षो से बार-बार वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के नोटिस मे लाने के पश्चात् भी इसी रोहतक नगर से निर्भय होकर प्रतिदिन अथवा रात्रि के समय ब्याई हुई गउवो को उपरोक्त सभी नियमो का उल्लघन करके कई लोग हरयाणा से बाहर ले जाने मे सफलता प्राप्त कर रहे है, यह बडी चिंता और दुःख की बात है।

इन गउवों को ट्रको द्वारा दिल्ली किशनगज रेलवे स्टेशन माल गोदाम तक पहुंचाया जाता है। वहा से फिर इनको हावडा, कलकत्ता आदि के लिए बुक कर मालगाडियों द्वारा लदान करवाकर भेजा जाता है। कलकत्ता में बहुत बडा बूचडखाना है। दूध से सूखने के बाद यवन कमाई लोग पशुपीठ से खरीदकर इनको बूचडखाने में ले जाते हैं, जहा इनकी हत्या करदी जाती है और इस प्रकार गउवों को टेडे मार्ग से बूचडखाने तक पहुचा दिया जाता है। 'देशों मे देश हरयाणा, जहां दूध दही का खाना' वाली यह कहावत प्रसिद्ध थी, किन्तु आज वही हरयाणा गाय और इसके वश से खाली होगया है। दिनाक २-७-९२ को किशनगंज और सराय रोहेला के मध्य मे एक हजार गउवों से अधिक की संख्या में मैंने ब्याई हुई छोटे-छोटे बच्चोवाली गाय सफेदों के वृक्षों के नीचे रस्सों से बधी हुई देखी थी। यह सभी हरयाणा जाति की दुधारु सुन्दर गाय थी जो ट्रको द्वारा वहा तक ले जायी गई थी। आज हरयाणा प्रात इन्ही धन के लोभी लोगों दलालों के कारण गउवो से खाली होगया है। इन लोगो को न तो ईश्वर का भय, न मानवसमाज का और न राष्ट्र अर्थात् सरकार का। यह हरयाणा प्रदेश की वह बडी क्षति है जिसकी पूर्ति असम्भव है। आश्चर्य तो इस बात का है कि एक तरफ तो सरकार नियम बनाती है और दूसरी ओर नियमो का उल्लंघन करनेवालों को पकडकर दण्ड नही देती। जिन्होंने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य धम नहीं, परोपकार नही बल्कि धन एकत्रित करना बना रखा है। जो मृत्यु के पश्चात् किसी के साथ नही जाता, सब कुछ यहीं पर रह जाता है। केवल पुण्य-पाप कर्म ही जीवात्मा के साथ जाते हैं। आप स्वयं अपनी आखो से रोहतक की इन पशु डेरियो मे जाकर देखेंगे जो ब्याई हुई गउवो से भरी हुई हैं। इस अनर्थ को, इस अन्याय को, इस अधर्म को अवैध रूप मे ले जानेवाली गउवो की इस तस्करी को आप रुकवाकर पुण्यकर्म के भागी बने, यश के भागी बने आपकी बडी प्रसिद्धि होगी। प्रभु आपका कल्याण करे, इस भावना और आशा के साथ धन्यवाद सहित, आदर सहित।

प्रार्थी

स्वामी सर्वानन्द	डा० रघवीरसिंह आर्य गौप्रेमी
वैदिक भक्ति साधन आश्रम	भारत गोसेवक समाज का
आर्यनगर, रोहतक	आजीवन गोसेवक सदस्य, खरावर

मण्डी डबवाली जि० सिरसा में हवन-यज्ञ

दिनाक २-८-९२ रविवार को प्रात: ७ बजे श्रीमती कृष्णा रानी अध्यापिका ने अपने परिवार में श्री ओम्प्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा द्वारा हवन-यज्ञ करवाया। संध्या, हवन, प्रार्थना, भजन के पश्चात् वानप्रस्थी जी का उपदेश हुआ। श्रीमती कृष्णा रानी ने ५० रु० आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को दान दिये। सबका हलवे से सत्कार किया गया।

डबवाली में अन्तिम शोक दिवस पर हवन-यज्ञ

दिनाक २-८-९२ रविवार को प्रात १० बजे सर्वश्री कृष्णचन्द्र रमेशकुमार, सुरेशकुमार एव महेशकुमार जी ने अपने पिता मलरामचन्द जी चुघ के निधन पर अपने परिवार में श्री ओम्प्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा द्वारा हवन-यज्ञ कराया। इस अवसर पर वानप्रस्थी जी ने जीवन और मृत्यु पर अपने विचार रखे। परिवार की ओर से पांच सौ रुपये आर्यसमाज मण्डी डबवाली को और १५१ रु० आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को दान दिया। इसके अतिरिक्त सात हजार रु० विविध धार्मिक संस्थाओ को दान देने की घोषणा की गई।

—ओम्प्रकाश वानप्रस्थी

धूम्रपान

धूम्रपान करनेवालों का हृदय दुर्बल होता है।
खांसी खुर्रा करता है और बलबुद्धि को खोता है॥

फैशन समझकर सिग्रेट को बुद्धि पीने लगता है।
पीते-पीते बीड़ी को इसके चंगुल में फंसता है।
हुक्का पीने की आदत से जीवन अपना खोता है।
धूम्रपान करनेवालों का ...१

बड़े-बड़े डाक्टर दुनिया के तम्बाकू को बुरा बताते हैं।
सिगरेट के हर पैकेट पर हानिकारक लिखवाते हैं।
स्वास्थ्य के लिए हानिकारक इसमें निकोटीन विष होता है।
धूम्रपान करनेवालो का ... २

बड़े-बूढों को देख के बालक चोरी छिपके पीता है।
आदत से लाचार हुआ फिर बिना पीये ना रहता है।
दमा और खाँसी धीरे-धीरे रोगों का घर होता है।
धूम्रपान करनेवालों का ... ३

युवक-युवती बूढे बालक देखा-देखी पीते हैं।
जीवन को बर्बाद करे मुर्दा बन करके जीते हैं।
प्रभाकर इस कमजोरी से पतन देश का होता है।
धूम्रपान करनेवालों का हृदय दुर्बल होता है॥४

रचयिता—कप्तान पं० मातूराम शर्मा प्रभाकर
उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आचार्य सत्यप्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ

श्री आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री हिसार के सब शिष्यों, भक्तों व प्रेमियों से प्रार्थना है कि वे आचार्य जी के बारे अपने संस्मरण, लेख व कविता आदि मुझे शीघ्र भेज दे, ताकि उक्त ग्रन्थ का कार्य शीघ्र सम्पन्न हो सके।

भवदीय—प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु
वेद सदन अबोहर-१५२११६

नठेडा (रेवाड़ी) में आर्यसमाज की स्थापना

प्रधान—सर्वश्री हरद्वारीलाल नम्बरदार, मन्त्री—श्रीराम, लेखा-निरीक्षक—वीरकुमार, प्रचारमन्त्री—म० भगवानसिंह आर्य, खजांची—सूरजभान।

उत्तम भारत निशदिन भारत

आर्यवर्त देशवासियो हमारा देश कितना उत्तम कितना उज्ज्वल वीरो की भूमि माता और बहनों का सतित्व कितना पवित्र तथा सोने की चिड़िया व ऋषि मुनियों का देश रहा है, लेकिन आज यह देश निशदिन बुराइयों का घर बनता जारहा है जिसमें चोरी, डकैती, बलात्कार, अपहरण, कत्लेआम, बहन-बेटियों की इज्जत लुटती जारही है। अण्डे, मांस, बीडी, सिगरेट, स्मैक जैसे भयंकर नशे और शराब की तो एक प्रकार से नदिया बह निकली हैं। बच्चा पैदा हो तो शराब, पशु, जमीनादि बेची या खरीदी जाये तो शराब, विवाह हो तो शराब, गौना हो तो शराब, कोई तो भोजन के साथ भी शराब। ज्यादा क्या कहूं मृतक का भी दाह-संस्कार शराब पीकर करते मैंने स्वयं देखा है। यदि यही दौर चलता रहा तो जल्दी ही किसान अपनी भूमि से शराब के पीछे हाथ धो बैठेगा। जवान अपनी जवानी खो बैठेंगे। दूसरी बात जिस नारी जाति को महाराज मनु जी ने और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता कहकर सम्मान दिया है, आज उसके ऊपर कितने जुल्म, कितने अत्याचार, कितने निर्दयी बनकर दहेज के भूखे कमीने लोग फांसी लगाकर, आग में जलाकर, जहर खिलाकर, अन्य-अन्य तरीकों से मारते जारहे हैं। कही मशीनो द्वारा जाच कराकर यदि गर्भ में कन्या हो तो गर्भपात करा दिया जाता है और कन्या पैदा हो जाये तो कोई खुशी भी नही मनाता। इसमें भी यदि आपने ध्यान नही दिया तो—

निर्बल को न सताइये जिसकी मोटी हाय।
मुई खाल की सांस से सार भस्म हो जाये॥

याद रखो यदि इसी तरह कन्याये मरती गई और मारी जायेगी तो इनके अल्पसंख्यक होने पर दस साल मे दस लाख और बीस साल में बीस लाख रुपये की लड़की शायद नही ले पाओगे। आओ हम इन सब बुराइयों को दूर करने की कोशिश करें और ऋषि-मुनियो के पथ पर चलकर अपना कल्याण करें।

टेक—चारों ओर से गिरती जारही हालत आज समाज की।
आखों में आसू आते हैं लखकर हालत आज की॥

कली—रोग भयंकर लगा है जिसका होता नही इलाज यहां,
भाई-भाई मे फूट की बिमारी पड़ी हुई है आज यहा,
बहन-बेटियों की लुटती कहीं देख रहे है लाज यहां,
डाकू, चोर, लुटेरे निशदिन बढ रहे वे अन्दाज यहां,
मर्यादा सब तोड़ दई जो बंधी मनु महाराज की।

रस्सी नही नकेल सभी तो फिर रहे बिना लगाम यहां,
सरेआम हो रहे यहां पर कितने कत्लेआम यहां,
बैरन बढी शराब की जिसने करी सुबह की शाम यहा,
उजड रहे हैं जिसके पीछे शहर ग्राम के ग्राम यहा,
बेशर्मों के शर्म रही ना निज बेटी की लाज की।

कितने ही अपहरण हों बालक वृद्ध जवानों के,
बिना बात कितनो के साथ हैं लाले पड रहे जानों के,
इतने पर भी कान खुले ना राष्ट्रपति प्रधानों के,
जबकि रस्ता देख चुके अपनी आंखों श्मशानों के,
फिर भी आग लगी इनके सर के ऊपर ताज की।

दहेज से भी दु:खी हुई कहीं बेटी-बहन जिन्दगानी में,
कितनी जलकर मरती कितनी मरे डूबकर पानी मे,
सच पूछो तो सभी ओर से देश मेरा है हानि में,
देवानन्द तेरे भजन यदि होजां दिल्ली राजधानी में,
हर व्यक्ति को दवा मिलेगी उसके सही इलाज की।

—स्वामी देवानन्द आर्य भजनोपदेशक

धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए, हानिकारक है।

गोशाला खनौरीकलां (संगरूर) पंजाब का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

खनौरीकला के समीपवर्ती धर्मप्रेमी तथा गोभक्त सज्जनों ने ३० जुलाई से ३ अगस्त, ९२ तक वार्षिक उत्सव स्वामी वेदरक्षानन्द जी की अध्यक्षता में मनाया। प्रात. सायं सामवेद पारायण यज्ञ ब्रह्मचारी यज्ञदेव जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर यथावसर स्वामी रत्नदेव जी महाराज, स्वामी अग्निदेव जी भीष्म, स्वामी सूरत जी, बहिन विशोका आर्या के सुमधुर उपदेश हुए। रात्रि मे पं० रामनिवास जी की प्रसिद्ध भजनमण्डली ने वैदिकधर्म का प्रचार किया। इस सारे कार्यक्रम का प्रभाव लोगो पर बहुत ही अच्छा रहा।

—स्वामी निर्मलानन्द

आर्यसमाज मन्दिर निर्माण को पूरा करने की अपील

ग्राम गढी सिकन्दरपुर जिला पानीपत में ग्रामीण नरनारियों के सहयोग से आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ किया है। परन्तु धनाभाव से अभी २५×२५ फुट का एक हाल, १०×१० फुट के ४ कमरे तथा ६०×८ फुट का बरामदा अधूरा पड़ा है। इसे पूरा करने के लिए फर्श, खिड़की, दरवाजे, रोशनदान आदि के कार्यों के लिए कम से कम ७५ हजार रुपये की तुरन्त आवश्यकता है।

अतः दानदाताओं से अपील है कि इस धार्मिक तथा सामाजिक कार्य को पूरा करने के लिए उदारतापूर्वक आर्थिक सहायता भेजकर पुण्य एवं यश के भागी बने। दानदाताओं के नाम पत्थर पर अंकित किये जावेंगे।

—रामानन्द सिंहल
संयोजक जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत एवं
कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्यसमाज घिराय में वेदप्रचार

दिनांक २ से ४ अगस्त तक आर्यसमाज घिराय जिला हिसार में महाशय श्री जबरसिंह खारी रेडियो सिंगर द्वारा वेदप्रचार किया गया। श्री जबरसिंह खारी ने भजनों के माध्यम से समाज में फैली बुराइयों पर प्रकाश डाला। ४ अगस्त को सुबह श्री हरिकिशन जी के घर पर सामूहिक यज्ञ किया गया। दो-तीन युवकों ने यज्ञोपवीत धारण करके बुराई छोड़ने का संकल्प किया। —ब्र० रामफलसिंह आर्य

वैदिकरीति से नामकरण संस्कार

आर्यनगर सोसायटी हनुमान रोड नई दिल्ली आर्यसमाज के प्रचार वाहन के चालक श्री अशोककुमार आर्य के सुपुत्र का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिकरीति से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। यज्ञ श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती वेदप्रचार अधिष्ठाता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व पं० भूदेव जी शास्त्री के द्वारा हुआ। जिसमें बच्चे का नाम चेतनकुमार आर्य रखा। इसके उपरांत पं० हरिदेव आर्य विद्यावाचस्पति एम० ए० व श्रीमती सुशीला आर्या के उपदेश व भजन हुए। बाद में श्री स्वामी शातानन्द सरस्वती जी व श्री श्यामलाल शर्मा ने अपना शुभ आशीर्वाद बच्चे को दिया।

सर्वखाप पंचायत का राष्ट्रीय पराक्रम

यह पुस्तक दिल्ली के चारो ओर के विशाल हरयाणा की सर्वखाप पंचायत के कार्यालय सौरम के ऐतिहासिक रिकार्ड की जानकारी के आधार पर बीसों वर्ष के अनुभव से ४१६ पृष्ठ कालेज साइज में लिखी गई है। सौरभ का यह रिकार्ड पूरे एक सौ वर्ष अंग्रेजी राज में भूमिगत दबाकर रखा गया। वास्तव में यह हरयाणा का मुंहबोलता आर्य इतिहास है। इसमें सर्वखाप पचायत के महामन्त्री चौ० कबूलसिंह तथा श्री सिद्धाती जी की सम्मति भी है। इसका देय मूल्य ६० रु० है। सौ या पचास पुस्तक इकट्ठी लेने पर ५० रु० प्रति दी जायेगी।

प्रकाशक—आर्य मण्डल
बी-११ यादव पार्क नागलोई दिल्ली-४१
निकट कमरुद्दीन नगर स्कूल

वधू की आवश्यकता

निष्ठावान् आर्यसमाजी, २९ वर्षीय, कद ५ फुट ६ इंच, आकर्षक व्यक्तित्व वाले प्राध्यापक एम०ए० (द्वय) पी-एच० डी० हेतु प्राध्यापिका अथवा बैंक में कार्यरत वधू की आवश्यकता है। जाति बन्धन नहीं। यमुनानगर, अम्बाला, करनाल को तरजीह। सम्पर्क करे—

डा० उमेश शास्त्री
आर्यसमाज सैक्टर ७बी चण्डीगढ़

राजनैतिक संरक्षण से मेवात की समस्याओं में भारी वृद्धि

'आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात' अपनी परिधि के उन सभी अंचलों का दौरा करेगा जहां से समस्यायें पैदा होती हैं। धर्मपरिवर्तन, अपहरण, गोवध मेवात क्षेत्र की पुरानी समस्यायें हैं। किंतु गतदिनों से राजनीतिक संरक्षण के कारण उक्त समस्याओं में भारी वृद्धि हुई है। उसके निदान हेतु मण्डल का दायित्व बनता है इन सभी घटनाओं को गहराई से देखना। उक्त विचार 'आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात के नवनिर्वाचित अध्यक्ष युवानेता श्री भानीराम मंगला ने आर्य वेदप्रचार मण्डल के नूंह अधिवेशन में व्यक्त किये।

उन्होंने पत्रकारों को बतलाया कि आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात, नूंह, फिरोजपुर झिरका, पुन्हाना, हथीन, तावडू (हर०) जुरहेड़ा, कामां, रामगढ, नौगावां, नगर, गोबिन्दगढ, तिजारा (राजस्थान) इत्यादि के अल्पसंख्यक हिंदुओं का गत ३५ वर्षों से प्रतिनिधित्व कर रहा है। मेवात क्षेत्र की सभी आर्यसमाजों की सम्पदा एवं संस्कृति का रखरखाव व संरक्षण करता आरहा है।

इसी अवसर पर आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात के मन्त्री एवं वरिष्ठ शिक्षा शास्त्री श्री सत्येन्द्रप्रकाश सत्य ने मण्डल की भावी योजनाओं पर विचार व्यक्त करते हुए बताया कि मेवात मण्डल इस बार अपनी नई कार्यकारिणी में सत्ता का विकेन्द्रीकरण करेगा। अन्तरंग के लगभग सभी सदस्यों को आर्यवीर दल, प्रशासनिक विभाग, न्यायपालिका विभाग, शिक्षा विभाग, प्रचार विभाग, गोरक्षा विभाग, सम्पदा रख-रखाव, अपहरण एव धर्मपरिवर्तन प्रतिबन्ध, साधु-सन्तों पर हमलों के प्रतिबन्ध जैसे महत्त्वपूर्ण विभागों को बांटेगा। जिससे मण्डल के कार्यों में नई गति आयेगी। मण्डल इस वर्ष आर्यवीर दल के शिविर, शाखाओं एवं जनसम्पर्क पर विशेष जोर देगा।

श्री सत्यम ने यह भी बताया कि मण्डल शीघ्र ही मेवात क्षेत्र में मेवात की समस्याओं के निदान के लिए एक राष्ट्रीय सम्मेलन भी करने जारहा है। जिसकी तिथि एवं स्थान आगामी बैठक में निश्चित किये जायेंगे। मण्डल में नये प्रचारकों एवं आर्यवीर दल में शारीरिक शिक्षकों की अविलम्ब नियुक्तियां की जायेंगी।

इससे पूर्व मेवात मण्डल के चुनाव निर्वाचन अधिकारी श्री धनपत-राय की अध्यक्षता में निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ—

प्रधान—सर्वश्री भानीराम मंगला, मन्त्री—सत्येन्द्रप्रकाश सत्यम, उप-प्रधान—गोविन्दप्रसाद आर्य, टेकचन्द आर्य, कृष्णकुमार मुटानी, म० किशोरसिंह, म० बेगराज, उपमन्त्री—ओलप्रकाश प्रभाकर, कोषाध्यक्ष—शिवचरण आर्य, लेखानिरीक्षक—भजनलाल आर्य।

—राजेन्द्र आर्य 'पत्रकार' पुन्हाना

यमुनानगर क्षेत्र में गोवध से तनाव

यमुनानगर—यहा के निकटस्थ ग्राम लापुरा में दिनांक ४ अगस्त को तीन कसाइयों ने मिलकर एक गाय का वध कर दिया। इससे क्षेत्र में साम्प्रदायिक तनाव है। सूचना मिलने पर पुलिस ग्राम में पहुँची। एक कसाई पकड़ लिया गया है जबकि दो अन्य कसाई भागने में सफल होगये। दिनाक ६ अगस्त को यमुनानगर में गोभक्तों ने एक प्रदर्शन किया व सरकार से तुरन्त शेष दो कसाइयों को पकडकर तीनों अभियुक्तों को कठोर दण्ड दिलाने की माग की।

—इन्द्रजितदेव

आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री तेजकरण सरदाना, उपप्रधान—ओम्प्रकाश डबास, मन्त्री—द्वारकाप्रसाद रावत, उपमन्त्री—सुरेन्द्रमोहन आहूजा, कोषाध्यक्ष—गुलशन निझावन, लेखानिरीक्षक—प्रेमनाथ कपूर।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ रजि० न० P/RTK-४६ दूरभाष: ७२६ ०८, ४३, ०६३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक ३६ ७ सितम्बर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

हरयाणा में शराबबन्दी सम्मेलनों द्वारा प्रचार की धूम

(निज संवाददाता द्वारा)

१९८४ से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वाधान में शराबबन्दी जनजागरण कार्य जोरों से चल रहा है। प्रथम जिलेवार शराब के ठेकों की नीलामो पर प्रदर्शन। द्वितीय शराब के ठेकों पर धरने देकर बन्द करवाना। तृतीय शराबबन्दी जनजागरण हेतु पद-यात्रायें करना। चतुर्थ कई-कई गावों की शराबबन्दी पर पचायतें बुलाना। पंचम जून मास से शराबबन्दी सम्मेलनों द्वारा बड़े जोरों पर शराब, धूम्रपान, हेरोइन, स्मैक, जुआ आदि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध अभियान चला रखा है। लोग शराब से बर्बाद हो रहे हैं। अब इन सम्मेलनों का काफी अच्छा प्रभाव दिखाई दे रहा है। सैकड़ों की संख्या में नरनारी इकट्ठे होकर आर्य विद्वानों की बाते सुनते हैं तथा सम्मान करते हैं। शराबबंदी सम्मेलनों का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

दिनांक १३-१४ जून ९२ को रोहणा (सोनीपत) अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी (गुरुकुल झज्जर)। मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा।

दिनांक २७-२८ जून ग्राम नलवा (हिसार) अध्यक्ष स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास लाडवा। मुख्य अतिथि चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा।

दिनांक १८-१९ जुलाई ग्राम पैंतावासकलां (भिवानी) अध्यक्ष श्री हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री हरयाणा। मुख्य अतिथि चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा।

दिनांक २२-२३ जुलाई ग्राम नीमड़ीवाली (भिवानी) अध्यक्ष श्री हीरानन्द जी पूर्वमंत्री। मुख्य अतिथि चौ. विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त।

दिनांक २८-२९ जुलाई ग्राम दूबलधन (रोहतक) अध्यक्ष श्री धारासिंह सरपंच दूबलधन। मुख्य अतिथि चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त।

दिनांक ३०-३१ जुलाई ग्राम प्रभुवाला (हिसार) अध्यक्ष स्वामी सर्वदानन्द जी गुरुकुल धीरणवास। मुख्य अतिथि चौ० विजयकुमार जी संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा।

दिनांक २ अगस्त ग्राम बामला (भिवानी) अध्यक्ष श्री बलबीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक। मुख्य अतिथि चौ० सूबेसिंह जी सभामन्त्री।

दिनांक ३ अगस्त ग्राम धनाना (भिवानी) अध्यक्ष श्री हीरानन्द जी आर्य पूर्वमन्त्री। मुख्य अतिथि चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त।

दिनांक ८-९ अगस्त ग्राम अटेलाखुर्द (भिवानी) अध्यक्ष प्रिंसीपल बलबीरसिंह फतेहगढ़। मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिंह जी सभाप्रधान।

दिनांक १०-११ अगस्त ग्राम [illegible] (जींद) अध्यक्ष स्वामी रतनदेव जी कन्या गुरुकुल खरल। मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिंह जी सभाप्रधान

दिनांक २३-२४ अगस्त ग्राम [illegible] (भिवानी) अध्यक्ष प्रिंसीपल बलबीरसिंह फतेहगढ़। मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिंह जी सभाप्रधान।

दिनांक २९-३० अगस्त ग्राम भोभूकलां प्रातः १० बजे, ग्राम कितलाना सायं ४ बजे।

दिनांक ३१ अगस्त ग्राम बड़ेसरा प्रातः १० बजे, ग्राम मिताथल साय ४ बजे।

दिनाक १ सितम्बर ग्राम सावड़ प्रातः १० बजे, ग्राम सांजरवास सायं ४ बजे।

दिनांक ३ सितम्बर ग्राम मण्डकोला जिला फरीदाबाद दोपहर बाद १ बजे।

प्रत्येक ग्राम में स्थानीय वक्ताओं के अतिरिक्त निम्नलिखित आर्य नेता एवं वक्ताओ ने भाग लिया। पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री एवं सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी, सभामन्त्री चौ० सूबेसिंह जी, हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त, श्री डी. आर. चौधरी, चौ० दीवानसिंह पूर्व हैडमास्टर अटेला, प्रिं० बलवीरसिंह फतेहगढ़, सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, श्री हीरानन्द जी आर्य पूर्व शिक्षामन्त्री हरयाणा, श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक आदि विद्वान् वक्ताओं ने पधार कर लोगों को इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया तथा मांस, स्मैक, हेरोइन, धूम्रपान आदि बुराइयों से भी दूर रहने का आग्रह किया। साथ में नारी-शिक्षा, गोरक्षा, किसानों की लूट, राष्ट्ररक्षा, चरित्र निर्माण, शिक्षा में असमानता, स्कूल कालेजों में बढ़ती हुई नकल व अनुशासनहीनता आदि पर भी अपने-अपने ढंग से आर्यनेताओं ने विचार रखे। सरकार की शराब बढ़ावा नीति की घोर निंदा की। चौ० विजयकुमार ने मुख्यमन्त्री हरयाणा के दामाद की शराब [illegible] जो फैक्ट्री हिसार के नजदीक है, उसे भजनलाल के माथे पर एक कलंक बताया। साथ में लोगों का आह्वान किया कि राजनीति में चुनाव के समय स्वच्छ, ईमानदार, चरित्रवान्, अच्छे मनुष्यों को आगे लाओ, वरना यह भ्रष्ट राजनेता देश को डुबो देंगे।

प्रो० साहब ने कहा कि हमने १३ वर्ष संघर्ष करके हरयाणा प्रांत अलग बनवाया था कि इस प्रांत का नाम विकास एवं समृद्धि में सबसे ऊंचा होगा। जैसे कि पहले कहावत थी कि 'देशों में देश हरयाणा, जहां दूध-दही का खाना'। परन्तु आज की भ्रष्ट सरकारों ने शराब की नदियां बहाकर उल्टा कर दिया। अतः अब समय है स्वयं शराब को छोड़कर शराबबन्दी संघर्ष के लिए खड़े हो जाओ। यह प्रण करो कि जब तक हरयाणा प्रांत से शराब बन्द नहीं होगी, हम चैन से नहीं बैठेंगे।

इसके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रसिद्ध भजन

(शेष पृष्ठ २ पर)

सत्यार्थप्रकाश क्यों पढ़े ?

धार्मिक जगत् मे सत्यार्थप्रकाश का लगभग वही स्थान है जो उसके समकालीन कार्ल मार्क्स के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'दास कपिटल' अर्थात् पूंजी यानो कपिटल नामक ग्रन्थ का है। आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में जो स्थान उसके द्वारा प्रतिपादित मटेरियलिस्टीक इंटरप्रेटेशन आफ हिस्ट्री अर्थात् इतिहास के आर्थिक विश्लेषण नामक सिद्धांत का है, ऋषि दयानन्द के तर्क और बुद्धि के सिद्धांत का वही स्थान धार्मिक क्षेत्र में है।

- ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए।
- सन्तानो को सुशिक्षित करने के लिए।
- अन्धविश्वास और पाखण्डो को चुनौती देने के लिए।
- वैदिकधर्म की पुन. स्थापना के लिए।
- कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था की स्थापना के लिए।
- गृहस्थाश्रम के नियमों को समझने के लिए।
- राजधर्म को जानने के लिए।
- ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करने की उचित विधि को जानने के लिए।
- ईश्वर, जीव और प्रकृति के भेद को समझने के लिए।
- जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय को समझने के लिए।
- बन्ध और मोक्ष विषय जानने के लिए।
- धर्म के सत्य स्वरूप को जानने के लिए।
- भारतवर्ष में फैले मतमतांतरों में सत्य, असत्य का निर्णय करने के लिए।
- भारतीय संस्कृति को समझने के लिए।
- युवकों मे बढती हुई नास्तिकता को रोकने के लिए।
- धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रांति के लिए।
- विश्व में एक ही मानवधर्म को विस्तृत करने के लिए।
- वैचारिक क्राति के लिए।

महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ—

सत्यार्थप्रकाश अवश्य पढ़ें

(पृष्ठ १ का शेष)

मण्डलियां प. जयपालसिंह बेधड़क, श्री खेमसिंह क्रांतिकारी, महाशय हरध्यानसिंह, पं. रामकुमार आर्य तथा प. ईश्वरसिंह तूफान आदि के समय-समय पर शराबबन्दी पर समाज सुधार के शिक्षाप्रद क्रांतिकारी भजनों का कार्यक्रम भी होता है। जिनका लोगों पर बहुत हो अच्छा प्रभाव पड़ता है। लोगों मे अच्छा उत्साह है। प्रत्येक गाव में सैकडों की संख्या मे नरनारी इकट्ठे होकर आर्य विद्वानों के विचार सुनते हैं और आग्रह करते हैं कि किसी प्रकार से शराब बन्द करवाकर किसान-मजदूर को बचाओ, जो शराब से बुरी तरह बर्बाद हो रहे हैं। आर्यनेताओं के आह्वान पर प्रत्येक सम्मेलन में खड़े होकर शराबी भविष्य में शराब न पीने की प्रतिज्ञा करते हैं और अपने-अपने गांव मे अवैध शराब की बिक्री रोकने के लिए शराबबन्दी समितियों का गठन करते हैं। शराब बेचनेवाले पर तथा शराब पोनेवाले पर दण्ड लगाया जाता है। जो धन दण्ड रूप में इकट्ठा होता है, उसे गांव के सामूहिक विकास मे खर्च किया जाता है। हरयाणा प्रात में सभाप्रधान के नेतृत्व में शराबबन्दी कार्यक्रम युद्धस्तर पर चल रहा है।

प्रचार के साथ-साथ सभा के उपदेशक व भजनोपदेशक जिलवार जहां शराब के ठेके है, उन गावों की पंचायतों से अगले वर्ष ठेका न खुलने का प्रस्ताव पास करवाते हैं। इस समय हरयाणा में शराबबन्दी के लिए अच्छी लहर चली हुई है। इसका श्रेय आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ही जाता है, क्योंकि सभा के अधिकारी तथा प्रचारक व कार्यकर्ता दिन-रात कई वर्षों से शराबबन्दी जनजागरण के कार्य में जुटे हुए हैं। बैंच शराब हटाओ, देश बचाओ।

आवश्यक सूचना

दमा एवं श्वास के रोगियों हेतु शुभ अवसर। केवल एक ही बार खीर सेवन करने से दमा एवं श्वास से छुटकारा पायें और अपने जीवन को उज्ज्वल बनायें।

यह खीर शरद पूर्णिमा दिनाक ११ अक्तूबर, ९२ को सायंकाल बनाकर रातभर चन्द्रमा की रोशनी में रखकर सूर्योदय से पूर्व खिलाई जाती है। जो रोग को सर्वथा दूर भगाती है।

निर्माणकर्त्ता—स्वामी परमानन्द योगतीर्थ, आर्यसमाज मन्दिर सालवन, जि० करनाल, हरयाणा।

रास्ता—पानीपत, करनाल, असन्ध और सफीदों से सीधी बसे सालवन जाती हैं।

कृपया रोगी १० दिन पहले सूचित कर। जिससे औषधि युक्त खीर तैयार की जासके। कृपया शरद पूर्णिमा के दिन सायंकाल तक अवश्य ही पहुंच जाना चाहिये। कष्ट के लिए क्षमा। हार्दिक धन्यवाद।

प्रवेश शुल्क ५० रुपये देना होगा।

नोट—मौसम के अनुसार ओढ़ने का वस्त्र साथ लावें।

स्थान—आर्यसमाज मन्दिर सालवन, जिला करनाल।

भवदीय
वैद्य बलराम आर्य
एव आर्यसमाज सालवन

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक यज्ञशाला में यज्ञ तथा सत्संग का सफल आयोजन

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की भव्य यज्ञशाला जो कि छात्रावास तथा प्राध्यापक आवास के बीच में है, में प्रति शुक्रवार को दोपहर बाद ५ से ६-३० बजे तक यज्ञ तथा सत्संग का आयोजन किया जारहा है। इस कार्यक्रम को सफल करने के लिए श्री राममेहर एडवोकेट तथा आर्यसमाज सैनीपुरा रोहतक के सदस्य प्रत्येक शुक्रवार को श्री पाल भारती स्कूल के वाहन में नियमपूर्वक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय यज्ञशाला में पहुंचते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से भी प्रति शुक्रवार को एक भजनमण्डली प्रचारार्थ जाती है। इस सत्संग मे विश्वविद्यालय के कुलसचिव, प्राध्यापक तथा छात्र भी समय-समय पर सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार विश्वविद्यालय में महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों का सफलतापूर्वक प्रचार हो रहा है।

—केदारसिंह आर्य

शोक समाचार

१—आर्यवीर दल हरयाणा के प्रचारमन्त्री तथा आर्यसमाज न्यू कालोनी पलवल के पूर्वप्रधान श्री वीरभानु आर्य का निधन २७-८-९२ को होगया। वह काफी समय से बीमार चल रहे थे। उन्होंने सारी आयुभर आर्यसमाज और आर्यवीर दल के लिए कार्य किया। वह स्वास्थ्यशील विद्वान् तथा आर्यवीर दल के सजग प्रहरी थे। आर्यवीर दल हरयाणा को उनके निधन से भारी आघात लगा है। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा परिवार को उनके वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

२—आर्यवीर दल रोहतक के मण्डलपति श्री जगदीशमित्र के पिता ला० गणेशदास जी सचदेव का निधन ३०-८-९२ को होगया। लालाजी ने सारा जीवन आर्यसमाज के कार्यों मे लगाया। हिंदी सत्याग्रह, शराबबन्दी आंदोलन, गोरक्षा सत्याग्रह में भी बढ-चढ़कर कार्य किया। आर्य पारवारिक साप्ताहिक सभा रोहतक के वह संस्थापक थे जो १८ वर्ष से निरन्तर कार्य कर रही है। उनके निधन से आर्यवीर दल तथा आर्य संस्थाओं को काफी आघात पहुँचा है। ईश्वर उनको सद्गति प्रदान करे।

—वेदप्रकाश आर्य महामन्त्री आर्यवीर दल

॥ ओ३म् ॥

शराब हटाओ, देश बचाओ ! शराब सब पापों की जड है !!

शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन

शराब से हो रहे सर्वनाश को देखते हुए, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने निर्णय किया है कि चालू वर्ष के अन्त तक जिला भिवानी में पूर्ण रूप से शराबबन्दी लागू की जावे। इस सन्दर्भ में 2 अक्तूबर 1992 (शुक्रवार) को प्रातः 10 बजे किरोड़ीमल पार्क भिवानी में इकट्ठे होकर नगर भिवानी में एक विशाल प्रदर्शन किया जाएगा तथा उपायुक्त महोदय को ज्ञापन दिया जावेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सभा द्वारा निम्न अनुसार शराबबन्दी व अन्य सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के प्रति लोगों में जागृति पैदा करने के लिए सम्मेलनों का कार्यक्रम बनाया गया है।

कार्य-क्रमः—

14-9-92	ग्राम दिनोद	10 बजे प्रातः	मिराण दोपहर 1 बजे	ईसरवाल साय 4 बजे
15-9-92	ग्राम देवसर	,,	लुहाणी ,,	गोलागढ ,,
16-9-92	ग्राम खानक	,,	गारनपुरकला ,,	कैरु ,,
17-9-92	ग्राम चांग	,,	घुसकाणी ,,	तिगड़ाना ,,
18-9-92	ग्राम रानीला	,,	बोन्दकला ,,	अचीना ,,
19-9-92	ग्राम इमलोटा	,,	मातनहेल ,,	बिरोहड ,,
20-9-92	ग्राम मन्डोली कलां	,,	बहल ,,	चहड कलां ,,
21-9-92	ग्राम ढिगावा	,,	बुढेडा ,,	ओबरा ,,
	ग्राम कादमा	,,	बेरला ,,	जेवली ,,
22-9-92	ग्राम बाढड़ा	,,	काकडोलीसरदारा ,,	पचगामा ,,
	ग्राम जाटू लुहारी	,,	मंढाना ,,	कूगड ,,
23-9-92	ग्राम बडसी	,,	पपोसा ,,	रतेरा ,,
24-9-92	ग्राम चिड़िया	,,	गोठड़ा ,,	मकडाना ,,

उपरोक्त गांवों मे निम्न आर्यनेता व नेता पधार रहे हैं—श्री हीरानन्द आर्य पूर्व शिक्षा-मन्त्री हरयाणा, श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, श्री सूबेसिंह जी पूर्व एस० डी० एम० एवं सभा मन्त्री, श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी आदि पधार रहे है। साथ में आर्य भजनोपदेशकों के क्रान्तिकारी भजन भी सुनने को मिलेंगे।

अत. ज्यादा से ज्यादा इकट्ठे होकर सम्मेलनों को सफल बनाये।

निवेदकः—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (दयानन्दमठ रोहतक)

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के रोहतक अधिवेशन की तैयारी हेतु बैठक

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का वार्षिक अधिवेशन ७-८ नवम्बर, ९२ को इस बार रोहतक मे होना निश्चित हुआ है। इससे सारे भारतवर्ष से नशाबन्दी परिषद् के प्रतिनिधि हजारों की सख्या मे पधारेंगे। इस अवसर पर नशाबन्दी के कार्यक्रम को गतिशील तथा प्रभावशाली बनाने के लिए महिलाओं तथा युवाओं की गोष्ठी के अतिरिक्त एक खुला अधिवेशन भी होगा, जिसमे शराबबन्दी समर्थक नेताओ एव कार्यकर्ताओ के व्याख्यान होंगे।

इस महत्त्वपूर्ण समारोह की तैयारी करने पर विचार करने के लिए १३ सितम्बर, ९२ रविवार को ११ बजे सभा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे एक बैठक रखी है। इस बैठक मे २ अक्तूबर को महात्मा गाधी तथा लालबहादुर शास्त्री के जन्मदिन के अवसर पर भिवानी में एक नशाबन्दी सम्मेलन का आयोजन करने पर भी विचार किया जायेगा।

आपके सहयोग का इच्छुक
सूबेसिंह सभामन्त्री

आर्यसमाज बेरी का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री अखेराम, उपप्रधान—महेन्द्रसिह, मन्त्री—इन्द्रसिह, उपमन्त्री—सत्यपाल, कोषाध्यक्ष—केशोराम, लेखा-निरीक्षक—रणवीरसिंह, राजेन्द्रसिंह।

मुसलाना में वेदप्रचार

ग्राम मुसलाना (जीद) में कृषि राज्यमन्त्री हरयाणा श्री वचनसिंह आर्य की प्रेरणा से गतसप्ताह वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसकी पूर्णाहुति श्रावणी-पर्व पर हुई। चौ० वेशराज जो कि चौ० बचनसिंह आर्य के सहयोगी हैं, उनके आवास पर पूर्णमासी को यज्ञ किया, जिसमें गुरुकुल कालवा के ब्रह्मचारी, कन्या गुरुकुल सोरमाजरा की ब्रह्मचारिणी तथा सभा की भजनमण्डली द्वारा प्रचार और हवन पर उपदेश हुए। सभा को ८०० रु० श्री बचनसिह आर्य के सहयोग से प्राप्त हुए।

शोक समाचार

मानवता के पुजारी डा० बोधराज धीगड़ा का निधन १०-८-९२ को होगया, वे ७२ वर्ष के थे। स्वाध्यायशील, ईश्वर विश्वासी, समाज सेवी, अतिथि सत्कार, प्रत्येक प्राणिमात्र के हितैषी आदि उनमें विशेष गुण थे। भगवान् से हमारी प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा परिवारजनों को दुःख सहन करने की शक्ति दे।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

महाशय चन्द्रपाल आर्य का निधन

आर्यसमाज सुलतानखेडी जि० रोहतक के प्रधान एवं पं बस्तीराम आर्य भजनोपदेशक के शिष्य ठा० चन्द्रपाल आर्य का गतमास ८० वर्ष की आयु में निधन होगया। इन्होंने आयुभर आर्यसमाज के प्रचार कार्यों में योगदान किया है। अपने ग्राम मे आर्यसमाज मन्दिर बनवाकर इसे प्रचार केन्द्र बनाया। उनकी स्मृति में उनके घर पर शाति-यज्ञ किया गया।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति तथा उनके परिवारजनों को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री देवानन्द भजनोपदेशक को पितृशोक

सभा के भजनोपदेशक श्री देवानन्द जी के पिताजी श्री गगाराम जी त्यागी का ग्राम सुलतानपुर गेझा नोएडा (गाजियाबाद) का ११ अगस्त, ९२ को ९५ वर्ष की आयु में स्वर्गवास होगया। वे धार्मिक विचारों के थे तथा गौ व यज्ञप्रेमी थे। उनकी स्मृति मे २४ अगस्त को शाति-यज्ञ पर सभा को २५१ रु० दान दिया गया।

जाटवीरों का इतिहास

कैप्टन दलीपसिंह अहलावत द्वारा "जाटवीरों का इतिहास" का द्वितीय परिवर्धित एवं संशोधित संस्करण छपकर तैयार है। यह पुस्तक अध्यक्ष, केन्द्रीय, पुस्तकालय समिति एवं निदेशक लोक सम्पर्क विभाग हरयाणा, क्रमांक लो० स० वि० ह० (एल० ए०) ९०/१९११ चण्डीगढ दिनाक २०-८-९० द्वारा नगरपालिका, सार्वजनिक, कालेज, पंचायत एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय आदि सभी पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत है। उपर्युक्त के लिए इस पुस्तक का मूल्य ३०० रुपये है, परन्तु व्यक्तिगत (Individual) के लिए केवल २०० रुपये है। डाकखर्च ३० रुपये इसके अतिरिक्त है। पुस्तक मगवाने के लिए निम्नलिखित स्थायी पते पर व्यवहार करे—

कैप्टन दलीपसिह अहलावत
रामगोपाल कालोनी रोहतक-१२४००१
म०न० २६८बी/२९ सोनीपत रोड रोहतक
जि० रोहतक (हर०)

रक्षाबन्धन-पर्व

दिनाक १३-८-९२ को पूर्णिमा के दिन आर्यसमाज नलवा की ओर से श्रद्धापूर्वक रक्षाबन्धन-पर्व मनाया गया। प्रात. ८ बजे आर्यसमाज मन्दिर मे सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी द्वारा हवन किया गया। रक्षाबन्धन के महत्त्व पर विस्तार से विचार रखे। नवयुवकों को आत्म-निरीक्षण करके नेक कार्यो मे जुट जाना चाहिए। शराब, धूम्रपान, ताश आदि भयकर बुराइयो को सदा के लिए त्याग देना चाहिए। साय ६ बजे आर्यनिवास ढाणी में भी हवन किया गया। निकट की ढाणियो के नरनारियो ने भी बढ-चढकर भाग लिया। यहा भी क्रातिकारी जी ने हवन के लाभ तथा रक्षाबन्धन-पर्व को भाई-बहिन के अटूट प्रेम का प्रतीक बताया। साथ मे ईश्वर पर दृढ-विश्वास, पच महायज्ञ तथा आर्षग्रन्थो का स्वाध्याय करने का सुझाव दिया।

—भलेराम आर्य, नलवा

उन वीरों की याद

तर्ज —मैली चादर ओढ

१५ अगस्त का दिन उन वीरो की हमको याद दिलाये।
देशधर्म और जाति के लिये जिन्होने शीश कटाये॥

स्वाभिमान से जीना सीखा कभी ना नाड झुकाई।
देशधर्म हित जगलो में भटके घास की रोटी खाई।
भूखे नग्न मर गये तडप कर देशहित प्राण लगाये॥१

चिने गये दीवारों में पर नही धर्म से हारे।
गर्दन को लिया कटा मगर जनेऊ चोटी न उतारे।
जल में फेक दिये जिन्दा कोई अग्नि मे भुनवाये॥२

ईंट पत्थर खाये तन पर दुनियां को जगाया।
अन्धकार का नाश किया वेदो का डंका बजाया।
खुद विष के प्याले पीकर दुनिया को अमृत पिलाये॥३

बिजली बनकर कडक पडी थी शत्रु दग किया था।
अग-भग होगये साहस कर फिर भी जग किया था।
लक्ष्मीबाई अमर होगई करके गजब दिखलाये॥४

छुरे, गोली, लाठी खाई लाखों ने फासी पाई।
खून की होली खेली गई फिर आज आजादी आई।
जाकर जिन्होने विदेशो मे शत्रु मार गिराये॥५

आओ वीरो शिक्षाले पढ शहीदों की कुर्बानी को।
देशधर्म हित प्राण लगादे करले सफल जवानी को।
बलवन्तसिह कहे उन वीरों का आओ ऋण चुकाये॥६
१५ अगस्त का दिन···
देशधर्म और जाति ···

—बलवन्तसिंह आर्य
गाव ठसका (यमुनानगर)

स्वराज्य के जन्मदाता महर्षि दयानन्द

जैसा कि आपको पता ही है कि हमारा देश भारत सदियों तक गुलामी की जंजीरों में जकडा रहा। जिसके उपरात अनेकों बलिदानों एव कुर्बानियो के पश्चात् हमे स्वतन्त्रता मिली, जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को ही जाता है।

अस्तु ! महर्षि दयानन्द का १८५७ की क्रांति से सीधा सम्बन्ध रहा हो या न रहा हो, परन्तु इतनी बात निश्चित है कि महर्षि दयानन्द ने अपने कार्यक्षेत्र मे आने के बाद भारतीय राष्ट्रीयवाद को अत्यधिक सुदृढ वैचारिक धरातल प्रदान करके एक प्रकार से भारतीय सवैधानिक आदोलन की नीव डाल दी थी। इसलिए भारत के लोहपुरुष सरदार पटेल ने महर्षि के चरणों मे अपने जीवनकाल के अन्तिम सार्वजनिक भाषण के रूप मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा था—

It was he who actually laid the foundation of India's अर्थात् ये असल मे वो थे जिन्होने भारत को आजादी की नीव रखी थी।

श्रीमती बेसेट ने भी लिखा था कि जब कभी भारत माता का स्वतन्त्रता मन्दिर निर्मित होगा तो उसमे सर्वोच्च स्थान कौपीनधारी साधु महर्षि दयानन्द को प्रदान किया जायेगा। भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन से सम्बद्ध जितने भी प्रमुख महत्त्वपूर्ण विषय थे, प्राय उन सबको एक आदोलन का रूप देने और जनता का ध्यान उनकी ओर सर्वप्रथम आकर्षित करने का श्रेय महर्षि दयानन्द को ही जाता है। सभी स्वदेशी वस्तुओ तथा स्वदेशी राष्ट्रभाषा हिंदी तथा स्वदेशी सास्कृतिक भाषा सस्कृत, स्वदेशी उद्योग स्वराज्य सब नरनारियो के लिये अनिवार्य स्वदेशी शिक्षा, स्वदेशी न्याय व्यवस्था की रक्षा तथा देशद्रोहियों के विरुद्ध स्वदेशी वैदिकधर्म के पक्ष में तथा भारत की एकता के प्रमुख शत्रु जाति प्रथा और अस्पृश्यता के विरुद्ध तुमूल आदोलन सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने ही आरम्भ किया था। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के शब्दो मे जिन बातों पर महात्मा गाधी ने बाद में जोर दिया था, उन सब की शुरुआत महर्षि दयानन्द उनसे ५० वर्ष पूर्व कर चुके थे। अत: इन सब बातों को दृष्टिगोचर करते हुए मै महर्षि दयानन्द को भारत को आजादी का सबसे पहला व्यक्ति मानती हुई इस स्वतन्त्रता के उपलक्ष्य में उनके चरणों में श्रद्धाजलि अर्पित करती हूं।

—कुमारी डिम्पल रानी आर्य
कन्या स्कूल संगरूर (पजाब)

समाचार

हरिद्वार, १६ जून। गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति के ९३वे जन्मदिवस के अवसर पर एक यज्ञ का आयोजन दिनांक १६ अगस्त, ९२ को उनके निवास स्थान पर किया गया। इस अवसर पर आर्य विद्या सभा के मन्त्री प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, प्रो० वेदप्रकाश, डा० महावीर अग्रवाल रीडर संस्कृत विभाग, डा० सत्यव्रत राजेश, डा० राजकुमार रावत, विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डा० रामप्रसाद वेदालंकार आदि अनेक विद्वानो ने आचार्य जी के दीर्घ जीवन की कामना की तथा उनके द्वारा वेद के क्षेत्र मे किये गये कार्य की मुक्तकण्ठ से प्रशसा की। गुलुकुल परिवार तथा स्नातको की ओर से गुरुकुल के कुलपति प्रो० सुभाष विद्यालकार ने आचार्य जी का अभिवादन किया तथा सम्मान स्वरूप एक शाल भी भेट किया। अन्त में आचार्य जी ने भी अपनी ओर से सभी का आभार प्रकट किया और अपने आर्यसमाज में प्रवेश तथा गुरुकुल मे आने की कहानी का वर्णन किया। आचार्य जी का विचार है कि आर्यसमाज से बढ़िया कोई भी सगठन नही है और स्वामी दयानन्द सरस्वती का एक-एक वाक्य सर्वजनहितकारी है, क्योंकि स्वामी दयानन्द का सारा चिंतन वेदों के अनुकूल है।

—डा० सुषमा स्नातिका

अण्डे खाने के विरुद्ध

ब्रिटिश सरकार की चेतावनी का परिणाम

ब्रिटेन में ७० प्रतिशत अण्डो की बिक्री कम होगई, सैकड़ों मुर्गीखाने खाली होगये।

As a Result of this Govt. Warning 70% in Egg-Sale Dropped and Most of the Poultry Farms Closed.

ब्रिटिश सरकार की तरह भारत सरकार को भी जनहित मे टी० वी० पर अण्डों की बुराइयां बतानी चाहिये।

Just Like British Govt. Indian Govt. Should Also Warn The Public Against Taking Eggs on T.V.

ब्रिटेन के बहुत से उच्चकोटि के डाक्टरों तथा स्वास्थ्य मन्त्रालय, एग्रीकल्चर मन्त्रालय तथा विशेषकर हैल्थ मिनिस्टर ने जनता को बार-बार चेतावनी दी कि मुर्गे का मांस मत खाओ तथा अण्डे व अण्डो से बननेवाले सभी खाद्य पदार्थों जैसे आईसक्रीम, आमलेट, केक, बिस्कुट आदि का तुरन्त त्याग करदो, क्योंकि सालमोनेला नामक छूतरोग के विषैले कीटाणु मुर्गियों को आतो मे प्रवेश कर गये है। ये कीटाणु अंडो मे रहे-पीले भाग (Yolk) मे अनगिनत रूप से लगातार बढते ही जारहे हैं जिस कारण इग्लेंड मे प्रति सप्ताह ३००० व्यक्ति इस छूत के रोग से पीड़ित हो रहे हैं। उन्हे इस छूत से उल्टी, दस्त, टायफाइड बुखार व आंतों में सूजन आदि रोग हो रहे हैं। इन रोगियो में से प्रति सप्ताह एक व्यक्ति मर जाता है। इस चेतावनी के कारण इग्लेंड की बहुत सारी जनसंख्या ने अण्डो को तथा उनसे बने पदार्थों को खाना बन्द कर दिया है। अण्डों की बिक्री ७० प्रतिशत कम होगई है। अमरीका मे भी यह छूत की भयानक महामारी का प्रकोप फैलता जारहा है। वहा के देशवासियो को अमेरिकन मैडिकल एसोसिएशन ने गम्भीर चेतावनी दी है। भारत सरकार से प्रार्थना है कि वह भी जनहित में टी०वी० पर अण्डे तथा मुर्गे मास की बुराइया बताये।

जयभारत फेब्रिक्स
१७, नूरमल लोहिया लेन कलकत्ता-७००००७
के सौजन्य से

स्त्री-शिक्षा

कुछ करलो देश भलाई री, निद्रा से जागो बहना। टेक
जग पैदा होता तुमसे, तुम जगजननी कहलाई री। निद्रा से
था देवी नाम तुम्हारा, विद्या पढती चितलाई री। निद्रा से
तुम ही पैदा कीने, वह भीष्म भीम बलदाई री। निद्रा से
अब शूद्र बतावे तुमको, जूती की पदवी पाई री। निद्रा से
अभिमन्यु तुम्ही ने बनाया, करी चक्रव्यूह की लडाई।
अब कूडे घसीटु छीतर, पैदाकर कुलो लजाई री। निद्रा से...
पतिव्रत धर्म पर जल गई पद्मावत तुम्ही कहाई री। निद्रा से...
अब जन्मो ऐसे बेटे, रहे भूतो से भय खाई री। निद्रा से
उठो देवी बन दिखलाओ, कहे ईश्वर तुम्हारा भाई री।

—रतनसिह आर्य

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

	नाम	रुपये
१	श्री ताराचन्द सु० सिंहराम ग्राम व पो० मूनसा जि० भिवानी	५५
२	,, हवलदार छत्रसिंह ,, ,,	५५
३	,, रामनारायण सरपंच ग्राम मादल पो. केहड़ी मदनपुर जि० भिवानी	२५६
४	श्रीमती मूर्तिदेवी धर्मपत्नी सरपंच रामनारायण केहड़ी मदनपुर जि० भिवानी	५१
५	श्री छोटूराम सु० रिजकूराम केहड़ी मदनपुर जि. भिवानी	५१
६	श्रीमती नसीब बी०ओ० चरखी दादरी जि० भिवानी	१०१
७	श्री हरज्ञानसिंह विज्ञान अध्यापक ,, ,,	२२
८	ग्राम घीकाडा ,,	१०१
९	श्री सन्तुसिंह ग्राम व पो० बास ,,	१०१
१०	,, राजेन्द्रसिंह रोहतक रोड चरखी दादरी ,,	१०१
११	,, प्रभुदयाल ,, ,,	१००
१२	,, जनकनारायण जय इ जीनियरिंग वर्क्स महेन्द्रगढ़ रोड चरखी दादरी जि. भिवानी	११००
१३	,, प्रतापचन्द्र शास्त्री चरखी दादरी जि० भिवानी	११११
१४	,, चौ० तारीफसिंह ,, ,,	१००
१५	,, सुकर्मपाल कालेज रोड ,, ,,	५१
१६	,, रमेश आटो मोबाइल कालेज रोड ,, ,,	१०१
१७	,, राजेन्द्रकुमार ,, ,, ,,	१०१
१८	,, कर्णसिंह बहादरसिंह ,, ,, ,,	२१
१९	,, गोयल मोटर स्टोर ,, ,, ,,	२१
२०	,, मित्तल आटो मोबाइल ,, ,, ,,	२१
२१	,, रामचन्द्र सैनी ,, ,, ,,	५१
२२	,, चमनलाल ,, ,, ,,	१०१
२३	,, डा० सुदर्शनदेव आचार्य रा० महा० झज्जर जि० रोहतक	११११
२४	,, राजेन्द्रसिंह दहिया बहुतकनीकी ,, ,,	१०१
२५	,, करतारसिंह ,, ,,	१०१
२६	,, हरिसिंह सरोहा ,, ,,	१०१
२७	,, राजेन्द्रसिंह मलिक ,, ,,	२०१
२८	गुप्त दान ,, ,,	२१
२९	श्री सुरेन्द्रसिंह प्राध्यापक ,, ,,	१०१
३०	,, उमेदसिंह ,, ,,	२१
३१	,, सी०बी० कुण्डु ,, ,,	२१
३२	,, धर्मवीर देशवाल मन्त्री आर्यसमाज झज्जर ,,	११००
३३	,, चौ० दरियावसिंह उपप्रधान ,, ,,	११००
३४	,, सुभाष सु० ईश्वरसिंह भदानी ,,	११००
३५	,, बलवीरसिंह प्रधान आर्यसमाज झज्जर ,,	११००
३६	सुश्री शांतिदेवी मुख्याध्यापिका आर्य कन्या हाई स्कूल झज्जर जि० रोहतक	२५१
३७	,, सन्तोष धनखड अध्यापिका आर्य कन्या हाई स्कूल झज्जर जि० रोहतक	१०१
३८	,, कुसुम अध्यापिका आर्य कन्या हाई स्कूल झज्जर जि० रोहतक	१०१
३९	,, राजवन्ती वैदिक कन्या पाठशाला झज्जर जि रोहतक	१०१
४०	,, इन्दु ,, ,, ,,	५१
४१	,, वेदमन्ती ,, ,, ,,	५१
४२	,, सवितादेवी ,, ,, ,,	५०
४३	,, सन्तोष खुराना ,, ,, ,,	५१
४४	,, कुमारी कौशल ,, ,, ,,	५१
४५	,, दयावन्ती ,, ,, ,,	२१
४६	,, मनोरमा ,, ,, ,,	२१
४७	सुश्री ओमवती वैदिक कन्या पाठशाला झज्जर जि० रोहतक	२१
४८	,, दर्शना ,, ,, ,,	२१
४९	,, उषादेवी ,, ,, ,,	२१
५०	,, सत्यावती ,, ,, ,,	३१
५१	,, पुष्पादेवी ,, ,, ,,	२१
५२	श्री भगवानसिंह आर्य ग्राम नठेड़ा जि० रेवाडी	७२
५३	,, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्कूल आर्यसमाज मन्दिर कोसली जि० रेवाड़ी	५१
५४	ग्राम सरहोला जि० रोहतक	४४
५५	,, कानडबास जि० रेवाडी	१०१
५६	,, भाकली ,,	१३३
५७	आर्यसमाज जुड्डी ,,	७०
५८	श्री धर्मबान सु० शुभराम ग्राम व पो० लीलोठ जि० रेवाड़ी	२५
५९	,, जगमोहन सु० सरजीतसिंह ,, ,,	२५
६०	,, रामपत सु० मामचन्द डागर ,, ,,	२५
६१	,, राजसिंह ,, ,,	२५
६२	,, यशपाल सु० रामसिंह ,, ,,	२५
६३	,, गुरुदत्त सु० नेतराम ,, ,,	२५
६४	,, म० शुभराम प्रधान आर्यसमाज ,, ,,	२५
६५	,, वैद्य श्रीचन्द सु० गनेशीलाल ,, ,,	२५
६६	,, कुलदीप लेक्चरार की माता गिंदोड़ीदेवी ,, ,,	२५
६७	आर्यसमाज लीलोठ ,, ,,	३२
६८	श्री कप्तान सूरजभान ग्राम व पो. कोसली ,,	७६
६९	ग्राम गुरथला ,,	१२७
७०	श्री मामचन्द ग्राम व पो० कोसली ,,	८७
७१	,, रायसिंह द्वारा ,, ,,	६१
७२	,, ,, ,,	३८
७३	,, मा० अमरसिंह ग्राम व पो. बालधनकलां ,,	२५
७४	,, श्रावकर्ण आर्य ,, ,,	२५
७५	,, परमानन्द वसु ,, ,,	२५
७६	आर्यसमाज बालधनकलां ,, ,,	४५
७७	,, लीलोठ ,,	११७
७८	श्री सूरतसिंह पंचायत मेम्बर लीलोठ ,,	२६
७९	आर्यसमाज जहाजपुर ,,	४१
८०	मोहल्ला लाखान ग्राम कोसली ,,	७०
८१	श्री बाबूलाल जैन द्वारा नवीन शोरूम तिजारा जि० अलवर (राज०)	५१
८२	,, वानप्रस्थी रामजीलाल आर्यसमाज खैर जि० अलवर (राज०)	२१
८३	,, रामकुमार शर्मा मुक्तिवाड़ा जि० रेवाड़ी	२१
८४	,, महात्मा धर्मवीर, म० हीरालाल गुरुकुल किशनगढ़ घासेड़ा जि० रेवाड़ी	२१
८५	,, सूरतसिंह आर्य मन्त्री म० हीरालाल गुरुकुल किशनगढ़ घासेड़ा जि० रेवाड़ी	२१
८६	,, आचार्य सत्यप्रिय वैदिक आश्रम तिजारा जि० अलवर (राज०)	१०१
८७	,, दयाराम आर्य ग्राम व पो० राहीखेड़ा पो० तिजारा जि० अलवर (राज०)	१०१
८८	प्रधान आर्यसमाज तिजारा जि० अलवर (राज०)	१०१
८९	श्री अरविन्द आर्य ग्राम व पो० जगमलहेड़ी पो० तिजारा	५१
९०	आर्य कन्या पाठशाला द्वारा नौरंगसिंह वकील सिरसा	११००

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

ग्राम निडाना (जींद) में कन्या विद्यालय आरम्भ

त्यागमूर्ति, कर्मयोगी, शिक्षाविद स्वामी रतनदेव जी के पुरुषार्थ से ग्राम निडाना में कन्या गुरुकुल खरल को १०+२ की शाखा कन्या पाठशाला निडाना में १६ जुलाई, ९२ से विधिवत् आरम्भ होगई है। इस पाठशाला से इस क्षेत्र में कन्याओं को शिक्षा ग्रहण करने का विशेष लाभ होगा।

ज्ञातव्य है कि गतवर्ष गाववालों ने स्वामी जी से प्रार्थना करके ६ लाख रुपये इकट्ठे करके उनकी झोली में डाल दिये। पाठशाला हेतु मैचिंगग्राट के बाद १८ लाख रुपये होगए। स्वामी जी के नेतृत्व मे एक कमेटी गठित की गई। अब तक ८ कमरे बन चुके हैं, १० कमरे शेष हैं। चार दिवारी की चिनाई चालू है। स्वामी जी ने जुलाई मास से १०+२ की कक्षाये आरम्भ करदी हैं। यह गाव स्वामी जी की जन्मस्थली है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

वेदप्रचार

आर्यसमाज थानेसर (कुरुक्षेत्र) में दिनांक ७ अगस्त से १३ अगस्त, ९२ तक वेदप्रचार सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रात. यजुर्वेद पारायण यज्ञ श्री पं० भूदेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। प्रातः और रात्रि को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक सर्वश्री गजराजसिंह के भजन और चन्द्रपाल शास्त्री, प० भूदेव शास्त्री, जगदीशप्रसाद विद्यावाचस्पति और स्वामी जीवनानन्द जी के उपदेश हुए। आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्र व अध्यापक एवं थानेसर नगर की जनता ने इस कार्य में विशेष रूप से भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को इस अवसर पर ७०० रु० दानार्थ भेट किये गये।

—रामकृष्ण सेठी मन्त्री आर्यसमाज

आवश्यकता है

एक सुयोग्य सेवानिवृत्त आर्य सज्जन की जो अतिथि भवन एवं आर्यसमाज के दिन-प्रतिदिन के कार्यों का प्रबन्ध सुचारु रूप से चला सके। उचित वेतन तथा आवास व्यवस्था समाज मन्दिर परिसर में ही। पूर्ण विवरण सहित आर्यसमाज सैक्टर-२२ए चण्डीगढ के प्रधान अथवा मन्त्री को तुरन्त आवेदन करे।

विनीत—बुधराम आर्य मन्त्री

भू पर फैले आर्यसमाज

बजे पुनः डका वेदो का तिमिराच्छादित महिमण्डल पर।
वैदिक सत्य सनातन पावन फैले धर्म धरणी तल पर।।

मानव में मानवता आए सजे मनुजता का शुचि साज।
भू पर फैले आर्यसमाज ।।

वर्णाश्रम को पुण्य व्यवस्था का धरती पर हो अनुपालन।
आर्ष विचारों से आप्लावित हो सम्पूर्ण जगत् का जन-जन।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का गूंजे सिंहनाद फिर आज।
भू पर फैले आर्यसमाज ।।

जाग्रत ज्योति जगे जन-जन में, शांति शुचिरता-समरसता हो।
हो मनमें देवत्व भावना, कही नही परवशता हो।

वेदों की गरिमा से मण्डित यह स्वराज्य फिर बनें सुराज।
भू पर फैले आर्यसमाज ।।

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

सम्पादक के नाम पत्र

संग्रहणीय विशेषांक

सर्वहितकारी का 'वेदप्रचार विशेषांक" प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एव आकर्षक था। इसमें सभी लेख काफी शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। वेदप्रचार के सम्बन्ध में काफी ठोस एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री पढने को मिली। इस पत्रिका के विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। सर्वहितकारी का आर्यजगत् की तमाम पत्र-पत्रिकाओं मे अपना विशिष्ट स्थान है। अत पत्रिका का यह विशेषांक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
वाटर सप्लाई वर्क्स जोशी चौहान, सोनीपत (हर०)

चरखी (दादरी) में विशाल शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में २४-८-९२ को चरखी जिला भिवानी में शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रातः १० बजे हाई स्कूल के प्रागण में प्रि० बलवीरसिंह फतेहगढ प्रधान शराबबन्दी सांगवान खाप की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। मच संचालन सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने किया। श्री खेमसिंह आर्य क्रांतिकारी, पं० जयपालसिंह बेधड़क तथा मा० बनारसीदास के शराबबन्दी पर प्रेरणादायक भजन हुए।

तत्पश्चात् सरपंच श्री जोरावरसिंह जी ने आर्य विद्वानों का अभिनन्दन एवं स्वागत किया और अपने गांव में शराबबन्दी की जानकारी दी। महात्मा ताराचन्द, रिटायर्ड डो०एस०पी० श्री चन्दराम जी चरखी, श्री दीवानसिंह पूर्व हैडमास्टर अटेला, डा सत्यवीरसिह कन्हेटी, श्री राजेश्वरसिंह प्रधान युवा क्लब चरखी, चौ० सूबेसिंह जी सभामन्त्री, श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, चौ विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, श्री हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री तथा मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिंह जी सभाप्रधान आदि ने शराबबन्दी पर, किसानों की लूट, भ्रष्ट राजनेताओं के काले कारनामे, पाखण्ड, शिक्षा में असमानता, चरित्र निर्माण, राष्ट्ररक्षा तथा अन्य सामाजिक बुराइयो पर अपने-अपने ढग से विस्तार से विचार रखे। सभामन्त्री जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शराबबन्दी गतिविधियो बारे बताया तथा ७-८ नवम्बर, ९२ को अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का अगला सम्मेलन रोहतक मे होने जारहा है उसका न्योता दिया। विजयकुमार जी ने सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की तथा मुख्य मन्त्री के जमाई की फैक्ट्री का हवाला देकर उनके माथे पर कलक बताया।

प्रो० साहब ने देश-विदेश के आंकडे देकर लोगों को बताया कि अन्य देश शराब आदि बुराई कम करते जारहे हैं। भारतवर्ष इसमे बुरी तरह ग्रस्त होता जारहा है। किसान-मजदूर बुरी तरह बर्बाद हो रहा है, लेकिन देश के राजनेताओं को इसका कोई ध्यान नही। उन्होने कहा कि हमने १३ वर्ष संघर्ष करके हरयाणा प्रात इस आशा से अलग बनवाया था कि सारे देश में हर प्रकार से विकास की दृष्टि से सर्वोत्तम होगा, लेकिन आज हरयाणा प्रात की हालत देखकर रोना आता है। आओ हम पुन: स्वय शराब आदि बुराइयो को छोड़कर शराब के कलक को हरयाणा से मिटाय। सरपंच जी ने आश्वासन दिया कि हम ठेका भी बन्द करवा देंगे और गांव मे भी शराबबन्दी लागू करेंगे। स्थानीय वक्ताओ ने भी सागवान खाप को पवित्र घोषित करने पर बल दिया। कर्नल रिसालसिंह जो सागवान खाप के प्रधान हैं, उन्होंने विद्वानों का धन्यवाद किया। पंचायत को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। नेहरू युवा क्लब ने नवयुवकों विजेन्द्र एम०ए०, योगेन्द्र, सुरेशकुमार, राजसिंह, सत्यवान, अरविनकुमार आदि ने भी प्रधान राजेश्वरसिंह के नेतृत्व में शराबबन्दी बारे पचायत को पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की। जलपान एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था थी। गाव के अतिरिक्त सम्मेलन में गुहांडों के लोगों ने भी बढ-चढ़कर भाग लिया। सम्मेलन की कार्यवाही ५ घण्टे तक चली। कार्यक्रम बहुत ही उत्साहवर्धक एवं रोचक रहा।

—रामस्वरूप आर्य प्रधान आर्यसमाज चरखी

बहती गंगा में नहा लें

कन्या गुरुकुल हाथरस (अलीगढ़) बहुत लोकप्रिय होगया है, न आश्रम में स्थान रहा है और न विद्यालय मे। मना करने पर भी अभिभावक कन्याओ को जबरदस्ती छोड जाते हैं। कन्याओं को बरामदे में रखना पड रहा है। इस समय छात्रा संख्या ७०० है। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि भवन निर्माण कराकर पत्थर पर नाम लिखवा करके इस ज्ञान यज्ञतीर्थ को विस्तीर्ण करने मे सहयोग देकर बहती गगा में नहा ले।

—मुख्याधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस

ठेका हटाने की मांग

सहायक समाचार

गुड़गांव, २५ अगस्त। आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव ने राजकीय स्कूल के पास से ठेका हटाने व नयी शराब की बार न खोलने की मांग करते हुए मुख्यमन्त्री, आबकारी मन्त्री आदि को पत्र लिखा है।

यह जानकारी सभा के महामन्त्री ओमप्रकाश चुटानी ने दी। उन्होंने बताया कि पत्र में राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय से लगभग ३० मीटर दूर कमान सराय चौक स्थित अंग्रेजी शराब के ठेके को हटाने को मांग की गई है।

उन्होंने इस सन्दर्भ में सरकार के विद्यालय व मन्दिर से १५० मीटर तक कोई ठेका नही खोलने दिये जाने सम्बन्धित कानून का भी हवाला दिया है।

पत्र में कहा गया है कि नई रेलवे रोड भीमनगर के सम्मुख एक शराब का बार खोला जारहा है। इसके सामने गुरुद्वारा, विद्यालय आर्यसमाज मन्दिर है। इसलिए इस बार को लाइसेंस न दिये जाने की मांग की गई है।

श्री चुटानी के अनुसार इस सम्बन्ध में सभा के प्रधान ओमप्रकाश कालड़ा के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मण्डल उप आबकारी व कराधान आयुक्त आर० सी० मित्तल समेत स्थानीय विधायक व राज्यमन्त्री धर्मवीर गाबा से भी मिल चुका है। उन्होंने उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

बोदीवाली जि० हिसार में पूर्ण शराबबन्दी

गतदिनों ग्राम बोदीवाली में सारे ग्रामवासी पंचायतघर में इकट्ठे हुए। जिसमें बढती हुई नशावृत्ति को मध्य नजर रखते हुए सर्वसम्मति से निम्न फैसले किये गये—

१—ग्राम में शराब बेचनेवाले पर ३०० रु० दण्ड करने का विधान किया गया तथा ३ दिन जुर्माना न देने पर ६०० रु०, अगले ३ दिन भी जुर्माना न देने पर ९०० रु० जुर्माना होगा। इस प्रकार १५०० रु० दण्ड हो जाने पर भी जुर्माना न भरने पर उसका केस बी०डी०ओ० के पास भेज दिया जाएगा या कोर्ट में।

२—शराब पीकर गलियो में घूमनेवाले व्यक्ति पर १०० रु० दण्ड करने का निश्चय किया गया। यह जुर्माना न अदा करने पर उसी प्रकार १२ दिनों में ५०० रु० जुर्माना हो जाने पर केस बी०डी०ओ० के पास भेजने का निश्चय किया गया या कोर्ट में।

३—इन फैसलों को न मानते हुए जुर्माना न देनेवाले व्यक्ति को बिरादरी से बाहर करके उसका हुक्का पानी बन्द करने का निश्चय किया गया।

इस अवसर पर ग्राम पंचायत ने भी पूरा सहयोग दिया तथा ग्रामवासियों को आश्वासन दिया कि यह प्रस्ताव पास करके डी०सी०, एस० डी० एम०, थाना तथा बी० डी० ओ० दफ्तर में एक-एक प्रति भेजदी जाएगी। इस अवसर पर दूसरे ग्रामों से भी इसी प्रकार शराबबन्दी लागू करने की अपील की गई।

—मनीराम आर्य
ग्राम बोरीवाबी, तह० फतेहाबाद, जि० हिसार

शराब हटाओ,
देश बचाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३   रजि०नं० P/RTK-४६   मुष्टिसंवत १९६, ०८, ५३ ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९   अंक ४०   १४ सितम्बर, १९९२   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं से निवेदन

बन्धुवर,

हरयाणा प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष व भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह द्वारा सर्वोच्च न्यायालय मे एक याचिका दायर की गई है। जिसके द्वारा न्यायालय से निवेदन किया गया है कि वह भारतीय संविधान की धारा ४७ के अन्तर्गत मद्यनिषेध लागू करने के लिए जो प्रावधान रखा गया है उसके पालन हेतु केन्द्र तथा राज्य सरकारों को आवश्यक आदेश देकर इस व्यवस्था का पालन करवाया जावे।

सर्वोच्च न्यायालय की एक खण्डपीठ ने इस याचिका को सुनवाई के लिए स्वीकार कर लिया है और इस याचिका पर आगे जो कार्यवाही होनी है उसके सम्बन्ध में एक अन्तरिम फैसला भी दिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश दिया है कि केन्द्र सहित सभी राज्य सरकारें इस याचिका के बारे में जो उनकी आपत्ति इत्यादि होवे आगामी ४ नवम्बर तक कोर्ट में पेश करे। यह निश्चित ही है कि सभी राज्य सरकारें इस याचिका का विरोध करेंगी और इन सरकारों के बड़े-बड़े वकील इस याचिका का विरोध करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में उपस्थित रहेगे। शराब के धन्धे से लगे व्यक्ति भी इस याचिका का विरोध करने के लिए अपनी ओर से वकील नियुक्त करेंगे।

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् इस याचिका के समर्थन में अपना पक्ष प्रस्तुत करेंगी ही, किंतु हमारा यह भी मानना है कि देश में जितनी अन्य संस्थाये हैं जो मद्यनिषेध कार्यक्रम में आस्था रखती हैं वे भी सर्वोच्च न्यायालय में इस याचिका के समर्थन में अपने आपको भागीदार बनावे। नशाबन्दी के समर्थकों के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि वे भी अपने पक्ष के समर्थन में उपयुक्त वकीलों को नियुक्त करें जिससे सर्वोच्च न्यायालय में नशाबन्दी का पक्ष सशक्त रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

आपकी संस्था उन संस्थाओं में प्रमुख है कि जो मद्यनिषेध के क्षेत्र में अनेक वर्षों से सक्रिय है तथा जिसके लिए आपने संघर्ष भी किया है। ऐसी परिस्थिति में हमारा आपसे विनम्र निवेदन है कि आपकी संस्था भी सर्वोच्च न्यायालय में इस याचिका के समर्थन में अपना पक्ष प्रस्तुत करे। नशाबन्दी का प्रश्न एक बहुत ही गम्भीर विषय है जिससे इसके समर्थन में अनेकों-अनेक संस्थाओं द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में अपनी आवाज उठाना बहुत ही जरूरी होगया है। हमें विश्वास है कि आप हमारे सुझाव को स्वीकार करे और आगामी ४ नवम्बर से पहले ही आपको सर्वोच्च न्यायालय से आवेदन करना होगा कि वह आपकी संस्था को भी इस याचिका के सम्बन्ध में अपना पक्ष प्रस्तुत करने की अनुमति दे। आपको अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए किसी योग्य वकील की सेवायें भी उपलब्ध करनी होंगी जो आपके पक्ष को कुशलता-पूर्वक न्यायाधीशों के सामने प्रस्तुत कर सके।

कृपया इस पत्र का उत्तर अवश्य देकर हमें अवगत कराने की व्यवस्था करे कि आप इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही करने की योजना बना रहे है?

शुभकामनाओं सहित,

रूप नारायण
महामन्त्री
अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद्
नशाबन्दी भवन, ४९ तुगलकाबाद
इंस्टिट्यूशनल एरिया
महरौली बदरपुर रोड,
नई दिल्ली

२०वां अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन रोहतक में आयोजित

प्रिय बन्धु,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि २०वा अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन आगामी ७-८ नवम्बर, ९२ को रोहतक में आयोजित किया जारहा है। मद्यनिषेध जैसे गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम की जिस ढंग से केन्द्र तथा राज्य सरकारो द्वारा उपेक्षा की जारही है यह हम सबके लिये चिंता का विषय है। भारत के संविधान के निर्देशित सिद्धातो में मद्यनिषेध एक प्रमुख कार्य माना गया है जिसके पालन के लिये स्पष्ट शब्दों मे राज्य सरकारों को आदेश दिया गया है। किंतु यह विडम्बना ही है कि न तो केन्द्रीय सरकार और न ही प्रदेश सरकारे मद्यनिषेध को लागू करने अथवा इस दिशा में किसी क्रमबद्ध कार्यक्रम के कार्यान्वियन के लिये उत्सुक हैं। प्रदेश सरकारों द्वारा बनाये गये आबकारी नियमों की खुलेआम अवहेलना हो रही है और शराब का प्रचलन जिस अबाधगति से बढ़ रहा है यदि इस पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये कोई प्रभावकारी कार्यवाही नही की गई तो यह देश प्रत्येक दृष्टि से पतनोन्मुख होगा। गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम के प्रति आस्थावान संगठनों एवं नशाबन्दी के समर्थक कार्यकर्त्ताओं का इस वस्तु स्थिति पर चिंतित होना स्वाभाविक ही है। इन सभी मुद्दों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने तथा इस चुनौती का सामना कैसे किया जाये इसके लिए भावी-व्यूहरचना बनाने के लिए हम रोहतक में आयोजित नशाबन्दी सम्मेलन के अवसर पर इकट्ठे हो रहे हैं।

आप नशाबन्दी आंदोलन के प्रति समर्पित कार्यकर्त्ता हैं और गत अनेक वर्षों से अपने क्षेत्रविशेष में इस अभियान के लिए अपना सक्रिय सहयोग दे रहे है। अतः आपसे मेरा विनम्र निवेदन है कि आप इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए अवश्य पधारे।

रेलवे कन्सेशन पूर्ववत् रेल मन्त्रालय मे हमें प्राप्त है जिसके अनुसार रेल भाड़े में अब केवल एक चौथाई राशि की रियायत है और पूरे

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादकीय

बरसी (मृतक दिवस)

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार (एम १/६६ राप्तीनगर कालोनी, आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर) ने २०-२-९२ को सम्पादक के नाम पत्र लिखकर एक प्रश्न पूछा है "क्या आर्यसमाज के सिद्धांतानुसार बरसी (मृतक दिवस) मनाना उचित है? आज आर्यसमाज में बरसी का रिवाज चल रहा है। बलिदान दिवस और बरसी में अन्तर है।"

सामान्यतया महापुरुषों के जन्मदिवस (जन्म जयन्ती) मनाने की परम्परा है जिससे उन महापुरुषों के विशिष्ट कार्यकलापों की चर्चा से वर्तमान पीढ़ी के लोग भी कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकें।

इसी प्रकार देशधर्म के लिए प्राण न्यौछावर करनेवाले वीरपुंगवों के बलिदान दिवस भी मनाये जाते हैं। उनका भी प्रयोजन वर्तमान पीढ़ी के लोगों को देशधर्म के लिए प्रेरणा देना ही है।

जो देश जाति वा संगठन अपने पूर्वजों के इतिहास को भुला देते हैं वे उन्नति के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकते। महापुरुषों के जन्म-दिवस अथवा बलिदान-दिवस मनाकर उनके इतिहास की पुनरावृत्ति करके वर्तमान युग के लोगों को प्रेरणा प्रदान की जाती है और दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा अथवा कृतज्ञता प्रकट की जाती है। इस भावना से दोनों ही अवसर प्रेरणादायक होने से लाभप्रद हैं।

संस्कारविधि के अन्त्येष्टि प्रकरण में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देहांत पर १२१ मन्त्रों से ४८४ आहुतियां देकर शरीर भस्म करने के पश्चात् वस्त्र प्रक्षालन तथा स्नान करके और घर की मार्जन लेपन प्रक्षालनादि से शुद्धि करके स्वस्तिवाचन शांतिकरण का पाठ और ८ मन्त्रों से ईश्वरोपासना करके इन्हीं मन्त्रों के अन्त में 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण करके सुगन्ध्यादि मिले हुए घृत की आहुति घर में देने का विधान किया है।

तत्पश्चात् तीसरे दिन श्मशान में जाकर चिता से अस्थि उठाके उस श्मशान भूमि में ही कहीं पृथक् रख देवे। इसके पश्चात् मृतक के लिए कुछ भी कर्म कर्त्तव्य नहीं है। 'भस्मान्त शरीरम्' यजुर्वेद का मन्त्र इसमें प्रमाण है।

हां, यदि कोई सम्पन्न हो तो अपने जीते जी वा मरे पीछे उसके सम्बन्धी वेदविद्या वेदोक्त धर्मप्रचार, अनाथ पालन, वेदोक्त धर्मोपदेश की प्रवृत्ति के लिए चाहे जितना धन प्रदान करे, बहुत अच्छी बात है।

मेरे ज्ञान के अनुसार मृतक की बरसी या बरसोधी मनाने की परम्परा वैदिक सिद्धांत के अनुकूल नहीं है। इस सम्बन्ध में अन्य विद्वान् कुछ विशेष समाधान करेंगे तो उनका स्वागत है।

—वेदव्रत शास्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

किराये का तीन चौथाई भाग सम्मेलन में भाग लेनेवाले कार्यकर्त्ता को ही वहन करना पड़ेगा। रोहतक में निवास तथा भोजन की व्यवस्था स्वागत समिति की ओर से निःशुल्क की जाएगी। रोहतक दिल्ली से केवल ७२ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहां बस व रेल द्वारा आसानी से पहुंचा जासकता है।

कृपया आप अपना प्रतिनिधि शुल्क रु० १० मनीआर्डर/पोस्टल आर्डर द्वारा तुरन्त भिजवाने की व्यवस्था करें, ताकि रेलवे कन्सेशन फार्म तथा सम्मेलन से सम्बन्धित अन्य जानकारी आपको यथाशीघ्र भेजी जासके।

सधन्यवाद।

विनीत : रूपनारायण महामन्त्री
नशाबन्दी भवन, ४९ तुगलकाबाद इंस्टिट्यूशनल एरिया
महरौली बदरपुर रोड, नई दिल्ली-११००६२

पुस्तक समीक्षा—

नया सवेरा लायें

(काव्य संग्रह)

रचयिता—श्री राधेश्याम आर्य एम. ए., एल.एल.बी.
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

सर्वहितकारी के पाठक श्री राधेश्याम आर्य से परिचित हैं। इनकी कवितायें सर्वहितकारी साप्ताहिक में छपती रहती हैं।

नया सवेरा लायें, जातपात को दूर भगायें, आओ वृक्ष लगायें, ज्योति जलायें, देश महान् बनायें, बढ़ो सपूतो, जागो और जगाओ, उठो राम के सच्चे वंशज, ऐसी ज्योति जलाओ, बने सुराज्य स्वराज्य हमारा इत्यादि शीर्षकों से कवि ने ४४ कविताओं द्वारा जन-चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया है। सभी कवितायें प्रेरणादायक उत्साहवर्धक और देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हैं। इस सुन्दर संकलन के लिए 'आर्य' जी बधाई के पात्र हैं किन्तु मुद्रण की अशुद्धियां पाठक के रंग में भंग करती हैं।

—वेदव्रत शास्त्री

आर्यसमाज पांचनोता (महेन्द्रगढ़) का प्रथम उत्सव सम्पन्न

२८-२९ अगस्त, ९२ को हरयाणा के अन्तिम छोर राजस्थान की सीमा पर स्थित ग्राम पांचनोता में श्री जवाहरसिंह आर्य ढाणीपाल हांसी की प्रेरणा से श्री साधुराम पूर्व सरपंच अमरपुरा व जगदीश आर्य सरपंच अलीपुर के विशेष सहयोग एवं पुरुषार्थ से प्रथम बार आर्यसमाज का उत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के उपदेशक श्री अत्तर-सिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने आर्यसमाज का इतिहास तथा शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। साथ में छोटे-छोटे बच्चों की सामूहिक शादियां न करने तथा काज आदि न करने का सुझाव दिया और इसे महापाप बताया।

इसके अतिरिक्त महाशय खेमसिंह क्रांतिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प० ताराचन्द वैदिकतोप तथा पं० जबरसिंह खारी हांसी आदि के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। पं० ताराचन्द जी ने लोगों की कई समस्याओं का समाधान किया। लोगों पर प्रचार का अच्छा प्रभाव पड़ा। यज्ञ पर यज्ञोपवीत एवं पंचमहायज्ञों के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

—कुरड़ाराम आर्य, पांचनोता निवासी

कैथल में योगिराज कृष्ण जन्मोत्सव

आर्यसमाज क्योडक गेट कैथल की ओर से योगिराज कृष्ण जन्मोत्सव २१ अगस्त को श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य कन्या विद्यालय की छात्राओं ने गीत तथा भाषण सुनाये तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत जी ने योगिराज की जीवनी तथा उनके उपदेशों पर प्रकाश डाला। श्री धर्मप्रकाश जी के मनोहर भजन हुए।

—डा० मनोहरलाल मन्त्री

शोक सन्देश

श्री जोखीराम आर्य मन्त्री आर्यसमाज नागलकलां के ज्येष्ठ भ्राता श्री रतीराम आर्य का दिनांक २३-७-९२ को निधन होगया। वह ८१ वर्ष के थे। अच्छे किसान, ईश्वर भक्त, अतिथि सेवक तथा आर्यसमाज एवं वेदप्रचार में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। भगवान् उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। स्वामी परमानन्द जी ने शांति हवन किया।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

जिला भिवानी में शराबबन्दी सम्मेलनों के समाचार

ग्राम झोझुकलां

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में ग्राम झोझुकला में दिनांक २९-३० अगस्त, ९२ को शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। रात्रि को क्रांति चौक मे सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी का व्याख्यान तथा प्रभावशाली ढंग से विचार रखे। महाशय जयपालसिह जी बेधडक की मण्डली के शराब व अन्य सामाजिक बुराइयों के विरोध में शिक्षाप्रद भजन हुए।

प्रातःकाल ठीक १० बजे बस अड्डे के निकट विशाल पडाल लगाकर शराबबन्दी सम्मेलन आरम्भ हुआ। जिसकी अध्यक्षता कप्तान मानकराम जी प्रधान सघर्ष समिति पावर हाउस जिला भिवानी ने की। ज्ञातव्य है कि गत एक महीने से सघर्ष समिति ने झोझुकला पावर हाउस के सामने बिजली के बिलो के रेट बढाने के विरोध में धरना दे रखा है। सम्मेलन मे गांव गुवाड के हजारों लोगों ने भाग लिया। सर्वप्रथम मेजर सन्तलाल जी सरपच झोझुकला ने आर्यनेताओ का अभिनन्दन किया। मुख्य वक्ताओं में सर्वश्री प्रि० बलवीरसिंह प्रधान शराबबन्दी समिति सागवान खाप, कप्तान शोशराम प्रधान सघर्ष समिति पावर हाउस झोझु, रघुवीरसिंह झोझु, ज्ञानीराम रामलवास, महाशय चादराम बादल, सूबेदार मेजर शमशेरसिंह रुदडौल, कवलसिंह एडवोकेट, हवलदार धर्मसिंह, दलवीरसिह गांधी डा० सत्यवीर कन्हेटो, ऋषिपाल आचार्य सस्कृत महाविद्यालय दादरी, चौ. सूबेसिंह सभामन्त्री, बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, सम्पूर्णसिंह प्रधान शाति सेना, विजय प्रधान गवर्नमेंट कालेज भिवानी, अनिलकुमार प्रधान लोहारू कालेज, छात्रनेता राजेश भिवानी, स्थानीय क्षेत्र विधायक अत्तरसिह, मुख्य अतिथि चौ विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एव संयोजक हरयाणा शराबबन्दी समिति तथा चौ० हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री आदि नेताओं एव वक्ताओं ने अपने-अपने अनुभव के आधार पर शराबबन्दी लागू करने पर तथा शराब से हो रहे भयंकर नुकसान से लोगों को अवगत कराया।

सरकार की शराब बढावा नीति की सभी ने घोर निन्दा की। शिक्षा मे असमानता, कालेज स्कूलों मे बढती हुई नकल की प्रवृत्ति, किसानों की लूट, विवाह शादी में फिजूल खर्ची, भ्रष्टाचारी नेताओ की उपेक्षा करना, स्वच्छ ईमानदार लोगों को आगे लाना, आर्यसमाज का गौरवमय इतिहास, देशभक्त क्रातिकारियों का देश की आजादी मे विशेष योगदान एवं कुर्बानी, किसानो को अपनी जिनस का ठीक भाव न मिलना, बिजली के रेट बढाना, बसों का भाडा बढाना तथा सरकार एक साजिश के तहत मजदूर किसान को शराब पिलाकर बर्बाद करने पर तुली हुई है।

चौ० विजयकुमार जी ने पंचायत व गांववालो से गांव से शराब का ठेका बन्द करवाने का आग्रह किया। सभामन्त्री जी ने २ अक्तूबर को जिला भिवानी में हजारों की संख्या में उपायुक्त के कार्यालय पर पहुंच कर पंचायत प्रस्ताव दे व शराबबन्दी बारे प्रदर्शन करे तथा ज्ञापन दें। अन्त में आर्य जी के अनुरोध पर श्री ज्ञानीराम व श्री रघुवीरसिंह ने शराब पीना छोड़ा। सरपंच साहब ने आर्यनेताओं को गांव में शराबबन्दी लागू करने तथा ठेका बन्द करवाने का आश्वासन दिया। सभा को ४७५ रु० दान प्राप्त हुआ। सम्मेलन बहुत ही सफल रहा।

—हवलदार धर्मसिंह झोझु निवासी

ग्राम कितलाना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में दिनांक ३०-८-९२ को ग्राम कितलाना में दोपहर बाद ४ बजे बस अड्डे पर धर्मशाला के प्रांगण में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। जिसकी अध्यक्षता प्रि. बलवीरसिंह प्रधान शराबबन्दी सांगवान खाप ने की।

सर्वप्रथम पं० जयपालसिंह बेधडक तथा श्री आजादसिंह आर्य (हिटलर) के शराबबन्दी पर शिक्षाप्रद भजन हुए। तत्पश्चात् सरपंच श्री सुखवीरसिह जी ने आर्यनेताओं का स्वागत किया। मुख्यवक्ताओ में सर्वश्री शेरसिह आर्य नीमडीवाली, बलवीरसिह सरपच डोहकी, अमृतलाल पूव हैडमास्टर पाडवान, नरेन्द्रकुमार प्रधान नवज्योति युवा संगठन गोरीपुर, का० रामसिह वर्मा भिवानी, बलवीरसिह ग्रेवाल पूर्व विधायक चौ० सूबेसिह सभामन्त्री, डा० सत्यवीरसिह कन्हेटी, मेजर सन्तलाल सरपच झोझुकलां, मुख्य अतिथि चौ विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एव संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा तथा हीरानन्द पूर्वमन्त्री आदि ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब मे होनेवाले नुकसान मे लोगों को अवगत कराया तथा साथ में शराब, धूम्रपान, जुआ, ताश खेलना आदि भयकर बुराइयो से दूर रहने का आग्रह किया। चरित्र निर्माण, किसानो की लूट, शिक्षा में असमानता आदि पर भी अपने विचार रखे।

सभी वक्ताओं ने सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की। उपायुक्त महोदय ने २ अक्तूबर ९२ को महात्मा गाधी व लालबहादुर शास्त्री की जयन्ती पर भिवानी मे हजारो की सख्या मे पहुंच कर शराबबन्दी प्रदर्शन मे एकता का सबूत दें, ताकि हम हरयाणा सरकार एव प्रशासन पर दबाव डाल सके अपील की। आर्य जी ने २ अक्तूबर से ही भिवानी में शराब छुडाने का कैम्प लगाने तथा नशेडियो को उसमें बढ-चढकर भाग लेने का आग्रह किया। कैंम्प एक सप्ताह का होगा, इलाज मुफ्त किया जायेगा। अत शराबी भाई यह सुनहरी अवसर न खोये। प्रचार में प्रभावित होकर चार खूखार शराबियो ने शराब न पीने का व्रत लिया। जिनमे सरपच सुखवीरसिह, जीवनराम शर्मा पंच, धर्मचन्द तथा जगराम तथा सरपच ने गाव से शराब का ठेका बन्द करवाने का आश्वासन दिया। ६ सितम्बर को पुन शराबबन्दी पंचायत बुलाकर गाव में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए समिति गठित करने का निश्चय किया गया। गाव डोहकी व नीमडीवाली में शराबबन्दी समितिया गठित है तथा दोनों गावो के लोगों ने कितलाना से ठेका बन्द करवाने के लिए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। सम्मेलन का कार्यक्रम बहुत ही रोचक एव प्रेरणादायक रहा।

—महाशय हवानन्द, कितलाना

ग्राम बडेसरा

दिनांक ३०-८-९२ को रात्रि मे ग्राम बडेसरा में प० जयपालसिंह बेधडक द्वारा शराबबन्दी पर तथा अन्य सामाजिक बुराइयो पर भजन हुए। प्रातःकाल बडी चौपाल मे १० बजे शराबबन्दी सम्मेलन आरम्भ हुआ। इस अवसर पर सभा उपदेशक सर्वश्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी, बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, चौ० सूबेसिंह सभामन्त्री, चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एव संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा तथा हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री आदि ने शराबबन्दी से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। अनेक महापुरुषों के मद्यनिषेध बारे विचार रखकर शराब, धूम्रपान, अफीम आदि बुराइयों से सदा दूर रहने की अपील की। स्थानीय लोगों के सुझाव भी सुने और गाव में पुन: शराबबन्दी लागू करने का अनुरोध किया। लोगों ने हाथ खड़े करके स्वयं शराब छोड़कर गाव में शराबबन्दी लागू करने का आश्वासन दिया। श्री भीमसिंह, राजवीरसिंह तथा जगदीश ने भविष्य में शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। सरपंच श्री जसवन्तसिंह ने विद्वानों तथा आर्यनेताओं का धन्यवाद किया।

—दयाकिशन आर्य, बडेसरा

ग्राम मिताथल

दिनांक ३१-८-९२ को सायं ४ बजे गांव मिताथल में हाई स्कूल के प्रांगण में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम प जयपालसिंह बेधडक, पं० ईश्वरसिंह तूफान तथा पं० रामरख के प्रेरणादायक शराब एवं अन्य पाखण्डों पर शिक्षाप्रद भजन हुए। सभा उपदेशक श्री अत्तर-

सिंह आर्य क्रांतिकारी ने शराबबन्दी बारे अपने अनुभव तथा भूत व वर्तमान के अनेक उदाहरण देकर लोगों को शराब से होनेवाली बर्बादी से अवगत कराया। साथ मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का शराबबन्दी पर दृष्टिकोण भी रखा। श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक ने भी किसानो को खाद तथा बिजली के रेट बढाने पर सरकार की आलोचना की तथा लोगो से २ अक्तूबर को भिवानी अधिक से अधिक संख्या मे पधारने की अपील की, ताकि हम संगठित होकर सरकार पर दबाव डाल सकें। हम हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी चाहते है।

चौ० सूबेसिंह जी सभामन्त्री ने भी अनेक गाव के उदाहरण देकर शराबबन्दी लहर अब जो सब जगह चली हुई है विस्तार से जानकारी दी। मुख्य अतिथि चौ० विजयकुमार जी ने भी शराब बन्द करवाने का मकसद लोगों को बताया और कहा कि सरकार एक साजिश के तहत किसान मजदूर को शराब पिलाकर बर्बाद करने पर तुली हुई है। अतः सुख से जीना चाहते हो तो शराब पीना छोड़ो वरना आपके बच्चे तबाह हो जायेंगे। श्री हीरानन्द आर्य जी ने भी शराब न पीने की अपील की तथा साफ शब्दों मे कहा कि जो शराब पीता है वह अपने नन्हे-नन्हे बच्चो का खून पीता है। जो अफीम खाता है वह अपने बच्चों का मास खाता है। शराब से कितने खानदान नष्ट होगये, तुम्हारी तो औकात ही क्या है। अतः इस बुराई को छोड़ अपने अधिकारो व न्याय के लिए संघर्ष के लिए तैयार हो जाओ। स्थानीय गाव के लोगो ने भी सुझाव रखे और बताया कि हमारे गाव में चार पाने हैं। एक पाने मे शराब बन्द है। समिति जब कदम उठाती है तो पंचायत का सरपंच नया व पुराना तथा सभी पंच उन शराबियों की मदद करते हैं। अतः गाव मे शराबबन्दी लागू नही हो पारही है। सभी वक्ताओं ने पुनः शराबबन्दी लागू करने पर बल दिया।

—भलेराम आर्य पूर्व सैक्ट्री, मिताथल

ग्राम सांवड़

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में दिनांक १-९-९२ को शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सायकाल प० जयपालसिंह बेधड़क तथा प० ईश्वरसिंह तूफान के सामाजिक बुराइयों के खिलाफ प्रेरणादायक भजन हुए।

प्रातःकाल ९ से १ बजे तक हाई स्कूल के प्रांगण में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता प्रि० बलवीरसिंह जी प्रधान शराबबन्दी समिति सागवान खाप ने की। मच सचालन सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने किया। सर्वप्रथम सभामन्त्री चौ० सूबेसिंह जी ने अनेक गावो का शराबबन्दी कार्यक्रमों का हवाला देकर लोगों से गांव से शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए आह्वान किया। डा० सत्यवीरसिंह जी ने सागवान खाप की तरह ३२ की पुवार खाप को पवित्र करो और अपनी राजपूती शान को पहचानो। श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल ने किसानों को ठीक भाव न मिलने तथा बिजली के रेट बढ़ाने पर व शिक्षा में असमानता पर विस्तार से विचार रखे।

चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त ने बच्चों को नैतिक शिक्षा, अध्यापकों का आदर्श, महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला और सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की। २ अक्तूबर को भिवानी शराबबन्दी प्रदर्शन में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आग्रह किया। उसके बाद चौ० हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री ने भी शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। लोगों से शराब छोड़कर अपने नन्हे-नन्हे बच्चो पर दया करने का सुझाव दिया। मा. फकीरसिंह जी ने गाव व पचायत तथा स्कूल के स्टाफ की ओर से आर्य विद्वानों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम में बच्चों की संख्या ज्यादा रही।

—ठा० रघुवीरसिंह सरपंच

ग्राम सांजरवास

दिनांक १-९-९२ को दोपहर बाद ३ बजे बस अड्डे पर धर्मशाला में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता ठा० विजेसिंह सरपंच ने की। मंच संचालन सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने किया।

सर्वप्रथम प० जयपालसिंह बेधड़क तथा प० ईश्वरसिंह तूफान के समाज सुधार के भजन हुए। उसके बाद प्रि० बलवीरसिंह प्रधान शराबबन्दी समिति सागवान खाप, श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, चौ० सूबेसिंह सभामन्त्री, चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति अभियान तथा चौ० हीरानन्द आर्य पूर्व शिक्षामन्त्री आदि ने शराब से होनेवाले चारित्रिक, आर्थिक, शारीरिक पतन पर विस्तार से चर्चा की। साथ में लोगो से पुरजोर अपील की कि शराब, धूम्रपान, ताश आदि भयकर बुराइयों से सदा दूर रहो। सरकार एक साजिश के तहत हमें लूट रही है। एक तरफ शराब के ठेके खोलकर, दूसरी तरफ किसानों को फसल के भाव ठीक न देकर। अतः सम्भलो वरना बर्बाद हो जाओगे, न अपने हकों के लिए संघर्ष कर सकोगे।

इस अवसर पर फोगाट व सांजरवास दोनों गांवो के लोग थे। नम्बरदार दलीपसिंह ने रुन्धे कंठ से आर्यनेताओं से प्रार्थना की कि हमारे गाव में शराब बन्द करवाओ वरना हम बुरी तरह मर चुके है। ज्ञातव्य है कि नम्बरदार के परिवार मे तीन नवयुवक शराब पीकर मर चुके है। सभा की ओर से अनेक शराबबन्दी पोस्टर भी लगाये गये। सभी वक्ताओ ने गाववालो से अपने गाव से शराब का ठेका बन्द करवाने पर जोर दिया। अन्त मे सरपच महोदय ने आश्वासन दिया कि हम अवश्य इस पाप के अड्डे को खत्म करवाने बारे संघर्ष करेंगे और आर्यसमाज का भी सहयोग लेंगे। एक खूंखार शराबी महावीर ने शराब न पीने का व्रत लिया।

—सत्येन्द्र आर्य मन्त्री

ग्राम नीमड़ी

मा० बलवीरसिंह जी की लग्न एव प्रयत्न से गाव नीमड़ी मे सायं ५ से ८ बजे तक दिनाक १-९-९२ को चौपाल मे शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सरपच श्री उमेदसिंह जी ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। मच सचालन सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने किया।

सर्वप्रथम प० जयपालसिंह बेधड़क तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान के शराबबन्दी पर शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रि० बलवीरसिंह फतेहगढ़, चौ० सूबेसिंह सभामन्त्री ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शराबबन्दी गतिविधियो की जानकारी दी तथा ग्राम बामला, इमलोटा, धनाना, नलवा आदि गावों का उदाहरण देकर गाव मे शराबबन्दी लागू करने पर बल दिया। चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त ने शराब से होने वाले नुकसान से लोगो को अवगत कराया। धन बटोरने के लिए ठेकेदार कितने घटिया व जहरीले पदार्थ डालकर शराब तैयार करते हैं। आप लोग अज्ञानता के कारण शराब पीकर हर प्रकार से बर्बाद हो रहे हो। जरा सोचो, विचार करो, साथ में अपने बच्चों पर भी दया करो।

चौ० बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक ने साफ शब्दों में बताया कि हम क्यों शराब बन्द करवाना चाहते हैं? न हमारी शिक्षा ठीक है, न हमारी फसल के दाम ठीक मिलते हैं। बसों का किराया बढ़ा है, बिजली के रेट बढ़े हैं। हम इन भ्रष्ट राजनेताओं व सरकार से अपने हकों की लड़ाई लड़ सकें। यह तभी सम्भव है जब हम स्वयं शराब छोड़कर संगठित होकर संघर्ष करें अन्यथा ये चोर हमें लूटकर खा जायेंगे। चौ० हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री ने भी शराब की बुराइयों पर प्रकाश डाला तथा शराब पीना पाप है, शराब के ठेके बन्द करो, बाप शराब पीता है बच्चे भूखे मरते हैं, शराब हटाओ देश बचाओ आदि नारे लगाकर बहुत अच्छा माहौल बना दिया। बच्चों को सुबह शाम गलियों में उपरोक्त नारे लगाने का सुझाव दिया और २ अक्तूबर को भिवानी हजारों की संख्या में पहुंचने का अनुरोध किया। काफी संख्या में सम्मेलन में लोगों ने भाग लिया। एक शराबी चौपाल में आया, तुरन्त उनके परिवारवाले धक्के मार-मारकर घर लेगये। कार्यक्रम बहुत ही उत्तम रहा।

—डा० [illegible] आर्य, नीमड़ी

मुस्कराते रहो

हम सदैव प्रसन्न मन रहें। हंसते मुस्कराते रहें। प्रसन्नचित रहने से नीरोगता खुशहाली और शुद्ध रक्त उत्पन्न होता है, उदासी गमगीनता दूर होती है। यह प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है। इसमें कोई व्यय नही होता है।

हंसना स्वास्थ्य के लिये, है अमूल्य उपहार।
हंसने से होते सभी, मन के दूर विकार॥

हसने से ही होता है, हल्का मनका बोझ।
इसीलिये खिल खिलाकर, हसते रहिये रोज॥

मीठा-मीठा हंसी का, लेते रहिये स्वाद।
जीवन सुखमय रहेगा, तज आलस प्रमाद॥

हस करके बातें करो, विद्रोही के संग।
मुरझाये मन खिल उठे, भरे पवित्र उमग॥

हंसो खूब दिल खोलकर, चाहते रहना स्वस्थ।
नही जरूरत दवा की, रहो सदा अलमस्त॥

झड़ते जिस परिवार में, मधुर हंसी के फूल।
चिंताओं की वहां सभी, घुल जाती है धूल॥

रोगों का हंसना सही, महत्वपूर्ण उपचार।
हो जाता तन का सभी, शुद्ध रक्त-संचार॥

एक हसने की कला से, बने अनोखा कार्य।
टानिक शक्तिदायक है हसना है अनिवार्य॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

श्रीकृष्ण को बदनाम मत करो

ऐ कृष्ण के भक्तो, श्रीकृष्ण को बदनाम मत करो।
उनके नाम पर कोई धब्बा आये, ऐसे काम मत करो॥
वह दूध मलाई मक्खन, खाने को कहते थे,
उसे मक्खन चोर बताकर, बदनाम न करो।
श्रीकृष्ण के भक्तो

गउवों को चराया उसने, बंसी बजा-बजाकर,
तुम गन्दे रास रचाकर, उसे बदनाम मत करो।
श्रीकृष्ण के भक्तो......

वह चरित्रवान् पुरुष था, रुकमणी थी पत्नी उसकी,
राधा से मेल मिलाकर, गलत काम मत करो।
श्रीकृष्ण के भक्तो ....

वह योगिराज ज्ञानेश्वर, गीता का ज्ञान दिया था,
तुम वस्त्र हरण दिखलाकर, अपमान सरेआम न करो।
श्रीकृष्ण के भक्तो.....

—देवराज आर्य मित्र, ई-१२ कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

देश की उन्नति का कारण आर्यसमाज

इसलिये जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नही तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सबजने मिलकर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नही हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढाना समुदाय का काम है, एक का नही। (सत्यार्थप्रकाश ११ समु०)

सृष्टि संवत्

लेο महावीर वानप्रस्थी, गुरुकुल झज्जर

मैंने सृष्टि-उत्पत्ति के विषय में अनेक विद्वानों के लेख पढे। जिनमें प्रमुख रूप से श्री पο युधिष्ठिर मीमासक, श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती व श्री स्वामी सदानन्द जो सरस्वती वैदिक साधन आश्रम, यमुनानगर सम्मिलित है। इन विद्वानों के सृष्टि-उत्पत्ति के विषय में अलग-अलग विचार मिले। इसलिए मेरी भी इच्छा हुई कि अपने ज्ञान के अनुसार एक लेख इस विषय पर लिखूं।

स्वामी दयानन्द जी महाराज द्वारा रचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रन्थ के वेदोत्पत्ति विषय मे प्रश्नकर्त्ता ने प्रश्न किया है—"वेदों की उत्पत्ति में कितने वर्ष होगये है ?"

स्वामी जी महाराज का उत्तर है—"१९६०८५२९७६ वर्ष वेदों की और जगत् की उत्पत्ति में होगये हैं।" प्रस्तुत ग्रन्थ में स्वामी जी महाराज ने जड़ सृष्टि को तो कहीं भी नही लिखा। उन्होंने तो केवल गणित के नियम के आधार पर गणना की विधि बतलाई है, सो इस प्रकार है—

सतयुग—१७२८०००
त्रेता —१२९६०००
द्वापर—८६४०००
कलियुग—४३२०००

चारो युगो को मिलाकर एक चतुर्युगी होती है।

चतुर्युगी ४३२०००० वर्ष की होती है और इकहत्तर चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर होता है। १४ मन्वन्तर का एक ब्राह्मदिन होता है, इतनी ही ब्राह्म रात्रि जानो और ब्राह्मदिन व रात्रि की जगत् संज्ञा और उपमा है। उपमा का अर्थ जैसा जगत् है वैसा ही ब्राह्म दिन-रात्रि को जानो।

आर्यभाषा मे एक हजार (१०००) मानना लक्षणायुक्त वर्णन है, अभिधा नहीं। अभिधा मानने से चाहे जड सृष्टि की छः चतुर्युगी पहले जोडकर १९६०८५३०९३ मानो या सन्धि लगाकर १९७२९४९०९२ मानो दोनों ही प्रकार से गणना के मिजाज मे दूर चला जाता है, क्योंकि स्वामी जी ने वैवस्वत् को अट्ठाइसवी (२८वी) चतुर्युगी का २८वा कलियुग माना है जिसके ४९७६ वर्ष बीते हैं। अगर १००० को अभिधा मान लिया तो जड-सृष्टि को पहले जोडनेवालों का योग और सन्धिकाल माननेवालो का योग स्वामी जी के योग से दूर चला जायेगा और गणित के क्षेत्र में आपका मजाक उड़ाया जायेगा। क्योंकि लेख को प्रमाण मानने से ही सिद्धि नहीं होती, युक्ति भी होनी चाहिये। जैमिनि ऋषि ने मीमासा में कहा है कि अयुक्त बात को स्वीकार नही किया जा सकता।

'वेद-प्रवचन' पृष्ठ १६५ पर श्री पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय ने 'सहस्र' शब्द की व्याख्या करते हुए युक्ति दी है—

"इसी स्थान पर ईश्वरवादियो की भावनाये अलग-अलग हो जाती हैं। ऐसा क्यों होता है ? यह अविद्या के कारण है। परन्तु ऐसी भ्रांति होती ही क्यों है ? यह एक जटिल प्रश्न है।

इसके लिए मानवीय प्रवृत्तियों का निरीक्षण और परीक्षण करना होगा। एक तो कारण यह है कि लक्षणायुक्त अलकार की भाषा को अभिधा समझ लेना। जैसे मन्त्र में कहा है—'सहस्रशीर्षा सहस्राक्षः सहस्रपात्' तो इसका यह अर्थ लगा लेना कि रावण के दस सिर व बीस भुजा थी वैसे ही ईश्वर के भी ठीक एक सहस्र अर्थात् दस सौ सिर होंगे और एक सहस्र (९९९ से एक अधिक) और १००१ से एक कम आंखें और इतने ही पैर होगे, तो यह भूल जाते हैं कि यहा 'सहस्र' का अर्थ असख्य या बहुसंख्य है, सिर का अर्थ सिरवाले प्राणी-वर्ग।

रावण के दश सिरों की कल्पना करनेवाले ने तो एक-एक सिर के पीछे दो-दो भुजाये करके कुछ अनुपात निभाया भी, परन्तु ईश्वर में ठीक एक सहस्र की कल्पना करके दो हजार पैर व दो हजार आंख न बताना प्रकट करता है कि यह लक्षणायुक्त वर्णन है, अभिधा नही।"

२—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पृष्ठ २७ पर 'उपमा सहस्रस्य' सब संसार की सहस्र संज्ञा है तथा पूर्वोक्त ब्राह्म दिन और रात्रि की भी सहस्र संज्ञा ली जाती है, क्योंकि यह मन्त्र सामान्य अर्थ में विद्यमान है। ब्राह्म दिन व रात्रि की संसार उपमा है। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने जगत् व वेदों की उत्पत्ति का समय बताया है।

१९६०८५२९७६ वर्ष भोग हो चुके।
२३३३२२७०२४ वर्ष भोग होना बाकी।

४२९४०८०००० वर्ष चौदह मन्वन्तरों का योग ब्राह्म दिन तथा इतनी ही रात्रि।

गिनती छोटी संख्या से शुरु होती है। १००० चतुर्युगी मानकर १ से गिनना है।

उपर्युक्त विचार अपनी अल्पबुद्धि के आधार पर व्यक्त किये हैं। इसमे कोई त्रुटि हो तो विद्वज्जन मुझे सुझाकर अनुगृहीत करे।

। इति।

अग्निवेश का आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं है

पश्चिमी अमेरिका के लाज एंजिल्स नगर से प्रकाशित होनेवाले अंग्रेजी दैनिक एलο एο इंडिया के २२ मई, ९२ में प्रकाशित अविकल समाचार—(अंग्रेजी)

Swami Agnivesh is not in Arya Samaj

This is with reference to the L.A. INDIA dated April 17 news item "Rally to Demand Next Indian President from Among Delits" Among the various speakers it is mentioned Swami Agnivesh as an Arya Samaj leader.

It is clarified for the information of the readers that Swami Agnivesh is no longer associated with the Arya Samaj in any way. though he still claims to be an Arya Samaj leader. He has since been debarred from he Arya samaj by the International Aryan League. the supreme body of Arya samaj headed by Swami Anand Bodh Saraswati (Ram Gopal Shalwale, ex Member of Parliament) for his activities found against the principles of Arya samaj. These days his activities are more political than religious.

—Madan Lal Gupta
Purohit Vedic Dharma Samaj
Bellflower. CA

लास एंजिल्स में १७ अप्रैल, ९२ को भारत का नया राष्ट्रपति दलित वर्ग का हो, की मांग के समर्थन में एक रैली का आयोजन हुआ। कई प्रमुख वक्ताओं के साथ स्वामी अग्निवेश ने भी आर्यसमाजी नेता के रूप में रैली को सम्बोधित किया।

पाठकों को सूचनार्थ यह स्पष्ट किया जाता है कि स्वामी अग्निवेश का अब आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं है। आर्यसमाज के सिद्धांतों के विरुद्ध आचरण करने के कारण आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (जिसके वर्तमान प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती हैं) ने उन्हें आर्यसमाज से निष्कासित कर दिया है। इस समय स्वामी अग्निवेश की गतिविधियां धार्मिक कम, अपितु राजनैतिक अधिक हैं।

—मदनलाल गुप्ता
पुरोहित वैदिकधर्म समाज बैल फ्लोवर, कैलीफोर्निया

अम्बाला छावनी में वेदप्रचार की धूम

श्रावणी-पर्व अम्बाला छावनी में पूरे मास बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया गया। वैदिक प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में पारिवारिक सत्संगों द्वारा वेदप्रचार किया गया। प्रथम सत्संग मण्डल के कोषाध्यक्ष के घर पर हुआ, जिसमें स्वामी माधवानन्द जी महाराज के प्रवचन हुए। दूसरा सत्संग मण्डल के मन्त्री के घर पर सम्पन्न हुआ, जिसमें डा० प्रतिभा पुरंधि के प्रवचन हुए। तीसरा सत्संग श्री ओ० पी० भाटिया के घर पर हुआ, जिसमें पं० दाउदयाल जी तथा डा० प्रतिभा पुरंधि के प्रवचन हुए। इस अवसर पर मण्डल को दान भी प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज पंजाबी मोहल्ला में दिनांक ३-८-९२ से ९-८-९२ तक वेदप्रचार के अवसर पर पं० जगदीशचन्द्र वसु एवं स्वामी निर्मलानन्द के प्रवचन हुए।

इसी कड़ी में आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग में दिनांक १३-८-९२ से २१-८-९२ तक वेदप्रचार के अवसर पर पं. मदनमोहन विद्यासागर हैदराबादवाले, डा० शांता मल्होत्रा एवं डा० प्रतिभा पुरंधि के प्रवचन एवं नरेन्द्र शास्त्री के भजन हुए।

डा० प्रतिभा पुरंधि की प्रधानता में गठित युवती परिषद् की ओर से बच्चों द्वारा एक छोटा-सा नाटक भी प्रस्तुत किया गया।

—वेदप्रकाश शर्मा प्रधान

नामकरण संस्कार पर दान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रचारक पं० भजनलाल आर्य ने ३० अगस्त को अपने पौत्र के नामकरण संस्कार पर २९ अगस्त को श्री चेतराम भजनोपदेशक द्वारा प्रचार करवाया। नामकरण संस्कार के अवसर पर क्षेत्र के आर्यसमाज के उपस्थित कार्यकर्त्ताओं ने नवजात शिशु को आशीर्वाद दिया। श्री भजनलाल आर्य ने सभी को प्रीतिभोज दिया तथा १०० रु० आर्यसमाज मितरौल औरंगाबाद तथा १०० रु० गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को दान दिये।

बालू जिला कैथल मे वेदप्रचार

सभा के भजनोपदेशक पं० चिरजीलाल आर्य ने १४ से १८ अगस्त तक भजनों द्वारा ग्राम में वेदप्रचार किया। ग्रामीण नरनारी भारी संख्या में प्रचार से लाभ उठाते रहे। इस अवसर पर सभा को ७०० रु० वेदप्रचारार्थ प्राप्त हुए।

तो कोई बात बने

धूल दुर्व्यसनों की झाड़ो, तो कोई बात बने।
अविद्या दूर लताड़ो, तो कोई बात बने॥

वृक्ष पाखण्ड का दिन-दिन पनपता जारहा है।
मूल से इसको उखाड़ो, तो कोई बात बने॥

हर कोई बैठा है यहां भगवान् बनकर।
इनकी करतूतें उघाड़ो, तो कोई बात बने॥

अकड़कर घूमते हैं भक्त बनकर देशद्रोही।
पजामा इनका फाड़ो, तो कोई बात बने॥

यहां बरसाती मेंढ़क जोर से चिल्ला रहे हैं।
शेर सम आप दहाड़ो, तो कोई बात बने॥

अनेकों मिथ्यावादी आगे बढ़ रहे हैं।
पकड़ कर पांव पछाड़ो, तो कोई बात बने॥

बगुला भक्तों ने गुरुडम का जाल बिछा रखा है।
बाग इनका उजाड़ो, तो कोई बात बने॥

विश्व कल्याण के साधन सभी मिलकर संजोयें।
पताका ओ३म् की गाडो, तो कोई बात बने॥

ईर्ष्या द्वेष और अभिमान तज करके 'राघव'।
संगठन को न बिगाड़ो, तो कोई बात बने॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

कालांवाली मण्डी जिला हिसार में दो पारिवारिक सत्संग

१—१६-८-९२ रविवार को श्री सत्यपाल जी गुप्त कालावाली मण्डी ने अपने नये मकान मे गृह-प्रवेश के रूप मे श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी बठिण्डा से अपने घर पर हवन-यज्ञ करवाया। वानप्रस्थी जी ने गृहस्थ सुधार और जीवन निर्माण पर अपने विचार रखे।

२—१६-८-९२ को सायंकाल ५ बजे श्री महाशय त्रिलोकचन्द जी आर्य के बड़े भाई के परिवार मे बालक के जन्मदिन पर कालावाली मे हवन-यज्ञ किया। पुष्पों से बालक को सबने आशीर्वाद दिया। श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा ने बालकों की शिक्षा पर अपने विचार रखे।

ऋषिवर ! अर्पित कोटि नमन

मा के आंचल में तुमने आशा की किरण बिखेरी।
तेरी सुनकर सिंहगर्जना बाज उठी रण-भेरी॥

नव जागृति के अहे पुरोधा,
तुमसे ज्योतित जन-मन।

दयानन्द ऋषिराज तुम्ही ने मानवता का मन्त्र दिया।
फंसे तिमिर के विषम जाल में मानव कोटि स्वतत्र किया॥

तेरी ललकारों से गुंजित,
अभी धरा है तथा गगन।

अपौरुषेय वेदों की पावन तुमने ज्योति जलाई।
बाज उठी फिर महिमण्डल पर सत्यधर्म शहनाई॥

वैदिकधर्म ध्वजा अम्बर में,
लहरी, हर्षित जन-जन।

त्याग तथा बलिदानो का तुमने सुचिपथ दिखलाया।
तिमिराच्छादित वसुन्धरा को नया विहान दिखाया॥

ज्योतिर्मय, उर किया असंख्यक,
किया दनुजता वृत्ति दमन।
ऋषिवर अर्पित कोटि नमन॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, मुलतानपुर (उ०प्र०)

शोक समाचार

आर्यसमाज सफीदों जि० जींद के पूर्व उपप्रधान मा० महेन्द्रपाल जी का २० अगस्त को ६५ वर्ष की आयु मे देहावसान होगया। आर्यसमाज मन्दिर में उनकी स्मृति में यज्ञ तथा शोकसभा का आयोजन किया गया। —बलदेव आर्य

हरयाणा प्रांतीय आर्यवीर महासम्मेलन नरवाना में

आर्यवीर दल हरयाणा अपना १५वा आर्यवीर महासम्मेलन १९-२० सितम्बर को आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना (जींद) के प्रांगण में आयोजित कर रहा है। इसकी अध्यक्षता आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज करेंगे। सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प० बालदिवाकर हंस (रक्षा सचिव), सार्वदेशिक आयवीर दल के प्रधान सेनापति डा० आचार्य देवव्रत, प्रो० उत्तमचन्द शरर सरंक्षक आर्यवीर दल हरयाणा, प्रो० शेरसिंह प्रधान आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य धर्मपाल ततारपुर, ब्र० राजसिंह आर्य देहली, सत्यवीर शास्त्री अलवर, आचार्य देवव्रत कुरुक्षेत्र, बचनसिंह आर्य राज्यमन्त्री हरयाणा सरकार, स्वामी रत्नदेव, डा० रामप्रकाश इलैक्ट्रोनिक विज्ञान व तकनीकी मन्त्री हरयाणा सरकार, श्री बीरुराम आर्य जिला शिक्षा अधिकारी कुरुक्षेत्र, स्वामी गोरक्षानन्द, आचार्या कु० दर्शना गुरुकुल खरल, कु० रतनकौर खरल, श्री हरिसिंह सैनी पूर्व मन्त्री, श्री कुलवीरसिंह मलिक पूर्व विधायक एव अन्य अनेक वैदिक विद्वान् पधारेंगे।

विशेष आकर्षण

शोभायात्रा	१९ सितम्बर दोपहर २ बजे
आर्यवीर सम्मेलन	,, ,, रात्रि ८ बजे
सामूहिक शाखा	२० ,, प्रातः ५ बजे
यज्ञ एव वेदप्रवचन	२० सितम्बर प्रातः ८ से १० बजे तक
राष्ट्ररक्षा सम्मेलन	,, ,, ,, १० से २ बजे तक
व्यायाम एव शक्ति प्रदर्शन	,, ,, दोपहर १२-३० बजे

—वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

गणित की किताब पर शराब के विज्ञापन

भोपाल ३ सितम्बर। रात-दिन संस्कृति का जाप करनेवाली भाजपा सरकार नन्हे-मुन्नों को शराब से भी परिचित करा रही है। पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा दो की गणित को पुस्तक के मुखपृष्ठ पर व्हिस्की और आसवनियों के विज्ञापन हैं। प्रदेश युवा इ काध्यक्ष श्री मुकेश नायक ने आज ऐसी दो पुस्तके पत्रकारों को दिखाई। म०प्र० पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित ये किताबे कानपुर की एक प्रेस से मुद्रित हुई हैं। एक पुस्तक पर केडिया डिस्टीलरी का विज्ञापन है। किताब को उलटाने पर गोल्ड ब्राड व्हिस्की का विज्ञापन साफ दिखाई पडता है। साथ ही अंग्रेजी मे लिखा है 'गलास विद केयर'। दूसरी पुस्तक पर स्त्री-पुरुष का चित्र है तथा अंग्रेजी मे लिखा है 'गुड मॉर्निंग ऑफ्टर ग्रेट ईवनिंग'। श्री नायक ने बताया कि ये पुस्तके निगम द्वारा छत्तीसगढ भेजी गई किताबो के लाट मे मिली हैं। इस सम्बन्ध में पाठ्यपुस्तक निगम के वरिष्ठ अधिकारियों से सम्पर्क किया गया, लेकिन वे उपलब्ध नही हुए।

प्रवेश सूचना

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी, त० पलवल, जि० फरीदाबाद (हर०) में तीसरी कक्षा से आठवी तथा एम डी. यूनिवर्सिटी की प्राज्ञ विशारद आदि कक्षाओं में प्रवेश प्रारम्भ है।

विद्यापीठ दिल्ली और पलवल के बीच दिल्ली से ४५वे किलोमीटर जी० टी० रोड पर स्थित है।

गुरुकुलीय वातावरण पढाई की सुन्दर व्यवस्था, स्वास्थ्य शिक्षा पर विशेष ध्यान, पढाई के साथ कर्मकाड का पूर्ण ज्ञान कराया जाता है। प्रवेशार्थी शीघ्र सम्पर्क करे।

—आचार्य दीनानाथ ठाकुर प्रधानाचार्य

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का विशाल आयोजन

दिनांक ३ अक्तूबर से दिनांक ८ अक्तूबर, ९२ तक आर्यसमाज मन्दिर, कृष्णपोल बाजार, जयपुर में नगर आर्यसमाज जयपुर के तत्त्वावधान में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का विशाल एवं अभूतपूर्व आयोजन किया गया।

इस यज्ञ के ब्रह्मा विश्वप्रसिद्ध, वैदिक यज्ञ कर्मकांड के परम विद्वान् ओजस्वी वेद-व्याख्याता आचार्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती होंगे।

—भगवतीप्रसाद सिद्धात भास्कर
प्रधान नगर आर्यसमाज

आज के भामाशाह

गुरुकुल कालवा (जींद) की राष्ट्रीय गोशाला की ७०० गउवे चारा अभाव मे भिवानी की ओर चराने भेजी गई। क्षेत्रीय लोगों के एतराज करने पर गौ-सेवक गउवों को लेकर वापिस जींद की ओर चल दिये। भिवानी से निकले ही थे कि एक सेठ बलदेव देवराला निवासी मिल गये। सारा वृत्तात जानकर वे उन सभी गउवों को भिवानी में लेगये। अन्य गोभक्त सेठ सूरजभान बगडिया, सेठ रामनिवास विजय प्लास्टिक व श्री भारतभूषण जैन के सहयोग से दो महीने दीपावली तक उक्त गउवों की सेवा करने का वचन दिया है। बिना दूध की इन गउवों का लगभग तीन हजार रुपये का चारा रोजाना लगता है। गौ-सेवा का यह एक ऐतिहासिक उदाहरण है। हम सबको इनसे प्रेरणा लेनी चाहिये।

—ब्र० ओम्स्वरूपार्य
अध्यक्ष गोवंश रक्षा समिति हरयाणा
डिकाडला, पानीपत

वैदिकधर्म प्रचार

वैदिकधर्म का प्रचार-प्रसार करना श्रेष्ठ व्यक्तियो का कर्तव्य है। आर्यसमाज दातौली की ओर से दिनांक २३ से २५ अगस्त, ९२ तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री ईश्वरसिंह तूफान ने प्रचार किया। ग्रामवासियों पर प्रचार का अच्छा प्रभाव रहा। २९१ रुपये वेदप्रचारार्थ दान में दिये।

—बलवीरसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज दातौली, भिवानी

आर्य अध्यापक की आवश्यकता

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सरायख्वाजा जि० फरीदाबाद के लिए एक जे० बी० टी० अध्यापक की तुरन्त आवश्यकता है। आर्य विचारवाले तथा सेवानिवृत्त अध्यापक को प्राथमिकता दी जायेगी।

—धर्मचन्द मुख्याधिष्ठाता

आर्य उच्च विद्यालय बड़ा बाजार रोहतक

आर्य उच्च विद्यालय बड़ा बाजार रोहतक को आवश्यकता है एक योग्य संस्कृत अध्यापक की।

योग्यतायें :—

१—मान्यता प्राप्त संस्थान से शास्त्री एवं ओ.टी. पास।
२—वैदिक ज्ञान रखनेवाले को प्राथमिकता दी जाएगी।

प्रार्थना-पत्र भेजे एवं साक्षात्कार हेतु दिनांक ११-१०-९२ रविवार प्रातः १० बजे पधारे।

—मुख्याध्यापक
आर्य उच्च विद्यालय, रोहतक
दूरभाष : ७५५१९

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P RTK

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक [illegible]

प्रधान सम्पादक—सुबेसिंह सभामन्त्री | सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री | सहसम्पादक—[illegible]

वर्ष १६ अंक ४१ २८ सितम्बर, १९९२ वार्षिक शुल्क [illegible] (आजीवन शुल्क [illegible]) विदेश में ८ पौंड [illegible]

मृतक श्राद्ध

– [illegible] काशीनाथ शास्त्री

पितृपक्ष निकट आरहा है। इस अवधि में (आश्विन कृष्ण १ से आश्विन अमावस्या तक) लाखों लोग अपने मृत माता-पितादि का श्राद्ध करते हैं अर्थात् वर्षभर में एक बार उक्त १५ दिनों तक ब्राह्मणों को तरह-तरह के भोजन इस उद्देश्य से कराते हैं कि वह भोजन उनके (भोजन करानेवालों के) मृत माता-पितादि को प्राप्त होगा और उनकी तृप्ति होगी। वस्तुतः श्राद्ध का सम्बन्ध पितरों से है। अतः सर्वप्रथम यह विचारणीय है कि पितर किसे कहते हैं और उनका श्राद्ध क्या है ?

पितर कौन है ?

'पा' रक्षणे धातु से 'पितर' शब्द सिद्ध होता है। पितर का अर्थ पालक, रक्षक और पिता होता है। पिता और पितर ये दोनों शब्द समानार्थक हैं। किन्तु जीवित माता-पिता ही रक्षण और पोषण कर सकते हैं। क्योंकि रक्षा-कार्य मृतकों द्वारा नितात असम्भव है। पिता और पितर का प्रयोग शास्त्रों में जीवितो के लिए ही आया है। उदाहरणार्थ—

१) 'क्षत्र वै यमो विश. पितरः' अर्थात् क्षत्रिय यम हैं, प्रजाये ही पितर हैं। (शतपथ ७।१।१।४)

२) 'मर्त्याः पितर'=मनुष्य पितर हैं। (शतपथ २।१।३।४)

३) 'गृहाणा हि पितर ईशते'=घरों के स्वामी पितर हैं। (शतपथ २।६।१।४०)

ब्रह्मवैवर्त पुराण में बताया गया है कि 'विद्या देनेवाला, अन्न देने वाला, जन्मदाता, कन्या देनेवाला, भय से रक्षा करनेवाला, मन्त्र (विचार) दाता और बड़ा भाई ये सब पितर कहे जाते हैं। (ब्र.वै.व पु. खण्ड ३। अ० श्लोक ४७ एव खण्ड ४ अ० ३५ श्लोक ५७)

गीता में भी आया है कि 'अर्जुन ने वहा (युद्ध क्षेत्र में) खडे हुए पितर और पितामहों को देखा।' (गीता अ १ श्लोक २६) आगे चलकर अर्जुन ने कहा कि 'मै युद्ध में लड़ने को खडे हुए आचार्य, पितर, पुत्र, पितामह, मातुल, श्वसुर, पौत्र आदि को मारना नही चाहता।' (गीता अ० १ श्लोक ३४-३५) स्पष्ट है कि युद्ध मे लडने को खडे हुए ये सब जीवित व्यक्ति (पितरादि) ही थे। मृत पितर नही थे, क्योंकि मरे हुए पितरों से युद्ध नहीं किया जासकता।

इस प्रकार के दो, चार नही अपितु सैकडो प्रमाण दिये जासकते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि शास्त्रो मे जीवितो को ही पितर सज्ञा दी गई है।

श्राद्ध क्या है ?

'श्रत्' सत्य का नाम है और 'श्रत्सत्य दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत् क्रियते तच्छ्राद्धम्।' अर्थात् जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाये उसको श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाये उसका नाम श्राद्ध है। इसी प्रकार 'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्।' जिस कर्म से विद्यमान माता-पितादि प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायें उसका नाम तर्पण है। परन्तु यह जीवितो के लिए है और उन्ही के लिए सम्भव है, मृतकों के लिए नही। शास्त्रों में गृहस्थों के लिए पच महायज्ञ दैनिक कर्म बताये गये है। उनमे से एक पितृयज्ञ है जो विद्वान्, आचार्य, पितर (जीवित माता-पिता आदि बुद्धि और ज्ञानियों की सेवा एवं सत्कार को ही कहते है।

मृतक श्राद्ध की व्यर्थता

वेद, शास्त्र, उपनिषद्, गीता, महाभारतादि सभी धर्मग्रन्थो में पुनर्जन्म के अनेकों प्रमाण हैं और पुनर्जन्म सम्बन्धी कई सत्य घटनाये प्रकाश में भी आचुकी हैं। गीता अ० २ श्लोक २२ में लिखा है कि 'जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोडकर नये वस्त्र धारण करता है उसी प्रकार यह जीवात्मा पुराने शरीर को छोडकर दूसरे नये शरीर को धारण करता है।' इसी प्रकार महाभारत वनपर्व अ० १-३ मे आया है कि 'आयु पूरी होने पर जीव इस जर्जर शरीर का त्याग करके उसी क्षण किसी दूसरी योनि (शरीर) मे प्रकट होना है।' अस्तु जब जीव एक शरीर का त्याग करके तुरन्त दूसरे शरीर मे प्रविष्ट हो जाते है तो फिर मृत माता-पितादि पितृ पक्ष में भोजन करने कैसे आसकते है ? यदि कहा जाये कि आते हैं तो पितृपक्ष मे लाखो घरो मे लोगों को मरना चाहिये, क्योकि जब तक नये शरीर व घर को छोडेगे नही तब तक पुराने घर में जीमने कैसे आवेगे ? दूसरी योनि मे रहकर भी पूर्व जन्म के माता-पितादि को भोजन नही पहुंच सकता, क्योंकि एक तो यह पता नही रहता कि किसके माता-पितादि ने कहा जन्म लिया है और दूसरे एक का खाया हुआ भोजन दूसरे के पेट मे नही पहुंचता। अत उनके (माता-पितादि के) निमित्त ब्राह्मणों एव कौवो को खिलाने से उन्हें भोजन कदापि नही पहुच सकता।

इस सम्बन्ध मे 'ऋषि पचमी व्रतकथा' पुस्तक की कथा उद्धृत करना सर्वथा उपयुक्त है। यही कथा भविष्योत्तर पुराण ब्राह्म पर्व अध्याय ७८ में तथा पद्म पुराण के उत्तरखण्ड में भी आती है। कथा इस प्रकार है—(श्रीकृष्ण जी युधिष्ठिर से कह रहे है) सतयुग मे श्येनजित् राजा के विदर्भ राज्य मे एक सुमित्र नामक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री का नाम जयश्री था। एक दिन राजस्वला होते हुए भी वह ब्राह्मणी गृहकार्य मे लगी रही। उस स्त्री के इस पाप से मरने के पश्चात् वह ब्राह्मण बैल की योनि मे गया और वह स्त्री मरकर कुतिया बनी। फिर वे दोनों (बैल व कुतिया) अपने ही पुत्र सुमति के घर में आकर रहे। सुमति की स्त्री का नाम चन्द्रवती था। पिता की निधन तिथि आने पर सुमति ने मृतक श्राद्ध का आयोजन किया और ब्राह्मणों को निमन्त्रण दिया। चन्द्रवती ने पकवान बनाये। खीर का पात्र भरा हुआ था। एक साप ने आकर उस पात्र मे विष उगल दिया। कुतिया ने देखा, सोचा—ब्राह्मण इस खीर को खायेंगे तो मर जायेगे इसलिये उसने चन्द्रवती के सामने ही उस खीर के पात्र मे मुह लगा दिया। इस पर चन्द्रवती को बहुत क्रोध आया और उसने जलती हुई लकडी से कुतिया को मारा। उसने दूसरी बार फिर खीर तयार की। सुमति और चन्द्रवती ने विधिपूर्वक श्राद्ध किया। कुतिया पर उनको इतना क्रोध आया कि

उस दिन उसे जूठन भी खाने को न दीगई। कुतिया और बैल को अपने पिछले जन्म की सब बातें याद थी। रात को कुतिया ने बैल को अपने पिटने और भूखी रहने की सब बातें सुनायी। बैल बोला—'हे भद्रे! तेरे पाप के कारण से ही दुःख तुझे प्राप्त हुआ। तेरे पाप से ही बोझ उठाने वाली बैल की योनि को प्राप्त होने के कारण मैं भी अशक्त हूं, क्या करूं? आज ही मैं अपने पुत्र के खेत मे दिनभर चलाया गया और इस मेरे ही पुत्र ने मेरा मुख बांधकर मुझे भूखे को मारा। आज तो मुझे बहुत ही कष्ट हुआ। इसने वृथा ही श्राद्ध किया।' इस कथा से भी स्पष्ट है कि मृतक श्राद्ध करना व्यर्थ है।

मृतक श्राद्ध वेद विरुद्ध

मृतक श्राद्ध सम्बन्धी और भी अनेक बातें असगत, असम्भव और वेद विरुद्ध हैं। उदाहरणार्थ—पद्मपुराण, शिवपुराण और मनुस्मृति में वर्ष में एक माह से लेकर १२ माह तक मृत पितरों को तृप्त रखने के लिए मछली, खरगोश, नेवला, हरिणादि विभिन्न जीवों के मास से श्राद्ध करने को लिखा है जो कि वेद विरुद्ध है। मासाहारादि की ये सभी बातें मनुस्मृति में प्रक्षिप्त है जो वाममार्गियों की देन है। किन्तु जो लोग मनुस्मृति मे प्रक्षेप नही मानते और मृतक श्राद्ध को उचित ठहराते हैं उन्हें तो इन बातों का पालन करना ही पडेगा। श्राद्धभोजी ब्राह्मण ऐसे अभक्ष्य पदार्थों को ग्रहण करने से इन्कार भी नही कर सकता क्योंकि मनुस्मृति अ० ५ श्लोक ३५ मे लिखा है कि 'श्राद्ध में विधि से नियुक्त किया हुआ जो मास भक्षण न करे वह मरकर २१ बार पशु योनि मे जन्म लेता है।' किंतु ये सभी बातें (जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है) प्रक्षिप्त है और मानने योग्य नही है।

यह कैसी पितृ भक्ति?

जो लोग जीवित माता-पिता की सेवा-सुश्रुषा नही करते और उन्हे भोजनादि से सन्तुष्ट नहीं रखते बल्कि मरने के बाद उन्हे भोजन पानी देते हैं तो उनको यह पितृभक्ति सर्वथा निरर्थक व ढोंग है। ऐसी पितृभक्ति पर तो यही कथन चरितार्थ होता है—

> जियत पिता से दगम-दंगा। मरे पिता पहुँचावें गंगा।
> जियत पिता की बात न मानी। मरे पिता को देवे पानी॥
> जियत पिता को दीनी न रोटी। मरे पिता को खीर व बोटी॥

इस सम्बन्ध में 'नवभारत टाइम्स' दिल्ली सस्करण मे किन्हीं श्री धर्मवीर शर्मा द्वारा दीगई आखों देखी घटना का उल्लेख करना अनावश्यक न होगा—"मैं एक मित्र के घर गया तो देखा कि दीवार पर किसी व्यक्ति का चित्र लटका है और उसके ऊपर पुष्पमाला टगी है। पास मे जाकर देखा तो यह चित्र उनकी स्वर्गीय माता का था। मुझे याद है कि जब कभी वे मुझसे मिलती थी तो मेरे मित्र को खूब कोसती थी। कहा करती थी कि इसने मेरे भाइयों, बहनो तथा रिश्तेदारो के साथ बड़ा घात किया है। भगवान् करे यह भी मेरी तरह तडप-तड़प कर मरे। मैंने भी माता के हृदय की तपन को कम करने की दृष्टि से इसे भले आदमी को अपनी भूल सुधारने का अनुरोध किया, किंतु वह हमेशा यह कहकर टाल दिया करता था कि इसका दिमाग चल गया है। कितनी बार उस बेचारी ने अपनी दो रोटी की व्यवस्था करवाने के लिये भी मेरे माध्यम से जोर डलवाया, किंतु मेरे सपूत मित्र ने किसी न किसी बहाने टरका दिया। मुझे यह सुनकर और भी अधिक दुःख हुआ कि इस मित्र ने अपनी स्वर्गीय माता की १३वी मे काफी आदमियों के हाथ जूठे कराये थे।

उपसंहार

पितृकर्म (भक्ति) भारतीय संस्कृति का आधार है किंतु जिस व्यक्ति ने जीवित माता-पिता की सच्ची आवाज को नही सुना, अपनी कमाई से उन्हे एक दिन भी भोजन नही कराया तथा उनकी इच्छा के अनुकूल कोई कार्य नही किया उसे उनके चित्र टांगकर यथार्थ का गला घोटने का कोई अधिकार नही है। इस प्रकार का आचरण पितृ-भक्ति पर कलंक नही तो और क्या है?

मस्जिद में नवम सदी का संस्कृत शिलालेख मिला

झज्जर, ८ सितम्बर। हरयाणा प्रांतीय पुरातत्त्व संग्रहालय गुरुकुल झज्जर के संग्रहपाल श्री विरजानन्द दैवकरणि ने एक बयान में बताया कि उन्होंने दिल्ली की कुतुबमीनार के पास स्थित कुवैत उल मस्जिद में नवम शती के एक संस्कृत लेख का पता लगाया है। यह लेख मस्जिद के दक्षिण पूर्व कोने में एक लाल पत्थर के खम्बे पर खुदा हुआ है। इसके नीचे मूल मन्दिर का १३वां स्तम्भ स्थित है। यह मस्जिद २७ हिंदू ज्योतिष के मन्दिरों को तोडकर बनाई गई थी।

९ पंक्ति के इस शिलालेख से यह भी सिद्ध होगया है कि कुतुब मीनार कुतबुद्दीन ऐबक ने नही बनवाई थी। क्योंकि उससे लगभग ४०० वर्ष पूर्व इन मन्दिरों और मीनार की स्थिति का पता इस शिलालेख से लग जाता है। चन्द्रगुप्त के लोह स्तम्भ के पश्चात् उपलब्ध लेखों में यही लेख सबसे पुराना है। यह शिलालेख रेही लग जाने से अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होता जारहा है। श्री दैवकरणि जी ने इसकी सूचना भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के महानिदेशक श्री मुनीशचन्द्र जोशी को दे दी है। उन्होंने ११ सितम्बर को अपने अधिकारियों की एक टीम भेजकर इस बात की सत्यता की जांच कराई और पुष्टि की है।

विशेष यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज बालसमन्द (हिसार) की ओर से दिनांक २८-८-९२ को अमावस्या के दिन पर्यावरण शुद्धि हेतु पचायत भवन में सामूहिक हवन आचार्य दयानन्द जो ब्राह्म विद्यालय हिसार द्वारा किया गया। जिसमें २० किलो घृत ४० किलो हवन सामग्री थी। इस अवसर पर श्री दीवानसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द तथा पं० श्रीदत्त शर्मा जी ने भी पंच महायज्ञ व हवन के महत्त्व तथा ऋषि ऋण चुकाने के लिए हम सबने वेद स्वाध्याय तथा वेदप्रचार हेतु जीवन लगाना चाहिए। हवन मे श्रद्धा से ग्राम के नरनारियों ने भाग लिया।

—माईलाल आर्य
मन्त्री आर्यसमाज बालसमन्द

आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात द्वारा प्रचार कार्यक्रम

आर्य वेदप्रचार मेवात मण्डल की ओर से मेवात क्षेत्र में ३१ अगस्त से ५ अक्तूबर तक वेदप्रचार का कार्यक्रम चलाया जारहा है।

—सत्येन्द्रप्रकाश मन्त्री

सत्यव्रत सिद्धांतालंकार का देहांत

नई दिल्ली, १३ सितम्बर (भाषा)। स्वतन्त्रता सेनानी और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पूर्व कुलपति प्रो० सत्यव्रत सिद्धातालंकार का आज यहा देहात होगया। वह ९५ वर्ष के थे।

प्रो० सिद्धांतालंकार सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और वेदो के विद्वान् थे। भारतीय दर्शन, सस्कृति, धर्म, समाजशास्त्र और वेदों पर उन्होंने ६० से अधिक पुस्तकें लिखी।

शोक समाचार

दिनाक ३१ अगस्त, ९२ को म० उदयसिंह जी गांव खेड़ीखुमार जि० रोहतक का स्वर्गवास होगया। उन्होंने अनेक वर्षों तक गुरुकुल झज्जर की तन, मन, धन से सेवा की और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढकर भाग लिया। उन्होंने कांग्रेस के आजादी आंदोलन में भी भाग लिया। उनकी आयु ९२ वर्ष थी। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

—म० फतेहसिंह भण्डारी, गुरुकुल झज्जर

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं से अपील

भिवानी में २ अक्तूबर ९२ को शराबबंदी विराट् प्रदर्शन एवं सम्मेलन को सफल करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गतवर्षों से हरयाणा में शराबबन्दी अभियान चलाया जारहा है। हरयाणा के कोने-कोने में शराबबन्दी प्रचार करवाकर पचायतो से प्रस्ताव करवाने का कार्यक्रम चल रहा है। सभाप्रधान प्रो० शेरसिह जी के प्रयत्नों से उच्चतम न्यायालय मे शराबबन्दी लागू करने की याचिका विचारार्थ स्वीकार हो चुकी है। ग्रामो तथा नगरों मे शराबबन्दी का साहित्य तथा पोस्टरो का मुफ्त वितरण किया जारहा है। आर्यसमाज सदा से ही समाज-सुधार कार्यों में अग्रणी रहा है।

शराब एक भयकर सामाजिक बुराई है तथा भ्रष्टाचार व अनाचार की जननी है। इसके बढते हुए प्रचार तथा प्रसार से कमजोर वर्ग के भाई इसके सेवन करने से बर्बाद तथा शराब के विक्रेता मालामाल हो रहे हैं। शराबियों के उत्पात से बहन-बेटियो की इज्जत खतरे मे पड रही है। इसी के कारण प्रत्येक क्षेत्र मे भ्रष्टाचार बढ रहा है।

हरयाणा प्रदेश ऋषि-मुनियो की पवित्र भूमि रही है। यह प्रदेश दूध-दही के खाने के लिए विश्वभर मे प्रसिद्ध रहा है, परन्तु आज शराब को बढावा देने, शराब की अधिक बिक्री करने पर पचायतों को लालच देने की अकल्याणकारी सरकारी नीति के कारण अनेक ग्रामो में पीने का पानी तक नही मिलता, परन्तु शराब रूपी जहर की बोतल ग्रामो मे आसानी से मिल जाती है। स्कूलों में पढनेवाले छोटे-छोटे बच्चे भी इस दुर्व्यसन में फंसते जारहे हैं। इस प्रकार भावी-पीढी का भविष्य अंधकार की ओर जारहा है और सरकार शराब की आमदनी बढाने के लालच मे अन्धी होकर प्रतिवर्ष अधिक से अधिक शराब के ठेके तथा उसकी शाखायें खोलकर हरयाणा की प्राचीन वैदिक सस्कृति तथा सभ्यता को नष्ट कर रही है। आज हम राजनैतिक रूप से स्वतन्त्र है परन्तु आर्थिक रूप से शराब के गुलाम बनते जारहे है।

अत: आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने निश्चय किया है कि हरयाणा को बचाने के लिए प्रदेश मे शराबबन्दी अभियान को गतिशील बनाया जावे और पूर्ण नशाबन्दी लागू करवाने के लिए सभी के सहयोग से महात्मा गाधी तथा श्री लालबहादुर शास्त्री के जन्मदिवस पर २ अक्तूबर, ९२ को प्रात: १० बजे हरयाणा के मध्यवर्ती जिला भिवानी मे किरोडीमल पार्क मे शराबबन्दी विराट् प्रदर्शन तथा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इसमे हरयाणाभर से ग्रामों तथा शहरो से भारी संख्या मे नरनारी पहुंचेगे तथा जिला उपायुक्त भिवानी द्वारा हरयाणा सरकार को पूर्ण नशाबन्दी लागू करने का ज्ञापन दिया जावेगा।

अत: हरयाणा के सभी आर्यसमाजो तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं एव अन्य सज्जन जो शराबबन्दी कार्य मे रुचि रखते हैं, से नम्र-निवेदन है कि इस अवसर पर अपनी शक्ति सघटन का प्रदर्शन करने एव शराबबन्दी आंदोलन की तैयारी करने में सहयोग देने के लिए अधिक से अधिक कार्यकर्त्ताओं के साथ २ अक्तूबर को प्रात: १० बजे तक भिवानी पहुंचकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें। इस भव्य आयोजन की तैयारी हेतु २५ सितम्बर, ९२ को ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर घण्टाघर भिवानी में सभा के अधिकारियों तथा नशाबन्दी अभियान के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक होगी। इस बैठक में भी आप अपने आर्यसमाज के प्रतिनिधियों को भेजने का कष्ट करें।

स्मरण रहे जिला भिवानी में शराबबन्दी अभियान जोरों पर है। सैकड़ों ग्रामों में शराबबन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। ग्रामों मे शराबबन्दी के प्रस्ताव तथा खापवार पचायतों का आयोजन हो रहा है। इसी कारण सर्वप्रथम पूर्ण नशाबन्दी के लिए जिला भिवानी का चयन किया गया है। इस सम्मेलन की सफलता के बाद अन्य जिलों में भी क्रमश: शराबबन्दी सम्मेलन किये जावेंगे।

आपके सहयोग का इच्छुक
सूबेसिह सभामन्त्री

रोहतक में अंग्रेजी का पुतला जलाया गया

दिनांक १४ सितम्बर : आज यहां जिला उपायुक्त रोहतक कार्यालय के सामने अनेक विद्यालयो, महाविद्यालयों, प्रशिक्षण सस्थाओं, मैडिकल कालेज तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के छात्रो, अध्यापकों तथा अनेक सामाजिक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्त्ताओं ने "अंग्रेजी ऐच्छिक की जाए" का मुद्दा लेकर धरना दिया।

अंग्रेजी अनिवार्यता हटाओ समिति के आह्वान पर कार्यकर्त्ता अनेक प्रकार से अंग्रेजी विरोधी नारे लगाते हुए धरना स्थल पर पहुंचे। छात्र जोर-शोर से अंग्रेजी की जजीरें तोड दो, छात्रों के बन्धन खोल दो। मातृभाषा करे पुकार, मुझको दो मेरा अधिकार। अंग्रेजी सिंहासन, खाली करो खाली करो। अंग्रेजी एक भार है, शिक्षा हुई बीमार है आदि नारे लगा रहे थे। समिति कार्यकारिणी के सदस्य श्री डा० प्रदीपकुमार ने धरने पर बैठे लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा कि समिति सभी जिलों मे अंग्रेजी अनिवार्यता हटाने के विषय पर सेमिनार तथा धरने आयोजित करेगी और नवम्बर में पदयात्राए निकालकर हरयाणा स्तरीय "अंग्रेजी अनिवार्यता हटाओ" सम्मेलन किया जायेगा। श्री प्रदीप ने जोर देकर कहा कि निहित स्वार्थी लोग अंग्रेजी अनिवार्यता का समर्थन करते हैं उनका प्रबल विरोध किया जायेगा।

धरने पर लोगो को सम्बोधित करते हुए पूर्व उपायुक्त श्री विजयकुमार जी ने कहा कि अंग्रेजी माध्यम विद्यालय ऐसे छात्र तैयार करते है जो ग्राम जनता से कट जाते है। वे भारतीय सस्कृति भाषा व सभ्यता से नफरत सीखते हैं। मैंने अपने बच्चे इन विद्यालयों में नही पढाये। पूर्व प्रधानाचार्य श्री गुगनसिंह जी ने कहा कि हमें अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र छपवानेवाले के यहां नहीं जाना चाहिए, न ही अंग्रेजी पत्र का उत्तर देना चाहिए। धरने को पूर्व कराधान अधिकारी श्री रघुवीरसिंह, स्वा० धर्मानन्द जी, श्री हरिराम आर्य, पुस्तकाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, समिति के सरगर्म सदस्य श्री महावीरसिंह फोगाट, मा० बलदेव आर्य, हिंद किसान यूनियन के अध्यक्ष श्री धनसिंह आदि नेताओं ने सम्बोधित किया। कृष्णकुमार सिसरौलिया की रागनी "जिसने भाव बदल दिए म्हारे उस अंग्रेजी का सिर फोड दियो" तथा दिशा सांस्कृतिकमंच के युवको का समूह गान 'जाग उठा अब नौजवान' ने धरने पर बैठे तथा राह चलते लोगों को आकर्षित कर समा बांध दिया।

धरने के बाद अंग्रेजी के पुतले को पीट-पीटकर मारा गया और अर्थी निकाल कर उसे जलाया गया। जिला उपायुक्त तथा अतिरिक्त उपायुक्त महोदय को ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन मे अंग्रेजी को ऐच्छिक विषय करने, शिक्षा परीक्षा व प्रशासन मातृभाषाओं में चलाने, दोहरी शिक्षा समाप्त करने की माग रखी गई।

शांति-यज्ञ एवं शोक सभा

वानप्रस्थी महावीर जी के सुपुत्र मनुदेव का ट्रेक्टर दुर्घटना में १६ सितम्बर को असामयिक निधन होगया। उसकी आयु ३५ वर्ष थी। गुरुकुल झज्जर के समस्त कुलवासी इस दु:खद अवसर पर अपनी शोक संवेदना प्रकट करते हैं।

उनके निवास ग्राम बोहर मे २८ सितम्बर को शांति-यज्ञ एवं शोक सभा का आयोजन किया जायेगा।

—आचार्य गुरुकुल झज्जर

नशा—नाश का दूजा नाम
तन-मन-धन तीनों बेकाम

॥ ओ३म् ॥

शराब को भगाओ हरयाणा को बचाओ

हरयाणा निवासियों के मान-सम्मान तथा अस्तित्व का सवाल है इसलिए-

२ अक्तूबर १९९२ को भिवानी पहुंचो

शराब के बारे में प्रबुद्ध सपूतों ने कहा था:—

१. शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि वह पाप और अनाचार की जननी है। —महात्मा बुद्ध

२ जो-जो बुद्धि का नाश करनेवाले पदार्थ हैं, जैसे अनेक प्रकार के (मद्य) शराब, गांजा, भांग, अफीम का सेवन कभी न करे। —महर्षि दयानन्द (सत्यार्थप्रकाश)

३ शराब शरीर और आत्मा दोनों का नाश करती है। शराब पीने को मैं वेश्यावृत्ति और चोरी से भी अधिक बुरा मानता हू। महात्मा गांधी

हत्यारी शराब हरयाणा की सभ्यता और संस्कृति को नष्ट करने पर तुली हुई है। हरयाणा के लोगों के धन, स्वास्थ्य, इज्जत और आबरू को मिट्टी में मिला रही है। राजव्यापी भ्रष्टाचार, अनाचार तथा लड़ाई झगड़ों की जड़ शराब है।

सरकार धन के लालच में अनेक प्रकार के बहाने लगाकर, ग्राम पंचायतों तथा नगरपालिकाओं को लालच में हिस्सा बांटकर, शराब को हरयाणा के घर-घर में पहुँचाकर लोगों को विवेकहीन बना रही है।

हरयाणा के लोगों द्वारा शराब का उग्र विरोध तथा संगठित बहिष्कार ही शराब बन्द करा सकता है। इसलिए पूज्य महात्मा गांधी व श्री लालबहादुर शास्त्री के जन्मदिवस २ अक्तूबर को दिन के १० बजे नगरपालिका पार्क (किरोड़ीमल पार्क) भिवानी में एक विराट् नशाबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया है, जिसमें हरयाणा के गांव और शहरों से लाखों पुरुष और महिलायें भाग लेने के लिये पहुँचेंगे। सभा के समाप्त पर, जनता की भावनाओं से सरकार को अवगत कराने के लिए, उपायुक्त भिवानी के माध्यम से एक ज्ञापन भी दिया जायेगा तथा अनुरोध किया जायेगा कि भिवानी जिले में पूर्ण नशाबन्दी लागू हो।

आप सब भाई बहिनों, सामाजिक एवं धार्मिक व जातीय संस्थाओं तथा हरयाणा के हितैषियों से प्रार्थना है कि २ अक्तूबर १९९२ को १० बजे अपने गांव तथा शहर से अधिक से अधिक संख्या में भिवानी पहुंचकर डटकर शराब का विरोध करो। शराबबन्दी के लिए सरकार को मजबूर करदो।

निवेदक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक

रोहतक तथा भिवानी जिलों को मद्यनिषेध क्षेत्र घोषित किया जाएगा : शेरसिंह

रोहतक, १४ सितम्बर (बत्तरा) : राज्य के रोहतक तथा भिवानी जिलों को शीघ्र ही मद्यनिषेध क्षेत्र (ड्राई एरिया) घोषित किया जाएगा। राज्य को शराब से मुक्ति दिलाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा अपने अभियान को और तेज करेगी। यह जानकारी सभा के प्रांतीय अध्यक्ष तथा भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने यहां आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में दी।

उन्होंने शराब के बढते प्रचार व प्रसार पर चिंता प्रकट करते हुए केन्द्र एवं राज्य सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि देशभर के लगभग एक लाख गांवों में पीने का पानी नहीं है, किंतु शराब हर गांव में पहुंच चुकी है। शराब की किल्लत कहीं भी नहीं परन्तु उपभोक्ता वस्तुओं का सदैव अभाव रहता है।

प्रो० शेरसिंह ने शराब की बिक्री बन्द किये जाने से होनेवाले राजस्व की हानि पर सरकार की नीतियों की आलोचना करते हुए कहा कि इस समय देशभर में ५८००० करोड रुपये की सबसिडी विभिन्न योजनाओं पर दी जाती है। इनमें खाद और शिक्षा पर दी जानेवाली सबसिडी मुख्य रूप से शामिल है। इस सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि दी जानेवाली इन छूटों से गरीब वर्ग लाभान्वित नहीं हो पारहा है।

प्रतिनिधि अध्यक्ष ने बताया कि एक जानकारी के अनुसार देश को शराब से १० हजार करोड़ रुपये की वार्षिक आमदनी होती है तथा हरयाणा राज्य को ४२३ करोड़ रुपये वार्षिक राजस्व की प्राप्ति होती है। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि फिलहाल दी जानेवाली सबसिडी में से ६ हजार करोड रुपये की सबसिडी समाप्त करदी जाये तो शराब की बिक्री बन्द किये जाने से राजस्व पर कोई कुप्रभाव नहीं पडेगा।

केन्द्र सरकार द्वारा चलाये जारहे नशामुक्ति अभियान पर आश्चर्य प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि देश का दुर्भाग्य है कि स्मैक, हैरोइन, चरस और गांजा इत्यादि को तो यह नशा मानते हैं लेकिन शराब को 'साफ्ट ड्रिंक' मानते हैं। इस कथन का खुलासा करते हुए उन्होंने बताया कि आधुनिक राजनीतिज्ञों ने नीति बना रखी है कि 'शराब पिलाओ और राज करो।' उन्होंने दुःख प्रकट करते हुए कहा कि इन लोगों के दिमाग इतने विकृत हो चुके हैं कि पंचायतों के चुनाव में भी लाखों रुपयों की धनराशि शराब बनाम वोट पर खर्च होने लगी है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि यही सिलसिला चलता रहा तो देश बिक जाएगा। प्रो० शेरसिंह ने रहस्योद्‌घाटन करते हुए बताया कि ऐसा नहीं है कि लोग शराब के दुष्परिणामों के प्रति सचेत न हों। इमलोटा (बा‍दली), घनाना, बामला (भिवानी) तथा अन्य कई गांवों का नाम बताते हुए उन्होंने बताया कि यहां के सभी गांववासियों ने अपने गांवों में शराब के ठेकों का खुला विरोध प्रकट करके जागरूकता का प्रदर्शन किया है।

शराब पीनेवालों के बारे में उन्होंने बताया कि इसका ८० प्रतिशत सेवन गरीब वर्ग हो कर रहा है। नेताओं पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि वह लोग चन्दे की पीते हैं जबकि सरकारी अधिकारी रिश्वत की कमाई का प्रयोग शराब पर करते हैं। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों के राज से आजाद होकर समाज अब शराब का गुलाम हो चुका है।

उन्होंने बताया कि राज्य को शराब के अभिशाप से मुक्ति दिलाने हेतु आगामी ७ और ८ नवम्बर को रोहतक में राष्ट्रीय स्तर पर द्विदिवसीय वार्षिक अधिवेशन का आयोजन किया जाएगा, जिसमें सारे देश के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इससे पूर्व दो अक्तूबर को भिवानी को ड्राई जिला घोषित करवाने हेतु वहां के उपायुक्त को समस्त गांवों के प्रस्तावों की प्रतियां दी जायेंगी।

शराब हटाओ, देश बचाओ

३० सितम्बर तक ग्राम पंचायतों तथा नगरपालिकाओं से शराबबन्दी प्रस्ताव करावें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा हरयाणा प्रदेश के आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक तथा अन्य सगठनो के कार्यकर्त्ताओं से जो हरयाणा में शराब पर पूर्ण पाबन्दी लगवाने के कल्याणकारी कार्यकर्त्ता से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र की ग्राम पंचायतो तथा नगरपालिकाओं को प्रेरणा करके ३० सितम्बर तक शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा के कराधान एवं आबकारी विभाग के आयुक्त चण्डीगढ को रजिस्टड पत्र द्वारा भिजवाने का पूरा यत्न करें।

स्मरण रखें हरयाणा बचाना है तो इस प्रदेश से शराब हटानी पडेगी। शराब सभी बुराइयों की जड है। अतः इस सामाजिक बुराई को समाप्त कराने के लिए सभा को सहयोग देवें।

हरयाणा में आर्यसमाजों के उत्सव

आर्यसमाज बिगोपुर जिला महेन्द्रगढ	२६-२७ सितम्बर
„ नन्दगढ जि० जींद	२७ से २९ „
„ बाहू अकबरपुर जि० रोहतक	२८ सितम्बर से १ अक्तूबर
नशाबन्दी विराट् प्रदर्शन एवं नशाबन्दी सम्मेलन भिवानी	२ „
आर्यसमाज कौण्डल जि० फरीदाबाद	१-२ „
„ गुरुकुल आर्यनगर जि० हिसार	३-४ „
आर्य महासम्मेलन उचाना मण्डी जि० जींद	९ से ११ „
कन्या गुरुकुल पंचगांव जि० भिवानी	९ से ११ „
आर्यसमाज शेखपुरा जि० करनाल	९ से ११ „
„ खानपुरकलां जि० सोनीपत	४ से ११ „
„ नजफगढ नई दिल्ली	९ से ११ „
„ फिरोजपुर झिरका जि० गुडगांव	१६ से १९ „
„ माडल टाउन यमुनानगर	१९ से २५ „
„ मुदकायनकलां जि० जींद	३०-३१ अक्तूबर से १ नवम्बर
„ कालमण्डी आर्यनगर सोनीपत	३१ „ १ „
„ बड़ा बाजार पानीपत	६ से ८ „
अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् सम्मेलन दयानन्दमठ रोहतक	६ से ८ „

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि ६-७-८ नवम्बर को तिथियों में उत्सव आदि रखने का कष्ट न करें, जिससे आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता नशाबन्दी सम्मेलन रोहतक में सम्मिलित हो सकें।

—सुदर्शनदेव वेदप्रचाराधिष्ठाता

साधु—"साध्नोति पराणि धर्मकार्याणि स साधुः" जो धर्मयुक्त उत्तम काम करे, सदा परोपकार में प्रवृत्त हो, कोई दुर्गुण जिसमें न हो, विद्वान्, सत्योपदेश से सबका उपकार करे उसको "साधु" कहते हैं।

—महर्षि दयानन्द (स०प्र० [illegible])

"राज्य अपनी जनता के पोषक भोजन और जीवन स्तर को ऊंचा करने तथा लोक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्त्तव्यों में मानेगा तथा विशेषतया, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मादक पेयों और औषधियों के औषधीय प्रयोजनों के अतिरिक्त उपभोग का निषेध करने का प्रयास करेगा।"

—भारतीय संविधान, धारा [illegible]

"शराब से सदा भयभीत रहना क्योंकि वह पाप और अनाचार की जननी है।"

—भगवान् बुद्ध

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

		रुपये
१	श्री राजेन्द्रप्रसाद ग्राम राताकला	५०
२	आर्यसमाज भुरथला	५१
३	श्री सुरेन्द्र सिंगला फील्ड आफिसर, सिंगला प्रापर्टी डीलर प्रा० लि० हिसार	५०१
४	,, खैरातीलाल कालेज रोड चरखी दादरी जि० भिवानी	५१
५	,, बिहारीलाल रेलवे रोड ,, ,,	२१
६	,, नैमराज चुटानी मैन बाजार ,, ,,	५१
७	,, मुरारीलाल ,, ,, ,,	२१
८	,, रामविलास सर्राफ ,, ,, ,,	५१
९	,, फतेहचन्द ,, ,, ,,	२१
१०	,, चिमनलाल सर्राफ ,, ,,	२१
११	,, मनोहरलाल सर्राफ ,, ,,	३१
१२	,, सिंगला ट्रेडिंग कम्पनी ,, ,,	३१
१३	,, जयभगवान सीताराम ,, ,,	२१
१४	,, माडी महल ,, ,,	२१
१५	आर्यसमाज मन्दोला ग्राम मन्दोला ,,	१२३
१६	श्री रिसालसिंह सरपंच द्वारा ग्राम कलाली ,,	७४
१७	,, मगी का बास मोहल्ला रेवाडी हरिजन बस्ती	८०
१८	,, साधुशाह नगर मोहल्ला रेवाडी शहर	६०
१९	,, अमरसिंह सैनी माडल टाउन ,,	२३६
२०	,, निहालसिंह शास्त्रीनगर रेवाडी	७१
२१	,, सत्यनारायण सरपंच ग्राम चौकी नं० २ रेवाडी	३१३
२२	,, मामडिया रेवाडी	८१
२३	,, अशोककुमार भल्ला मोहल्ला तेजपुरा रेवाड़ी	५१
२४	,, कवरभान माडल टाउन रेवाडी शहर	५१
२५	,, प्रभुदयाल कृष्णपुरा ,,	५२
२६	,, राज बहन जी महरौली (दिल्ली)	५१
२७	,, भमनलाल मोहल्ला विकासनगर कालोनी रेवाडी	१०१
२८	,, सुखदेव आर्य ,, ,,	२१
२९	,, चिरजीलाल ,, ,,	२१
३०	,, सोल्लूराम ,, ,,	१०१
३१	आर्यसमाज ग्राम जलीयावास पो. मुडाना ,,	३०१
३२	श्री कुन्दनलाल सैनी ग्राम कुतुबपुर ,,	६१
३३	आर्यसमाज लुहाना ,,	२३२
३४	,, ततारपुर खालसा ,,	३००
३५	श्री बोदनराम ग्राम नागल ,,	५१
३६	,, सत्यनारायण द्वारा ग्राम कानुका ,,	८१
३७	,, सुधीरकुमार आर्य ग्राम मीरपुर ,,	१५३
३८	,, ग्राम सभा जाडरा ,,	१९८
३९	,, ,, खरखड़ा ,,	६५
४०	,, ,, नन्दरामपुर वास ,,	१०३
४१	,, ,, सिलारपुर ,,	६५
४२	आर्यसमाज पुनसिका ,,	५०५
४३	ग्राम सभा सुनारिया ,,	६५
४४	आर्यसमाज सुठाणा ,,	१५१
४५	,, भाडवा जिला भिवानी	१५०
४६	श्री सत्यदेव शास्त्री चरखी दादरी ,,	५०१
४७	,, धर्मपाल फोगाट ,, ,,	५१
४८	श्रीमती शान्ति ,, ,,	१०१
४९	श्री सीताराम ,, ,,	२०
५०	श्री डा० अर्जुनसिंह चरखी दादरी जि० भिवानी	२०
५१	,, जगदीशचन्द आर्य ,, ,,	२१
५२	,, सूबेदार शेरसिंह बघवाना ,, ,,	२०
५३	,, बलवीरसिंह आर्य ,, ,,	३०
५४	,, टेकचन्द ग्राम इमलोटा ,,	२१
५५	,, जीतसिंह दादरी ,,	२१
५६	,, बंसल कोसली ,,	२१
५७	,, बालकिशन कोसली ,,	२१
५८	,, शिवराम सेवानिवृत्त अध्यापक बास (सतनाली) महेन्द्रगढ	५१
५९	,, देवव्रत शास्त्री ग्राम बारड़ा ,,	५०
६०	,, मोहबतसिंह आर्य ग्राम आर्यनगर जि० भिवानी	५१
६१	,, वैद्य दुलीचन्द आर्य ,, ,,	५१
६२	,, ताराचन्द ग्राम सेहर ,,	५१
६३	,, हरभज पुनिया ग्राम नांगल सेहर ,,	५१
६४	,, म० मेघाराम की स्मृति मे ,, ,,	५१
६५	,, वेदव्रत आर्य हिंदी अध्यापक ,, ,,	५१
६६	,, शीशराम ,, ,,	५१
६७	,, मोहरसिंह आर्य ,, ,,	५१
६८	,, फूलचन्द आर्य ग्राम बहल ,,	५१
६९	,, अमीलाल आर्य ,, ,,	५१
७०	,, दीपकुमार आर्य जिला हिसार	५१
७१	,, ऋषि जी ग्राम मुकलान ,,	५०
७२	,, रामधन मुकलान ,,	५०
७३	,, चन्दुराम आय ग्राम गोरखपुर ,,	५०
७४	,, रामविलाम आर्य ग्राम छानो बड़ी जि. गंगानगर (राज.)	१००
७५	,, सत्यनारायण आर्य ग्राम आदमपुर मण्डी जि० हिसार	१०१
७६	,, तुलसीराम सरपंच आर्य ग्राम सहाड़वा ,,	१००
७७	,, भरतसिंह शास्त्री अधिष्ठाता कन्या गुरुकुल पचगांवा जि० भिवानी	५१
७८	,, जगदीशचन्द्र आर्य, आर्य बीज भण्डार बाढ़ड़ा जि. भिवानी	५१
७९	,, परमानन्द ग्राम भाडवा ,,	५०
८०	ग्राम ददेऊ बड़ी जिला चुरु त० राजगढ (राज०)	५०
८१	,, ,, ,, ,,	५०
८२	श्री मा० गुगनसिंह आर्य मु० पीपली जि० झुंझनू	५०
८३	,, उमेदसिंह सु० भगवतसिंह ग्राम रुदड़ौल पो० चन्देनी	३०२
८४	,, सज्जनकुमार ग्राम व पो खानपुरखुर्द	१५१
८५	,, रतीराम आर्य ,, ,,	१५१
८६	,, नायब सूबेदार अमीरसिंह ग्राम व पो० झामरी जि रोहतक	५१
८७	,, कप्तान जागेराम ग्राम व पो० झामरी जि० रोहतक	५१
८८	,, नायब सूबेदार रामचन्द्र ,, ,,	५२
८९	,, रघुवीरसिंह हव मेजर गाम व पो. झाडली ,,	५१
९०	,, अनिलकुमार सु० मानसिंह ,, ,,	८९
९१	,, कप्तान दलपतसिंह ग्राम व पो० ऊण जि० भिवानी	१०१
९२	,, प्रभुराम मु० अध्यापक गांव माईकलां ,,	१०१
९३	,, मा० उमरावसिंह ,, ,,	१०१

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभाकोषाध्यक्ष

हरयाणा में शराबबन्दी सम्मेलन का कार्यक्रम

१	बड़सी, पपोसा, रतेरा जि० भिवानी	२३ सितम्बर
२	चिड़िया, गोठडा, मकड़ाना ,,	२४ ,,
३	बवानीखेड़ा, बामला, खरककलां	२५ ,,
४	नशाबन्दी सम्मेलन तैयारी बैठक आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी	२५ सितम्बर प्रातः ११ बजे

सभा को ऋषि लंगर हेतु अन्नदाताओं की सूची

श्री म० जयपाल आर्य भजनोपदेशक व श्री धर्मवीर आर्य द्वारा

१ श्री मा० चन्द्रभान आर्य प्रधान आर्यसमाज जहाजगढ़ जि० रोहतक — १ क्विंटल
२ ,, प्रतापसिंह आर्य ग्राम बराणी जि० रोहतक — १ ,,
३ ,, ठा० महावीरसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज बराणी जि० रोहतक — १ ,,
४ ,, रूपराम व भंवरलाल सु० रावत ग्राम दूबलधन जि० रोहतक — १ ,,
५ ,, मेहरसिंह सु० बलवन्तसिंह प्रधान आर्यसमाज बाघपुर जि० रोहतक — १ ,,
६ ,, रखेराम, दयाचन्द, भीमसिंह, चन्द्रसिंह, राजसिंह ग्राम कलावड़ जि० रोहतक — २ क्वि. ५० किलो
७ ,, धर्मपाल आर्य सु० हरिराम आर्य ग्राम गोच्छी जि० रोहतक — ५० किलो
८ ,, अर्जुनदेव आर्य, अजीतसिंह, भूपसिंह आदि ग्राम दहकोरा जि० रोहतक — १ क्वि ५० किलो
९ ,, राजेन्द्रसिंह सरपंच ग्राम कन्साला जि० रोहतक — १ क्विंटल
१० ,, ग्राम आसन जि० रोहतक — १ ,,
११ ,, सूरजमल आर्य ग्राम पाकस्मा जि० रोहतक — २५ किलो
१२ ,, ओम्प्रकाश आर्य ग्राम रुड़की ,, — १ क्विंटल
१३ श्री देवव्रत आर्य सु० स्वामी महावीर ग्राम बोहर जि० रोहतक — १ क्विंटल
१४ ,, ग्राम बोहर जि० रोहतक — २ ,,
१५ ,, रामप्रकाश आर्य व मा० बलवीरसिंह आर्य ग्राम लाढौत जि० रोहतक — २ ,,
१६ ,, बलवन्तसिंह आर्य ग्राम मकडोलीकलां जि० रोहतक — १ ,,
१७ ,, हरिकिशन आर्य ग्राम कटवाड़ा ,, — २ क्वि २५ किलो
१८ ,, रामचन्द्र सरपच ग्राम रुड़की ,, — १ क्विंटल
१९ ,, ग्राम पाकस्मा ,, — १ ,,
२० ,, समरसिंह आर्य, राजेन्द्र व दरियावसिंह ग्राम घामड जि० रोहतक — १ ,,

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) हेतु अन्नदाताओं की सूची

श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री सभा उपदेशक द्वारा

१ श्री अनिलकुमार आर्य बी०के० चौक न० ४ फरीदाबाद — १ बोरी गेहूं हेतु रु० ३००
२ ,, मा० हेतराम आर्य ग्राम व पो० मानपुर जि० फरीदाबाद ,, — १००
३ ,, म० रूपचन्द ग्राम व पो नागलजाट जि. फरीदाबाद ,, — १००
४ ,, मा० हीरालाल, ओम्प्रकाश शास्त्री व रामचन्द्र ग्राम मीसा जि० फरीदाबाद — २५०

महर्षि दयानन्द के प्रति श्री अशोक सिंघल का मिथ्या प्रलाप

—धर्मानन्द सरस्वती, प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

मनुस्मृति हमारे संविधान का आधार तथा मनुष्य जीवन के कर्त्तव्याकर्त्तव्य को बतानेवाला सर्वश्रेष्ठ प्राचीन ग्रन्थ है, वहां नास्तिक की परिभाषा देते हुए मनुमहाराज जी कहते है—'नास्तिक वेदनिन्दक.' अर्थात् वेदविरुद्ध जो कार्य करे उसे नास्तिक कहते हैं। वेदों में अनेक स्थान पर ईश्वर की मूर्ति का निषेध है तथा निराकार की उपासना का विधान है। चार वेद, छः दर्शन, ग्यारह उपनिषद् में कहीं भी मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। इतना होने पर भी विश्व हिंदू परिषद् तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्त्ता मूर्तिपूजा को बढाने मे नये-नये मन्दिर खड़ा करने में गौरव अनुभव करते हैं और इसके द्वारा देश की अखण्डता एकता का स्वप्न दिखाकर लोगों को भटका रहे हैं। हमारे देश में मुसलमान, ईसाई बढने का कारण जहां विदेशी शासन रहा वहां मूर्ति-पूजा, छुआछूत भी इसके बढने में बहुत सहायक रही। जन्मगत जाति मानकर कुछ लोगों को तिरस्कृत किया गया, फलस्वरूप वे ईसाई मुसलमान बनते चले गये। इससे देश के दो टुकड़े तो हुए ही काश्मीर, आसाम, नागालेंड की समस्या मुंह फाड़े खडी है। इन सबका मूल मूर्तिपूजा है जिसे पुनः बढाया जारहा है।

महर्षि दयानन्द के आगमन से पहले कोई भी सनातनी पण्डित, मौलवी, पादरी के सामने खड़ा होकर बात नहीं कर सकता था। आज भी ये पौराणिक उनसे तर्क वितर्क नहीं कर सकते। सैकड़ों वर्ष तक आर्यसमाज के शुद्धि आंदोलन में ये मूर्तिपूजक बाधा डालते रहे। आज इसी शुद्धि का नाम लेकर करोड़ों रुपया इकट्ठा कर रहे है और जो मूर्तिपूजा इन दोषों का आधार है, उसे महत्त्व देने के लिए वेदों के पुनरुद्धारक, स्वराज्य के मन्त्रदाता, शुद्धि आंदोलन के सचालक महर्षि दयानन्द एवं उसके अनुयायी आर्यसमाज पर कभी प्रत्यक्ष, कभी परोक्ष रूप से आक्रमण कर कमजोर करना चाहते हैं। विश्व हिंदू परिषद् के महामन्त्री श्री अशोक सिंघल प्रमुख है जो बीच-बीच मे महर्षि दयानन्द पर आक्षेप कर अपनी तुच्छ बुद्धि का परिचय दे रहे हैं। क्या इन्हे यह पता नहीं कि महर्षि दयानन्द या आर्यसमाज न होता तो ये सारे मठ मन्दिर ही मस्जिद और चर्च होते। वे भी क्रास पहने कहीं घूमते, परन्तु ये मूर्तिपूजक अपने हितैषी को ही गाली देना जानते हैं। श्री अशोक सिंघल ने हिंदू विश्व के जनवरी १९९२ के अंक मे वेद विद्यापीठ की स्थापना' नामक शीर्षक के लेख मे कहा है कि "ऋषि दयानन्द ने सोचा इन मन्दिरों का उद्धार नहीं कर सकते इसलिए मूर्तिपूजा का विरोध किया।" यह कहकर वे महर्षि दयानन्द को मूर्तिपूजक सिद्ध करना चाह रहे हैं। जबकि वेदविरुद्ध इस मूर्तिपूजा के खण्डन के लिए महर्षि दयानन्द ने जीवनभर संघर्ष किया, असह्य कष्ट सहे बडे से बडे प्रलोभन को ठुकराया।

इस प्रकार वैदिकधर्म की रक्षा कर समाज को नवीन जीवन प्रदान किया। उस महान् व्यक्तित्व को लांछित करना आर्यसमाज कभी सहन नहीं करेगा। आज भी आर्यसमाज के हजारों व्यक्ति महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की रक्षा के लिए अपना बलिदान करने को तैयार हैं। श्री अशोक सिंघल एवं दूसरे सहयोगी अपने इस भ्रम को मिटादे कि वे कुछ भी करते रहे, कोई विरोध करनेवाला नहीं है। विश्व हिंदू परिषद् में कितनी कर्मठता है कितना दम है इसे हम अच्छी तरह जानते हैं। दूसरे के काम को अपना काम दिखाना (हम जो वनवासी क्षेत्र में शुद्धि करते हैं उसे अपना कार्य कहकर प्रचारित करते है) दूसरे के कन्धे पर चढकर बन्दूक चलाना ये खूब जानते हैं। इधर अपने प्रत्येक कार्य मे आर्यसमाज का सहयोग लेना और आक्षेप भी करते जाना ये इनकी दोमुही नीति है। अत. आर्यसमाजियों को सावधान हो जाना चाहिए। जिस वेद के प्रचार एवं मूर्तिपूजा के खण्डन हेतु महर्षि दयानन्द एवं उसके सैकड़ों अनुयायियों ने अपना बलिदान किया, मानव को सच्ची सुख-शांति का मार्ग दिखाया, इसे ये समाप्त करना चाहते हैं।

इसी प्रकार आपने फरवरी के एक वक्तव्य में श्री सिंघल जी ने महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की तुलना कुरान और बाइबिल से करके उस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को अग्राह्य एवं साम्प्रदायिक सिद्ध करना चाहा है जो सरासर अन्याय है। श्री अशोक सिंघल के श्रीराम मन्दिर निर्माण को लेकर ही आगे आये हैं। इतने से ही वे अपने आपको सर्वज्ञ मानने लगे। मन्दिर निर्माण को भी अपनी राजनीति में फंसा दिया। यदि वहां श्रीरामचन्द्र जी का स्मारक बनाने की घोषणा की जाती तो इतने झंझट न होते, क्योंकि मन्दिर तो कहीं भी बनाया जासकता है, परन्तु स्मारक तो मूलस्थान पर ही बनेगा। जैसे महात्मा गांधी का पोरबन्दर मे और नेहरू जी का आनन्द भवन इलाहाबाद मे बनाया गया है।

इसी प्रकार श्रीराम के जन्मस्थान पर उनका स्मारक बनाया जाना चाहिये। इसमें उनकी पत्थर की मूर्ति रखकर पूजा करना क्यों आवश्यक मान रहे हैं। हां इससे पाखण्ड बढेगा, चढावे पर राजनीति चलेगी, इसीलिए सारा झंझट खडा हुआ है। अतः आर्यसमाज को इन कपटमुनियों का व्यवहार तथा देशहित देखकर सहयोग और समर्थन करना चाहिए, भावुकता में आकर नहीं।

कितलाना में वेद एवं शराबबन्दी प्रचार

दिनांक २४-८-९२ को रात्रि में कितलाना गांव में प्रचार किया गया। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है तथा शराबबन्दी पर इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाली हानियों पर विस्तार से विचार रखे। पं० जयपाल-सिंह बेधड़क के समाज सुधार एवं शराबबन्दी पर बहुत ही रोचक भजन हुए। श्री ओमप्रकाश ढोलकवादक एवं श्री सत्यपाल चिमटावादक की भी कलाकारी विशेष थी। लोगों पर प्रचार का बहुत अच्छा प्रभाव रहा। शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए सरपंच से शराबबन्दी प्रस्ताव भी पास करवाया।

—हवलदार भगवानसिंह, कितलाना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक ४२ २८ सितम्बर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७० पैसे

पूर्ण शराबबन्दी करवाने के लिए ग्राम-ग्राम में शराबबन्दी सम्मेलनों का भव्य आयोजन

भिवानी में २ अक्तूबर को शराबबन्दी विराट् प्रदर्शन तथा सम्मेलन की तैयारी

(निज सवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने सर्वप्रथम हरयाणा के मध्यवर्ती जिला भिवानी में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाने का कार्यक्रम बनाया है। इसी उद्देश्य की सफलता के लिए सभा की ओर से १४ से २५ सितम्बर तक जिला भिवानी के सैकड़ों ग्रामों में शराब के विरुद्ध जन-जागृति उत्पन्न करने के लिए शराबबन्दी सम्मेलनों द्वारा धुआंधार दिन-रात प्रचार किया गया है। इनका विवरण पाठकों की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जारहा है। —सम्पादक

ग्राम दिनोद

दिनांक १४-९-९२ को प्रातः १० बजे पंचायत घर के प्रांगण में सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम पं० ईश्वरसिंह तूफान के भजन हुए। इसके बाद सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया तथा २ अक्तूबर को भिवानी प्रदर्शन में भाग लेने का आग्रह किया। चौ० दीवानसिंह पूर्व बी०ओ० अटेला ने शिक्षा के गिरते स्तर के बारे में विस्तार से जानकारी दी। सरकार की दोहरी शिक्षा-नीति को दुर्भाग्यपूर्ण बताया।

श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक ने लोगों को बताया कि हम शराब क्यों छुड़ाना चाहते हैं। न तो आपको अपनी फसल के दाम ठीक मिलते, दूसरी तरफ बिजली के रेट बढ़े, बस किराया बढ़ा, खाद के रेट बढ़े। जब तक आप शराब पीते रहोगे, तब तक आप अपने हकों के लिए न्याय की लड़ाई नही लड़ सकते। अतः शराब छोड़कर इन भ्रष्ट राज-नेताओं से ये बात पूछो कि किसान गरीब क्यों है? श्री हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री ने लोगों से अनेक गावों के उदाहरण देकर शराब छोडने की पुरजोर अपील की। साथ में गांव से शराब का ठेका बन्द करवाने का आग्रह किया। ज्ञातव्य है कि इस गाव में सरपंच समेत कोई भी पच शराब नहीं पीता। पंचायत ने ठेका बन्द करवाने बारे प्रस्ताव दिया। इस आंदोलन में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। श्री छोटूराम पूर्व पंच ने शराब न पीने का व्रत लिया।

ग्राम मिराण

दोपहर १ बजे धर्मशाला के चबूतरे पर सम्मेलन आरम्भ हुआ। पं० खेमसिंह आर्य क्रांतिकारी के शराबबन्दी पर भजन हुए। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, चौ० दिवानसिंह तथा श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल ने शिक्षा में असमानता, शराबबन्दी व किसानों की लूट पर विस्तार से विचार रखे। लोगों से २ अक्तूबर को भिवानी आने का आग्रह किया। साथ में गांव से शराब का ठेका बन्द करवाने पर जोर दिया।

ग्राम ईसरवाल

सायं ४ बजे गांव के चौक में सम्मेलन आरम्भ हुआ। म० खेमसिंह आर्य क्रांतिकारी के शिक्षाप्रद भजन हुए। सभा उपदेशक सर्वश्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, ग्रेवाल साहब, दीवानसिंह तथा हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री ने विस्तार से शराबबन्दी पर विचार रखे। लोगो से शराब छोड़ने की अपील की। साथ में भ्रष्ट व गन्दे राजनैतिक लोगों से सावधान रहने का आग्रह किया। सीमा पर तलवानी गांव का ठेका व ईसरवाल बस अड्डे पर चल रही शराब की दुकान को बन्द करवाने पर बल दिया और साफ शब्दों में कहा वरना बर्बाद हो जाओगे। काफी संख्या में इकट्ठे होकर लोगों ने कार्यक्रम को सुना।

ग्राम देवसर

दिनांक १५-९-९२ को प्रातः १० बजे बस अड्डे पर धर्मशाला में सम्मेलन आरम्भ हुआ। पं० ईश्वरसिंह तूफान के शिक्षाप्रद भजन हुए। सभा उपदेशक सर्वश्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक तथा हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शराबबन्दी कार्यक्रम की रूप-रेखा, शिक्षा मे असमानता, किसानों की फसल के भाव न मिलना तथा शराबबन्दी बारे देश-विदेश के आकड़े देकर लोगों से शराब न पीने का आग्रह किया। गांव मे शराब का ठेका बन्द करवाने का सुझाव दिया। सरपंच ने प्रस्ताव पास करके दिया और शराबबन्दी कार्यक्रम मे बढ़-चढ़कर भाग लेने का आश्वासन दिया। प्रचार से प्रभावित होकर ठा० मनोजसिंह व ठा० तुलसिंह ने शराब पीना छोड़ा। लोगों मे काफी उत्साह था। स्कूली बच्चों की संख्या भी काफी थी। ठा० मनोजसिंह ने विद्वानो का धन्यवाद किया

तथा २ अक्तूबर को ट्रैक्टर आदि लेकर पधारने का आश्वासन दिया। सरपंच श्री प्रभुसिंह यादव का भी विशेष सहयोग रहा।

ग्राम कासुम्भी

ग्राम कासुम्भी मे अचानक एक घण्टे का कार्यक्रम रखा। उपरोक्त नेताओं ने विचार रखे। गांव में दो महीने से शराबबन्दी लागू है। शराब बेचनेवाले पर १०० रु०, पीनेवाले पर ५० रु०, बतानेवाले को २५ रु० इनाम दिया जाता है। पंचायत व नवयुवक भिवानी एस०पी० से भी मिल चुके हैं। लोगों में काफी हौसला है। २ अक्तूबर को भिवानी प्रदर्शन में सैकड़ों की संख्या में पहुंचने का वचन दिया।

ग्राम लोहानी

दोपहर डेढ बजे धर्मशाला में सम्मेलन आरम्भ हुआ। काफी संख्या मे लोगों ने भाग लिया। पं० खेमसिंह क्रातिकारी के भजन व उपरोक्त सभी आर्य विद्वानों के भाषण हुए। लोगों से गांव से पाप का अड्डा बन्द करने का आग्रह किया। सरपच पं० राजेन्द्रसिंह ने पंचायत प्रस्ताव दिया व २ अक्तूबर को काफी संख्या में भिवानी पहुचने का आश्वासन दिया। इसी अवसर पर श्री बालिया पहलवान व कृष्णकुमार आर्य लेघा ने भी २ अक्तूबर को गांव से काफी संख्या मे पहुचने का आश्वासन दिया। रामप्रताप ने शराब न पीने का व्रत लिया।

ग्राम गोलागढ़

ग्राम गोलागढ में सायं ४ बजे सम्मेलन हुआ। पं० खेमसिंह क्रातिकारी के प्रेरणादायक भजन हुए। उपरोक्त सभी विद्वानों ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। स्कूलों में नाममात्र पढाई, भ्रष्ट राजनेताओं के काले कारनामे तथा तीनों लाल मुख्यमन्त्रियों की धन की लूट पर विस्तार से प्रकाश डाला। वर्तमान सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की। गांव से शराब की उप दुकान बन्द करवाने का आग्रह किया। लोगों ने बड़ी श्रद्धा से आर्यनेताओं के विचार सुने।

उपरोक्त सभी गावों में बच्चों से शराबबन्दी नारे लगवाये गये। शराब पीना पाप है, शराब पीना छोड़ दो, बाप शराब पीता है बच्चे भूखे मरते हैं, शराब हटाओ देश बचाओ, शराब हटेगी देश बचेगा। साथ में सभी जगह शराबबन्दी के पोस्टर भी बांटे गये। नजारा देखते ही बनता था। जीप में माइक बन्धा हुआ था। गलियों में चक्र लगाते ही सैकड़ों नरनारी शराबबन्दी सम्मेलन में आर्यनेताओं के विचार सुनने आजाते।

ग्राम जूईखुर्द

रात्रि के ८ बजे शराबबन्दी प्रचार आरम्भ हुआ। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने आर्यसमाज का इतिहास तथा अनेक गावों के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। लोगों से शराब न पीने की पुरजोर अपील की। साथ में २ अक्तूबर को भिवानी में प्रदर्शन में भाग लेने का आग्रह किया। महाशय खेमसिंह क्रातिकारी व श्री अमीचन्द के शराबबन्दी बारे शिक्षाप्रद भजन हुए। १० बजे जब श्रीकृष्ण जी का इतिहास आरम्भ किया, तब अचानक ईश्वर कृपा से वर्षा आगई। कार्यक्रम बीच में ही बन्द करना पड़ा। लोगों में काफी उत्साह था। श्री महेन्द्रसिंह एडवोकेट ने भोजन व्यवस्था की तथा श्री बाबूलाल आर्य व श्री भूपेन्द्रसिंह आर्य का विशेष योगदान रहा। २ अक्तूबर को भिवानी शराबबन्दी प्रदर्शन में बढ़-चढकर भाग लेने का आश्वासन दिया।

—रणबीरसिंह आर्य, पैतावासकलां

ग्राम खानक

हिसार तोशाम रोड पर पहाड़ों के बीच स्थित है। अनेक क्रेशर लगने के कारण पर्यावरण भी दूषित है। एक छोटा सिनेमा घर तथा एक शराब का ठेका है। स्थानीय मजदूरों के अलावा राजस्थान व हरयाणा के अनेक मजदूर मजदूरी करते हैं। सायंकाल अज्ञानता के कारण सारा पैसा शराब व जुये में खराब करते हैं। विशेषकर महिलायें बेहद दु:खी एवं परेशान हैं। दिनांक १५-९-९२ को पं. ईश्वरसिंह तूफान के समाज-सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। २५१ रु. प्रचार में दान आया। प्रातः १६-९-९२ को मिडल स्कूल के प्रागण में महाशय देशराज आर्य सहाड़वा निवासी की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। सर्वप्रथम पं० ईश्वरसिंह तूफान के शराबबन्दी पर भजन हुए। उसके बाद सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने सम्मेलन का उद्देश्य तथा इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया।

श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक ने शिक्षा के गिरते स्तर, बच्चों के चरित्र निर्माण तथा किसानों की लूट पर विस्तार से विचार रखे। श्री हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री ने शराब से हो रही बर्बादी का चित्र खींचा, बच्चों से शराबबन्दी नारे लगवाये और सुझाव दिया कि स्कूल में आते वक्त व जाते वक्त अवश्य नारे लगाया करो। मुख्याध्यापक मा० शेरसिंह जी ने भी अपने विचार रखे और आनेवाले महानुभावों का धन्यवाद किया। १०० रु० शिक्षक स्टाफ की ओर से सहयोग भी दिया। म० देशराज आर्य ने भी ५०० रु० इस शुभ कार्यक्रम हेतु सहयोग दिया। पंचायत ने शराब का ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव भी दिया।

ग्राम गारनपुरा कलां

दोपहर एक बजे हाई स्कूल के प्रांगण में सम्मेलन आरम्भ हुआ। काफी संख्या मे लोगों ने भाग लिया। मातायें बहने भी आईं। शिक्षक स्टाफ ने १०० रु० की सहायता भी दी। उपरोक्त सभी वक्ताओं ने विचार रखे। लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा। २ अक्तूबर को भिवानी में आने का आश्वासन दिया। बच्चो ने शराबबन्दी के नारे भी लगाये। बाप शराब पीता है बच्चे भूखे मरते हैं, शराब हटाओ देश बचाओ।

ग्राम कैरु

४ बजे बस अड्डे पर शराब के ठेके के सामने शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। म० खेमसिंह को भजनमण्डली के प्रेरणादायक क्रांतिकारी भजन हुए। उपरोक्त सभी विद्वान् वक्ताओं ने विस्तार से शराब से होनेवाली बर्बादी का नक्शा खींचा। ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव भी पंचायत ने दिया। इस अवसर पर श्री विनोदकुमार, वीरसिंह, भूपसिंह तीन शराबियों ने भविष्य में शराब न पीने की प्रतिज्ञा की।

ग्राम टिटानी

सायं ६ बजे गांव के चौक में सम्मेलन हुआ। काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। उपरोक्त सभी वक्ताओं ने शराबबन्दी, धूम्रपान, ताश खेलना, शिक्षा में असमानता, किसानों को फसल के भाव न मिलना, भ्रष्ट राजनेताओं की लूट खसोट आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रचार से प्रभावित होकर श्री ज्ञानीराम व श्री सुभाष ने भविष्य में शराब न पीने का व्रत लिया। २ अक्तूबर को भिवानी शराबबन्दी प्रदर्शन में बढ-चढकर भाग लेने का आश्वासन दिया। बच्चों ने शराब-बन्दी नारों से आकाश को गुंजा दिया।

ग्राम चांग

दिनांक १७-९-९२ को प्रात: १० बजे रविदास चौपाल में सम्मेलन आरम्भ हुआ। पं० ईश्वरसिंह तूफान की भजनमण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुए। तत्पश्चात् सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शराबबन्दी कार्यक्रम का ब्योरा दिया। श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक ने अपने मार्मिक शब्दों में बताया कि हम शराब को छुड़ाना चाहते हैं। किसान गरीब क्यों है? आज के शासक क्या कर रहे हैं? इनके बारे मे कहने के लिए हम आये हैं, ताकि किसान मजदूर शराब छोडकर इन बेइमान राजनेताओ से उपरोक्त बातों का कारण पूछ सकें। अपने हकों के लिए संघर्ष कर सकें। अगर अब भी नही सम्भले तो बर्बाद हो जाओगे।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

भिवानी शराबबन्दी सम्मेलन को सफल करने के लिए भारी उत्साह

भिवानी, २५ सितम्बर, ९२। आज यहा स्थानीय समाज मन्दिर घण्टाघर में आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं की एक हगामी बैठक आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी वयोवृद्ध नेता श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई।

हरयाणा के पूर्वमन्त्री श्री हीरानन्द जी आर्य ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम गत एक मास से जिला भिवानी के लगभग प्रत्येक ग्राम में शराबबन्दी प्रचारार्थ गये है। सभी लोग शराब से दुःखी है जो पीने के आदी हो चुके हैं, वे भी जब होश में आते है तो कहते हैं कि इस रोग से छुटकारा पाना चाहते है, परन्तु पापिन शराब ने हमें जकड रखा है। हम नही चाहते कि हमारे बच्चे इसके जाल मे फसे। किसी ने भी हमारे कार्यक्रम की निदा नही की। यही कारण है कि शराब पीनेवाले सरपंच भी शराबबन्दी प्रस्ताव करके भिजवा रहे हैं।

आपने २ अक्तूबर को भिवानी मे होनेवाले शराबबन्दी सम्मेलन की चर्चा करते हुए कहा कि जिला भिवानी में आर्यसमाज के प्रचार का प्रभाव है। हम जहा भी आर्यसमाज के प्रचारकों के साथ गये है, वही सभी ने हमें विश्वास दिलाया है कि ट्रैक्टरों, साइकिलों तथा पैदल चलकर भारी संख्या में भिवानी पहुंचकर हरयाणा सरकार को चेतावनी देगे कि हरयाणा को नष्ट करनेवाली शराब को हटाओ अन्यथा आनेवाली पीढ़िया तुम्हे क्षमा नही करेगी। आपने जिला भिवानी के समस्त निवासियों से अपील की है कि वे सर्वप्रथम अपने जिले से शराब बन्द करवाकर हरयाणा के अन्य जिलों को मार्ग दिखावे।

चौ० बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक ने कहा कि यदि आप हरयाणा को पंजाब बनाने से बचाना चाहते हो तो हरयाणा से शराब रूपी सांप का मुंह पैरों नीचे कुचलना पड़ेगा। आर्यसमाज में वह शक्ति है कि उसने जो भी आदोलन चलाया उसे सफल करके ही दम लिया है। जिला भिवानी के प्रत्येक ग्राम मे आर्यविचारों के लोग इस शराबबन्दी आंदोलन की पूरे उत्साह से तैयारी कर रहे हैं।

सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह जी ने कार्यकर्त्ताओ से अनुरोध किया कि अब कर गुजरने का समय आगया है। हमारी कथनी और करनी मे अन्तर नही रहना चाहिए। रोहतक मे १३ सितम्बर की बैठक मे जिस-जिस भाई ने इस सम्मेलन को सफल करने की स्वय जिम्मेवारी सम्भाली थी, उसी के अनुसार अपने-अपने क्षेत्रों से शराबबन्दी का प्रचार करते हुए २ अक्तूबर को प्रात. १० बजे से पूर्व भिवानी पहुंचे। सभा की ओर से सभी महानुभावो को पत्र लिखकर स्मरण करवा दिया गया है। बैनर तथा शराबबन्दी पोस्टर तैयार करवाकर आर्यसमाज मन्दिर घण्टाघर भिवानी के मन्त्री श्री विमलेश आर्य को सौप दिये हैं, भिवानी पहुंचकर उनसे प्राप्त कर लेवे। दूर से आनेवालों के पास सभा की ओर से उनके पास पूर्व ही भेज दिये गये हैं। अत. हरयाणा के सभी आर्यसमाजो तथा आर्य संस्थाओ के अधिकारियो को इसकी तैयारी में आज से ही जुट जाना चाहिए। चौ० विजयकुमार जी सयोजक शराबबन्दी अभियान ने अपनी निजी गाड़ी से सारे हरयाणा का भ्रमण करके कार्यकर्त्ताओ से सम्पर्क करके उनमे जागृति उत्पन्न की है। अत हमें इस ऐतिहासिक शराबबन्दी प्रदर्शन तथा सम्मेलन को सफल करके सरकार को शराबबन्दी लागू करने के लिए विवश करना है।

चौ० विजयकुमार जी ने कार्यकर्त्ताओं को स्मरण करवाया कि अभी तक जिन कार्यकर्त्ताओं ने शराबबन्दी के प्रस्ताव पचायतो से करवाकर नही भेजे हैं, वे ३० सितम्बर तक प्रस्ताव करवाकर तुरन्त सभा कार्यालय मे भेज देव जिससे हरयाणा सरकार के [illegible] के अनुसार अक्तूबर मास तक चण्डीगढ भेजने पर उन ग्रामो मे ठेकों की नीलामी रुकवाई जासके। सभी पचायतों से प्रस्ताव होने पर हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी का माग साफ हो जायेगा। जिला भिवानी के उपायुक्त के सम्मुख लाखों की संख्या मे नरनारी उपस्थित होकर एक स्वर से नारा लगाना होगा कि जिला भिवानी मे किसी भी ग्राम में शराब नही बिकने देगे। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने हरयाणा सरकार को सावधान करना है कि शराब से होनेवाली कमाई मे हरयाणा को बदनाम न करो। हरयाणा के पवित्र माथे से शराब के कलक को मिटाकर ही दम लो। अब हम रहेगे या शराब। शराब रहेगी तो हरयाणा नही बच सकता। अत. पूरी शक्ति के साथ शराबबन्दी आदोलन को सफल करने में जुट जाव।

सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने इस अवसर पर भिवानी के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप पर विशेष जिम्मेदारी डाली जारही है कि आप बाहर से आनेवाले नरनारियो का स्वागत करे। यदि भिवानी मे शराबबन्दी प्रदर्शन सफल रहा तो इसका श्रेय भी भिवानी को मिलेगा और इसका समाचार सारे भारत में हर्ष के साथ सुना जावेगा। आपने शराबबन्दी अभियान की सफलता के लिए तीन सूत्री कार्यक्रम का विवरण बताते हुए कहा कि हमने प्रथम चरण में कानूनी लडाई का श्रीगणेश उच्चतम न्यायालय नई दिल्ली मे एक याचिका दायर की है जिसमे भारतीय संविधान की धारा ४७ के आधार पर भारत सरकार द्वारा विधान का उल्लंघन करने का उल्लेख किया गया है। विधान के अनुसार सरकार जनता के लिए हानिकारक मादक पदार्थों के उत्पादन पर रोक लगाने का निर्देश है। उच्चतम न्यायालय ने हमारी इस याचिका को स्वीकार करते हुए भारत सरकार तथा राज्य सरकारों का इसका उत्तर देने का नोटिस जारी कर दिया है। हमें पूरा विश्वास है कि न्याय हमारे पक्ष में जावेगा।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को शराबबन्दी आदोलन में कूदने के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया। आपने कहा कि इस कार्य को केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। अन्य सामाजिक तथा धार्मिक सघठन पूर्व की भाति सहयोग देंगे तो उनका स्वागत किया जायेगा। आर्यसमाज ने हैदराबाद के नवाब के घूटने टिकवा दिये थे और हिंदी रक्षा आदोलन में प्रतापसिंह कैरों जैसे जालिम मुख्यमन्त्री को झुकने पर विवश कर दिया था। हिंदी रक्षा आदोलन से प्रभावित होकर ही हरयाणा प्रदेश पुन भारत के मानचित्र मे चमका था। आपने सिंहगर्जना करते हुए कहा कि मैं अब वृद्धावस्था मे एक शराबबन्दी आदोलन और लड रहा हूं। अब या तो हम रहेगे या शराब का प्रचार तथा विस्तार करनेवाली सरकार रहेगी। आपने हरयाणा के प्रत्येक ग्राम से इस आदोलन को चलाने के लिए कम से कम ११००) तथा कम से कम ११ सत्याग्रही स्वयसेवकों के नाम सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में भेजने की अपील करते हुए सर्वप्रथम ११००) का दान दिया। इनकी अपील पर तुरन्त निम्न प्रकार दान नकद प्राप्त हुआ—

श्री दलवीरसिंह आर्य जुलाना जि. जींद		५००
,, महीपाल आर्य ग्राम जेवली जि भिवानी		१००
,, रामचन्द्र आर्य पूर्व बी.डी.ओ रेवाडी		१००
,, सुखदेवसिंह आर्य मानेसर जि भिवानी		१००
,, मा चन्द्रभानु आर्य जहाजगढ जि. रोहतक		१००
,, ठा. महावीरसिंह सरपंच बराणी	,,	१००
,, बलदेवसिंह आर्य बोंदकला जि भिवानी		१००
,, भरतसिंह शास्त्री कन्या गुरुकुल पंचगाव जि. भिवानी		१००
,, राजेन्द्रसिंह सरपच मागा	,,	१००
,, बलवीरसिंह सरपच दातौली	,,	१००
,, मा. चन्द्रभानु आर्य ऊण	,,	१००
आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी	,, वचन	११००
,, रोहणा जि. सोनीपत	,, वचन	११००

—केदारसिंह आर्य

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

पतांक से आगे—

क्रम	दानदाता	रुपये
१	श्री मानसिंह सूबेदार ग्राम मांईकलां डा० ऊण जिला भिवानी	५१
२	,, कैप्टन अर्जुनसिंह ,, ,, ,,	५१
३	,, लक्ष्मण वैद्य ,, ,, ,,	५१
४	,, अमीरसिंह सहारण (फौजी) ग्राम व पो० बाढड़ा ,,	२०२
५	,, ओमप्रकाश सरपंच ग्राम पचगाम पो० गोपी ,,	१०१
६	,, पं० यज्ञपाल शास्त्री सूबेदार ,, ,, ,,	१०१
७	,, कप्तान दलपतसिंह सरपंच ग्राम माई पो० ऊण ,,	१०७
८	,, मोजीराम ग्राम पचगाम पो० गोपी ,,	५१
९	,, सरपच ग्राम पचायत पचगाम ,, ,,	१०५
१०	,, मा० हरिसिंह आर्य ग्राम व पो० गोपी ,,	५१
११	,, हुकमचन्द सरपच ,, ,, ,,	५१
१२	,, धर्मचन्द ,, ,, ,,	५१
१३	,, रामानन्द ,, ,, ,,	१०८
१४	,, मा० सूबेसिंह सन्त ग्राम व पो० चादवास ,,	५१
१५	,, मा० हरिसिंह आर्य ,, ,, ,,	५१
१६	,, सूरजभान ,, ,, ,,	१११
१७	,, सुमेरसिंह शर्मा ,, ,, ,,	१०५
१८	,, महात्मा रतनदेव वानप्रस्थ ग्राम व पो० जुई ,,	५१
१९	,, बाबूलाल आर्य ग्राम व पो० जुईकला ,,	५१
२०	,, रामचन्द्र फौजी ,, ,, बिचली ,,	८०
२१	,, लीलूराम आर्य व राजवीरसिंह ,, ,, ,,	६०
२२	,, छाजूराम मलिक ग्राम व पो० जुईकलां ,,	१३०
२३	,, प्रेम भगत ,, गागडवास ,,	५१
२४	,, राजसिंह ,, ,, ,,	५१
२५	,, सरपच दुलीचन्द ,, ऊण ,,	१०१
२६	,, दयानन्द लाम्बा ,, ,, ,,	१५१
२७	,, प्रभुदयाल शास्त्री ,, ,, ,,	१११
२८	,, राजसिह चरखी दादरी ,,	२१
२९	,, सतोषकुमार ,, ,,	२१
३०	,, शीशपाल ,, ,,	२१
३१	,, धर्मपाल सहायक ,, ,,	२१
३२	,, रामफल लिपिक ,, ,,	२१
३३	,, प्रेमसिह लिपिक ,, ,,	२१
३४	,, रणसिह शर्मा काठमण्डी ,, ,,	११००
३५	,, रमेश जोशी ,, ,,	११००
३६	,, डा० विजयकुमार ग्राम व पो० मातनहेल जि० रोहतक	११००
३७	,, महावीर वानप्रस्थी ग्राम व पो० बोहर ,,	१००
३८	,, म० मोजीराम वानप्रस्थी ,,	१११
३९	,, स्वामी व्रतानन्द सरस्वती ग्राम व पो० गूगोढ़ ,,	१०१
४०	, चो० सुमेरसिंह ग्राम व पो० सरूपगढ़ जि० भिवानी	५१००
४१	,, डा० विजयकुमार आर्य	११००
४२	,, हसराज आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट च० दादरी जि. भिवानी	११००
४३	,, चौ० अजीतसिंह पाहेल ,, ,,	२०१
४४	,, चौ० कपूरसिह मलिक प्रवक्ता ,, ,,	२०२
४५	श्रीमती सुमित्रा अहलावत ,, ,,	१०१
४६	श्री विश्वकर्मा धर्मशाला ,, ,,	१०१
४७	,, रामनिवास बसल प्राध्यापक ,, ,,	२०
४८	महिला आर्यसमाज ,, ,,	११००
४९	श्री रामनिवास कालेज रोड ,, ,,	२१
५०	,, राजेन्द्रकुमार ,, ,, ,,	३१
५१	श्री उमेदसिंह च० दादरी जि. भिवानी	२१
५२	आर्यसमाज रसूलपुर जि० महेन्द्रगढ़	१६०
५३	आर्य हायर सैकण्ड्री स्कूल दीनानगर जि० गुरुदासपुर, पंजाब	५०१
५४	आर्यसमाज ,, ,,	५००
५५	श्री ओमप्रकाश शर्मा ,, ,,	५०
५६	,, जितेन्द्रदेव नन्दा ,, ,,	१००
५७	,, बलदेवराज कालड़ा पठानकोट ,,	२००
५८	,, रमेशचन्द्र मित्तल कुलदीप निवास मेन बाजार पठानकोट (पंजाब)	११००
५९	,, गिरधारीलाल गुप्ता पठानकोट (पंजाब)	२००
६०	,, प्यारेलाल एण्ड सन्स ,, ,,	२००
६१	आर्यसमाज पठानकोट के सत्संग में	५०१
६२	,, ,, जि० गुरुदासपुर (पंजाब)	३००
६३	श्रीमती चादरानी कालरा पठानकोट गुरुदासपुर (पंजाब)	१००
६४	,, पुष्पावती मुंजाल २४ एल. माडल टाउल लुधियाना	१०००
६५	श्री मा० रामचन्द्र आर्य केहरवाला पो० चहूवाली जि० श्रीगंगानगर (राज०)	२००
६६	,, चौ० अभयपाल ऐचरा कुलचन्द श्रीगगानगर (राज.)	११००
६७	,, मा महताबसिह हैडमास्टर चिडावा जि. झुझनू (राज.)	२०१
६८	,, जयनारायण आर्य चिडावा जि, झुझनू (राज.)	२०१
६९	,, स्टाफ रा. अड्डकिया मा. वि ,, ,, ,,	३०१
७०	,, शोभानन्द बुडानिया ,, ,, ,,	२१
७१	,, शीशराम शिव मिष्टान्न भण्डार ,, ,, ,,	१०१
७२	,, रामनाथ शर्मा वरुण फोटो स्टेट वार्ड नं. २ चिड़ावा जि. झुझनू (राज.)	२५१
७३	,, डा. एस आर चाहर झुंझनू रोड चिड़ावा जि झुंझनू (राज.)	२०१
७४	,, डा. सोमेश चिड़ावा जि. झुझनू (राज.)	५१
७५	,, राव रिछपालसिह चिडावा द्वारा विकास मशीनरी स्टोर जि. झुझनू (राज)	५०१
७६	,, चौधरी मिष्टान्न भण्डार चिड़ावा जि. झुंझनू (राज.)	२१
७७	,, जयनारायण सचालक रवीन्द्र एकेडमी चिड़ावा जि झुंझनू (राज.)	१०१
७८	,, गोपाल अध्यापक चिड़ावा जि. झुंझनू (राज.)	२१
७९	,, श्रीराम राजस्थान पब्लिक स्कूल ,, ,, ,,	१०१
८०	,, धर्मव्रत शास्त्री ,, ,, ,,	२०१
८१	,, विजयकुमार ,, ,, ,,	१५१
८२	,, बच्चनसिह हैडमास्टर ,, ,, ,,	५१
८३	,, खजानसिह मास्टर ,, ,, ,,	२५
८४	,, शेरसिह गढ़वाल ,, ,, ,,	१०१
८५	,, चौ. तुलसीराम थानेदार ,, ,, ,,	१०१
८६	,, महेन्द्रसिह ,, ,, ,,	५१
८७	,, डा. दलीपसिह ,, ,, ,,	५१
८८	,, शेरसिह कुल्हार एडवोकेट ,, ,, ,,	५१
८९	,, शंकरलाल गाडिया ,, ,, ,,	१०१
९०	,, राज. बालिका पोद्दार मा. वि. ,, ,, ,,	३१
९१	,, ओमप्रकाश ,, ,, ,,	२१
९२	,, रामविलास कटेवा ,, ,, ,,	२१
९३	,, रंगलाल लमोरिया ,, ,, ,,	२१
९४	,, डूंगर मौसरी देव रोड निवासी ,, ,, ,,	१०१

(क्रमश:)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभाकोषाध्यक्ष

फुटकर विचार

१. सभा का समयिक आंदोलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने काफी समय से हरयाणा में शराबबन्दी आंदोलन चलाया हुआ है। जो कि न केवल प्रदेश के हित में है बल्कि प्रत्येक परिवार की रक्षा के लिए भी आवश्यक है। 'शराब' का सन्धिछेद करें जो शर+आब बनता है। जिसका अर्थ शरारत का पानी है—जो शराब अपने नाम द्वारा पुकार-पुकार कर मानवता को कह रही है कि मैं झगड़े की जड़ हूं। उसे भी यदि मनुष्य बड़े चाव एवं गर्व से पीता है तो इसे दुर्भाग्य ही कहा जायेगा। इस शराब ने न जाने कितने तख्तोताज धराशाही कर दिये, कितने कुलों का नाश कर दिया। यह केवल इतिहास को पढ़ने से ही पता चलता है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता का संग्राम जीतनेवाली कांग्रेस ने शासन पर बैठते ही बापू के स्वप्न को चूर-चूर करके देश में शराब की नदियां बहादी—परिणाम सामने है। आज भारत का युवक मद्य, मांस तथा सिनेमा का रसिया बन गया है और देश में जो घोटाले हो रहे है ये सब बुनियादी तौर पर शराब संस्कृति का परिणाम है। अतः आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा साधुवाद की पात्र है और हरयाणा के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह तन, मन, धन से सभा के इस पुनीत कार्य में सहायक होकर अपने परिवार को नष्ट होने से बचाले, वरना स्थिति इतनी भयानक होती जारही है कि परिणाम के बारे में सोचने मात्र से शरीर में कपकपी उत्पन्न हो जाती है।

२. नया जाल लाये पुराने शिकारी

पिछले दिनों समाचारपत्रों में यह समाचार पढ़ने को मिला कि वेश संन्यासियों ने अखिल भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का सगठन किया है तथा २ अक्तूबर से हरयाणा में शराब के विरुद्ध आदोलन छेड़ने का निर्णय लिया है। ऐसा लगता है कि वेदप्रचार के नाम पर इकट्ठा किया गया धन समाप्त होगया है या उन कम्यूनिष्टो से मन भर गया जिन के साथ मिलकर सत्ता मे भागीदार बनने के ख्वाब देखते रहे या समाज सुधार के नाम शबाना आजमी के साथ अभिनय करने का पर्दाफाश हो गया है। आर्यजनता को याद होगा कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने लच्छेदार भाषणों के द्वारा हमें भरमाया। आर्यसमाज की आचार-संहिता को तोडा। आर्यसमाज मे अपने राजनीतिक स्वार्थ पूरे करने हेतु ऐसे लोगों को सदस्य बनाया जो कि आर्यसमाज के सिद्धांत तो क्या उसका क, ख, ग भी नही जानते थे। अब वही लोग हरयाणा के आर्य-समाजों मे अशाति फैलायेंगे। भला कोई उनसे पूछे कि जब आर्यों की शिरोमणि सभा इस आदोलन को चला रही है तो उसका साथ देने के स्थान पर नया संघर्ष छेड़ने की क्या आवश्यकता है। कोई राज है जिसकी पर्दादारी है। इसीलिये मैं कहता हूं कि नया जाल लाये पुराने शिकारी।

३. वेदप्रचार मण्डल

तकरीबन दो वर्ष पूर्व हर जिले में वेदप्रचार हेतु जिला वेदप्रचार मण्डल का गठन किया गया था। परन्तु बड़े खेद का विषय है कि इस मण्डल ने कोई कार्यक्रम नहीं बनाया। परिणामस्वरूप सारी योजना टांय-टांय फिश होगई। वैसे भी विश्व हिंदू परिषद् के तूफानी प्रचार से आर्यसमाज की आवाज दब-सी गई लगती है और इसमें उन आर्यों का भी योगदान पर्याप्त है जिन्हें हिंदुत्व की चिंता अधिक सता रही है। अतः मेरा सभा से अनुरोध है कि सभा इस ओर गम्भीरता से विचार करके इन मण्डलों को सक्रिय करे और एक बार फिर गांव, नगर एवं कस्बों में वैदिकधर्म का नाद गूंज उठे।

—आनन्दस्वरूप भाटिया
मन्त्री आर्यसमाज जवाहर नगर, पलवल

नशा—नाश का दूजा नाम
तन-मन-धन तीनों बेकाम

बढ़ती शराबखोरी चिंताजनक

पलवल (नस)। दूरदर्शी पार्टी के अध्यक्ष तथा धार्मिक नेता बाबा जय गुरुदेव ने देश में बढ रही शराबखोरी पर चिंता जताई है। उनके अनुसार देश की बिगड़ रही अर्थव्यवस्था मे शराब ने मुख्य भूमिका निभाई है। बाबा गाव फतेहपुर बिल्लोच में एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि यदि नेता शराब पीना छोड़दे तो गरीब जनता अपने आप शराब पीना छोड देगी। उन्होंने कहा कि बढ़ती नशाखोरी से देश डूब रहा है।

उन्होंने कहा कि अब काश्तकारो, मजदूरों, खेतिहरो तथा गरीब जनता को एक मच पर आजाना चाहिए और राजनैतिक नेताओ के भाषणों से दूर रहना चाहिए।

जनसभा मे अनेक टाटधारी लोग मौजूद थे। सभा को फतेहपुर बिल्लोच के सरपच मामचन्द गोयल, जवा के सरपच किशनसिंह तथा बसीलाल गोयल आदि ने सम्बोधित किया।

साभार : नवभारत टाइम्स

रामसुफल लखि बाल कृष्ण छबि

तर्ज—चलत मुसाफिर मोह लियो रे, पिछरे ....।

लीला है अजब निराली रे, यशुदा के अनाड़ी।
हाय-हाय रे यशुदा के अनाड़ी ॥

भोर भयो गउवन के पीछे ऽऽ--..२।
वशी की तान निराली रे, यशुदा के अनाड़ी।
हाय-हाय रे यशुदा के अनाड़ी ॥१

ग्वाल बाल गोपाल संग ले ऽऽ---...२।
खेलन लगे है खिलाडी रे, यशुदा के अनाड़ी।
हाय-हाय रे यशुदा के अनाड़ी ॥२

खेलत गेंद गिरी यमुना मे ऽऽ..... २।
नाथो नाग करारी रे, यशुदा के अनाड़ी।
हाय-हाय रे यशुदा के अनाड़ी ॥३

सावलि सूरत मोहनि मूरत ऽऽ... ...२।
सुन्दर रूप निहारी रे, यशुदा के अनाड़ी।
हाय-हाय रे यशुदा के अनाड़ी ॥४

'रामसुफल' लखि बाल कृष्ण छबि ऽऽ...--२।
तुम जीते हम हारी रे, यशुदा के अनाड़ी।
हाय-हाय रे यशुदा के अनाड़ी ॥५

रचयिता—रामसुफल शास्त्री विद्यावाचस्पति
आर्यसमाज सगरूर (पंजाब)

यदि आप चाहते हैं कि

१) हरयाणा की पवित्र भूमि से शराब-रूपी सामाजिक बुराई समाप्त हो।

२) शराबी ड्राइवरों द्वारा दुर्घटनायें तथा प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार बन्द हो।

३) शराबियों से बहन-बेटियों की इज्जत की सुरक्षा हो।

४) किसान मजदूरों की खून-पसीने की कमाई शराब पीने में बर्बाद न हो।

तो

सर्वहितकारी पूर्ण शराबबन्दी की माग करने के लिए २ अक्तूबर को प्रातः १० बजे किरोडीमल पार्क भिवानी मे अपने अन्य कार्य छोडकर अपने साथियों सहित पहुंच कर अपनी शक्ति तथा सगठन का परिचय देवें।

"भारत छोड़ो" को "अंग्रेजी अनिवार्यता छोड़ो आंदोलन" के रूप में मनाया जाए

—महावीरसिंह फोगाट

"भारत छोडो आंदोलन" की ५०वीं वर्षगाठ को "अंग्रेजी छोड़ो" अभियान के रूप मे मनाना चाहिए। अंग्रेज तो भारत को छोडकर चले गये या भगा दिये गये, लेकिन उनके जाने के ४५ वर्ष बाद भी आज हम अंग्रेजी से चिपके हुए हैं। यह किसी भी स्वाधीन देश के लिए अत्यन्त शर्मनाक बात है कि उसका अधिकतर कार्य एक विदेशी भाषा में निबटे। साम्राज्यवाद व शोषण की प्रतीक व जननी यह अंग्रेजी आज भी ९८ प्रतिशत भारतीयों का शोषण कर रही है, लेकिन अधिकतर शिक्षित व्यक्ति भी इस शोषण को समझ व देख नही पारहे हैं और बदस्तूर यह जारी है। क्या यही अच्छा है। 'भारत छोड़ो आदोलन' की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर पूरे देश में भारतीय भाषाओं के प्रयोग बढाने हेतु जनजागरण किया जाये तथा अंग्रेजी को अनिवार्य शिक्षा समाप्त करदी जाये।

वास्तव में देखा जाये तो अंग्रेजी हमारे लिए हर क्षेत्र में पराश्रय का कारण बनी हुई है। यदि अंग्रेजी ऐच्छिक रखी जाती तथा शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाये होती तो आज सम्पूर्ण भारत ९० प्रतिशत तक शिक्षित हो जाता। शिक्षा से न्याय व्यवस्था मे तेजी आती है। भ्रष्टाचार के मूल को लोग समझने में समर्थ होते तथा उसका विरोध होता और उसमे निश्चित रूप से कमी आती है। विदेशी भाषा विदेशी संस्कृति की भी सवाहिका होती है। अत अंग्रेजी के साथ-साथ अंग्रेजों की भौतिक प्रवृत्ति, अश्लीलता, नशाखोरी आदि का भी प्रचलन जनता में होता गया। क्योंकि नकलची तो किसी भी बात की तह में नही जा सकता उसे तो नकल से मतलब है। भले ही अंग्रेजी में बहुत-सी अच्छाइया हैं, लेकिन उन्हे हम नही ले पाये, विकृतिभर को ले लिया।

अंग्रेजी कार्यालयों व प्रशासन की सम्पर्क भाषा जबरदस्ती बना रखी है। यह जनता के सम्पर्क की भाषा न रही है, न रहेगी। अंग्रेजी समर्थकों ने हिंदी न थोंपने का कुटिल नारा दिया है। इसी के सहारे वे हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को अनन्तकाल तक अंग्रेजी द्वारा दबाये रखना चाहते हैं। कितना बडा आश्चर्य है कि ससार के सबसे बडे लोकतन्त्र की ठेकेदारी करनेवाले सत्तासीन दल राष्ट्रभाषा के मामले में लोकतन्त्र का पालन नही कर रहे हैं और लगातार ४५ वर्षों मे प्रबल बहुमत की अवहेलना करते हुए अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा को विशाल बहुमत पर लादे हुए है। भोली-भाली भारतीय जनता के १।। प्रतिशत चालाक लोग कितनी क्रूरता से शोषण करते जारहे हैं। कितने निर्मम हैं ये लोग? जिस दिन इस रहस्यमयी क्रूरता का शिकार बनी यह निरीह जनता जागरूक होगी, उस दिन यह अंग्रेजी का मायामहल धड़ामसे नीचे गिर जाएगा। आज तो भारतीय भाषाओं के प्रेमियों को सनकी, पागल या नेतागिरी झाडनेवाला ही समझा जाता है। गांधी का नाम लेनेवाले आज गांधी के उद्देश्यों से भटक गये है। विदेशी भाषा द्वारा विदेशी तकनीक को भारी विदेशी ऋण करके सारी जनता को केवल भोगवादी, अश्लील, नशाखोर और बेरोजगार बनाया जारहा है। इन सबका दरवाजा अंग्रेजी की अनिवार्यता ही है। इस तंग दरवाजे को यथाशीघ्र बन्द करके राष्ट्रभाषा तथा प्रांतीय भाषाओ के विशाल द्वार खोल देने चाहियें। राष्ट्र-विकास भारतीय भाषाओं मे ही छुपा है। नैतिकता, त्याग समर्पण भी इन्ही मे है।

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक का चुनाव

प्रधान—स्वर्श्री चरणसिह, उपप्रधान—डा. विश्वम्भरनाथ रावत, मन्त्री—वेदप्रकाश सेरा, उपमन्त्री—हरिराम आर्य कोषाध्यक्ष-दरवारीलाल पसनाना, सहायक कोषाध्यक्ष—आनन्दप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—गुलशनकुमार आर्य।

गुरुकुल धीरणवास (हिसार) का स्थापना दिवस एवं शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

दिनाक २१-८-९२ जन्माष्टमी के दिन २१वां स्थापना दिवस एवं शराबबन्दी सम्मेलन बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रातः ८ बजे संध्या हवन के बाद श्री दीवानसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द के कर-कमलों द्वारा ओ३म् का ध्वजारोहण हुआ। तत्पश्चात् हाल मे स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास जी लाडवा निवासी की अध्यक्षता में सभा का आयोजन हुआ। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने मंच सचालन किया। प० जबरसिंह आर्य हासी की भजनमण्डली के भजन हुए। श्री महेन्द्रसिंह आर्य डोभी, संग्रामसिंह आर्य दडौली, चौ० जवाहरसिंह आर्य ढाणीपाल, श्री दीवानसिंह आर्य, महाशय फूलसिंह आर्य गोरछी, प्रि० भगवानदास आर्य पटेलनगर, ब्र० रामफल आर्य घिराय, स्वामी सर्वदानन्द जी आदि ने गुरुकुल की व्यवस्था, प्रगति, जन्माष्टमी का महत्त्व, श्रीकृष्ण जी के जीवन एव कार्य तथा शराबबन्दी पर विस्तार से अपने-अपने ढंग से विचार रखे। सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की।

क्षेत्र से आये कई गांव के लोगों ने तन, मन, धन से गुरुकुल की सहायता करने का आश्वासन दिया। इस वर्ष २१ मन अनाज इकट्ठा करने बारे प्रधान श्री रामजीलाल आर्य बालसमन्द, श्री बदलुराम आर्य मुकलान, दीवानसिंह आर्य की सभी ने मुक्तकण्ठ से प्रशसा की। श्री महेन्द्रसिंह आर्य कवारी जो मुख्य अतिथि से उनकी प्रेरणा एवं सुझाव से ६००० रु० गौ के लिए, ५१०० रु० यज्ञशाला के लिए तथा एक पंखा गुरुकुल को दान दिया। एक पखा भगत जी, एक पंखा श्री बलवीरसिंह आर्य पनिहारचक ने दान दिया। उपस्थित आर्यजनों ने भी यथासामर्थ्य दान दिया। कार्यक्रम बहुत ही रोचक एवं प्रेरणादायक रहा। सभी ने प्रीतिभोज किया। आगामी वर्ष के लिए कार्यकारिणी का चुनाव सर्व-सम्मति से किया गया।

—बलवीरसिंह आर्य
मन्त्री गुरुकुल धीरणवास

सरकार की शराब नीति

सरकार एक ओर तो थैलियों में गरीब तबकों को शराब उपलब्ध कराने जारही है वही शराब की लत छुड़ाने की दिशा मे कोई प्रयत्न नही किये जारहे हैं। गरीबों को शराब आसानी से उपलब्ध करवाकर तथा उनका पैसा शराब के नये-नये ठेके खुलवाकर सरकार किस प्रकार सामाजिक पतन को रोक सकती है। प्रजातन्त्र की आड़ मे यदि इस तरह से समाज विरोधी नीतिया लागू होती रही तो वह दिन दूर नहीं जब लोग एक वैकल्पिक व्यवस्था के विषय में सोचने लगेंगे।

—नीरज त्यागी, चन्द्रनगर गाजियाबाद

आर्यसमाज हांसी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक ११ से १३ सितम्बर, ९२ को आर्यसमाज हांसी का ४०वां उत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती गुरुकुल झज्जर, स्वामी सर्वदानन्द जी गुरुकुल धीरणवास, प० सत्यप्रिय शास्त्री हिसार, श्री हारानन्द आर्य पूर्वमन्त्री हरयाणा, सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास लाडवा, श्री अमीरचन्द मक्कड़ विधायक हांसी आदि विद्वान् वक्ताओं ने वेदों का महत्त्व, परमात्मा क्या है ? क्या करता है। राष्ट्ररक्षा, नारी शिक्षा, गोरक्षा, चरित्र निर्माण, देश की आजादी में आर्यसमाज का योगदान, ब्रह्मचर्य, सुखी गृहस्थ, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं तथा शराबबन्दी पर इतिहास के उदाहरण देकर विस्तार से विचार रखे। श्री हीरानन्द जी ने विशेषकर जिला भिवानी में शराबबन्दी लहर का ब्यौरा दिया और लोगों से आग्रह किया कि जो सज्जन शराब छोड़ना चाहें वह २ अक्तूबर से जो शराब छुड़वाने का कम्प लगा रहे हैं उसमें पधारें। मुफ्त इलाज किया जायेगा। क्रांतिकारी जी ने भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का शराबबन्दी रूपरेखा रखी और २ अक्तूबर को हजारों की संख्या में भिवानी शराबबन्दी प्रदर्शन में शामिल होने का आह्वान किया।

प्रतिदिन प० जबरसिंह खारी तथा प० दिनेश शर्मा दिल्ली के समाज सुधार के क्रांतिकारी शिक्षाप्रद भजन हुए। समय-समय पर मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय की छात्राओं तथा गुरुकुल धीरणवास के विद्यार्थियों के प्रेरणादायक भजन व भाषणों का बहुत ही रोचक कार्यक्रम रहा। प्रतिदिन प्रातः हवन किया गया। शहर के प्रतिष्ठित मनुष्य सपत्नीक यजमान बने।

इसके अतिरिक्त गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों द्वारा महाराष्ट्र का व्यायाम प्रदर्शन रस्से व मलखम द्वारा दिखाया गया। साथ में आसनों का कार्यक्रम भी बहुत ही सराहनीय एवं आकर्षक रहा। सभी नरनारियों ने व्यायाम प्रदर्शन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उत्साहवर्धन के लिए इनाम भी दिया। उत्सव की सफलता बारे प्रधान श्री देवदत्त जी आर्य, विद्यालय के प्रधान ला० जयकिशनदास आर्य, श्री हंसराज आर्य, श्री लालचन्द आर्य, श्री राजेन्द्र आर्य आदि का विशेष सहयोग रहा।

—विजयकुमार आर्य
मन्त्री आर्यसमाज हांसी

शांति-यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज बालावास (हिसार) के प्रधान श्री सूबेदार हरचन्द जी आर्य के ज्येष्ठ भ्राता एवं श्री हेतराम आर्य के पिता श्री रामभगत जी का दिनांक ५-९-९२ को निधन होगया। वे ८२ वर्ष के थे। वह परिश्रमी किसान थे, दृढ ईश्वर विश्वासी थे। इनके सारे परिवार का बालावास में शराब का ठेका बन्द करवाने में घरने पर विशेष योगदान रहा। १६-९-९२ को प्रातः ८ बजे प० सत्यवीर शास्त्री (हांसी) द्वारा शांति यज्ञ किया गया। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी गुरुकुल धीरणवास ने आत्मा परमात्मा तथा मोक्ष पर विचार रखे। साथ में किसी भी मृतक संस्कार के बाद काज करना तथा लड्डू आदि बनाना अवैदिक बताया। सभी विद्वानों ने भगवान् से प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

प्रदर्शन की तैयारी

(पृष्ठ २ का शेष)

अन्त में सरपंच श्री रामेश्वर ने बताया कि गतदिनों ११ दिन शराब का ठेका नही खुलने दिया। एस. डी. एम., डी. सी. साहब ने दबाव डाला। ठेकेदार ने भी ५० हजार मे पचायत को खरीदने की साजिश रची, लेकिन हम नही बिके। गाव के मुखियाओं ने शराब पीकर बन्दी तोडी और यह ठेका खुलवाया। सरपच ने अब पुन. यह पाप का अड्डा बन्द करवाने का आश्वासन दिया। २ अक्तूबर को भिवानी में प्रदर्शन में भी बढ-चढकर भाग लेने का वचन दिया।

ग्राम सैय

१२ बजे दोपहर चौपाल में सम्मेलन हुआ। उपरोक्त सभी विद्वान् वक्ताओं ने शराबबन्दी व अन्य समस्याओ पर विस्तार से विचार रखे। लोगो से २ अक्तूबर भिवानी मे शराबबन्दी प्रदर्शन मे आने की अपील की।

ग्राम घुसकानी

दोपहर बाद डेढ बजे चौपाल मे शराबबन्दी सम्मेलन आरम्भ हुआ। पं० खेमसिंह क्रांतिकारी व प० ईश्वरसिंह तूफान के शराबबन्दी पर भजन हुए। श्री क्रांतिकारी जी तथा श्री ग्रेवाल साहब ने भी शराबबन्दी, किसानों की समस्या, भ्रष्ट राजनेताओं की लूट आदि पहलुओं पर विस्तार से विचार रखे। लोगों मे काफी उत्साह था। लोगों ने हाथ खड़े करके २ अक्तूबर को भिवानी १०-१२ ट्रैक्टर लेकर आने का आश्वासन दिया।

ग्राम जताई

साय ४ बजे भैयां की चौपाल मे सम्मेलन हुआ। काफी संख्या में नरनारियों ने भाग लिया। उपरोक्त सभी विद्वान् वक्ताओं के भजन व भाषण हुए। अन्त में लोगों से २ अक्तूबर को भिवानी ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुँचने का अनुरोध किया।

ग्राम राजपुरा खरकड़ी

सायं ६ बजे सम्मेलन हुआ। पं० ईश्वरसिंह तूफान के भजन तथा उपरोक्त नेताओं ने हरेक पहलू पर आंकडे देकर विस्तार से विचार रखे। हरयाणा को ऋषि-मुनियों की भूमि बताया।

ग्राम तिगड़ाना

ग्राम तिगडाना में रात्रि मे पं० खेमसिंह आर्य क्रांतिकारी की मण्डली द्वारा शराबबन्दी प्रचार किया गया। उपरोक्त सभी गांवों में कार्यक्रम बहुत ही सफल एव प्रेरणादायक रहा। जब बच्चे शराबबन्दी नारे लगाते तब आकाश गूज उठता था। इस शराबबन्दी अभियान से ऐसा लग रहा था मानो शराब विरोधी लहर अब जोरों पर चल पड़ी है। प्रत्येक गांव में आर्यनेताओ को पूर्ण सफलता मिल रही है। लोग अहसानमन्द हैं। लोग प्राय: कहते हैं कि हम शराब से पूरी तरह बर्बाद हो लिये हमें बचाओ। आये दिन लडाई-झगड़े, चरित्र का नाश, धन का नाश, स्वास्थ्य का नाश हो रहे हैं। सरकार जबरदस्ती हमें शराब पिला रही है। हमे आर्यसमाज से ही पूरी आशा है, इन राजनैतिक पार्टियों से नहीं। अतः शराब हटाओ देश बचाओ, शराब हटेगी देश बचेगा।

दिनाक १८-९-९२ को प्रात: १० बजे ग्राम ऊणा में प्रचार हुआ। बालिया हरिजन ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। दोपहर १२ बजे ग्राम मालपोस मे सम्मेलन हुआ। श्री विरजानन्द पूर्व सरपच ने शराब पीनी छोडी। साय ५ बजे ग्राम कलिंगा में कार्यक्रम हुआ। उपरोक्त सभी ग्रामो मे प० ईश्वरसिंह तूफान के शराबबन्दी व अन्य सामाजिक बुराइयों पर शिक्षाप्रद भजन हुए। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, श्री बलबीरसिंह ग्रेवाल, श्री हीरानन्द आर्य आदि ने आर्यसमाज का स्वर्णिम इतिहास, शराबबन्दी पर देश-विदेश के आंकड़े देकर लोगों को बताया कि शराब सब पापो की जड है। शराब से सर्वनाश हो रहा है। यह आत्मा और शरीर दोनो का नाश करती है। शराब ने किसी को नही बख्शा, इसको छोड़ो वरना मिट्टी में मिल जाओगे। धूम्रपान, ताश, अफीम, सुल्फा, मास, अण्डे आदि से भी कोसों दूर रहना चाहिए। यह मनुष्य की खाने-पीने की चीजे नहीं। किसानों को फसल के ठीक दाम न मिलना, शिक्षा मे सरकार की दोहरी नीति, अमीर गरीब की खाई, किसान गरीब क्यों है आदि विषयों पर विस्तार से विचार रखे। लोगों से २ अक्तूबर को भिवानी में शराब विरोधी प्रदर्शन में भाग लेने क अपील की। साथ मे पचायत प्रस्ताव भी देने को कहा। लोगों ने हाथ उठाकर पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया।

इसी दौरान ग्राम मालपोस में लोगों ने शिकायत की कि हमारे स्कूल मे कई अध्यापक शराब पीते हैं। एक तो स्कूल समय में शराब पीकर आता है जो बामला गाव का है। सभी ने कहा उन शराबी अध्यापको की पिटाई करो। काला मुह भी करो ताकि भविष्य मे कोई शिक्षक ऐसा अपराध न कर सके। साथ में कहा कि सज्जन पुरुषार्थी, ईमानदार अध्यापकों का आदर सम्मान भी करो। ग्राम कलिंगा में भी शराब का ठेका है। तीन पचायतें हैं। प्रतिदिन १२ हजार रु० की शराब गाव मे पी जाती है। एक सरपच श्री महेन्द्रसिंह ठेका बन्द करवाने पर बल देता है। दो सरपंच आनाकानी करते हैं। लोग शराब से बुरी तरह बर्बाद हो रहे हैं। लगभग सभी गलियों का बुरा हाल है। कीचड़ व गन्दगी की भरमार है, कोई ध्यान नही। अगर शराबबन्दी हो जाये तो इस गांव में रामराज्य आसकता है। यह पंचायती गांव रहा है और लोगों मे पंचायत में सच को सच और झूठ को झूठ कहने का दम है। ज्ञातव्य है कि पं० नेकीराम जैसे महापुरुष भी इसी गांव में पैदा हुए हैं। कार्यक्रम सभी गांवों मे सफल एवं प्रेरणाप्रद रहा। शराब विरोधी पोस्टर भी प्रत्येक गाव मे बांटे गये।

हरयाणा में आर्यसमाजों के उत्सव

नशाबन्दी विराट् प्रदर्शन एवं नशाबन्दी सम्मेलन भिवानी	२ अक्तूबर
आर्यसमाज कौण्डल जि० फरीदाबाद	१-२ ,,
,, गुरुकुल आर्यनगर जि० हिसार	३-४ ,,
आर्य महासम्मेलन उचाना मण्डी जि० जींद	९ से ११ ,,
आर्यसमाज शेखपुरा जि० करनाल	९ से ११ ,,
,, खानपुरकलां जि० सोनीपत	४ से ११ ,,
,, नजफगढ नई दिल्ली	६ से ११ ,,
,, कोसली जि० रेवाड़ी	११-१२ ,,
,, झज्जर जि० रोहतक	१६ से १८ ,,
,, फिरोजपुर झिरका जि० गुड़गांव	१६ से १९ ,,
,, माडल टाउन यमुनानगर	१९ से २५ ,,
,, सुदकायनकला जि० जींद	३०-३१ अक्तूबर से १ नवम्बर
कन्या गुरुकुल पंचगांव जि० भिवानी	३०-३१ ,, से १ ,,
आर्यसमाज काठमण्डी आर्यनगर सोनीपत	३१ ,, १ ,,
,, बडा बाजार पानीपत	६ से ८ ,,
अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् सम्मेलन दयानन्दमठ रोहतक	६ से ८ ,,

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि ६-७-८ नवम्बर की तिथियों में उत्सव आदि रखने का कष्ट न करें, जिससे आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता नशाबन्दी सम्मेलन रोहतक में सम्मिलित हो सकें।

—सुदर्शनदेव वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-४ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक ४३ ७ अक्तूबर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाने हेतु सत्याग्रह का बिगुल बज गया

आर्यसमाजों से तैयारी हेतु प्रत्येक गांव से ११०० रु० तथा ११ सत्याग्रहियों के नाम सभा को भेजने की आर्य नेताओं की अपील

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही समाज सुधार के कार्यों में अग्रणी रहा है। दहेजप्रथा, जात-पात मिटाने, छुआछात समाप्त कराने, बाल-विवाह, मूर्तिपूजा बन्द करवाने, स्त्री-शिक्षा, गोरक्षा हिन्दीरक्षा, स्वतन्त्रता प्राप्ति तथा राष्ट्रीयएकता के लिए बडे से बडे बलिदान किये हैं। स्वतन्त्रता दिलाने के आंदोलन में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता सर्वाधिक थे। महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम विदेशी राज्य से अपना राज्य अच्छा है का नारा लगाया था। उन्हीं की प्रेरणा से आर्यसमाज के अनेक कार्यकर्त्ताओं ने स्वाधीनता के ऐतिहासिक आंदोलन में तन, मन तथा धन की बाजी लगाकर भारत को स्वतन्त्र करवाया।

भारत के स्वतन्त्र होने पर हमें आशा थी कि अब रामराज्य होगा और महर्षि दयानन्द के स्वप्नो के अनुसार भारत में तमाम सामाजिक कुरीतियों से छुटकारा मिलेगा तथा शराब व मास आदि पर पाबन्दी लगाई जावेगी। हरयाणा प्रदेश का निर्माण भी इसी भावना से करवाया गया था कि पूर्व की भांति हरयाणा में दूध-दही की नदियां बहेगी और वैदिक संस्कृति की रक्षा होगी। परन्तु हरयाणा बनने पर जो भी मुख्य-मन्त्री बना उसने एक दूसरे मुख्यमन्त्री से अधिक संख्या में शराब के ठेके खुलवाकर गली-गली में शराब का प्रचार तथा प्रसार करके भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है। राजनैतिक नेता शराबियों का सहारा लेकर अनुचित तरीकों से हेराफेरी करके चुनाव जीतकर राज्य सत्ता प्राप्त कर लेते हैं। वे विधानसभाओं तथा लोकसभा में पहुंचकर जो अभद्र तथा अशोभनीय कार्यों का जो प्रदर्शन करते हैं, उसे दूरदर्शन आदि पर देखा जासकता है। वे अपने स्वार्थ के लिए लाखों में बिकने के लिए तैयार रहते हैं। इन्हें जनकल्याण कार्य करने की चिंता नहीं है। राज-नैतिक दल चुनावों के अवसर पर अपने मतदाताओं को लुभाने के लिए अनेक प्रकार के घोषणा-पत्रों में वचन देते हैं। परन्तु इस समय जितने भी राजनैतिक दल हैं, उनमें कोई भी दल शराबबन्दी जैसी कल्याणकारी नीति को अपने घोषणा-पत्र में सम्मिलित नहीं करते। शराबबन्दी लागू करने की मांग करने पर सरकारें राजस्व कमाने के लालच में अनेक प्रकार के बहाने बनाती हैं। इस प्रकार शराब से बढते हुए भ्रष्टाचार के कारण साधारण व्यक्तियों का जीना दूभर होगया है और शराबी तथा असामाजिक तत्त्वों की गुण्डागर्दी के कारण बहन-बेटियों की इज्जत का खतरा बढ़ता जारहा है।

इस सामाजिक बुराई को दूर कराने के लिए सभा की ओर से ५-६ वर्ष से हरयाणा में शराबबन्दी अभियान चलाया जारहा है। ग्राम-ग्राम में शराब पीने के विरुद्ध जागृति उत्पन्न करने के लिए सभा अधिकारियों ने सभा के प्रचारकों के सहयोग से शराबबन्दी सम्मेलन किये हैं। पंचायतों को प्रेरणा करके आगामी वर्ष शराब के ठेके न खोले जाने के प्रस्ताव पास करवाये गये हैं। भिवानी, रेवाड़ी, जींद, कुरुक्षेत्र, पानीपत जिलों में २ अक्तूबर ९२ को महात्मा गांधी तथा श्री लालबहादुर शास्त्री के जन्मदिवस पर पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाने की मांग करने के लिए प्रदर्शन किये गये हैं। जिला भिवानी की ३७ पंचायतों ने अपने ग्रामों में जहां-जहां शराब के ठेके खुले हुए हैं, वहां शराबबन्दी के प्रस्ताव करके जिला उपायुक्त द्वारा हरयाणा सरकार को सौंपते हुए आगामी वर्ष से जिला भिवानी को शराब मुक्त जिला घोषित करने का ज्ञापन दिया गया है। इसके बाद जिला रोहतक तथा अन्य जिलों में क्रमशः पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाने की मांग की जावेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दिल्ली तथा राजस्थान की ओर से उच्चतम न्यायालय में भारतीय संविधान की धारा ४७ के अनुसार जनता के कल्याण के लिए मादक पदार्थों के निर्माण तथा उसकी खपत पर रोक लगवाने हेतु एक याचिका दायर की है। उच्चतम न्यायालय की ओर से भारत तथा राज्य सरकारों को नोटिस भेजकर ४ नवम्बर तक अपना पक्ष प्रस्तुत करने को कहा है।

हम अंग्रेजों की गुलामी से तो स्वतन्त्र होगये हैं, परन्तु अभी शराब से स्वतन्त्र नहीं हो सके। अतः सभा ने निश्चय किया है कि शराबबन्दी लागू करवाने के लिए हैदराबाद आर्य सत्याग्रह तथा हिंदी-रक्षा आंदोलन की भांति संघर्ष का बिगुल बजाया जावे। अखिल भारतीय नशाबंदी परिषद् की ओर से ७-८ नवम्बर, ९२ को दयानन्दमठ रोहतक में अधिवेशन रखा गया है, उसमें विचार-विमर्श करके संघर्ष तथा सत्याग्रह की घोषणा करके सरकार को चुनौती दी जावेगी।

अतः हम सभी आर्यसमाजों से निवेदन करते हैं कि इस सत्याग्रह की तैयारी के लिए अपने-अपने गांव से कम से कम ११०० रु० तथा ११ सत्याग्रहियों के नाम सभा कार्यालय में भेजकर अपनी शक्ति तथा संगठन का परिचय देवें और पूर्व सत्याग्रहों की भांति शराबबन्दी सत्याग्रह को तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग देकर सफल करें।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	सूबेसिंह	विजयकुमार
कार्यकर्त्ता प्रधान	प्रधान	मन्त्री	पूर्व उपायुक्त
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		संयोजक
	दयानन्दमठ, रोहतक		शराबबन्दी अभियान

महात्मा गांधी तथा श्री लालबहादुर शास्त्री की जयन्ती के अवसर पर भिवानी में

शराबबन्दी विराट् प्रदर्शन तथा सम्मेलन आयोजित

आर्य नेताओं ने शराबबन्दी सत्याग्रह चलाने की तैयारी करने का आह्वान किया

रोहतक ५ अक्तूबर (निज संवाददाता द्वारा)—महात्मा गांधी तथा श्री लालबहादुर शास्त्री की जयन्ती के अवसर पर २ अक्तूबर ९२ को हरयाणा प्रदेश के मध्यवर्तीय जिला भिवानी में शराबबन्दी विराट् प्रदर्शन एव सम्मेलन का आयोजन किया गया। किरोडीमल पार्क में प्रात ९ बजे से ही जिला भिवानी, हिसार, जीन्द सोनीपत और रोहतक आदि आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ता "पूर्ण नशाबन्दी लागू करो, शराब सभी बुराइयों की जड है, शराब की आमदनी से विकास नही विनाश होगा" आदि जयघोष करते हुए पहुँचने आरम्भ हो गये थे। इनमें कन्या गुरुकुल पचगांव, कन्या गुरुकुल नरेला, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल धीरणवास (हिसार, आर्यसमाज हासी आर्यसमाज रोहणा (सोनीपत), दूबलधन, सिवाना (रोहतक), बामला काकडोली, धनाना, बोन्द कलाँ, निमड़ी, निमडीवाली, घुसकानी, इमलोटा, कितलाना, गौरीपुर, जूई, घण्टाघर, कृष्णा कालोनी, नया बाजार (भिवानी) आर्यसमाज नरवाना (जीद) आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

किरोडीमल पार्क के मच से प्रसिद्ध राधास्वामी महात्मा ताराचन्द जी दिनोदिया ने अपने आप को पक्का आर्य घोषित किया तथा स्वामी ओमानन्द जी को अपना गुरु मानते हुए उपस्थित आर्यसमाजी एवं शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं को इस आन्दोलन की सफलता के लिए अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि "आर्यो शराबबन्दी आन्दोलन में कूद पडो। शराब का पीना तथा पिलाना महापाप है। सच्चे आर्य कभी संघर्ष से नही घबराते और वे सत्य को सत्य तथा असत्य को असत्य सिद्ध करने में पूरी शक्ति लगा देते हैं। शराबबन्दी लागू करवाकर सत्य की विजय करो। इस धर्मयुद्ध में मैं आर्यों के साथ हू। अतः शराब रूपी रावण का पुतला जलाकर ही दम लो। इस सन्देश के बाद शराबबन्दी बैनरों तथा ओ३म् के झण्डों के साथ जयघोष करते हुए आर्य नर-नारियों का विराट् प्रदर्शन आरम्भ हुआ जो भिवानी के मुख्य बाजारों से होता हुआ बस अड्डा तथा जिला कचहरी पहुंचा। इस प्रदर्शन का नेतृत्व आर्य जगत् के त्यागी तपस्वी वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती एवं सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री सूबेसिंह, उपमन्त्री श्री सत्वीर शास्त्री, हरयाणा के भू० पू० मन्त्री श्री हीरानन्द आर्य, पूर्व विधायक श्री बलबीरसिंह ग्रेवाल, तथा शराबबन्दी अभियान के संयोजक श्री विजयकुमार जो, प्रि० बलबीरसिंह फतेहगढ एव अन्य सन्यासी, आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता आदि कर रहे थे। उस समय भिवानी में कडी धूप थी, परन्तु किसी ने भी इसकी परवाह न की और रोषपूर्ण ढग से हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की माग कर रहे थे। भिवानी की जनता ने प्रदर्शनकारियों का शीतल जल पिलाकर स्वागत किया।

एक बजे जिला उपायुक्त कार्यालय के सामने श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन आरम्भ हुआ। सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने प्रभावशाली ढंग से मंच का संचालन किया। भूतपूर्व सैनिकों की ओर से मेजर संतलाल ने शराबबन्दी सम्मेलन को सफल करने के लिए अपने सैनिक भाइयों से सरकारी कैंनटोन से शराब की बोतल न खरीदने की मार्मिक अपील करते हुए कहा कि जिस प्रकार आपने राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा की है, उसी भावना से शराबबन्दी करवाकर राष्ट्र की रक्षा करो।

हरयाणा शराबबन्दी अभियान समिति के संयोजक श्री विजय कुमार जी ने कार्यकर्त्ताओं का आह्वान किया कि राजनीति और शराब का नाता तोडकर श्रेष्ठ उम्मीदवारों को आगे लायें जो विधानसभा तथा लोकसभा में जाकर शराबबन्दी करवाने हेतु बडे से बड़ा योगदान दे सकें। उन्होंने कहा इस पवित्र अभियान को सफल बनाने के लिए बलिदान के लिए वह तैयार रहेगे। आपने हरयाणा के मुख्यमन्त्री को आडे हाथों लेते हुए कहा कि वे बिश्नोई धर्मी होने का गर्व करते हैं, परन्तु उसके नियमों के विरुद्ध स्वार्थपूर्ति के लिए अपने दामाद का शराब बनाने का कारखाना खुलवाकर जनता को शराब रूपी जहर पिलाकर राज करना चाहते हैं। आपने जिला भिवानी के सरपंचों का धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी पचायतों से शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर ग्रामीण जनता के लिए कल्याणकारी पग उठाया है। सरकार की ओर से लालच तथा धमकियों की परवाह न करते हुए अपने ऐतिहासिक निर्णय पर अडिग रहो। ग्राम की जनता ने ही यह निर्णय करना है कि उन्होंने क्या पीना या क्या खाना है। सरकार को बलात शराब का ठेका खोलने का अधिकार नही है।

गुरुकुल धीरणवास के स्वामी सर्वदानन्द जी ने शराबबन्दी के लिए हर प्रयास एवं सघर्ष में अपना पूरा योगदान देने का वचन दिया। प्रि० बलवीरसिंह ने शराब जैसी अत्यन्त घातक एव भयंकर पेय से बचने का आह्वान किया। उन्होने उदाहरण देते हुये बताया कि कैसे-कैसे जहरीले पदार्थो से शराब बनाकर जनसाधारण को बर्बाद किया जा रहा है। शराब से समाज में अनाचार तथा अपराध फैलने की बात पर जोर देते हुये उन्होंने कहा कि युवापीढी को विशेषरूप से इससे बचना चाहिये। भिवानी के विधायक श्री रामभजन ने भी सभा द्वारा चलाये जारहे शराबबन्दी आन्दोलन में अपना पूर्ण सहयोग तथा समर्थन देने की घोषणा करते हुए कि शराब जैसी बुराई यथाशीघ्र समाप्त होनी चाहिए।

स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के सुपुत्र श्री सुनील शास्त्री ने इस शुभावसर पर जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि उनके पिता श्री लालबहादुर शास्त्री प्रधानमन्त्री निवास के अपने कमरे में ऋषि दयानन्द का चित्र रखते थे तथा उनके आदर्शों के अनुसार ही उन्होने जय जवान जय किसान का राष्ट्र को नारा दिया था। परन्तु आज जवान तथा किसान शराब का गुलाम होता जारहा है। अतः हरयाणावासियो ! शराबबन्दी लागू करवाने के लिये धमयुद्ध में कूद जाओ। आपको दस हजार भजनलाल भी परास्त नहीं कर सकते। हरयाणा के वीर जवान तथा किसान एकजुट हो जाओ।

पूर्व विधायक श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल ने अपने जोशीले अन्दाज में कहा कि आनेवाले चुनाव में जो उम्मीदवार शराबबन्दी का समर्थन करे। जो लिखित वचन दे उसी को अपना वोट देव। उन्होंने कहा कि राजनेताओं से पूछो कि किसान व मजदूर गरीब क्यों है ?

हरयाणा के पूर्व मन्त्री श्री हीरानन्द आर्य ने राजनैतिक दलों के नेताओं को धोखेबाज बताते हुए कहा कि वे महात्मा गांधी का नाम लेकर चुनाव जीतकर उनके आदर्शो की अवहेलना करते हुए राष्ट्र को शराब का-गुलाम बनाकर जनता को बर्बाद कर रहे है। आपने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि आर्य जब भी धर्मयुद्ध में कूद जाते हैं, उनसे टकरानेवाले चकनाचूर हो जाते हैं। हम स्वामी दयानन्द के सैनिक हैं। शराबबन्दी आन्दोलन में आर्यों की विजय होगी। अत: सरकार जनता की मांग के अनुसार शराबबन्दी लागू करें।

समारोह के अध्यक्ष श्री ओमानन्द जी सरस्वती ने अपने सम्बोधन में स्मरण करवाया कि योगीराज कृष्ण के यादववंश का नाश शराब ने तथा पाण्डवों का नाश जूये ने किया था। अतः इस शराब समर्थक सरकारों का नाश भी शराब ही करेगी। आर्यसमाज ने हैदराबाद सत्याग्रह में नवाब हैदराबाद के छक्के छुडा दिये थे और हिन्दी रक्षा आन्दोलन में सरदार प्रतापसिंह कैरों को गद्दी से उतारकर हरयाणा बनवाया था। आज हरयाणा की पवित्र धरती पर हरयाणा बनवाने के विरोधी राज्य करके हम पर शराब थोंप रहे हैं। अत. आर्यो, एक बार पुन शराबबन्दी आन्दोलन चलाकर आर्यसमाज की परम्परा के अनुसार विजयश्री प्राप्त करो। आपने आन्दोलन सफल करने के लिए प्रत्येक ग्राम से ११०० रु० तथा ११ सत्याग्रहियों के नाम सभा को भेजने की अपील की। उसी समय (श्री सुमेरसिंह आर्य) स्वरूपगढ, दुबलधन, सिवाना, माजरा दुबलधन, (रोहतक) रोहणा (सोनीपत), नरवाना, (जीन्द) जेवली, जूई, बामला, धनाना, काकडोली सरदारा, घुसकानी,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शराबबन्दी के लिए संघर्ष–दूसरा स्वाधीनता आंदोलन

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सत्य कभी-कभी कडवा होता है, परन्तु सत्य तो सत्य है और उसकी विजय निश्चित है। क्या आज इस तथ्य को झुठला सकते हैं कि "भारत छोड़ो" आदोलन के ५० वर्ष बाद और आजादी के ४५ वर्ष बाद देश एक ऐसी बुराई का गुलाम बन गया है, जो बहुत सारी बीमारियों की जननी है ?

यह केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारो से पूछा जाये कि दिन-दूनी और रात चौगुनी शराब की पैदावार और बिक्री बढते जाने का क्या कारण है, तो उनका एक ही उत्तर होगा कि शराब की बिक्री मे प्राप्त राजस्व के बिना न तो सरकारें चलनी सम्भव रह गई है और न ही विकास के कार्यक्रमों का सचालन। ये सभी सरकार अपनी लाचारी और शराब की गुलामी स्वीकार करती हैं। दूसरा बहाना उनके पास यह है कि यदि सरकार शराब बनाना और बेचना बन्द करवा देवे तो अवैध शराब बनने और बिकने लगेगी, लोग तो शराब पिये बिना रह नही सकते। परिणामत. वे स्वीकार करती हैं कि हमारा समाज भी शराब का गुलाम बन चुका है। तात्पर्य यह कि भारत का समाज' और 'राज' दोनों शराब के गुलाम हो चुके हैं।

इतिहास ने अपने आपको दोहराया। कुछ स्वार्थी शासकों ने अग्रेज को बुलाया, व्यापार करने की छूट दी, फिर देश की राजनीति में दखल देने के लिए वातावरण बनाया, नतीजा यह निकला कि भारत देश अग्रेजो का गुलाम होगया। इसी प्रकार कुछ सत्ताधारियों ने आजाद भारत में शराब बनाने और उसको बिक्री करने को प्रोत्साहित किया, फिर शराब को राजनीति मे दाखिल कर लिया और नतीजा हमारे सामने है। आज देश का 'समाज' और 'राज' दोनो शराब के गुलाम बन गये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इस गुलामी के खिलाफ लडाई का बिगुल बजा दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने मदद का हाथ बढाया और तीनो सभाओ ने अपने प्रतिनिधियों के द्वारा उच्चतम न्यायालय मे जनहित याचिका दायर करदी। याचिका मे माग की गई कि सविधान के अनुच्छेद ४७ पर अमल किया जाये, क्योकि इस अनुच्छेद पर अमल न करने के कारण जनसाधारण और विशेषकर गरीब तथा उपेक्षित जनता को अनुच्छेद २१ के द्वारा दिये गये मौलिक अधिकार का हनन हो रहा है। उच्चतम न्यायालय के तीन माननीय न्यायाधीशो (न्यायमूर्ति एस० रगनाथन, वी० रामा स्वामी तथा वी०पी० जीवन रेड्डी) ने याचिका की सुनवाई की और आदेश दिया कि केन्द्रीय सरकार तथा सब राज्य सरकारों को अधिसूचित किया जाये कि वे ४ नवम्बर, ९२ तक अपना पक्ष पेश करे। १९-८-९२ के अपने आदेश में विद्वान् जजो ने कहा कि "याचिका ने वास्तव में एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा उठाया है और उस पर सभी सरकारों से उनके विचार और दृष्टिकोण प्राप्त करना जरूरी है। याचिका जनता के बहुत बड़े तबके और विशेष रूप से कमजोर गरीब और अनपढ जनता की ऐसी शिकायतों को उजागर करती है जिनका सम्बन्ध उन नागरिकों की आर्थिक अवस्था, स्वास्थ्य तथा चरित्र से बहुत गहरा है।" माननीय जजों ने यह भी सलाह दी है कि याचिकादाता अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जनता को पूरी जानकारी देकर प्रबल जनमत तैयार करने का प्रयास करे। अदालत की भूमिका तो सीमित है, वह जो कानून, नियम आदेश आदि जो अनुच्छेद ४७ की भावना के विपरीत हो उन्हें रद्द कर सकती है।

सभी प्रमुख राजनैतिक दलों को किसी न किसी प्रदेश में सरकारे हैं, उन सबको विद्वान् जजों ने जगाकर एक परीक्षा मे डाल दिया है। बड़ा दुर्भाग्य है कि पिछले चन्द वर्षों मे सभी राजनीतिक दलों ने शराब-बन्दी को अपने घोषणा-पत्रो से गायब कर दिया है, हालांकि आज सभी दल महात्मा गांधी के प्रति श्रद्धा ज्ञापन करते रहते हैं। जो जन सघ गांधी जी को हिंदुओ का शत्रु कहता था आज 'अन्त्योदय' और स्वदेशी' के नारे लगा रहा है। साम्यवादी दल जो महात्मा गाधी को पूंजीपतियों का दलाल कहते थे आज बहुदेशीय कम्पनियो के आगमन का विरोध करते हुए अपने देश की तकनीक पर आधारित छोटे-छोटे धन्धे लगाने की वकालत कर रहे हैं। समाजवादियों सहित जनतादल आज गाधी जी के विचारों और उनकी नीतियों में आस्था जताता है। कांग्रेस तो गाधी जी के अनुयायी होने और परम शिष्यत्व की अपनी इजारेदारी मानता है। यह सब कुछ होते हुए भी क्या किसी को अहसास है कि गाधी जी ने शराबबन्दी के बारे मे क्या कहा है ? क्या आज किसी की नजर इस बात की ओर है कि महात्मा गाधी द्वारा सचालित 'भारत छोडो' आदोलन की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर जब पूरे देश भी शराबबन्दी हो जानी चाहिये थी, आज राज्यों मे शराब बेचकर पापमय और दूषित राजस्व कमाने की होड लगी है और वह राशि ५० करोड रुपये से बढकर १०,००० करोड रुपये से भी अधिक हो चुकी है। यह श्रद्धाजलि है जो भारत के सभी तथाकथित नेता आज ५० वर्ष बीतने पर उस महात्मा को अर्पित कर रहे हैं जिसने 'करो या मरो' का नारा देकर अग्रेजी सरकार और उससे जुडी सभी बुराइयों को देश से निकालने का सकल्प लिया था।

४ नवम्बर, ९२ को सभी दलो की सरकारो को उच्चतम न्यायालय के समक्ष गाधी जी के प्रति अपनी वफादारी का सबूत देना है।

याचिका के उद्देश्यो को स्पष्ट करने के लिए गाधी जी ने जो कहा उसका सार उद्धृत कर रहा हू—

राज्य कभी व्यसनो के लिए प्रबन्ध नही जुटाता है। हम बदनामी के अड्डों के लिए न लाइसेंस देते हैं और न व्यवस्था बाधते है। हम चोरो को ऐसी सुविधाये नही देते है जिससे वह चोरी के लिए प्रवृत्त हो। मै मद्यपान को चोरी और वेश्यावृत्ति मे भी अधिक निन्दनीय मानता हू। क्या यह अक्सर इन दोनों की जननी नही है ?"

मद्यपान मनुष्य की आत्मा को मार देता है और उसे हिंसक पशु बना सकता है जो पत्नी, मा और बहिन की तमीज खो बैठता है।

मैं अपने देश को मुफलिसो की हालत मे देख सकता हू, परन्तु अपने बीच में हजारो पियक्कडो को नही देख सकता। मैं अपने देश को शिक्षा-रहित भी देख सकता हू, यदि शराब से मुक्ति के लिए यह कीमत भी चुकानी पडे।

यदि मुझे एक घण्टे के लिए समूचे भारत का डिक्टेटर बना दिया जाये तो मेरा पहिला काम होगा, बिना मुआवजा दिये शराब की दुकानो को बन्द कर डालना। मै सब कारखानेदारो को मजबूर कर दूंगा कि वे अपने मजदूरों के लिए माननोय हालात बनायें और उनको निर्दोष पेय तथा उतने हो निर्दोष मनोरजन उपलब्ध करायें।

राष्ट्रपिता के इतने स्पष्ट और दो-टूक विचारों के बावजूद सविधान के अनुच्छेद ४७ की भावना को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया गया है और दूषित राजस्व कमाने की अन्धी दौड़ मे अधिकतर राज्य लगे हैं।

आज सरकारों को तो १०,००० करोड का राजस्व मिल जाता है, परन्तु पीनेवालों को जो अधिकतर गरीब हैं और बहुत बड़ी सख्या को दो जून की रोटी भी उपलब्ध नही है, उनकी जेब से हर वर्ष ५०,००० करोड़ रुपये छिन जाते हैं। सरकार को उसका हिस्सा देने के बाद शराब के व्यापारी बेदर्दी से महिलाओं और बच्चो को बेसहारा बना डालते हैं। इन बेसहारा महिलाओं और बच्चों को अपने जीवन चलाने के लिए क्या-क्या करना पडता है, यह कहने की नही, देखने की चीज है। जब शासन, महिला कल्याण, शिशु कल्याण और गरीबी की रेखा से उठाने की बात हो नहीं कहते, फर्जी आंकडे भी पेश करते हैं तो कुत्तों को भी हंसी आजाती होगी। एक तरफ शराब को घर-घर पहुंचाना और दूसरी ओर महिला कल्याण, शिशु कल्याण और गरीबी मिटाने की बात करना इन अभागों के साथ क्रूर मजाक है। गरीबी और बेरोजगारी

कितनी कम हुई है, इसी से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि जहां १९४७ में बेरोजगारों की सख्या ३३ लाख थी, वह आज ५ करोड होगई है। गाव मे साल में २०० दिन बेकार रहनेवाले इनसे अलग हैं।

सरकारों की ओर से अपनी शराब की नीति को उचित ठहराने का एक ही तर्क है कि यदि राजस्व का यह स्रोत बन्द कर दिया तो विकास के कार्यक्रम बन्द करने पडेंगे और सरकारों के लिए अपने कर्मचारियों का वेतन देना ही कठिन हो जायेगा। पूरे देश मे शराब बनवा और बिकवा कर राज्य सरकारें केवल १०,००० करोड़ रुपये का राजस्व इकट्ठा कर पाती हैं। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि वर्षभर मे कुल मिलाकर ५८,००० करोड रुपये की आर्थिक सहायता (सबसिडी) दी जाती है और अधिकतर सम्पन्न लोगों को ही मिलती है, परन्तु इतनी बडी राशि सहायता के रूप मे देने पर भी सरकार के कोई काम नहीं रुक सके। शेयर घोटाले मे ४०,००० करोड रुपये का गोलमाल होगया और पीछे जाकर १९५० तक की बैंकों की कारगुजारी देखले तो घोटाला हजारों करोड़ मे नही लाखों करोडो मे जायेगा, परन्तु फिर भी सरकार चलती आरही है और इससे भी अधिक घोटाले होंगे तो भी रुक सकेगी नही।

डा० मनमोहनसिंह के नेतृत्व मे सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों की मण्डली के मन्तव्य के अनुसार यदि शराब से प्राप्त होनेवाले राजस्व को समाप्त कर दिया और यदि खाद पर दी जानेवाली सबसिडी बन्द नही की तो राष्ट्र की अर्थव्यवस्था और सरकार ठप्प हो जायेगी।

भ्रष्ट राजनेता, नौकरशाह और पूजीपतियों का तेखडा आज खुलेआम देश को लूट रहा है। देश के गरीबों के विरुद्ध इनका गहरा षड्यन्त्र है। ये शराब पिलाकर पहिले उनकी मति हरते हैं और फिर उसकी गाढे पसीने की कमाई तथा उनका मत। इनका मुह बन्द करने के लिए देश को कर्जदारी का बखान करते है और नया कर्ज लेकर देश की आर्थिक दशा सुधारने का सुखद स्वप्न दिखाकर वाहवाही भी ले लेना चाहते हैं। बहुत कम लोग जानते है कि विदेशों का ६,४०,००० करोड रुपये का कर्ज जो भारत को अदा करना है उतना या उससे अधिक रुपये इस तेखडे का विदेशी बेंकों मे जमा है। कर्ज बढता जारहा है और दूसरी तरफ इस तेखडे की विदेशों मे जमा पूजी भी बढती जारही है। पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी कहा करते थे कि योजनाओं मे खर्च की जानेवाली रकम मे से ८० प्रतिशत तो बीचवाले लोग खा जाते है, जनता तक तो २० प्रतिशत ही पहुंच पाती है। विदेश से लिए हुए कर्ज का बहुत बडा भाग निस्सन्देह इन तीनो के जमा खातों मे पहुच जाता है।

समय आगया है कि भ्रष्टमण्डली के षड्यन्त्र को नगा करके उसको समाप्त करने के लिए देश के गरीब और शासित लोग शराब छोडो' का नारा लगाते हुए मैदान मे उतर आयें। अग्रेज भारत को आजादी नही देना चाहता था उसी तरह ये तेखडी भी गरीब जनता को शराब पिलाकर मति हरने से छुटकारा नही देना चाहेगी, इस डर से कि कही होश मे आकर शोषित लोग इनके आधिपत्य को चुनौती न दे डालें। पजाब और आन्ध्रप्रदेश में सरकारें अपनी पुलिस के साये मे शराब बिकवा रही है। जो हत्यारे जहरीली शराब पिलाकर लोगों को मार डालते हैं या अन्धा बना देते हैं वे सब बरी हो जाते हैं, वे तो धनी बनकर सत्ताधारियों के लगोटिया बन जाते हैं। आज तक इतनी हत्यायें करनेवाले किसी भी अपराधी को न फांसी हुई, न गोली से उडाया गया। ऐसे काडो की छानबीन के बाद सरकारों के वरिष्ठ अधिकारी सजा देने की बात न कहकर शराब की और अधिक दुकानें खोलने की वकालत करते है।

लोगों को गांधी जी के 'भारत छोड़ो' आदि नारे याद दिलानेवाले ये लोग उस महान् आत्मा की भावनाओं का नित्यप्रति खून कर रहे हैं। शराब की गुलामी से आजादी प्राप्त करने के लिए अपनी मति और सर्वस्व हर लेनेवालों के षड्यन्त्र से बचने के लिए, अपने परिवार और बच्चों के कल्याण के लिए तथा राष्ट्र को अनेक बुराइयों की जननी से मुक्त कराने के लिए शोषित जनता को 'करो या मरो' का गाधी जी का मन्त्र लेकर अन्तिम सघर्ष के लिए आगे बढना होगा।

उच्चतम न्यायालय का निर्णय कुछ भी हो, याचिका का उद्देश्य पूरा हो जायेगा। यदि देश की जनता अपने साथ की जाती रही खिलवाड को समझकर, जागृत होकर तथा मिलजुल कर अपने जीने और गरिमा के साथ जीने के मौलिक अधिकार की प्राप्ति के लिए संघर्ष में कूद पडे। मुझे आशा ही नही, परन्तु विश्वास है कि देशभर मे स्वतन्त्रता सेनानी तथा अन्य देशप्रेमी महानुभाव इस पवित्र सघर्ष मे सहयोग का हाथ बढायेंगे और बुराइयों की जननी शराब की गुलामी से स्वाधीनता प्राप्ति की दूसरी लड़ाई की सफलता के लिए अपना आशीर्वाद देंगे।

हरयाणा में आर्यसमाजों के उत्सव

आर्य महासम्मेलन उचाना मण्डी जि० जींद	९ से ११ अक्तूबर
आर्यसमाज शेखपुरा जि० करनाल	९ से ११ ,,
,, खानपुरकला जि० सोनीपत	४ से ११ ,,
,, नजफगढ नई दिल्ली	६ से ११ ,,
,, कोसली जि० रेवाड़ी	११-१२ ,,
,, झज्जर जि० रोहतक	१६ से १८ ,,
,, फिरोजपुर झिरका जि० गुडगाव	१६ से १८ ,,
,, माडल टाउन यमुनानगर	१९ से २५ ,,
,, सुदकायनकला जि० जींद	३०-३१ अक्तूबर से १ नवम्बर
कन्या गुरुकुल पंचगाव जि० भिवानी	३०-३१ ,, से १ ,,
आर्यसमाज काठमण्डी आर्यनगर सोनीपत	३१ ,, १ ,,
,, बडा बाजार पानीपत	६ से ८ ,,
अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् सम्मेलन दयानन्दमठ रोहतक	६ से ८ ,,

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा आर्य सस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि ६-७-८ नवम्बर की तिथियों में उत्सव आदि रखने का कष्ट न करे, जिससे आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता नशाबन्दी सम्मेलन रोहतक में सम्मिलित हो सकें।

—सुदर्शनदेव वेदप्रचाराधिष्ठाता

यज्ञोपवीत के गुण

यज्ञोपवीत के तीन तार, देते हैं सन्देश अपार।
देव, पितृ और ऋषि ऋण, तीन ऋणों का हम पर है भार।
कैसे ये ऋण चुका सकोगे, इस पर करो जरा विचार।
माता-पिता और गुरुजनो का, करते रहो आदर सत्कार।
ईश्वर, जीव और प्रकृति, आधारित इन पर संसार।
सत, रज और तम गुणों का, सृष्टि में चलता व्यवहार।
देव पूजा, सगतिकरण, दान, इनमें है यज्ञ का सार।
ज्ञान, कर्म और उपासना, भवसागर से कर देंगे पार।
वात, पित्त और कफ शरीर में, सम रहे ऐसा करो आहार।
छल, कपट और झूठ को त्यागो, करो सच्चाई का व्यापार।
जीवन को शुद्ध सरल बनाओ, मनुर्भव का करो प्रचार।
भूर्भुवः स्वः के अर्थों का जन-जन में होवे संचार।
द्यौ, अन्तरिक्ष और पृथ्वी पर, वैदिकधर्म की हो जयकार।
प्रतिज्ञा और पवित्रता का, ध्यान रहे करो उपकार।

—देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज बल्लबगढ़, फरीदाबाद

करनाल में शराबियों के खिलाफ अभियान

करनाल, २२ सितम्बर (निस)। करनाल पुलिस द्वारा नगर में चलाये जारहे एक अभियान के कारण शराबियों की शामत आगई है और सार्वजनिक स्थानों पर मदिरापान करनेवाले १० 'पियक्कड़' पुलिस की गिरफ्त में आगये हैं।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बी०एन० राय ने बताया कि ६ पियक्कडों को गत रात्रि पुलिस ने पकडा है जबकि दो दिन पूर्व ही नशे में धुत होकर मारपीट करने के आरोप में ४ लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। ये चारो व्यक्ति करनाल शुगर मिल के निदेशक मण्डल में शामिल हैं। पता चला है कि शुगर मिल से इनकी सदस्यता खारिज करने के लिये रजिस्ट्रार को लिखा गया है। साभार : दैनिक ट्रिब्यून

माननीय मुख्यमन्त्री हरयाणा को (उपायुक्त जिला भिवानी द्वारा) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा जिला भिवानी की पंचायतों की ओर से

प्रस्तुत ज्ञापन

प्रिय महोदय,

आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्मदिवस है और भारत के द्वितीय प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का भी। १९९२ अंग्रेज भारत छोड़ो आंदोलन का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है, जिस आंदोलन का प्रारम्भ हुआ था महात्मा गांधी द्वारा दिये गये 'करो या मरो' के नारे से। मद्यनिषेध स्वाधीनता के आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण अंग था। इसीलिए आजादी के तुरन्त बाद स्वतन्त्रता सेनानियों के नेतृत्व में बनी राज्य सरकारों ने कहीं पूर्ण रूप से और कहीं आंशिक रूप से शराबबन्दी को लागू किया था। महात्मा गांधी का यह विश्वास था कि यदि शराब का निर्माण, व्यापार और व्यवहार हुआ तो 'सबसे अधिक दु:ख भोगना पड़ेगा देश के गरीबों को। वह अभागा गरीब ही अपने परिवार को भूखा मारेगा, अपने बच्चों के लालन-पालन के पवित्र कर्त्तव्य की धज्जियां उडायेगा और सन्ताप सहते हुए समय से पहिले ही मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा।" गांधी जी कहते थे कि—

"हम शराबी के पास नहीं पहुंच सकते जब तक उसको ललचाने के लिए उसके द्वार के पास शराब की दुकान है।"

गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर ही संविधान के निर्माताओं ने संविधान के भाग ४ (जिसमे राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व प्रतिपादित किये गये हैं) के अनुच्छेद ४७ मे मादक-द्रव्यों के सेवन का निषेध किया है। अनुच्छेद ४७ इस प्रकार है—

"राज्य अपने लोगों के आहार पुष्टितल और जीवन स्तर को ऊंचा करने तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्त्तव्यों मे से मानेगा तथा विशेषतया मादक पेयों और स्वास्थ्य के लिए हानिकर औषधियों के औषधीय प्रयोजनों से अतिरिक्त उपभोग का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा।"

"राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व" संविधान की आत्मा और प्राण हैं और अनुच्छेद ३७ के अनुसार "ये तत्त्व देश के शासन मे मूलभूत हैं और विधि बनाने मे इन तत्त्वों का प्रयोग करना राज्य का कर्त्तव्य होगा।" अनुच्छेद १२ के अनुसार "राज्य के अन्तर्गत भारत की सरकार और संसद, प्रत्येक राज्य की सरकार और विधान मण्डल तथा भारत राज्य क्षेत्र के भीतर अथवा भारत सरकार के नियन्त्रण के अधीन सब स्थानीय और अन्य प्राधिकारी भी है।"

संविधान के अनुच्छेद २१ के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के प्राण का संरक्षण उसका मौलिक अधिकार है। उच्चतम न्यायालय ने 'प्राण के संरक्षण' की व्याख्या करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है कि प्रत्येक व्यक्ति को गरिमा का जीवन मिले और उसे वे सभी साधन उपलब्ध कराना इसमे शामिल हैं जिनसे उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं (पौष्टिक भोजन, पीने के लिए शुद्ध जल, रहने के लिए मकान, पहिनने के लिए कपडे, शिक्षा और चिकित्सा) की पूर्ति हो सके।

मार्च १९५६ मे लोकसभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया था कि 'शराबबन्दी को दूसरी पंचवर्षीय योजना का अभिन्न अंग माना जाये और योजना आयोग पूरे देश मे कारगर ढंग से शराबबन्दी करने के लिए तुरन्त कार्यक्रम बनाये।"

योजना आयोग ने तीसरी पंचवर्षीय योजना बनाते समय खुलकर कहा कि केवल आर्थिक कारणों से ऐसे सामाजिक कार्यक्रम मे, जो देश के जनसाधारण के लिए हितकारी हो बाधा नहीं डालने देनी चाहिए।

योजना आयोग ने यह भी सुझाव दिया कि राज्यों को मद्यनिषेध लागू करने के लिए, प्रेरित करने के लिए, इसके कारण जो राजस्व का घाटा हो उसका ५० प्रतिशत भारत सरकार पूरा करे। राज्यों के बीच समन्वय का जिम्मेदारी गृह मन्त्रालय ने अपने ऊपर ले ली।

उस समय प० जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि "मद्यनिषेध लागू करने पर विचार करते समय आर्थिक पहलू महत्त्वपूर्ण नहीं है, अच्छा काम तो कीमत देकर भी करना चाहिए।"

भारत सरकार ने मद्यनिषेध को लागू करने के लिए १० सूत्री कार्यक्रम बनाया था। परन्तु खेद का विषय है कि गुजरात को छोडकर किसी प्रदेश मे पूर्णरूप से शराबबन्दी नहीं है। तमिलनाडु मे वहा की मुख्यमन्त्री सुश्री जयललिता ने देहात मे बिकनेवाली तथाकथित सस्ती शराब बन्द की है। मिजोरम तथा नागालेंड ने भी कारगर कदम उठाये हैं। शेष सब प्रांत गांधी जी के शब्दों मे प्रदूषित और पापमय राजस्व कमाने की होड की अन्धी दौड़ में जी-जान से लगे हैं। न उनको संविधान की परवाह है, न राष्ट्रपिता प० नेहरू और मोरारजी देसाई तथा सभी धर्मो के साधु सन्तो का लेशमात्र भी आदर। निहित स्वार्थों द्वारा यह झूठ फैलाया जाता रहा है कि यदि शराब के द्वारा इकट्ठा किया जानेवाला राजस्व समाप्त कर दिया तो विकास के सब कार्यक्रम तो ठप हो ही जायेंगे, सरकार का चलना भी असम्भव हो जाएगा। अमरीका में सरकार द्वारा १९७१ में किये गये अध्ययन से पता चला कि यदि सरकार शराब से २ रुपये राजस्व प्राप्त करती है तो शराब के सेवन से उत्पन्न होनेवाली समस्याओं और उनके परिणामस्वरूप जो व्यय सरकार को करना पड़ता है, वह ७ रुपये से अधिक होता है। भारत में किसी सरकार ने ऐसा अध्ययन नहीं करवाया है, परन्तु गैर सरकारी अध्ययन से पता चला कि यदि शराब से १ रुपया राजस्व प्राप्त किया जाता है तो उसके द्वारा उत्पन्न होनेवाली समस्याओं के परिणामस्वरूप जो सरकार को व्यय करना पड़ता है वह ४ रुपये बनता है।

जो कर इस समय लगा रखे हैं उनकी वसूली कड़ाई से की जाये तो नशाबन्दी के कारण जो घाटा होगा वह आसानी से पूरा किया जासकता है। आयकर विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी का अनुमान है कि जितना कर वसूल करना चाहिए उसका २५ प्रतिशत ही वसूल किया जारहा है। कमोबेश यही हालत उत्पादन शुल्क, बिक्री कर आदि की है। राज्य सरकारों का नियन्त्रण भारत सरकार द्वारा वसूल किये जानेवाले करों पर होना चाहिए, क्योंकि उनको इन करों द्वारा वसूल की हुई राशि का भाग मिलता है। शराबबन्दी के कारण बचा हुआ धन जिन वस्तुओं की खरीद में लगेगा उनसे बिक्री कर मे कई गुणा वृद्धि होगी। गुजरात प्रदेश इसका उदाहरण है।

खाद की सबसिडी छोडकर भारत सरकार वर्षभर में धनी लोगो को ५३,००० करोड़ रुपये की सबसिडी कई ढंग से देती है। यदि उसका १० प्रतिशत भी कम कर दिया जाये तो शराबबन्दी से होनेवाले १०,००० करोड रुपये के घाटे का ५० प्रतिशत भारत सरकार राज्य सरकारों को दे सकती है। घोटालों में और फिजूलखर्चियों मे जो धन बर्बाद हो रहा है उसका तो ठिकाना ही नहीं। इसलिए यह कहना कि शराबबन्दी के कारण जो राजस्व का घाटा होगा उसे पूरा करना असम्भव होगा, छलावा मात्र है।

इस स्थिति मे हमारे पास उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाने के सिवाय कोई रास्ता नहीं बचा था। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा

हरयाणा के प्रधान तथा दिल्ली और राजस्थान की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के महामन्त्रियों ने जनहित से प्रेरित एक याचिका जुलाई के अन्तिम दिनों मे उच्चतम न्यायालय मे दायर की। तीन माननीय न्यायाधीशो ने अपने आदेश दिनाक १९-८-९२ मे स्पष्ट कहा कि याचिका मे एक महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया गया है, इसलिए केन्द्रीय सरकार तथा सभी राज्य सरकारों का दृष्टिकोण जानना जरूरी है और सभी सरकारों को अपना विवरण देने के लिए ४ नवम्बर, ९२ की तारीख दे दी है। माननीय जजो ने यह भी कहा है कि उनकी भूमिका तो ऐसे कानून और कार्यवाहियों को जो अनुच्छेद ४७ की भाषा और भावना के विरुद्ध पड़ती हो उसे रद्द कर सकने की है।

हरयाणा सरकार की निम्नलिखित कार्यवाहिया अनुच्छेद ४७ की भाषा और भावना के सरासर विरुद्ध हैं—

१) शराब का ठेकेदार ५ किलोमीटर के अन्दर तीन एजेन्सिया खोल सकता है। नीलामी एक ठेके की और दुकाने चार।

२) एक समय में १२ बोतल खरीदने की छूट के कारण गली-गली और घर-घर में शराब पहुंच गई।

३) छोटी-छोटी दुकानों पर प्यालियो मे शराब बेचने की छूट। इसके कारण १२ वर्ष तक की आयु के बच्चे भी घर से अन्न या दूसरी वस्तुयें लाकर शराब की प्यालिया खरीद रहे है।

४) ग्राम पचायतो और पालिकाओं को देसी शराब की एक बोतल पर एक रुपया, अंग्रेजी शराब की बोतल पर दो रुपये और बीयर की बोतल पर २५ पैसे शराब की बिक्री के विस्तार के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन के रूप मे रिश्वत है।

५) १९९२ मे पचायत एक्ट के अनुसार ग्राम पचायत के प्रस्ताव के द्वारा यदि शराब का ठेका बन्द करने की माग हो तो आगे चलकर ठेका नीलाम नही होगा। परन्तु अवैध शराब की बिक्री का झूठा सच्चा केस बनाकर प्रस्ताव के बावजूद ठेका दिया जाता है। यह उस कानून के उद्देश्यों के प्रतिकूल है। तथ्य तो यह है कि जहा शराब की दुकान हो वहा वैध शराब की आड मे अवैध शराब बिकती है, क्योंकि वहा शराब खरीदने और पीने की छूट है।

६) सभी सभ्य देशो मे २० वर्ष से कम आयु के बच्चों और युवको को शराब बेचना और उनका शराब पीना गैर कानूनी है। परन्तु हरयाणा और सारे देश मे दुर्भाग्य से ऐसा कोई प्रतिबन्ध नही है।

भिवानी जिले की सभी उन पंचायतो ने जहा शराब के ठेके चल रहे हैं, ठेके बन्द करने और नीलाम न करने के प्रस्ताव पास कर दिये हैं। वे सभी प्रस्ताव सलग्न है। हम माग करते है कि भिवानी जिले की पचायतों और जनता की भावनाओं और उनके प्रस्तावो का समुचित आदर करते हुए भिवानी जिले को शराब मुक्त (Dry) जिला घोषित कर दिया जाये।

यदि ऐसा करने मे सरकार आनाकानी करेगी तो सभा और पंचायते उच्चतम न्यायालय का द्वार खटखटायेंगी और आवश्यक समझा गया तो सत्याग्रह का बिगुल भी बजाया जा सकता है।

आशा है हरयाणा सरकार समय रहते जनमत का आदर करते हुए भिवानी को शराब मुक्त जिला घोषित करके यश की भागी बनेगी।

दिनाक २ अक्तूबर, १९९२ भवदीय

सूबेसिह	स्वामी ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिह	विजयकुमार
सभामन्त्री	कार्यकर्त्ता प्रधान परोपकारिणी सभा	प्रधान	सयोजक शराबबन्दी समिति

गांधी जी के जन्मदिन पर

भारतवर्ष में ही नही बल्कि सारे संसार में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो गांधी जी से परिचित न हो तथा उनके प्रति प्रेम एवं भक्ति न हो। इसका मुख्य कारण उनका सारा जीवन साधना और राष्ट्र के उत्थान में समर्पित था। वे सदा कष्ट उठाकर प्राणिमात्र के दुःखों को दूर करने में लग जाते थे। जिस प्रकार युग-द्रष्टा महर्षि दयानन्द ने सोई हुई जनता को जगाया तथा राष्ट्रीय भावना का जयघोष किया। उसी मार्ग पर चलकर बापू ने भी राष्ट्रीयभाव को भरा तथा सत्य अहिंसा द्वारा साम्राज्यवादी शक्ति के खिलाफ नारा बुलन्द कर स्वाधीनता दिलाई। अविचल दृढ़ता ही किसी राष्ट्र के महान् नेता के गुण होते हैं। इससे हो गांधी जी महापुरुष कहलाये। आइन्सटन ने कहा है कि—सम्भव है कि आगामी पीढ़िया यह कठिनाई से विश्वास करे कि इस प्रकार का कोई रक्त मांस वाला पुरुष धरती पर उत्पन्न हुआ होगा।

आज हम बापू की १२३वी जयन्ती मना रहे हैं। यह कल्पना करना बड़ा कठिन है कि आज गांधी जी हमारे बीच होते तो क्या करते। फिर भी यह निश्चयपूर्वक कहा जासकता है कि भारत मे व्याप्त भुखमरी, चोरबाजारी, रिश्वत के खिलाफ अपना आंदोलन अवश्य आरम्भ करते।

महात्मा गांधी एक कुशल व्याख्याता नही थे। इसका आभास उस दिन हो चल गया जब उनको स्वदेश लौटने पर एक अदालत में खड़े-खड़े चक्कर आगया। १८९३ में एक अभियोग के सम्बन्ध में दक्षिण अफ्रीका जाकर वहां के भारतीयों पर होनेवाले अत्याचारों को देखकर युवक गांधी व्याकुल हुए बिना न रह सके और इसके लिये इन्होने आंदोलन छेड़ा।

रचनात्मक कार्य

खादी सस्ती हो यह आशा करना बडी भूल है। खादी महगी पडती है। धैर्य भी तो महंगा पड़ता है। झूठ सस्ता पड़ता है, चोर चोरी करता है। क्योंकि वह जानता है कि आसानी से थोड़ी देर में बहुत-सा धन कमा सकेगा। यह चोरी द्वारा धन कमाने की बात शायद सस्ती हो सकती है, परन्तु यह अच्छी नही है।

गांधी जी ने स्वतन्त्रता की पूर्ति के लिए खादी व ग्रामोद्योग का सहारा लिया। इसलिए गांधी जी ने अपनी आवश्यकताओं को अधिक से अधिक कम कर दिया तथा लंगोटी अपनी भूषा बनाली। एक बार गांधी जी उत्कल प्रांत की यात्रा कर रहे थे तो एक गरीब स्त्री को फटा व मैला कपड़ा पहने देखकर बोले—बहन कपड़े धोने की तुम्हें क्या दिक्कत है। स्त्री बोली—बापू जी मेरे पास इसके सिवाय दूसरा वस्त्र नही है जिससे स्नान करू, धोऊं। यह सुनकर गाधी जी की आखों मे पानी भर आया तथा यह प्रतिज्ञा की कि जब तक गरीब से गरीब की देह ढकने न लगे तब तक मैं लंगोटी ही पहनूंगा।

गांधी जी और उनके सिद्धांतों के प्रति हार्दिक श्रद्धा रखते हुए भी उनके सहयोगी व्यक्ति यह मानते हैं कि खादी कार्यक्रम केवल ४० वर्ष तक चलेगे। विशेषकर आज के इस परिवर्तनशील देश में जहा फैशन का बोलबाला है। खादी का भविष्य अन्धकारमय है। स्वयं खादी नेता भी इस बात को स्वीकार करते हैं, यह एक सच्चाई है।

यदि हम पुन: इन्हीं विचारों को रखें, सादगी से रहे तो हम गरीबी मिटाने में कदम उठा सकेंगे। क्योंकि गरीब व्यक्ति को ऊपर उठाने का सबसे बड़ा खतरा देश के सामने है। इसके लिए हमारी सरकार तथा प्रियनेता श्री नरसिम्हाराव जो ने कुछ कार्यक्रम इस दिशा मे शुरु किये हैं। यदि हम वास्तविकता को छिपा देंगे तो यह देश हमें कभी माफ नही करेगा। गाधी जी खादी को स्वराज्य के सौरमण्डल का सूर्य कहते थे। अगर हम देश की बेरोजगारी दूर करना चाहते हैं तो ग्रामोद्योग का विकास करें। इस बात को कहने मे मुझे तनिक भी सन्देह नही। हम खादी एवं ग्रामोद्योग मे लगे सारे कार्यकर्ता, नेता गाव-गाव शहर-शहर जाकर एक क्रांति पुन: जगाये। स्वदेशी भावना को जागृत कर तथा गाधी के स्वपनों को साकार करे यही सच्ची श्रद्धाजंलि है।

—वेदमित्र हापुडवाले
महामन्त्री केन्द्रीय आर्यसभा अम्बाला केंट

सभी विश्वविद्यालयों में संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था होनी चाहिए

दिल्ली, ७ सितम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय तथा इन्दिरा गांधी ओपन विश्वविद्यालय नई दिल्ली के कुलपतियो को विशेष पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि अपने-अपने विश्वविद्यालयों मे सस्कृत के अध्ययन के लिए उचित व्यवस्था करावे।

स्वामी जी ने कहा देववाणी संस्कृत अनेक भाषाओं की जननी है। हमारे प्राचीनतम वेद तथा वेदाग सब ग्रंथ सस्कृत में ही है। वर्तमान वैज्ञानिक युग मे पाश्चात्य विद्वानों ने भी कम्प्यूटर प्रणाली के विकास के लिए सस्कृत भाषा को सबसे अधिक उपयोगी माना है। इससे यह सिद्ध होता है कि सस्कृत भाषा अनेक भाषाओ को सयोजक है जिसमे प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का विशेष भण्डार है।

स्वामी जी ने भारत सरकार से अनुरोध किया है कि उन तमाम विश्वविद्यालयों मे जहा सस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था नही है, यह व्यवस्था सुलभ करावे। —प्रचार विभाग सार्वदेशिक

जिला भिवानी में शराबबन्दी सम्मेलनों द्वारा धुआंधार प्रचार

ग्राम बवानीखेडा में दिनांक २५-९-९२ को १ बजे शराब के ठेके के सामने पार्क में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता म० करतारसिंह प्रधान आर्यसमाज बवानीखेडा ने की। श्री महावीरप्रसाद प्रभाकर ने विद्वान् वक्ताओं का अभिनन्दन एवं स्वागत किया। सर्वप्रथम प० ईश्वरसिंह तूफान के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगो को अवगत कराया और आनेवाले नेताओं का परिचय दिया। साथ में यहा आने का मकसद भी बताया। सभा के महामन्त्री चौ० सूबेसिंह जी ने विस्तार से आर्य प्रतिनिधि सभा की शराबबन्दी गतिविधि तथा साथ मे अनेक गावो के उदाहरण दिये। ग्राम बामला, धनाना, नलवा, इमलोटा, जूई, बालावास इन गांवों में ठेके बन्द करवाये और गांव मे शराबबन्दी लागू की है। उपस्थित नवयुवकों से भी शराब छोड़ने की पुरजोर अपील की और २ अक्तूबर को भिवानी पहुँचने का आग्रह किया।

मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री एवं सभाप्रधान जी ने बताया कि हमें हरयाणा को शराब से बचाने के लिए लोकशक्ति को जगाना है। तीन सूत्रीय कार्यक्रम के माध्यम से हमने शराब छुड़ाने का कार्य हाथ में लिया है। लोगों को समझा करके कानून के तरीके से प्रस्ताव पास करवाके, जो शराब मे बुरी तरह फंस चुके हैं उनको शिविरों मे दवाई दिलवाकर उनसे शराब छुडवानी है, उन्हे बचाना है। हम आर्यसमाज की ओर से एक ठोस आंदोलन चलाकर हरयाणा प्रांत को शराब से मुक्ति दिलाकर एक आदर्श एवं पवित्र प्रांत बनाना चाहते हैं। क्योंकि यह ऋषि-मुनियों की भूमि है, यहा वेदों की ऋचाये गूंजी हैं। श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान भी इसी धरती पर दिया है। अत: सम्भलो, अपने बच्चों पर दया करो। शराब एक राक्षस रूपी दुश्मन है, इससे किनारा करो। क्रांतिकारी के सुझाव पर प्रभाकर जी ने इस शराबबन्दी अभियान हेतु ५०१ रु० दान दिये। इसके अतिरिक्त हिंदू हाई स्कूल के मुख्य अध्यापक श्री युधिष्ठिर जी ने ३०० रु०, ढाणी निवासी राव सुखीराम ने १०१ रु० का सहयोग दिया और राव साहब ने एक ट्रैक्टर मे ज्यादा से ज्यादा लोगो को भिवानी लाने का आश्वासन दिया। प्रभाकर ने उत्सव की व्यवस्था में कमी के लिए पश्चात्ताप किया। मा० युधिष्ठिर व श्री करतारसिंह आर्य की प्रेरणा व प्रयास से सम्मेलन में नवयुवको ने विशेष भाग लिया।

ग्राम बामला

ग्राम बामला का कार्यक्रम एक नवयुवक की आकस्मिक मौत हो जाने पर रद्द करना पड़ा। सायं ४ बजे ग्राम खरक पुनिया की चौपाल मे सूबेदार रामनिवास सरपंच की अध्यक्षता मे शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। मंच संचालन सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने किया। सर्वप्रथम प० जयपालसिंह बेधड़क की मण्डली के शराबबन्दी पर भजन हुए। सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने बताया कि शराब सब पापो की जड़ है। शराब किसान व मजदूर की दुश्मन है, इसको छोड़ो वरना बर्बाद हो जाओगे। किसी राजनैतिक पार्टी को चिंता नही। सब सरकारें शराब बढ़ावा नीतियो पर चल रही है। हरयाणा प्रांत सबसे आगे है। पचायतो व नगरपालिकाओं को एक रुपया प्रति बोतल हरयाणा मे ही दिया जाता है अन्य प्रांतों में नही।

चाहे कोई भी लाल आया, सबने शराब बढ़ाकर हरयाणा के नाम को बदनाम कर दिया है। कहां तो यह कहावत थी कि 'देशों मे देश हरयाणा, जहा दूध-दही का खाना'। आज शराब की नदिया बह रही है। आप लोगो के सहयोग से आयसमाज ने शराब बन्द करवाने का बीड़ा उठाया है। आर्यसमाज बुराइयों के खिलाफ एक आंदोलन है, मत या सम्प्रदाय नही। आर्यसमाज ने देशहित में अनेक लडाइयां लड़ी हैं, आदोलन किये हैं और सफलता प्राप्त की है। अत: अब शराबबन्दी की लडाई भी पूरी ताकत से लड़ेगा।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने भी लोगों को इस भयंकर बुराई को खत्म करने के लिए खडे होने का आह्वान किया। अनेक खानदानों व रजवाड़ों के बर्बादी के उदाहरण देकर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। रामायण व महाभारत के उदाहरण देकर लोगों को समझाया कि भाइयों में कितना प्यार था। कितने तगड़े योद्धा थे। आज हमारा क्या हाल है, न प्यार है न प्रेम, न चरित्र, न बुराइयों को छोड़ सकते, बुरा हाल है। अन्त मे कहा कि आओ आर्यसमाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर शराबबन्दी अभियान में जुट जाये। सभामन्त्री चौ० सूबेसिंह जी व चौ० बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक भी मौजूद थे।

ग्राम मानेहरु

ग्राम मानेहरु में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। पं० खेमसिंह क्रांतिकारी की मण्डली के प्रेरणादायक भजन हुए। चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा तथा चौ० हीरानन्द पूर्व शिक्षामन्त्री ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगो को अवगत कराया। शराब सब पापों की जड़ है, शराब से बुद्धि का नाश होता है। जो शराब पीता है अपने नन्हे-नन्हे बच्चों का खून पीता है। अत: इसको छोड़ो, वरना बर्बाद हो जाओगे। म० मामराज गोरीपुरवाले का विशेष सहयोग रहा। उपरोक्त सभी जगह कार्यक्रम सफल रहा।

(पृष्ठ २ का शेष)

बोन्दकलां, मानेसर, इमलोटा, कन्हेटी, गोपी, मिथाथल (भिवानी) आदि ने इस अपील के अनुसार ११०० रु० तथा ११ सत्याग्रहियों के नाम भेजने का वचन दिया।

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने उपस्थित जनता के सामने जिला भिवानी के अतिरिक्त उपायुक्त श्री देवेन्द्रसिंह को जिले भिवानी की ३७ ग्राम पंचायतों की ओर से शराबबन्दी के प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए हरयाणा सरकार को एक ज्ञापन देते हुए कहा कि जिला भिवानी में चालू वर्ष में ३७ ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी की गई थी और इन सभी ३७ ग्राम पंचायतों द्वारा इन ठेकों के तुरन्त प्रभाव से बन्द किए जाने के लिए आवश्यक प्रस्ताव ३० सितम्बर ९२ से पूर्व पारित किये गये हैं। अत: जि० भिवानी में ग्रामीण जनता की भलाई के लिए पूर्ण शराबबन्दी की घोषणा करें अन्यथा हमें सत्याग्रह करने के लिए विवश होना पड़ेगा। हम ३५ दिनों तक प्रतीक्षा करेंगे और रोहतक में ७, ८ नवम्बर को अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अधिवेशन में कार्यक्रम बनाकर शराबबन्दी के आन्दोलन में कूद पड़ेंगे। शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं को आज से तैयारी कर देनी चाहिए। हमने हरयाणा बनने पर २६ वर्ष तक प्रतीक्षा की है। अब और अधिक समय तक सरकार हमें मूर्ख नहीं बना सकती। उन्होंने भविष्य में कोई भी राजनैतिक चुनाव न लडकर सारा जीवन समाज सुधार में लगाने का संकल्प किया है। उन्होंने आगे कहा कि हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाकर, इसे एक आदर्श प्रान्त बनाना है जिसका अनुसरण दूसरे प्रान्त भी करेंगे।

इस सम्मेलन में श्री विजयपालसिंह, श्री हरध्यानसिंह, श्री मुरारीलाल बेचैन तथा स्वामी देवानन्द जी आदि के शराबबन्दी पर प्रभावशाली भजन हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK-४६ सृष्टिसंवत् १,६६, ०८, ५३, ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक ४४ १४ अक्तूबर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

जिला रेवाड़ी में पूर्ण शराबबन्दी हेतु उपायुक्त को ज्ञापन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशानुसार आर्यसमाज रेवाडी द्वारा नगर की विभिन्न संस्थाओं सहित शराबबन्दी के लिए एक विशाल प्रदर्शन किया गया। दिनांक २ अक्तूबर १९९२ को जलूस आर्यसमाज रेवाडी से चलकर नगर के बाजारों से होता हुआ उपायुक्त रेवाड़ी के कार्यालय तक गया और उपायुक्त महोदय को उपरोक्त विषयक ज्ञापन दिया गया।

इस कार्यक्रम में आर्यसमाज रेवाड़ी को निम्नलिखित संस्थाओ से सक्रिय सहयोग मिला—

१) गुरुकुल किशनगढ घासेडा, २) विश्व हिन्दू परिषद रेवाडी, ३) ब्राह्मण सभा रेवाड़ी, ४) सेवा भारती रेवाडी, ५) नगर परिषद रेवाडी, ६) हरयाणा नशाबन्दी परिषद रेवाडी शाखा, ७) किसान सभा रेवाड़ी, ८) राजपूत सभा रेवाड़ी, ९) आर्यसमाज पुनासिका जिला रेवाडी।

इस प्रदर्शन कार्यक्रम निम्नलिखित प्रमुख थे—

महात्मा धर्मवीर जी, महाशय रामचन्द्र आर्य, श्री सुखराम आर्य, एडवोकेट नरेश चौहान, प्रो० वासदेव रणदेव, प्रि० लालसिंह यादव, श्री ओमप्रकाश ग्रोवर, म० हरिराम आर्य, श्री वेदप्रकाश विद्रोही, श्री सुरेश मिश्र, श्री अभिमन्यु भारद्वाज, श्री सत्यनारायण आर्य।

जिला जींद में भी पूर्ण शराबबन्दी का ज्ञापन दिया गया

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आदेशानुसार महात्मा गान्धी तथा लालबहादुर शास्त्री के जन्मदिवस पर २ अक्तूबर को आर्यसमाज जींद शहर के नेतृत्व मे एक विशाल जलूस ने उपायुक्त जींद को पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का ज्ञापन दिया। इस विशाल जलूस में स्थानीय आर्य समाजें, गुरुकुल कुम्भाखेडा के ब्रह्मचारी, आर्य वीर दल जींद तथा शहर के प्रमुख-प्रमुख व्यक्ति, स्वामी रत्नदेव जी, स्वामी गोरक्षानन्द जी आदि संन्यासी सम्मिलित हुए।

कुरुक्षेत्र में नशाबन्दी का प्रदर्शन

थानेसर, ५ अक्तूबर—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रेरणा पर कुरुक्षेत्र के प्रमुख धार्मिक एवं शिक्षण संस्थाओं की ओर से पूर्ण नशाबन्दी की मांग को लेकर नगर में एक विशाल प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन का नेतृत्व पूर्व उपायुक्त विजयकुमार ने किया। प्रदर्शनकारी सैनी समाज भवन पर इकट्ठे हुए तथा नशाबदी के पक्ष में नारे लगाते हुए उपायुक्त के कार्यालय तक गये। प्रदर्शनकारियों में आर्यसमाज के प्रमुख नेता तथा थानेसर ब्लाक के कांग्रेस 'इ' प्रधान रामप्रसाद मल्होत्रा, गीता हाई स्कूल के पूर्व प्राचार्य श्री दीनानाथ बत्रा, महिला सांस्कृतिक संगठन की सचिव कुमारी सुदेश तथा सनातन धर्म सभा के प्रधान वैद्य रामेश्वर प्रसाद शामिल थे।

ज्ञापन में यह भी आरोप लगाया गया कि देश मे शासन करने सरकारे देशभर में जगह-जगह शराब के ठेकों को खुलवाकर, शराब की छबीले लगवाकर जनता को बर्बाद होने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। कुछ कामरेड रुपये के राजस्व के लिए पूरे राष्ट्र को बर्बाद किया जा रहा है। ज्ञापन में यह भी आशका प्रगट की गई कि क्या नशे को बढावा दे रही सरकारे विदेशी ताकतो के हाथो मे तो नही खेल रही।

प्रस्ताव खाप कादयाण (बारह गांव) जिला रोहतक का शराबबन्दी प्रस्ताव

आज दिनांक २७ सितम्बर ९२ को खाप कादयाण (बारह गांव) की बेरी जाट धर्मशाला में चौ० छतरसिंह की अध्यक्षता में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया।

प्रताव नं० १

यह खाप कादयाण शराब की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों की सेहत पर बुरा प्रभाव पडता है। सभी गावो में अनाचार और अपराध फैलते हैं। धन का भारी विनाश होता है। इस समय हमारी खाप कादयाण में केवल बेरी में ही शराब का ठेका है जो सारी खाप के लिए सिरदर्द बना हुआ है। इससे हो रहे विनाश को दृष्टिगत रखते हुए यह खाप मांग करती है कि भविष्य में हमारी खाप कादयाण मे कोई ठेका १९९३/९४ के लिए नहीं खुलना चाहिए। भारतीय संविधान की धारा ४७ में भी व्यवस्था की गई है कि सरकार द्वारा शराब तथा दूसरे मादक पदार्थों के उत्पादन तथा खपत पर पाबन्दी लगाई जायेगी। इस प्रकार खाप कादयाण का यह प्रस्ताव सर्वथा कानून के अनुसार है।

इसकी एक प्रति आबकारी व कराधान आयुक्त हरयाणा चंडीगढ़ को भेजी जाती है।

दहिया खाप के गांवों में शराब के सेवन पर पूर्णतः प्रतिबन्ध

सोनीपत, २८ सितम्बर (त्यागी)। यहा से २० किलोमीटर दूर कस्बा खरखोदा में 'दहिया खाप' की पचायत खाप के प्रधान रामफलसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमे सर्वसम्मति से फैसला करके शराब के सेवन तथा विवाह में नाच-गाने पर पूर्णत प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। ज्ञातव्य है कि दहिया खाप मे ४० गाव आते हैं।

पचायत में हुए निर्णय के अनुसार जो व्यक्ति शराब का सेवन करता हुआ अथवा नशे की हालत में पकडा जाएगा, उस पर ११०० रु० जुर्माना होगा और जो व्यक्ति शराब पिलाएगा उस पर ११२५ रु० जुर्माना किया जाएगा। जुर्माने के बाद भी जो व्यक्ति पंचायतों के आदेशों का उल्लंघन करेगा उसका सामाजिक बहिष्कार किया जाएगा।

फैसले के विषय मे जानकारी देते हुए नशाविरोधी समिति के जिला प्रधान ओमप्रकाश सरोहा ने बताया कि पचायत के आदेशो को लागू करने के लिए गाव-गाव मे उप-समितिया बनाई जायगी, जिनका कार्य दोषी व्यक्तियो को दण्डित करना होगा। उल्लेखनीय है कि इस जिला मे 'सरोहा खाप' तथा 'आन्तिल चौबीसी' पचायतो ने अपने अधीन आनेवाले ग्रामो मे पहले से ही शराब के सेवन व विवाहो में नाच-गाने पर पाबन्दी लगा रखी है, जिसके सुखद परिणाम निकले है।

शराब विरोधी मुहिम में नये सिरे से जान फूंकी

राष्ट्रीय सहारा समाचार

भिवानी, ६ अक्टूबर—पिछले दिनों जिला भिवानी में शराब के खिलाफ जबरदस्त मुहिम शुरू हुई, जिसे व्यापक जन-समर्थन मिला था। अनेक गावो मे शराब पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगा दिया गया था तथा शराब पीने-पिलाने वालों पर जुर्माना आदि करने का प्रावधान भी किया गया था। मिताथल, जुई जैसे गावों मे इसी दौर मे पूर्ण शराबबन्दी लागू हो चुकी थी। एक बार तो ऐसा लगा, जैसे जिले से शराब का नामो-निशान ही मिटा दिया जाएगा, लेकिन समय बीता और धीरे-धीरे शराबबन्दी के लिए आगे आने वाले लोग खुद ही शराब विरोधी मुहिम थम सी गयी, किन्तु इस २ अक्तूबर को भिवानी में आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आयोजित 'विशाल नशबन्दी सम्मेलन' ने इस शराब विरोधी मुहिम मे नये सिरे से से जान फूक दी है।

इस सम्मेलन मे स्वामी ओमानन्द, प्रो. शेरसिंह तथा हीरानन्द आर्य जैसे प्रमुख आर्यसमाजी नेता शामिल हुए। साथ ही लालबहादुर शास्त्री के सुपुत्र सुनील शास्त्री ने भी सम्मेलन मे शामिल होकर शराब विरोधी मुहिम को पूरा समर्थन देने की घोषणा की।

अब जिले की ३७ ग्राम पंचायतों ने पूर्ण नशाबन्दी के पक्ष में प्रस्ताव पास कर हीरानन्द आर्य को सौप दिये हैं, जिन गावो में शराब के ठेके हैं। राज्य सरकार द्वारा यह घोषणा की गयी है कि ज[illegible] पचायते अपने यहां शराब के ठेके नही रखना चाहती, उनके प्रस्ताव पास करने पर वहा से शराब के ठेके हटा लिये जाएगे। इस तरह इन प्रस्तावो के सरकार के पास पहुचते ही उसे शराब के ठेके उठाने पर गम्भीरता से सोचना होगा।

जिले में इस मुहिम के कर्ता-धर्ता पूर्व वित्त मत्री हीरानन्द आर्य हैं और वे पूरे जोर-शोर से इस मुहिम को आगे बढ़ाने मे लगे हैं। श्री आर्य बताते हैं कि 'सविधान में उस चीज पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने का प्रावधान है, जिसके सेवन से जनता की सेहत को नुकसान पहुंचता हो, 'लेकिन आज तक महात्मा गाधी के नाम पर राजनीति करते आये किसी भी राजनीतिक दल ने अपने घोषणा पत्र में पूर्ण नशाबन्दी की बात को शामिल नही किया, जबकि महात्मा गाधी का शराब विरोध जग जाहिर है, इसलिए किसी राजनीतिक दल से नशाबन्दी की कोई उम्मीद करना बेवकूफी होगी। इस नशाबन्दी को तो जनता ही लागू करा सकती है, इसलिए हमने जनता के बीच जाकर ही मुहिम को चलाने का मन बनाया है। इस सिलसिले मे आगामी ७-८ नवम्बर को रोहतक मे अखिल भारतीय नशाबन्दी सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है, जिसमे शराब से सबसे ज्यादा पीडित महिलाओं का विशेष जत्था बनाया जाएगा, जो अन्य महिलाओं को शराब विरोधी मुहिम मे शामिल करने के लिए प्रेरित करेगा। एक नवयुवको का जत्था भी गठित किया जायेगा। साथ ही देशव्यापी नशाबन्दी लागू करने के लिए कार्यक्रम भी बनाया जायेगा।

हीरानन्द आर्य कहते हैं सरकार द्वारा शराब के ठेके बन्द करने से राजस्व की हानि का रोना तथा अवैध शराब का प्रचलन बढने की बाते करना एकदम तर्कहीन है। केन्द्र सरकार प्रतिवर्ष ५०० करोड के विभिन्न अनुदान देती है, जबकि शराब से प्राप्त होने वाले कुल राजस्व से होनेवाले कुल राजस्व की रकम 150 करोड़ से ज्यादा नही है। इसके अलावा शराब की खरीद बन्द होने से अन्य चीजों की बिक्री अधिक होगी, जिससे सरकार को अलावा बिक्री कर प्राप्त होगा। साथ ही सरकार द्वारा कानून व्यवस्था पर भी खर्च किये जाने वाले पैसे की बचत भी होगी, क्योंकि अधिकतर अपराधों की जननी शराब है।

शराब विरोध की लहर जो अब भिवानी से शुरू हुई है। आर्य के अनुसार जल्दी ही राष्ट्रव्यापी मुहिम के रूप में बदल जाएगी तथा शराब की बुराइयों पर चिन्तन शुरू हो गया है, इसलिए इसकी चिता जल्दी ही बनेगी।

आर्यसमाज मेन बाजार नारायणगढ़ का चुनाव

प्रधान डा॰ वेणीप्रसाद आर्य, उपप्रधान श्री चौधरीराम आढती श्री राजकुमार मलिक, वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री चमनलाल गुप्त, मन्त्री श्री रामनिरंजन, उपमन्त्री, श्री सुरेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष श्री वेदप्रकाश।

सोनीपत में मिलावटी शराब की बिक्री का धंधा जोरों पर

सोनीपत, ५ अक्तूबर—इस जनपद में शराब के कई ठेकों पर मिलावटी शराब की बिक्री अधिकता हो रही है, इससे संबंधित लोगों की चांदी हो रही है।

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि कई ठेका मालिक अंग्रेजी शराब की बोतलों में से शराब का कुछ भाग निकाल लेते हैं और उनमें पानी मिला कर ज्यों की त्यों शील कर देते हैं। सुनने में आया है कि कथित धाधलो में स्थानीय आबकारी एव कराधान विभाग के कुछ अधिकारी एव कर्मी भी सम्मिलित हैं।

यह भी ज्ञात हुआ है कि अवैध कार्य कुछ देशी शराब के ठेकों पर भी हो रहा है। शराब का सेवन करनेवाले विभिन्न नागरिको का आरोप है कि इस सन्दर्भ मे आबकारी व कराधान विभाग के अधिकारियों से भी शिकायते की गई है लेकिन परिणाम कुछ भी नही है। शिव सेना (बाल ठाकरे) के प्रातीय उपाध्यक्ष रामचन्द्र खत्री ने माग की है कि कथित अनियमितताओं की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए ताकि सच्चाई सामने आ सके। उन्होने इस आशय का एक पत्र हरयाणा के आबकारो एव कराधान मत्रो को भी भेजा है।

बोर्ड हिन्दी में लिखवाने के निर्देश

रोहतक, ८ अक्तूबर—उपायुक्त रोहतक श्री गुलाबसिंह सरोत ने जिले में कार्यरत सभी कार्याध्यक्षो को निर्देश जारी किए हैं कि वे अपने तथा उनके अधीनस्थ कार्यालयों के लिए सभी बोर्ड व नाम पट्टिकाएं हिंदी मे लिखवाएं। उन्होने अधिकारी व सरकारी कर्मचारियों से अनुरोध किया है कि वे अपना कार्यालय का कामकाज हिन्दी में करें क्योंकि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है।

"तो भी आप सिग्रेट के दुष्प्रभावों से नहीं बच सकते"

वाशिंगटन, ७ अक्तूबर—अगर आप धूम्रपान नहीं करते और आपका साथी सिग्रेट पीता है तो आप इसके दुष्प्रभावों से बच नही सकते। हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने इस बारे अकाट्य प्रमाण खोज लेने का दावा किया है। एक अध्ययन के अनुसार आपके नजदीक अगर कोई धूम्रपान कर रहा है तो इसका असर आप पर भी पड़ेगा। इससे फेफडे का कैंसर और अन्य बीमारिया हो सकती हैं।

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक सिग्रेट न पीने वाली महिला का धूम्रपान करने वाले व्यक्ति के साथ शादी होने और अन्य धूम्रपान न करने वालों का अध्ययन करने पर यह पाया कि सभी साथियों द्वारा किये गये धूम्रपान का उनके स्वास्थ्य पर भी खराब असर पड़ा है।

तम्बाकू से हर साल दस लाख मौत

कलकत्ता—तम्बाकू सेवन से होनेवाली बीमारियों से हर साल देश में करीब दस लाख लोग मौत का शिकार हो जाते हैं। भारतीय चिकित्सा अनुसन्धान परिषद (आई.सी.एम.आर.) के एक अध्ययन में यह बात उजागर हुई है।

इसमें कहा गया है कि तम्बाकू सेवन से करीब ३ लाख ७४ हजार लोग कैंसर से पीडित हैं और दस लाख ६६ हजार लोग हृदय की बीमारियों से जूझ रहे हैं। इसके अलावा ४० लाख ८० हजार लोग भी मियादी बीमारियों से ग्रस्त हैं।

अध्ययन पत्र के अनुसार देश के ग्रामीण क्षेत्रों में २७.२ प्रतिशत से लेकर ३६.७ प्रतिशत तक पुरुष तम्बाकू का किसी न किसी रूप से सेवन करते हैं। महिलाओं में यह प्रतिशत २४.१ से लेकर ४३.२ तक है।

अध्ययन पत्र में कहा गया है कि मोटे तौर पर भी अनुमान लगाया जाए तो तम्बाकू के कारण होने वाली बीमारियों में हृदय रोग का अनुपात २१ प्रतिशत के करीब है।

अ० भा० नशाबन्दी परिषद् अधिवेशन की तैयारी

(केदारसिंह आर्य)

रोहतक ११ अक्तूबर, आज यहां दयानन्दमठ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की एक आवश्यक बैठक सभा के प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से आर्यसमाज तथा शराबबन्दी के नेता उपस्थित हुए।

अ० भा० नशाबन्दी परिषद् का वार्षिक अधिवेशन जो कि इस बार ७, ८ नवम्बर ९२ को रोहतक मे होना निश्चित हुआ है का सभी ने इसे सफल करने के लिए अपना-अपना योगदान देने का वचन देते हुए प्रसन्नता प्रकट की। सभा प्रधान प्रो. शेरसिह जी ने नशाबन्दी लागू करवाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि जब तक सारे भारत मे संविधान के निर्देशक सिद्धान्तों के अनुसार नशाबन्दी लागू भारत सरकार तथा राजकीय सरकारो की ओर से नही को जाती तब तक संविधान तैयार करनेवालो की इच्छा अधूरी रहेगी। भारतीय संविधान को लागू हुए ४० वर्ष से अधिक समय व्यतीत होगया है, परन्तु अभी तक इस आवश्यक तथा कल्याणकारी कार्यक्रम को लागू करवाने के लिए किसी भी राजनैतिक दल ने ध्यान नही दिया। श्री मुरारजी देसाई ने अवश्य इस दिशा में कार्यवाही करने की पहल की, परन्तु उनका मन्त्रिमण्डल थोड़े समय तक ही चल सका। प्रो० साहब ने गत मास अपनी अहमदाबाद तथा बम्बई आदि की यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा कि जब मैं बम्बई मे श्री मुरारजी के निवास पर मिला और उनसे नशाबन्दी कार्यक्रम की प्रगति का विवरण दिया तो उन्होंने संतोष प्रकट किया तथा अपना आशीर्वाद तथा समर्थन देते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द तथा महात्मा गांधी के स्वप्नों का भारत तभी बन सकेगा जब सारे भारत मे पूर्ण नशाबन्दी लागू होगी। आपने उच्चतम न्यायालय में नशाबन्दी हेतु याचिका दायर करने की कार्यवाही को ऐतिहासिक बताया और विश्वास दिलाया कि वे गुजरात की सरकार तथा जनता को प्रेरणा करेंगे कि नशाबन्दी लागू करने से जो सामाजिक लाभ हुआ है उसकी जानकारी सारे राष्ट्र को दे तथा अपना दृष्टिकोण उच्चतम न्यायालय मे भी प्रस्तुत करे जिससे नशाबदी की याचिका को समर्थन मिल सके।

प्रो० शेरसिह जी ने रोहतक मे होनेवाले अखिल भारतीय नशाबन्दो अधिवेशन को सफल करने की अपील करते हुए कहा कि ७ नवम्बर को युवाओं की गोष्ठी में गुरुकुलों, स्कूलों तथा कालेजों के अधिक से अधिक छात्र तथा छात्राओं को भाग लेना चाहिए जिससे वे नशाबन्दी पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सके तथा नशाबन्दी नेताओं के भी विचार सुनकर इस अभियानन मे अपना योगदान दे सके। आपने राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में तथा विश्वविद्यालयों में प्रथम स्थान प्राप्त करनेवाले छात्र तथा छात्राओं को इस अवसर पर सम्मानित करने की घोषणा करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रतिभाशाली छात्रो के नाम सभा कार्यालय रोहतक में भेजने का निवेदन किया। इसी प्रकार ८ नवम्बर को महिलाओं की गोष्ठी के कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए बताया कि शराबियो के अत्याचार महिलाओं को सबसे अधिक सहन करने पडते हैं। अतः महिलाओं को इस गोष्ठी में सम्मिलित होकर नशाबन्दी लागू करवाने में योगदान देना चाहिए। इस अवसर पर हरयाणा से बाहर से १०० से अधिक समर्थक महिलाओं के पहुँचने की सूचना आचुकी है। सभा की ओर से प्रमुख महिला शिक्षण संस्थाओ को इस सम्बन्ध मे निमन्त्रण-पत्र भेजे जा चुके हैं। ८ नवम्बर को दोपहर को नशाबन्दी पर एक खुला अधिवेशन भी होगा जिसमें राष्ट्रीयस्तर के शराबबन्दी नेता जनता को सम्बोधित करेंगे। आपने हरयाणा की जनता से इस महत्त्वपूर्ण तथा कल्याणकारी अधिवेशन को तन, मन तथा धन से सफल करने का अनुरोध किया।

सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह ने सभाप्रधान जी के सुझाव का समर्थन करते हुए उपस्थित अन्तरंग सदस्यों तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं से निवेदन किया कि वे इस अधिवेशन की तैयारी आज से ही करना आरम्भ कर देवें। अधिवेशन में बाहर से आनेवालों के स्वागत तथा उनके आवास, भोजनादि की व्यवस्था करने के लिए उपसमितियों का गठन किया गया है। इस शुभ कार्य को सफल करने के लिए स्वयंसेवकों को स्वयमेव अपनी सेवायें सभा को प्रस्तुत करनी चाहिये। क्योंकि यह कार्य सर्वहितकारी है।

प्रि० लाभसिंह जी, प्रि० बलवीरसिह जी फतेहगढ, प्रि० होशयारसिंह जी, श्री महावीरप्रसाद बवानीखेडा, डा० सोमवीर जी, वैद्य भरतसिंह आर्य, आचार्य ऋषिपाल चरखी दादरी, श्री कपिलदेव शास्त्री पूर्व सांसद, ला० रामकृष्ण बहादुरगढ, श्री महावीर शास्त्री, श्रीकृष्ण डीघल, श्री सुरेश आर्य, श्री श्यामलाल आर्य गुडगाव, श्री रणवीर शास्त्री, श्री सुखदेव शास्त्री, महाशय दरयावसिह आर्य रोहतक मा० बद्रीप्रसाद आर्य जीन्द, श्री भरतसिंह शास्त्री लोहारु, श्री हीरानन्द आर्य पूर्व मन्त्री हरयाणा, प० हरिराम आर्य कारोली (रेवाडी), श्री धर्मचन्द जी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद), डा० रणजीतसिह नारनौन्द (हिसार), डा० अमीरसिह (कुरुक्षेत्र), प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार मन्त्री आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार, श्री भरतसिंह दूबलधन, श्री टेकराम सिवाना, डा० मनोहरलाल आर्य कैथल, श्री धर्मचन्द शास्त्री (पाथरी) आदि ने इस नशाबन्दी अधिवेशन को सफल करने के लिये उपयोगी सुझाव दिये।

हरयाणा शराबबन्दी अभियान समिति के संयोजक श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त ने सुझाव देते हुए कहा कि जिस प्रकार जि० भिवानी की सभी ३७ ग्राम पचायतो ने शराबबन्दी के प्रस्ताव पास करके अपने जिले में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने की मांग की है, उसी प्रकार जिला रोहतक की ग्राम पचायतों ने भी शराबबन्दी के प्रस्ताव पास कर दिए हैं। अत इस जिले को भी शराब मुक्त करने की माग करनी चाहिए। सभी सदस्यों ने इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए तन, मन तथा धन से सहयोग करने का आश्वासन दिया।

अखिल भारतीय नशाबन्दी अधिवेशन की तैयारी के लिए प्रि० होश्यारसिह की अपील पर उपस्थित निम्नलिखित महानुभावों ने दान भेजने का वचन दिया।

प्रि० होश्यारसिह जो छोटूराम ग्रामोण सस्थान कझावला (दिल्ली) ११००) रु०
श्री महावोरप्रसाद प्रभाकर बवानोखेडा जिला भिवानी ११००)
डा० सोमवीर सभा उपमन्त्री भरतकालोनी रोहतक १०१ नकद तथा १०००)
डा० मनोहरलाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज कयोडक गेट कैथल २१००)
श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त पालनगर रोहतक ११००)
आचार्य ऋषिपाल आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखो दादरी जिला भिवानी ११००)
श्री कपिलदेव शास्त्री पूर्व सासद आचार्यनगर गोहाना (सोनीपत) ११००)
ला० रामकिशन आर्य लोहे वाले बहादुरगढ मण्डी रोहतक) ११००)
श्री श्यामलाल आर्य नई कालोनो गुडगाव ११००)
श्री रणवीर शास्त्री गढी बोहर जि० रोहतक १०१) नकद तथा १०००)
श्री सुरेश आर्य तथा श्री महावीर शास्त्री सैनीपुरा, प्रेमनगर रोहतक ११००)

सभा प्रधान जी ने सभी सहयोगियो का हार्दिक धन्यवाद देते हुए कहा कि सभी महानुभावो को २७ अक्तूबर ९२ तक अपनी धनराशि सभा कार्यालय मे जमा करवानी चाहिए जिससे तैयारी करने में सुविधा हो सके। उन्होने बताया कि मैं हरयाणा से बाहर आन्ध्र प्रदेश आदि का भ्रमण करके इस अधिवेशन के लिए सहयोग प्राप्त करने के लिए एक सप्ताह का भ्रमण करूगा।

**

जिला भिवानी के गांवों में शराबबन्दी सम्मेलनों का कार्यक्रम सम्पन्न

दिनाक २४-९-९२ को प्रातः १० बजे ग्राम चिड़िया में १०+२ के स्कूल के प्रागण मे सरपंच श्री रतनलाल जी की अध्यक्षता में हुआ। दोपहर बाद एक बजे ग्राम गोठडा में मिडिल स्कूल के प्रागण मे सरपच श्री दलीपसिह की अध्यक्षता में हुआ। सायं चार बजे मकडाना में धर्मशाला में सरपच श्री जोवनसिंह की अध्यक्षता में हुआ। साय ६ बजे ग्राम नाथुवास की चौपाल मे सरपच श्री सज्जनसिंह की अध्यक्षता में हुआ। उपरोक्त सभी गावों में मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिह जी थे। मंच संचालन सभी जगह सभा उपदेशक श्री अतरसिंह जी आर्य क्रान्तिकारी जी ने प्रभावशाली ढग से कुशलतापूर्वक किया। सभी गांवों में सवप्रथम पं० जयपालसिह बेधड़क महाशय हरध्यानसिंह तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान एव महाशय आजादसिंह के शराबबन्दी पर प्रेरणादायक भजन हुए। अन्य वक्ताओ में डा० सत्यवीरसिह जी (कन्हेटी), प्रि० बलवीरसिंह जी प्रधान शराबबन्दो समिति सागवान खाप, सभामन्त्री चौ० सूबेसिह जो, चौ० बलबोरसिंह जी ग्रेवाल पूर्व विधायक, चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एव संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिह जो पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री एव सभाप्रधान आदि आय नेताओं ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होने वाले नुकसान से लोगो को अवगत कराया। सरकार की शराब बढावा नीति की भी कटु आलोचना की। स्कूल कालेजों में बढती हुई नकल की प्रवृत्ति, शिक्षा का गिरता स्तर, अध्यापक एव विद्यार्थियो का कर्त्तव्य, राष्ट्र रक्षा, कालिज स्कूलों मे बढ़ती हुई स्मैक होरोइन आदि दुर्व्यसनो की प्रवृत्ति, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शराबबदी प्रचार की गतिविधियो आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला। सभी ने लोगो से पुरजोर अपील की इन शराब धूम्रपान आदि बुराइयों को छोडो वरना बर्बाद हो जाओगे, मिट जाओगे। अपने छोटे-छोटे बच्चों पर दया करो। अपने-अपने गाव में शराबबन्दी समितिया गठित करके गाव मे शराबबन्दो लागू करवाओ। शराब के ठेकों को गाव से खत्म करवाओ। अपने खून पसीने की कमाई को लुटवाकर इन ठेकेदारो के घर मत भरो। सभो गाव की पचायतो ने ठेके बन्द करवाने के बारे मे प्रस्ताव पास किये।

अन्त मे मुख्य अतिथि क रूप में प्रो० शेरसिह जो ने विस्तार से बताया कि हमने १३ वर्ष सघर्ष करके हरयाणा प्रान्त को १९६६ मे अलग बनवाया। हम चाहते थे कि हरयाणा प्रान्त सारे भारतवर्ष मे निराला एव पवित्र होगा। हरयाणा को बनाने के लिए ५० हजार लोग जेलो में गए। लेकिन आज यहा सब उल्टा हो रहा है। शराब बढावा नीति मे हरयाणा सबसे आगे है। पंचायतों को एक रुपया प्रति बोतल का लालच देकर ठेकेदारों के शराब बेचने के दलाल बना दिया। विधायकों की दल बदल (खरीद-फरोख्त) हर बुराई हरयाणे मे आ गई है। ये सब भ्रष्ट राजनेताओं को देन है। चाहे कोई भी मुख्यमन्त्री आया, सबने शराब बढाई खूब लूट मचाई। आज हमे कहीं बोलने लायक नही छोडा। आर्यसमाज का इतिहास लम्बा है। अब हमने लोक शक्ति जगाने के लिए, हरयाणा के किसान मजदूर को बचाने के लिए सभा ने १९८४ से शराबबन्दी अभियान जोरों पर चला रखा है। आप लोग पूरा मन बनाकर अपने बच्चो के भविष्य को ध्यान मे रखकर इस भयकर बुराई से पिंड छुड़वाओ वरना भविष्य अन्धकारमय होगा। न अपने हको की लड़ाई लड़ सकोगे, हरयाणा पंजाब बन जाएगा। हम सब ने मिलकर हरयाणा को बचाना है, फिर देश से भी यह लानत खत्म करनी है। गोठड़ा में तीन ने शराब न पीने का व्रत लिया। श्री रोहतास पूर्व सरपच, श्री होशियारसिंह, श्री दलीपसिह सरपच। किसानों का खेतों में कार्य होने के बावजूद काफी सख्या मे लोगों ने प्रचार में भाग लिया। शराबबन्दी नारे लगाये। शराबबन्दो इश्तिहार व पोस्टर भी बाटे गए।

—बलवीरसिंह आर्य सरपच ग्राम पंचायत दातोली

आपकी सिगरेट मेरे लिए भी हानिकारक है

मेन्ज, 22 सितंबर, धूम्रपान करने वालों से साथ रहने से फेफड़ों का कैंसर होने का खतरा काफी बढ़ जाता है। यह नतीजा जर्मनी के अनुसंधानकर्ताओं ने चार साल के अध्ययन के बाद निकाला है।

अनुसंधानकर्ता डा कार्ल हाइन्ज जोएकेल के अनुसार धूम्रपान करने वालों के साथ रहने वाले लोगों में कैंसर ट्यूमर होने की दर धुम्रां रहित माहौल के निवासियों की तुलना में 35 प्रशित ज्यादा है।

डा जोएकेल ने कल यहां चिकित्सा अनुसंधानकर्ताओं की एक बैठक में कहा कि जर्मनी में सामने आने वाले फेफड़ा कैंसर के कुल 25000 मामलों में से लगभग 1000 संभवतः परोक्ष धूम्रपान के कारण हुए हैं।

उन्होंने कहा कि धूम्र पान करने वालों को कैंसर होने का खतरा अन्य लोगों की तुलना में दस से 40 गुना ज्यादा रहता है।

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

गुरुकुल आर्यनगर का २८ वा वार्षिक उत्सव दिनाक ३-४ अक्टूबर १९९२ को सम्पन्न हुआ। जिसमें मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी, जयदेव वेदालंकार, पं० दुलीचन्द पूर्व विडिओ आदि ने आर्यसमाज का इतिहास आत्मा, परमात्मा, नारी उत्थान, गौ रक्षा, वेदरक्षा, गुरुकुल शिक्षा का महत्त्व ब्रह्मचर्य की शिक्षा तथा शराब बन्दी पर विस्तार से विचार रखे। स्वामी ओमानन्द जी ने इतिहास के अनेक उदाहरण देकर शराब से होनेवाली बर्बादी का नकशा खीचा। साथ में पुरजोर अपील की कि अब समय आगया है, आप खड़े हो जाओ हमने २ अक्टूबर को भिवानी में हरियाणा से शराब का कलंक मिटाने के लिए सघर्ष का बिगुल बजा दिया है। अत. प्रत्येक गाव से ११ आदमो ११ सौ रुपये की स्वीकृति सभा कार्यालय रोहतक मे भेजो। हमने हरयाणा सरकार को शराबबन्दी पर ज्ञापन एवं सघर्ष की चेतावनी दे दो है। अगर हमारी भावनाओं की अनदेखी की तो हम अपनी बडी से बड़ी कुर्बानी देने से पीछे नही हटेगे। स्वामी जी ने कहा कि आर्यसमाज ने हिन्दी आन्दोलन में ५० हजार आर्यों को जेल भेजकर कंसे सरकार के घुटने टिकाए। अब शराब रहेगी या हम रहेगे।

इसी अवसर स्वामी ओमानन्द जी प० प्रभुदयाल प्रभाकर का पुष्पमालाओं द्वारा अभिनन्दन तथा एक-एक गर्म शाल भेंट किया गया। गुरुकुल कार्यकारिणी के उपप्रधान एवं सासद श्री रामजीलाल आर्य का भी सम्मान किया गया। एक अभिनन्दन पत्र एक शाल तथा वैदिक साहित्य भेट किया गया। तथा विस्तार से उपरोक्त विद्वानों की समाज सेवा की चर्चा की गई।

गुरुकुल के छात्रों का मूर्ख राजा का नाटक एवं व्यायाम प्रदर्शन का रोचक प्रेरणादायक कार्यक्रम रहा। साथ में गुरुकुल आर्य नगर तथा गुरुकुल धीरणवास के बच्चों का भाषण एवं भजनों का उत्तम कार्यक्रम रहा। इसके अतिरिक्त पं० ओमप्रकाश वर्मा तथा महात्मा राम मुनि जी के शिक्षाप्रद समाज सुधार के भजन हुये। एक अक्टूबर से चार तारीख तक प्रात: प्रतिदिन यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। पं० रामस्वरूप आचार्य ने मच संचालन किया। भोजन एवं ठहरने की भी उत्तम व्यवस्था थी सभा को वेद प्रचार व दशांश भी दिया गया।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
उपदेशक सभा

वेद-मन्दिर आर्यनगर (नंगला इन्कलेव) फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव

वेद मन्दिर (संचालक : आर्य वेद प्रचार संस्थान (रजि०) जवाहर कालोनी) नंगला रोड, आर्य नगर (नंगला इन्कलेव) फरीदाबाद का आठवां वार्षिकोत्सव दिनांक १७ व १८ अक्तूबर १९९२ ई० को बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। जिसमें आर्यजगत् के उच्चकोटि के महान् विचारक, तपस्वी, महात्मा, आर्योपदेशक व नेतागण पधार रहे हैं।

बुधराम आर्य महामन्त्री

शोक समाचार

स्वामी अगमानन्द जी सरस्वती (पूर्व नाम म० मनफूल जी वानप्रस्थी) का देहान्त दिनांक १७ सितम्बर १९९२ को उनके ग्राम सुठाणा में होगया। दि० १३ सितम्बर १९९२ रविवार को आर्यसमाज बीकानेर के अर्ध शताब्दी महोत्सव स्थल पर प्रातःकाल पक्षाघात का दौरा पडा था। उपचार से कोई विशेष लाभ नही हुआ। अतः इस संसार को छोड़ गए।

दिनांक २८ सितम्बर १९९२ को उनके पुत्रों द्वारा आयोजित अन्तिम शोकसभा में यज्ञोपरान्त महात्मा धर्मवीर जी महाशय रामचन्द्र आर्य जी एवं श्री रामकुमार शर्मा जी ने स्वामी जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

रामकुमार शर्मा
मन्त्री आर्यसमाज रेवाडी

संगरूर में विजयादशमी

आर्यसमाज मन्दिर संगरूर में दिनाक ६-१०-१९९२ को प्रातः ७-३० बजे से १०-०० बजे तक बड़ी धूमधाम से विजयादशमी पर्व मनाया गया। जिसमें आर्यवीर दल व आर्य कुमार सभा की मण्डली के सुमधुर भजन हुए। श्री योगेन्द्र वीर शास्त्री का व्याख्यान तथा मुख्य वक्ता श्री रामसुफल शास्त्री जी अमृत प्रवचन।

सर्वहितकारी का ऋषि दयानन्द विशेषांक

प्रति वर्ष की भांति सर्वहितकारी का दीपावली के अवसर पर २१ अक्तूबर ९२ का अंक ऋषि दयानन्द विशेषांक प्रकाशित किया जावेगा।

व्यवस्थापक

आर्यसमाज सैक्टर, २२ए चंडीगढ़ का चुनाव

संरक्षक श्री इन्द्राज शर्मा, श्री डी डी. सेठी, प्रधान श्री रामरतन महाजन, मन्त्री श्री बुधराम आर्य, कोषाध्यक्ष श्री महावीर शर्मा, लेखानिरीक्षक श्री विश्वमित्र महाजन।

सिवानी मंडी के श्री मेहरचन्द बूरा का निधन

आर्यसमाज सिवानी मण्डी जि० भिवानी के प्रधान श्री मेहरचन्द बूरा का गत मास १६-९-९२ को निधन होगया। वे लगभग ४० वर्ष से प्रधान का कार्य कर रहे थे। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति सम्भव नही है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

हनुमान आर्य

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

रुपये

१ श्री धर्मवीर सरपंच चिड़ावा जि. झुंझनू (राज.) २१
२ ,, बख्तावर वकील ,, ,, ,, २१
३ ,, सूबेदार प्रतापसिंह आर्य गांव सरदार गढ़िया जि० श्रीगंगानगर (राज.) ५०१
४ श्रीमती सुन्दर देवी आर्या पत्नी स्व० श्रीचन्द गाव सरदार गढ़िया जि० श्रीगंगानगर (राज.) ५०१
५ श्री सुरजाराम गांव सरदार गढ़िया जि० श्रीगंगानगर (राज.) १००
६ ,, घोकलराम ढाणी आर्यनगर गांव सरदार गढ़िया जि० श्री गंगानगर (राज.) १००
७ ,, हरिराम गाव सरदार गढ़िया जि० श्रीगंगानगर (राज०) १००
८ ,, अमीलाल बेनीवाल सु० अगड़ीराम गांव सरदार गढ़िया जि० श्रीगंगानगर (राज०) ५१
९ ,, रामचन्द्र आर्य गांव सरदार गढ़िया जि श्रीगंगानगर (राज०) ५१
१० ,, अमरसिंह आर्य गांव सरदार गढ़िया जि० श्रीगंगानगर (राज०) ५०
११ ,, मूलचन्द कसवां ग्राम मरवाना जि० श्रीगंगानगर (राज.) ५१
१२ ,, काशीराम ,, ,, ,, ,, १०१
१३ ,, हरदेवाराम बेनीवाल ,, ,, ,, १०१
१४ ,, कुरड़ाराम ,, ,, ,, २५
१५ ,, रामेश्वर ,, ,, ,, ५१
१६ ,, गोपालराम गठवाल ,, ,, ,, १००
१७ ,, रामजीलाल मान ,, ,, ,, ५१
१८ ,, रामस्वरूप सिहाग ,, ,, ,, ५१
१९ ,, झण्डूराम ,, ,, ,, १०१
२० ,, धन्नाराम ढाणी आर्यवास सरदार गढ़िया ,, ,, ५१
२१ ,, धर्मदेव ,, ,, ,, ,, ५१
२२ ,, नैतराम बेनीवाल ,, ,, ,, ,, १०१
२३ ,, केसरदास, श्रीचन्द, अमरसिंह थाम्बू ग्राम मुनसरी त० भादरा जि श्रीगंगानगर (राज.) ६१
२४ ,, रामचन्द्र बेनीवाल, इन्द्राज स्योराण ग्राम मुनसरी त० भादरा जि० श्रीगंगानगर (राज०) १००
२५ ,, फुल्लाराम, लाधुराम पूनिया, ख्यालीराम पूनिया ग्राम मुनसरी त० भादरा जि० श्रीगंगानगर (राज) ६०
२६ ,, पं० भानाराम ग्राम मुनसरी त० भादरा जि० श्रीगंगानगर (राज०) ५१
२७ ,, गनपतराम आर्य ग्राम सरदार गढ़िया जि० श्रीगंगानगर (राज०) १००
२८ ,, रामसिंह आर्य ग्रा. सरदार गढ़िया जि. श्रीगंगानगर (राज.) ५१
२९ ,, हनुमान सु० देवीसिंह ग्राम डाढीबाना त० च० दादरी जि भिवानी ५१
३० ,, रामोतार सरपच ग्राम डाढीबाना त. च. दादरी जि. भिवानी ५१
३१ ,, जगरूपसिंह सु० गोरखाराम ग्राम डाढीबाना त० च० दादरी जि० भिवानी १०१
३२ मन्त्री आर्यसमाज मन्दौला च० दादरी जि० भिवानी २१
३३ श्री रामभक्त सु० सुखीराम मन्दौला ,, ,, १०१
३४ श्रीमती भगवानी देवी धर्मपत्नी धर्मपाल रा. सी. सै. स्कूल चरखी दादरी जि० भिवानी १०१
३५ श्री मा. जगनसिंह ग्राम व पो. मन्दौला च. दादरी जि. भिवानी १०१
३६ ,, रामानन्द पहलवान सु स्योचन्द ,, ,, १०१
३७ ,, म० हरनन्दराम ,, ,, १०१
३८ ,, जोरावरसिंह आर्य सु० सरूपसिंह आर्य मन्दौला ,, १५१
३९ ,, शुभराम सु० सरूपसिंह ,, ,, ५१
४० , जोधाराम पाहेल ,, ,, १०१
४१ ,, अध्यापक वर्ग रा० हाई स्कूल ,, ,, १६५
४२ श्रीमती सरवती देवी ग्राम कलियाणा ,, ५१
४३ श्री मा० अमृतसिंह दूधवावाले ,, ,, १०१
४४ ,, चमनलाल आर्य प्रधान आर्यसमाज मन्दौला ,, ५१
४५ ,, म० अत्तरसिंह ग्राम चिड़िया ,, १५१
४६ ,, ओमप्रकाश सु० रिसालसिंह ग्राम चिड़िया ,, ५१
४७ ,, धूपराम सु० दरयासिंह ,, ,, १५१
४८ ,, बलवन्तसिंह सु० महासिंह ,, ,, ५१
४९ रा० उ० वि० मोडी के अध्यापकगण ,, १०१
५० श्री दरयावसिंह सु० जुगलाल ग्राम चिड़िया ,, १०१
५१ ,, धर्मपाल सु० लक्ष्मणसिंह ,, ,, २१
५२ ,, धूपराम सु० नोबतराम ,, ,, ५१
५३ ,, कप्तान चन्दगीराम ,, ११००
५४ ,, छोटूराम ,, ५१
५५ ,, लालमन ,, ५१
५६ ,, वीरभान दादरी ,, ३१
५७ ,, लोकूराम ,, ,, २१
५८ ,, वासदेव ,, ,, ५१
५९ ,, पूर्ण किरयाणा स्टोर ,, ,, २१
६० ,, महालक्ष्मी ट्रेडिंग कम्पनी ,, ,, २१
६१ ,, डा० मित्तल क्लीनिक ,, ,, २१
६२ ,, रोहतक मैडिकल हाल ,, ,, २१
६३ ,, चौ० देशराज जनता स्टोन क्रेसिंग कम्पनी खानक ,, ५००
६४ ,, बलदेवसिंह सु० बिरखाराम ग्राम खानपुरकलां ,, १५१
६५ ,, शीशराम सु० बिरखाराम ,, ,, ५१
६६ ,, जगराम सरपंच सु० धनसिंह ,, ,, १०१
६७ ,, छोटूराम सु० रामस्वरूप ,, ,, १५१
६८ ,, देशराम सु० तुलाराम ,, ,, ५१
६९ ,, पहलवान छोटूराम ,, ,, १०१
७० ,, प्रीत सु० रामकिशन ,, ,, १०१
७१ ,, म० जयकरण सु० रामधन ,, ,, १०१
७२ ,, रामसिंह सु० निहालाराम ,, ,, ५१
७३ श्रीमती शकुन्तला देवी धर्मपत्नी महेन्द्रसिंह रा. सी. सै. स्कूल च० दादरी जि० भिवानी ५१
७४ श्री वैद्य सत्यदेव ग्राम खानपुरकलां ,, ५१
७५ ,, बाबू फतेसिंह एडवोकेट च० दादरी ,, १०१
७६ ,, रामफल सु० रिछपाल ग्राम छिल्लर ,, २५१
७७ ,, धर्मपाल सु० लखुराम ग्राम मन्दौला जि० भिवानी १ बोरी गेहूं
७८ ,, काशीराम सु० नेतराम आर्य ग्राम नीमली ,, ५१
७९ ,, सरदारसिंह नायब सूबेदार सरपंच ,, ,, १०१
८० ,, बलवीरसिंह मुख्याध्यापक ,, ,, २५१
८१ ,, सूबेदार भरतसिंह ,, ,, ५१
८२ ,, मा० वेदप्रकाश ,, ,, २१
८३ ,, मा० दयानन्द सु० माडूराम ,, ,, १०१
८४ ,, बलवीरसिंह सूबेदार ,, ,, ५१

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

—रामानन्द सिंहल
सभाकोषाध्यक्ष

शराब से जीवन नाश

—डा० विश्वम्भर छिल्लर विद्यावाचस्पति, ग्राम छिल्लर डाढई, पो० दूबवा, जि० भिवानी

शराब सब बुराइयों की जड़ है।

इसके सेवन से मानव शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं यथा—

दमा, श्वास, सिर के रोग, चक्षु रोग, दृष्टिहीनता, कर्ण रोग, चर्म रोग, स्नायु दुर्बलता, हृदय दुर्बलता, मानसिक रोग, कार्यक्षमता में कमी, बुद्धि दुर्बलता और दन्तरोग एवं व्यभिचारादि की नींव यही डालती है।

सारे संसार में बुद्धि का राज है।
मनुष्य मे बुद्धि नहीं तो कुछ नहीं।
शराबी की बुद्धि नष्ट हो जाती है।
शराब अन्दर बुद्धि बाहर।

आज शराब ने मनुष्य को हैवान बना दिया है। अनेक दुर्घटनायें शराब द्वारा हो रही है। मृत्यु दर में बढोतरी भी शराब से ही है।

प्रतिदिन समाचारपत्रों में पढते हैं कि आज जहरीली शराब पीने से इतने मरे, इतनों की दृष्टि चली गई, इतने पागल होगये, इतने अस्पताल मे दम तोड़नेवाले हैं।

यह सब कुछ होते हुए भी भारत मे विशेषकर हरयाणा मे शराब को प्रोत्साहन दिया जारहा है। जिस हरयाणा में दूध, दही, घी की नदियां बहा करती थी, वहा आज शराब की नदियां बहाई जारही हैं। जिस देश में नौजवानों तथा बहादुर वीरो ने, सन्त महात्माओं ने आजादी के लिए संघर्ष किया और बडी-बड़ी कुर्बानियां दी, अपना खून बहाया, उस देश में शराब से होली खेली जारही है। सात-आठ वर्ष का बच्चा भी मैंने शराब पीता देखा है। क्या वे जवान बनेंगे? क्या वे माता-पिता तथा देश समाज की रक्षा करेंगे? कभी नही। इस बुराई से कैसे बचा जाये। आओ हम सब वेद भगवान् तथा महापुरुषों की आज्ञा मानें। मद्यपान-निषेध का परमपिता परमात्मा ने ऋग्वेद ८।२।१२ में इशारा किया है कि हे मनुष्यो! शराब मत पीवो यह विनाशकारी है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने कहा है कि शराब महाविनाशकारी है। मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। स्वामी जी ने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में मनुस्मृति का हवाला देते हुए शराब को महादुष्ट व्यसन की संज्ञा दी है।

महात्मा गाधी जी ने भी कहा है कि "मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं।"

गाधी जी ने आगे कहा कि—"मुझे एक घण्टे के लिए राज्य का डिक्टेटर बना दिया जावे तो मैं सर्वप्रथम बगैर मुआवजा दिये शराब की दुकान बन्द कर दूगा।"

भारतीय संविधान की धारा ४७ भी मादक (द्रव्यों) पेयो को हानिकारक मानता है। मोरारजी देसाई ने भी कहा है कि—'नशाबन्दी एक बुनियादी बात है।'

चौ० चरणसिंह जो ने बड़े जोर से कहा था कि 'शराबी को अनेक बुराइयां तथा रोग घेर लेते हैं।'

स्व० चौ० पृथ्वीसिंह 'बेधड़क' एक भजन शराब विषय पर गाया करते थे। उस भजन की टेक इस प्रकार है—

अजी एजी करेगी पीनेवालों का नाश।
कितने हुए बर्बाद इससे पढ़ देखो इतिहास॥

इतिहास साक्षी है मुगलों का साम्राज्य शराब से समाप्त हुआ। रोमन साम्राज्य का नाश शराब ने किया। योगिराज श्रीकृष्ण जी के वंशज यादवों का नाश शराब से हुआ और भरतपुर के महाराजा के खानदान का नाश भी शराब कर गई।

देश-विदेश के सभी सन्त महात्माओं ने शराब न पीने की सलाह दी है।

कितनी भारी विडम्बना है कि उपरोक्त उदाहरण से न तो देश के नेता, न शराब पीनेवाले ही प्रेरणा ले रहे हैं।

कैसे होगी शराब पर पूर्ण पाबन्दी?

इसके लिए हम सब ने मिलकर एक अभियान (आंदोलन) चलाना होगा। शहर-शहर, नगर-नगर और ग्राम-ग्राम मे इसके कार्यकर्त्ता तैयार करने होंगे। शहर, नगरों तथा ग्रामो में महीने मे एक बार जाकर प्रचार करने से यह कार्य पूर्ण नही होगा। इसके लिए तो उसी ग्राम नगर के कार्यकर्त्ता तैयार करने होंगे। शराबबन्दी पर दण्डप्रणाली अपनानी होगी। बडी से बडी कुर्बानी देनी होगी। जब बचेगा यह देश इस विनाशकारी शराब से।

आओ हम सब मिलकर तन, मन, धन से इस पुनीत सर्वहित कार्य में आर्यसमाज का साथ देकर इस नशाबन्दी आंदोलन को सफल बनावें।

श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज के कथनानुसार "यह सबका कार्य है। इसमे सहयोग देना सबका हक है।" यह कार्य पूर्ण होने पर हम महाराजा अश्वपति जी की तरह घोषणा कर सकेंगे कि "मेरे राज मे न कोई व्यभिचारी है, न शराबी है, न कोई चोर है।"

वीर बहादुर जवानो ने देश को किया आजाद।
शराब के द्वारा आज, हो रहा है सब बर्बाद॥
हरयाणा का गौरव गया बिगाड दी है इसकी शान।
शराब छोडो आज से ही, कह रहे सभी विद्वान्॥
ऋषि-मुनि कह रहे, कह रहे वेद भगवान्।
इससे नाश निश्चय है, मान चाहे मत मान॥

शराब के ठेके न खुलने देने को दृढ़ निश्चयी हैं गोहानावासी!

गोहाना, २८ सितम्बर (के०सी० अरोड़ा)। हरयाणा शराबबन्दी सघर्ष समिति के अध्यक्ष डा० प्रताप जैन द्वारा आज यहा से राज्य सरकार के आबकारी व कराधान आयुक्त को पालिकाध्यक्ष चौ. रामसिंह मान और ११ अन्य पालिका पार्षदों द्वारा हस्ताक्षरित एक अनुरोध पत्र भेजा गया जिसमें आगामी वित्त वर्ष १९९३-९४ में इस शहर में शराब का कोई ठेका न खोलने का आग्रह निहित है। ज्ञातव्य है कि एतदर्थ सरकार ने घोषणा की है कि इस आशय के ३० सितम्बर तक प्रेषित प्रस्ताववाले स्थानों पर ठेके बन्द कर दिये जायेंगे।

अध्यक्ष डा० जैन के अनुसार यदि 'अनुरोध पत्र' समय पर भेजने के बावजूद किसी दबाव में १९९३ में यहां नगर में ठेकों की बोली के नोटिस जारी किये गये तो यहां के नागरिक न्यायालय के द्वार खटखटाने सहित प्रत्येक सम्भव आंदोलन करेंगे, मगर ठेकों को किसी कीमत पर नही खुलने देंगे और उन्हे बन्द करवाने का सकल्प पूर्ण कर ही चैन की बासुरी बजायेंगे।

डा० जैन का आक्षेप है कि यहां मदिरा का धडाधड़ प्रयोग शहर में गुण्डागर्दी व आपराधिक वारदातों में वृद्धि का मुख्य निमित्त है।

गुरुकुल धीरणवास (हिसार) की कार्यकारिणी का चुनाव

मुख्याधिष्ठाता—सर्वश्री स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती, सहायक मुख्याधिष्ठाता—अत्तरसिंह क्रांतिकारी, प्रधान—रामजीलाल आर्य, उप-प्रधान—बदलूराम आर्य, मन्त्री—बलवीरसिंह आर्य, उपमन्त्री—प्रि० भगवानदास आर्य, कोषाध्यक्ष—चिरंजीलाल आर्य, लेखानिरीक्षक—महेन्द्रसिंह आर्य।

जिला भिवानी में सम्मेलनों द्वारा शराबबन्दी प्रचार

दिनाक १८-९-९२ को ग्राम रानीला, बोंदकला, अचीना आदि में पं० जयपालसिह बेधडक, श्री हरध्यानसिंह के शराबबन्दी पर भजन हुए। चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एव सयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, चौ० सूबेसिह मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प्रि० बलवीरसिंह प्रधान शराबबन्दी समिति सागवान खाप आदि ने शिक्षा के गिरते स्तर, विद्यालयों मे नकल की प्रवृत्ति तथा शराब से होनेवाली हानियों से लोगों को अवगत कराया। लोगों ने बडी श्रद्धा से कार्यक्रम को सुना।

दिनांक १९-९-९२ को ग्राम सांगा सांकरोड कायला, बाहरेडू में पं० ईश्वरसिंह तूफान के शिक्षाप्रद भजन हुए। श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक ने किसानों की लूट, शिक्षा में असमानता तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। लोगों से २ अक्तूबर को भिवानी पहुंचने का आग्रह किया।

ग्राम इमलोटा, मातनहेल में पं० जयपालसिंह व म० हरध्यानसिंह के शराबबन्दी पर समाज-सुधार के भजन हुए। श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त तथा प्रि० बलवीरसिंह ने शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। २ अक्तूबर को भिवानी पहुंचने की पुरजोर अपील की।

दिनाक २०-९-९२ को ग्राम मण्ढोली कलां में प्रात. १० बजे, बहल १ बजे, चहडकलां सायं ४ बजे शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया गया। उपरोक्त सभी गांवों में सर्वप्रथम पं० ईश्वरसिंह तूफान के समाज सुधार के भजन हुए। तत्पश्चात् सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, श्री हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री आदि ने आर्यसमाज का इतिहास, शराब से होनेवाली हानियां, शिक्षा में असमानता, महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्य, बढती हुई अमीर गरीब की खाई, भ्रष्ट राजनेताओ के काले कारनामे, बिजली के रेट बढना, टेलों पर पानी न पहुंचना, किसानो को फसल के भाव ठीक न मिलना, स्कूल विद्यालयों मे बढती हुई नकल की प्रवृत्ति, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को शराबबन्दी गतिविधि, भ्रष्टाचार, बढता हुआ उग्रवाद, मजदूर किसानों को लूटने की सरकार की साजिश आदि पर विस्तार से विचार रखे। साथ में सभी वक्ताओं ने सरकार की शराब बढावा नीति की घोर निंदा की।

अन्त में सभी जगह शराबबन्दी नारे लगवाये तथा शराब छोडने का अनुरोध किया। श्री रुघाराम व रतनसिंह चेयरमेन ने शराब न पीने का अनुरोध किया। साथ में श्री रमाकात शर्मा व विजय बहलवी ने बहल से शराब का ठेका बन्द करवाने तथा २ अक्तूबर को भिवानी में सैकडों की सख्या में पहुंचने का आश्वासन दिया। सेठ अमीलाल आर्य व श्री चिरजीलाल ने एक-एक फोर व्हीलर भिवानी भेजने का वचन दिया। ग्राम चहडकला में श्री हीरासिंह, श्री मांगेराम, मा. महीपालसिह तथा खूंखार शराबी श्री ईश्वरसिंह ने शराब न पीने की घोषणा की। प्रचार में काफी संख्या में नरनारियो ने भाग लिया। सभी जगह आर्य नेताओं का हार्दिक सम्मान हुआ। सभी सज्जन मनुष्यो ने इस नेक कार्य बारे भूरि-भूरि प्रशंसा की। साथ में आग्रह किया कि शराब बन्द कराके मजदूर किसान को बचाओ, वरना बर्बाद हो जावेंगे। आर्यसमाज ही कुछ कर सकता है, अन्यों से उम्मीद नहीं है। शराबबन्दी के पोस्टर व इश्तिहार भी बाटे गये।

रुकिये !
नशीली चीजों से परिवार की, बर्बादी होती है।

गु० धीरणवास जि० हिसार कार्यकारिणी का चुनाव

कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री अतरसिंह आर्य सभा उपदेशक (नलवा), प्रधान श्री रामजी लाल आर्य (बालसमन्द), उपप्रधान श्री बदलूराम आर्य (मुकलान) श्री बलवीरसिंह आर्य (पनिहार चक), उपमन्त्री श्री भगवान्दास (पटेलनगर हिसार), कोषाध्यक्ष श्री चिरजीलाल आर्य (शिशवाल), लेखानिरीक्षक श्री महेन्द्रसिंह आर्य (डोभी)।

शराब का ठेका बन्द करने का प्रस्ताव

रामनगर क्षेत्र के पास लगती हुई बसई रोड पर चालू शराब की दुकाने तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां कोई भी शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे। वर्तमान शराब का ठेका आर्यसमाज मन्दिर के सामने रोड पर १५० मीटर से कम दूरी पर खुला हुआ है इस दुर्व्यसन से क्षेत्र में अशान्ति और अपराध बढते हैं। लोगों के जीवन पर बुरा प्रभाव पडता है तथा परिवारों का विनाश होता है। ऐसी अवस्था मे हरयाणा सरकार से अनुरोध करती है कि रामनगर क्षेत्र के पास लगती बसई रोड पर शराब की दुकाने बन्द करने तथा भविष्य में न खोलने के लिए आवश्यक कार्यवाही करे।

आर्यसमाज रामनगर

धनाना भिवानी में शराबबन्दी प्रचार

दिनांक ३०-९-९२ को रात्रि को शराबबन्दी प्रचार किया गया। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने शराब से होने वाले नुकसान से अवगत कराया। साथ में विशेषकर नवयुवकों से स्कूल में नकल न करने, धूम्रपान व तास न खेलने, प्रतिदिन व्यायाम करने का सुझाव दिया। और गाव में चल रही शराबबन्दी को दृढता से लागू करने पर बल दिया। पं० जयपालसिंह बेधडक के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। कार्यक्रम को लोगों ने जमकर सुना।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ रजि० न० P/RTK-४६ फोन नं० ७७७२२ सृष्टिसंवत् १,६

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक ४५ २१ अक्तूबर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

महर्षि दयानन्द विशेषांक

महर्षि दयानन्द के बलिदान-दिवस पर एक भावनात्मक श्रद्धांजलि—

"महर्षि गए थे जिस दिन, दिवाली थी उस दिन"

(सुखदेव शास्त्री आदर्श महोपदेशक सभा)

महर्षि दयानन्द क्या थे? इसका उत्तर देना सरल नहीं है। आशा, जीवन, प्राण, गति, चेतना, सत्य और ज्ञान की यदि कोई सम्मिलित रूप से एक प्रतिमा बना सके तो वह प्रतिमा महर्षि दयानन्द की ही होगी।

आज का युग महर्षि का सच्चा मूल्यांकन न कर सका। इसमें दोष किसे दें किसे न दे यह निर्णय करना कठिन है, पर यदि कोई भी इतिहासकार निष्पक्ष भाव से इतिहास लिखेगा तो उसे अवश्य लिखना होगा कि "महर्षि दयानन्द जैसा गुणसम्पन्न महर्षि इस धरती पर उत्पन्न ही नहीं हुआ।"

मां की ममता, पिता का प्यार, देवताओं की गरिमा, ऋषियों का ज्ञान और ब्रह्मचर्य के तेज ओज का मिश्रण थे दयानन्द। उनके जीवन का प्रत्येक पल, उनकी विचारधारा का प्रत्येक क्षण, उनकी लेखनी का लिखित एक-एक शब्द ज्योतिर्मय ज्योतिस्तम्भ है।

अतएव निराशा के घने वातावरण में अगर महर्षि दयानन्द ने सत्य, धर्म, वेद और ज्ञान का शंखनाद कर सभी को सावधान न किया होता तो धरती पर वैदिक विचारधारा का आज नाम भी शेष न होता। सत्य के प्रचारक, उपासक और रक्षक के रूप में महर्षि दयानन्द का नाम युग-युग तक जन-जन को प्रेरणा देता रहेगा।

अन्धकार मिथ्यापन्थन को, शुद्ध बुद्ध ईश्वरीय ज्ञान बिसराया था।
आर्यसभ्यता को अस्त व्यस्त करने के काज
पश्चिमी कुसभ्यता ने रंग बिठलाया था।
गौ, अबला, अनाथ यहां त्राहि त्राहि करते थे
धर्म और कर्म चौके चूल्हे में समाया था।
रक्षक नहीं था कोई भक्षक बने थे सभी,
ऐसे घोर संकट में ऋषि दयानन्द आया था।

एक कल्पना के आधार पर देश की तत्कालीन भयंकर परिस्थिति का वर्णन यों भी किया जा सकता है—

जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दीर्घकाल तक मुक्ति सुख का उपभोग करते हुए—परमात्मा के अनन्त ब्रह्माण्ड में स्वतन्त्र विचरते हुए एक दिन पर्वतराज हिमालय के सर्वोच्च शिखर पर चढ़कर चारों ओर जो दिव्य दृष्टि डाली तो दूर-दूर तक फैला हुआ विस्तृत भूभाग दिखाई दिया। उत्तर का यह भूमि भाग उन्हें चिरपरिचित सा जान पड़ा। उन्होंने ध्यान से जो देखा तो वह सहसा पुकार उठे—अहा! यह तो आर्यावर्त्त भारत है। उन्होंने सोचा, वह देखो! गंगा यमुना सरस्वती किसी विशाल सर्प की भांति रेंगती सी चली जा रही हैं। स्नान के लिए लाखों लोगों की भीड़ स्नान से मुक्ति मानती हुई अन्धविश्वास से गंगा की जय बोल रही है। महर्षि दयानन्द अपने दिव्य नेत्रों से मानसरोवर से लेकर कन्याकुमारी तक, और सिन्धु से ब्रह्मपुत्र तक बड़ी आतुरता के साथ कुछ सोचने लगे—कुछ खोजने लगे, मानो कोई माता अपने खोए हुए पुत्र को ढूढ रही हो। फिर कुछ क्षणों में ही विस्मित होकर मन ही मन महर्षि सोचने लगे—ऐ यह क्या बात है? न कहीं यहां ऋषि-मुनियों के आश्रम एवं तपोवन दिखाई देते हैं, और न ही कहीं सघन वनों में चरती हुई असंख्य गौएं दिखाई देती हैं। न कहीं से ब्रह्मचारियों के गुरुकुलों से मन्त्रों की ध्वनि सुनाई दे रही है, न कहीं यज्ञ का धुआं उठता दिखाई दे रहा है। न वेदपाठी विप्र दिखाई देते हैं। न उनकी मन्त्रों की सुरीली ध्वनि सुनाई दे रही है: आश्चर्य है महान् आश्चर्य है। वे आश्रम और पुण्य स्थल आज कहां हैं? जहां मैंने दूसरी महान् आत्माओं के साथ बार बार मनुष्य जन्म लेकर युगों तप और योगाभ्यास किया था। वेद मन्त्रों के गूढ़ अर्थों पर विचार करके वेदों का भाष्य किया था। उनकी व्याख्या में ब्राह्मण ग्रन्थ रचे थे। उनके आशय और रहस्यों को प्रकट करने के लिए उपनिषदों की रचना की थी। आध्यात्मिक सत्यों का व रहस्यों का आविष्कार करके उनकी प्रत्यक्ष अनुभूति प्राप्त की थी। प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन करके उनसे सुख शान्ति की वृद्धि की थी। शाश्वत और सनातन नियमों का अनुसंधान करके मानव समाज के कल्याण के लिए विविध विद्याओं और अनेक कलाओं को प्रकाशित किया था और अन्त में ब्रह्म का साक्षात् करके मोक्षपद प्राप्त किया था। उन स्थानों का यदि कहीं अस्तित्व है तो इतने विकृत रूप में कि वह पहचाने नहीं जाते। इतना बड़ा उलट फेर क्यों और कैसे हुआ? महर्षि दयानन्द के मन में इस परिवर्तन के कारणों के जानने की इच्छा हुई और अतीत वर्त्तमान बनकर धीरे-धीरे महर्षि दयानन्द के सामने आने लगा। ३० मई १८६३ को अपने गुरु विरजानन्द से वेदप्रचार की दीक्षा लेकर कार्यक्षेत्र में कदम रखा। विद्याध्ययन करते समय ही गुरु विरजानन्द जी ने इन्हें भारत की पराधीनता की दुर्दशा का ज्ञान तो पहले ही करवा दिया था। महर्षि को स्वयं भी १८५७ में इसका ज्ञान हो चुका था।

उन्नीसवीं सदी भारतीय पुनर्जागरण के काल के नाम से सुविख्यात है। इस काल में अनेक महापुरुष भारत में नव-जागृति का सन्देश लेकर आए। इन सब में महर्षि ही एक ऐसे महापुरुष थे जो सर्वतोमुखी क्रान्ति का सन्देश लेकर आए। उस महर्षि ने तत्कालीन भारत में धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व क्रान्ति का बिगुल बजा दिया। महर्षि के समकालीन सुधारक केवल सुधारक ही थे किन्तु महर्षि क्रान्तिदूत बनकर आया। उस अकेले लंगोटबन्द संन्यासी ने अपने अपार ब्रह्मचर्य बल, अगाध विद्वत्ता, अनुपम निर्भीकता और अलौकिक साहस से विश्वभर की आसुरी शक्तियों और दुष्प्रवृत्तियों को खुली चुनौती दे डाली, और संसार में व्याप्त अज्ञान अन्धकारमूलक अन्धविश्वासों, कुप्रथाओं, रूढ़ियों तथा पाखण्डों से निरन्तर संघर्ष करते-करते अपने प्राणों का भी बलिदान कर दिया। उस महर्षि ने जब हरद्वार में जाकर पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई तब सम्पूर्ण मतवादियों के दल में एक हलचल सी मच गई। तब ऐसा लगता था जैसे किसी ने हरद्वार में गंगा के प्रवाह को ही उलट दिया हो। जब क्रान्ति के ये बढ़ते कदम मत पन्थों के गढ़

—शेष पृष्ठ ८ पर

राष्ट्रीय नवजागरण में 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' का हिन्दी के लिए योगदान

सुनीता वर्मा, बी ए. बीएड शोध छात्रा दयानन्द महाविद्याल आजमगढ

भारतीय नव जागरण—

ब्रिटिश राज्य की स्थापना के कारण भारत की अर्थनीति, शिक्षा-पद्धति, यातायात के साधनों आदि में सतही (बुनियादी) परिवर्तन हुए इसके फलस्वरूप समाज का जो आधुनिकीकरण आरम्भ हुआ वह पुराने धार्मिक सस्कारों, रीति-नीतियों, रहन-सहन, संघटनों के मेल में नही था। नये यथार्थ और पुराने संस्कारों के बीच सामजस्य की आवश्यकता महसूस की जाने लगी । इस सामंजस्य के साथ ही नये भारतीय समाज के निर्माण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। यह उल्लेखनीय है कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था वैयक्तिक स्वतन्त्रता पर आधारित होती है जवकि पूर्व पू जीवादी समाज में व्यक्ति स्वातन्त्र्य के लिए कोई स्थान नही होता—वहा व्यक्ति जन्म और लिंग के आधार पर एक विशेष सामाजिक व्यवस्था का अग हो जाता है, नया पूंजीवाद समाज जाति, सयुक्त परिवार आदि के बधनों से मुक्त होकर ही विकसित हो सकता है। कहना न होगा कि भारतीय पुनर्जागरण के मूल मे व्यक्ति स्वातन्त्र्य का विशेष महत्त्व है।

आधुनिक युग में ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज और आर्यसमाज ने पुराने धम को नये समाज के अनुरूप ढालने का प्रयास किया। ब्रह्म समाज और प्रार्थनासमाज ने तो नये परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से अगोकार कर लिया, परन्तु आर्यसामाज वैदिक धर्म के मूलस्वरूप को बनाये रखना चाहता था किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नही है कि आर्यसमाजी वैदिक युग की रीतियों-नीतियो में लौट जाना चाहते थे। उस समय की राजनीतिक, सामाजिक और सास्कृतिक विचारधारा पर आर्यसमाज का विशेष प्रभाव पड़ा। मध्यकाल में नये परिवेश के फलस्वरूप जाति-प्रथा, छुआछूत, बाह्याडम्बर आदि के विरोध मे भक्ति आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था। मुस्लिम शासन के प्रतिष्ठित होजाने पर इस आन्दोलन के माध्यम से सामजस्य का प्रयास दिखाई पडा, किन्तु नये युग मे नये प्रकाश के सामजस्य की आवश्यकता हुई । मध्यकाल का सामजस्य भावनामूलक था । उस काल के बहुत से भक्त और सन्त अन्तर्विरोधों के भी शिकार थे। पर अब भावनाओं से काम नही चल सकता था। उसके स्थान पर तर्क, विवेक और बुद्धि से काम लेना अनिवार्य होगया था । आर्यसमाज की मान्यतायें बुद्धि, विवेक और तर्क पर ही आधारित हैं।

महर्षिदयानन्द सरस्वतो का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ, जब भारत परतन्त्र था, उनकी मातृभाषा गुजराती थी। वे संस्कृत भाषा के अद्वितीय विद्वान् थे। परन्तु उन्होंने हिन्दी भाषा को इसलिए अपनाया क्योंकि यह जनभाषा थी। इस भाषा के सवर्धन के लिए उन्होने अग्रेज सरकार से लोहा भी लिया, वे हिन्दी को सम्पूर्ण आर्यावर्त की भाषा मानते थे। "सत्यार्थ प्रकाश" के द्वितीय समुल्लास में उन्होंने लिखा है कि बच्चों की शिक्षा का आरम्भ देवनागरी लिपि के ज्ञान से प्रारम्भ किया जाये। उनके पठन-पाठन की विधि में संस्कृत और हिन्दी का प्रमुख स्थान है। वे राज्य के प्रशासनिक कार्यों में तथा आपसी व्यवहार मे इस भाषा का प्रयोग करने पर बल देते थे। उन्ही की प्रेरणा से तत्कालीन अग्रेज सरकार को एक 'मेमोरेण्डम', (ज्ञापन) देने की योजना बनायी गई थी, जिसमें यह आग्रह किया गया था कि राजकाज में हिन्दी का प्रयोग किया जाय । उनके द्वारा आर्य सज्जनों को हिन्दी भाषा मे लिखे पत्र राष्ट्रभाषा आन्दोलन के सशक्त साक्ष्य है। उन्होंने एक पत्र मे जोधपुर नरेश को लिखा था कि वे महाराज कुमार को २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कराते हुए, पहले हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि मे और बाद में संस्कृत को शिक्षा दिलवाये।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी भाषा का प्रयोग अपने भाषणों में सर्वप्रथम १८७४ में ब्रह्मसमाज के नेता "प० केशवचन्द्र सेन" के सुझाव पर प्रारम्भ किया था। स्वामी जी ने हिन्दी भाषा मे बोलना शुरू किया, इसका एक और कारण भी था जब स्वामी जी के भाषण का हिन्दी में अनुवाद किया जाता था तो अनुवादक उसमें ऐसी बात जोड़ देते थे जो वे नहीं कहे होते थे। २२ फरवरी, १८७३ ई० को "इण्डियन मिरर कलकत्ता" में स्वामी जी के भाषण का जो समाचार छपा, उसमें ऐसी अनेक बाते थीं जो उन्होंने नहीं कही थी। हिन्दी के सम्वर्धन में उन्हें भूदेव मुखोपाध्याय और राजेन्द्रलाल मिश्र का अपूर्व सहयोग मिला ।

स्वामी जी का हिन्दी भाषा के प्रयोग के पीछे एक और महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था, वे मानते थे कि सम्पूर्ण भारत को एकता की कड़ी में पिरोने के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग अत्यावश्यक है । स्वामी दयानन्द सरस्वती जी वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ जहां भी व्याख्यान देते थे, वहां वे हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करते थे। यह केवल सुविधानजनक नीति नही थी क्योंकि उत्तर भारत में हिन्दी बोली एवं समझी जाती थी बल्कि यह सिद्धान्त की बात थी जब स्वामी जी गुजरात में गये तो वे वहां गुजराती में अपना व्याख्यान दे सकते थे क्योंकि गुजराती उनकी मातृभाषा थी। वे अपनी बात को अच्छी तरह उन तक पहुंचा सकते थे। परन्तु उन्होंने वहां पर भी अपना व्याख्यान हिन्दी मे ही दिया । हिन्दी उनके लिए भारत मे फूट डालनेवाली प्रवृत्तियों पर विजय पाने का साधन था । इससे विभिन्न राज्यों, जातियो तथा वर्गों में एकता को पुष्ट किया जाता था। स्वामी दयानन्द सरस्वती से जब एक बार पूछा गया कि हमारा देश कब तक अपनी पुरानी गरिमा और समृद्धि को प्राप्त करेगा तो उन्होंने उत्तर दिया कि जब धर्म, भाषा और उद्देश्यों की एकता होगी। इससे स्पष्ट है कि स्वामी जी राष्ट्रीय एकता के लिए भाषा की एकता को एक अनिवार्य उपादान मानते थे।

स्वामी दयानन्द जी चाहते थे कि सभी हिन्दी भाषा का अध्ययन करें। देश की सभी भाषाओं के लिए नागरी लिपि को अपनाने की प्रेरणा दी थी। उन्होने ही वेदों का सबसे पहले हिन्दी में भाष्य किया था। सर्वप्रथम उन्होंने वेदो का हिन्दी में भाष्य "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के नाम से किया, सत्यार्थ प्रकाश, वेदाग प्रकाश, संस्कार विधि, गोकरुणा निधि, अष्टाध्यायी भाष्य, आर्योद्देश्य रत्नमाला, पंचमहायज्ञ विधि, भ्रमोच्छेदन, भ्रान्ति निवारण इत्यादि ग्रन्थों की रचना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्रभाषा हिन्दी मे ही की थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती ही पहले व्यक्ति थे जिन्होने हिन्दी को सम्पूर्ण देश को भाषा बनाने का क्रियात्मक प्रयत्न किया था। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् होने के बावजूद स्वामी दयानन्द सरस्वती का आर्यभाषा हिन्दी में काम करना उनकी अद्भुत दूरदर्शिता का परिचय देता है। समग्र देश में हिन्दी का प्रचार और प्रसार कर उन्होंने देश की एकता का स्वप्न देखा था।

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी आर्यसमाज का योगदान महत्त्वपूर्ण है। अस्पृश्यता पर जितना प्रबल आघात इस आन्दोलन ने किया उतना और किसी ने नहीं। नारी शोषण के विरुद्ध सर्वप्रथम आर्यसमाज ने ही आवाज उठाई। नारी शिक्षा, विधवा विवाह (पुर्नविवाह), दलितोद्धार, मानवीय समता आदि का कार्य आर्यसमाज ने ही किया, आर्यसमाज का प्रसार मुख्यत: मध्यम वर्ग के बीच हुआ। इसलिए इसका कार्य अधिक क्रान्तिकारी सिद्ध हो सका, इसकी कार्यपद्धति प्रगतिशील थी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती असाधारण व्यक्ति थे । उनका व्यक्तित्व अतिशय दृढ और असमझौतावादी था। उनके विचारों में कहीं भी अस्पष्टता और रहस्यवादिता नही मिलेगी । स्वामी दयानन्द सरस्वती को छोड़कर इतना अटूट आत्मविश्वास अन्यत्र नहीं मिलता, उन्होने आर्यसमाज के लिए वेदों को आधार माना। उनके अनुसार वेद अपौरुषेय हैं और वैदिक धर्म ही सत्य और सार्वभौम है। अन्य धर्म

(शेष पृष्ठ ७ पर)

दयानन्दमठ रोहतक में ७, ८ नवम्बर ९२ को २०वें अखिल भारतीय नशाबन्दी सम्मेलन का आयोजन

नशाबन्दी कार्यकर्त्ताओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन ७,८ नवम्बर १९९२ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में हो रहा है। इस सम्मेलन में भारत भर से नशाबन्दी समर्थक नेता कार्यकर्त्ता भारी संख्या में पधार रहे हैं।

मद्य निषेध जैसे सर्वहितकारी कार्यक्रम महर्षि दयानन्द तथा महात्मा गान्धी के मुख्य उद्देश्य थे। परन्तु भारत को स्वतन्त्र हुए ४५ वर्ष होने पर भी केन्द्र तथा राज्य सरकारें जिस ढंग से नशाबन्दी लागू करने की उपेक्षा कर रही हैं और प्रतिवर्ष शराब के उत्पादन तथा इसकी खपत को अनैतिक राजस्व कमाने के लालच में बढ़ावा दे रही हैं, यह हम सभी के लिए चिन्ता का विषय है। ग्राम पंचायतों द्वारा शराबबन्दी के प्रस्ताव पारित करने पर भी कोई न कोई बहाना करके इन्हें सरकार द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है। सरकार को चिन्ता नहीं है कि शराब के बढ़ते हुए प्रचार तथा प्रसार से भ्रष्टाचार, अनाचार तथा पारिवारिक कलह में वृद्धि हो रही है। शराब की कमाई से जनता का विकास नहीं विनाश हो रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हरयाणा में नशाबन्दी प्रचार किया जा रहा है। शराबबन्दी कार्यक्रम से प्रभावित होकर अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् ने इस बार हरयाणा में नशाबन्दी सम्मेलन करने का आयोजन किया है। ७ नवम्बर को युवाओं की गोष्ठी, ८ नवम्बर को प्रातः महिलाओं की गोष्ठी होगी जिसमें शराब-बन्दी लागू करवाने हेतु विचार-विमर्श करके ठोस कार्यक्रम तैयार किया जावेगा। ८ नवम्बर को प्रातः ११ बजे इसी सम्बन्ध में एक खुला अधिवेशन होगा जिसमें शराबबन्दी परिषद् के नेता जनता को सम्बोधित करेंगे। इस अवसर पर खेल तथा शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर उच्च स्थान प्राप्त करने वाले छात्र तथा छात्राओं को सम्मानित भी किया जावेगा।

सरकार द्वारा शराबबन्दी लागू न किये जाने की स्थिति में शराब-बन्दी के लिए सत्याग्रह के कार्यक्रम पर विचार किया जावेगा।

अतः आप इस कल्याणकारी कार्यक्रम को अपना सहयोग तथा समर्थन देने के लिए अधिक से अधिक संख्या में ८ नवम्बर ९२ को प्रातः ११ बजे रोहतक पधारें।

निवेदक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

रोहतक में श्री सिद्धान्ती जी तथा गुरु विरजानन्द जी की जयन्ती

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक स्थित प० रघुवीरसिंह शास्त्री स्मृति यज्ञशाला में ६ अक्तूबर ९२ को आर्यजगत् के विख्यात विद्वान् एवं वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् प० जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती (पूर्व लोकसभा सदस्य, पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) का जन्मदिवस मनाया गया। स्वामी वेदमुनि जी, मा० वेदप्रकाश, श्री जयपाल तथा श्री हरध्यानसिंह के व्याख्यान तथा भजन हुए।

इसी प्रकार ९ अक्तूबर ९० को यज्ञशाला में महर्षि दयानन्द के गुरु विरजानन्द जी की जयन्ती भी श्रद्धापूर्वक मनाई गई। श्री जयपाल की भजनमण्डली ने गुरु विरजानन्द पर गीत सुनाए। इन दोनों अवसरों पर सभा कार्यालय का स्टाफ भी सम्मिलित हुआ।

केदारसिंह आर्य

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (अलीगढ़)

कन्या गुरुकुल में भारत के लगभग सभी प्रान्तों तथा नेपाल, थाईलैंड प्रभृति विदेशों की लगभग ७०० कन्याएं अध्ययन कर रही हैं। स्थानाभाव के कारण अनेक कन्याएं बरामदे में रह रही हैं। दानी महानुभाव भवन-निर्माण में सहयोग देकर पुण्यलाभ कमावें। गुरुकुल को दिया दान आयकर से मुक्त है।

कन्या गुरुकुल का जन्मदिवस व्यास पूर्णिमा १४ जुलाई सन् १९९२ को सोत्साह मनाया गया। यज्ञ में यजमान श्री ओमप्रकाश जी आर्य, हापुड़ सपत्नीक बने। श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, कुलपति, कन्या गुरुकुल द्वारा कुल ध्वज फहराया गया। श्री ला० भगवत्यप्रसाद जी आर्य हापुड़ ने सरस्वती परिषद् (सभा) की अध्यक्षता की तथा श्री ओमप्रकाश जी आर्य ने मुख्य अतिथि पद को सुशोभित किया। हापुड़ परिवार एवं उनके सहयोग से प्रतिवर्ष विपुल धनराशि गुरुकुल को प्राप्त होती है, जिसके लिए गुरुकुल परिवार उनका हृदय से आभारी है और धन्यवाद देता है।

गुरुकुल जन्मदिवस के अवसर पर मथुरा के एक मुस्लिम परिवार का शुद्धिकरण किया गया। यज्ञवेदी पर पवित्र मन्त्रों के गुंजार में उनके द्वारा यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् उनके नाम परिवर्तन किये गये, जो इस प्रकार है—

(१) श्री अहमद का नाम श्री राजकुमार किया गया। (२) श्रीमती गुड्डी का नाम श्रीमती गीता किया गया। (३) पुत्री रेशमा का नाम कु० रश्मि किया गया। (४) पुत्री सुल्ताना का नाम कु० सुनीति किया गया।

शुद्धिकरण के बाद कु० रश्मि एवं कु० सुनीति का गुरुकुल में प्रवेश कर लिया गया।

श्रावणी पर्व भी गुरुकुल में संस्कृत-दिवस के रूप में सोत्साह मनाया गया। सभा में ब्रह्मचारिणियों के व्याख्यान, भजन, सस्वर वेदपाठ, नाटक आदि विभिन्न कार्यक्रम हुए। श्रावणी से जन्माष्टमी पर्यन्त यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया।

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर यज्ञ, ध्वजारोहण एवं ब्रह्मचारिणियों के देशभक्ति सम्बन्धी विभिन्न कार्यक्रम हुए।

श्रावणी के अवसर पर ब्रह्मचारिणियों की एक टोली आर्यसमाज, बम्बई, काकड़वाडी द्वारा आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ में भाग लेने गई। वहां से गुरुकुल को अच्छा आर्थिक सहयोग प्राप्त होता है, जिसके लिए गुरुकुल उनका अत्यन्त आभारी है तथा हार्दिक धन्यवाद देता है। श्रावणी के अवसर पर ही ब्रह्मचारिणियों की दूसरी टोली सिकन्दराराऊ (अलीगढ) में आयोजित वेदप्रचार सप्ताह में भाग लेने गई तथा पारिवारिक यज्ञों के आयोजन में यज्ञ, भजन, व्याख्यान आदि से जनता को प्रभावित किया। यहां भी प्रायः प्रतिवर्ष ही कन्याएं वेदप्रचारार्थ जाती हैं। वहां की आर्य जनता द्वारा गुरुकुल को सदा सहयोग मिलता है, जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इसके अतिरिक्त हाथरस के प्रसिद्ध दाऊ जी के मेले में आयोजित महिला सम्मेलन में भी कन्याओं ने भाग लिया और अपने विभिन्न कार्यक्रमों से जनता को प्रभावित करके उपहार प्राप्त किये तथा गुरुकुल को आर्थिक सहयोग भी प्राप्त हुआ। गुरुकुल दानदाताओं का हृदय से आभारी है।

मुख्याधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (उ प्र.)

जहां नशे की लत छुड़ाई जाती है

पानीपत, ११ अक्तूबर (निस)। लोगों को खासकर युवकों को नशे की लत से छुटकारा दिलाने के उद्देश्य से केन्द्रीय समाज कल्याण मन्त्रालय ने शेष राज्यों की भांति हरयाणा में भी नशा-मुक्ति केन्द्र खोले हैं। इस समय करनाल, पंचकूला, फरीदाबाद, सिरसा, पानीपत, गुडगांव, जीद, रोहतक तथा हिसार में नशामुक्ति केन्द्रों की स्थापना हो चुकी है।

सोनीपत एक औद्योगिक इलाका है वहां मध्यप्रदेश, बिहार व उत्तरप्रदेश से हजारों मजदूर रोजी कमाते हैं। अपनी थकान दूर करने के लिए श्रमिक किसी न किसी प्रकार का नशा करते हैं। लोगों को नशे की लत से छुटकारा दिलाने के लिए गत वर्ष यहां के रेडक्रास भवन मे नशा-मुक्ति केन्द्र की स्थापना की गई थी। ये केन्द्र नशे की लत से पीडित रोगियों के इलाज में अहम भूमिका निभा रहे हैं। यहां अब तक लगभग २५० नशेड़ी अपना इलाज करवा खुशहाल जीवन जीने योग्य हो चुके हैं। रेडक्रास भवन मे ही कई माह पूर्व नशामुक्ति अस्पताल खोला गया था, जहां बीमार नशेडियों को दाखिल किया जाता है।

नशे से मुक्ति दिलाने के उपायों के बारे में चर्चा करते हुए रेडक्रास पानीपत के एक प्रवक्ता ने बताया कि यहां रोगी से सर्वप्रथम भावात्मक सम्बन्ध जोड़े जाते है। बाद में स्थिति अनुसार केन्द्र के चिकित्सक रोग के लक्षणों के अनुसार उसका इलाज करते है। सारा इलाज नि.शुल्क किया जाता है। दवाइयां भी मुफ्त मिलती हैं। नशे के कारण जिन लोगों की हालत काफी बिगड चुकी है, उन्हे अस्पताल में भर्ती किया जाता है।

केन्द्र मे आए युवकों ने बताया कि कुछ ने बेरोजगारी और कुछ ने पैसे की तगी में नशे की लत का कारण बताया। यहां धूम्रपान तथा हुक्के से ग्रस्त महिलाएं भी भारी मात्रा में आती हैं।

महर्षि दयानन्द के भक्त म० रामस्वरूप का स्वर्गवास

म० रामस्वरूप जी आर्य प्रधान आर्यसमाज राजलूगढ़ी का ८० वर्ष की आयु मे २६ सितम्बर ९२ को स्वर्गवास हो गया। इससे ३ महीने पहले उनके बड़े लडके चन्द्रसिंह का देहान्त हो गया था जो कि एक बड़ा दुखद घटना थी। ६ अक्तूबर ९२ को बुलाकर पं० रतनसिंह आर्य प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से उनकी तेरहवी पर यज्ञ करवाया। आर्यसमाज के एक महारथी योद्धा और सक्रिय कार्यकर्ता चले गये। वह अपने पोते पोतियों को बिठाकर नित्य-प्रति यज्ञ किया करते और आर्यसमाज के हर कार्य में सभा को पूरा सहयोग दिया करते थे और सभा को उदारतापूर्वक दान दिया करते थे। यज्ञ पर उनके दो लड़कों महेन्द्रसिंह और राजवीरसिंह ने यज्ञोपवीत धारण किए। यज्ञ पर सत्तर-अस्सी पुरुष एवं स्त्रियों की उपस्थिति थी। म० रामस्वरूप के परिवार ने सभा को ५०५ रु० दान दिया। यज्ञ पर ईश्वर से प्रार्थना की गई कि उन आत्माओं को शांति दे और परिवार इस कमी को पूरा करे।

आवश्यक सूचना

मान्यवर, सब सन्यासियो, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों तथा वानप्रस्थियो की सेवा मे निवेदन है कि ३०, ३१ अक्तूबर १ नवम्बर १९९२ को अजमेर ऋषि उद्यान मे ऋषि मेले पर वैदिक यति-मण्डल की बैठक होगी। अत निश्चित समय पर पधारकर सहयोग देने की कृपा कीजिये। निवेदक—

उपमन्त्री सोमानन्द वैदिक यतिमण्डल दीनानगर (पंजाब)

आर्यसमाज गांधीनगर गन्नौर का उत्सव

१३, १४, १५ नवम्बर को आर्यसमाज गांधीनगर का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। सभी आर्य बहन भाइयों से प्रार्थना है कि आप अपने परिवार व इष्टमित्रों सहित पधारकर पूरा सहयोग दें व धर्मलाभ उठावें।

सुखवीरसिंह आर्य, मन्त्री

दीपावली

दीवाली के दीप जलेंगे हमनें ज्ञान बढ़ाना है।
दूर अविद्या जग से कर मानव को सुखी बनाना है॥

ज्ञानी जनों की चेरी लक्ष्मी यह सुनने में आया है।
सारे विश्व का धन उसका जिसने ज्ञान-धन पाया है।
लक्ष्मी पूजन का सही तरीका यह सबको समझाना है।
दीवाली के दीप........॥१॥

जिसके पास बुद्धि होती बल उसका बतलाया है।
बुद्धि वालों का जग में शासन होता आया है।
बुद्धि प्राप्त करने को हमें ज्ञान का दीप जलाना है।
दीवाली के दीप........॥२॥

वीरभोग्या वसुन्धरा यह दुनिया ने गाया है।
ज्ञानवीर, रणधीरों ने ही लक्ष्मी का लाभ उठाया है।
जूआ खेलकर सारी रात लक्ष्मी को नहीं भगाया है।
दीवाली के दीप........॥३॥

प्यारे प्यारे नवयुवको बल बुद्धि का प्रकाश करो।
जो टेढी नजर उठाए इधर को उस शत्रु का नाश करो।
दीवाली से इसी शिक्षा को 'प्रभाकर' ने जाना है।
दीवाली के दीप........॥४॥

—कप्तान मातूराम प्रभाकर सभा उपदेशक

भारत के गौरव महर्षि दयानन्द

देव दयानन्द हम पे, कितनी कृपा की तूने।
सोयी थी आर्य जाति, क्षण मे जगाई तूने॥

माने न माने ऐहसां, दुनिया के भोले मानस।
मचती थी त्राहि-त्राहि, चहुंदिशि था फैला तामस॥
विद्युत सा तेज लेकर, अग्नि भडकाई तूने।
सोयी थी आर्य जाति, क्षण में जगाई तूने॥१॥

सरिता-सरोवर गहरे, ऊँचे से पर्वत में भी।
शेर और चीते जैसे, खतरीले जीवों से भी॥
निर्भय हो घूमा पाकर, प्रभु की दुहाई तूने।
सोयी थी आर्य जाति, क्षण में जगाई तूने॥२॥

मुसलमां-इसाइयों का फैला हुआ जाल था।
ब्रिटिश-साम्राज्य यहां, बन बैठा काल था॥
देश-द्रोही शासन की सत्ता हिलाई तूने।
सोयी थी आर्य जाति क्षण मे जगाई तूने॥३॥

याद रहेगा वो दिन, सच्चे शिव की खोज का।
नहीं भूल सकते वो दु.ख, दीपावली के रोज का॥
'जीवन' की कीमत प्यारे, शिवरात्रि को पाई तूने।
सोयी थी आर्य जाति, क्षण मे जगाई तूने॥४॥

रामसुफल शास्त्री विद्यावाचस्पति
आर्यसमाज संगरूर (पंजाब)

रुकिये!

नशीली चीजों से परिवार की, बर्बादी होती है।

जिला भिवानी में शराबबन्दी प्रचार जोरों पर

(निज संवाददाता द्वारा)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्णय के अनुसार जिला भिवानी को 'चालू वर्ष के अन्त तक शराब-रहित' घोषित करने हेतु सफल बनाने के लिए आर्य नेताओं द्वारा शराबबन्दी कार्यक्रम जोरों पर चला रखा है। ग्राम बुढ़ेड़ा, बरात, ओबरा, हसान में श्री हीरानन्द आर्य पूर्व मन्त्री, श्री बलवीरसिह ग्रेवाल पूर्व विधायक, श्री राम अवतार आर्य द्वारा प्रचार किया गया। ग्राम कादमा, बेरला, जेवली में चौ० विजय कुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, चौ० सूबेसिह सभामन्त्री, प्रि० बलबीरसिह सांगवान द्वारा प्रचार किया गया। पं० जयपालसिह व हरध्यान के भजन हुए। दिनांक २२-९-९२ को ग्राम जाटु लुहारी, सुमड़ा खेड़ा, मढ़ाना, सिवाड़ा कुंगड़, पूर में सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी, चौ० बलवीरसिह ग्रेवाल पूर्व विधायक, मा० श्रीकृष्ण ने विचार रखे। प० ईश्वरसिह तूफान के शराबबन्दी पर भजन हुए। दिनाक २३-९-९२ को ग्राम बड़सी, पपोसा, बोहल, रतेरा, नलवा (हिसार) में प्रचार कार्यक्रम हुआ। सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी, चौ० हीरानन्द आर्य पूर्व मन्त्री, चौ० बलवीरसिह ग्रेवाल पूर्व विधायक ने विचार रखे। पं० ईश्वरसिह तूफान के समाज सुधार के भजन हुये।

उपरोक्त सभी गावो में लगभग अपने अनुभव के आधार पर आर्य समाज का इतिहास, आर्यसमाज का देश की आजादी मे योगदान, महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्य, सन् १९८४ से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शराबबन्दी कार्यक्रम की गतिविधिया। अनेक गांवों के उदाहरण देकर जिन गांवों में संघर्ष कर शराब के ठेके बन्द कराए हैं। गांव में शराबबन्दी लागू की है की जानकारी दी। जैसे ग्राम घनाना, बामला, इमलोटा, नलवा, पैंतावास कलां, पपोसा, बालावास, बड़सी आदि गांव में शराबबन्दी बारे विशेष कार्य हुआ है। लोगों में कुछ जागृति आई है। किसानों की लूट, शिक्षा में दोहरी नीति, बिजली के रेट बढाना, पैट्रोल के दाम बढाना, बसो का भाडा बढाना, खाद के भाव बढाना, भ्रष्ट राजनेताओ के काले कारनामे, धन हडपने की होड सरकारें एक साजिस के तहत किसान-मजदूरों को लूट रही हैं। चरित्र दिन-प्रति-दिन गिरता जा रहा है। टेलो पर किसानों को पानो नही मिलता ओर न नलकों पर पोने के लिए पानी समय पर आता है। शराब हर समय सब जगह पर मिलती है। विस्तार से विचार रखे। साथ में यह भी बताया कि आज से ५० वर्ष पहले के नेताओ पर जिनमे महात्मा गांधी, सरदार पटेल, गोविन्द बल्लभ पन्त, लालबहादुर शास्त्री, चौधरी चरणसिह, सर छोटूराम आदि नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप नही लगे। आज के भ्रष्ट राजनेता बुरी तरह डूब चुके हैं भ्रष्टाचार, बेईमानी में अतः आप स्वयं शराब, धूम्रपान, स्मैक, हीरोईन, अफीम, ताश खेलना आदि बुराइयों को छोडकर सरकार एव पूंजीपतियों से अपने हकों की लड़ाई लड़ सको वरना बर्बाद हो जाओगे। चौधरी विजय कुमार ने मुख्यमन्त्री भजनलाल के जमाई की फैक्ट्री का हवाला देकर इसे उनके माथे पर कलंक बताया। श्री हीरानन्द जी ने शराबबन्दी पर नारे लगवाए, अनेक चौधरियो का हवाला देकर शराब से होनेवाली बर्बादी का नक्शा खीचा। सभी गांव में शराबबन्दी प्रचार कार्यक्रम सफल रहा। सभी गावो मे प्रचार से शराबबन्दी लहर चल पड़ी है। बच्चे शराबबन्दी नारे लगाते हैं।

शोक समाचार

श्री दयानन्द पटवारी ग्राम जुआ जिला सोनीपत का ५७ वर्ष की आयु में दिनाक १७ अक्तूबर को देहान्त होगया। वह आर्यसमाज के कार्यों में सदा आर्थिक सहयोग देते रहते थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोकसतप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

केदारसिह आर्य

वर्तमान दुर्गा पूजा, दशहरा, दीपावली आदि से मात्र धन का अपव्यय

ससार के धरातल पर भारत ही एक ऐसा सम्पन्न देश है जहां वर्ष भर में तीन मौसम (जाड़ा, गर्मी, बरसात) आते हैं, प्राचीनकाल में दशहरा पर्व मनाने की परम्परा यह थी कि वर्षा ऋतु में सडकों आदि के पक्की न रहने के कारण आवागमन बाधित रहता था तथा व्यापारी भी अपने कार्य का संचालन ठीक प्रकार से नहीं कर पाते थे। साथ ही सैन्य व्यवस्था मे भी बाधा उत्पन्न होती थी। इसलिए वर्षा ऋतु में वेद कथा (परमात्मा की अमर वाणी) का आयोजन जगह-जगह किया जाता था। इस व्यवस्था से समाज में समानता का वातावरण बनता था।

दुर्गा पूजा तो बाद में प्रचलित हुआ है। इसका सम्बन्ध शक्ति से है। परन्तु इस वर्तमान परिवेश में धर्म के कर्णधार वही लोग हैं जो समाज में आतंक फैलाये हुए हैं। उन्ही के संरक्षण में मूर्तियां बनती हैं तथा उससे उन्ही को लाभ होता है। लाभ इस प्रकार है कि वे जबर-दस्ती जोर दबाव देकर चन्दे की वसूली करते हैं तथा पैसे का दुरुपयोग करते है। विडम्बना यह है कि दुर्गा अर्थात् शक्ति की आराधना करते है और मिट्टी की दुर्गा के हाथो में तमाम प्रकार के अस्त्र-शस्त्र धारण कराते हैं किन्तु अपने हाथ में बीड़ी, सिगरेट व शराब जैसे गर्त में जाने का हथियार लेते है।

देखा यह जाता है कि जहां कही साम्प्रदायिक दगे होते हैं उसमें हमारे मूर्तिपूजक भाई अपने नवीन अस्त्र (बीडी, सिगरेट, शराब) के माध्यम से विजय प्राप्त करते हैं। यदि यह परम्परा न बदली गयी तो आने वाले दिनों में समाज का ढाचा ही कुछ और दिखायी देगा।

शक्ति अर्थात् दुर्गा की उपासना मूर्ति बनाने से ही नहीं होगी। शक्ति की पूजा तो अस्त्र-शस्त्र और सैन्य बल बढाने से होगी। वर्तमान परिवेश में मूर्ति बनाकर धन को पानी में बहाया जाता है। यदि इस पैसे को गरीबों को शिक्षा, सैन्य बल तथा देश की अर्थव्यवस्था में लगाया जाय तो यह अतिशयोक्ति नही होगी कि भारत (आर्यावर्त) शीघ्र ही ससार का सर्वोत्तम साधनसम्पन्न राष्ट्र बन जायेगा। परन्तु इन मूर्ति के पीछे पागल दीवानो को क्या कहा जाय वे तो बस अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं।

एक विशेष बात यह है कि वे मूर्ति की पूजा करने वाले मूर्ति मे ईश्वर का दर्शन करते हैं परन्तु यह ज्ञान होना चाहिए कि परमात्मा सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान् तथा सर्वान्तर्यामी है न कि मूर्ति विशेष मे। ईश्वर का दर्शन तो अध्यात्म व स्वाध्याय मे होता है। हम समस्त मूर्ति बनाने वाले आयोजकों से निवेदन करते है कि वे इस पर विचार करें तथा इस परम्परा को बदलकर भारत को स्वर्ग बनाने मे सहयोग करे।

इस युग के महान् संन्यासी महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने अपनी पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" में मूर्ति से सम्बन्धित विचार प्रकट किये हैं तथा मूर्ति से होनेवाली हानियों को दर्शाये है। हम भी सत्यार्थ प्रकाश के ही प्रकाश में इस प्रकार का लेख लिखने का साहस कर रहे है। अच्छा तो यह होगा कि पूरे ससार के लोग इस प्रकार के सत्य अर्थ के प्रकाश की पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" का अध्ययन करें। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज की स्थापना की है।

दीपावली का सम्बन्ध विशेष रूप से वैश्य वर्ग से सम्बन्धित है किन्तु इसमे भी अब मूर्ति (लक्ष्मी जी) का समावेश हो गया है। दशहरा का पर्व तो क्षत्रिय वर्ण की प्रधानता का सूचक है।

वर्तमान समय में जिस प्रकार से दशहरा, दुर्गा पूजा व दीपावली मनायी जाती है ये नाममात्र भी सस्कृति के विरासत नही है। यह तो सिर्फ धन के अपव्यय का त्यौहार बनकर रह गया है।

आइये हम सभी भारत के नागरिक इस पावन पर्व पर शपथ लें कि इस परम्परा को बदल कर अपनी संस्कृति के अनुरूप काय करेंगे।

दहेज लोभियों को सन्देश

आज हैं सुर्खियों में, करतब तुम्हारे,
किए जो अबला पर जुलम बिना बिचारे।
भोगो अब उसी अबला और बच्चे की आहें,
जो तुमने चुनी अपनी ये क्रूर राहें।
निर्दोषों को तुमने क्यों मारा,
नहीं राखी का त्योहार बिचारा।
न होता वो बच्चा बेसहारा,
तुमने आग की ज्वाला लगाई घर पर।
रक्तधारा बहे कहीं पर,
मौत नचाई अपने घर पर,
कहते खुद जली तेल छिड़क कर,
जब कि मरते-फिरते खुद पैसे के लोभ पर।
तुम्हारे हाथों मरे न कोई,
तुम्हारी छवि से डरे न बहन कोई।
मन से कहता हूं अब न होगी जीत तुम्हारी,
आज जागरूक है समाज की हर नारी।
इन्होंने जड़े अपनी आप काटी,
बच्चों और मा को मौत बांटी।
करे न रहम तुम पर भगवान्,
ऐ आधुनिक रावण और शैतान।

—सतपाल किरोड़ीवाल
नलवा निवासी

महर्षि के बलिदान पर्व पर आर्यों से

बिगड़ी बात बना सकते हो

बिगडी बात बना सकते हो, पाप की लङ्का जला सकते हो।
पदलोलुपता तज दो जो तुम, झगड़े सभी मिटा सकते हो॥
लेखराम का पथ अपनाकर, लुटता देश बचा सकते हो।
काज अधूरा दयानन्द का, पूरा कर दिखला सकते हो॥
तुम चाहो तो आर्यवीरो, दुर्दिन दूर भगा सकते हो।
इसी डगर पर चलते चलते, मुर्दा कौम जिला सकते हो॥
मिशन ऋषि का पूछ रहा क्या, जीवन भेंट चढ़ा सकते हो?
तुम सुधरोगे जग सुधरेगा, जो कुछ बचा बचा सकते हो॥
विजय मिलेगी लेखराम सी, धूनी अगर रमा सकते हो।
वही पुरातन मस्ती लाकर, जो चाहो फिर पा सकते हो॥
सत्य सनातन धर्म वेद की, जय जयकार गुञ्जा सकते हो।
त्याग तपस्या होगी तो फिर श्रद्धा[1] का युग ला सकते हो।
शोध करो कुछ निज जीवन का, फिर तो युग पलटा सकते हो।
दम्भ दर्प जो घूर रहा फिर, इसकी जड़े हिला सकते हो॥
सत्ता की गलियों में खोकर, क्या कर्त्तव्य निभा सकते हो।
देश धर्म हित इस शासन से, क्या तुम कुछ मनवा सकते हो?
सीस तलो पर धरकर ही तुम, बस्ती नई बसा सकते हो॥
[2]दक्षिण में जो दिखलाया था, क्या शौर्य दिखला सकते हो?
[3]राजपाल व [4]श्यामलाल की, क्या घटना दोहरा सकते हो?
[5]परमानन्द और [6]सोमानन्द सम, फिर क्या कष्ट उठा सकते हो?
[7]लौहपुरुष के तुम वंशज हो, भू पर शैल बिछा सकते हो॥
स्मरण करो [8]नारायण का तुम, जो खोया है, पा सकते हो॥
जिज्ञासु अरमान जगाकर, जीवन-शंख बजा सकते हो।
मन के शिव-संकल्पों से तुम, जीवन दीप जला सकते हो॥
निशा निराशा हट जावेगी, बढ़कर मंजिल पा सकते हो।
डूब रही मंझधार बीच जो, नैय्या पार लगा सकते हो।
मन में कुछ सद्भाव जगाकर फिर यह गाना गा सकते हो॥

(1) श्रद्धानन्द जी व श्रद्धाभावना दोनो अभिप्रेत है। (२) हैदराबाद सत्याग्रह (3) महाशय राजपाल जी (4) भाई श्यामलाल (5-6) भाई परमानन्द जी व प० नरेन्द्र जी हैदराबाद (7) लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी (8) भगवान्।

रचयिता—राजेन्द्र जिज्ञासु

आर्यसमाज बिगोपुर जिला महेन्द्रगढ़

प्रधान श्री बृजलाल नम्बरदार, मन्त्री श्री मनोहरलाल आर्य, उपप्रधान महाशय इन्द्राजसिंह, उपमन्त्री बा० फूलसिंह, कोषाध्यक्ष श्री डा० रामसिंह आर्य, प्रचार मन्त्री श्री सूरजभान आर्य, पुरोहित महाशय गोविन्दराम, लेरानिरीक्षक श्री कन्हैयालाल जी।

इस आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव २६, २७ सितम्बर ६२ को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर यज्ञ पर अनेक व्यक्तियों ने शराब तथा धूम्रपान न करने का संकल्प किया। नवयुवकों में नव-चेतना उत्पन्न हुई है।

(पृष्ठ २ का शेष)

अधूरे हैं। सामाजिक और नैतिक मूल्यों को देखते हुए आर्यसमाज ने एक आचार संहिता बनायी थी। इसमें जातिभेद और मनुष्य या स्त्री-पुरुष में असमानता के लिए कोई स्थान नहीं थी। निश्चय ही यह एक लोकतान्त्रिक दृष्टि था।

वैदिक धर्म के व्याख्याता होने के बावजूद स्वामी दयानन्द सरस्वती समाज की भौतिक उन्नति के लिए पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को आवश्यक समझते थे। इसीलिए "सन् १८८६ ई० में दयानन्द एंग्लोवैदिक कॉलेज" की स्थापना हुई और आगे चलकर प्रत्येक महत्त्व-पूर्ण स्थानों पर "दयानन्द स्कूल कॉलेज" खोले गये। हिंदूवादी दृष्टिकोण के बावजूद आर्यसमाज ने राष्ट्रीय विचारधारा को आगे बढाने में आश्चर्यजनक योगदान किया है। कुछ समय तक ब्रिटिश सरकार इसे दबाने के लिए भरपूर चेष्टा करती रही, किन्तु उत्तर-भारत के आचार-विचार, रहन-सहन और साहित्य संस्कृति पर आर्यसमाज का गहरा प्रभाव पड़ा।

पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु युग) में हिन्दी, आलोचना आरम्भ पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ, किन्तु आधुनिक आलोचना का उत्कृष्ट उदाहरण इस काल में नहीं मिलता। भक्ति, धर्म और दर्शन इस क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धति पर विवेचन प्रस्तुत करनेवाली रचनाये भारतेन्दु युगीन लेखकों ने प्रस्तुत नहीं की। उनकी मूल प्रेरणा प्राय: साम्प्रदायिक प्रचार तक ही सीमित रही। सर्वाधिक प्रचार स्वामी दयानन्द सरस्वती के "सत्यार्थ प्रकाश" (१८७५) का हुआ है। गोपालदास कृत "बल्लभाख्यान" (१८७३) कृष्णदास कृत "ज्ञान प्रकाश" (१८७४) हरिदास कृत "परमार्थ चिन्तन विधि" (१८७६) आदि महत्वपूर्ण है।

हिन्दी गद्य साहित्य के विकास क्रम में पुनर्जागरण काल भारतेन्दु युग) के गद्य साहित्य का महत्त्व और मूल्य असाधारण है। [इ]सी युग में हिन्दी प्रदेश में आधुनिक जीवन चेतना का उन्मेष हुआ। [म]ध्यम वर्गीय सामाजिक परिवेश में साहित्य रचना का जो रूप उभरा [उ]समें कहीं-कहीं सामन्तीय संस्कारों का अवशेष लक्षित अवश्य होता है, [कि]न्तु यह टूटने के क्रम में है। रचनागत प्रतिपाद्य की दृष्टि से यह बहुत [ब]ड़ा परिवर्तन था। यह भी उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश शासन व्यवस्था [क]ी दृढ़ता के बावजूद उसके प्रति विरोध का भाव प्रत्येक साहित्यकार [के] मन में विद्यमान है। देश और समाज के हित को भावना से सभी [प्र]भावित हैं। इस प्रकार भारतेन्दु काल का साहित्य व्यापक जागरण [क]ा सन्देश लेकर आया और भाषा के स्वरूप विकास में अभूतपूर्व प्रगति [हु]ई। इस युग में न केवल हिन्दी गद्य का स्वरूप स्थिर हुआ वरन् उसके [शु]द्ध साहित्योपयोगी आदि व्यवहारपयोगी रूपों की पूर्ण प्रतिष्ठा भी [हु]ई। पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन और प्रचार की गति भी तीव्र हुई। [इ]ससे जीवन के विविध क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग की परम्परा आगे [ब]ढ़ी। किसी भी भाषा के इतिहास में इतनी अल्प अवधि में होनेवाली [य]ह प्रगति गर्व की बात मानी जायेगी, यह सब कम नहीं है किन्तु यह [भ]ी ध्यान रखना होगा कि यह सारा मन्थन सुप्त राष्ट्र के जागरण की [भू]मिका मात्र है। आधुनिक हिन्दी साहित्य का यह प्रथम उत्थान था। [इ]स उत्थान मे सबसे मूल्यवान् तत्त्व था—साहित्यकारों का अदम्य [उ]त्साह, उनमें हिन्दी के प्रति, राष्ट्र और समाज के प्रति अटूट [नि]ष्ठा थी।

दिवाली की शाम

कार्तिक शुक्ला अमावस, उन्नीससौ चालीस।
सन् अठारह सौ तिरासी, था अक्तूबर तीस॥
था अक्तूबर तीस, शाम का समय सुहाना।
दीपों का त्यौहार, मनाता रहा जमाना॥
अजमेर नगर में तभी, विदाई ले रहे स्वामी।
अच्छी लीला मुझे दिखाई अन्तरयामी॥

—०—

दीप घरों में जल रहे, प्रकाशमय था वक्त।
मृत्यु दृश्य अजमेर में देख रहे ऋषि भक्त॥
देख रहे ऋषि भक्त मुस्काय रहे हैं।
सभी आर्यजनों को वह समझाय रहे हैं॥
मेरी अस्थियाँ किसी नदी में नहीं बहाना।
काम किसी के आये खेतों में बिखराना॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

विद्वद् गोष्ठी सम्पन्न

स्वामी सर्वानन्द सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा के मार्गदर्शन एवं अध्यक्षता मे आर्य विद्वानों की एक बैठक ६ सितम्बर ९२ को गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। इस बैठक मे सत्यार्थ-प्रकाश के विभिन्न सस्करणों के पाठों का विवेचन पाण्डुलिपियो के संदर्भ मे किया गया। इसमें विद्वानों ने कार्य की अनेक दिशाओ की ओर ध्यान दिलाते हुए सत्यार्थप्रकाश के गौरव को अक्षुण्ण रखने का विचार व्यक्त किया। इस गोष्ठी में स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, दीक्षानन्द सरस्वती, पडित क्षितीश वेदालंकार, पंडित उमाकान्त उपाध्याय कलकत्ता, पडित राजवीर शास्त्री, डा० सुदर्शनदेव शास्त्री, आचार्य वेदव्रत शास्त्री, पंडित विशुद्धानन्द जी, डा० वेदपाल सुनोथ, श्री धर्मवीर विद्यालंकार, डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, आचार्य हरिदेव, प्रो० धर्मवीर आदि ने अपने विचार रखे।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आह्वान पर विद्वानों ने परोपकारिणी सभा अजमेर मे बैठकर अपेक्षित अवशिष्ट कार्य को पूरा करने का सकल्प किया।

सभामन्त्री श्री गजानन्द आर्य ने विद्वानों का समय निकालकर इस पवित्र कार्य हेतु सभा में पधारने का स्वागत एव धन्यवाद ज्ञापन किया।

महर्षि

('नाज' सोनीपती)

(१)

चाहता हूं कि फिर बुलाऊँ मैं,
जानता हू कि तू न आएगा।
याद तेरी सताएगी, लेकिन,
मानता हूं, कि तू न आएगा॥

(२)

यह दिवाली भी आएगी हर साल,
दीप दुनिया में जगमगाएगे।
और सब कुछ रहेगा ज्यो का त्यों,
महर्षि को मगर न पाएँगे॥

(३)

राज़-ए-हस्ती को खुले आम बताने वाला,
वह निडर मर्द, खरी बात सुनाने वाला,
चल दिया छोड के ससार को वह आज के दिन,
अपने पीछे वह, जमाने को लगाने वाला॥

(४)

याद आता है वह जी-जान से जाने वाला,
पजा-ए-कुफ़ से, ईमाँ को छुडाने वाला,
धन्य है, धन्य है, मथुरा का वह बेलाग फकीर,
'मूलशकर' को 'दयानन्द' बनाने वाला॥

यमुनानगर में वेदप्रचार की धूम

आर्यसमाज माडल कालोनी यमुनानगर में ३१ अगस्त से ६ सितंबर १९९२ तक बडी धूमधाम से वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया जिसमे स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के वेद उपदेश और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से श्री चिरंजीलाल जी की प्रसिद्ध भजनमण्डली के भजन हुए। यह कार्यक्रम प्रातः और रात्रि आर्यसमाज मन्दिर में और बाद दोपहर का कार्यक्रम राणा प्रताप पार्क में हुआ जिसमें बहुत ही अधिक सख्या में नर-नारियो एवं बच्चों ने भाग लिया। यह पार्क का कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय रहा। लोगों ने बहुत पसन्द किया और कहा कि ऐसे ही बाहर खुले स्थानों मे विद्वानो के उपदेश होने चाहिएं। इस पार्क के अन्तिम प्रचारवाले दिन सनातनधर्म सभा की ओर से २२१ रुपये और एक सत्यार्थप्रकाश आर्यसमाज को भेट किया गया। इस वेदप्रचार में समाज की ओर से सभा को ७०० रुपया दान दिया गया। इस अवसर पर सध्या हवन की सैकड़ों पुस्तकें निःशुल्क बांटी गईं।

—डा० गेन्दाराम आर्य

(पृष्ठ १ का शेष)

काशी मे पडे तब सभी मतवादी बौखला उठे। महर्षि की इस काशी विजय का वर्णन एक कवि ने यों किया है—

हुआ चमत्कृत विश्व अरे! यह कौन वीरवर संन्यासी।
जिसकी भीषण हुंकारों से कांप उठी मथुरा काशी।
यह किसका गर्जन तर्जन है, कौन उगलता ज्वाला है।
किसकी वाणी में से निकली आज धधकती ज्वाला है॥

महर्षि द्वारा प्रज्वलित इस ज्वाला को अमेरिका के प्रसिद्ध मनीषी—एण्ड्रोजैक्शन एक विशाल अग्नि के रूप में देखते हैं जो महर्षि के हृदय में प्रादुर्भूत हुई थी। कविवर हरिशंकर शर्मा ने ठीक ही लिखा था—

"ओ! टंकारा की ज्वलित ज्योति तू कभी न बुझने वाली।
तुझ से जगमग यह जगतीतल, तुझ से भारत गौरव शाली।
तू दमक रही दुनियाभर में, तू चमक रही रण वन में।
अभ्युदय और निःश्रेयस बन, तू रमी हुई जन जीवन में॥

महर्षि की साधना की अभिव्यक्ति आर्यसमाज की स्थापना के क्रान्तिकारी कदम के रूप में प्रकट हुई। अपने जीवन को तपा-तपाकर जब उस महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की तो उनके हृदय की भावनाओं को किसी कवि ने यों चित्रित किया है—

"जिन्दगी को तपाए दे रहा हूं, स्वर्ण को कुन्दन बनाए दे रहा हूं।
आंधियों को रोशनी मिलती रहेगी, आज वह दीपक जलाए दे रहा हूं॥"

आर्यसमाज के सदस्यों ने महर्षि के पश्चात् देश धर्म की रक्षार्थ कितने बलिदान दिए? इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में जो भूमिका आर्यों ने निभाई वह तो अग्रगण्य रही है।

आर्यसमाज के सम्बन्ध में कभी भारतेन्द्रनाथ जी ने एक कविता लिखी थी—

"युद्ध द्वेष सतप्त धरा को जीवन देगा आर्यसमाज,
मतवाद मे बंटे मनुज को, मिला सकेगा आर्यसमाज।
आर्यसमाज उठा सकता है, आर्यसमाज सजा सकता है,
आर्यसमाज बजा सकता है, टूट गए जो सारे साज॥"

प्रकाश कवि ने भी यों लिखा था—

"होता न आर्यसमाज यहा तो कौन कहो नवजागृति लाता।
कौन निराश्रित दीन दुःखी विधवा व अनाथों की धीर बंधाता।
हम कीचड़ में ही पड़े रहते शुचि हीरा हमें फिर कौन बनाता।
आर्यसमाज के पुत्र हैं हम, और आर्यसमाज हमारी माता॥"

३० अक्तूबर १८८३ को दिवाली के दिन महर्षि के बलिदान की चर्चा करते हुए किसी कवि ने यों लिखा—

"तुम जागे उस दिन भोर हुआ, तुम गए दिवाली थी उस दिन।
शिव तेरस का जागरण मूलशंकर को शिव वरदान बना।
है धन्य उस मूषक को दयानन्द का ज्ञान बना।
अज्ञान अविद्या की रजनी जब छाई काली थी उस दिन।
तुम जागे उस दिन भोर हुआ तुम गए दिवाली थी उस दिन।
सोया था सारा राष्ट्र मगर सौराष्ट्र में लाली थी उस दिन।
तुम जगे भोर हुआ तुम गए दिवाली थी उस दिन॥"

अन्त में महर्षि को श्रद्धाञ्जलि समर्पित है इन शब्दों में—

"तुम गए जहां भी मूक हो गई वागीशों की बोलियां।
सिंहनाद से दहल उठी साधक सिद्धों की टोलियां।
नर्क-तीर से पाखण्डों की ध्वस्त होगई हस्तियां,
तोड फेंक दी लाखों ने अपने कण्ठों की कण्ठियां।
याद कर रही राव कर्ण की वह टूटी तलवार है,
टंकारा मे जन्मे योगी तुम्हें नमस्कार सौ बार है॥"

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं० २१ ८-४१ फोन नं० ७७७२२ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक ४६ २८ अक्तूबर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

७, ८ नवम्बर को रोहतक चलो

'भारत छोड़ो' आन्दोलन की स्वर्ण जयन्ती पर नया संकल्प

शराब छोड़ो

दयानन्द और गांधी के देश में जागृति और जोश की नई लहर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रायोजित
अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का

वार्षिक महासम्मेलन

शनिवार, रविवार ७, ८ नवम्बर १९९२ को ११ बजे से 'दयानन्दमठ' रोहतक के प्रांगण में होगा। देश के कोने-कोने से नशाबन्दी के समर्पित प्रतिनिधि, कार्यकर्ता व नेता पधार रहे हैं।

* शराब व शराबियों के अत्याचारों के विरुद्ध उड़ीसा, मनीपुर, नागालैण्ड, आन्ध्रप्रदेश, तामिलनाडु, हिमाचल प्रदेश, उत्तरकाशी व हरयाणा में महिलाओं ने विद्रोह का झण्डा उठा लिया।
* 'शराब पिलाना संविधान के खिलाफ' हरयाणा, दिल्ली एवं राजस्थान की आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में दावा।
* सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) द्वारा भारत सरकार, सब राज्य सरकारों एवं केन्द्र प्रशासित क्षेत्रों को ४ नवम्बर १९९२ तक जवाब देने का नोटिस।
* नशाबन्दी के मुद्दे को लेकर सब राजनीतिक दलों में हलचल।
* युवा-संगोष्ठी एवं महिला-संगोष्ठी का विशेष आयोजन।

निवेदक—

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद्
नशाबन्दी भवन, नई दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

देश की सबसे बड़ी समस्या नैतिक है ?

—प्रो० शेरसिंह

रोहतक, २४ अक्तूबर—आज देश की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक नहीं अपितु नैतिक। नैतिक मूल्यों मे निरन्तर गिरावट के शराब सबसे बड़ा कारण है और शराबबन्दी के मामले में राजनीतिक दल दोगली नीति अपना रहे हैं।

ये विचार यहां सवाददाताओं से बातचीत करते हुए पूर्व केन्द्रीय मन्त्री और आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने व्यक्त किए। अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि आज देश पर लगभग २.४० लाख करोड़ रुपए कर्जा है पर इससे कही ज्यादा राशि भारतीयों की विदेशों में जमा है, पर ऐसे लोगों को छोड़ने व विदेशों में जमा उनके पैसों को देश में लाने की किसी में हिम्मत नहीं है, क्योंकि किसी भी दल की नीयत साफ नही है।

उन्होंने कहा कि आर्थिक समस्या को अनावश्यक मंत्रियों की फौज को हटा कर भी काफी हद तक दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि जब ४७ से पूर्व के पूरे पंजाब की देखभाल के ६ मंत्री कर सकते हैं और ४७ के बाद ७ तो फिर ६६ में हरयाणा बनने के बाद क्यो नही ? जबकि उस पंजाब की तुलना में तो क्षेत्र भी थोड़ा रह गया। उन्होंने हरयाणा मंत्रिमंडल की संख्या की आलोचना करते हुए कहा कि हालांकि आज २०-२२ मन्त्री तो हर राज्य में आम बात हो गई है पर हरयाणा जैसे छोटे राज्य से राज्य के लिए ३५ मन्त्रियो की फौज बहुत बड़ी है। यही आलम दूसरे दलों के शासित राज्यों का भी है। अत: स्पष्ट है कि राजनीतिक दलों की आर्थिक बचत करने में कोई रुचि नही है।

शराबबन्दी के बारे में राजनीतिक दलों की दोहरी नीति का उल्लेख करते हुए प्रो० शेरसिंह ने कहा कि राजनीतिक दल उस राज्य में तो नशाबन्दी की बात करते हैं जिसमें उनकी सरकार नही होती, लेकिन अपने शासित राज्य में वे इस बारे में खामोशी धारण कर लेते हैं।

उन्होंने कहा कि ऐसा करके विभिन्न राजनीतिक दल लोगों के जीवन से भी खिलवाड कर रहे हैं जो कि संविधान की धारा २.१ 'हर व्यक्ति को जीने का मौलिक अधिकार' की भी अवहेलना कर रहे हैं।

प्रो० सिंह ने कहा कि ४ नवम्बर को राजनीतिक दलों की इस मामले मे पोल खुलेगी। उन्होंने बताया कि उन्होंने केन्द्र सरकार व सभी राज्य सरकारों के विरुद्ध शराबबन्दी व संविधान की धारा ४७ को अनदेखा किए जाने के विरुद्ध एक याचिका दायर की हुई है जिससे उच्चतम न्यायालय ने ४ नवम्बर तक जवाब मागा है। उन्होने कहा कि देखने वाली बात होगी कि विभिन्न राजनीतिक दल क्या जवाब देते हैं।

२७५ पंचायतों द्वारा ठेके बन्द करने के प्रस्ताव

हरयाणा की २७५ गावों की पंचायतों ने प्रस्ताव पारित करके सरकार से आग्रह किया है कि उनके यहां चल रहे शराब के ठेकों को बन्द कर दिया जावे। इनमें से ६१ पचायते भिवानी, रोहतक तथा करनाल जिले की हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बद्ध 'शराबबन्दी समिति' के प्रयासों से यह प्रस्ताव ग्राम पंचायत एक्ट की धारा २६ के तहत पारित किये गये हैं। समिति द्वारा प्रारम्भ किये गये इस अभियान का उद्देश्य हरयाणा को 'शराब मुक्त राज्य घोषित करवाना है। इसके प्रथम चरण मे भिवानी तथा रोहतक जिलों को 'शराब मुक्त' करने का लक्ष्य रखा है।

उल्लेखनीय है कि हरयाणा में शराब की बिक्री में लगातार वृद्धि हो रही है। १९६६ में एक्साइज से सरकार को १२ करोड़ रुपये की प्रतिवर्ष आमदन थी जो १९९१-९२ में बढ़कर ३५३ करोड़ रुपये हो गयी और १९९२-९३ के लिये इसका लक्ष्य ४३२ करोड़ रुपये रखा गया है।

गौरतलब बात तो यह है कि एक ओर जहां प्रदेश के हजारों लोग प्रतिवर्ष शराब से तौबा कर रहे हैं वही सरकार जबरदस्ती ठेके खोलने पर तुली हुई है। समिति के संयोजक रिटायर आई. ए. एस. अधिकारी विजय कुमार के अनुसार गतवर्ष १५० ग्राम पंचायतों ने अपने यहां ठेके बन्द करने का आग्रह सरकार से किया था, लेकिन इनमें से केवल २२ प्रस्तावों की स्वकृति दी गई।

रोचक बात तो यह है कि सरकार द्वारा विभिन्न गावों में २२ ठेके बन्द कर देने की स्वीकृति के बावजूद ठेकों में कमी नहीं और इसके विपरीत २३ अन्य स्थानों पर नये ठेके खोल दिये। गतवर्ष ८२० नीलाम किये गये थे जबकि इस वर्ष इनकी संख्या बढ़कर ८२१ तक पहुंच गई।

सरकार द्वारा ठेके खोलने के सम्बन्ध में की जा रही इस मनमानी के विरोध में शराबबन्दी समिति उच्च न्यायालय की शरण में जाने की तेयारी कर रही है और आगामी दो सप्ताह के भीतर न्यायालय में याचिका दायर कर दी जायेगी। श्री विजय कुमार ने आरोप लगाया है कि सरकार ग्राम पंचायत एक्ट में विद्यमान शक्तियों का दुरुपयोग कर रही है और इसकी आड़ में ग्राम पंचायतों द्वारा पारित प्रस्तावों को निरस्त किया जा रहा है। एक्ट में प्रावधान है कि सरकार उन ग्राम पंचायतों के प्रस्ताव रद्द कर सकती है जहां अवैध शराब का निर्माण या शराब की तस्करी की जा रही हो।

समिति न्यायालय में यह मामला ले जाने पर भी विचार कर रही है कि हरयाणा सरकार द्वारा भारतीय संविधान की धारा ४७ की उल्लघना की जा रही है। धारा ४७ के अन्तर्गत यह प्रावधान है कि सरकार धीरे-धीरे नशीले पदार्थों पर रोक लगायेगी। जबकि इसके विपरीत हरयाणा मे शराब के ठेके खुलवाने के प्रस्ताव पारित करनेवाली ग्राम पंचायतों एवं नगरपालिकाओं को आर्थिक प्रलोभन दिये जा रहे हैं। सरकार की नीति के मुताबिक देसी, अंग्रेजी शरीब तथा बीयर की बोतल पर क्रमश: एक रुपया, दो रुपये तथा २५ पैसे ग्राम पंचायतों एवं पालिकाओं को 'इनाम' दिया जाता है।

यद्यपि सरकार द्वारा इस वर्ष ८२१ ठेकों की नीलामी की गई परन्तु वास्तविकता यह कि प्रदेश में इससे चोगुने ठेके चलाये जा रहे हैं। ठेकेदार को यह अधिकार है कि वह अपने अन्तर्गत क्षेत्र में ३ उप-ठेके खोल सकता है। प्रति एक उप-ठेके पर सरकार को ५० हजार रुपयों की आमदन होती है।

नशाबन्दो समिति द्वारा प्रारम्भ किये गये इस अभियान के तहत 7-8 नवम्बर को रोहतक में अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का अधिवेशन आयोजित किया जा रहा है। समिति ने अपने शराब विरोधी अभियान में महिलाओं की भागेदारी बढ़ाने के लिए ग्राम स्तर पर महिला मंडल बनाकर अभियान चलाने की योजना तैयार की है और अधिवेशन के दौरान महिलाओं के लिए अलग सम्मेलन आयोजित किया जायेगा।

समिति द्वारा प्रारम्भ किये गये इस अभियान को 'बोतल के खिलाफ युद्ध' (बैटल अगेंस्ट दी बोतल) नाम दिया गया है।

नशा—नाश का दूजा नाम
तन-मन-धन तीनों बेकाम

शास्त्र और महापुरुषों की दृष्टि में मद्यपान निषेध

वैदिक साहित्य, मनुस्मृति, शार्ङ्गधर संहिता, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि ग्रन्थों में तथा महापुरुषों की दृष्टि में मद्यपान अत्यन्त अभक्ष्य, हेय, त्याज्य माना गया है। जैसे मनुस्मृति में मद्यपान एक प्रकार का मल है।

सुरा वै मलमन्नाना पाप्मा च मलमुच्यते ।
तस्माद् ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यश्च न सुरा पिबेत् ॥ मनु० ११।९३

सुरा (शराब) अन्न का मल है। मल को पाप कहते हैं। मल-मूत्र जैसे अभक्ष्य पदार्थ हैं (खाने पीने की वस्तु नहीं) वैसे ही ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य आदि सुरा (शराब) रूपी मल को न पीयें। क्योंकि मल-मूत्र को सूकर (सूअर) आदि पशु ही खाते-पीते हैं मनुष्य नहीं। शार्ङ्गधर संहिता में लिखा है—

"बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्य मदकारि तदुच्यते" जो पदार्थ मनुष्य की बुद्धि का लोप (नाश) करते हैं, उनको मदकारी कहते हैं।

याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रायश्चित्त प्रकरण में लिखा है—

पतिलोकं न सा याति ब्राह्मणी या सुरां पिबेत् ।
इहैव सा शुनी गृध्री सूकरी चोपजायते ॥ ५।२५५

अर्थ—जो ब्राह्मणी स्त्री शराब पीवे, वह पुण्य करने पर भी पति लोक को प्राप्त नहीं होती। वह तो इस लोक में मल खानेवाली कुतिया, गिधनी और सूकरी (सूरी) के समान हो जाती है।

वेद में भी शराबी के विषय में कहा है—

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम् ।
ऊधर्न नग्ना जरन्ते ॥ ऋ० ८।२।१२

अर्थात्—शराब को दिल खोलकर पीने वाले दुष्ट लोग आपस में लड़ते हैं और नंगे होकर व्यर्थ बडबड़ाते हैं।

कैकेय देश के राजा अश्वपति ने घोषणा की थी कि—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्नि र्नाविद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुत ॥

अर्थात्—मेरे राज्य में कोई चोर नहीं, कोई कंजूस नहीं और न ही कोई शराबी है। अग्निहोत्र किये बिना कोई भोजन नहीं करता। न कोई मूर्ख है तथा जब कोई व्यभिचारी नहीं तो व्यभिचारिणी कैसे हो सकती है।

बौद्ध मत के प्रवर्त्तक महात्मा बुद्ध ने चेतावनी देते हुए कहा है—
मनुष्यो !
तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना,
वह पराक्रम की परीक्षा है।
तुम तलवार के नीचे सिर देने से भयभीत न होना,
वह बलिदान की कसौटी है।
तुम पर्वत-शिखर से पाताल में कूद पड़ना,
वह तप की साधना है।
तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना,
वह स्वर्ण-परीक्षा है।
पर शराब से सदा भयभीत रहना,
क्योंकि वह पाप और अनाचार की जननी है॥

महात्मा बुद्ध ने और भी कहा है—

जिस राजा के राज्य में सुरादेवी आदर पायेगी, वहां न वनस्पति उपजेगी न अनाज होगा। उसका सर्वनाश हुए बिना न रहेगा।

जैन मत के प्रवर्त्तक महावीर स्वामी ने भी कहा है—

सब बुराइयों की जड़ अविवेक है और अविवेक की जड़ मद्यपान है।

जिन धर्म विवेक में लिखा है—

मद्यपस्य कुतः सत्यं दया मांसाशिनः कुत ।
कामिनश्च कुतो विद्या निर्धनस्य कुत सुखम् ॥

अर्थ—शराबी में सत्य, मांसाहारी में दया, कामार्त में विद्या और निर्धन में सुख कहां ?

सिखों के प्रथम गुरु गुरु नानक जी महाराज के विचार—

माड़ा नशा शराब दा, उतर जाये प्रभात।
नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात॥

सत्यार्थप्रकाश के दसवें समुल्लास में भक्ष्याभक्ष्य का विचार करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि "ये मांसाहारी म्लेच्छ" जिनका शरीर मद्य मांस के परमाणुओं से पूरित है उनके हाथ का छुआ खाना भी नहीं खाना चाहिये।

स्वामी जी ने और कहा है—

जब से गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपान करनेवाले राज्याधिकारी हुए हैं तब से देश में दुःख बढ़ते जाते हैं।

मद्यपान निषेध के विषय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की चेतावनी—

मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। क्योंकि यह उक्त दोनों बुराइयों की जननी नहीं ?

मैं आप से देशवासियों के साथ मिलकर आबकारी राजस्व के अस्तित्व को उखाड़ फेंकने और शराब की दुकानों को खत्म करने में योग देने को कहता हूं। आबकारी से होने वाली आय के पैसे से होने वाले कल्याणकारी कार्यों पर टिप्पणी करते हुए गांधी जी ने कहा था हजारों लोगों के शराबी बनने के स्थान पर मैं भारत को कंगाल देखना पसन्द करूंगा, यदि सुरापान से छुटकारा दिलाने के लिये भारत को अशिक्षित रखना पड़ेगा तो मुझे यह स्वीकार होगा। गांधी जी और आगे कहते हैं—

यदि मैं एक घण्टे के लिये सम्पूर्ण भारत का तानाशाह बन जाऊँ तो मैं पहला काम यह करूँगा कि किसी प्रकार का मुआवजा दिये बिना शराब की सब दुकानों को बन्द करा दूंगा और ताड़ी के तमाम पेड़ों को जड़ से उखाड़कर नष्ट कर दूंगा,

गांधी जी को विश्वास था कि जिस दिन भारत स्वतन्त्र होगा उसी दिन शराब सदा के लिये विदा हो जायेगी। देश का दुर्भाग्य है कि स्वतन्त्र हुए ५० वर्ष होने जा रहे हैं शराब बन्द नहीं हुई।

दादा भाई नौरोजी के विचार—

मैं न मांस खाता हूं, न शराब पीता हूं न मसाले खाता हूं। सदा शुद्ध वायु का सेवन करता हूं यही मेरे स्वस्थ रहने का कारण है।

स्व० प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू के विचार—

सम्पूर्ण मद्य निषेध हमारा ध्येय है। उसे लाने में किसी भी आर्थिक हानि का विचार नहीं करना चाहिये। शराबबन्दी का बड़ा नैतिक महत्त्व है और नैतिक महत्त्व के सामने आर्थिक प्रश्न तुच्छ हो जाता है।

वीर सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर के कटु सत्य उद्गार—

देश की सरकार भारत के नौजवानों को शराब पिलाकर सिनेमा दिखाकर दिन दहाड़े डाका डालती है तथा खुले आम व्यभिचार का प्रचार करती है।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक आशानन्द जी के बच्चों के प्रति दर्द—

बाप शराब पीता है, बच्चे भूखे मरते हैं।

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती दिल्ली ने 'खतरे की घण्टी' नामक पुस्तक में यूं विचार प्रकट किया है—

शराब पीने से शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक पतन होकर समाज का सारा ढांचा बिगड़ जाता है, बड़े-बड़े राष्ट्रों और जातियों का ऐश्वर्य मिट्टी में मिल जाता है। गुप्तचर अपने शत्रु देश के उच्च पदस्थ अधिकारियों से शराब के नशे की अवस्था में रहस्य जान लेने में सफल हो जाते हैं।

महात्मा प्रेमप्रकाश धुरा जी के विचार—

शराब व्यक्ति के धन को ही नहीं, इज्जत को भी भूखी होती है, मानो शराब पीने वाला व्यक्ति अपने परिवार को नरक में धकेल रहा होता है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आंध्र की महिलाएं शराब के विरुद्ध उठ खड़ी हुईं

आध्र प्रदेश की महिलाओ ने आजकल 'अरक' (शराब) की बिक्री को रोकने के लिए इतने प्रभावपूर्ण ढग से अभियान चला रखा है कि प्रदेश को सरकार के लिये यह समस्या खडी हो गई है कि वह क्या करे और क्या न करे। नेल्लोर, खम्मम, इरागल, प्रकासम और अन्य कई जिलों मे महिलाओ ने, जिनमे साधारण गृहिणियां, मेहनत मजदूरी करने वाली और अन्य सभी वर्गों की महिलाएं शामिल हैं, अपने गावों मे शराब की बिक्री बन्द कराने के लिए जबरदस्ती शराब के ठेकों की नीलामी को भी रोका है, अरक बेचने वालों की पिटाई भी की है और अपने पतियो से यह शपथ भी ली है कि वे कभी शराब नही पियेंगे।

जिला नेल्लोर मे कौडापुरम मडल के एक गाव साईपेटा मे महिलाओ ने शराब के ठेकेदार और मडल राजस्व अधिकारी का घेराव करके उनसे यह वचन लिया कि वे उनके गाव मे अरक सप्लाई नही करेंगे। इसके बावजूद जब एक शाम को अरक लेकर एक जीप उनके गाव मे आगई तो लगभग ४० महिलाओ ने उसे घर लिया और जीप को गाव मे निकाल बाहर किया।

इसी तरह से प्रकासम जिले के ओगोल कस्बे में २५ गावो की महिलाए उस जगह धरना मारकर बैठ गई जहां अरक के ठेको की नीलामी हो रही थी। इसके बाद वे तमाम रुकावटे तोडकर नीलामी हाल मे दाखिल हो गईं। पुलिस ने लाठीचार्ज किया और महिलाओ ने भी लाठियो का जवाब लाठियो से दिया। विवश होकर ठेकेदारो और आबकारी विभाग के अधिकारियो को जान बचाकर भागना पड़ा। ये तो केवल दो उदाहरण है, इसी तरह की घटनाए प्रदेश के और जिलो मे भी हुई हैं।

विभिन्न राजनैतिक दलो मे सम्बन्धित सगठन यथा प्रोग्रेसिव ऑर्गनाइजेशन ऑफ वीमेन, आन्ध्रप्रदेश महिला समाख्या, जनविगतन, वेदिका और महिला सगम भी अब इस आदोलन मे शामिल होकर मैदान मे कूद पडे है और विभिन्न राजनैतिक दलो ने अलग से भी महिलाओ की इस माग का समर्थन आरम्भ कर दिया है। पिछले दिनों प्रदेश को राजधानी हैदराबाद मे महिलाओं के विभिन्न सगठनों की ओर मे एक विशाल जलूस भी निकाला गया जिसकी चर्चा विधान सभा मे भी हुई।

नेशनल फ्रट के चेयरमैन श्री रामाराव ने घोषणा की है कि अरक विरोधी आदोलन का झडा सफेद रग का होगा और उस पर महात्मा गाधी का चित्र अकित होगा और वह इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए १८ अक्तूबर से पूरे प्रदेश का दौरा करेंगे।

इस सदर्भ मे एक उल्लेखनीय बात यह है कि अरक की बिक्री से होने वाली आय का सरकारी आय मे बहुत भारी योगदान है। वारगल जैसे जिले मे भी, जहा नक्सलियों के डर से बहुत से ठेकेदारो ने अपनी दुकाने बन्द कर दी हैं, गत वर्ष राजस्व के रूप मे अरक की बिक्री मे २४ करोड रुपये की आमदनी हुई थी। इसके अलावा सरकार के सामने एक बडी समस्या यह भी है कि प्रदेश का ज्यादातर कारोबार प्रभावशाली राजनीतिज्ञो के हाथ मे है जो शराब की बिक्री बद करने के रास्ते मे रुकावटें पैदा कर सकते हैं।

इस मामले मे एक दिलचस्प पहलू यह भी है कि स्वयं प्रदेश के राज्यपाल श्री कृष्णकात ने भी, जो एक प्रमुख गांधीवादी हैं, यह कहा है कि सरकार को अरक की बिक्री से आनेवाले पैसे को राजस्व के रूप में नही दिखाना चाहिए। अग्रेजी दैनिक 'न्यूज टुडे' को दिए गये एक इटरव्यू मे श्री कृष्णकात ने कहा है कि अगर सरकार अरक से होनेवाली आय को राजस्व का साधन मानती है तो वह 'चकले' क्यो नही खोल देती? यही बात काफी समय पहले मैंने उस समय राज्यसभा में भी कही थी जब यह मामला संसद् मे बहस के लिए पेश हुआ था और मेरी यह बात आज भी राज्यसभा के रिकार्ड पर मौजूद है। राष्ट्र-निर्माण के प्रति वचनबद्धता पर जोर देते हुए श्री कृष्णकान्त ने सवाल किया कि क्या अलकोहल और वेश्यावृत्ति की कमाई से भी किसी राष्ट्र का कभी निर्माण हुआ है?

जब श्री कृष्णकान्त से यह पूछा गया कि क्या वर्तमान परिस्थियों में मद्यनिषेध सम्भव है तो श्री कृष्ण कांत ने कहा कि जहां कहीं भी मद्यनिषेध लागू किया गया, वही बाद मे खत्म कर दिया गया—ऐसा ही तामिलनाडू में हुआ और ऐसा ही गुजरात में हुआ। मद्य निषेध के साथ नकली शराब की समस्या उठ खड़ी हुई। दरअसल जिस रास्ते पर हम चले, उसमें शराब एक फैशन बन गई। इसलिये इस सारे मामले को सही परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। वैसा केवल कानून बना देने से मद्य निषेध सम्भव नहीं है, समाज को भी इस अभिशाप का परित्याग करना होगा।

प्रदेश में चल रहे महिला आंदोलन के बारे मे उन्होंने कहा कि महिलाओं ने हमेशा परिवार और पारिवारिक परम्पराओं की रक्षा की है। २१वीं सदी उन्ही की है और उनका यह आदोलन एक नई स्वस्थ सस्कृति के लिए है राजनीतिक दलों को इस आदोलन से लाभ नही उठाना चाहिये और न ही यह आदोलन किसी भी रूप में तारपीडो किया जाना चाहिये।

जब श्री कृष्णकात का ध्यान कुछ स्थानो पर महिलाओं द्वारा अपनाए गए अहिंसा के रास्ते की ओर दिलाया गया तो उन्होने कहा कि यह आदोलन हर हालत मे शान्तिपूर्ण और अहिंसा पर आधारित होना चाहिये।

श्री कृष्णकांत ने यह भी कहा कि यदि आर्थिक विकास का अर्थ सभ्य मानव का विकास नही है तो निश्चित ही विकास की प्रक्रिया मे कोई दोष है। जब भूतपूर्व सोवियत सघ की सत्ता गोर्बाच्योव ने सम्भाली तो उन्होंने महसूस किया कि अनुत्पादकता और समाज में आ रही आलस्य की भावना का एक कारण शराब है। शराब से वस्तुत: कई सभ्यताएं और साम्राज्य बर्बाद हुए हैं।

श्री कृष्ण कांत के अलावा राज्यसभा के सदस्य डाक्टर वाई. शिवाजी ने भी अरक की बिक्री पर पूर्ण पाबंदी लगाई जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए लोगो से अनुरोध किया है कि वह मद्य निषेध के लिए सगठित होकर मैदान में आएं और इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए शातिपूर्ण ढंग से आदोलन चलाए।

इसके अलावा तेलगू भाषा के प्रमुख दनिक 'ईनाडू' ने भी इस आदोलन का समर्थन किया है और इसके पक्ष में प्रथम पृष्ठ पर संपादकीय लिखा है।

बहरहाल सवाल यह पैदा होता है कि जो हालात अरक विरोधी आदोलन के कारण आध्र प्रदेश में बन गये हैं क्या उनके दृष्टिगत प्रदेश मे अरक की बिक्री सचमुच बद हो जाएगी? जवाब है—"कम से कम अभी नही"। पिछले दिनों ही हैदराबाद में गांधी जयन्ती के अवसर पर आयोजित एक समारोह को सम्बोधित करते हुए प्रदेश के उद्योगमन्त्री श्री पी रामचन्द्र रेड्डी ने कहा कि यदि परिस्थितियों ने माग की तो मद्यनिषेध लागू किया जाएगा लेकिन निकट भविष्य में ऐसा कर सकना सम्भव नही है।

श्री रेड्डी ने कहा कि मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि प्रदेश की महिलाओं ने इस मामले को उठाया है। यह ठीक है कि सरकार को अरक के ठेकों की नीलामी से करोड़ो रुपये की आमदनी होती है मगर यह भी सच है कि उससे भी अधिक खर्चा उन रोगियों के इलाज पर हो जाता है जो अरक का शिकार होकर उपचार के लिए अस्पतालों मे आते हैं। समाज सेवी सगठनो को चाहिये कि वे लोगों को अरक का सेवन न करने की प्रेरणा दें।

श्री रेड्डी ने कहा कि मद्य निषेध तुरन्त इसलिये सम्भव नहीं है क्योंकि सरकार को वैकल्पिक आय के साधन और इस काम में लगे हुए लोगों के लिये वैकल्पिक रोजगार तलाश करने होंगे।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यों को सोम सुरा नहीं, सोम रस पिलया तथा विदेशी आक्रान्ता होने से बचाया

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुत ।। ऋग्वेद ९।१।१।

स्वामी विवेकानन्द, प्रभात आश्रम, मेरठ

अंग्रेज राजनीति के इस सूत्र से पूर्णतया अभिज्ञ थे, कि जिस राष्ट्र या समाज को चिरस्थायी दास बनाये रखना हो उस राष्ट्र या समाज की संस्कृति और इतिहास को नष्ट कर देना चाहिये । जिससे वहा के निवासी अपनी संस्कृति तथा अपने पूर्वजों के इतिहास से जीवनी शक्ति लेकर अपने विलुप्त आत्मसम्मान को प्राप्त करने के लिये हमारे विरुद्ध खड़े न हो उठे। इसीलिये उसने भारत का भौगोलिक राज्य प्राप्त करने पर सर्वप्रथम भारतीय इतिहास को विकृत करने का षड्यन्त्र चलाया, जिस षड्यन्त्र के लक्ष्य भारत के अनेक विद्वान् तथा राजनीतिज्ञ हुए। गांधी जी तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे राजनेता भी जो अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन चलाने वाले थे, उनके उस षड्यन्त्र की पकड से बाहर नहीं जा सके। उनके प्रभाव मे आकर जहा गांधी जी ने हरिश्चन्द्र जैसे प्रतापी चक्रवर्ती सम्राट् को ऐतिहासिक होने पर सन्देह व्यक्त किया, वही नेहरू ने आर्यों को भारत के बाहर का आक्रान्ता बताकर अंग्रेजो की दुर्नीति को ही पुष्ट किया। स्वतन्त्र भारत मे आज उनके मानस पुत्रो का तो कथा ही क्या ? जो रामायण तथा महाभारत के महायुद्धो को भी असत्य एव किसी कबीले पर दो भाइयो का सामान्य कलह कहकर श्रीराम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम की ऐतिहासिकता को ही स्वीकार नही कर पा रहे हैं और योगेश्वर श्रीकृष्ण को कल्पित पुरुष कहकर अपनी अज्ञानता को प्रकट कर रहे हैं।

अंग्रेजो की चाल मे यह भी एक बात थी, कि आर्य लोग यज्ञ के अवसर पर सोम नाम की शराब (सुरा) का पान करते थे, जबकि हमारे शास्त्रों तथा वेदो मे सोम एव सुरा के गुणो का स्पष्ट भेद लिखा पाया जाता है। स्वामी दयानन्द ने उनके इस षड्यन्त्र को समझा तथा उसके विरुद्ध उद्घोष किया, उनके परवर्ती अनेको आर्य विद्वानो ने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा तथा कहा। स्वामी समर्पणानन्द जी का तो मुख्य विषय ही यही रहा और वे आजीवन पाश्चात्य तथा उनके अनुवर्ती विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिये ललकारते रहे।

परन्तु अंग्रेजो के इन मानसिक दासों पर कुछ भी प्रभाव नही पडा। अब हर्ष का विषय है कि उत्तर प्रदेश की वर्तमान सरकार ने आर्यो को सोम नामक तथा कथित सुरापान से बचाया जो कि मैकाले की शिष्य मण्डली के द्वारा आर्यो को सैकड़ो वर्षो से पिलायी जाती था। अब इतिहास की छठी कक्षा को पुस्तक में आर्य लोग सोम नाम की औषध का रसपान यज्ञ के अवसर पर करते थे का स्पष्ट उल्लेख कर छात्रो के सम्मुख अध्ययनार्थ प्रस्तुत किया। इसके साथ ही वर्तमान उत्तर प्रदेश सरकार ने भारतीय विद्वानो का यह पक्ष कि आर्य लोगों का मूल निवास स्थान भारतवर्ष ही है, यह पढने के लिए दिया। कम से कम अब भारतीय विद्वानो के पक्ष को भी तो छात्र पढ सकेंगे। इसके लिये हम उत्तर प्रदेश की वर्तमान सरकार को साधुवाद देते हुए यह कह सकते है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने सच्चे रूप मे ऋषि तर्पण किया जिससे प्राचीन ऋषि महर्षियो सहित स्वामी दयानन्द तथा उनके अनुगामी देशभक्त विद्वानो की आत्मा को शान्ति मिलेगी।

अब हम केन्द्र सरकार तथा उसकी अनुगामी अन्य प्रदेश की सरकारो से यह कहना चाहते है कि विदेशियो द्वारा लिखित असत्य इतिहासो को पढाकर देशद्रोह के पाप को न करके यदि तुम्हे राष्ट्र की सुरक्षा तथा समृद्धि अभीष्ट है, तो विदेशियो द्वारा विकृत इतिहास तथा मानसिकता को परिवर्तित करो अन्यथा भारत की भावी सन्तति तुम्हे अच्छा दृष्टि से नही स्मरण करेगी।

मौत ! मौत !! मौत !!!

(मधुरी नाथ)

शराब का जहर

जीवन पद्धति को सरल एव सुखमय बनाने का प्रयास मानव आदिकाल से ही करता चला आरहा है। विज्ञान की उन्नति के अलावा मनोरजन के ढेरों साधन इंसान अपने लिए जुटाता रहा है। इस साधनों में 'सुरा' यानि शराब आदिकाल से ही काफी लोकप्रिय रही है। प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन शासकों के मनोरजन का मुख्य आधार गीत, सगीत एवं सुरा रहे हैं। शनै शनै यह शराब समाज के प्रत्येक वर्ग मे फैलती चली गयी।

सुरापान या शराब के सेवन को समाज घृणित नजरो से ही देखता आया है। इसका प्रमुख कारण है शराब द्वारा उत्पन्न बुराइयां, नशे की सीमित मात्रा द्वारा उत्पन्न नही हो पाती परन्तु जिस क्षण यह सीमाबद्ध नही रह पाती वही से बुराइयो की जड शुरू होती है। समाज के नैतिक एव आर्थिक पतन की नीव नशे से ही रखी जाती है।

सामाजिक सुधार एव नैतिक उन्नति के लिए इस जहर को समाज मे फैलाने मे रोकने के कई उपाय किए गए। शिक्षा के प्रचार-प्रसार नशे से आनेवाले अन्धकारमय भविष्य को उजागर किया गया। विज्ञापनो द्वारा इस जहर को सीमित करने का भरसक प्रयास किया गया। कुछ हद तक इसमे सफलता भी मिली परन्तु इससे फैलते हुए जहर को जड से काटने मे हम असमर्थ रहे हैं। समाज में फैली हुई अशिक्षा इसका एक प्रमुख कारण रहा है।

शराब तैयार होने से पहले कई प्रक्रियाओ द्वारा गुजरती है। घटिया निम्नस्तर की वस्तुओं के प्रयोग से कभी-कभी यह जहरीली भी हो जाती है। यों तो शराब का सेवन ही मृत्यु की तरफ पहला कदम है परन्तु इस प्रकार की जहरीली सुरा का पीना सीधी मृत्यु की कोख मे जाने का साधन है। हमारे देश मे इस प्रकार की घटनाए कई बार घटित हो चुकी है जहा पर जहरीली शराब के सेवन से एक ही साथ कई परिवार तबाह हो गए। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इसके लिए उत्तरदायी कौन है ? नि सदेह शराब को बनाने मे सक्रिय लोग इसके जिम्मेवार है, परन्तु क्या सेवन करने वाले वाकई सहानुभूति के पात्र हैं ? एक तरफ सरकार शराब या नशे को दूर करने के भरसक प्रयास कर रही है, इन प्रयासो मे आर्थिक प्रयत्न भी सम्मिलित है—विज्ञापनो शिक्षा आदि में देश के अर्थ का सक्रिय समावेश रहता है। दूसरी तरफ इन प्रयासो को धराशायी करते हुए ये नशे के आदी लोग न केवल अपने परिवार को बरबादी के आचल में समेट रहे हैं बल्कि देश के प्रगति की ओर बढते कदमों को न केवल रोक रहे हैं बल्कि पीछे भी खींच रहे है। अपने विनाश और राष्ट्र की उन्नति के बाधक ये नशेडी किसी भी तरह सहानुभूति के हकदार नही है।

जब भी जहरीली शराब द्वारा दुर्घटनाये घटित होती हैं, सरकार दया और प्रेम का इजहार करते हुए इस दुर्घटना से ग्रसित परिवारों को आर्थिक सहायता पहुचाती हुई राष्ट्र के कठोर परिश्रम द्वारा संचित धन को दान कर देती है। नि'सदेह ये परिवार दया के पात्र हैं परन्तु जिस प्रकार अपराधी या दोषी के परिवार को किसी भी प्रकार की सहायता (आर्थिक) नही दी जाती उसी प्रकार इस "दुर्घटना" शब्द का प्रयोग किया जा रहा है तथापि वह अपनी बरबादी के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है तथा राष्ट्र की हानि के लिए भी, किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता के हकदार नही हैं।

"लोकतन्त्र" शब्द हमारे देश का काफी चर्चित एव प्रचलित शब्द है। स्वय के लोकतात्रिक राष्ट्र के नागरिक होने का गर्व भी हमे है परन्तु सही मायनो मे यह शब्द केवल चुनावो के भाषणों में प्रयोग करने तक ही सीमित रह गया है। लोकतत्र के नाम पर पुलिसराज, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी इत्यादि ही राष्ट्र के पतन के लिए काफी नही थे जो इस प्रकार शराब का सेवन करनेवालो मे धन बाटकर हम राष्ट्र के तैयार होते हुए कफन मे आखिरी कीले गाड रहे हैं। न्याय की दृष्टि मे यदि देखा जाए तो सुरापान को अपराध साबित करना चाहिए परन्तु यह न होकर, करदाताओं द्वारा सचित, कठोर परिश्रम के धन को सहायता के नाम पर शराब पर कुर्बान कर दिया जाता है।

अभी हाल ही मे, गुजरात के शहर अहमदाबाद में इसी प्रकार की दुर्घटना हुई। जहरीली शराब पीने से कई परिवार एक साथ तबाह हो गए। सरकार ने इस सुरा बनाने में सक्रिय लोगों को दण्ड दिया तथा इन परिवारों को आर्थिक सहायता देने की घोषणा कर दी। इस घटना के तहत कुछ तथ्यों पर रोशनी इस प्रकार डाली जा सकती है।

सर्वप्रथम तो इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि यह घटना कहा पर घटित हुई है। गुजरात यानी कि वह क्षेत्र जहां पर शुष्कता को ध्यान में रखते हुए सरकार ने शराब से वर्जित घोषित किया हुआ है। इस कानून के तहत होने के बावजूद शराब, वह भी जहरीली, का बनना एव इतनी अधिक सख्या द्वारा सेवन किया जाना कानून के ढीलेपन या शासन की अव्यवस्था को ही प्रदर्शित करता है। किसी वर्जित क्षेत्र में इस तरह सुरापान केवल कानून का उल्लंघन है बल्कि यह कहना ज्यादा उचित होगा कि यह एक अपराध है परन्तु दोषी व्यक्तियों को उनके दोष से ही सजा मिल गई, शराब जहरीली होने की वजह से वे मृत्यु की कोख में समा गए। अब प्रश्न उठता है कि क्या तबाह होने से ही वे सहानुभूति के पात्र हैं ? इस बरबादी के जिम्मेदार क्या वे स्वयं नही हैं ? यदि हा तो फिर सहायता का प्रश्न क्यों कर सामने आता है।

कानूनन आत्महत्या एक अपराध है परन्तु इस अपराध के अपराधी को दण्ड नही दिया जा सकता क्योकि मृत्यु स्वय ही उसका दण्ड बन जाती है। क्या आत्महत्या करनेवाले के परिवार को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता दी है ? यदि नही, तो सुरापान से मरनेवालों के प्रति इतनी दया क्यों ? माना जहरीली होने के कारण वे तत्काल काल के ग्रास बन जाते हैं परन्तु क्या शराब का सेवन से ही मृत्यु की तरफ पहला कदम नही।

आर्थिक दृष्टि से भी हम काफी मजबूत नही हैं। इन स्थितियों दया, सहायता या सहानुभूति के सही मायनों को समझा जाए तथा उनका प्रयोग उचित रूप से किया जाए तो निश्चित ही उन्नति के पथ पर हम अग्रसर होते रहेंगे। जरूरत केवल यह है कि हम धन का उचित एव सही मायनों मे प्रयोग करे।

पिछड़े वर्गो के उत्थान, शिक्षा, बेरोजगारी इत्यादि में अर्थ का निवेश नि'सदेह उचित होगा परन्तु दया के नाम पर शराब में डूबे, नशे में स्वय को तबाह करते हुए व्यक्तियों को जो इस तबाही के लिए स्वयं ही जिम्मेदार हैं, समाज के अपराधी हैं, धन देना अन्धकारमय भविष्य का मार्ग ही है। प्रगति की ओर बढ़ते हुए भारत को एक सुदृढ नीव प्रदान करना हमारा पहला कर्तव्य है। नशे से दूर एक स्वस्थ समाज के निर्माण का संकल्प ही भारत के विकास और प्रगति की उज्ज्वल सुबह होगी।

(जनसन्देश से)

(पृष्ठ ३ का शेष)

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का विचार—

जो सरकार शराब से, राजस्व जुटाती है।
वह गरीबी को नही, गरीब को मिटाती है॥

इस प्रकार मानव जाति का सत्यानाश करने वाली वस्तुओं में मदिरा (शराब) का प्रथम स्थान है। इसका सेवन सबसे बड़ा अवगुण है। यह बुद्धि को नष्ट करती है। मस्तिष्क, फेफड़े, हृदय, यकृत् और वृक्कों गुर्दो को आघात पहुंचाती है।

शास्त्रकार, महापुरुषों ने मद्यपान को त्याज्य बताकर सुपथ की ओर प्रेरित किया, आशा है भावी पीढ़ी सद्गुण को अपनायेगी।

ब्र० नन्दकिशोर एम ए. विद्यावाचस्पति
वेद मन्दिर ज्वालापुर (हरिद्वार)

सब पापों और बुराइयों की जननी शराब

(डा० मनोहरलाल आर्य कैथल)

इस अंगूर की बेटी ने जग में आफत मचा रखी है।
धन्यवाद प्रभु का कि अंगूर के बेटा न हुआ।।

यह तो बहुत ही पुरानी कहावत है बेटे के बजाये और कई बेटियां विस्की, रम, ब्रांडी और बियर आदि पैदा हो गई जिन्होंने सारे विश्व को अपने घेरे में ले लिया। किसी ने सच कहा है—"शराब खाना खराब" जिस घर में इस शराब का प्रवेश होगया उस घर को किसी हद तक तबाही के कगार तक पहुंचा दिया। पहले यह कहा जाता था कि पिछड़ी हुई जातियों में शराब का ज्यादा प्रवेश है पर अब सभ्य लोग ही इस बुरी आदत का शिकार हो रहे हैं और,गरीब मजदूर और किसान की तो बात ही क्या है, जिसको आदत पड गई चाहे उसके परिवार का गुजारा चले न चले उसने तो अवश्य ही पीनी है।

आज प्राय: हम देखते है कि शराब का प्रयोग तो समाज का एक अग ही बनता जा रहा है। शराब के नाम से प्रतीत होता है कि यह फसाद और तबा की जड है, शर+आब=जिसका अर्थ है शरारती पानी, कितने दुख की बात है कि जो वस्तु अपने नाम द्वारा ही पुकार-पुकार कह रही है कि मैं झगड़े को पैदा करती हूं उसे ही मनुष्य बड़े चाव और गर्व से पीता है तो इसे दुर्भाग्य ही कहा जायेगा। इस शराब ने न जाने कितने राज्य धराशाही कर दिये और कितने कुलों का नाश कर दिया। देश पिता महात्मा गाधी यह कहा करते थे—कि "यदि भारत का राज्य एक घण्टे के लिए मेरे हाथ में आजाये तो सबसे पहला काम मैं यह करूंगा कि शराब की सब दुकानों और कारखानों को बगैर कोई मुआवजा दिए बन्द करवा दूंगा और ताड़ी के सब पेडों को जड से खुदवा दूंगा।"

आगे चलकर महात्मा जी ने फिर कहा है कि "मद्यपान की आदत व्यक्ति की आत्मा को भ्रष्ट कर देती है तथा उसे ऐसा जगली जानवर बनने की ओर उन्मुख करती है, जो पत्नी, माता और बहिन के बीच अन्तर करने में असमर्थ होता है" पर उन्ही बापू जी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता का संग्राम जीतनेवाली कांग्रेस ने शासन सम्भालते ही बापू के स्वप्नों को चूर-चूर करके देश में शराब की नदियां बहा दीं—परिणाम सामने है। आज भारत का युवक मद्य, मांस तथा सिनेमा का रसिया बनता जा रहा है और,देश में जितने 'घोटाले हो रहे हैं यह सब बुनियादी तौर पर शराब संस्कृति का ही परिणाम है और इस शराब के कारण स्थिति इतनी भयानक होती जा रही है कि परिणाम के बारे में सोचने मात्र से ही शरीर में कंपकंपी उत्पन्न होने लगती है। प्राय: सब राज्यों ने स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मादक द्रव्यों एवं औषधियों के सेवन को निषिद्ध करनेवाले विधानों को पारित किया हुआ है, फिर भी मद्यपान की बुराई दूर नहीं हुई। इसके विपरीत यह निरन्तर बढ़ोतरी पर ही है, इधर हरयाणा ने तो इसको प्रोत्साहन देने के लिए जगह-जगह शराब के ठेके खोलकर, पंचायतों और नगर पालिकाओं को अपने फण्ड बढ़ाने के लिए १ और २ रुपये प्रति बोतल बिक्री पर कमीशन मजूर कर रखा है। रोक लगाना तो दूर की बात सामान्यतया इस प्रकार के तर्क दिये जाते हैं, "कि यदि सरकार पूर्ण मद्यनिषेध लागू करती है तो इससे राजस्व विभाग को राजस्व की हानि झेलनी पड़ेगी और इसके साथ ही लोग अवैध शराब की शरण में चले जायेंगे और एक नया अपराध शुरू हो जायेगा।

यह तो सरकारों के एक निराधार तर्क की बातें हैं, गुजरात एक ऐसा राज्य है जहां पूर्ण मद्यनिषेध लागू है पर गुजरात ने यह सिद्ध कर दिया है कि मद्यनिषेध के कारण राजस्व की हानि का बहाना केवल एक मनगढ़न्त बात है। गुजरात सरकार की घोषणा है कि वास्तव में शराबबन्दी लागू करने के बाद गुजरात राज्य आर्थिक रूप से कहीं अधिक सक्षम बन चुका है। यदि सरकारे चाहें तो अपने फालतू खर्च घटा कर आय के दूसरे साधन जुटाकर इस बुराई से जनता को छुटकारा दिलाया जा सकता है और राजस्व के संतुलन को भी ठीक रखा जा सकता है। आम लोगों की यह धारणा है कि शराब को यदि खुराक के तौर पर इस्तेमाल किया जाये तो शरीर में एक खासी ताकत पैदा करती है पर याद रखिये कि शराब का बडा भाग तो अलकोहल है जो कभी भी मनुष्य की खुराक का हिस्सा नही बन सकती। यदि शराब प्रयोग करके कुछ आरजी ताकत महसूस भी होती है तो वह सहज-सहज आदत पड़ जाने से हानिकारक नशे मे बदलने लगती है। अलकोहल में कुछ कैलरीज तो होती हैं पर विटामिन्ज, प्रोटीन आदि मुफीद तत्त्व जो कि हमें अनाज और दूसरे खाद्य पदार्थों से मिलते हैं,वे बिलकुल नही होते। शराब ताकत तो क्या देगी बस यह तो एक घोडे को चाबुक लगाकर उकसाने वाली बात है।

अन्त मे यही कहना पड़ेगा कि शराब का फायदा तो कुछ भी नही पर इसके प्रयोग से हानि ही हानि है। शारीरिक और मानसिक सन्तुलन बिगड जाता है। मनुष्य अच्छाई-बुराई और पाप-पुण्य में तमीज ही नही कर सकता और स्मरणशक्ति बिलकुल हीन हो जाती है, है, शारीरिक तौर पर भी बहुत ही हीनता महसूस करने लगता है और शरीर के सारे अग ढीले पडने लगते हैं, शरीर मे खास किसम की कमजोरी आने लगती है और यही कमजोरी ही उसको इस बुरी आदत की ओर धकेलती है और एक चक्र मे पड जाता है और अपने जीवन को जीर्ण बना देता है। आखिर मे अलकोहल की शरीर मे ज्यादा मात्रा जाने से कई किस्म की खतरनाक बीमारिया पैदा हो जाती हैं। पाचन-शक्ति खराब होने से अन्तड़ियों और जिगर की सोजिश, पीलिया, जिगर का कैंसर, दिल का धड़कना और दिमाग पर बुरा असर होने से मिरगी, लकवा, फालिज आदि बीमारियों का शिकार हो जाता है। खुद दुखी होता है और सारे परिवार को दुःखी करता है। प्रभु ने हमें बुद्धि प्रदान की है। हम विचार करें कि संसार भर के सत महात्माओं के कितने कथन और उपदेश हमारे सामने हैं जिन्होंने हर लिहाज से इस शराब की भर्त्सना की है तो उन उपदेशों पर अमल करके अपनी बुराई-भलाई को सोच सकते हैं। इस समय सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारी अपनी सरकार पर आती है पर हमारे नेताओं ने भी कभी सोचने का कष्ट ही नही किया वरना हमारे पूर्वज नेताओं ने तो अपने-अपने समय में इस बुरी आदत से राष्ट्र को बचाने की कोशिशे की पर सफलता नही मिली।

गाधी जी ने इसको बडा पाप माना है और यहां तक कहा कि नशाबन्दी लागू करने के लिये शिक्षा और रक्षा पर होने वाला खर्च कम करना कही अच्छा होगा। पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा मद्य निषेध पर विचार करते समय आर्थिक पहलू महत्त्वपूर्ण नही है, एक अच्छी चीज किसी भी कीमत पर की जानी चाहिये।

चौ० चरणसिह मदिरा को अनेक बीमारियों और बुराइयों की जड मानते थे। श्री मोरारजी देसाई ने पूर्ण मद्य निषेध लागू करने का वचन राष्ट्र को दिया पर क्या करे हमारी सरकार इस मामले में बिल्कुल कानों मे उगलियां दबाये बैठी है। अब तो जनता को स्वयं ही सघर्ष करके इस बुराई से पीछा छुड़ाना पड़ेगा। ❀

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा का प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन १९, २० सितम्बर को आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना में सम्पन्न

(१) सम्मेलन के पहले दिन १९ ता० को हरयाणा के विभिन्न नगरों से आये आर्य वीरों तथा नरवाना नगरनिवासियों ने तीन किलो मीटर लम्बी एक भव्य शोभा यात्रा निकालकर अपने संगठन तथा एकता का परिचय दिया। शोभा यात्रा के दौरान वैदिक धर्म तथा समाज सुधार के नारे गूंज रहे थे। बीच-बीच में उत्साही नव-युवकों ने अपने लाठी, तलवार तथा भालों के करतब भी दिखाये।

(२) रात्रि को ८½ से ११ बजे तक आर्यवीर सम्मेलन हुआ। इसमे अध्यक्ष आचार्य देवव्रत जी ने आर्यवीरों को अपना जीवन उत्तम एवं अनुकरणीय बनाने की प्रेरणा दी। सम्मेलन के संयोजक आर्यवीर दल हरयाणा के महामन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य थे। आर्य वीर दल हरयाणा के संचालक श्री उमेदसिंह शर्मा ने आर्य वीरों को समाज तथा देश में नई चेतना पैदा करने का आह्वान किया। कन्या गुरुकुल खरल की आचार्या सुश्री दर्शना ने सामाजिक बुराइयों की ओर ध्यान आकृष्ट किया।

(३) २० सितम्बर को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ। इसका संयोजन श्री अजीतकुमार आर्य ने किया। इसकी अध्यक्षता स्व० रत्नदेव अधिष्ठाता—आर्यवीर दल हरयाणा ने की। सम्मेलन का शुभारम्भ करते हुए गुरुकुल झज्जर के व्यवस्थापक स्वा० ओमानन्द जी ने कहा कि आर्यसमाज ने बलिदानों की परम्परा कायम करके अपना इतिहास बनाया था। स्वा० श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, ला० लाजपतराय, पं० गुरुदत्त तथा महात्मा हंसराज के बाद हमने कितने त्यागी एवं बलिदानी पैदा किए हैं? आज यदि देश को बचाना है तो आर्यवीरों को त्याग एवं बलिदान की भावना अपनानी होगी।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वा० आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि कश्मीर की समस्या बड़ी विकट हो चुकी है। इसका एकमात्र हल है कि कश्मीर को १० वर्ष के लिये सेना के हवाले कर दिया जाए।

इसी सम्मेलन में भाग लेते हुए हरयाणा के विज्ञान एवं तकनीकी राज्यमन्त्री डा० रामप्रकाश ने आर्यसमाज तथा आर्यवीरों को एक निश्चय लेकर आगे बढ़ने को कहा। समाज में शराबबन्दी पर जोर देते हुए उन्होंने समाज के गरीबों तथा पिछड़ों को साथ लेकर चलने के लिए कहा।

श्री बच्चनसिंह आर्य कृषि राज्यमन्त्री हरयाणा ने इस अवसर पर कहा कि हमें विधानसभा तथा लोकसभा में अधिक से अधिक आर्यवीरों को भेजना चाहिये ताकि हम दृढ़ता से समाजसुधार तथा आर्यसमाज की बात कर सकें। बिना प्रदर्शन के अच्छी बात भी कोई नहीं सुनता।

इस अवसर पर राष्ट्रभाषा के महत्व को बताते हुए दयालसिंह कालेज, करनाल के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य ने कहा कि आजादी के ४५ वर्ष बाद भी हिन्दी को स्थापित नहीं होने दिया गया है। अंग्रेजी सब जगह हावी हो रही है। शिक्षा में, संघलोक सेवा आयोग में अंग्रेजी का बोलबाला है। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों को खत्म किया जाए ताकि शिक्षा में समानता आ सके। कालेजों में १०+२ कक्षाओं में हिन्दी (कोर) के चार पीरियड दिए जाते हैं जबकि अंग्रेजी (कोर) को नौ पीरियड प्रति सप्ताह दिये जाते हैं। इसी प्रकार स्नातकीय कक्षाओं मे बी.ए. तक हिन्दी (अनिवार्य) के प्रति सप्ताह चार पीरियड दिए जाते हैं जबकि अंग्रेजी अनिवार्य को प्रति सप्ताह दस-दस पीरियड दिए जाते हैं। हिन्दी के प्रति सरकार को इस भेदभाव को खत्म करना चाहिए।

महासम्मेलन का समापन करते हुए संचालक उमेदसिंह शर्मा ने समाज सुधार तथा राष्ट्रनिर्माण के पवित्र कार्य मे सबको सहयोग देने की प्रार्थना की। उन्होने कहा कि सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा वर्ष १९९२-९३ मे मेवात मडल मे नई जागृति तथा भाईचारे की भावना पैदा करने के लिए निकट भविष्य मे कुछ कार्यक्रम प्रस्तुत करने जा रहा है।

गैस से गैस की बीमारी

१. क्या जमाना आ गया है कि घर-घर में गैस हो गई है। अब लकड़ी से चूल्हे पर भोजन बनाना तो हीनता समझी जाती है। जिनके घर में चूल्हा जलता है वो एक प्रकार से यज्ञ करते हैं।

२. मैं जहां भी जाता हू, प्रायः लोग शिकायत करते हैं। वैद्य जी पेट में गैस बनती है। मैं हँसकर कहता हूँ, यह तो बहुत मँहगी है, मुश्किल से मिलती है। दो तीन सिलेंडर भरकर रख लो। वो कहते हैं, मजाक मत करो, कोई इलाज बताओ।

३. मैं पूछता हूँ आपके घर में भोजन गैस पर बनता है या चूल्हा जलता है। वह बड़ी सभ्यता से कहता है वैद्य जी, आपकी दया से एक नहीं, दो-दो गैस हैं। अब चूल्हा जलाना कौन पसन्द करता है।

४. मैंने कहा, कभी आपने रसोई में जाकर देखा है कि गैस पर रोटियां (फुलके) किस प्रकार बनती हैं। वह कहता है, हमारे घर में सब बहू-बेटियां समझदार पढ़ी-लिखी हैं। बी० ए० पास से कम कोई नहीं है फिर हमारी रसोई में घुसने की क्या आवश्यकता है।

५. मैंने कहा, कभी चैक करना, आपके घर में गैस पर जिस ढंग से फुलके बनते हैं, मैं जानता हूँ। जब तक गैस की नंगी लौ पर फुलाए गये फुलकों को खाते रहोगे तब तक गैस ही नहीं, आपके पेट में कुछ और भी बन सकता है। एक व्यक्ति बोला, आपकी बात हमारी समझ में नहीं आई।

६. मैंने कहा, आपके घर में जब महिलाएं रोटियां बनाती हैं तब देखना, वो गैस के एक बर्नर पर रोटी पकाती हैं और दूसरे बर्नर की नंगी लौ पर रोटी सेंकने से खराब हो जाती है। रोटी का स्वाद (मिठास) खत्म हो जाता है, उसमें पैट्रोल के गैस की दुर्गन्ध भर जाती है। यह रोटी पेट में जाकर शीघ्र हजम नहीं होती, सड़ती है और गैस पैदा करती है। मैंने यह हालत उनके घर में देखी जो डाक्टर बने बैठे हैं। डाक्टर साहब स्वयं गैस का रोगी है। पेट बाहर निकल रहा है गैस के कारण। यह गैस की बीमारी घर में पैदा हो गई है। इसका इलाज मेरे पास नहीं है।

७. पत्थर के कोयले भी जलते समय दुर्गन्ध छोड़ते हैं। इन पर रोटी या मक्का रखकर सेंकना भी हानिकारक है।

देवराज आर्य (वैद्य विशारद)
आदर्शनगर-डी०, बल्लभगढ

(पृष्ठ ४ का शेष)

हम इस सदर्भ मे केवल इतना ही लिखना चाहते हैं कि राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी ने एकबार यह कहा था कि अगर भारत का शासन एक घन्टे के लिये भी उनके हाथों में आ जाए तो वह सबसे पहला काम शराब की तमाम फैक्टरियों और दुकानों को बगैर मुआविज़ा दिये बन्द करा देने और ताड़ी के तमाम पेड़ों को कटवा डालने का करेंगे। इतना ही नहीं उन्होंने मद्य निषेध को अपने कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया था और अंग्रेज के राज में ठेके बन्द करवाने के लिए बाकायदा धरने मारे जाते थे। मेरी पूजनीया माता जी स्वयं धरना मारते हुए उस समय गिरफ्तार हुई थी, जब मैं एक साल का था और जब उन्हें एक साल को कैद हुई तो मैं भी उनके साथ जेल गया था। बापू शराब की कमाई की तुलना वेश्या की कमाई से किया करते थे मगर उनके नामलेवा शासकों ने शराब की नदियां ही बहा दी हैं।

श्री कृष्णकात की यह बात निःसंदेह विचारणीय है कि अलकोहल और वेश्यावृत्ति की कमाई से कभी किसी राष्ट्र का निर्माण नहीं हुआ करता बल्कि शराब की वजह से कई सभ्यताए और साम्राज्य तबाह और बर्बाद ही हुए हैं।

हम समझते हैं कि केवल आन्ध्र मे ही नहीं समूचे भारत में मद्य निषेध लागू किये जाने के लिये ऐसे ही एक शांतिपूर्ण आंदोलन की जरूरत है—सरकार जितनी जल्दी वैकल्पिक आय के साधन खोज कर इस अभिशाप से इस देश को मुक्ति दिला दे उतना ही अच्छा है अन्यथा जिस तेजी के साथ यह 'ज़हर' समाज को अपने प्रभाव में ले रहा है, उसका परिणाम वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को तबाही और बर्बादी के अलावा और कुछ हो नहीं सकता। —विजय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK-४६ ६, ०८, ९३, ०६३

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष १९ अंक ४७ ५ नवम्बर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड

नशाबन्दी अंक

शराब एक गम्भीर समस्या

(श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त, संयोजक शराबबन्दी अभियान हरयाणा)

शराब अपनी लत के शिकार लोगों के सामाजिक, आर्थिक व नैतिक कल्याण को जड़ से खोद देती है। देश की आजादी के बाद इस जहरीले पदार्थ का प्रचलन इस कदर बढ़ गया है कि इसने हम सबको जीवन के एक खतरनाक मोड़ पर ला खड़ा किया है। संसार के हर धर्म व धर्मियों तथा विभूतियों ने शराब से खबरदार किया है लेकिन हमने उनकी इस चेतावनी को अनसुना कर दिया। केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों की एकदम गलत व जनविरोधी नीतियों ने आज शराब को घर-घर पहुंचा दिया है। यह जहां गई वहीं बरबादी की। जो घर व परिवार पहले सुव्यवस्थित एवं सुखदायक थे, वहां शराब ने आकर इस शान्तिदायक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करके रख दिया। इस कलह तथा अशान्ति के वातावरण में कोई गृहस्थी कैसे फल-फूल सकती है? महात्मा गांधी ने तो यहां तक कहा था कि शराबरूपी लाल पानी में जा पड़ना धधकती भट्टी या बाढ़ में जा पड़ने से भी ज्यादा खतरनाक है। भट्टी या बाढ़ तो केवल शरीर का ही नाश करती है, लेकिन शराब तो शरीर व आत्मा दोनों का नाश कर डालती है। इतिहास के कितने ही प्रमाण हैं कि इस बुराई के कारण कई साम्राज्य मिट्टी में मिल गये हैं। वह पराक्रमी जाति, जिसमें श्रीकृष्ण ने जन्म लिया था, इसी बुराई के कारण नष्ट हो गई। फिर आम आदमी की तो औकात ही क्या है? बुद्धि, शरीररूपी प्रजा की राजा होती है तथा स्वामी दयानन्द ने कहा था कि शराब बुद्धि का नाश करती है। जब बुद्धि ही न रहेगी तो बाकी बचेगा क्या?

हरयाणा राज्य भी शराबखोरी में किसी दूसरे से पीछे नहीं। जिस धरती पर श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता का अमर सन्देश दिया, वहां पर आज शराब की बाढ़-सी आगई है। आज इस राज्य में शराब के ठेकों की भरमार है तथा सरकार को अधिक से अधिक शराब बेचकर इससे अनैतिक आय बटोरने की पड़ी है। वर्तमान मुख्यमन्त्री के दामाद ने हिसार में शराब का कारखाना लगाया हुआ है जिसके लिए श्री भजनलाल ने अपने उच्चपद का सरासर दुरुपयोग किया। बात यहीं नहीं रुकी, अब हरयाणा सरकार ने अंग्रेजी शराब बनाने के लिए एक और डिस्टीलरी लगाने का मन बना लिया है। सरकार को इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं कि उसकी इस खतरनाक नीति से हरयाणा के लाखों परिवार उजड़ रहे हैं। यदि लोगों का सर्वनाश करके, विकास के नाम पर कुछ योजनायें पूरी भी कर ली जाती हैं तो इनका लाभ उठाने के लिये पीछे कौन बचेगा? यह तो विकास के नाम पर विनाश किया जा रहा है। गांधी की नामलेवा सरकार, अपने ही लोगों (जिन्होंने उसे सत्ता सौंपी है) को शराब पिलाकर पागल बना रही है। सरकार द्वारा शराब को लगातार बढ़ावा दिये जाने से तो ऐसा लगता है कि वह जनसाधारण के विरुद्ध एक भयंकर षड्यन्त्र में लगी है। 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन की आत्मा तो स्वयं महात्मा गांधी थे जिन्होंने शराबबन्दी को स्वतन्त्रता आन्दोलन का एक अभिन्न एवं महत्त्वपूर्ण अंग माना था और उनकी कल्पना थी कि आजाद भारत में शराब जैसे खतरनाक पदार्थ के लिए कोई जगह नहीं होगी। परन्तु आज स्थिति इसके एकदम उलट है। आज तो सरकार तथा लोग, दोनों ही शराब की गुलामी में जकड़े हैं। जो आबकारी नीति हरयाणा सरकार द्वारा अपनाई जा रही है उससे शराबखोरी को कम करने के बजाय उल्टे इस को बढावा मिल रहा है तथा भारतीय संविधान की धारा 47 का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन किया जा रहा है जिसमें शराब तथा अन्य नशीले पदार्थों पर पाबन्दी लगाने की बात कही गई है।

इस भयंकरतम स्थिति को भांपते हुए ही आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा इस प्रदेश को पूर्ण रूप से शराब मुक्त किए जाने का बीड़ा उठाया गया है। सभा द्वारा पहले भिवानी जिला को इस कल्याणकारी कार्यक्रम के लिए अपनाया गया। शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं ने जिला के गांव-गाव मे जाकर जन सम्पर्क अभियान चलाया तथा लोगों को शराबखोरी से हो रही बर्बादी से अवगत कराया। इस अभियान में सभा के उपदेशकों एवं भजनोपदेशों की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण रही। जनसाधारण ने खूब अनुभव किया कि शराब की बढती हुई प्रवृत्ति ने उन्हें कहीं का नहीं छोड़ा और यह इसी का परिणाम था कि जिला भिवानी की उन सभी ग्राम पंचायतों ने, शराब के ठेके बन्द किये जाने के लिये प्रस्ताव पास किये, जहां ये ठेके इस समय चल रहे हैं। अनेक ग्रामों ने अपने स्तर पर शराबबन्दी लागू करने बारे निर्णय लेकर इन्हें सख्ती से लागू करना शुरू किया। गांधी एवं शास्त्री जयन्ती के सुअवसर पर, गत २ अक्तूबर को भिवानी जिला मुख्यालय पर हजारों नर नारियों ने विशाल शराब-बन्दी जलूस निकालकर, इस जिला को शराबमुक्त घोषित किया जाने हेतु, हरयाणा सरकार को एक विस्तृत ज्ञापन दिया। इसी प्रयास की कड़ी में, सभा के अनेक कार्यकर्त्ताओं द्वारा, हरयाणा के विभिन्न जिलों में जाकर, शराब की दुकानों को बन्द करने बारे, ग्राम पंचायतों को समझाकर, उनसे आवश्यक प्रस्ताव पा[illegible] इन सब प्रस्तावों की संख्या ३०० से ऊपर है तथा इनक[illegible] हरयाणा सरकार के आबकारी विभाग को ३१-१०-९२ तक भेजी चुकी हैं। अब सरकार की यह कुचाल है कि जिला प्रशासन से इन पंचायतों पर दबाव डलवाकर, इनसे ये प्रस्ताव उलटवाये जायें। ग्राम पंचायतों को यदि भावी पीढ़ी के भविष्य की जरा भी चिन्ता है तो उन्हें ऐसे किसी भी दबाव में आकर, शराब की दुकानों को बन्द करने हेतु पास किये गये इन प्रस्तावों को वापिस नहीं लेना चाहिये। यदि हरयाणा सरकार को पंचायतीराजव्यवस्था में ग्राम पंचायतों की एक स्वस्थ भूमिका का जरा भी ध्यान है तो उसे, इन प्रस्तावों को उलटवाने या किसी न किसी बहाने इन्हें अपने स्तर पर रद्द करने के बजाये इन्हें स्वीकार करके वहां पर चल रही शराब

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

रुपये

१. श्री रामपत आर्य कनीना मण्डी जि० महेन्द्रगढ १०१
२. श्रीमती अमृतकुमारी धर्मपत्नी श्री रामपत आर्य कनीना मण्डी जि० महेन्द्रगढ़ १०१
३. श्री सूबेदार प्रभातीलाल जी आर्य सिहोर जि० महेन्द्रसिंह ५१
४. श्री कप्तान घीसाराम आर्य ,, ,,
५. ,, अगनाराम ओमप्रकाश ,, ,, ५१
६. ,, खूबराम जी आर्य ,, ,, ५१
७. ,, मा० रामकुमार जी आर्य ,, ,, ५१
८. ,, शिम्बूदयाल जी आर्य ,, ,, २१
९. ,, गनपतसिंह जी आर्य ,, ,, ५१
१०. ,, शिवलाल जी थानेदार ,, ,, ५१
११. ,, चिरजीलाल सरपंच ग्राम बव्वा त० कोसली ,, ५१
१२ ,, कृष्ण सैनी ,, ,, २१
१३. ,, रामजीवन जी आर्य ग्राम कारौली जि० रेवाड़ी २१
१४. ,, मुरलीधर जी प्रधान आर्यसमाज लूखी ,, २०२
१५. ,, राव नेतराम जी आर्य ,, ,, १०१
१६. ,, राव बलवन्तसिंह आर्य ,, ,, ५१
१७. ,, कप्तान सुजानसिंह आर्य कोसली ,, ५१
१८ ,, मा० छत्तरसिंह जी आर्य ग्राम बिरोहड़ जि० रोहतक १०१
१९. ,, प० प्यारेलाल पु० नहानाराम ,, ,, २१
२० ,, फतेहसिंह मन्त्री आर्यसमाज दूबलधन ,, २१
२१ ,, मा० रामलाल आर्य ग्राम मोरवाला जि० भिवानी ५१
२२. ,, बलवन्तसिंह प्रधान गाव बाघपुर जि० रोहतक २१
२३ ,, मा० सुखलाल जी आर्य ,, ,, १०१
२४. ,, जगदेवसिंह प्रधान आर्यसमाज धान्धलाण ,, २१
२५ ,, जयवीर आर्य पुत्र जयपालसिंह आर्य भजनोपदेशक ग्राम आसन जि० रोहतक ५१
२६. ,, मा० बलवानसिंह जी प्रधान आर्यसमाज मायना ,, ५१
२७. ,, मेहरसिंह दुकान न० २६ काठमण्डी झज्जर रोड ,, २१
२८. ,, धर्मपाल जी आर्य सुपुत्र श्री हरीराम ग्राम गोच्छी ,, २१
२९ ,, प्रतापसिंह प्रधान आर्यसमाज बराणी ,, २१
३० ,, महावीरसिंह मन्त्री आर्यसमाज ,, ,, २१
३१. ,, ठा० रूपसिंह आर्य ,, ,, ३१
३२. ,, भोलासिंह आर्य ग्राम सवाना ,, २१
३३ ,, टेकराम आर्य कोषाध्यक्ष आर्यसमाज सवाना ,, २१
३४. ,, शुभराम आर्यसमाज ,, ,, ५१
३५. ,, रिजकराम जी ,, ,, ५१
३६ ,, धूपसिंह जी प्रधान आर्यसमाज ,, ,, ५००
३७. ,, रामकुवार जी ,, ,, १५१
३८. ,, डा० रामकुमार जी आर्य ,, ,, २१
३९ ,, घीसराम जी आर्य ग्राम लाम्बा जि० भिवानी ५१
४०. ,, लालचन्द जी ,, ,, १०१
४१. ,, कमलसिंह मन्त्री आर्यसमाज ,, ,, १०१
४२. ,, रामानन्द भूतपूर्व सरपंच ,, ,, १०१
४३. ,, प्यारेलाल आर्य यूथ क्लब ,, ,, ५१
४४ ,, रामकिशन जी ,, ,, १०१
४५. ,, भरतसिंह सु० श्री खेताराम ,, ,, ५००
४६. ,, जागेराम सु० चन्दगीराम ,, ,, २५०
४७. ,, हुश्यारसिंह प्रधान आर्यसमाज मिलकपुर जि० रोहतक ५१
४८. ,, रामकुमार आर्य ,, ,, ५१
४९. ,, फतहसिंह आर्य ,, ,, ५१
५०. ,, रणधीरसिंह आर्य ,, ,, ५१
५१. ,, राजेन्द्रसिंह आर्य मेम्बर पंचायत ग्राम सवाना ,, ५१
५२. श्री मा० रणसिंह आर्य ग्राम सवाना जि० रोहतक १०१
५३ ,, मुख्याध्यापक रणधीरसिंह आर्य ,, ,, ५१
५४. ,, इन्द्रसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज रामपुर कुण्डल, सोनीपत २०२
५५. ,, कर्णसिंह प्रधान आर्यसमाज अटायल जि० रोहतक १०१
५६. ,, महेन्द्रसिंह ग्राम महारा जि० सोनीपत ५१
५७. ,, सूरजभान भूतपूर्व सरपंच ग्रा. व पो. सिहोर जि. महेन्द्रगढ़ ५१
५८. ,, रामशरण जी आर्य ,, ,, २१
५९. ,, हवलदार रिछपालसिंह ,, ,, ५१
६०. ,, मा० लायकराम जी आर्य ,, ,, ५१
६१. ,, निहालसिंह सरपंच ,, ,, ५१
६२. ,, ईश्वरसिंह सरपंच ,, ,, ५०
६३. ,, सत्यवीरसिंह आर्य ग्राम व पो० सासरोली जि० रोहतक २०
६४. ,, रघुवीरसिंह ,, लाम्बा जि० भिवानी २१
६५. ,, भगवानसिंह सु० रामस्वरूप ,, ,, २५०
६६. ,, मा० बलवीरसिंह आर्य सरपंच फतेहाबाद ,, १०१
६७ ,, जगमालसिंह आर्य (पहलवान) बिगोवा ,, २०२
६८. ,, ओमप्रकाश जी मन्त्री आर्यसमाज ,, ,, २०२
६९ ,, ओमप्रकाश गोयल भिवानी १०१
७०. ,, ज्ञानचन्द शास्त्री ,, १०१
७१. ,, विमलेश आर्य मन्त्री आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी १०१
७२. ,, गुणकर आर्य ,, १५१
७३. ,, राम बाबू जी (श्रृंगार टेन्ट हाऊस) पतराम गेट भिवानी २०१
७४. ,, गुप्तदान १०१
७५. , सुभाष बोन्दिया हालू बाजार भिवानी १००
७६. ,, राजेश आर्य डोभी तालाब ,, १००
७७. ,, पुरुषोत्तम जी हालू बाजार ,, ५१
७८. ,, किशनसिंह डाकघर ,, ५१
७९. ,, जयकिशन जी भारद्वाज देवसर ,, ५१
८०. ,, शेरसिंह जी आर्य ग्राम नीमड़ीवाली भिवानी ५१
८१. ,, दीपचन्द व इन्द्राज खेड़ा ५१
८२. ,, मा० प्रतापसिंह ग्राम व पो० नौरंगवास १०१
८३. ,, रामधारी ग्राम व पो० टिटौली जि० रोहतक १०१
८४ ,, ओमप्रकाश गोयल भिवानी १०१
८५. ,, सत्यानन्द आर्य वेस्ट पंजाबी बाग नई दिल्ली २१००
८६. ,, जयभगवान व जयवीर ग्रा० व पो० रावलधी जि० भिवानी ५०
८७. ,, रमेशकुमार ,, ढाणी माहू ,, ५०
८८. ,, जयप्रकाश ग्राम व पो० ठोडी जि० झुन्झुनू (राज०) २५
८९. ,, राजेन्द्र ,, ,, २५
९०. ,, मानसिंह सु० विशम्भरदयाल छिल्लर त. च. दादरी (भि.) ४००
९१. ,, राजकुमार ग्राम व पो० सिंघानी जि० भिवानी २५
९२. ,, धर्मेन्द्र ,, ,, २५
९३. ,, अत्तरसिंह ग्रा० व पो० छिल्लर ,, ५०
९४. ,, विजयकुमार जी ५१
९५. ,, डा० मूलचन्द जी उपप्रधान आर्यसमाज १०१
९६ ,, फतेहसिंह जी ग्राम व पो० दूबलधन जि० रोहतक ४०
९७ ,, मा० कुन्दनसिंह आर्य गांव रासीवास (गुरुकुल झज्जर) ४००
९८. ,, चेतराम जी आर्य ग्राम बांकनेर (दिल्ली-४०) ११०
९९. ,, उदयसिंह जी ,, ,, ५१
१००. ,, आर्यसमाज बीकानेर जि० रेवाड़ी १०१

ऋषि निर्वाण दिवस

आर्यसमाज थानेसर (कुरुक्षेत्र) में ऋषि निर्वाण दिवस दिनांक २५-१०-९२ को मनाया गया । इस अवसर पर सर्वश्री डा० ऋषिराम प्रोफेसर डी.ए.वी. कालिज अम्बाला जे. एस. यादव, प्रोफेसर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय एवं श्री ओमप्रकाश जी आर्य करनाल ने महर्षि के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला । आर्य स्कूल के विद्यार्थियों ने मधुर गीत गाए, श्रोताओं से सभाहाल भरा हुआ था ।

रामकृष्ण सेठी
मन्त्री, आर्यसमाज थानेसर

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद्

सम्मेलन कार्यक्रम

दिनांक ७ नवम्बर १९९२ से ८ नवम्बर १९९२ तक 'अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का वार्षिक सम्मेलन' आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के तत्वावधान में, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अनुसार नशाबन्दी परिषद् की कार्यकारिणी के सदस्य दिनांक ६.११.९२ को रोहतक पहुंच जायेंगे।

कार्य-क्रम

६-११-९२

अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकारिणी की बैठक
शाम ४ बजे (सभा कार्यालय में)

७-११-९२

यज्ञ	८ बजे प्रातः से ९ बजे तक
युवा सम्मेलन	९-३० बजे से ११ बजे
उद्घाटन समारोह	११ बजे (द्वारा स्वामी सर्वानन्द सरस्वती)
स्वागत समारोह	११-१५ से १ बजे तक
भोजन	१-३० से २-३० तक
नशाबन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन	३ बजे से ५ बजे तक
भोजन	६-३० से ८ बजे तक
सांस्कृतिक कार्यक्रम	८-३० से ११ बजे रात्रि

८-११-९२

यज्ञ	प्रातः ७ से ८ बजे तक
महिला सम्मेलन	प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक
कार्यकर्त्ता सम्मेलन	प्रातः ११ बजे से १२ बजे तक
समापन समारोह	
खुला अधिवेशन	मध्याह्न १२ से २ बजे तक

सूबेसिंह
मन्त्री

शराबबन्दी आंदोलन राष्ट्रव्यापी होता जा रहा है

रोहतक, १ नवम्बर (ह सं.)। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रदेशाध्यक्ष व अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के सदस्य प्रो. शेरसिंह ने दावा किया है कि सभा व परिषद् द्वारा शराबबन्दी के समर्थन में चलाया जा रहा आंदोलन राष्ट्रव्यापी होता जा रहा है।

यहां संवाददाताओं से बातचीत करते हुए प्रो. शेरसिंह ने बताया कि गत दिनों आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले मे महिलाओं ने अनेक शराब की दुकानें तोड डाली। हैदराबाद में लगभग एक हजार मुस्लिम महिलाओं ने शराब के विरुद्ध प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि यह इस बात का प्रमाण है कि अब सभी समुदाय के लोगों में उसके विरुद्ध चेतना आ चुकी है।

हरयाणा की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि हरयाणा की लगभग २७५ पचायतों ने उनके क्षेत्रों में ठेके न खोले जाने के प्रस्ताव पारित कर सरकार को भेज दिए है। उन्होंने कहा कि सरकार इन ठेकों को बन्द न करने के लिए बहाना बनाती है कि यदि उसने ठेके बन्द कर लिए तो लोग नाजायज शराब पिएंगे जो कि अनुचित बहाना है। उन्होंने कहा कि प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त कर सरकार नाजायज शराब निकालने से रोक सकती है। उन्होंने कहा कि सरकार ठेकों को बन्द न करके पंचायतों की इच्छा को ठेस पहुंचा रही है।

उन्होंने बताया कि हरयाणा के अनेक गांवों में तो इस मामले में काफी जागृति आ चुकी है और वहा के नागरिक इस मामले में काफी उग्र रूप रखते हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि भिवानी जिले के बामला, धनाना, इमलौटा, जूई व पेंतावास गावों में तो कोई ठेकेदार घुस तक नही सकता।

प्रो. शेर सिंह ने कहा कि आंदोलन से प्रेरित हो अनेक फौजियों में भी चेतना आ चुकी है। गांव दुबलधन के फौजियों ने फैसला किया है कि वे अब शराब नही खरीदेंगे।

उन्होंने हरयाणा के मुख्यमंत्री चौ भजनलाल से अपील की कि वह 'भारत छोडो' आन्दोलन के स्वर्ण जयती वर्ष के उपलक्ष्य में हरयाणा को शराब से छुडवाए। उन्होने कहा कि मुख्यमंत्री यदि सच्चे बिश्नोई हैं तो हरयाणा में शराब बननी बन्द करवाएं।

हुड्डा खाप द्वारा पूर्ण शराबबन्दी का प्रस्ताव

दिनाक १ नवम्बर ९२ को जिला रोहतक के ग्राम बसन्तपुर में हुड्डा खाप की पंचायत का आयोजन किया गया। पचायत ने सर्वसम्मति से बसों तथा बिजली के रेट बढाने की सरकार की नीति का विरोध किया।

हुड्डा खाप पचायत के महासचिव श्री गुगनसिंह एडवोकेट की अध्यक्षता में हुई इस पचायत मे श्री सुखदेव शास्त्री श्री महावीर शास्त्री ने ग्रामीण जनता को शराब मे होने वाली बुराइयों से सावधान किया तथा सभा की श्री खेमसिंह आर्य की भजनमंडली ने अपने प्रभावशाली शराबबन्दी के गीत सुनाये। इस प्रकार शराबबन्दी प्रचार से प्रभावित होकर पचायत ने हुड्डा खाप के सभी ४२ ग्रामों में शराब के सभी ठेके बन्द करने की माग की और चेतावनी दी कि यदि सरकार ने उनकी मांग स्वीकार नहीं की तो किसान ग्रामो में शराब के ठेकों को बलात् बन्द करवायेंगे।

ओम्प्रकाश आर्य साघी (रोहतक)

विशेषांक संग्रहणीय रहा

सर्वहितकारी पत्र का "महर्षि दयानन्द विशेषांक" प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। इस पत्रिका का आर्यजगत् की तमाम पत्र-पत्रिकाओं मे अपना विशिष्ट स्थान है। इसके विशेषांकों की भी बडी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

रामकुमार आर्य
वाटर सप्लाई वर्क्स जोशी चौहान,
सोनीपत (हरयाणा)

हकीम गणेशलाल का निधन

आर्यसमाज सफीदो जिला जीन्द के पूर्व प्रधान हकीम गणेशलाल जी का ७५ वर्ष की आयु में दिनाक २ नवम्बर ९२ को हृदयगति बन्द हो जाने पर निधन होगया। वे यज्ञप्रेमी थे तथा आर्यसमाज के कार्यो मे तन, मन तथा धन से सहयोग देते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को धैर्य प्रदान करे।

सभामन्त्री

शोक समाचार

म० ताराचन्द आर्य नारनौल अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ज्येष्ठ पुत्र यशदेवसिंह का निधन दि० ५-१०-९२ को हो गया। जिसका अन्त्येष्टि सस्कार दि० ६-१०-९२ को वैदिक विधि से कराया गया। शान्ति यज्ञ और शोक सभा दिनांक १६-१०-९२ को समय दो से चार बजे तक चली। प० भोलाराम आर्य, पं० ताराचन्द वैदिक आर्य भजनोपदेशक, बाबू उदमीराम जी एडवोकेट. सेठ मगलचन्द सैनी, चौ० श्रीराम जी प्रधान आयसमाज त्रिनगर दिल्ली, मा० श्रीराम जी समाजसेवी रेवाडी, मा० हरनारायण जी, सी० के० सैनी अलवर, ला० ईश्वरदास प्रधान आर्यसमाज मोहल्ला खडग, मा० मोर मुकुट प्रधान, डा० विसम्भरदयाल मन्त्री आर्यसमाज बाछोद सभी सदस्य, इनके अतिरिक्त जि० सीकर, जि० अलवर, जि० जयपुर, जि० रोहतक से आये हुए लोगो ने गहरा शोक प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

डा० बूलाराम

महान् सन्त महर्षि दयानन्द

(वेदप्रकाश 'साधक' दयानन्दमठ, रोहतक)

आग लगी आकाश में झड़-झड़ पडत अंगार ।
यदि सन्त न होते जगत् में जल जाता ससार ।।

कार्तिक मास की अमावस्या को वैदिक धर्म और मानवता का रक्षक महान् सन्त मृत्यु पर विजय पाता हुआ धर्म और सत्य की बलिवेदी पर बलिदान हो गया। वैदिक सभ्यता और संस्कृति का सच्चा उपासक, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित, महान् क्रान्तिकारी, सत्यवादी और समाज सुधारक का जीवन समस्त संसार के मानवों के लिए अनुकरणीय और प्रेरणा का स्रोत है। आर्य जाति में नवजीवन और नव चेतना भरने के लिए अपना तन-मन और सुख सुविधाओं की आहुति दे दी। इसलिए भारतीय समाज सर्वदा उनका ऋणी रहेगा।

मूलशकर से ऋषि दयानन्द कैसे बना यह हमारे लिए विचारणीय है। शिव और शव ये दो प्रश्न उनके सन्मुख थे जिनका समाधान करने के लिए सारा जीवन लगा दिया। पार्थिव शिव को देखकर यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि क्या वही शिव है जिसके बारे मे कहा जाता है कि यह त्रिशूलधारी है, कैलाशपति है, दुष्टो को दण्ड देता है। सर्वशक्तिमान् है। क्या यह तुच्छ जीव चूहे से अपनी रक्षा नही कर सकता? पिता से समाधान करना चाहा। उन्होंने कहा कलिकाल में परमात्मा के दर्शन नही हो सकते। यह परमात्मा का प्रतीक रूप है इसकी पूजा करनी चाहिए। विवेक शक्ति जाग्रत हुई और घर-बार छोडकर सच्चे शिव के दर्शनार्थ दृढ सकल्प कर लिया।

इसके अतिरिक्त बहिन और चाचा की मृत्यु पर उनके प्राणहीन शव को देखा तो मृत्यु क्लेश को जीतने के लिए वैराग्य उत्पन्न हो गया। ऋतम्भरा बुद्धि के स्वामी ने शिव और शव की वास्तविकता को जानने के लिए वनों की राह ली और योगाभ्यासी बनकर परमात्मा के सच्चे स्वरूप को जाना और मृत्यु पर विजय पाने मे सफल हुआ। इसका प्रमाण यह है कि रोगग्रस्त अवस्था में जब खून और पीप बह रही थी तब भी वह शान्तचित्त थे और अन्त समय चेहरे पर मुस्कराहट थी और ये शब्द मुँह से निकले—परमात्मा तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह उनका परमात्मा पर अटल विश्वास का प्रमाण था। लोगो ने कहा परमात्मा शरीरधारी है। चौथे आसमान, सातवें आसमान मे रहता है, क्षीरसागर में रहता है, परन्तु ऋषि दयानन्द ने कहा परमात्मा एक है और कण-कण में व्यापक है। सर्वान्तर्यामी है और अवतार धारण नही करता। अज्ञान के कारण लोगों ने कहा परमात्मा की प्राप्ति के लिए मूर्ति पूजा, घडियाल बजाना, कंठी, माला ग्रहण करना आदि उपाय हैं, परन्तु ऋषि दयानन्द ने कहा—योगाभ्यास अर्थात् यमनियमो का पालन करना और शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म शुद्ध उपासना से परमात्मा के दर्शन हो सकते है।

धर्म का स्रोत वेद को माना, वेद को ईश्वरीय ज्ञान प्रमाणित किया। मैक्समूलर जर्मनी का विद्वान् था उसने कहा मेरे से कोई पूछे कि उन्नीसवी शताब्दी का क्या चमत्कार है तो मैं तार, टेलीफोन, टेलाविजन, हवाई जहाज न कहकर के यह कहूगा कि सबसे बडा चमत्कार महर्षि दयानन्द का वेदों का भाष्य है।

धर्म मे अन्धविश्वास और रूढिवाद घुस गया था। लोग धम में आडम्बर के कारण नास्तिक बन गए थे। इन्होने धर्म का सच्चा स्वरूप जनता के सामने रखा। धर्म और ज्ञान का गहरा सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध टूट जाने पर धर्म वरदान न होकर अभिशाप बन गया। दो प्रकार की प्रतिक्रिया हुई। अन्धविश्वास के साथ पढे लिखे लोगो मे नास्तिकता छा गई। बड़े-बड़े धनी लोग व्यसनों अर्थात् शराब मास जुआ, वेश्यागमन मे भी फसे थे परन्तु धर्मानुष्ठान भी कराते रहते थे। कोई पाप हो जाता गगास्नान कराकर प्रायश्चित्त किया जाता था।

पचायतन पूजा के नाम पर शिव, विष्णु, अम्बिका, गणेश और सूर्य की मूर्ति बनाकर पूजा की जाती थी परन्तु ऋषि जी ने मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव, स्त्री के लिए पति पूज्य है इन पांचों की पूजा का प्रचार किया।

वेदों के आधार पर धर्म के सच्चे स्वरूप के प्रचार के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज धर्म नही परन्तु आर्यसमाज एक आन्दोलन है, जिसने समाज की कुरीतियों को दूर किया। अवतारवाद, बालविवाह, अनमेल विवाह, छुआछूत, मूर्तिपूजा, जात-पात, सती प्रथा, मृतक श्राद्ध का विरोध किया और इनके स्थान पर अग्निहोत्र सन्ध्या स्वाध्याय, सत्सग गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, जीवित माता-पिता की सेवा का सिद्धान्त जनता के सम्मुख रखा। शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण यह आदर्श वाक्य इनकी देन है। ब्रह्मचर्यपूर्वक शिक्षा के आधार गुरुकुल प्रणाली का समर्थन किया।

आर्यसमाज के दस नियम जो विश्वशान्ति का मूल हैं आर्यजाति को सबसे बडी देन है।

इतनी बडी विचारों की क्रान्ति और मानव धर्म की रक्षा जिस महान् सन्त ने की हो और अन्त में मोक्षपद प्राप्त किया हो उसको हमारा शतशत प्रणाम है।

युग युग तक अमर रहेगी ऋषि दयानन्द की गाथा,
मानव उसको स्मरण करेगा कहकर अपना त्राता।

शराबबन्दी हेतु नवयुवकों का साहसिक कदम

ग्राम निडाना (जींद) में स्वामी रतनदेव जी की प्रेरणा से गत महीनों से युवा संगठन समिति गठित की हुई है जो गांव में शराबबन्दी अभियान एवं समाज सुधार के कार्यक्रम चलाए हुई है। गतोली गांव के ठेके का ठेकेदार चोरी-छिपे जीप द्वारा बोतलें डालने आता था। दिनाक ३०-१०-९२ को ठेकेदार जीप द्वारा गाव मे अवैध शराब डालने आया तब प्रधान श्री दलबीरसिंह तथा सचिव श्री अशोककुमार के नेतृत्व मे ५० नवयुवकों ने इकट्ठे होकर जीप को पकड लिया जिसमें २५८ बोतलें थी। प्रथम उसकी पिटाई की क्योंकि बार-बार कहने व रोकने के बावजूद गाव का वातावरण खराब कर रहा था। उसके बाद कुछ नवयुवक जीन्द थानाध्यक्ष के पास आए। थानेदार को साथ ले गए। मौके पर बोतलों का चालान करवाकर उनको पकड़वाया। नवयुवकों ने बहुत ही सराहनीय काय किया है। अगर सभी गांवों में जहा ठेकेदार अवैध शराब की बोतलें बेच रहे हैं, नवयुवक समितियां बनाकर ठेकेदार को सबक सिखा दे तो देहात के मजदूर किसान बर्बादी से बच सकते हैं। साथ मे गाव में जो शराब पीते हैं या बेचते हैं उनको भी समझाकर धमकाकर मजबूर करें ताकि गांव में अमन चैन का माहौल बन सके।

अतरसिंह आर्य
क्रान्तिकारी
सभा उपदेशक

"नवलखा महल स्वीकरण समारोह हेतु तैयारियां जोरों पर"

राजस्थान सरकार द्वारा उदयपुर स्थित नवलखा महल, जहा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने "सत्यार्थ-प्रकाश" लिखा था, आर्य प्रतिनिध सभा राज को वहा महर्षि का एक भव्य स्मारक, एक वैदिक शोध केन्द्र एवं वैदिक वाङ्मय पुस्तकालय तथा समाज और राष्ट्र सुधार के उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का केन्द्र स्थापित करने हेतु सौपे जाने के निर्णय से सर्वत्र प्रसन्नता और हर्ष की लहर दौड गई है। सभा कार्यालय में राज्य सरकार की सराहना करने तथा नवलखा महल को एक विशाल केन्द्र बनाने विषयक पत्र प्राप्त हो रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा देश तथा विदेशो में स्थित समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं को इस आर्य सम्मेलन मे भाग लेने के लिए पत्र भेज दिये गये हैं। इनके अतिरिक्त देश के प्रमुख आर्य-समाजों को भी इस आर्य सम्मेलन हेतु पत्रक भेजे जा चुके है। समाचार पत्रों में भी समाचार प्रकाशित कराये जा रहे हैं। हमारा अनुमान है कि उदयपुर में होने वाला यह आर्य सम्मेलन पूर्व वहीं हुए सत्यार्थ-प्रकाश शताब्दि समारोह, जिसे उदयपुर की की जनता अब तक याद करती है, उससे भी बढ़ चढकर होगा।

राजस्थान प्रतिनिधि सभा द्वारा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि उसकी ओर से भेजे जाने वाले पत्र तथा प्रचार सामग्री सीधी भी अधिकाधिक आर्यसमाजों के पास पहुंच सके। परन्तु समयाभाव को दखते हुए यह कार्य दुष्कर प्रतीत होता है। अत: समस्त आर्य प्रतितिधि सभाओं से आग्रहपूर्वक निवेदन है कि वे अपनी ओर से भी अपने से सम्बद्ध आर्य समाजो को सूचित करने का कष्ट करे और ऐसे पत्रक की प्रतिलिपि सूचनार्थ इस सभा के कार्यालय को भेजने की कृपा करे। हमारी प्रार्थना है कि त्रुटि के कारण जिन समाजो अथवा आर्यजनों को सीधा पत्र प्राप्त न हो सके वे उदारतापूर्वक क्षमा करते हुए स्वय को निमन्त्रित समझकर उदयपुर अवश्य पधारे। सभी से प्रार्थना है कि अपने आगमन की पूर्व सूचना देने का कष्ट करे।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

नवयुवकों द्वारा शराब बन्दी के लिए संघर्ष

कई बार ग्राम पचायत और आर्यसमाज बुवाना लाखू (पानीपत) द्वारा शराबबन्दी प्रस्ताव सरकार को भेजने कहने के उपरान्त भी इस गाव मे इसराना वाले ठेकेदार शराब की नाजायज सप्लाई करते रहे है, ६.१०.९२ को दशहरे के दिन गाववालो ने नौल्था ठेके से १८-१९ बोलले मोटर साईकिल पर लाये हुए गाव मे पकड लिया नौवजवान कार्यकर्ता पकड़कर सरपच के पास ले गये, कुछ सघर्ष के पश्चात् साय लगभग ८ बजे उनकी मोटर साईकिल सहित तथा बोतलों की पेटो सामने रखवाकर इन नाजायज सप्लाई वालो के फोटो भी खीचकर रख लिये हैं। रात्रि ९.३० बजे इसराना से ए एस आई. को बुलाकर माल (शराब) समेत दोनों को पुलिस के हवाले कर दिया गया।

देवीसिंह
मन्त्री आर्यसमाज
बुवाना लाखू (पानीपत)

घट में शराब मरघट में पियक्कड़

(हरिराम आर्य सभा पुस्तकाध्यक्ष एवं प्रधान आर्यसमाज कारोली)

बुद्धिविनाशक, चरित्रसंहारक शराब कब और कैसे मानव समाज मे आई। शराब के प्रयोगी तथा शराबनिषेधक अपनी-अपनी सम्मिति अनुसार इसकी उत्पत्ति आदि बताते हैं परन्तु यह बात सत्य है कि संसार के सभी देशों में विशेषतः योरुपीय देशों में प्राचीन-काल से चली आ रही है किन्तु भारत में शराबखोरी को कभी सम्मान नहीं मिला।

मध्यकालीन भारत के व्यापारी संसार के अन्य देशों मे व्यापार के लिए जाते रहे। उस काल मे जलयात्रा के आज के भारी भरकम साधन जलपोत आदि नहीं थे। छोटी बडी नावों द्वारा भारत से स्वर्ण तथा रजत आभूषण, हीरा मोती जडित गहने मणिका मालाये, हाथ से बना भारी वस्त्र, मसाले आदि खाडी तथा योरुप जैसे देशों को निर्यात किए जाते थे। वापसी पर ऊंट की चमडी से बने पात्रो में शराब का आयात होता था जो बहुत कम मात्रा में अत्यन्त धनाढ्यों तक कठिनाई से पहुंच पाती थी।

वैदिक काल में मद्य नाम से पुकारा जाने वाला पेय पदार्थ मल की श्रेणी में गिना जाता था और उसका उपभोग चाण्डाल आदि बहिष्कृत व्यक्ति करते थे, जिनके आवास गांव या बस्ती से बाहर होते थे। आज से पचास साठ वर्ष पूर्व भी न तो शराब के इतने ठेके थे और न ही पियक्कड़। कोई एक आध व्यक्ति शराब पीता था, उसे लोग अच्छा नही समझते थे।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् मद्यपान का विस्तार हुआ है। उसके अनेक कारण हैं। जनता के पास धन की बढोतरी, प्रशासन में व्यापक भ्रष्टाचार, सेनाओं में शराब पान का प्रचार और उपलब्धि। भारतीय व्यापारियों तथा ऊंचे अधिकारियों के विदेशी सम्पर्क, अनाचार से अधिकाधिक कमाई का प्रलोभन तथा धार्मिक विचारों का अभाव।

देश की सभी राजनीतिक पार्टियां कपड़ा, रोटी और मकान का नारा लगाकर कुरसी पर अधिकार करने का प्रयत्न करती हैं परन्तु शराब मानव समाज के लिए कितनी घातक है इस तथ्य की ओर कोई दल ध्यान नहीं देता। कुछ अधिक तथाकथित प्रगतिगामी तो शराब को भोजन का भाग कहने लगे हैं जबकि शराब भोजन का भाग नहीं अपितु सडा गला साफ किया भोजन का मल है।

वास्तविकता यह है कि भारत के अबोध तथा कुबोध नागरिकों को सरकार की ओर से शराब पिलाकर उन्हें बुद्धि भ्रष्ट बनाये रहने का षड्यन्त्र है ताकि उनकी तुतली जबान और भ्रष्ट बुद्धि, अपने अधिकारों, अपने देश और धर्म का विचार न कर पाये। शराब के व्यापारी नाना प्रकार के प्रलोभन तथा प्रचार द्वारा जनता को भ्रमित कर रहे हैं। अपनी विपुल धन सम्पत्ति तथा रिश्वत के आधार पर बड़े अधिकारियों तथा मन्त्री आदि नेताओं को कठपुतली की भांति नचाकर शराब का धन्धा चलाते हैं।

शराब का साम्राज्य न केवल राजधानियो अपितु बडे शहरों से छोटे गावों तक छाया हुआ है। प्रशासन लुज-पुज है। सरकारी दफ्तर में सरकारी ड्यूटी पर प्रशासन अधिकारी तथा कर्मचारी शराब पीते हैं जबकि यह कानूनन अपराध है परन्तु कहे कौन? अधिकाश राज्याधिकारी नगे हैं इस हमाम में। कुछ गिनती के लोग हैं जो शराब नहीं पीते। उनकी आवाज कौन सुने तूती की आवाज की भांति कोई नहीं सुनता।

केन्द्र मे नई सरकार की आमद से एक और प्रलय को निमन्त्रित कर लिया गया है। प्रावधान के अनुसार ठण्डे पेयों, कोका में रम (शराब) मिलाकर रम कोला के नाम से आम दुकानो पर बिकवाया जायेगा। रमकोला की बिक्री पोलोथीन के थैलो में होगी जिसे अबोध बच्चे युवक युवतियां सब स्वास्थ्यवर्धक तरल शीतल पेय के नाम पर पिया करेंगे। ध्यान देने की आवश्यकता है। यह भयंकर रोग भारत मे प्रवेश कर चुका है यदि इसका शीघ्रातिशीघ्र सबल वाणी तथा लेख और आग्रह के साथ विरोध नहीं किया गया तो भारत की पुण्यभूमि जो देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध थी, राक्षस भूमि बन जायेगी और देव सन्तान पागल बन अपने धर्म-कर्म तथा लोक लाज को तिलांजलि देकर पतन की गार में गिर जायेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने शराबबन्दी के लिए अपना पूरा समय तथा शक्ति लगाई हुई है। कुछ भाई उनका संकल्प पूरा होने में सन्देह प्रकट करते हैं। परन्तु उनका सन्देह ऐसा ही है जैसा स्वराज्य प्राप्ति से पूर्व आजादी के लिए आन्दोलन करनेवाले देशभक्तों पर लोग टीका टिप्पणी किया करते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नशा विरोधी आन्दोलन को देश की महान् विभूतियों, निष्ठावान् देशभक्तों का सहयोग तथा आशीर्वाद प्राप्त है।

जनता निश्चय करे कि दो में से एक को चुनना है। अपना धर्म, कर्म, देश, लोक लाज, जीवन या शराब। इस दु साध्य रोग को समाप्त करने के लिए तन मन धन से आगे आएं और नशा नाशनी सेना में भरती होकर अपने देश को बचाएं। ❀

शोक समाचार

दिनांक २४-१०-९२ को आर्यसमाज कंवारी के पूर्व प्रधान महाशय चन्दगीराम आर्य का निधन हो गया। वह ८२ वर्ष के थे। वे आर्यसमाज की गतिविधियों में बढ चढ़कर भाग लेते थे। ज्ञातव्य है कि जब १९६२ में कवारी में गुरुकुल खुला उस समय महाशय जी सक्रिय सदस्य रहे। हमारी भगवान् से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी

(पृष्ठ १ का शेष)

की दुकानो को बन्द करना चाहिये। जो ऐसी ग्राम पचायतें हैं जहां कि इस समय शराब का ठेका नहीं है, उन्हें भविष्य मे शराब की दुकान खोले जाने के लिये कोई प्रस्ताव पास नही करना चाहिये। नियमानुसार, शराब के नये ठेके, ग्राम पचायत के प्रस्ताव के बिना नहीं खोले जा सकते। स्पष्ट है कि शराबबन्दी जैसे लोक कल्याण कार्यक्रम के लिये ग्राम पंचायतों की भूमिका बडी अहम है। विभिन्न ग्रामवासियों द्वारा भी अपनी-अपनी ग्राम पचायतों को, वहां पर शराब की दुकानें न खोले जाने के लिये, अपना प्रभाव का प्रयोग किया जाना बहुत आवश्यक है।

अब तो करो या मरो की स्थिति पैदा हो गई है और यदि अब भी शराब के विरुद्ध सघर्ष में नहीं कूदे तो आने वाली सन्तान हमें कभी माफ नहीं करेगी। आन्ध्र प्रदेश तथा हिमाचल प्रदेश में महिलाओं द्वारा शराब के खिलाफ एक जंग छेड़ दी गई है। हरयाणा की महिलाओं को भी ऐसे ही आन्दोलन की अगवानी करनी होगी क्योंकि शराबखोरी के भयंकर परिणाम तो उन्हें तथा उनके बच्चों को ही तो झेलने पड़ते हैं। अब स्वाधीनता संग्राम की तर्ज पर 'शराब छोडो' आन्दोलन चलाने के सिवाय और कोई चारा नहीं रह गया है। इसलिये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा किये गये प्रयासों से निकले उत्साहवर्द्धक परिणामों से प्रेरित होकर, इस सभा ने यही निश्चय किया है कि समूचे हरयाणा राज्य में हो शराबबन्दी का हल चलाया जाये जिसके लिये यहां की धरती बिल्कुल तैयार है। सभा द्वारा, रोहतक मे दिनांक ७ व ८ नवम्बर, ९२ को आयोजित अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का वार्षिक अधिवेशन, विशाल शराबबन्दी सम्मेलन, युवा एव महिला संगोष्ठियां इसी दिशा में एक सार्थक पहलू है। ❀

क्या आपको जुकाम रहता है ?

आजकल ऋतु का परिवर्तन हो रहा है। वर्षा के बाद शरद ऋतु आरही है। ऐसे समय में खान पान की लापरवाही से भूल-चूक से प्राय: जुकाम हो जाता है और थोड़ी बदपरहेजी करने पर बढ़ जाता है। एक दिन एक परिवार में आर्यसमाज का सत्संग चल रहा था। एक सज्जन नाक से बार-बार सूड़-सूड़ कर रहे थे। रुमाल से नाक को खींच रहे थे। यह जुकाम छूत का रोग है। इस के परमाणु पास बैठे हुये व्यक्ति में शीघ्र प्रवेश कर जाते हैं। मैं तंग आकर दूसरी जगह जा बैठा परन्तु वह भाई जुकाम के कारण सूड-सूड करता ही रहा। अपने निवास पर थोड़ा आराम करने के बाद विचार आया कि यह रोग फैल रहा है। इससे बचने के लिये लोगों को सावधान करना चाहिये। यदि आपको जुकाम है तो जरा ध्यान दीजिये।

२) यह जुकाम या नजला आन्तों की खराबी से होता है। आते कब खराब होती हैं जब अधिक खाने के कारण उन पर भार सहन नही होता या भोजन सड़ता है या विषम भोजन के कारण वात, पित्त, कफ दूषित हो जाते हैं या बहुत गर्म-गर्म अथवा शीतल पदार्थ खाने पर, बहुत मिर्च मसाले खाने पर नाक से पानी-सा आने लगता है। उदाहरण के लिये आपने गर्म-गर्म हलवा पूरी खा लिया और प्यास लगने पर तत्काल फ्रिज का शीतल जल पी लिया तब उसी समय आपका गला आंते खराब हो जायेंगी।

३) उपचार—जुकाम का सोधा-सादा उपचार है, भोजन बन्द कर दो। जुकाम पकड़ने पर कई बार सिर में दर्द होने लगता है। लोग क्या करते हैं, सिर दर्द जुकाम की टेबलेट (गोलिया) खाते हैं। बार-बार चाय पीते है। गोली खाने और चाय पीने से थोड़ी देर के लिए आराम तो मिल जाता है परन्तु घण्टे दो घण्टे बाद फिर जोर पकडता है। चाय पीने से कभी जुकाम ठीक नहीं होता और बढ जाता है। हां, आयुर्वदिक चाय लाभदायक है। मैं बता रहा था कि भोजन मत करो, रात को सोते समय एक पाव या अधिक दूध मे अदरक, छोटी पीपल और मुनक्का के ५ दाने साफ करके उबालो। जब दूध खूब उबल जाय तब उसमें थोड़ा तेज शक्कर डालकर पी जाओ, चाहो तो उबली हुई मुनक्का के बीज निकालकर खा सकते हो, अदरक और पीपल को छोड़ दो। दूध पीकर बाहर मत घूमो, आराम करो। प्रात: आपको शौच खुलकर आयेगा और जुकाम घट जायेगा क्योंकि आंते साफ हो गई हैं। दूसरे दिन भी ऐसा ही करो भोजन मत करो. केवल भूख लगने पर ध्यान रखना है—गरिष्ठ भोजन नही खाना, शीघ्र पचनेवाला कम मात्रा मे खाना है। प्रात: सायं आयुर्वेदिक चाय पी सकते हो। दो दिन में आपका जुकाम भाग जायेगा।

४) पथ्य—रात को ओस से बचने के लिए बरामदे में सोना चाहिए। प्रात: धूप में बैठकर ताजा पानी से स्नान करो। तले हुए पदार्थ समोसे, पकोड़े, नमकीन चीजे मत खाओ। गर्म दूध, दलिया, मूग की दाल आदि का सेवन करो। ठीक होने पर अपने आहार-बिहार मे कुपथ्य (बदपरहेजी) मत करो। रात को देर तक जागने से भी पाचन क्रिया पर कुप्रभाव पड़ता है। जल्दी सोने और प्रात: जल्दी उठने की आदत बनाओ। अपनी दिनचर्या को अपने कार्यक्रम के अनुकूल नियम-पूर्वक बनाओ। भ्रमण आदि करके थोड़ा व्यायाम करना भी आवश्यक है। स्वस्थ रहने के लिए हरसम्भव प्रयास करना चाहिए। यह शरीर परमात्मा की अमानत है इसको सही सलामत रखना ही एक इबादत (भक्ति) है।

देवराज आर्यमित्र
वैद्य विशारद
आर्यआश्रम, आदर्श नगर डी ब्लाक
मलेरना रोड, बल्लबगढ़-१२१००४
जि० फरीदाबाद

नशा—नाश का दूजा नाम
तन-मन-धन तीनों बेकाम

वह आदमी क्या है

(रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)

दुखाये दिल किसी का जो, भला वह आदमी क्या है।
किसी के काम न आये, भला वह आदमी क्या है॥

बड़े ही भाग्य से शुभ कर्म से मानव का तन पाया।
ये हीरा जन्म पाकर के किसी को सुख न पहुंचाया॥

कर्म नेकी के करने में भला शरमिन्दगी क्या है।
किसी के काम न आये भला वह आदमी क्या है॥

शाक मेवा व अन्नादि हैं कितने मधुर फल सुन्दर।
न भाये मूक-पशुओं को खागया पेट के अन्दर॥

खुदा के दर पर जाकर के भला वह बन्दगी क्या है।
किसी के काम न आये भला वह आदमी क्या है॥

बदी के शूल तजकर जो फूल नेकी के चुनते हैं।
सफल जीवन बनाते हैं न अपना शीश धुनते हैं॥

क्योंकि दुष्कर्म से बढ़कर भला वह गन्दगी क्या है।
किसी के काम न आये भला वह आदमी क्या है॥

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईदित्तामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुड़ी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिक्कल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट नं० १, एन०आई०टी०, फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुड़गांव।

चरखी दादरी के पंच तथा सरपंचों ने शराबबन्दी लागू की

चरखी दादरी के ब्लाक १ तथा २ के पंचों तथा सरपंचों की एक बैठक २०, २१ अक्तूबर की मेजर सम्तलाल सरपंच ग्राम झोझूकलां की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में प्रि० बलवीरसिंह फतेहगढ़, श्री रामफल बिरहीकलां सरपंच; श्री धर्मवीर सरपंच चन्दानी, श्री अतरसिंह सरपंच चिड़िया, म०आजादसिंह छिल्लर आदि के प्रस्ताव पर निर्णय लिया गया है कि ब्लाक १ तथा २ के किसी भी ग्राम में शराब पीने पर पूर्ण पाबन्दी होगी और पंचायती नियम तोड़नेवालों पर पंचायतें दण्ड देंगी। इस नियम की पालना के लिए चुने गए ११-११ व्यक्तियों की जिम्मेदारी होगी। प्रि० बलवीरसिंह फतेहगढ़ ने इस कार्य हेतु ग्रामों का भ्रमण आरम्भ कर दिया है।

बलवीरसिंह आर्य सरपंच दातौली

शराब का ठेका हटाए जाने की मांग को लेकर युवकों द्वारा धरना

कुरुक्षेत्र—निकटवर्ती गांव मथाना में बसअड्डे पर स्थित शराब का ठेका हटाए जाने की मांग को लेकर गांव के नौजवानों ने पिछले दो सप्ताह से धरना दिया हुआ है। नौजवानों ने उपायुक्त कुरुक्षेत्र को दिए गए एक ज्ञापन में कहा है कि ठेके के पास ही राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय स्थित है, जिससे स्कूल के वातावरण पर कुप्रभाव पड़ रहा है। इसके अलावा गांव का माहौल भी प्रभावित हो रहा है। बस अड्डे पर महिलाओं और छात्राओं का खड़ा होना भी दूभर होगया है क्योंकि आने जाने वाले शराबी भद्दी हरकते कर उन्हें परेशान करते हैं। गांव के नौजवानों ने सगठित होकर इसके खिलाफ जबरदस्त अभियान चलाया हुआ है। गांवों के निवासियों का एक प्रतिनिधि मंडल यहां पंचायत एवं विकास मंत्री राव बंसीसिंह तथा स्थानीय विधायक एवं मंत्री डा० रामप्रकाश से भी मिला, जिसमें राव बंसीसिंह ने आश्वासन दिया कि ठेका स्कूल व बस अड्डे से दूर कर दिया जाएगा और अगले वर्ष से इसे सदा के लिए हटा दिया जाएगा।

भजन को बिश्नोई रत्न से वंचित करने की मांग

हिसार—विकास पार्टी के नेता, श्री नरसिंह बिश्नोई वकील ने यहा जारी लिखित बयान में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा से अपील की है कि मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल को बिश्नोई धर्म के नियमो का उल्लघन करने के परिणामस्वरूप बिश्नोई रत्न की उपाधि से वंचित कर दिया जाए। उन्होंने कहा है कि भजनलाल लालच में आकर शराब बनाने व बेचने में लगे हैं। जबकि बिश्नोई धर्म मे शराब पीने की मनाही है और बिश्नोई समुदाय ने उन्हें बिश्नोई रत्न की उपाधि से अलंकृत कर रखा है।

उन्होंने कहा है कि शराबबन्दी उन २९ नियमो मे से एक है, जिनके आधार पर श्री गुरुजम्भेश्वर महाराज ने ५५० वर्ष पूर्व बिश्नोई धर्म की नीव रखी थी। श्री बिश्नोई ने यह भी कहा है कि मुख्यमन्त्री परिवार के शराब के कारखाने ने सभी नियमों का उल्लंघन करते हुए हिसार में इतना प्रदूषण फैला रखा है कि जनता का सांस लेना भी दूभर होगया है। श्री नरसिंह बिश्नोई ने कहा है कि मुख्यमन्त्री ने हरयाणा औद्योगिक विकास निगम से मिलकर, जिसके वह स्वयं अध्यक्ष हैं, विदेशी शराब बनाने का फैसला कर लिया है। उन्होंने कहा कि भजनलाल इस अधर्मिता के लिए क्षमा मांग अन्यथा अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा तुरन्त आम बैठक बुलाकर उन्हें दण्डित करे।

चलो उदयपुर !

चलो उदयपुर ! चलो उदयपुर ! आर्यो ! तुम्हें बुलाया है।
नवलखा महल की प्राप्ति पर आर्यों का मन हर्षाया है॥

इस उपलक्ष में होगा उत्सव अठाईस-उन्तीस नवम्बर में।
उच्चकोटि के विद्वज्जन आवेंगे नगर उदयपुर में॥
नवलखा महल का इस उत्सव ने सम्मान बढ़ाया है॥
चलो उदयपुर……

स्वामी दयानन्द के कारण ही बना है यह पावनस्थल।
आर्यों के लिये है गौरवमय-गरिमामय नवलखा महल॥
क्योंकि ऋषि ने इसी जगह सत्यार्थ प्रकाश रचाया है॥
चलो उदयपुर……

सत्यार्थ प्रकाश समान विश्व में कोई ग्रंथ महान् नहीं।
ईश्वर जीव व पंचतत्त्व का इस जैसा कहीं ज्ञान नहीं॥
धर्म-मोक्ष विज्ञान विश्व का सब इसमें दर्शाया है॥
चलो उदयपुर……

राजनीति, शिक्षा सब ही सम्प्रदाय का है इसमें वर्णन।
ईश्वर, वेदविरोधी मत, मजहब का है इसमें खंडन॥
आर्य जाति का गौरवमय इसमें इतिहास बताया है॥
चलो उदयपुर……

सर्वप्रथम ऋषिवर ने ही इसमें स्वराज की चर्चा की।
इससे पहले यह कांग्रेस इस भारत में न जन्मी थी॥
वेदोक्त कर्म जो भूल चुके थे वह ऋषि ने सिखलाया है॥
चलो उदयपुर……

तुलसीकृत रामायण ने नारी सम्मान घटाया था।
ढोल, गंवार, शूद्र, नारी को पशु समान बताया था॥
वेद अनुसार पूज्य बता नारी सम्मान बढ़ाया है॥
चलो उदयपुर……

न कोई विषय ऐसा जग का, जिसका ज्ञान नहीं इसमें।
यह ग्रंथ है अनुपम, अमृतमय सज्ज्ञान प्रभु का है जिसमें॥
इसके द्वारा ऋषि दयानन्द ने वेदामृत वर्षाया है॥
चलो उदयपुर……

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा जिसने, उसका जीवन ही बदल गया।
अज्ञान अंधविश्वास सभी मजहब-सम्प्रदायों निकल गया॥
ईसाई, मुस्लिम, पौराणिक सबका अज्ञान मिटाया है॥
चलो उदयपुर……

हे आर्यजनो! सत्यार्थप्रकाश की चर्चा घर-घर में कर दो।
जन-जन के मन मन व जीवन को इसकी ज्योति से भर दो॥
"सिद्धान्तभास्कर" में प्रकाश, सत्यार्थ प्रकाश ही लाया है॥
चलो उदयपुर……

भगवतीप्रसाद सिद्धान्ती भास्कर
प्रधान नगर आर्यसमाज
१४३०, पं० शिवदीन मार्ग कृष्णपोल, जयपुर।

नैनखाप तथा जूआं के बाहरा में भी शराबबन्दी का निर्णय

गत दिनों जिला सोनीपत के नैनातातारपुर के एक भूमि विवाद को निपटाने के लिए नैनखाप के सरदारों तथा जूआं बाहरा के ग्रामों की एक पंचायत नैनखाप के प्रधान श्री टेकराम की अध्यक्षता में हुई। दो परिवारों में काफी दिनों से चल रहे भूमिविवाद को सुलझाया गया। इसी अवसर पर श्री ओमप्रकाश सरोहा के प्रस्ताव पर निर्णय किया गया कि इन ग्रामों में जो भी व्यक्ति शराब का सेवन करेगा अथवा बिक्री करेगा उस पर पंचायती दण्ड दिया जावेगा।

केदारसिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२८७ फोन नं० ७८७७२ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक ४८ १४ नवम्बर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

प्रो० शेरसिंह अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष निर्वाचित

(श्री हरिराम आर्य द्वारा)

रोहतक ८ नवम्बर, अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के २०वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर भारत के विभिन्न प्रान्तों से आए २२२ प्रतिनिधियों ने, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो. शेरसिंह को सर्वसम्मति से आगामी समय के लिए परिषद् का अध्यक्ष निर्वाचित किया।

परिषद् के निवर्तमान अध्यक्ष डा० सुशीला नैयर पूर्व केन्द्रीय मन्त्री ने नशाबन्दी कार्यकर्ताओं में इसकी घोषणा की और प्रो० शेरसिंह को अपनी शुभकामनाओं के साथ अध्यक्ष पद का कार्यभार सौंप दिया। गत कई वर्षों से परिषद् के महामन्त्री पद पर कार्यरत श्री रूपनारायण के स्थान पर श्रीकृष्णमूर्ति गुप्त को महामन्त्री बनाया गया। श्री गुप्त पहले परिषद् के कोषाध्यक्ष थे।

परिषद् के सदस्यों में से २५ को कार्यकारिणी के सदस्य मनोनयन का अधिकार परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष को होता है और वे ही अपने अधीनस्थ सहयोगियों की नियुक्ति करते हैं। निवर्तमान अध्यक्ष डा० सुशीला नैयर की सेवाओं के प्रति आभार और नशाबन्दी के बारे डा० नैयर की सेवाओं की सराहना करते हुए प्रो० शेरसिंह ने अध्यक्ष पद स्वीकार किया। उन्होंने जनता से सहयोग की अपील की और कहा कि वे पूर्णनिष्ठा के साथ नए पद की गरिमा बनाये रखेंगे और सर्वनाशनी शराब को बन्द कराने के कृतसंकल्प रहेंगे।

अपने अध्यक्षीय भाषण में शराब प्रसार के बारे में सरकार की नीतियों को जनता के लिए अत्यन्त घातक बताया। उन्होंने कहा, केन्द्रीय तथा प्रदेश सरकारें, शराब बनानेवाले व्यापारी तथा भ्रष्टाचारी अधिकारियों की तिकडी शराब की संरक्षिका बनी हुई है। उन्होंने कहा केवल सबल जन आन्दोलन ही शराब बन्द करा सकता है।

गुजरात सरकार के नशाबन्दी मन्त्री श्री गोविन्दभाई वसावा सम्मेलन में भाग लेने के लिए आये थे। हरयाणा में नशाबन्दी आदोलन के संचालक श्री विजयकुमार ने अतिथियों का स्वागत तथा सभामन्त्री ने सभा के अन्त में धन्यवाद किया।

उन्होंने कहा कि जब तक सारे देश में नशाबन्दी लागू नहीं की जायेगी, देश की गरीबी की समस्या का समाधान नहीं होगा। इस संदर्भ में उन्होंने गुजरात राज्य का उदाहरण दिया जहां कि कई वर्षों से पूर्ण शराबबन्दी लागू है।

हरयाणा में शराबबन्दी के लिए सत्याग्रह निश्चित

रोहतक ८ नवम्बर—दो दिनों से चल रहे शराबबन्दी सम्मेलन का आज दोपहर बाद इस संकल्प के साथ समापन होगया कि यदि सरकार शराबबन्दी के लिए विनय के भाव नहीं सुनेगी तो परम्परा के अनुसार सत्याग्रह किया जायेगा। वक्ताओं के भाव, शराबबन्दी के लिए कटिबद्ध उनके संकल्प को दोहरा रहे थे।

सर्वमान्य निवेदन पर सभा के राय लेते समय, स्वामी ओ३मानन्द की सहज अपील पर लोगों ने तथा आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों के अधिकारियों ने उत्साह से हजारों रुपए दान में दिए और सत्याग्रहियों ने नाम दिए। स्वामी ओ३मानन्द ने कहा अब हर कीमत पर शराबबन्दी कराई जायेगी। सभा के माहौल से प्रतीत होता था कि यदि सरकार ने शराब बन्द नहीं की तो पंचायतों के सहयोग से बन्द कराई जायेगी। स्मरण रहे कि हरयाणा की ग्राम पंचायतों ने ५१ प्रतिशत से अधिक संख्या में शराबबन्दी के प्रस्ताव करके कानून के अनुसार सरकार को भेजे हैं। सरकार को बहुमत के निर्णय के अनुसार पूर्ण शराबबन्दी करनी चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान और अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के नव अध्यक्ष, प्रो० शेरसिंह ने कहा कि न केवल हरयाणा में शराब बन्द होगी अपितु शराबबन्दी आंदोलन में हरयाणा देश के दूसरे प्रदेशों को मार्गदर्शन भी करायेगा।

हरयाणा नशाबन्दी समिति के संयोजक पूर्व भारतीय प्रशासन के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री विजयकुमार ने हरयाणा के आबकारी मन्त्री श्री ए. सी चौधरी की उन पर झूठे आरोप लगाने के कारण भर्त्सना की और कहा कि शराबबन्दी की यह छोटी सी चिंगारी कल जंगल की आग बनेगी। शराब की भ्रष्ट कमाई के लिए बहानेबाजी अब नहीं चलेगी। उन्होंने कहा, मैं भारतीय संविधान के अनुकूल कार्य कर रहा हूं। यदि मैंने पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा की हानि की है तो मेरे विरुद्ध कार्यवाही करके देख लेवें। विजय सत्य की होगी।

हरयाणा के पूर्व मन्त्री श्री हीरानन्द आर्य ने कहा, शराब पीने-पिलानेवाली सरकार ताश के पत्तों की भांति गिर जायेगी। श्री कपिलदेव शास्त्री पूर्व सांसद ने कहा हमारे राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं किन्तु देश को बचाने व शराबबन्दी के मामले में हम सब एक हैं। उन्होंने शराबबन्दी सत्याग्रह में तन-मन-धन से योगदान देने की घोषणा की।

पूर्ण नशाबन्दी के लिए नेतृत्व का भार स्वामी ओ३मानन्द तथा प्रो० शेरसिंह को सौंपा गया है। यह दोनों आर्य नेता हैदराबाद आर्य

(शेष पृष्ठ ७ पर)

नशाबन्दी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद

२०वें राष्ट्रीय नशाबन्दी सम्मेलन रोहतक के प्रबन्ध का कार्य कठिन नही तो सरल भी नही था। केरल तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र, महाराष्ट्र, गुजरात, उडीसा, मणिपुर, पश्चिम बगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और पंजाब आदि प्रदेशों से ३०० के लगभग नशाबन्दी कार्यकर्त्ता तथा नेता इस सम्मेलन में पधारे। महिलाओं की सख्या भी ६५ के लगभग थी। ५-११-९२ से ही विभिन्न प्रान्तों से कार्यकर्त्ता आने लगे थे। हरयाणा के कार्यकर्त्ता भी उसी दिन से आने लगे थे। ६ तारीख को तो यह सख्या २५०० से ऊपर पहुंच गई थी।

बाहर से आनेवाले कार्यकर्त्ताओ और नेताओं के ठहरने का प्रबन्ध पुरुषो और महिलाओ का अलग-अलग किया गया था। ५० के लगभग दयानन्द मठ मे भी ठहरे हुए थे। आवास, परिवहन तथा भोजन, चाय, नाश्ता आदि का बडे पैमाने पर प्रबन्ध करना आवश्यक था।

मुझे बडी प्रसन्नता है कि हमारे अधिकारियों, सदस्यों, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा कर्मचारियों के अथक परिश्रम से सम्मेलन सफल हुआ। इस यज्ञ मे किसी ने अधिक किसी ने कम परन्तु सब ने अपनी आहुति डाली है। सबके सयुक्त प्रयास का फल ही सम्मेलन की सफलता है।

आपका जो महत्त्वपूर्ण योगदान इस महान् कार्य में रहा उसके लिए मैं हृदय से आपका धन्यवाद करता हू और आशा करता हू कि शराबबन्दी के महान् जनकल्याणकारी अभियान मे आपका सहयोग और योगदान आन्दोलन की प्रगति के साथ-साथ बढता जायेगा।

भवदीय
प्रो० शेरसिंह, सभा प्रधान

निमन्त्रण-पत्र

सेवा में,

श्रद्धेय साधु-महात्माओ! पूज्या मातृ-शक्ति तथा आदरणीय महानुभावो!! और दयानन्द को भावी आशाओ!!! आप सब यह जानकर अतीव हर्ष मनाओ कि आपके प्यारे गुरुकुल किशनगढ-घासेडा का वार्षिक उत्सव २१, २२ नवम्बर शनिवार और रविवार को बडी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। यह महोत्सव पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे मनाया जायेगा अत: आप सब सादर सप्रेम आमन्त्रित हैं।

१ हे लोगो! मेरा आशा, क्या होगी खेल तमाशा। आपको उत्सव में बुलाना चाहता, मिलकर आओ तो सही। लाभ उठाओ तो सही॥ फिर मत कहना भाई, कि हमको नही बताई॥
३ आ भाई आ, उत्सव में आ। होगा वेदप्रचार, होगा वेदप्रचार॥ आ आई आ, मिलकर आ। औरों को ला, देगे तुमको प्यार-२॥
४ छोड कर ससार जब तू जायेगा। कोई न साथी तेरा साथ निभायेगा। छोड़ कर घरबार उत्सव मे आयेगा। नैष्ठिक भ्राता तेरा साथ निभायेगा॥
५ जो उत्सव मे आयेगा। वह धर्म लाभ उठायेगा। जो नहीं आयेगा। सभवत: वह पीछे पछतायेगा। क्योंकि यह शुभ अवसर चला जायेगा, आप देखते रहियो। साल बाद यह आयेगा, आप बाट ही जोहियो॥
६ भूल मत जाना, उत्सव मे आना। आकर के उत्सव की शोभा बढाना। भूल मत जाइये, उत्सव मे आइये। आकर के उत्सव की शोभा बढाइये॥
७ कष्ट के लिए क्षमा। हार्दिक धन्यवाद, सबको सादर सप्रेम नमस्ते आज। शेष आप सबके दर्शन करने के बाद।

दर्शनाभिलाषी — सब गुरुकुलवासी।
आर्य गुरुकुल किशनगढ–घासेडा, बीकानेर
रेवाडी, हरयाणा

सोचिये!
नशीली चीजों से परिवार की,
बर्बादी होती है।

जन्म दिवस समारोह सम्पन्न

दिनांक २५-१०-९१ को दीपावली के दिन आर्य निवास नलवा (खेतों की ढाणी हिसार) में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के कनिष्ठ सुपुत्र श्री राजबीरसिंह आर्य का १६वां जन्म दिवस मनाया गया। प्रातः ८ बजे हवन किया गया। उसके बाद सुबेदार रामेश्वरदास आर्य मन्त्री आर्यसमाज कवांरी ने गायत्री मन्त्र के महत्त्व पर प्रकाश डाला। बच्चे को आशीर्वाद दिया। मुख्यवक्ता प्रि० भगवानदास आर्य (पटेल नगर हिसार) ने बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य व लम्बी आयु की प्रार्थना भी की। श्री महेन्द्रसिंह सरपंच नलवा पं० अमरसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज नलवा, सुबेदार हरचन्द्र आर्य प्रधान आर्यसमाज ढालावास, हवलदार रणजीतसिंह आर्य कवांरो ने भी शुभ आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर दीपावली पर्व का महत्त्व तथा महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों की भी चर्चा की गई।

भलेराम आर्य ढाणी निवासी

आर्यसमाज ढ़ाणी पाल का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक १९-२० अक्तूबर १९९२ को आर्यसमाज ढ़ाणी पाल (हिसार) का उत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्यजगत् मूर्धन्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, महात्मा ताराचन्द जी, पं० भरतलाल शास्त्री, पं० शिवकुमार शास्त्री सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, बहिन कौशल्या शास्त्री, चौ० रोशनलाल आर्य पूर्व विधायक, डा० बारूराम आर्य, नैष्ठिक ब्रा० जीवानन्द जी आदि विद्वान् वक्ताओ ने शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। स्वामी ओमानन्द जी ने विशेषकर इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाली बर्बादी से अवगत कराया साथ में गौमाता के महत्त्व व गुणों से लोगों को अवगत कराया। प्रत्येक मनुष्य को गऊ पालने का सुझाव दिया। क्रान्तिकारी जी ने भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से चलाए जा रहे प्रतिदिन प्रात: काल में हवन किया गया। डा० सत्यवीरसिंह व अध्यापिका श्रीमती रमन आर्या (दम्पति) ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। इसके अतिरिक्त प० जबरसिंह खारी तथा प० जयपालसिंह बेधड़क के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। श्री ओमप्रकाश जी का उत्सव में सहयोग रहा। प्रचार में निकट के गाव के लोगों ने भी भाग लिया। सभा को ३०० रु० प्रचार हेतु दान दिया गया।

जवाहरसिंह आर्य
ढाणी पाल निवासी

वीर पर्व सम्पन्न

आर्य वीर दल आर्यमगढ़ द्वारा आयोजित वीर पर्व (दल सहायता) समारोह मुख्य अतिथि आचार्य ब्र० नरेन्द्रलाल आर्य (सह सचालक पूर्वी उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल) की उपस्थिति मे सम्पन्न हो गया।

इस अवसर पर पूर्वी उत्तर प्रदेश के बौद्धिकाध्यक्ष श्री रामाज्ञा 'आर्य पुत्र' देवरिया व मण्डल संचालक आजमगढ़ डा० राजेन्द्रप्रसाद आर्य उपस्थित थे।

इस अवसर पर विजयदशमी के महत्त्वस्वरूप को दर्शाते हुए आर्य वीरों ने वीरता पूर्ण गीतों, भाषणो को प्रस्तुत किया। आर्य वीरो को पुरस्कार भी दिया गया।

सन्तोषकुमार मौर्य जिज्ञासु,
मण्डल मन्त्री वीर दल
आजमगढ (आजमगढ)

प्रो० शेरसिंह का अध्यक्षीय भाषण

बीसवां राष्ट्रीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता-सम्मेलन

(७-८ नवम्बर, १९९२, दयानन्दमठ रोहतक)

देवियो तथा सज्जनो !

पिछले लगभग ३० वर्षों से अपूर्व निष्ठा से और पूरी कुशलता से आदरणीया डा० सुशीला नायर जो ने अ० भा० नशाबन्दी परिषद् का संचालन किया है। आइये ! हम सब मिलकर हृदय से इनका आभार प्रकट करें। हमें विश्वास है कि इनका मार्गदर्शन और आशीर्वाद हमें लगातार मिलता रहेगा। नशाबन्दी के पुनीत कार्य में लगे भारत के कोने-कोने से आये समर्पित व्यक्तियों ने जो महान् कार्य मुझे सौंपा है, उसे मैं आप सबकी आकांक्षाओं के अनुरूप निभा पाऊंगा क्या ? यही प्रश्न मेरे हृदय को आन्दोलित कर रहा है।

आप लोगों की साधना, समय की मांग तथा भारत के जन-जन में, विशेषकर महिलाओं में उभरती हुई जागृति के कारण अब शराबबन्दी एक जनआन्दोलन बन चुका है। यह आन्दोलन अब उत्तर में हिमाचल और हरयाणा से लेकर दक्षिण मे आन्ध्र और तमिलनाड तक, राजनेताओं, तथाकथित धर्माचार्यों और बुद्धिजीवियों के हृदयों को उत्तेजित करने लगा है। वे अपने बचाव की चिन्ता करने के लिए विवश हैं। आज लोहा गरम होने लगा है, यही समय है जब चोट मारकर करोड़ों बच्चों महिलाओं और परिवारों को शराबरूपी राक्षस के चंगुल से बचाया जा सकता है। हम सबको मिलकर निष्ठा के साथ इस महान् जनकल्याण अभियान को आगे बढ़ाना चाहिये। मुझे विश्वास है कि हम सब इस महान् यज्ञ में अपनी आहुति डालने को तैयार हो चुके हैं।

इस महान् अभियान में हमें प्रेरणा देनेवाले दो युग पुरुष हैं, स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी। 'करोड़ों मानवों को दुःखो और बुराइयों से मुक्ति दिलानेवाला मार्ग ही मोक्षप्राप्ति का मार्ग है, पलायनवाद मुक्ति का मार्ग नहीं है' यह स्वामी दयानन्द ने तब कहा था जब कुछ भक्तों ने उनको हिमालय की गोद में बहती नदियों के किनारे योगाभ्यास करके मोक्ष प्राप्त करने की सलाह दी थी। अपना सुख छोड़कर दूसरे के दुःख दूर करने को ही उन्होंने धर्म का सार माना था, इसीलिए अपने द्वारा स्थापित न्यास का नाम भी उन्होंने 'परोपकारिणी सभा' रखा था। आज हमारे सम्मेलन का उद्घाटन करनेवाले महान् संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी उसी न्यास के अध्यक्ष हैं। महात्मा गान्धी सदा अपनी प्रार्थनासभाओं में नरसी मेहता का प्रसिद्ध गीत "वैष्णव जन तो ते ने कहिये जे पीड पराई जाणे रे, पर दुःखे उपकार करे और मन अभिमान न आणे रे" गाया करते थे हम सब उन्ही दो युग पुरुषों के अनुयायी हैं।

आज इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि आज जिन अत्यन्त विषम परिस्थितियो मे राष्ट्र जूझ रहा है उनके लिए जिम्मेदार वही लोग हैं जिन्होंने इन महापुरुषों के नाम का तो भरपूर लाभ उठाया परन्तु एक एक करके उनके मन्तव्यों का देश के जीवन से बहिष्कार करते जा रहे हैं। दुर्भाग्य तो यह है कि आज इन्ही तत्त्वों ने, कहीं कम और कही ज्यादा सभी सामाजिक, राजनीतिक और तथाकथित धार्मिक संगठनों पर कब्जा कर लिया है। जितना उनका शिकन्जा मजबूत होता जाता है उतना ही वे उन मन्तव्यो की आज खिल्ली उड़ा रहे हैं और बुराइयो को बढाने के घृणित कार्यों के बचाव में नित नई दलीलें ढूढने मे लगे रहते हैं। वास्तव में आज देश में भ्रष्ट राजनेताओं, नौकरशाहों और पूंजीपतियों की तिकड़ी सुनियोजित ढंग से सभी क्षेत्रों में हावी हो चुकी है। यह तिकडी देश को बेधड़क होकर लूट रही है, लूट हो नहीं रही छल भी रही है। इन्होंने देश को लूटकर लाखों करोड़ रुपया विदेशों में जमा करके देश को भिखमगा बना दिया है। जिस देश के लोगों का, जितना देश ने विदेशों से ऋण लिया है उससे अधिक रुपया विदेशों मे जमा हो, उस देश को भीख मांगने की जरूरत होनी चाहिए क्या ? यह बात उनसे पूछे कौन ? इनके रंगीन पैसे से तो सदस्य संसद और विधान सभाओं मे चुनकर आते है. यही सब दलों के टिकट देने वाले हैं, यदि कोई भूला-भटका आ भी जाये तो नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है। यह तिकडी जनता के प्रतिनिधियों को ही नही, स्वय जनता को भी बुराइयों में फसाकर उसको निस्सहाय और निकम्मा बनाने का षड्यन्त्र रच चुकी है। इस प्रकार बनाये हुए निस्सहाय और निकम्मे लोग गिडगिड़ाने के सिवाय क्या कर सकते हैं ? जिस समाज के करोड़ों बच्चे बाप के जीवित रहते अनाथ हो चुके हैं और महिलाएं पति के जीते जीते विधवाओं से अधिक दुर्दशा का जीवन जी रही हों, वह समाज गिडगिड़ाने के सिवाय कर भी क्या सकता है।

लूट

यह टोली भली-भांति जानती है कि किसी को लूटना हो तो पहिले उसे बेहोश कर दो, फिर निश्चिन्त होकर लूटो। शराब को बुराइयों को ये खूब जानते हैं, नशाबन्दी कार्यकर्ताओं से कहीं अधिक, इसीलिये तो इसको हथियार बनाकर भोली जनता को लूटने मे सफलता पर सफलता प्राप्त करते जा रहे हैं। इन्होने तो नई से नई तरकीबे घर-घर में, गली-गली में शराब पिलाने की सोच ली हैं और वे एक-एक करके लागू करवा रहे है। एक प्रान्त मे वे नई तिकडम चलाते हैं और फिर वह धीरे-धीरे सब जगह फैलती रहती है। जनता को ठगने के लिये एक तरफ तो पंचायतों को अधिकार देने की बात करते हैं दूसरी तरफ उनको रिश्वत देकर अपना और अपने एजेन्ट शराब विक्रेताओं का उप एजेन्ट बना रहे है। हरयाणा सरकार देशी शराब को एक बोतल के लिये एक रुपया, अंग्रेजी शराब की एक बोतल के लिये दो रुपये और बीयर की बोतल के लिये २५ पैसे पंचायतों को देती है। उनकी दृष्टि में पंचायतों का मुख्य कर्तव्य है शराब की दलाली। हरयाणा में पचायत चाहे तो प्रस्ताव पास करके ठेका बन्द करवा सकती है और रिश्वत का लालच छोडकर इस वर्ष ३०० से अधिक पचायतों ने प्रस्ताव पास किये, परन्तु शराब का ठेकेदार, पुलिस और आबकारी महकमे के कर्मचारी अवैध शराब की बिक्री का झूठा सच्चा केस बनाकर प्रस्ताव को रद्द करवा देते हैं। शराब का ठेकेदार सरकार के अधिकारो का स्वय उपयोग करके ३ उप ठेके भी खोल सकता है। आन्ध्र प्रदेश में तो प्लास्टिक के थैलों में १०० ग्राम २०० ग्राम शराब भी सब दुकानों पर बिक सकती है। बच्चे, किशोर अथवा नोजवान सभी बेरोकटोक शराब खरीद सकते हैं और पी सकते है। दुनिया के किसी और देश मे नाबालिग बच्चे न शराब खरीद सकते हैं और न बेच सकते हैं। अब तो रमकोला भी देश मे प्रवेश करने जा रही है तब तो ३ साल के बच्चे भी जो कोला पीने के आदी होने लगे हैं, वे भी शराब पीयेंगे। ऐसा होगया तो तिकडी की खूब बन आयेगी, ३ साल के बच्चे से लेकर यमराज के पास जाने तक सब उनके गुलाम। आज भी भारत की जनता ५०० अरब रुपये की शराब पीती है, यदि तिकड़ी की यूँ ही चलती रही तो यह आंकड़ा कहा जाकर टिकेगा ?

छल

(१) गरीबो की रेखा

गरीबी मिटाने के कार्यक्रमों के लिये जो राशि स्वीकार की जाती है उसमे से २० प्रतिशत ही गरीबो तक पहुंच पाती है। यह राजीव गांधी प्रधानमन्त्री भारत सरकार की स्वीकारोक्ति थी, परन्तु यह भी मानलें कि वह पाई-पाई गरीबों तक पहुंच जाती है तो भी वह राशि गरीब आदमी की जेब से शराबवाले जो राशि निकाल ले जाते हैं उससे कई गुना कम है। फिर भी कौनसा गणित है जिसके आधार पर सरकारें कहते हुए नही थकती कि प्रतिवर्ष वे इतने करोड गरीब लोगों को गरीबी की रेखा से ऊपर ले आते है। ऐसा गणित उनके पास है तो वही गणित वो विदेशी बेंकों और विश्वबेंक पर क्यों नहीं चलाते जिसके कर्ज के नीचे हम दबते जा रहे हैं और भीख का कटोरा लिये विदेशों के चक्कर काटते रहते हैं। जनता के साथ यह छल बन्द होना चाहिये।

(२) राजस्व के घाटे का रोना

सब प्रान्तों को शराब से प्राप्त आमदनी साल भर में कुल लगभग १०.००० करोड रुपये है। सरकार अधिकतर अमीर लोगों को कई बहाने बनाकर जो सब्सीडी देती हैं वह ५८ ०००करोड रुपये है उसमें से केवल ५ हजार करोड खाद को सब्सीडी है। जिसका रोना अर्थशास्त्रियों की फौज डा० मनमोहनसिंह के नेतृत्व मे दो वर्ष से रोनी आरही है। यही एक सब्सीडी है जो निर्धन मे निर्धन लोगो को मिलती है। यदि अमीरों को मिलने वाली सब्सीडी २० प्रतिशत भी कम कर दी जाये तो घाटा पूरा हो जाता है। और उसके कारण जो आय राज्य सरकारों की बढ़ेगी और शराब के द्वारा उत्पन्न अनेक समस्याओ से राहत मिलेगी

उन सब का हिसाब लगायें तो आय के घाटे से ३ या ४ गुना आर्थिक लाभ राज्य सरकारों को मिलेगा।

वेतनभोगियों से तो आयकर स्रोत पर ही वसूल हो जाता है और यह तथ्य है कि बाकी लोग २५ प्रतिशत आयकर भी नहीं देते हैं। यही हालत और करों की भी है। परन्तु ये तथाकथित जाने-माने अर्थशास्त्री इस बारे में कभी नहीं बोलते। नये कर लगाने की बात कहते हैं तो अप्रत्यक्ष करों की, जो गरीब से गरीब नागरिक को भी देना पड़ता है। इन अर्थशास्त्रियों को विनोबा जी के शब्दों मे अनर्थशास्त्री ही कहना चाहिये। राजस्व के घाटे का छल तिकड़ी के दलाल बनकर ये अर्थशास्त्री करते हैं।

३. नाजायज शराब

शराबबन्दी के विरोधी नाजायज शराब की डफली बड़े जोर से बजाते हैं। परन्तु नाजायज शराब के बनाने और बेचने के काम में महकमा आबकारी, पुलिस तथा प्रशासन के अन्य अधिकारी, कहीं-कहीं नीचे के स्तर से लेकर ऊपर के स्तर तक के राजनेता मिले रहते हैं। प्रशासन और राजनेताओं द्वारा समर्थित गिरोह ही यह काम सारे देश में आज बड़े पैमाने पर कर रहे हैं। इन गिरोहों के हाथ बहुत लम्बे हैं और वे ऊपर तक पहुंचते हैं। कहीं किसी का और कहीं किसी और धाकड़ आदमी का गिरोह ही इस काम में लगे हैं। मुझे किसी मित्र ने कहा कि यदि ऐसा न होता तो क्या बात है कि हूच, सुरा और अन्य जहरीली शराबें पिलानेवाले जो कई हजार लोगों को मार चुके हैं और अन्धे कर चुके हैं उनमें से न किसी को फांसी हुई और न आजीवन कारावास। एक व्यक्ति की हत्या से ये सजाएं रोज मिलती हैं और सैकड़ों व्यक्तियों को एक ही दिन में मार डालने से यह सजा किसी को न मिली। जिस दिन राजनेता और नौकरशाही कमर कस के नाजायज शराब को खत्म करना चाहेगी उस दिन यह बीमारी नाममात्र ही रह पायेगी। यह लंगड़ा बहाना केवल छलावा है।

४. बेरोजगारी

अर्थशास्त्री दलील देते हैं कि शराब बन्द कर दी तो लाखों लोग बेरोजगार हो जायेंगे। अधिक लोगों को रोजगार तो शराब को कुटीर उद्योग में बनाने से मिलता है। यदि रोजगार की बात ही मुख्य है तो शराब के कारखानेदारों और ठेकेदारों की वकालत क्यों? जनता के लिए हानिकर चीज पैदा करनेवाला चाहे घर में चाहे कारखाने मे बनाये, अपराध है। जब गांव में बसे करोड़ों कारीगरों का रोजगार बड़े-बड़े पूंजीपति उनके द्वारा कुटीर उद्योग से बनाए जानेवाली वस्तुएं बनाकर छीन रहे थे, उस दिन कोई अर्थशास्त्री इनके रोजगार की बात नहीं बोला। फिर ये लोग तो लोगों को सुविधा के लिए उनके जीवन में काम आनेवाली निर्दोष वस्तुएं बनाते थे। शराबवाले तो लोगों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बिगाड़कर उनको समय से पहिले ही यमराज के पास भेज देते हैं और जीते हैं तब तक परिवार पर भार बने रहते हैं। उनके इस अपराधों से लिप्त रोजगार की चिन्ता इनको सता रही है। लोगों के काम की चीजें बनाने के सैकड़ों काम हैं उन कामों में लगकर वे अपना जीवन सुधारें, अपने परिवारों और समाज का भी। ऐसा प्रचार लगातार चलता आरहा है कि सैनिकों को शराब पिलाना उनकी दक्षता में सहायक होता है और विशेष रूप से जब वे पहाड़ों की चोटियों पर काम करते हैं। जनरल सुन्दर जी का मत बिल्कुल उलटा है। उनका मानना है कि यदि जवानों को पहाड़ों पर शराब पिलाई गई तो वे आलसी और निष्क्रिय हो जायेंगे, और शीत दाह के शिकार हो जायेंगे, उनके अंग गल सकते हैं। युद्धों के स्वरूप और ढांचे में क्रान्ति आचुकी है। आज की लड़ाई तो इलैक्ट्रोनिक्स की लड़ाई है जो लड़ाई के मैदान से दूर बैठकर बटन दबाकर लड़ी जाती है। आज देश को पूरी धरती और आसमान लड़ाई का मैदान है। एक बटन गलत दब जाये तो तबाही आ सकती है। थोड़ी सी ऐसी गलतियों से पराजय हो सकती है, परमाणु युग में तो प्रलय भी हो सकती है। इसलिये सेनाओं मे शराब का चलन खतरनाक है। शासक लोग ये बातें जानते हैं, परन्तु वे सेवा मे होते हुए और सेवा से हटने के बाद भी जवानों को शराब इसलिये मुफ्त या सब्सीडी देकर पिलाते हैं कि कहीं गम्भीर चिन्तन करने का अवसर मिलने पर ये शासन में सुधार की बात न सोचने लगें, या सेवानिवृत्त होकर जनता में अनुशासन और जागृति पैदा न कर दें। तिकड़ी इतना खतरा क्यों मोल लेने लगी।

उपाय

इस लूट और छल से जो परिस्थितियां बनीं उनसे उबरने के दो ही उपाय हैं। १. न्यायपालिका २ लोकशक्ति।

१. न्यायपालिका

राज्य सरकारों की राजस्व कमाने की होड़ और सभी सरकारों के अनेक प्रकार के छलावों के रहते उनसे आशा करना तो व्यर्थ है। यदि उनको करना हो तो वे तो वचनबद्ध हैं। १९५६ में लोकसभा ने पूर्ण नशाबन्दी का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया। फिर उस प्रस्ताव पर अमल करने के लिए योजना आयोग ने सुझाव दिया कि शराबबन्दी के कारण हुए घाटे का ५०% भारत सरकार दे। सरकार ने इसे स्वीकार किया। भारत सरकार ने १९७६ में १० सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की जिसके अनुसार ५ वर्ष में पूर्ण नशाबन्दी लागू करनी थी। ये सभी निर्णय निरस्त नहीं हुए हैं, न बदले गये हैं, परन्तु अमल उलटा हो रहा है। इसी कारण मैंने दिल्ली और राजस्थान की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के मन्त्रियों सहित उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर की। सुप्रीमकोर्ट द्वारा सब राज्य सरकारों और भारत सरकार को ४ नवम्बर १९९२ तक जवाब देने के नोटिस भेजे गये, परन्तु ऐसा लगता है, सरकारें और समय लेना चाहती हैं। राज्य सरकारों ने और समय मांगा है। अब सबको ९ दिसम्बर तक जवाब भेजने हैं। ४ नवम्बर १९९२ को सुप्रीमकोर्ट ने ५ सप्ताह का समय और दिया है। वास्तव में दोमुही बातें करते-करते वे स्वयं फंस गए हैं। सभी प्रमुख दलों की सरकारें हैं और सभी अपने अधीन प्रान्तों को छोड़कर दूसरे प्रदेशों में शराबबन्दी की बात करते हैं। हम तो चाहते हैं कि वे इस तथ्य को हृदय से स्वीकार करें कि यह एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्न है जो मन्दिर मस्जिद और दंगे फिसादों से कहीं बड़ा है। सभी दलों को बैठकर इस प्रश्न को ऐसे ढंग से हल करना चाहिये जिससे बुराइयों में फसती जा रही गरीब जनता का उद्धार हो सके। शराब पीना और पिलाना दोनों ही अपराध है। जैसे दूसरे की हत्या और आत्महत्या दोनों ही अपराध हैं और दोनों के लिये सजा निश्चित है। पार्टियां और सरकार इस ज्वलन्त समस्या का हल न निकाल सकें तो उच्चतम न्यायालय उनको ठीक रास्ते पर लाये, यही हमारी याचिका का उद्देश्य है।

२. लोकशक्ति

लोकशक्ति को जागृत करना ही सब राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान का अचूक नुस्खा है। शासन द्वारा न्यायपूर्ण और जनहित से प्रेरित मांगें ठुकराये जानें और तानाशाही के प्रदर्शन का जवाब लोकशक्ति का संगठन ही है। जनहित के लिये बनाये गये कानूनों को लागू करने के लिए भी लोकशक्ति का समर्थन आवश्यक है। यदि सरकारें और न्यायपालिका अपने कर्तव्यों के पालन में कोताही करें तो इन दोनों को ठीक करना भी लोकशक्ति के द्वारा ही सम्भव है। लोकशक्ति के द्वारा कानून भी बदले जा सकते हैं, संविधान भी बदले जा सकते हैं और व्याख्याएं भी सुस्पष्ट की जा सकती हैं। यह संसार भर में होता आया है और होता रहेगा।

यह कैसा पंचायती राज और लोकतन्त्र है कि भिवानी जिले की सब पंचायतों द्वारा प्रस्ताव पास किये जाने और रोहतक जिले की भी लगभग सभी पंचायतों के प्रस्ताव पास होने पर भी इन जिलों को शराब से मुक्त घोषित नहीं किया जा रहा। आन्ध्र प्रदेश में लाचार होकर महिलाओं ने जब सब शराब की दुकानें उठवादी फिर भी नैलोर जिलो को शराबमुक्त घोषित क्यों नहीं किया जाता। क्या यह लोकशक्ति को चुनौती नहीं? और यदि इसमें से विद्रोह या सत्याग्रह जन्म लेले तो दोषी कौन होगा? ऐसा लगता है अब नशाबन्दी कार्यकर्त्ताओं को बिगुल बजाना होगा, और वह बजा देना चाहिये। उसकी तैयारी मे जी जान से जुट जाना चाहिये।

देश का दुर्भाग्य है कि आज राज और समाज दोनों ही शराब के गुलाम होते जा रहे है, सरकारें जो बात कहती हैं उसका परोक्षरूप से यही अर्थ निकलता है कि वे दोनों गुलाम हो चुके हैं।

"भारत छोड़ो" आन्दोलन की स्वर्ण जयन्ती के पुनीत अवसर पर महात्मा गान्धी को नामलेवा सरकारों को तथा देश की जनता और विशेष रूप के स्वतन्त्रता सेनानियों, नशा बन्दी कार्यकर्त्ताओं और प्रबुद्ध नागरिकों को शराब की गुलामी से भारत राष्ट्र के समाज और राज दोनों को मुक्ति दिलाने का सकल्प लेना चाहिये।

रोहतक पधारने पर आप सब का हार्दिक स्वागत है।

नशे के विरुद्ध अभियान

नाहन, २ नवम्बर (निस) समाज में फैलते नशे के जहर के प्रति लोगों को सावधान करने के लिये नाहन के रोटरी परिवार ने एक अच्छा बीड़ा उठाया है। रोटरी क्लब, इनरव्हील क्लब तथा स्थानीय रोट्रेक्ट क्लब द्वारा इस जहर के खतरों से लोगों को दूर रखने के लिए जगह-जगह के गोष्ठियां आयोजित की जा रही हैं।

क्लब के एक प्रवक्ता अमरसिंह चौहान ने बताया कि कई महिला मंडलों, युवक मंडलों तथा पंचायतों द्वारा अपने-अपने इलाकों में नशे के खिलाफ ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के कई आमन्त्रण मिले हैं।

गत दिवस नाहन में मनाये गये नशाबन्दी सप्ताह के उपलक्ष्य में स्कूली छात्रों की भाषणप्रतियोगिता का आयोजन रोटरी परिवार द्वारा किया गया जिसमें जवाहर नवोदय विद्यालय नाहन की कु. पूजा भटनागर ने प्रथम पुस्कार प्राप्त किया। दूसरा तथा तीसरा पुरस्कार बी. ए. वी. स्कूल नाहन की कु. पवित्रा जस्टा तथा कु. प्रेरणा कश्यप ने हासिल किये।

शोक समाचार

आर्यसमाज जूआ जिला सोनीपत के वयोवृद्ध सदस्य श्री ईश्वर सिंह जी का दिनांक ३० अक्तूबर को ६५ वर्ष की आयु में हृदयगति बन्द होने पर निधन हो गया। अपने ग्राम मे आर्यसमाज तथा आर्य पाठशाला की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान किया था और आर्यसमाज तथा समाज सुधार के सभी कार्यों में अग्रणी रहते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

केदार सिंह आर्य

अम्बाला छावनी में वेदप्रचार की धूम

वैदिक प्रचार मंडल, रामनगर अम्बाला छावनी में ३० अक्तूबर से एक नवम्बर तक वार्षिकोत्सव बडी श्रद्धा एवं धूमधाम से मनाया गया। जिसमें स्वामी माधवानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी, डा० विक्रम विवेकी, आचार्य देवव्रत जी, डा० प्रतिभा पुरंधि श्री महीपाल जी के वेद उपदेश तथा श्री नरेन्द्र शास्त्री, श्री रुबेल सिंह आर्य एव आर्य भजनमंडली के रोचक भजन हुये।

१ नवम्बर को समापन समारोह की अध्यक्षता नगरपालिका के कार्यकारी अधिकारी श्री जयप्रकाश विश्नोई ने की तथा अपने संक्षिप्त भाषण में मंडल को हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया। समापन समारोह का अभूतपूर्व दृश्य देखते बनता था जिसमें अधिक संख्या में नर नारियों ने हिस्सा लिया। बैठने का स्थान छोटा पड़ गया। लक्ष्मी देवी गर्ल स्कूल की छात्राओं ने बैंड का प्रदर्शन किया। इसके अतिरिक्त अन्य बच्चों ने अपने गीत आदि प्रस्तुत किये। स्वामी माधवानन्द जी तथा अन्य वक्ताओं के वेद उपदेशों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। एक लम्बे समय के बाद ऐसा सफल कार्यक्रम अम्बाला छावनी में देखने को मिला ऐसी चर्चा रही। इस अवसर पर मंडल के १० वर्ष के कार्यविवरण को पुस्तक के रूप में बनाकर बांटा गया। मच का सफल संचालन मंडल के मंत्री श्री वेदमित्र हापुड़ वालों ने किया। यह वार्षिकोत्सव एक चर्चा का विषय बन गया जो मंडल को विजयश्री की ओर प्रेरित करता है। अन्त में शुद्ध देशी घी का ऋषि लगर हुआ।

वेदप्रकाश शर्मा (प्रधान)

आर्यसमाज लोहारु का चुनाव

प्रधान:—श्री रामऔतार आर्य, उपप्रधान:—श्री भँवर सिंह, मंगलाराम, मन्त्री:—श्री राजेन्द्रकुमार सैनी, उपमन्त्री:—श्री मांगेराम आर्य, कोषाध्यक्ष:—श्री रोहताशकुमार आर्य, पुस्तकाध्यक्ष:—श्री हवासिंह आर्य।

अखिल भारतीय नशाबन्दी सम्मेलन रोहतक में—

गुजरात के आबकारी मंत्री श्री गोविन्दभाई का भाषण

जैसा कि आपको विदित है, मैं गुजरात राज्य से आया हू। गुजरात मे नशाबन्दी शुरू से ही है और यह नीति दूसरे राज्यों मे भी लागू हो ऐसी शुभ इच्छा भी रही है। मुझे खुशी है कि उत्तर भारत के हृदय समान हरयाणा राज्य में नशाबन्दी के प्रसार तथा प्रचार के लिए सम्मेलन हो रहा है और हमें भी उसमे भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

नशाबन्दी नीति का अनुभव आज हुआ हो ऐसी बात नही है। भारत के सविधान के अनुच्छेद ४७ मे स्पष्ट उल्लेख है कि "राज्य अपनी जनता के पोषक भोजन और जीवन निर्वाह के स्तर को ऊंचा करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्रारम्भिक कर्तव्यों में मुख्य समझेगा और विशेषतया, राज्य प्रयत्न करेगा कि नशीले पेयों और नशीली दवाइयो के जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, प्रयोग का निषेध हो, सिवाय उसके जो चिकित्सा के लिए उपयोगी हों।"

पूज्य महात्मा गांधीजी ने भारत की आजादी से पहले ही इस भयानक दूषण को दूर करने का बीडा उठाया था। क्योंकि वे जन-जन की भावना से परिचित थे तथा उन्हें अनुभव था कि नशा की लत किस तरह एक सुखी तथा समृद्ध परिवार को विनाश की तरफ धकेलती है, बालक तथा माताओं की क्या दुर्दशा होती है, उनका भविष्य अंधकार के गर्त में डूब जाता है। इस अनिष्ट के सम्बन्ध मे उन्होंने कहा था कि जिन्होंने पीडा सही है वही जानते हैं कि शराब पीने की बुरी लत किस तरह घर को बर्बाद करती है।

गुजरात राज्य ने पूज्य बापू की अन्तरवेदना तथा भारतीय संविधान की पवित्र भावना का हृदयपूर्वक आदर किया तथा नशाबन्दी की नीति को अपनाया जिसके फलस्वरूप गुजरात को इस दूषण से मुक्ति पाने में काफी हद तक सफलता मिली है तथा राज्य के विकास की एक नई दिशा मिली है। गुजरात में नशा तथा नशीले पदार्थों से सम्बन्धित अपराध दूसरे राज्यों की तुलना में बहुत कम हैं। गुजरात में आज औद्योगिक शांति है जिसकी वजह से अच्छा औद्योगिक विकास हुआ है। आज उद्योग के क्षेत्र में गुजरात का समस्त भारत के राज्यों में दूसरा स्थान है तथा निकट भविष्य में आशा रखते हैं कि गुजरात इस क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त करेगा।

गुजरात में किसी भी स्तर के आदमी का नजरिया देखे तो उसकी जो भी आय होती है उसे फिजूलखर्ची तथा नशे पत्ते मे खर्च न करके कुछ न कुछ बचत करने की भावना होती है। पिछले पांच साल के राष्ट्रीय स्तर के आंकडे देखे तो अल्प बचत में गुजरात हमेशा अग्रिम स्थान पर रहा है तथा इस बचत ने देश के तथा राज्य के विकास कार्यों में मदद हिस्सा रहा है।

कानून तथा व्यवस्था की स्थिति भी दूसरे राज्यों से तुलनात्मक रूप में अच्छी है। अब भी गुजरात के किसी भी हिस्से मे औरते या लड़कियां अकेली विचरण कर सकती हैं। रात को भी आभूषण पहन कर घूम सकती हैं। नशाबन्दी से प्रजा में आर्थिक सुधार की स्वयंभू जागृति आई है इससे लोगो की क्रयशक्ति बढी है। नशाबन्दी देश के सम्पूर्ण विकास की चाबी हो ऐसा तो मैं नही कह सकता परन्तु देश अगर दूषणों से मुक्त हो, सामाजिक सुखकारी हो तो देश के विकास मे बहुत बड़ा योगदान जरूर मिल सकता है। किसी ने सही कहा है उत्तम विचारो से ही उत्तम कार्यों का सम्पादन होता है तथा अनिष्टों से अधोगति होती है। शराब का नशा भी अधोगति प्रदान करनेवाला है। महान विचारक मार्कट्वेन ने कहा है कि "ससार की समस्त सेनाएं मिलकर भी इतने इसान और इतनी सम्पत्ति का सर्वनाश नही करती जितनी शराब पीने की आदत करती है।"

यह सही है कि नशाबन्दी की नीति से गुजरात राज्य एक बडी आय (आवक) चुकाता है। परन्तु नशाबन्दी से प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रीति से दूसरे इतने फायदे हुए है कि गुजरात विकास के पथ पर हमेशा अग्रसर होता रहा है। पूज्य बापू के शब्द मैं यहां दोहराना चाहता हू। उन्होंने कहा था कि "मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्या-वृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हू। क्या यह उक्त दोनों बुराइयों की जननी नही। मैं आपसे, देशवासियों के साथ मिलकर, आबकारी राजस्व के अस्तित्व को उखाड फकने और शराब को दुकानों को खत्म करने में योग देने को कहता हूं।"

मुझे एक बात और कहने की है। हमारे सामने एक और भयंकर समस्या नशीली दवाओ के उपयोग की है जो शराब से भी भयकर है। शराब से तो मात्र विकास का पथ अवरुद्ध होता है परन्तु नशीली दवाओं के सेवन से तो देश की भावी पीढी का सर्वनाश हो सकता है। अतः इस खतरनाक प्रचलन तथा दूषण को तुरन्त दबाने की जरूरत है। इसे रोकने के लिए कठोर से कठोर कदम उठाये जाये तथा कड़क से कड़क नियम बनाये जाने चाहिएं। यूनाइटेड नेशन्स ने इस दूषण को गम्भीर समझते हुए अलग से "नारकोटिक्स कट्रोल ब्यूरो" की स्थापना की है जो बहुत ही सराहनीय कदम है। गुजरात सरकार भी अपनी यथायोग्य सामर्थ्य से बुराई को दूर करने का भरसक प्रयास कर रही है।

अन्त में, मैं सम्मेलन के आयोजकों का, हरयाणा सरकार का तथा तमाम आगन्तुक बंधुओं का आभार मानता हू कि नशाबन्दी के प्रचार प्रसार के लिए एक दूसरे की भावनाओं का आदान-प्रदान करने के लिये यह सम्मेलन बुलाया तथा मुझे सुअवसर मिला। मैं इस सम्मेलन की पूर्ण सफलता की शुभकामना करते हुए विदा लेता हूं।

❀

आर्यसमाज कासण्डी (सोनीपत) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द निर्वाण तथा दीपावली के उपलक्ष्य मे प्रतिवर्ष की भांति वार्षिकोत्सव बडो धूमधाम से मनाया गया। दिनांक २० से २६ अक्तूबर १९९२ सोमवार तक स्वामी वेदरक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ तथा वेदकथा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर स्वामी धर्मानन्द जी (पानीपत), ब्र० कृष्णदेव जी (दीनानगर), श्री रामदत्त जी शास्त्री, श्री महाशय गुणपाल जी आदि महानुभावों के प्रवचन हुए। उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० रामनिवास जी को भजन मण्डली ने चार दिनों तक वैदिक धर्म का प्रचार, शराब धूम्रपान, मासादि का खण्डन और नौजवानों को वीरता की अनेक कथाएं सुनाई जिसका ग्रामवासियों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। इस समारोह की सफलता के लिए प्रधान जीतराम जी, मन्त्री मा० जयसिंह जी, श्री युधिष्ठिर जी, श्री सत्यवीर जी आदि सभी अधिकारियों ने अच्छा सहयोग प्रदान किया।

वानप्रस्थी महानन्द आर्यसमाज कासण्डी
(सोनीपत) हरयाणा

महिला सत्संग का आयोजन सम्पन्न

दिनांक १४ से २० अक्तूबर १९९२ को श्रीमती रामावती आर्य के प्रयास एव प्रयत्न से हाउसिंग बोर्ड म० नं० १०७ भिवानी में सायं को महिला सत्संग का आयोजन किया गया। प्रतिदिन माता राजेश्वरी आर्या द्वारा विशेष हवन तथा आध्यात्मिक एवं सुखी गृहस्थी का जीवन जीने बारे विचार रखे गये। दिनांक १७-१०-९२ को सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने भी पंचमहायज्ञ एवं सत्संग के लाभ पर प्रकाश डाला। सत्सग में महिलाओं ने काफी संख्या मे भाग लिया।

मुकेश आर्य भिवानी

शराब को मत हाथ लगाओ

तुम्हें कसम है भारत मां की शराब को मत हाथ लगाओ।
जो पीते हैं उन भइयों को घर-घर जाकर यह समझाओ ॥

(१) पीने की आदत छोडो घर में खुशहाली आयेगी
दूध, दही, घी, मक्खन खाओ सेहत तेरी बन जाएगी
पीकर शराब अपनी सेहत नाहक में तुम मत ना गवाओ
जो पीते हैं उन—

(२) तुम्हें देखकर बच्चे तुम्हारे नकल तुम्हारी करते हैं।
शराबी की बोली बोलें और झूम झूम कर चलते हैं।
इन बच्चों पर दया करो और अपने को तुम भले बनाओ
जो पीते हैं उन—

(३) पीकर झगड़े करते और वैर विरोध बढ़ाते हो
कतल करे भाई-भाई को विष की बेल बढ़ाते हो
पीना छोडकर झगड़े त्यागो आपस में तुम प्रेम बढ़ाओ
जो पीते हैं उन—

(४) पीकर शराब पगले होते बहिन बेटियों को तकते है
धक्के खाते चलते हैं और गंदी गाली बकते हैं
अपनी बहिन बेटियों की रे सब मिलकर के इज्जत बचाओ
जो पीते है उन—

(५) धीरे-धीरे लोग नशों के जाल में फंसते जाएगे
घर की जमीन बिके तेरी जेवर भी सब बिक जाएगे
हिम्मत करके नशे छोड़ दो प्रभाकर तुम मत घबराओ
जो पीते हैं उन—

कप्तान पं० मातूराम शर्मा प्रभाकर
उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा (हरयाणा)

कालांवाली मण्डी (जिला सिरसा) में ऋषि निर्वाण उत्सव

२५-१०-९२ को प्रात. साढे आठ बजे श्री मदन मनोहर जी आर्य, कालावाली मण्डी की दुकान पर मण्डी के प्राङ्गण में महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव एव दीपावली पर्व श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल वठिण्डा की प्रधानता में मनाया गया। संध्या हवन यज्ञ, प्रार्थना और भजनों के पश्चात् श्री वानप्रस्थी जी ने महर्षि दयानन्द जी महाराज के उपकारों एवं मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम चन्द्र जी के आदर्श जीवन पर विचार दिए।

ओमप्रकाश वानप्रस्थी

वेदप्रचार का आयोजन सम्पन्न

आर्यसमाज नलवा (हिसार) के संस्थापक एवं पूर्वप्रधान श्री स्वर्गीय पुष्करलाल आर्य के ७३ वा जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर आर्य-समाज नलवा की ओर से दिनांक २३-२४ अक्तूबर १९९२ को वेद प्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वामी अग्निदेव जी भीष्म (हिसार) सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी संजीवनी स्वामीन सरस्वती (दिल्ली), माता राजेश्वरी आर्या (भिवानी) ने श्री पुष्करलाल आर्य के जीवन पर विस्तार से विचार रखे।

इसके अतिरिक्त पं० जबरसिंह खारी की भजन मण्डली (हांसी) तथा मुकेश अग्रवाल (भिवानी) एव ब्रह्मानन्द जी आर्य के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुये। सेठ पुष्करलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती रामावती आर्या भी कलकत्ता से इस अवसर पर आई हुई थी। प्रात काल प्रतिदिन हवन किया गया। वेदप्रचार में नर-नारियों के अलावा स्कूली बच्चों का विशेष योगदान रहा। ५१ रु० सभा तथा १०० रु० शराबबन्दी आन्दोलन हेतु दान दिया गया।

मंत्री आर्यसमाज नलवा (हिसार)

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय रोहतक का वार्षिक चुनाव

प्रधान—चौ० वजीरसिंह गुलिया, उपप्रधान—श्री ओमप्रकाश वर्मा, मन्त्री—श्रमती सुमित्रा आचार्या, उपमन्त्री, श्रीमती गीता आर्या, कोषाध्यक्ष—श्री बलराम साहनी, प्रबन्धक श्री बलराज शास्त्री।

(पृष्ठ १ का शेष)

सत्याग्रह, हरयाणा की स्थापना, हिन्दी आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन मे कुशल नेतृत्व दे चुके हैं। स्वामी ओ३मानन्द ने घोषणा की कि जिस प्रकार गोरक्षा आन्दोलन में २० हजार तथा हिंदी आंदोलन में ५० हजार सत्याग्रहियों से जेले भरी थी इसी प्रकार शराब सत्याग्रह मे हरयाणा की सभी जेले भर दी जावेगी।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिह ने बताया कि शराबबन्दी के लिए उनका आन्दोलन अहिंसक और संविधान की मर्यादाओं के अनुकूल होगा। सभा की ओर से रोहतक के उपायुक्त को एक ज्ञापन देकर हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी का आग्रह किया है।

शराबबन्दी के लिए महिलाएं भी मैदान में

८ नवम्बर को राष्ट्रीय शराबबन्दी परिषद् द्वारा आयोजित महिला सम्मेलन में शराबबन्दी के लिए कटिबद्ध महिलाओं ने अपने सकल्प दोहराये। सम्मेलन की सचालिका श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता ने कहा शराब का सबसे बुरा प्रभाव भूख, अभाव और उत्पीडन के रूप मे महिलाओ को झेलना पड़ता है इसलिए इस दुर्गुण को मिटाने के लिए अब ये पुरुषों से आगे हैं। मणिपुर, आन्ध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड आदि प्रदेशों मे स्वय सघर्ष कर रही हैं।

देश के विभिन्न क्षेत्रो से आई महिला नेताओं ने अपने विचारों में शराबपान का घोर विरोध किया। परिषद् की पूर्वाध्यक्षा श्रीमती सुशीला नैयर ने कहा, बोडो लेंड, पजाब आदि का उग्रवाद शराब की देन है। शराब के लालची युवक शराब के व्यापारियों के जाल मे असामाजिक कृत्य करते हैं। भारतीय नारी हर कीमत पर भारतीय सभ्यता तथा सांस्कृति की रक्षा करेगी।

उत्तराखण्ड से राजा भट्ट, हरयाणा से नसीब साहू, निर्मला देश पाण्डे, जम्मू से ललिता नागर, बिहार से कलावती देवी, कानपुर से मानवती आर्या, नरेला से ब्रह्मचारणी जबाला, कन्या गुरुकुल खानपुर महाविद्यालय की प्रिन्सिपल डा० शकुन्तला आदि सभी महिलाओं ने शराब के बढते कदम पर रोप प्रकट किया और शराबबन्दी आन्दोलन में कूदने का अह्वान किया। यह सभी महिलाए अपने क्षेत्र में शराबबन्दो आन्दोलन का नेतृत्व कर रही है।

नई दिल्ली में

आर्य युवा महासम्मेलन

आर्य वीर दल की शाखाओं एवं दिल्ली स्थित स्कूलों के छात्र-छात्राओं के लिए खेलकूद, चित्रकला, संगीत, वाद-विवाद, भाषण, निबन्ध लेखन प्रतियोगिताओं का स्वर्णिम अवसर। प्रतियोगिताओं में भाग लेकर भारी पुरस्कार प्राप्त करें।

पुरस्कार वितरण समारोह—रविवार, १३ दिसम्बर १९९२ प्रातः ९ बजे तालकटोरा स्टेडियम।

निवेदक
डा० धर्मपाल महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

माहरा में पूर्ण नशाबन्दी

गोहाना १० नवम्बर (ह. सं.) यहां के माहरा गाव में मदिरा खरीदने, बेचने व पीकर हुडदंग मचाने वालों को ४०० रु से दंडित व सूचित करने वाले को १०० रु० से पुरस्कृत किया जायेगा। पूर्ण नशाबन्दी का संकल्प सभी जातियों की पंचायत में हुआ जिसके प्रवक्ता जगतसिंह मलिक के अनुसार दंड से होनेवाली 'आय' गांव के सरकारी स्कूल विकास पर व्यय होगी।

उदयपुर के लिए विशेष बस यात्रा

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उदयपुर (राजस्थान) के जिस नौलखा महल में बैठकर अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा था, उस महल तथा उद्यान को राजस्थान सरकार ने आर्य प्रति निधि सभा राजस्थान को सौंप दिया है। इसी उपलक्ष्य में वहां २८-२९ नवम्बर ९२ को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से एक भव्य समारोह हो रहा है। आर्यजनता की सुविधा हेतु समारोह में सम्मिलित होने के लिए गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक से दिनांक २६ नवम्बर को प्रातः ९ बजे विशेष बस उदयपुर जावेगी। अतः जो भाई इस समारोह मे सम्मिलित होना चाहते हैं वे २२ नवम्बर तक आने जाने का २५० रुपये जमा करवाकर बस मे अपना स्थान सुरक्षित करवा लेवें। २६ तारीख को जाते समय अजमेर, पुष्कर देखते हुए अजमेर मे रात्रि विश्राम होगा। २७ तारीख को सुबह अजमेर से चलकर चित्तौड़गढ देखते हुए सायं तक उदयपुर पहुंचेगे। २८ व २९ नवम्बर को उदयपुर सम्मेलन देखकर ३० नवम्बर को प्रात. उदयपुर से चलकर नाथद्वारा, हल्दीघाटी आदि स्थानों से होते हुए जयपुर में रात्रि विश्राम होगा। १ दिसम्बर को प्रात जयपुर से चलकर सायं तक गुरुकुल झज्जर पहुँचेगे।

सम्पर्क करें.—आचार्य विजयपाल
गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक
फोन न० २०४४

नारायणगढ़ में शराबबन्दी सम्मेलन

आर्यसमाज नारायणगढ जिला अम्बाला के वार्षिक उत्सव के अवसर पर २१ नवम्बर को जिला अम्बाला शराबबन्दी सम्मेलन हो रहा है। इसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा अन्य अधिकारी पधारेंगे। जिला अम्बाला के सभी आर्यसमाज तथा नशाबन्दी के कार्यकर्त्ताओं और ग्राम पंचायतों के सरपंचों एवं पंचों को इस सम्मेलन में आमन्त्रित किया गया है।

३०) वार्षिक शुल्क देकर सर्वहितकरी के ग्राहक बनें।

शराब छुड़ाने के लिए डट गयी हैं वे

पुण्डरी, १२ नवम्बर। २५००० की आबादी वाले निकटवर्ती गांव क्योडक में शराब के विरुद्ध सैकड़ों महिलाओं, बच्चों एव पुरुषों ने देसी शराब के ठेके का घेराव किया और माग की कि ठेके को गाव से हटाया जाये।

ग्रामीणों का कहना है कि उक्त शराब के ठेकेदार ने गाव की गलियों और मोहल्लों में शराब के नाजायज अहाते चलाए हुए हैं। ग्राम पचायत ने पिछले साल प्रस्ताव पारित कर हरयाणा सरकार से मांग की थी कि गांव में शराब का ठेका न खोला जाए। इसके बावजूद हरयाणा सरकार ने ठेका तो खोला ही था, इसके साथ गाव में एक दर्जन से ज्यादा शराब पिलाने के अड्डे भी कायम कर दिए।

गांव के पंच प्रेमसिंह व निशानसिंह ने बताया कि इन अहातों के खुल जाने से गांव के ८ वर्ष के बच्चे से लेकर ७० साल के वृद्ध तक शराब पीने के आदी हो गये हैं क्योंकि अहातों में शराब उधार पिलाई जाती है। इसी गांव की एक युवती ने बताया कि वह अपने मायके से अपने लिए व बच्चों के लिए गर्म कपड़े लेकर आई थी। उसका पति इतना शराबी है कि उसने वे कपड़े शराब अहाता मालिक को कौड़ियों के भाव बेचकर शराब पी ली। इसी गांव के एक ६५ वर्षीय वृद्ध रामचंद्र ने बताया कि उसके तीन युवा लड़के हैं जो हर समय शराब में धुत्त रहते हैं। वे गेहूं की बिजाई के लिए खरीदा हुआ बीज व खाद के थैले बेचकर शराब पी गए हैं। इसी गांव की एक वृद्ध महिला ने बताया कि मेरा पति व मेरा पुत्र दोनों ही शराब की लत में पड़े हुए हैं। उन्हें पैसे न मिलने पर बचाकर रखा हुआ तेल बेचने में भी संकोच नही करते।

इस गांव के लोगों ने प्रण लिया है कि यहां से शराब का ठेका न उठाया गया तो वे अपने बच्चों सहित जिला के अधिकारियों व मंत्रियों का घेराव करेंगे। ग्रामीणों ने यह प्रस्ताव पारित कर दिया है कि जो भी गांव में कच्ची शराब बेचेगा या कच्ची शराब निकालेगा, उस पर १००० रुपये का जुर्माना किया जायेगा व शराब पीनेवाले व्यक्ति पर ५०० रुपये का जुर्माना किया जायेगा। जुर्माना अदा न करनेवाले का पंचायत बहिष्कार करेगी। गांव में शराब पीकर आनेवाले रिश्तेदारों को भोजन व चारपाई नहीं दी जायेगी।

जब से इस गांव में शराब की खपत ज्यादा बढी तब से शराबियों ने घर के जेवर, बर्तन यहां तक कि हुक्के तक चोरी करके बेचे हैं। इसी गांव की एक छात्रा ने बताया कि शाम को दिन छिपने के बाद कोई भी महिला घर से बाहर कदम नहीं रख सकती।

इसलिए महिलाओं ने गाव की गलियों एवं मोहल्लों में ठीकरी पहरा लगा दिया है। उन्होंने प्रण लिया है कि शराब पीकर आनेवाले पति या पुत्र की सभी महिलाएं एकजुट होकर पिटाई करेंगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भजनमण्डलियों का शराबबन्दी प्रचार कार्यक्रम बनाया गया है।

क्योडक तथा मथाना जिला कैथल में शराबबन्दी प्रचार

जिला कैथल के ग्राम क्योडक तथा मथाना में शराब के ठेकों पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से शराबबन्दी प्रचार का आयोजन किया गया है। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा अन्य अधिकारी २१ नवम्बर को पधारेंगे।

केदारसिंह आर्य
कार्यालयाधीक्षक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।